NATIONAL AWARD WINNER

28 वर्षों से सर्वाधिक परीक्षोपयोगी मार्गदर्शक

विद्या™ न्यूपैटर्न

QUESTION® BANK

2019

कक्षा 12

WIN 5100 SMART WATCHES

सामान्य हिन्दी

- परीक्षोपयोगी प्रश्नों का निर्धारित शब्द-सीमा एवं तथ्यपरक उत्तरों सहित संकलन
- विगत 10 वर्षों की बोर्ड परीक्षाओं के प्रश्नों का अध्यायवार समावेश
- उ० प्र० बोर्ड द्वारा नवीनतम् अंक विभाजन पद्धति पर आधारित
- मॉडल पेपर्स सहित

Sdc Study Subscribe

विद्या QUESTION BANK®

• सटीक
• सुगम
• सर्वश्रेष्ठ

28 वर्षों से आपका सम्पूर्ण परीक्षा मार्गदर्शक

सामान्य हिन्दी केवल प्रश्न-पत्र

प्रिय विद्यार्थियो,

आप सभी अपने जीवन के निर्माण की दिशा में आगे बढ़ रहे हैं। यही वह स्वर्णिम अवसर है जिसमें आपको ज्ञानरूपी आभूषण से अलंकृत होना है और अपने जीवन की दिशा एवं दशा का निर्धारण करना है। परीक्षाओं में श्रेष्ठ परिणाम प्राप्त करने के लिए Vidya Question Bank की उत्कृष्ट शृंखला परिवर्द्धित रूप में आपके समक्ष प्रस्तुत है। यह शृंखला विस्तृत पाठ्यक्रम की सरल व रोचक अभिव्यक्ति है। वास्तव में यह परीक्षोपयोगी प्रश्नों की ऐसी अमूल्य निधि है जिसके अध्ययन से आप श्रेष्ठ परिणाम प्राप्त कर सकते हैं। Vidya Question Bank के कुछ प्रमुख बिन्दु निम्न प्रकार हैं—

1. यह शृंखला उत्तर प्रदेश सरकार द्वारा 20 जनवरी, 2018 को प्रकाशित एवं उत्तर प्रदेश माध्यमिक शिक्षा परिषद् द्वारा शैक्षिक सत्र 2018-19 के लिए निर्धारित पाठ्यक्रम पर आधारित है।
2. Vidya Question Bank की रचना विश्वसनीय एवं अनुभवी शिक्षकों द्वारा की जाती है।
3. इसके परीक्षा सम्बन्धी प्रश्नों का चयन विद्या शोध-प्रकोष्ठ के अथक अध्ययन एवं विश्लेषण के आधार पर किया जाता है।
4. नवीनतम एवं सम्पूर्ण पाठ्यक्रम से सम्बद्ध सामग्री शीर्षकों, उपशीर्षकों, उद्धरणों, परिभाषाओं, सूत्रों, रेखाचित्रों, मानचित्रों तथा आँकड़ों द्वारा प्रभावपूर्ण ढंग से प्रस्तुत की गई है।
5. इसमें सरल एवं बोधगम्य भाषा में परीक्षा-मानदण्डों की शब्द-सीमा के अनुरूप आदर्श एवं सटीक प्रश्नोत्तर दिए गए हैं।
6. Vidya Question Bank उत्कृष्ट प्रश्नों एवं उनके उत्तरों का एक ऐसा अप्रतिम संग्रह है, जो परीक्षार्थियों को अधिक-से-अधिक अंक दिलाने हेतु सच्चे मित्र की भूमिका निभाता है।

इसके अतिरिक्त सफलता प्राप्त करने हेतु कुछ ऐसे सूत्र भी आपको बताना चाहता हूँ जिनके आधार पर आप उच्चतम अंक अर्जित कर अपने भावी पथ को आलोकित कर सकते हैं—

- एकाग्रचित्त होकर योजनाबद्ध अध्ययन के अन्तर्गत समय-सारणी में सभी विषयों को अवश्य स्थान दें।
- परीक्षा के समय मन को शान्त एवं आत्मविश्वास से भरपूर रखें।
- परीक्षा में पहले अतिलघु प्रश्नों को हल करें, क्योंकि छोटे प्रश्नों में पूरे अंक प्राप्त होते हैं और साथ ही परीक्षा प्रश्न-पत्र का एक बड़ा भाग भी शीघ्र पूर्ण हो जाता है जिससे आत्मविश्वास में वृद्धि होती है।
- परीक्षा में चित्र, सारणियाँ व शीर्षक-उपशीर्षक आदि से सुसज्जित स्पष्ट लेखन भी उच्चतम अंक दिलाने में सहायक होता है।

अतः मुझे आशा ही नहीं, वरन् पूर्ण विश्वास है कि Vidya Question Bank परीक्षारूपी संग्राम में अवश्य ही आपका ज्ञान-कवच बनेगा। सफलतम जीवन की शुभकामनाओं और हार्दिक स्नेह के साथ—

सौरभ जैन
(प्रबन्ध निदेशक)

Head Office :
Vidya Industrial Estate, Baghpat Road,
Meerut–250 002 (Delhi–NCR)
Tel : +91-121-7130642-43; Fax : +91-121-2439233

© Publishers

Written & Edited by :
Research & Development Cell

Typeset & Printed At :
VIDYA Prakashan Mandir (P) Ltd.

The author, the editor, the publisher and printer have made their best endeavour to provide authentic, accurate, impeccable and up-to-date information in this book. However, they do not undertake any legal responsibility for any misinterpretation or error inadvertently crept in. Creative suggestions for the improvement of the book are solicited for as they would serve as feedback and would be incorporated in the ensuing editions. All disputes subject to Meerut (UP) jurisdiction only.

पाठ्यक्रम एवं अंक-विभाजन

इस विषय में 10 अंकों का एक प्रश्न-पत्र तीन घण्टे का होगा। न्यूनतम उत्तीर्णांक 33 — **50 अंक**

खण्ड-क

1. हिन्दी गद्य साहित्य का इतिहास (गद्य की पाठ्य-पुस्तक में दिये गये पाठों पर आधारित विभिन्न कालों के युग प्रवर्तक लेखक एवं उनकी रचनाएँ)। 05
2. हिन्दी काव्य साहित्य का विकास (विभिन्न कालों के प्रमुख कवि और उनकी कृतियों पर आधारित प्रश्न) 05
3. पाठ्यक्रम में निर्धारित गद्यांशों पर आधारित प्रश्नोत्तर। 10
4. पाठ्यक्रम में निर्धारित पद्यांशों पर आधारित प्रश्नोत्तर। 10
5. पाठ्यक्रम में निर्धारित लेखकों एवं कवियों का साहित्यिक परिचय एवं कृतियाँ (शब्द सीमा : 80)। 08
6. **(क)** पाठ्यक्रम में निर्धारित कहानियों के सारांश एवं उद्देश्य पर आधारित प्रश्न (शब्द सीमा : 80)। 04
   (ख) पाठ्यक्रम में निर्धारित नाटक की कथावस्तु एवं प्रमुख पात्रों का चरित्र-चित्रण (शब्द सीमा : 80)। 04
7. पाठ्यक्रम में निर्धारित खण्डकाव्य की कथावस्तु एवं प्रमुख पात्रों का चरित्र-चित्रण (शब्द सीमा : 80)। 04

खण्ड-ख — **50 अंक**

1. संस्कृत में निर्धारित पाठों के आधार पर एक गद्यांश तथा एक पद्यांश/श्लोक का सन्दर्भ सहित हिन्दी में अनुवाद। 14
2. लोकोक्तियों एवं मुहावरों के अर्थ एवं वाक्य प्रयोग। 02
3. **(क)** सन्धि—(दीर्घ, गुण, यण, अयादि में से किन्हीं तीन सन्धियों से सम्बन्धित शब्दों का सन्धि विच्छेद) 03
   (ख) शब्दों में सूक्ष्म अन्तर। 02
   (ग) अनेकार्थी शब्द। 02
   (घ) अनेक शब्दों के लिए एक शब्द (केवल दो शब्द) 02
   (ङ) संस्कृत शब्दों में विभक्ति की पहचान। 02
   (च) वाक्यों में त्रुटिमार्जन (लिंग, वचन, कारक, काल एवं वर्तनी सम्बन्धी त्रुटियाँ) 02
4. **(क)** रस—शृंगार, करुण, हास्य, वीर एवं शान्त रस के लक्षण एवं उदाहरण। 02
   (ख) अलंकार— (1) शब्दालंकार—अनुप्रास, यमक, श्लेष के लक्षण एवं उदाहरण। 02
   (2) अर्थालंकार—उपमा, रूपक, उत्प्रेक्षा, भ्रान्तिमान एवं सन्देह के लक्षण एवं उदाहरण।
   (ग) छन्द—मात्रिक-चौपाई, सोरठा, कुण्डलिया के लक्षण एवं उदाहरण। 02
5. पत्र-लेखन (निम्नलिखित में से किसी एक पर) 06
   (1) नियुक्ति-आवेदन पत्र
   (2) बैंक से किसी व्यवसाय के लिए ऋण प्राप्त करने का आवेदन-पत्र।
   (3) अपने नगर या गाँव की सफाई हेतु सम्बन्धित अधिकारी को प्रार्थना-पत्र।
6. निबन्ध (विज्ञान, वाणिज्य, शिक्षा, कृषि, सामाजिक एवं राजनैतिक चेतना पर आधारित जनसंख्या, स्वास्थ्य शिक्षा व पर्यावरण से सम्बन्धित। 09

विषय-सूची

खण्ड 'क'

1. हिन्दी गद्य-साहित्य का विकास ... 3
2. हिन्दी काव्य-साहित्य का विकास ... 13
3. गद्यांश पर आधारित प्रश्नोत्तर ... 25
4. पद्यांश पर आधारित प्रश्नोत्तर ... 31
5. लेखक एवं कवि-परिचय ... 42
6. 'कथा भारती' पर आधारित प्रश्न ... 46
7. 'स्वपठित नाटक' पर आधारित प्रश्न ... 49
8. स्वपठित 'खण्डकाव्य' पर आधारित प्रश्न ... 59
- 'गद्य-गरिमा' में संकलित पाठों के लेखकों का संक्षिप्त परिचय ... 71
- 'काव्यांजली' में संकलित रचनाओं के कवियों का संक्षिप्त परिचय ... 71

खण्ड 'ख'

9. संस्कृत के गद्यांशों एवं पद्यांशों का ससन्दर्भ हिन्दी में अनुवाद ... 72
10. मुहावरे एवं लोकोक्तियाँ ... 76
11. व्याकरण : सन्धि एवं विभक्ति परिचय ... 84
12. व्याकरण : शब्द एवं वाक्य-परिचय ... 89
13. काव्य-सौन्दर्य के तत्त्व : रस, अलंकार, छन्द ...101
14. पत्र-लेखन ...104
15. निबन्ध-लेखन ...109
- **मॉडल पेपर-1** ...129
- **मॉडल पेपर-2** ...131
- **मॉडल पेपर-3** ...134

खण्ड 'क'

1 हिन्दी गद्य-साहित्य का विकास

प्रश्न-परिचय– सामान्य हिन्दी के **खण्ड 'क'** का **प्रथम प्रश्न** पाठ्य-पुस्तक 'गद्य गरिमा' में दिये गये भूमिका आदि प्रारम्भिक अंश और उसके विभिन्न पाठों एवं युगप्रवर्तक प्रमुख लेखकों पर आधारित होगा। इसके अन्तर्गत लेखकों का योगदान, उनकी प्रमुख पुस्तकें एवं विभिन्न कालों में गद्य की भाषा और रचना-विधाओं में परिवर्तन से सम्बन्धित **एक-एक अंक** के **पाँच** बहुविकल्पीय या अतिलघु उत्तरीय या दोनों प्रकार के प्रश्न पूछे जा सकते हैं। इसके लिए कुल **5 अंक** निर्धारित हैं।

परीक्षार्थी ध्यान दें– 1. अतिलघु उत्तरीय प्रश्नों के उत्तर एक-दो पंक्तियों में लिखने चाहिए। 2. बहुविकल्पीय प्रश्न के अन्तर्गत एक प्रश्न और उसके उत्तर रूप में चार विकल्प दिये जाते हैं। इनमें से किसी एक उपयुक्त विकल्प का चयन करना होता है। उत्तर के लिए प्रश्न-संख्या व उचित विकल्प (विकल्प-क्रम सहित) स्पष्ट अक्षरों में लिखना चाहिए।

✿ निम्नलिखित में से किन्हीं पाँच प्रश्नों के सही विकल्प का चयन कीजिए–

[*संकेत–मोटे व काले अक्षरों में छपे विकल्प सही हैं।*]

प्रश्न 1. 'सरस्वती' पत्रिका के प्रथम सम्पादक हैं— (2014, 16)
(क) महावीरप्रसाद द्विवेदी **(ख) श्यामसुन्दर दास**
(ग) जयशंकर प्रसाद (घ) हरदेव बाहरी

प्रश्न 2. 'आनन्द कादम्बिनी' पत्रिका का सम्पादन करते थे— (2009, 10, 11, 15)
(क) प्रतापनारायण मिश्र **(ख) बद्रीनारायण चौधरी 'प्रेमघन'**
(ग) बालकृष्ण भट्ट (घ) सरदार पूर्णसिंह

प्रश्न 3. निम्नलिखित में से कौन-सा लेखक 'खड़ी बोली' गद्य का प्रारम्भिक गद्य लेखक है ?
(क) रामप्रसाद निरंजनी (ख) सदल मिश्र
(ग) पं० दौलत राम (घ) शिवप्रसाद 'सितारेहिन्द'

प्रश्न 4. 'बनारस अखबार' के प्रकाशक कौन हैं ?
(क) भारतेन्दु हरिश्चन्द्र (ख) राजा लक्ष्मण सिंह
(ग) राजा शिवप्रसाद 'सितारेहिन्द' (घ) सदल मिश्र

प्रश्न 5. 'प्रजा हितैषी' समाचार-पत्र का सम्पादन किया— (2013)
(क) हजारीप्रसाद द्विवेदी ने **(ख) राजा लक्ष्मण सिंह ने**
(ग) सच्चिदानन्द हीरानन्द वात्स्यायन 'अज्ञेय' ने
(घ) शिवप्रसाद 'सितारेहिन्द' ने

प्रश्न 6. प्रारम्भिक गद्य लेखकों में दो राजाओं में से एक है— (2012)
(क) सदासुख लाल (ख) सदल मिश्र
(ग) शिवप्रसाद 'सितारेहिन्द' (घ) लल्लू लाल

प्रश्न 7. निम्नलिखित में 'अष्टयाम' की भाषा है— (2010)
(क) राजस्थानी **(ख) ब्रजभाषा**
(ग) अवधी (घ) खड़ी बोली

प्रश्न 8. हिन्दी साहित्य के आधुनिक काल को गद्यकाल की संज्ञा किसने दी ? (2010)
(क) भारतेन्दु हरिश्चन्द्र (ख) महावीरप्रसाद द्विवेदी
(ग) आचार्य रामचन्द्र शुक्ल (घ) बाबू श्यामसुन्दर दास

प्रश्न 9. 'खड़ी बोली' गद्य के विकास का प्रारम्भिक युग कौन-सा है ?
(क) द्विवेदी युग (ख) छायावादी युग
(ग) भारतेन्दु युग (घ) छायावादोत्तर युग

प्रश्न 10. हिन्दी में निबन्ध-रचना का आरम्भ किस युग से माना जाता है ?
(क) भारतेन्दु युग (ख) द्विवेदी युग
(ग) छायावादी युग (घ) छायावादोत्तर युग

प्रश्न 11. हरिश्चन्द्र को 'भारतेन्दु' की पदवी से सुशोभित किया गया— (2012)
(क) सन् 1860 में (ख) सन् 1865 में
(ग) सन् 1875 में **(घ) सन् 1880 में**

प्रश्न 12. 'बालाबोधिनी' पत्रिका के सम्पादक थे— (2013, 14)
(क) शिवप्रसाद 'सितारेहिन्द' **(ख) भारतेन्दु हरिश्चन्द्र**
(ग) ठाकुर जगमोहन सिंह (घ) काशीनाथ खत्री

प्रश्न 13. भारतेन्दु युग के लेखक हैं— (2011)
(क) प्रतापनारायण मिश्र (ख) राहुल सांकृत्यायन
(ग) वासुदेवशरण अग्रवाल (घ) जैनेन्द्र कुमार

प्रश्न 14. 'हिन्दी प्रदीप' के सम्पादक थे— (2009, 11, 12, 13, 16, 18)
(क) प्रतापनारायण मिश्र **(ख) बालकृष्ण भट्ट**
(ग) राधाचरण गोस्वामी
(घ) बद्रीनारायण चौधरी 'प्रेमघन'

प्रश्न 15. 'चन्द्रकांता सन्तति' रचना है— (2016)
(क) भारतेन्दु युग की **(ख) द्विवेदी युग की**
(ग) छायावादी युग की (घ) छायावादोत्तर युग की

प्रश्न 16. 'रणधीर और प्रेममोहिनी' किस विधा की रचना है ?
(क) उपन्यास **(ख) नाटक** (ग) कहानी (घ) संस्मरण

प्रश्न 17. 'हमीर हठ' किस प्रकार की रचना है ?
(क) निबन्ध (ख) कथा साहित्य
(ग) आलोचना **(घ) इतिहास**

प्रश्न 18. 'ब्राह्मण' पत्रिका के सम्पादक थे— (2012, 13, 14, 17)
(क) बालकृष्ण भट्ट **(ख) प्रतापनारायण मिश्र**
(ग) बदरीनारायण चौधरी 'प्रेमघन'
(घ) प्रेमचन्द

प्रश्न 19. सरस्वती पत्रिका है— (2016)
(क) शुक्ल युग की **(ख) द्विवेदी युग की**
(ग) भारतेन्दु युग की (घ) छायावादी युग की

प्रश्न 20. भारतेन्दु युग के लेखक/पत्रकार हैं—
(क) बालकृष्ण भट्ट (ख) कन्हैयालाल मिश्र 'प्रभाकर'
(ग) अध्यापक पूर्णसिंह (घ) डॉ० सम्पूर्णानन्द

प्रश्न 21. भारतेन्दु युग में किस पत्रिका का प्रकाशन हुआ ? (2011)
(क) हंस **(ख) कविवचन सुधा** (ग) धर्मयुग (घ) दिनमान

प्रश्न 22. भारतेन्दु युग की पत्रिका नहीं है— (2012)
(क) आनन्द कादम्बिनी (ख) हरिश्चन्द्र चन्द्रिका
(ग) सरस्वती (घ) ब्राह्मण

प्रश्न 23. महावीरप्रसाद द्विवेदी को किस संस्था ने 'आचार्य' की उपाधि से सम्मानित किया ? (2011)
(क) हिन्दी साहित्य सम्मेलन **(ख) काशी नागरी प्रचारिणी सभा**
(ग) केन्द्रीय शिक्षा संस्थान (घ) सम्पूर्णानन्द विश्वविद्यालय

प्रश्न 24. हिन्दी गद्य के उत्कर्ष का सूर्योदय काल था—
(क) भारतेन्दु युग **(ख) द्विवेदी युग**
(ग) छायावादी युग (घ) छायावादोत्तर युग

प्रश्न 25. 'निबन्ध' शब्द के पर्याय शब्द 'एसे' का अर्थ है—
(क) प्रयोग **(ख) प्रयास** (ग) प्रबन्ध (घ) प्रकीर्ण

प्रश्न 26. कौन-सा वर्णनात्मक निबन्ध है ? (2008)
(क) आचरण की सभ्यता (ख) महाकवि माघ का प्रभात-वर्णन
(ग) कुटज (घ) निन्दा रस

प्रश्न 27. 'काशी नागरी प्रचारिणी सभा' की स्थापना की थी— (2009, 12, 13, 14)
(क) श्यामसुन्दर दास (ख) गुलाबराय
(ग) सुमित्रानन्दन पन्त (घ) रायकृष्ण दास

प्रश्न 28. 'नागरी प्रचारिणी सभा' की स्थापना हुई थी— (2014)
(क) 'द्विवेदी युग' में **(ख) 'भारतेन्दु युग' में**
(ग) 'छायावाद युग' में (घ) 'प्रगतिवाद युग' में

प्रश्न 29. द्विवेदी युग और छायावादी युग दोनों युगों में लेखन-कार्य करने वाले लेखक हैं— (2014)
(क) महावीरप्रसाद द्विवेदी (ख) बालकृष्ण भट्ट
(ग) गुलाबराय (घ) सरदार पूर्णसिंह

प्रश्न 30. द्विवेदी युग किसके नाम पर पड़ा है ? (2013)
(क) महावीरप्रसाद (ख) जयशंकर प्रसाद
(ग) हजारीप्रसाद (घ) रामकुमार

प्रश्न 31. द्विवेदी युग के निबन्धकार हैं— (2013)
(क) बालकृष्ण भट्ट (ख) महादेवी वर्मा
(ग) रामवृक्ष बेनीपुरी **(घ) चन्द्रधर शर्मा 'गुलेरी'**

प्रश्न 32. महावीरप्रसाद द्विवेदी जी 'सरस्वती' पत्रिका के सम्पादक बने— (2015)
(क) सन् 1903 से (ख) सन् 1920 से
(ग) सन् 1925 से (घ) सन् 1947 से

प्रश्न 33. द्विवेदी युग में तिलिस्मी उपन्यासों की रचना की गयी—
(क) चतुरसेन शास्त्री द्वारा **(ख) देवकीनन्दन खत्री द्वारा**
(ग) प्रेमचन्द द्वारा (घ) जयशंकर प्रसाद द्वारा

प्रश्न 34. निम्नलिखित में से किस निबन्धकार को ललित निबन्धकार माना जाता है ? (2009)
(क) कुबेरनाथ
(ख) आचार्य रामचन्द्र शुक्ल
(ग) सच्चिदानन्द हीरानन्द वात्स्यायन 'अज्ञेय'
(घ) सरदार पूर्णसिंह

प्रश्न 35. निम्नलिखित में से कौन 'द्विवेदी युग' का लेखक नहीं है ? (2009)
(क) चन्द्रधर शर्मा 'गुलेरी' (ख) पदुमलाल पुन्नालाल बख्शी
(ग) रामवृक्ष बेनीपुरी (घ) लाला भगवान दास

प्रश्न 36. 'दौलतपुर' (रायबरेली, उत्तर प्रदेश) जन्म-स्थान है— (2014)
(क) 'आचार्य महावीरप्रसाद द्विवेदी' का
(ख) 'आचार्य हजारीप्रसाद द्विवेदी' का
(ग) 'डॉ० वासुदेवशरण अग्रवाल' का
(घ) 'आचार्य रामचन्द्र शुक्ल' का

प्रश्न 37. छायावादोत्तर युग के लेखक नहीं हैं ? (2009)
(क) भीष्म साहनी (ख) सर्वेश्वर दयाल सक्सेना
(ग) वासुदेवशरण अग्रवाल **(घ) बालकृष्ण भट्ट**

प्रश्न 38. निम्नलिखित में असत्य कथन है— (2014)
(क) हजारीप्रसाद द्विवेदी निबन्धकार एवं उपन्यासकार हैं
(ख) महावीरप्रसाद द्विवेदी 'सरस्वती' पत्रिका के सम्पादक थे
(ग) रामचन्द्र शुक्ल 'हिन्दी साहित्य का इतिहास' ग्रन्थ के लेखक हैं
(घ) प्रतापनारायण मिश्र 'हिन्दी प्रदीप' के सम्पादक थे

प्रश्न 39. निम्नलिखित में असत्य कथन है—
(क) गद्य व्याकरणसम्मत वाक्यबद्ध रचना है।
(ख) गद्य प्रधानतया विचार, तर्क, चिन्तन एवं विश्लेषणप्रधान होता है।
(ग) गद्य में लय, यति एवं गति आदि का महत्त्व होता है।
(घ) आज का युग गद्यप्रधान है।

प्रश्न 40. 'निन्दा रस' निबन्ध के रचनाकार हैं— (2011, 13, 16, 17)
(क) हजारीप्रसाद द्विवेदी (ख) प्रेमचन्द
(ग) हरिशंकर परसाई (घ) जैनेन्द्र कुमार

प्रश्न 41. वासुदेवशरण अग्रवाल द्वारा लिखित निबन्ध 'राष्ट्र का स्वरूप' किस निबन्ध-संग्रह से लिया गया है ? (2011)
(क) धरतीपुत्र **(ख) 'पृथिवीपुत्र'**
(ग) राष्ट्रचेतना (घ) सांस्कृतिक गौरव

प्रश्न 42. 'चिन्तामणि' के रचनाकार हैं— (2016, 18)
या **'चिन्तामणि' किस लेखक के निबन्धों का संग्रह है?** (2011, 13)
(क) प्रेमचन्द (ख) श्यामसुन्दर दास
(ग) आचार्य रामचन्द्र शुक्ल (घ) गुलाब राय

प्रश्न 43. 'शिक्षा का उद्देश्य' निबन्ध सम्पूर्णानन्द जी द्वारा लिखित किस निबन्ध-संग्रह से संकलित है? (2012)
(क) भाषा की शक्ति (ख) शिक्षा की दिशा और दशा
(ग) शिक्षा और संस्कृति (घ) शिक्षा और समाज

प्रश्न 44. 'शिक्षा का उद्देश्य' निबन्ध के लेखक हैं— (2013)
(क) महावीरप्रसाद द्विवेदी **(ख) डॉ० सम्पूर्णानन्द**
(ग) आचार्य रामचन्द्र शुक्ल (घ) विद्यानिवास मिश्र

प्रश्न 45. 'अशोक के फूल' निबन्ध है— (2012)
(क) मनोवैज्ञानिक **(ख) ललित**
(ग) बुद्धिप्रधान (घ) ऐतिहासिक

प्रश्न 46. 'सच्ची वीरता' नामक निबन्ध के लेखक हैं— (2012)
(क) वासुदेवशरण अग्रवाल (ख) कन्हैयालाल मिश्र 'प्रभाकर'
(ग) रायकृष्ण दास **(घ) सरदार पूर्णसिंह**

प्रश्न 47. निम्नलिखित में से कौन-सा निबन्ध व्यंग्य का अच्छा उदाहरण है? (2012)
(क) गेहूँ बनाम गुलाब (ख) आखिरी चट्टान
(ग) निन्दा रस (घ) अशोक के फूल

प्रश्न 48. हरिशंकर परसाई का निबन्ध-संग्रह है— (2012, 18)
(क) आलोक पर्व (ख) त्रिशंकु
(ग) पगडंडियों का जमाना (घ) परिवेश

प्रश्न 49. निम्नलिखित में से कौन निबन्धकार नहीं है? (2011)
(क) विद्यानिवास मिश्र **(ख) प्रेमचन्द**
(ग) कुबेरनाथ रायद (घ) हजारीप्रसाद द्विवेदी

प्रश्न 50. 'भारतवर्षोन्नति कैसे हो सकती है?' हिन्दी गद्य की विधा है— (2011)
(क) निबन्ध (ख) उपन्यास (ग) आलोचना (घ) नाटक

प्रश्न 51. 'चुंगी की उम्मीदवारी' की रचना विधा है—
(क) उपन्यास **(ख) एकांकी** (ग) कहानी (घ) निबन्ध

प्रश्न 52. 'आवारा मसीहा' नामक जीवनी विधा की रचना के लेखक हैं— (2016, 18)
(क) धर्मवीर भारती (ख) उपेन्द्रनाथ 'अश्क'
(ग) यशपाल **(घ) विष्णु प्रभाकर**

प्रश्न 53. 'कलम का सिपाही' जीवनी विधा की रचना के लेखक हैं— (2018)
(क) प्रेमचन्द **(ख) अमृतराय** (ग) यशपाल (घ) जैनेन्द्र कुमार

प्रश्न 54. 'कलम का सिपाही' किस विधा की रचना है ? (2011)
(क) जीवनी (ख) निबन्ध (ग) डायरी (घ) संस्मरण

प्रश्न 55. विष्णु प्रभाकर द्वारा रचित 'आवारा मसीहा' किस प्रसिद्ध लेखक की जीवनी है ? (2010, 12)
(क) राहुल सांकृत्यायन (ख) बंकिम चन्द्र चटर्जी
(ग) शरत्चन्द्र चटर्जी (घ) स०ही० वात्स्यायन 'अज्ञेय'

प्रश्न 56. कौन-सी रचना उपन्यास विधा की नहीं है ?
(क) सौ अजान एक सुजान (ख) निस्सहाय हिन्दू
(ग) गबन **(घ) बंगाल का अकाल**

प्रश्न 57. निम्नलिखित में से कौन-सी रचना उपन्यास नहीं है? (2011)
(क) परीक्षा गुरु (ख) तितली
(ग) अशोक के फूल (घ) गबन

प्रश्न 58. 'सुनीता' विधा की दृष्टि से रचना है— (2014)
(क) 'कहानी' की (ख) 'आलोचना' की
(ग) 'निबन्ध' की **(घ) 'उपन्यास' की**

प्रश्न 59. निम्नलिखित में से 'नाटक' है— (2014)
(क) त्रिशंकु (आलोचना) (ख) आत्मनेपद (निबन्ध-संग्रह)
(ग) विपथगा (कहानी) **(घ) उत्तर प्रियदर्शी (नाटक)**

प्रश्न 60. हिन्दी का प्रथम नाटक है— (2014)
(क) सती-प्रताप (ख) अजातशत्रु (ग) स्कन्दगुप्त **(घ) नहुष**

प्रश्न 61. निम्नलिखित में से नाटक है— (2011)
(क) उसने कहा था (ख) कलम का सिपाही
(ग) चन्द्रगुप्त (घ) आँसू

प्रश्न 62. जयशंकर प्रसाद द्वारा रचित 'ध्रुवस्वामिनी' की रचना-विधा है— (2012)
(क) एकांकी (ख) जीवनी **(ग) नाटक** (घ) उपन्यास

प्रश्न 63. प्रेमचन्द का उपन्यास नहीं है— (2012)
(क) गोदान (ख) निर्मला (ग) रंगभूमि **(घ) त्यागपत्र**

प्रश्न 64. हिन्दी का पहला मौलिक उपन्यास है— (2013, 14, 17)
(क) परीक्षा गुरु (ख) गोदान
(ग) गुनाहों के देवता (घ) चित्रलेखा

प्रश्न 65. हिन्दी में एकांकी नाटकों का विकास किस युग से माना जाता है ?
(क) भारतेन्दु युग से (ख) द्विवेदी युग से
(ग) छायावादी युग से (घ) छायावादोत्तर युग से

प्रश्न 66. 'संयोगिता स्वयंवर' नाटक के लेखक हैं— (2014)
(क) जयशंकर प्रसाद (ख) भारतेन्दु हरिश्चन्द्र
(ग) श्रीनिवास दास (घ) रामकुमार वर्मा

प्रश्न 67. निबन्ध विधा का सर्वाधिक विकास हुआ— (2013)
(क) द्विवेदी युग में **(ख) छायावादी युग में**
(ग) भारतेन्दु युग में (घ) छायावादोत्तर युग में

प्रश्न 68. 'साहित्यालोचन' गद्य की विधा है— (2012)
(क) नाटक (ख) उपन्यास
(ग) आलोचना (घ) निबन्ध

प्रश्न 69. कहानी-कला की दृष्टि से हिन्दी की प्रथम आधुनिक कहानी है—
(क) मुंशी इंशाअल्ला खाँ की 'रानी केतकी की कहानी'
(ख) किशोरीलाल गोस्वामी की 'इन्दुमती'
(ग) आचार्य रामचन्द्र शुक्ल की 'ग्यारह वर्ष का समय'
(घ) किशोरीलाल गोस्वामी की 'गुलबहार'

प्रश्न 70. मुंशी प्रेमचन्द ने किस विधा को 'मानव-चरित्र का चित्रमात्र' कहा है ? (2010, 14)
(क) जीवनी (ख) उपन्यास **(ग) कहानी** (घ) संस्मरण

प्रश्न 71. 'हिन्दी प्रगतिशील लेखक संघ' का प्रथम अधिवेशन हुआ— (2011)
(क) सन् 1932 में **(ख) सन् 1936 में**
(ग) सन् 1938 में (घ) सन् 1940 में

प्रश्न 72. 'मधुआ' कहानी के रचनाकार हैं— (2010)
(क) महादेवी वर्मा (ख) रामचन्द्र शुक्ल
(ग) किशोरीलाल गोस्वामी **(घ) जयशंकर प्रसाद**

प्रश्न 73. 'मधुआ' किस विधा की रचना है? (2013)
(क) निबन्ध (ख) उपन्यास **(ग) कहानी** (घ) संस्मरण

प्रश्न 74. 'रागदरबारी' की रचना-विधा है— (2010)
(क) कविता (ख) नाटक
(ग) निबन्ध **(घ) इनमें से कोई नहीं**

प्रश्न 75. 'नूतन ब्रह्मचारी' किस विधा की रचना है? (2010)
(क) नाटक **(ख) उपन्यास**
(ग) जीवनी (घ) आलोचना

प्रश्न 76. 'हरखू' पात्र किस कहानी से सम्बन्धित है? (2012)
(क) बलिदान (ख) आकाशदीप
(ग) प्रायश्चित्त (घ) समय

प्रश्न 77. एकांकी शिल्प के समुचित विकास की दृष्टि से एकांकी के जनक माने जाते हैं— (2011)
या **'हिन्दी एकांकी का जनक माना जाता है—** (2017)
(क) जयशंकर प्रसाद (ख) भारतेन्दु हरिश्चन्द्र
(ग) डॉ० रामकुमार वर्मा (घ) उपेन्द्रनाथ 'अश्क'

प्रश्न 78. हिन्दी का प्रथम यात्रा-वृत्तान्त 'सरयूपार की यात्रा' लिखा गया है— (2014)
(क) भारतेन्दु हरिश्चन्द्र द्वारा (ख) महावीरप्रसाद द्विवेदी द्वारा
(ग) प्रेमचन्द द्वारा (घ) राहुल सांकृत्यायन द्वारा

प्रश्न 79. हिन्दी के प्रथम डायरी लेखक कौन हैं ?
(क) धीरेन्द्र वर्मा (ख) इलाचन्द्र जोशी
(ग) शमशेर बहादुर सिंह **(घ) नरदेव शास्त्री 'वेदतीर्थ'**

प्रश्न 80. 'बड़ों के प्रेरणादायक कुछ पत्र' के संकलनकर्त्ता हैं— (2010)
(क) बैजनाथ सिंह 'विनोद' **(ख) वियोगी हरि**
(ग) महादेवी वर्मा (घ) हरिवंशराय 'बच्चन'

प्रश्न 81. 'छायावादी युग' के लेखक कौन नहीं हैं ?
(क) वियोगी हरि **(ख) भगवतीचरण वर्मा**
(ग) नन्ददुलारे वाजपेयी (घ) डॉ० रघुवीर सिंह

प्रश्न 82. 'भाग्यवती' को हिन्दी का प्रथम सामाजिक उपन्यास माना जाता है। इसके लेखक थे— (2016)
(क) नवीनचन्द्र राय (ख) गोपालराम गहमरी
(ग) श्रद्धाराम फुल्लौरी (घ) देवकीनन्दन खत्री

प्रश्न 83. केदारनाथ पाण्डेय किस लेखक का वास्तविक नाम है? (2012, 14, 15)
(क) अज्ञेय का **(ख) राहुल सांकृत्यायन का**
(ग) रामवृक्ष बेनीपुरी का (घ) जैनेन्द्र का

प्रश्न 84. छायावादोत्तर युग का काल है—
(क) 1868 ई० से 1900 ई० तक
(ख) 1900 ई० से 1922 ई० तक
(ग) 1919 ई० से 1938 ई० तक
(घ) 1938 ई० से वर्तमान तक

प्रश्न 85. 'पथ के साथी' की रचना विधा है—
(क) कहानी (ख) जीवनी (ग) आत्मकथा **(घ) संस्मरण**

प्रश्न 86. 'रॉबर्ट नर्सिंग होम में' की रचना विधा है— (2011)
(क) कहानी (ख) नाटक (ग) रेखाचित्र **(घ) रिपोर्ताज**

प्रश्न 87. 'संस्कृति के चार अध्याय' किस युग की रचना है?
(क) भारतेन्दु युग (ख) द्विवेदी युग
(ग) छायावादोत्तर युग (घ) छायावादी युग

प्रश्न 88. 'क्या भूलूँ क्या याद करूँ' की रचना विधा है— (2015, 17, 18)
(क) संस्मरण (ख) डायरी **(ग) आत्मकथा** (घ) यात्रावृत्त

प्रश्न 89. एकांकी में अंक होते हैं—
(क) तीन (ख) पाँच **(ग) एक** (घ) अनेक

प्रश्न 90. गद्य विधा की दृष्टि से 'आत्मकथा' है— (2014)
(क) आवारा मसीहा (ख) कलम का सिपाही
(ग) नीड़ का निर्माण फिर (घ) शिखर से सागर तक

प्रश्न 91. 'त्रिवेणी' किस विधा की रचना है? (2011)
(क) निबन्ध (ख) संस्मरण **(ग) आलोचना** (घ) कहानी

प्रश्न 92. निम्नलिखित में से कौन संस्मरण लेखक हैं ?
(क) कमलेश्वर (ख) राँगेय राघव
(ग) श्रीराम शर्मा **(घ) विष्णु प्रभाकर**

प्रश्न 93. 'द्विवेदी पत्रावली' के संकलनकर्त्ता हैं—
(क) बनारसीदास चतुर्वेदी **(ख) बैजनाथ सिंह**
(ग) वियोगी हरि (घ) हरिवंशराय 'बच्चन'

प्रश्न 94. 'गेहूँ बनाम गुलाब' निबन्ध में गुलाब किस प्रकार की प्रगति का द्योतक है ? (2009)
(क) आर्थिक (ख) सामाजिक
(ग) सांस्कृतिक (घ) राजनीतिक

प्रश्न 95. हजारीप्रसाद द्विवेदी के निबन्ध किस श्रेणी में आते हैं ? (2009)
(क) ऐतिहासिक निबन्ध (ख) मनोवैज्ञानिक निबन्ध
(ग) ललित निबन्ध (घ) वस्तुप्रधान निबन्ध

प्रश्न 96. निम्नलिखित में से कौन-सी रचना नाटक है ? (2009)
(क) सन्नाटा (ख) निन्दारस
(ग) गरुड़ध्वज (घ) राष्ट्र का स्वरूप

प्रश्न 97. 'रिपोर्ताज' के लेखक हैं— (2010)
(क) जयशंकर प्रसाद **(ख) विष्णुकान्त शास्त्री**
(ग) महावीरप्रसाद द्विवेदी (घ) डॉ० सम्पूर्णानन्द

प्रश्न 98. 'चारु चन्द्रलेख' की विधा है— (2016)
(क) कहानी **(ख) उपन्यास** (ग) निबन्ध (घ) नाटक

प्रश्न 99. 'संस्मरण' लेखन का प्रारम्भ किस प्रमुख लेखक से माना जाता है ? (2010)
(क) बालमुकुन्द गुप्त (ख) पद्मसिंह शर्मा
(ग) रामवृक्ष बेनीपुरी (घ) श्रीराम शर्मा

प्रश्न 100. निम्नलिखित में से छायावादोत्तर काल के समालोचक नहीं हैं— (2010)
(क) हजारीप्रसाद द्विवेदी (ख) डॉ० नगेन्द्र
(ग) बाबू गुलाबराय (घ) रामविलास शर्मा

प्रश्न 101. निम्नलिखित में से कौन पत्रिका नहीं है ? (2011)
(क) इन्दु **(ख) भारत दुर्दशा**
(ग) सरस्वती (घ) आनन्द कादम्बिनी

प्रश्न 102. 'दी मैड मैन' का 'पगला' नाम से हिन्दी में अनुवाद किया है— (2012)
(क) वासुदेवशरण अग्रवाल ने **(ख) रायकृष्ण दास ने**
(ग) डॉ० सम्पूर्णानन्द ने (घ) प्रो० जी० सुन्दर रेड्डी ने

प्रश्न 103. गद्य की किस विधा में काल्पनिक प्रसंगों का स्थान नहीं है? (2012)
(क) कहानी (ख) उपन्यास
(ग) नाटक **(घ) आत्मकथा**

प्रश्न 104. 'सैनिक' और अंग्रेजी त्रैमासिक 'वाक्' के सम्पादक थे— (2012)
(क) धर्मवीर भारती **(ख) स०ही० वात्स्यायन 'अज्ञेय'**
(ग) रामधारीसिंह 'दिनकर' (घ) डॉ० हरिवंशराय 'बच्चन'

प्रश्न 105. छायावादोत्तर काल के लेखक हैं— (2010)
(क) विद्यानिवास मिश्र (ख) आचार्य रामचन्द्र शुक्ल
(ग) गुलाबराय (घ) श्यामसुन्दर दास

प्रश्न 106. छायावादोत्तर युग के गद्य लेखक हैं— (2013)
(क) जयशंकर प्रसाद (ख) माखनलाल चतुर्वेदी
(ग) वासुदेवशरण अग्रवाल (घ) महावीरप्रसाद द्विवेदी

प्रश्न 107. निम्नलिखित में से कौन-सा कवि छायावाद का नहीं है? (2011)
(क) महादेवी वर्मा (ख) जयशंकर प्रसाद
(ग) मैथिलीशरण गुप्त (घ) सुमित्रानन्दन पन्त

प्रश्न 108. सन् 1957 में पद्मभूषण से अलंकृत हुए— (2013)
(क) रायकृष्णदास (ख) विद्यानिवास मिश्र
(ग) स०ही०वा० 'अज्ञेय' **(घ) हजारीप्रसाद द्विवेदी**

प्रश्न 109. डॉ० सम्पूर्णानन्द को 'मंगलाप्रसाद' पुरस्कार प्राप्त हुआ— (2013)
(क) 'गणेश' पर (ख) 'चिद्विलास' पर
(ग) 'समाजवाद' पर (घ) 'आर्यों का आदिदेश' पर

प्रश्न 110. 'चिन्तामणि' की गद्य-विधा है— (2013, 15)
(क) नाटक (ख) उपन्यास **(ग) निबन्ध** (घ) कहानी

प्रश्न 111. निम्नलिखित में से नाटककार हैं— (2013)
(क) रामचन्द्र शुक्ल **(ख) मोहन राकेश**
(ग) डॉ० नगेन्द्र (घ) महादेवी वर्मा

प्रश्न 112. मोहन राकेश रचनाकार हैं— (2013)
(क) भारतेन्दु युग के (ख) द्विवेदी युग के
(ग) शुक्ल युग के **(घ) शुक्लोत्तर युग के**

प्रश्न 113. निम्नलिखित में से जीवनी है— (2013, 15)
(क) क्या भूलूँ क्या याद करूँ (ख) चिन्तामणि
(ग) आवारा मसीहा (घ) अतीत के चलचित्र

प्रश्न 114. बाबू गुलाबराय की आत्मकथा है— (2013)
(क) कुछ आप बीती कुछ जग बीती (ख) मेरा जीवन-प्रवाह
(ग) मेरी असफलताएँ (घ) अपनी खबर

प्रश्न 115. उपन्यास विधा पर आधारित रचना है— (2013, 16)
(क) स्कन्दगुप्त **(ख) गोदान**
(ग) अशोक के फूल (घ) चिन्तामणि

प्रश्न 116. सम्पादन द्वारा लेखों की भाषायी विसंगतियों को दूर किया— (2015)
(क) भारतेन्दु हरिश्चन्द्र ने (ख) प्रतापनारायण मिश्र ने
(ग) महावीरप्रसाद द्विवेदी ने (घ) आचार्य रामचन्द्र शुक्ल ने

प्रश्न 117. आचार्य महावीरप्रसाद द्विवेदी की रचना है— (2015)
(क) अशोक के फूल (ख) त्रिवेणी
(ग) साहित्य-सीकर (घ) कल्पवृक्ष

प्रश्न 118. 'वोल्गा से गंगा' कहानी-संग्रह है— (2016)
(क) जैनेन्द्र कुमार का (ख) यशपाल का
(ग) राहुल सांकृत्यायन का (घ) प्रेमचन्द का

प्रश्न 119. 'पवित्रता' निबन्ध के लेखक हैं— (2015)
(क) आचार्य महावीरप्रसाद द्विवेदी
(ख) सरदार पूर्णसिंह
(ग) हरिशंकर परसाई
(घ) डॉ० वासुदेवशरण अग्रवाल

प्रश्न 120. उत्तर प्रदेश सरकार में शिक्षामन्त्री और मुख्यमन्त्री पद को अलंकृत करने वाले साहित्यकार हैं— (2015)
(क) राहुल सांकृत्यायन (ख) डॉ० वासुदेवशरण अग्रवाल
(ग) डॉ० सम्पूर्णानन्द (घ) इनमें से कोई नहीं

प्रश्न 121. 'मेरी जीवन यात्रा' किस विधा की रचना है? इसके रचनाकार कौन हैं? (2015)
(क) आत्मकथा—डॉ० सम्पूर्णानन्द
(ख) आत्मकथा—राहुल सांकृत्यायन
(ग) निबन्ध—आचार्य रामचन्द्र शुक्ल
(घ) निबन्ध—श्यामसुन्दर दास

प्रश्न 122. रामवृक्ष बेनीपुरी की रचना है— (2015)
(क) वोल्गा से वोल्गा तक (ख) वाग् विलास
(ग) पतितों के देश में (घ) चिन्तामणि

प्रश्न 123. 'पृथिवीपुत्र' और 'माता-भूमि' नामक निबन्ध-संग्रह के रचनाकार हैं
या **'पृथिवीपुत्र' निबन्ध-संग्रह है—** (2015, 17)
(क) सरदार पूर्णसिंह **(ख) वासुदेवशरण अग्रवाल**
(ग) हरिशंकर परसाई (घ) कन्हैयालाल मिश्र 'प्रभाकर'

प्रश्न 124. 'सारिका' पत्रिका का सम्पादन किया— (2015)
(क) प्रोफेसर जी० सुन्दर रेड्डी
(ख) सच्चिदानन्द हीरानन्द वात्स्यायन 'अज्ञेय'
(ग) जैनेन्द्र कुमार
(घ) मोहन राकेश

प्रश्न 125. डॉ० हजारीप्रसाद द्विवेदी का उपन्यास है— (2015)
(क) त्याग (ख) भूले-बिसरे चित्र
(ग) अनामदास का पोथा (घ) सूरज का सातवाँ घोड़ा

प्रश्न 126. देवबन्द (सहारनपुर) जन्म-स्थान है— (2015)
(क) मोहन राकेश का (ख) श्यामसुन्दर दास का
(ग) डॉ० सम्पूर्णानन्द का **(घ) कन्हैयालाल मिश्र 'प्रभाकर' का**

प्रश्न 127. 'हिन्दी प्रदीप' पत्र का सम्पादन होता था— (2015)
(क) इलाहाबाद से (ख) वाराणसी से
(ग) कानपुर से (घ) दिल्ली से

प्रश्न 128. स्कन्दगुप्त नाटक के लेखक हैं— (2015, 18)
(क) प्रेमचन्द (ख) लक्ष्मीनारायण मिश्र
(ग) जयशंकर प्रसाद (घ) धर्मवीर भारती

प्रश्न 129. इन्दुमती है— (2015)
(क) प्रथम कहानी (ख) प्रथम उपन्यास
(ग) निबन्ध (घ) इनमें से कोई नहीं

प्रश्न 130. 'अपनी खबर' (पाण्डेय बेचन शर्मा 'उग्र') किस विधा की रचना है? (2010, 15)
(क) निबन्ध **(ख) आत्मकथा** (ग) उपन्यास (घ) कहानी

प्रश्न 131. 'मेरी असफलताएँ' (बाबू गुलाबराय) किस विधा की रचना है? (2011, 13, 15)
(क) जीवनी-साहित्य (ख) कहानी
(ग) डायरी **(घ) आत्मकथा**

प्रश्न 132. 'खड़ी बोली गद्य' की प्रथम रचना है— (2015)
(क) कविवचन सुधा **(ख) गोरा बादल की कथा**
(ग) कामायनी (घ) चिदम्बरा

प्रश्न 133. 'त्यागपत्र' विधा की दृष्टि से रचना है— (2015)
(क) कहानी (ख) निबन्ध
(ग) उपन्यास (घ) नाटक

प्रश्न 134. 'अतिचार' रचना के सम्पादक हैं— (2015)
(क) बालमुकुन्द गुप्त **(ख) मुनि जिनविजय**
(ग) किशोरीलाल गोस्वामी (घ) नाभादास

प्रश्न 135. 'शृंगार रस-मंडन' के रचनाकार हैं— (2015, 18)
(क) नाभादास (ख) चतुर्भुज दास
(ग) बिट्ठलनाथ (घ) ज्योतिरीश्वर ठाकुर

प्रश्न 136. 'राधाकृष्णदास' लेखक थे— (2015)
(क) भारतेन्दु युग के (ख) द्विवेदी युग के
(ग) छायावाद युग के (घ) छायावादोत्तर युग के

प्रश्न 137. 'हिन्दी साहित्य का इतिहास' के लेखक हैं— (2015)
(क) हजारीप्रसाद द्विवेदी **(ख) रामचन्द्र शुक्ल**
(ग) डॉ० नगेन्द्र (घ) डॉ० रामकुमार वर्मा

प्रश्न 138. 'वसुधा' मासिक पत्रिका का सम्पादन किया था— (2016)
(क) रायकृष्ण दास ने (ख) रामवृक्ष बेनीपुरी ने
(ग) अज्ञेय ने **(घ) हरिशंकर परसाई ने**

प्रश्न 139. 'हंस' नामक पत्रिका के सम्पादक थे— (2010, 14, 16, 18)
(क) महावीरप्रसाद द्विवेदी (ख) भारतेन्दु हरिश्चन्द्र
(ग) बालकृष्ण भट्ट **(घ) मुंशी प्रेमचन्द**

प्रश्न 140. 'दिनकर के पत्र' का प्रकाशन-वर्ष है— (2012, 16)
(क) 1970 (ख) 1977 **(ग) 1981** (घ) 1991

प्रश्न 141. 'ज्ञानोदय' पत्रिका के सम्पादक थे— (2016)
(क) डॉ० सम्पूर्णानन्द (ख) पं० महावीरप्रसाद द्विवेदी
(ग) कन्हैयालाल मिश्र 'प्रभाकर' (घ) रामवृक्ष बेनीपुरी

प्रश्न 142. 'श्री चन्द्रावली' नामक नाटक के लेखक हैं— (2016)
(क) भारतेन्दु हरिश्चन्द्र (ख) जयशंकर प्रसाद
(ग) हरिकृष्ण प्रेमी (घ) श्रीनिवास दास

प्रश्न 143. 'मुद्रा राक्षस' नाटक के रचनाकार हैं— (2016)
(क) भारतेन्दु हरिश्चन्द्र (ख) मोहन राकेश
(ग) धर्मवीर भारती (घ) राहुल सांकृत्यायन

प्रश्न 144. गद्य विधा की संख्या है— (2016)
(क) तीन (ख) सात (ग) ग्यारह (घ) पन्द्रह

प्रश्न 145. 'नूतन ब्रह्मचारी' के रचनाकार हैं— (2016)
(क) सदल मिश्र **(ख) बालकृष्ण भट्ट**
(ग) लल्लू लाल (घ) मोहन राकेश

प्रश्न 146. 'ग्यारह वर्ष का समय' के रचनाकार हैं– (2016)
(क) मुंशी इंशाअल्ला खाँ (ख) राजेन्द्र बाला घोष
(ग) रामचन्द्र शुक्ल (घ) जयशंकर प्रसाद

प्रश्न 147. हिन्दी के रेखाचित्रकार हैं– (2016)
(क) जयशंकर प्रसाद **(ख) महादेवी वर्मा**
(ग) रामकुमार वर्मा (घ) विष्णु प्रभाकर

प्रश्न 148. 'बंगाल का अकाल' की विधा है– (2016)
(क) डायरी (ख) रेखाचित्र **(ग) रिपोर्ताज** (घ) भेंटवार्त्ता

प्रश्न 149. 'गुड़िया भीतर गुड़िया' की विधा है– (2016)
(क) कहानी **(ख) आत्मकथा** (ग) रेखाचित्र (घ) संस्मरण

प्रश्न 150. 'गोरा बादल की कथा' के लेखक हैं– (2016)
(क) कवि गंग **(ख) जटमल**
(ग) पं० दौलत राम (घ) रामप्रसाद निरंजनी

प्रश्न 151.'पैरों में पंख बाँधकर' यात्रावृत्तान्त कृति है– (2016)
(क) रामवृक्ष बेनीपुरी की (ख) डॉ० सम्पूर्णानन्द की
(ग) मोहन राकेश की (घ) वासुदेवशरण अग्रवाल की

प्रश्न 152.आधुनिक काल के प्रारम्भिक डायरी-लेखक हैं– (2016)
(क) घनश्याम दास बिड़ला (ख) त्रिलोचन
(ग) शमशेर बहादुर सिंह (घ) बच्चन

प्रश्न 153.'भारत दुर्दशा' रचना है– (2016)
(क) जयशंकर प्रसाद की (ख) रामकुमार वर्मा की
(ग) भारतेन्दु हरिश्चन्द्र की (घ) श्यामसुन्दर दास की

प्रश्न 154.'रसज्ञ-रंजन' कृति के लेखक हैं– (2015, 16)
(क) हजारीप्रसाद द्विवेदी **(ख) महावीरप्रसाद द्विवेदी**
(ग) भारतेन्दु हरिश्चन्द्र (घ) राहुल सांकृत्यायन

प्रश्न 155.सरदार पूर्णसिंह द्वारा लिखित निबन्ध नहीं है– (2016)
(क) सच्ची वीरता (ख) कन्यादान
(ग) पवित्रता **(घ) कालिदास की निरंकुशता**

प्रश्न 156.'चिद्विलास' के रचनाकार हैं– (2016)
(क) वासुदेवशरण अग्रवाल **(ख) डॉ० सम्पूर्णानन्द**
(ग) हरिशंकर परसाई (घ) महावीरप्रसाद द्विवेदी

प्रश्न 157.'पन्दहा' (आजमगढ़-उत्तर प्रदेश) जन्म-स्थान है– (2016)
(क) हजारीप्रसाद द्विवेदी का **(ख) राहुल सांकृत्यायन का**
(ग) भारतेन्दु हरिश्चन्द्र का (घ) मोहन राकेश का

प्रश्न 158. 'कालिदास की निरंकुशता' के रचनाकार हैं– (2016)
(क) महावीरप्रसाद द्विवेदी (ख) बालकृष्ण भट्ट
(ग) आचार्य रामचन्द्र शुक्ल (घ) नन्ददुलारे वाजपेयी

प्रश्न 159. गद्य-विधा की दृष्टि से 'वोल्गा से गंगा' है– (2012, 14, 16)
(क) उपन्यास **(ख) कहानी**
(ग) आत्मकथा (घ) संस्मरण

प्रश्न 160. 'वर्ण रत्नाकर' के रचनाकार हैं– (2017)
(क) मथुरानाथ शुक्ल (ख) दौलतराम
(ग) रामप्रसाद निरंजनी **(घ) ज्योतिरीश्वर**

प्रश्न 161. सरदार पूर्णसिंह किस युग के लेखक हैं? (2017)
(क) भारतेन्दु युग **(ख) द्विवेदी युग**
(ग) छायावाद युग (घ) प्रगतिवाद युग

प्रश्न 162. डॉ० हजारीप्रसाद द्विवेदी की रचना है– (2017)
(क) चिन्तामणि (ख) पंच परमेश्वर
(ग) कुटज (घ) चन्द्रकान्ता

प्रश्न 163.वासुदेवशरण अग्रवाल की रचना है– (2017)
(क) अन्तराल (ख) त्रिशंकु (ग) तट की खोज **(घ) वाग्धारा**

प्रश्न 164. संस्मरण विधा की रचना है– (2017)
(क) दीप जले शंख बजे (ख) बाजे पायलिया के घुँघरू
(ग) अरे यायावर रहेगा याद (घ) तब की बात और थी

प्रश्न 165. आलोचनात्मक कृति 'कालिदास की लालित्य-योजना' के लेखक हैं– (2017)
(क) हरिशंकर परसाई (ख) मोहन राकेश
(ग) डॉ० हजारीप्रसाद द्विवेदी (घ) महावीरप्रसाद द्विवेदी

प्रश्न 166. डॉ० श्यामसुन्दर दास द्वारा लिखित 'मेरी कहानी' हिन्दी गद्य की कौन-सी विधा है? (2018)
(क) आत्मकथा (ख) जीवनी (ग) संस्मरण (घ) कहानी

प्रश्न 167.'वारिस' कहानी-संग्रह है– (2017)
(क) कन्हैयालाल मिश्र 'प्रभाकर' का
(ख) प्रो० जी० सुन्दर रेड्डी का
(ग) मोहन राकेश का
(घ) 'अज्ञेय' का

प्रश्न 168. हरिशंकर परसाई की रचना है– (2017)
(क) कल्पवृक्ष (ख) धरती के फूल
(ग) तब की बात और थी (घ) मेरे विचार

प्रश्न 169. डॉ० हजारीप्रसाद द्विवेदी द्वारा लिखे गये निम्न ग्रन्थों में से हिन्दी साहित्य के इतिहास से सम्बन्धित ग्रन्थ नहीं है– (2017)
(क) हिन्दी साहित्य की भूमिका
(ख) हिन्दी साहित्य का आदिकाल
(ग) हिन्दी-साहित्य **(घ) चारुचन्द्र-लेख**

प्रश्न 170. 'भूले-बिसरे चेहरे' रेखाचित्र के रचयिता हैं– (2018)
(क) कन्हैयालाल मिश्र 'प्रभाकर' (ख) अमृत राय
(ग) महावीरप्रसाद द्विवेदी (घ) राजेन्द्र यादव

प्रश्न 171. 'परीक्षा-गुरु' के लेखक हैं– (2018)
(क) हजारीप्रसाद द्विवेदी (ख) सदल मिश्र
(ग) लक्ष्मण सिंह **(घ) लाला श्रीनिवास दास**

प्रश्न 172. 'स्कन्दगुप्त' नाटक के लेखक हैं– (2018)
(क) प्रेमचन्द (ख) लक्ष्मीनारायण मिश्र
(ग) जयशंकर प्रसाद (घ) धर्मवीर भारती

प्रश्न 173. 'शेखर एक जीवनी' के लेखक हैं– (2018)
(क) भीष्म साहनी (ख) जयशंकर प्रसाद
(ग) सच्चिदानन्द हीरानन्द वात्स्यायन 'अज्ञेय'
(घ) प्रेमचन्द

प्रश्न 174. 'नासिकेतोपाख्यान' के लेखक हैं– (2018)
(क) लल्लूलाल (ख) सदासुखलाल
(ग) सदल मिश्र (घ) इंशाअल्ला खाँ

प्रश्न 175. बालमुकुन्द गुप्त किस युग के लेखक थे? (2018)
(क) भारतेन्दु युग के (ख) द्विवेदी युग के
(ग) छायावादी युग के (घ) प्रगतिवादी युग के

प्रश्न 176. श्यामसुन्दर दास की शैली है– (2018)
(क) व्यास (ख) समास **(ग) भावात्मक** (घ) व्यंग्यात्मक

प्रश्न 177. किसके गद्य में करुण संवेदना की प्रधानता है? (2018)
(क) माखनलाल चतुर्वेदी के (ख) पाण्डेय बेचन शर्मा 'उग्र' के
(ग) जयशंकर प्रसाद के **(घ) महादेवी वर्मा के**

प्रश्न 178. निबन्ध प्रौढ़तम स्तर तक पहुँचा— (2018)
(क) द्विवेदी युग में (ख) शुक्ल युग में
(ग) शुक्लोत्तर युग में (घ) प्रयोगवादी युग में

प्रश्न 179. किस रचना के लेखक प्रो० जी० सुन्दर रेड्डी हैं? (2018)
(क) 'वैचारिकी, शोध और बोध'
(ख) 'भारत की मौलिक एकता'
(ग) 'विचार और वितर्क' (घ) 'आत्मनेपद'

प्रश्न 180. मोहन राकेश की रचना नहीं है— (2018)
(क) 'लहरों के राजहंस' (ख) 'बकलमखुद'
(ग) 'तट की खोज' (घ) 'समय-सारथी'

प्रश्न 181. 'शिकायत मुझे भी है' निबन्ध-संग्रह है— (2018)
(क) धर्मवीर भारती का
(ख) सच्चिदानन्द हीरानन्द वात्स्यायन 'अज्ञेय' का
(ग) कन्हैयालाल मिश्र 'प्रभाकर' का
(घ) हरिशंकर परसाई का

प्रश्न 182. 'आखिरी चट्टान' की रचना-विधा है— (2018)
(क) संस्मरण **(ख) यात्रावृत्तांत** (ग) उपन्यास (घ) कहानी

प्रश्न 183. 'आलोचना-साहित्य' से सम्बन्धित कृति है— (2018)
(क) 'विचार-प्रवाह'
(ख) 'हिन्दी साहित्य का आदिकाल'
(ग) 'साहित्य-सहचर'
(घ) 'सन्देश-रासक'

प्रश्न 184. 'पाणिनिकालीन भारत' शोध प्रबन्ध है— (2018)
(क) वासुदेवशरण अग्रवाल का (ख) मोहन राकेश का
(ग) प्रो० जी० सुन्दर रेड्डी का (घ) हरिशंकर परसाई का

प्रश्न 185. 'वसुधा' नामक पत्रिका का सम्पादन-प्रकाशन किया था— (2018)
(क) कन्हैयालाल मिश्र 'प्रभाकर' ने **(ख) हरिशंकर परसाई ने**
(ग) हजारीप्रसाद द्विवेदी ने (घ) जैनेन्द्र कुमार ने

प्रश्न 186. 'कवि-वचन सुधा' के सम्पादक थे— (2018)
(क) बालकृष्ण भट्ट **(ख) भारतेन्दु हरिश्चन्द्र**
(ग) प्रतापनारायण मिश्र
(घ) बदरीनारायण चौधरी 'प्रेमघन'

प्रश्न 187. प्रेमचन्द का उपन्यास है— (2018)
(क) तितली (ख) कंकाल **(ग) गोदान** (घ) त्यागपत्र

प्रश्न 188. 'पैरों में पंख बाँधकर' कृति की विधा है— (2018)
(क) आत्मकथा (ख) जीवनी **(ग) यात्रावृत्त** (घ) उपन्यास

अथवा

✿ निम्नलिखित में से किन्हीं पाँच प्रश्नों के उत्तर लिखिए—

प्रश्न 1. व्यापक अर्थ में हिन्दी की कितनी बोलियाँ हैं ? उनके नाम लिखिए।
उत्तर— व्यापक अर्थ में हिन्दी की आठ बोलियाँ हैं, जिनके नाम हैं—ब्रज, अवधी, खड़ी बोली, बघेली, बुन्देली, हरियाणवी, कन्नौजी, छत्तीसगढ़ी।

प्रश्न 2. हिन्दी की कितनी उपभाषाएँ हैं ?
उत्तर— हिन्दी की तीन उपभाषाएँ हैं—(1) राजस्थानी, (2) पहाड़ी तथा (3) बिहारी।

प्रश्न 3. 'फोर्ट विलियम कॉलेज' के दो शिक्षकों की एक-एक प्रसिद्ध रचना का नाम बताइए।

उत्तर—	शिक्षक	रचना
	(1) सदल मिश्र	नासिकेतोपाख्यान
	(2) लल्लू लाल	प्रेमसागर

(2014)

प्रश्न 4. भारतेन्दु से पूर्व कौन-से दो राजा लेखक हुए ? उनकी गद्य शैली का अन्तर बताइए। (2009)
उत्तर— (1) राजा शिवप्रसाद 'सितारेहिन्द' तथा (2) राजा लक्ष्मणसिंह।
राजा शिवप्रसाद की गद्य शैली उर्दू-फ़ारसी मिश्रित थी तथा राजा लक्ष्मणसिंह संस्कृतनिष्ठ गद्य लिखते थे।

प्रश्न 5. 'इन्दुमती' तथा 'उसने कहा था' कहानियों के लेखकों के नाम बताइए।
उत्तर— इन्दुमती—किशोरीलाल गोस्वामी।
उसने कहा था—चन्द्रधर शर्मा 'गुलेरी'।

प्रश्न 6. प्रेमचन्द के दो प्रसिद्ध उपन्यासों के नाम लिखिए। (2010)
उत्तर— (1) गोदान तथा (2) गबन।

प्रश्न 7. द्विवेदी युग की सर्वाधिक प्रसिद्ध साहित्यिक पत्रिका तथा उसके सम्पादक का नाम लिखिए।
या **'सरस्वती' पत्रिका के सम्पादक का नाम लिखिए।** (2011, 13)
उत्तर— द्विवेदी युग की सर्वाधिक प्रसिद्ध साहित्यिक पत्रिका **'सरस्वती'** के सम्पादक **आचार्य महावीरप्रसाद द्विवेदी** थे।

प्रश्न 8. हिन्दी के प्रथम मौलिक उपन्यास और उसके लेखक का नाम बताइए। (2014)
उत्तर— प्रथम मौलिक उपन्यास—'परीक्षा गुरु'।
लेखक—श्रीनिवासदास।

प्रश्न 9. 'परीक्षा गुरु' नामक रचना की विधा लिखिए। (2013)
उत्तर— 'परीक्षा गुरु' उपन्यास विधा की रचना है।

प्रश्न 10. जयशंकर प्रसाद के दो उपन्यासों के नाम लिखिए।
उत्तर— (1) कंकाल तथा (2) तितली।

प्रश्न 11. आधुनिक युग के दो उपन्यासकारों और उनके एक-एक उपन्यास का नाम लिखिए।
या **आधुनिक युग के दो उपन्यासकारों के नाम लिखिए।** (2011)
उत्तर— (1) अज्ञेय—शेखर : एक जीवनी तथा (2) जैनेन्द्र कुमार—परख।

प्रश्न 12. हिन्दी एकांकी का जनक किसे माना जाता है ? (2017)
उत्तर— डॉ० रामकुमार वर्मा को आधुनिक हिन्दी एकांकी का जनक माना जाता है।

प्रश्न 13. द्विवेदी युग के दो प्रमुख आलोचकों के नाम लिखिए।
उत्तर— (1) पं० महावीरप्रसाद द्विवेदी तथा (2) बाबू श्यामसुन्दर दास।

प्रश्न 14. छायावादोत्तर हिन्दी गद्य (प्रगतिवादी गद्य) की दो विशेषताएँ लिखिए।
उत्तर— (1) छायावादोत्तर गद्य मार्क्सवादी विचारधारा से प्रभावित है।
(2) उसमें यथार्थवादी जीवन-दर्शन को महत्त्व दिया गया है।

प्रश्न 15. हिन्दी के किन्हीं दो प्रमुख रेखाचित्रकारों के नाम लिखिए। (2011)
उत्तर— (1) महादेवी वर्मा तथा (2) रामवृक्ष बेनीपुरी।

प्रश्न 16. छायावादोत्तर युग के प्रमुख जीवनी लेखकों के नाम लिखिए।
उत्तर— (1) रामवृक्ष बेनीपुरी, (2) राहुल सांकृत्यायन, (3) अमृतराय, (4) विष्णु प्रभाकर, (5) रामविलास शर्मा आदि।

प्रश्न 17. किन्हीं दो रिपोर्ताज लेखकों के नाम लिखिए।
उत्तर— (1) धर्मवीर भारती तथा (2) कन्हैयालाल मिश्र 'प्रभाकर'।

प्रश्न 18. निम्नलिखित पत्रिकाओं के सम्पादकों के नाम लिखिए

उत्तर— पत्रिका	सम्पादक
धर्मयुग	धर्मवीर भारती
साहित्य सन्देश	गुलाबराय
समालोचक	चन्द्रधर शर्मा 'गुलेरी'

हंस (छायावादी युग) (2010, 14, 16, 17, 18)	प्रेमचन्द	निबन्ध-संग्रह
कवि वचन सुधा	भारतेन्दु हरिश्चन्द्र	शोध प्रबन्ध
हरिश्चन्द्र मैगजीन (2009) (हरिश्चन्द्र चन्द्रिका)	भारतेन्दु हरिश्चन्द्र	
मर्यादा (2011, 13, 14)	डॉ० सम्पूर्णानन्द	
तरुण भारती	रामवृक्ष बेनीपुरी	
नया जीवन	कन्हैयालाल मिश्र 'प्रभाकर'	
वसुधा	हरिशंकर परसाई	
कादम्बिनी	राजेन्द्र अवस्थी	
विशाल भारत	श्रीराम शर्मा	
विकास	कन्हैयालाल मिश्र 'प्रभाकर'	

प्रश्न 19. भारतेन्दु से पूर्व हिन्दी गद्य के चार प्रवर्तकों और उनकी रचनाओं के नाम लिखिए।

या **खड़ी बोली के प्रारम्भिक उन्नायकों में विशेष रूप से जिन चार लेखकों का उल्लेख किया जाता है, उनमें से किन्हीं दो की एक-एक रचना का नाम लिखिए।** (2009)

या **'रानी केतकी की कहानी' के लेखक कौन हैं ?** (2011, 13, 17)

उत्तर— भारतेन्दु से पूर्व हिन्दी गद्य के चार प्रवर्तकों और उनकी एक-एक रचनाओं के नाम निम्नलिखित हैं

(1) **इंशाअल्ला खाँ** — रानी केतकी की कहानी।

(2) **सदासुखलाल** — सुखसागर।

(3) **लल्लूलाल** — प्रेमसागर।

(4) **सदल मिश्र** — नासिकेतोपाख्यान। (2014)

इनमें सदल मिश्र तथा लल्लूलाल कलकत्ता के 'फोर्ट विलियम कॉलेज' में अध्यापक थे।

प्रश्न 20. भारतेन्दु युग की प्रमुख पत्रिकाओं एवं उनके सम्पादकों के नाम लिखिए।

या **भारतेन्दु युग की दो प्रसिद्ध पत्रिकाओं के नाम लिखिए।** (2009)

या **भारतेन्दु युग में किस पत्रिका का प्रकाशन हुआ ?** (2011)

या **'आनन्द कादम्बिनी' के सम्पादक कौन थे ?** (2017)

उत्तर— (1) **'ब्राह्मण'**—प्रतापनारायण मिश्र, (2) **'हिन्दी प्रदीप'**—पं० बालकृष्ण भट्ट तथा (3) **'आनन्द कादम्बिनी'**—बदरीनारायण चौधरी 'प्रेमघन'

प्रश्न 21. हिन्दी की प्रथम मौलिक कहानी का नाम बताइए। (2009)

उत्तर— कहानी-कला की दृष्टि से किशोरीलाल गोस्वामी की **'इन्दुमती'** हिन्दी-साहित्य की प्रथम मौलिक कहानी है।

प्रश्न 22. डायरी विधा की प्रथम रचना का नामोल्लेख कीजिए। (2009)

उत्तर— नरदेव शास्त्री 'वेदतीर्थ' को प्रथम डायरी लेखक माना जाता है। उनकी डायरी "नरदेव शास्त्री 'वेदतीर्थ' की जेल डायरी" का प्रकाशन 1930 ई० के आसपास माना जाता है।

'गद्य गरिमा' में संकलित लेखक

परीक्षार्थी ध्यान दें—प्रथम प्रश्न के अन्तर्गत पूछे जा रहे बहुविकल्पीय प्रश्नों के उत्तर हेतु इनका अध्ययन आवश्यक होगा।

वासुदेवशरण अग्रवाल

पृथिवीपुत्र (2017)	निबन्ध-संग्रह
भारत की एकता (2017)	निबन्ध-संग्रह
वाग्धारा	निबन्ध-संग्रह
कल्पवृक्ष	निबन्ध-संग्रह
माता-भूमि	निबन्ध-संग्रह
कल्पलता (2018)	निबन्ध-संग्रह
कला और संस्कृति	निबन्ध-संग्रह
राष्ट्र का स्वरूप (2009, 13)	निबन्ध-संग्रह
पाणिनिकालीन भारत (2017)	शोध प्रबन्ध

कन्हैयालाल मिश्र 'प्रभाकर'

जिन्दगी मुसकाई	रेखाचित्र
माटी हो गई सोना	रेखाचित्र
धरती के फूल	लघुकथा-संग्रह
महके आँगन चहके द्वार	रेखाचित्र
भूले-बिसरे चेहरे (2018)	रेखाचित्र
आकाश के तारे	लघुकथा-संग्रह
दीप जले शंख बजे (2017, 18)	संस्मरण
मेरे पिताजी (2012)	संस्मरण
क्षण बोले कण मुसकाये	रिपोर्ताज
नयी पीढ़ी के विचार	रेखाचित्र
बाजे पायलिया के घुँघरू	ललित निबन्ध

आचार्य हजारीप्रसाद द्विवेदी

अशोक के फूल (2009, 12)	निबन्ध-संग्रह
आलोक पर्व	निबन्ध-संग्रह
विचार-प्रवाह (2011)	निबन्ध-संग्रह
कल्पलता	निबन्ध-संग्रह
कबीर (2011)	आलोचना
कुटज	निबन्ध-संग्रह
सूरदास	आलोचना
साहित्य का मर्म (2009)	आलोचना
अनामदास का पोथा	उपन्यास
बाणभट्ट की आत्मकथा (2012, 14)	उपन्यास
पुनर्नवा (2017)	उपन्यास
चारुचन्द्र-लेख (2009)	उपन्यास
विचार और वितर्क	निबन्ध-संग्रह
हिन्दी साहित्य की भूमिका (2009)	इतिहास-ग्रन्थ
कालिदास की लालित्य योजना	आलोचना
साहित्य-सहचर	आलोचना
नाथ सिद्धों की बानियाँ	सम्पादित ग्रन्थ
विश्व-परिचय	अनूदित रचना
लाल कनेर	अनूदित रचना
मेरा बचपन	अनूदित रचना

प्रो० जी० सुन्दर रेड्डी

हिन्दी और तेलुगू : एक तुलनात्मक अध्ययन	शोधग्रन्थ/आलोचना
दक्षिण की भाषाएँ और उनका साहित्य	शोधग्रन्थ/आलोचना
शोध और बोध	शोधग्रन्थ
साहित्य और समाज (2017)	निबन्ध-संग्रह
मेरे विचार	निबन्ध-संग्रह
वैचारिकी	निबन्ध-संग्रह
भाषा और आधुनिकता (2011, 12, 17)	निबन्ध

हरिशंकर परसाई

जैसे उनके दिन फिरे	कहानी-संग्रह
निन्दा रस (2018)	निबन्ध-संग्रह
रानी नागफनी की कहानी (2017)	उपन्यास
तट की खोज (2014)	उपन्यास
भूत के पाँव पीछे	निबन्ध-संग्रह
सदाचार का ताबीज	निबन्ध-संग्रह
शिकायत मुझे भी है (2017)	निबन्ध-संग्रह
हँसते हैं रोते हैं	कहानी-संग्रह
तब की बात और थी	निबन्ध-संग्रह
बेईमानी की परत (2011)	निबन्ध-संग्रह

Sdc Study Subscribe

पगडण्डियों का जमाना (2012)	निबन्ध-संग्रह
और अन्त में	निबन्ध-संग्रह
विकलांग श्रद्धा का दौर	निबन्ध-संग्रह

डॉ० ए०पी०जे० अब्दुल कलाम

इण्डिया 2020 : अ विजन और द न्यू मिलेनियम
विंग्स ऑफ फायर : ऐन ऑटोबायोग्राफी
यूनाइटेड माइण्ड्स : अनलीशिंग द पावर
विजन इण्डिया
मिशन इण्डिया
इण्डोमिटेबल स्पिरिट

प्रमुख लेखक और उनकी रचनाएँ

रचनाएँ	लेखक
दो सौ बावन वैष्णवन की वार्त्ता	—गोकुलनाथ
चौरासी वैष्णवन की वार्त्ता (2014)	—गोकुलनाथ
शृंगार रस-मण्डन (2015, 18)	—बिट्ठलनाथ
वैशाख माहात्म्य	—बैकुण्ठमणि शुक्ल
अष्टयाम (2010, 12)	—नाभादास
बनारसीदास विलास	—बनारसीदास
भक्तमाल प्रसंग	—वैष्णवदास
चन्द छन्द बरनन की महिमा	—कवि गंग
गोरा बादल की कथा	—जटमल
भाषा योगवाशिष्ठ (2010, 18)	—रामप्रसाद निरंजनी
पद्मपुराण	—पं० दौलतराम
रानी केतकी की कहानी (2010, 11, 13)	—इंशाअल्ला खाँ
सुखसागर (2012)	—मुंशी सदासुखलाल
प्रेमसागर (2015, 18)	—लल्लूलाल
माधव विलास (2017)	—लल्लूलाल
नासिकेतोपाख्यान (2012, 13, 14)	—सदल मिश्र
मानव धर्मसार (2014)	—राजा शिवप्रसाद 'सितारेहिन्द'
योगवाशिष्ठ के चुने हुए श्लोक	—राजा शिवप्रसाद 'सितारेहिन्द'
उपनिषद् सार	—राजा शिवप्रसाद 'सितारेहिन्द'
भूगोल हस्तामलक	—राजा शिवप्रसाद 'सितारेहिन्द'
वामा मनोरंजन	—राजा शिवप्रसाद 'सितारेहिन्द'
आलसियों का कोड़ा	—राजा शिवप्रसाद 'सितारेहिन्द'
विद्यांकुर	—राजा शिवप्रसाद 'सितारेहिन्द'
राजा भोज का सपना (2011)	—राजा शिवप्रसाद 'सितारेहिन्द'
इतिहास तिमिरनाशक	—राजा शिवप्रसाद 'सितारेहिन्द'
बेताल पचीसी	—राजा शिवप्रसाद 'सितारेहिन्द'
मेघदूत (अनुवाद)	—राजा लक्ष्मण सिंह
शाकुन्तल (अनुवाद)	—राजा लक्ष्मण सिंह
रघुवंश (अनुवाद)	—राजा लक्ष्मण सिंह
इन्दुमती	—किशोरीलाल गोस्वामी
परीक्षा गुरु (2009, 15)	—लाला श्रीनिवासदास
रणधीर और प्रेममोहिनी	—लाला श्रीनिवासदास
संयोगिता स्वयंवर (2014)	—लाला श्रीनिवासदास
सत्यामृत प्रवाह	—श्रद्धाराम फुल्लौरी
सब रस	—मौला वजही
शिकारनामा	—मेसूदराज बंदानवाज
नहुष (2014)	—गोपालचन्द्र (गिरिधरदास)
रेल का विकट खेल	—बालकृष्ण भट्ट
साहित्यालोचन (2016)	—श्यामसुन्दर दास
गोस्वामी तुलसीदास	—श्यामसुन्दर दास

रचनाएँ	लेखक
रूपक रहस्य	—श्यामसुन्दर दास
हिन्दी भाषा का विकास	—श्यामसुन्दर दास
भाषा-विज्ञान	—श्यामसुन्दर दास
हिन्दी साहित्य का इतिहास	—श्यामसुन्दर दास
मेरी कहानी	—श्यामसुन्दर दास
भाषा रहस्य	—श्यामसुन्दर दास
भारतेन्दु हरिश्चन्द्र	—श्यामसुन्दर दास
कवियों की खोज	—श्यामसुन्दर दास
भाषा सार हिन्दी संग्रह	—श्यामसुन्दर दास
हिन्दी पत्र-लेखन	—श्यामसुन्दर दास
हिन्दी ग्रामर	—श्यामसुन्दर दास
हिन्दी कुसुमावली	—श्यामसुन्दर दास
हिन्दी का आदिकवि	—श्यामसुन्दर दास
नीति शिक्षा	—श्यामसुन्दर दास
गद्य कुसुमावली	—श्यामसुन्दर दास
साहित्यिक लेख	—श्यामसुन्दर दास
हिन्दी निबन्धमाला	—श्यामसुन्दर दास
कबीर ग्रन्थावली	—श्यामसुन्दर दास
भारतेन्दु नाटकावली	—श्यामसुन्दर दास
हिन्दी शब्द-सागर	—श्यामसुन्दर दास
हिन्दी वैज्ञानिक कोश	—श्यामसुन्दर दास
छत्रप्रकाश	—श्यामसुन्दर दास
नासिकेतोपाख्यान	—श्यामसुन्दर दास
वनिता विनोद	—श्यामसुन्दर दास
हिन्दी कोविद रत्नमाला (2014)	—श्यामसुन्दर दास
हिन्दी भाषा और साहित्य	—श्यामसुन्दर दास
हिन्दी साहित्य निर्माता	—श्यामसुन्दर दास
उसने कहा था	—चन्द्रधर शर्मा गुलेरी
चिन्तामणि (2013, 16, 17, 18)	—आचार्य रामचन्द्र शुक्ल
रस मीमांसा	—आचार्य रामचन्द्र शुक्ल
जायसी ग्रन्थावली	—आचार्य रामचन्द्र शुक्ल
तुलसीदास	—आचार्य रामचन्द्र शुक्ल
सूरदास	—आचार्य रामचन्द्र शुक्ल
हिन्दी साहित्य का इतिहास	—आचार्य रामचन्द्र शुक्ल
ग्यारह वर्ष का समय (2016)	—आचार्य रामचन्द्र शुक्ल
छायापथ	—राय कृष्णदास
आँखों की थाह	—राय कृष्णदास
साधना	—राय कृष्णदास
संलाप	—राय कृष्णदास
प्रवाल	—राय कृष्णदास
अनाख्या	—राय कृष्णदास
सुधांशु	—राय कृष्णदास
ब्रजराज	—राय कृष्णदास
भावुक	—राय कृष्णदास
पगला (2012)	—राय कृष्णदास
भारत की चित्रकला	—राय कृष्णदास
भारतीय मूर्तिकला	—राय कृष्णदास
शेष स्मृतियाँ	—रघुवीर सिंह
सप्तदीप	—रघुवीर सिंह
जीवन कण	—रघुवीर सिंह
मालवा में युगान्तर	—रघुवीर सिंह
बिखरे फूल	—रघुवीर सिंह
आस्था के चरण	—डॉ० नगेन्द्र
विचार और अनुभूति	—डॉ० नगेन्द्र

रचनाएँ	लेखक
देव और उनकी कविता	—डॉ० नगेन्द्र
अप्रवासी की यात्राएँ	—डॉ० नगेन्द्र
छन्दमयी	—डॉ० नगेन्द्र
वनमाला	—डॉ० नगेन्द्र
सुमित्रानन्दन पन्त	—डॉ० नगेन्द्र
हिन्दी साहित्य का वृहद् इतिहास	—डॉ० नगेन्द्र
शृंखला की कड़ियाँ	—महादेवी वर्मा
अपनी कहानी	—महादेवी वर्मा
दीपशिखा	—महादेवी वर्मा
नीरजा	—महादेवी वर्मा
साहित्यकार की आस्था	—महादेवी वर्मा
क्षणदा	—महादेवी वर्मा
स्मृति की रेखाएँ	—महादेवी वर्मा
अतीत के चलचित्र	—महादेवी वर्मा
पथ के साथी (2009, 18)	—महादेवी वर्मा
मेरा परिवार	—महादेवी वर्मा
हठी हम्मीर	—प्रतापनारायण मिश्र
कलिकौतुक	—प्रतापनारायण मिश्र
मेरा जीवन-प्रवाह	—वियोगी हरि
चम्पारन में महात्मा गांधी	—डॉ० राजेन्द्र प्रसाद
अनन्त अथाह सागर	—जयप्रकाश भारती
सेवाग्राम की डायरी	—श्रीराम शर्मा
आवारा मसीहा (2012, 13, 16)	—विष्णु प्रभाकर
टूटते परिवेश	—विष्णु प्रभाकर
अपनी खबर (2010, 15)	—पाण्डेय बेचन शर्मा 'उग्र'
क्या भूलूँ क्या याद करूँ (2015)	—हरिवंशराय 'बच्चन'
नीड़ का निर्माण फिर (2011, 18)	—हरिवंशराय 'बच्चन'
चितवन की छाँह	—विद्यानिवास मिश्र
तुम चन्दन हम पानी	—विद्यानिवास मिश्र
वसन्त आ गया पर कोई उत्कण्ठा नहीं	—विद्यानिवास मिश्र
मेरे राम का मुकुट भीग रहा है	—विद्यानिवास मिश्र
मैंने सिल पहुँचाई	—विद्यानिवास मिश्र
साहित्य की चेतना	—विद्यानिवास मिश्र
हिन्दी की शब्द सम्पदा	—विद्यानिवास मिश्र
रीति विज्ञान	—विद्यानिवास मिश्र
आँगन का पंछी और बनजारा मन	—विद्यानिवास मिश्र
कदम की फूली डाल	—विद्यानिवास मिश्र
संस्कृति के चार अध्याय (2011)	—रामधारी सिंह 'दिनकर'
अर्द्धनारीश्वर	—रामधारी सिंह 'दिनकर'
सूरज का ब्याह	—रामधारी सिंह 'दिनकर'
भोर का तारा	—जगदीशचन्द्र माथुर
वैशाली की नगरवधू	—आचार्य चतुरसेन
मेरी असफलताएँ (2011)	—बाबू गुलाबराय
ठलुआ क्लब	—बाबू गुलाबराय
निराला की साहित्य साधना	—डॉ० रामविलास शर्मा
निराला की आत्मकथा	—डॉ० रामविलास शर्मा
भूदान-यज्ञ	—आचार्य विनोबा भावे
साहित्यावलोकन	—विनय मोहन शर्मा
तूफानों के बीच	—रांगेय राघव
सुबह के रंग	—अमृतराय
कलम का सिपाही (2018)	—अमृतराय
सूतपुत्र	—डॉ० गंगा सहाय प्रेमी
सिंहावलोकन (2010)	—यशपाल
परदा (2010)	—यशपाल

रचनाएँ	लेखक
गुनाहों के देवता (2014)	—धर्मवीर भारती
अन्धा युग	—धर्मवीर भारती
सूरज का सातवाँ घोड़ा	—धर्मवीर भारती
तमस	—भीष्म साहनी
डायरी के पन्ने	—घनश्यामदास बिड़ला
सिन्दूर की होली (2009)	—लक्ष्मीनारायण मिश्र
चन्द्रगुप्त	—जयशंकर प्रसाद
अजातशत्रु	—जयशंकर प्रसाद
ध्रुवस्वामिनी (2012)	—जयशंकर प्रसाद
स्कन्दगुप्त	—जयशंकर प्रसाद
तितली (2010, 13, 16)	—जयशंकर प्रसाद
आकाशदीप	—जयशंकर प्रसाद
कामायनी (2011, 15)	—जयशंकर प्रसाद
प्रस्तुत प्रश्न	—जैनेन्द्र कुमार
जड़ की बात	—जैनेन्द्र कुमार
काम, प्रेम और परिवार	—जैनेन्द्र कुमार
परख	—जैनेन्द्र कुमार
त्यागपत्र	—जैनेन्द्र कुमार
जयवर्धन	—जैनेन्द्र कुमार
जयसन्धि	—जैनेन्द्र कुमार
पूर्वोदय	—जैनेन्द्र कुमार
सुखदा	—जैनेन्द्र कुमार
नीलम देश की राजकन्या	—जैनेन्द्र कुमार
ये और वे	—जैनेन्द्र कुमार
साहित्य का श्रेय और प्रेय	—जैनेन्द्र कुमार
मन्थन	—जैनेन्द्र कुमार
सोच-विचार	—जैनेन्द्र कुमार
सुनीता (2014)	—जैनेन्द्र कुमार
कल्याणी	—जैनेन्द्र कुमार
विवर्त	—जैनेन्द्र कुमार
व्यतीत	—जैनेन्द्र कुमार
मुक्तिबोध	—जैनेन्द्र कुमार
फाँसी	—जैनेन्द्र कुमार
वातायन	—जैनेन्द्र कुमार
एक रात	—जैनेन्द्र कुमार
दो चिड़ियाँ	—जैनेन्द्र कुमार
पाजेब	—जैनेन्द्र कुमार
मन्दाकिनी (अनुवाद)	—जैनेन्द्र कुमार
पाप और प्रकाश (अनुवाद)	जैनेन्द्र कुमार
प्रेम में भगवान् (अनुवाद)	—जैनेन्द्र कुमार
मैला आँचल	—फणीश्वरनाथ 'रेणु'
परती परिकथा	—फणीश्वरनाथ 'रेणु'
शतरंज के खिलाड़ी	—प्रेमचन्द
गोदान (2013)	—प्रेमचन्द
कर्मभूमि (2009)	—प्रेमचन्द
सेवासदन	—प्रेमचन्द
निर्मला (2009)	—प्रेमचन्द
रंगभूमि (2009)	—प्रेमचन्द
गबन	—प्रेमचन्द
चित्रलेखा	—प्रेमचन्द
भूले-बिसरे चित्र	—भगवतीचरण वर्मा
मृगनयनी	—भगवतीचरण वर्मा
आत्मनेपद	—वृन्दावनलाल वर्मा
लिखि कागद कोरे	—सच्चिदानन्द हीरानन्द वात्स्यायन 'अज्ञेय'
	—'अज्ञेय'

रचनाएँ	लेखक
त्रिशंकु	—'अज्ञेय'
विपथगा	—सच्चिदानन्द हीरानन्द वात्स्यायन 'अज्ञेय'
तेरे ये प्रतिरूप	—'अज्ञेय'
नदी के द्वीप (2012)	—'अज्ञेय'
अरे यायावर रहेगा याद	—'अज्ञेय'
एक बूँद सहसा उछली (2011)	—'अज्ञेय'
उत्तर प्रियदर्शी (2014)	—'अज्ञेय'
शेखर : एक जीवनी (2016)	—'अज्ञेय'
अपने-अपने अजनबी (2017)	—'अज्ञेय'

रचनाएँ	लेखक
हिन्दी साहित्य : एक आधुनिक परिदृश्य	—'अज्ञेय'
सब रंग और कुछ राग	—'अज्ञेय'
दीपदान	—डॉ० रामकुमार वर्मा
बूँद और समुद्र	—अमृतलाल नागर
मानस का हंस	—अमृतलाल नागर
गिरती दीवारें	—उपेन्द्रनाथ 'अश्क'
जिन्दगी और जोंक (2014)	—अमरकान्त
बलचनमा (2014)	—नागार्जुन

❑

2 हिन्दी काव्य-साहित्य का विकास

प्रश्न-परिचय— सामान्य हिन्दी के **खण्ड 'क'** का **द्वितीय प्रश्न** पाठ्य-पुस्तक 'काव्यांजलि' में दिये गये भूमिका आदि प्रारम्भिक अंश और उसके विभिन्न पाठों एवं प्रमुख कवियों पर आधारित होगा। इसके अतिरिक्त विविध कालों में काव्य-साहित्य की प्रवृत्तियों, प्रतिनिधि कवि एवं उनकी प्रमुख कृतियों तथा विभिन्न कालों में पद्य की भाषा और अद्यतन रचना-विधाओं में परिवर्तन से सम्बन्धित **एक-एक अंक** के **पाँच** बहुविकल्पीय या अतिलघु उत्तरीय या दोनों प्रकार के प्रश्न पूछे जा सकते हैं। इसके लिए कुल **5 अंक** निर्धारित हैं।

परीक्षार्थी ध्यान दें— 1. अतिलघु उत्तरीय प्रश्नों के उत्तर एक-दो पंक्तियों में लिखने चाहिए। 2. बहुविकल्पीय प्रश्न के अन्तर्गत एक प्रश्न और उसके उत्तर रूप में चार विकल्प दिये जाते हैं। इनमें से किसी एक उपयुक्त विकल्प का चयन करना होता है। उत्तर के लिए प्रश्न-संख्या व उचित विकल्प (विकल्प-क्रम सहित) स्पष्ट अक्षरों में लिखना चाहिए।

✿ निम्नलिखित में से किन्हीं पाँच प्रश्नों के उचित विकल्प का चयन कीजिए—

[*संकेत— मोटे व काले अक्षरों में छपे विकल्प सही हैं।*]

प्रश्न 1. भक्ति आन्दोलन का श्रेय जाता है— (2016)
(क) वल्लभाचार्य को (ख) शंकराचार्य को
(ग) रामानुजाचार्य को (घ) निम्बार्काचार्य को

प्रश्न 2. आदिकाल का एक अन्य नाम है—
(क) स्वर्ण युग **(ख) सिद्ध-सामन्त काल**
(ग) शृंगार काल (घ) भक्तिकाल

प्रश्न 3. आदिकाल का नाम अपभ्रंश काल दिया है— (2014)
(क) मिश्र बन्धु ने (ख) राहुल सांकृत्यायन ने
(ग) महावीरप्रसाद द्विवेदी ने **(घ) चन्द्रधर शर्मा 'गुलेरी' ने**

प्रश्न 4. 'आल्हखण्ड' का दूसरा नाम है— (2014)
(क) बीसलदेव **(ख) परमाल रासो**
(ग) खुमाण रासो (घ) हम्मीर रासो

प्रश्न 5. आदिकाल की रचना नहीं है— (2013)
(क) उक्ति-व्यक्ति-प्रकरण (ख) जयचन्द प्रकाश
(ग) राउल वेल **(घ) मृगावती**

प्रश्न 6. 'दोहाकोश' के रचनाकार हैं— (2014)
(क) शबरपा (ख) लुइपा **(ग) सरहपा** (घ) कण्हपा

प्रश्न 7. रामचन्द्र शुक्ल ने जिस काल को 'वीरगाथा काल' कहा है, उसे 'आदिकाल' कहा है— (2014)
(क) राहुल सांकृत्यायन ने **(ख) हजारीप्रसाद द्विवेदी ने**
(ग) डॉ० रामकुमार वर्मा ने (घ) डॉ० धीरेन्द्र वर्मा ने

प्रश्न 8. 'अमीर खुसरो' कवि हैं— (2014)
(क) आदिकाल के (ख) भक्तिकाल के
(ग) रीतिकाल के (घ) आधुनिककाल के

प्रश्न 9. कौन-सी रचना वीरगाथात्मक नहीं है ? (2009)
(क) परमाल रासो **(ख) विद्यापति-पदावली**
(ग) पृथ्वीराज रासो (घ) बीसलदेव रासो

प्रश्न 10. आदिकाल के रचनाकार हैं— (2011)
(क) नरपति नाल्ह (ख) अयोध्यासिंह उपाध्याय 'हरिऔध'
(ग) केशवदास (घ) नाभादास

प्रश्न 11. जायसी का 'पद्मावत' किस भाषा में लिखा गया है ?
(क) ब्रजभाषा **(ख) अवधी** (ग) खड़ी बोली (घ) फारसी

प्रश्न 12. "हिन्दी साहित्य के हजार वर्षों में कबीर जैसा व्यक्तित्व लेकर कोई लेखक उत्पन्न नहीं हुआ।" यह कथन है— (2012, 14)
(क) रामचन्द्र शुक्ल का (ख) डॉ० रामकुमार वर्मा का
(ग) डॉ० नगेन्द्र का **(घ) हजारीप्रसाद द्विवेदी का**

प्रश्न 13. ज्ञानाश्रयी शाखा के प्रतिनिधि कवि हैं— (2013)
(क) तुलसीदास (ख) सूरदास (ग) नन्ददास **(घ) कबीरदास**

प्रश्न 14. "भाषा पर कबीर का जबरदस्त अधिकार था। वे वाणी के डिक्टेटर थे।" प्रस्तुत कथन निम्नांकित लेखकों में से किस लेखक का है? (2015)
(क) नन्ददुलारे वाजपेयी (ख) रामचन्द्र शुक्ल
(ग) हजारीप्रसाद द्विवेदी (घ) रामविलास शर्मा

प्रश्न 15. कौन-सा कवि ज्ञानाश्रयी शाखा से सम्बन्धित नहीं है ? (2009)
या **सन्त-काव्यधारा के कवि नहीं हैं—** (2013)
(क) कबीर (ख) नानक
(ग) रैदास **(घ) कुतुबन व जायसी**

प्रश्न 16. ज्ञानाश्रयी काव्यधारा के कवि नहीं हैं— (2014)
(क) कबीरदास (ख) मलूकदास
(ग) नन्ददास (घ) रैदास

प्रश्न 17. कौन-सा कवि प्रेमाश्रयी शाखा से सम्बन्धित नहीं है ?
(क) जायसी (ख) मंझन **(ग) चन्दबरदाई** (घ) कुतुबन

प्रश्न 18. भक्तिकाल की 'प्रेमाश्रयी शाखा' के कवि हैं— (2012)
(क) कुम्भनदास (ख) दादू दयाल
(ग) मंझन (घ) नन्ददास

प्रश्न 19. निम्नलिखित में से भक्तिकाल की कृति है— (2010)
(क) साकेत **(ख) पार्वती मंगल**
(ग) कामायनी (घ) पृथ्वीराज रासो

प्रश्न 20. कृष्णकाव्यधारा के प्रतिनिधि कवि हैं— (2011)
(क) मीरा (ख) रसखान
(ग) परमानन्ददास **(घ) सूरदास**

प्रश्न 21. "वह इस असार संसार को न देखने के वास्ते आँखें बन्द किये थे।" यह किसका कथन है? (2012)
(क) अयोध्यासिंह उपाध्याय 'हरिऔध' का
(ख) मलिक मुहम्मद जायसी का
(ग) भारतेन्दु हरिश्चन्द्र का
(घ) जगन्नाथदास 'रत्नाकर' का

प्रश्न 22. 'अष्टछाप' के कवियों का सम्बन्ध भक्तिकाल की किस शाखा से है ? (2015, 18)
(क) ज्ञानाश्रयी शाखा (ख) प्रेमाश्रयी शाखा
(ग) कृष्णभक्ति शाखा (घ) रामभक्ति शाखा

प्रश्न 23. कौन-सा ग्रन्थ भक्तिकाल का है ?
(क) पृथ्वीराज रासो (ख) साकेत
(ग) कामायनी **(घ) विनयपत्रिका**

प्रश्न 24. कौन-सा कवि रामभक्ति शाखा से सम्बन्धित नहीं है ? (2014)
(क) तुलसीदास **(ख) चतुर्भुजदास**
(ग) अग्रदास (घ) नाभादास

प्रश्न 25. गोस्वामी तुलसीदास के बचपन का नाम था— (2012, 13)
(क) तुकाराम (ख) आत्माराम (ग) सीताराम **(घ) रामबोला**

प्रश्न 26. 'सूकरखेत' नामक स्थान सम्बन्धित है— (2012, 14)
(क) कबीरदास से (ख) नन्ददास से
(ग) तुलसीदास से (घ) सूरदास से

प्रश्न 27. 'रुनकता' नामक स्थान सम्बन्धित है— (2013)
(क) 'जयशंकर प्रसाद' से (ख) 'सूर्यकान्त त्रिपाठी 'निराला' से
(ग) 'कबीर' से **(घ) 'सूरदास' से**

प्रश्न 28. 'बसुआ गोविन्दपुर' में जन्म हुआ था— (2014)
(क) 'रत्नाकर' का (ख) 'सूरदास' का
(ग) रामधारी सिंह 'दिनकर' का **(घ) 'बिहारी' का**

प्रश्न 29. कृष्णकाव्यधारा के कवि नहीं है— (2013, 14)
(क) नन्ददास (ख) चतुर्भुजदास
(ग) सूरदास **(घ) लालदास/नाभादास**

प्रश्न 30. भिखारीदास कवि हैं— (2012)
(क) भक्तिकाल के **(ख) रीतिकाल के**
(ग) आदिकाल के (घ) आधुनिककाल के

प्रश्न 31. इनमें से हिन्दी का प्राचीनतम (प्रथम) महाकाव्य कौन-सा है ? (2010, 11)
(क) श्रीरामचरितमानस (ख) पद्मावत
(ग) पृथ्वीराज रासो (घ) प्रियप्रवास

प्रश्न 32. 'भक्तिकाल' का काव्य नहीं है— (2012)
(क) पद्मावत **(ख) पृथ्वीराज रासो**
(ग) श्रीरामचरितमानस (घ) सूरसागर

प्रश्न 33. तुलसीदास की रचना नहीं है— (2014)
(क) रामलला नहछू (ख) पार्वती मंगल
(ग) कवितावली **(घ) रामचन्द्रिका**

प्रश्न 34. 'वीर रस' की कृति है— (2011)
(क) बिहारी सतसई (ख) सूरसागर
(ग) शिवाबावनी (घ) प्रियप्रवास

प्रश्न 35. द्विवेदी युग में लिखी गयी रचना है— (2018)
(क) कामायनी (ख) तारसप्तक
(ग) प्रियप्रवास (घ) ग्राम्य

प्रश्न 36. 'खड़ी बोली' का प्रथम महाकाव्य है— (2014)
(क) वैदेही वनवास **(ख) प्रियप्रवास**
(ग) साकेत (घ) कामायनी

प्रश्न 37. 'द्विवेदी युग' की रचना नहीं है— (2012)
(क) प्रियप्रवास (ख) भारत-भारती **(ग) आँसू** (घ) साकेत

प्रश्न 38. मैथिलीशरण गुप्त आधुनिक काल के किस युग से सम्बन्धित हैं ?
(क) शुक्ल युग **(ख) द्विवेदी युग**
(ग) छायावाद युग (घ) छायावादोत्तर युग

प्रश्न 39. 'साहित्य सुधानिधि' के सम्पादक हैं— (2013)
(क) जगन्नाथदास 'रत्नाकर'
(ख) महावीरप्रसाद द्विवेदी
(ग) अयोध्यासिंह उपाध्याय 'हरिऔध'
(घ) भारतेन्दु हरिश्चन्द्र

प्रश्न 40. 'हरिऔध' का जन्म-स्थान है— (2013)
(क) एबटाबाद **(ख) निजामाबाद** (ग) काशी (घ) फर्रुखाबाद

प्रश्न 41. मैथिलीशरण गुप्त का प्रथम काव्य-संग्रह है— (2012)
(क) अनघ **(ख) भारत-भारती**
(ग) पंचवटी (घ) सिद्धराज

प्रश्न 42. छायावादी काव्य की वृहद्त्रयी के रचनाकार नहीं हैं— (2012)
(क) प्रसाद (ख) पन्त (ग) निराला **(घ) महादेवी**

प्रश्न 43. आधुनिक युग की मीरा हैं— (2013)
(क) महादेवी वर्मा (ख) सुभद्राकुमारी चौहान
(ग) सुमित्राकुमारी सिन्हा (घ) इनमें से कोई नहीं

प्रश्न 44. निम्नलिखित कवियों में से 'राष्ट्रकवि' की उपाधि से विभूषित किया गया है— (2009, 10)
या किस कवि को 'राष्ट्रकवि' का सम्मान मिला है— (2018)
(क) रामकुमार वर्मा को **(ख) मैथिलीशरण गुप्त को**
(ग) महादेवी वर्मा को (घ) सूर्यकान्त त्रिपाठी 'निराला' को

प्रश्न 45. 'भारतीय ज्ञानपीठ' पुरस्कार नहीं मिला है— (2014)
(क) 'सुमित्रानन्दन पन्त' को **(ख) 'मैथिलीशरण गुप्त' को**
(ग) रामधारी सिंह 'दिनकर' को (घ) 'महादेवी वर्मा' को

प्रश्न 46. 'प्रगतिशील लेखक संघ' की स्थापना कब हुई ? (2018)
या प्रगतिशील लेखक संघ का प्रथम अधिवेशन कब हुआ था? (2012, 14)
(क) सन् 1943 में (ख) सन् 1954 में
(ग) सन् 1938 में **(घ) सन् 1936 में**

प्रश्न 47. 'कवितावर्धिनी' सभा की स्थापना की थी— (2016)
(क) केशवदास ने **(ख) भारतेन्दु हरिश्चन्द्र ने**
(ग) श्यामसुन्दर दास ने (घ) 'रत्नाकर' ने

प्रश्न 48. 'अज्ञेय' ने 'तारसप्तक' का प्रकाशन किया— (2009, 10, 11,12, 13, 14, 15, 16, 18)
या **तारसप्तक का प्रकाशन हुआ—** (2014, 15, 16, 17, 18)
(क) सन् 1947 में **(ख) सन् 1943 में**
(ग) सन् 1950 में (घ) सन् 1931 में

प्रश्न 49. वीरगाथा काल की विशेषता है— (2017)
(क) नारी का रूप-सौन्दर्य चित्रण (ख) प्रकृति-चित्रण
(ग) युद्धों का सजीव चित्रण (घ) मुक्तक काव्य-रचना

प्रश्न 50. 'हरिवंशपुराण' के रचनाकार हैं— (2016)
(क) देवसेन (ख) विमलदेव (ग) पुष्पदन्त **(घ) स्वयंभू**

प्रश्न 51. कौन-सी रचना आदिकाल की नहीं है ? (2013, 14)
(क) सन्देशरासक (ख) पृथ्वीराज रासो
(ग) बीसलदेव रासो **(घ) अखरावट/पद्मावत**

प्रश्न 52. कौन-सा ग्रन्थ आदिकाल का है ? (2010, 13)
(क) सूरदास (ख) पद्मावत
(ग) बीसलदेव रासो (घ) आँसू

प्रश्न 53. 'प्रेमाश्रयी सूफी काव्यधारा' का सम्बन्ध किससे था ? (2013)
(क) कृष्णभक्ति (ख) सगुण भक्ति
(ग) निर्गुण भक्ति (घ) रामभक्ति

प्रश्न 54. भक्तिकालीन कवि कौन है ? (2013)
(क) भारतेन्दु हरिश्चन्द्र **(ख) कुम्भनदास**
(ग) हरिऔध (घ) महादेवी वर्मा

प्रश्न 55. कबीर, नानक, दादू, मलूकदास तथा रैदास किस काव्यधारा के कवि थे ?
(क) प्रेमाश्रयी सूफी काव्यधारा **(ख) ज्ञानाश्रयी सन्त काव्यधारा**
(ग) सगुण भक्ति काव्यधारा (घ) इनमें से कोई नहीं

प्रश्न 56. हिन्दी साहित्य का स्वर्ण युग है—
(क) रीतिबद्ध काव्य (ख) रीतिसिद्ध काव्य
(ग) रीतिमुक्त काव्य **(घ) भक्तिकाव्य**

प्रश्न 57. रसखान किस काव्यधारा के कवि थे ?
(क) प्रेमाश्रयी काव्यधारा (ख) निर्गुण भक्ति काव्यधारा
(ग) सगुण भक्ति काव्यधारा **(घ) कृष्णभक्ति काव्यधारा**

प्रश्न 58. गोस्वामी तुलसीदास, केशवदास, हृदयराम तथा प्राणचन्द किस काव्यधारा के कवि थे ?
(क) सगुण भक्ति काव्यधारा (ख) कृष्णभक्ति काव्यधारा
(ग) ज्ञानाश्रयी भक्ति काव्यधारा **(घ) रामभक्ति काव्यधारा**

प्रश्न 59. 'विनयपत्रिका' किस भाषा की कृति है ? (2010, 16)
(क) अवधी **(ख) ब्रजभाषा** (ग) खड़ी बोली (घ) भोजपुरी

प्रश्न 60. तुलसीदास ने 'श्रीरामचरितमानस' की रचना की है— (2013)
(क) ब्रजभाषा में (ख) भोजपुरी में
(ग) अवधी में (घ) खड़ी बोली में

प्रश्न 61. 'रीतिकाल' का दूसरा नाम है— (2010, 13)
(क) मुक्तक शैली काल **(ख) शृंगार काल**
(ग) चमत्कारिक काल (घ) ये सभी

प्रश्न 62. 'रीतिकाल' को 'शृंगार काल' नाम दिया है— (2014, 15)
(क) आचार्य रामचन्द्र शुक्ल ने
(ख) आचार्य हजारीप्रसाद द्विवेदी ने
(ग) आचार्य विश्वनाथ प्रसाद मिश्र ने
(घ) आचार्य नन्ददुलारे वाजपेयी ने

प्रश्न 63. निम्नलिखित कवियों में से रीतिबद्ध तथा रीतिमुक्त कवियों का चुनाव कीजिए—
या **रीतिबद्ध काव्यधारा के कवि हैं—**
या **रीतिकालीन कवि हैं—** (2011, 14)
या **रीतिमुक्त काव्य के रचनाकार कवि हैं—** (2013, 14, 15)
या **निम्नलिखित में से रीतिकालीन कवि कौन-सा है?** (2016)
(क) भूषण (ख) घनानन्द (ग) बिहारी (घ) बोधा ठाकुर
(ङ) आचार्य केशवदास (2011)

उत्तर (i) रीतिबद्ध कवि—(क) भूषण, (ग) बिहारी, (ङ) आचार्य केशवदास।
(ii) रीतिमुक्त कवि—(ख) घनानन्द तथा (घ) बोधा ठाकुर।

प्रश्न 64. कौन-सा कवि रीतिकाल का है ?
(क) जयशंकर प्रसाद (ख) रामधारी सिंह 'दिनकर'
(ग) मलूकदास **(घ) बिहारी**

प्रश्न 65. रीतिकालीन कवि हैं— (2014)
(क) मीराबाई (ख) रसखान **(ग) द्विजदेव** (घ) विद्यापति

प्रश्न 66. निम्नलिखित में से रीतिकाल की कृति हैं— (2010)
(क) रस-मंजरी (ख) प्रेमसागर
(ग) आर्यासप्तशती **(घ) बिहारी सतसई**

प्रश्न 67. बिहारी सतसई की भाषा है— (2013)
(क) अवधी (ख) खड़ी बोली
(ग) ब्रजभाषा (घ) मैथिली

प्रश्न 68. 'कठिन काव्य का प्रेत' कहा जाता है— (2013, 16)
(क) 'घनानन्द' को (ख) 'भूषण' को
(ग) 'केशव' को (घ) 'पद्माकर' को

प्रश्न 69. 'हरिश्चन्द्र चन्द्रिका' पत्रिका के सम्पादक थे—
या **'कवि-वचन-सुधा' नामक पत्रिका के सम्पादक हैं—** (2014, 18)
(क) भारतेन्दु हरिश्चन्द्र (ख) मैथिलीशरण गुप्त
(ग) महादेवी वर्मा (घ) सुमित्रानन्दन पन्त

प्रश्न 70. 'भारतेन्दु जी ने इनमें से किस पत्रिका का सम्पादन किया ?
(क) माधुरी (ख) मर्यादा **(ग) कवि-वचन सुधा** (घ) सरस्वती

प्रश्न 71. जयशंकर प्रसाद, सुमित्रानन्दन पन्त, सूर्यकान्त त्रिपाठी 'निराला' तथा महादेवी वर्मा किस वाद से सम्बद्ध हैं ? (2010)
(क) प्रगतिवाद **(ख) छायावाद** (ग) प्रयोगवाद (घ) हालावाद

प्रश्न 72. निम्नलिखित कवियों में से छायावादी कवि हैं— (2011, 17)
(क) जयशंकर प्रसाद (ख) बिहारी
(ग) नागार्जुन (घ) जगन्नाथ दास 'रत्नाकर'

प्रश्न 73. कामायनी में 'श्रद्धा' सर्ग किस सर्ग के बाद है? (2012)
(क) 'आशा' सर्ग (ख) 'चिन्ता' सर्ग
(ग) 'काम' सर्ग (घ) 'लज्जा' सर्ग

प्रश्न 74. 'प्रकृति का सुकुमार कवि' किसको कहा गया है ? (2011)
(क) रामधारी सिंह 'दिनकर' (ख) जयशंकर प्रसाद
(ग) सुमित्रानन्दन पन्त (घ) महादेवी वर्मा

प्रश्न 75. सुमित्रानन्दन पन्त को ज्ञानपीठ पुरस्कार उनकी किस रचना पर मिला था ? (2013, 15, 18)
(क) लोकायतन (ख) युगान्त
(ग) कला और बूढ़ा चाँद **(घ) चिदम्बरा**

प्रश्न 76. पन्त जी की प्रगतिवादी रचना मानी जाती है—
(क) पल्लव **(ख) युगान्त** (ग) गुंजन (घ) वीणा

प्रश्न 77. छायावाद की विशेषता है— (2010, 11)
(क) इतिवृत्तात्मकता (ख) शृंगारिक भावना
(ग) सौन्दर्य एवं प्रेम **(घ) प्रकृति-चित्रण**

प्रश्न 78. 'कामायनी' व 'झरना' किस युग की रचनाएँ हैं ? (2011, 13)
(क) भारतेन्दु युग (ख) द्विवेदी युग
(ग) छायावादी युग (घ) प्रगतिवादी युग

प्रश्न 79. 'कामायनी' महाकाव्य में सर्गों की संख्या है— (2013, 14, 17)
(क) नौ (ख) बारह **(ग) पन्द्रह** (घ) सत्रह

प्रश्न 80. द्विवेदी युग का महाकाव्य नहीं है— (2013)
(क) प्रियप्रवास (ख) साकेत
(ग) कामायनी (घ) द्वापर

प्रश्न 81. 'प्रसाद' का काव्य प्रवृत्ति-निवृत्ति मिश्रित है— (2013)
(क) 'लहर' में (ख) 'आँसू' में
(ग) 'झरना' में **(घ) 'कामायनी' में**

प्रश्न 82. 'तोड़ती पत्थर' रचना है— (2014)
(क) जयशंकर प्रसाद की
(ख) सूर्यकान्त त्रिपाठी 'निराला' की
(ग) महादेवी वर्मा की
(घ) रामकुमार वर्मा की

प्रश्न 83. नयी कविता के कवि हैं— (2011)
(क) नरेन्द्र शर्मा (ख) 'अज्ञेय'
(ग) रामधारी सिंह 'दिनकर' (घ) सुमित्रानन्दन पन्त

प्रश्न 84. प्रयोगवादी काव्यधारा के जनक हैं ? (2012, 14)
(क) 'अज्ञेय' (ख) 'दिनकर'
(ग) 'मुक्तिबोध' (घ) 'धूमिल'

प्रश्न 85. निम्नलिखित में से प्रयोगवादी कवि हैं— (2010)
(क) रामेश्वर शुक्ल 'अंचल' **(ख) गजानन माधव 'मुक्तिबोध'**
(ग) भवानीप्रसाद मिश्र **(घ) महादेवी वर्मा**

प्रश्न 86. निम्नलिखित में से प्रगतिवादी कवि नहीं हैं— (2010)
(क) शिवमंगल सिंह 'सुमन' (ख) रामविलास शर्मा
(ग) नागार्जुन **(घ) भवानीप्रसाद मिश्र**

प्रश्न 87. निम्नलिखित में से कौन कवि प्रगतिवादी नहीं है? (2012)
(क) नागार्जुन (ख) केदारनाथ अग्रवाल
(ग) केदारनाथ सिंह (घ) त्रिलोचन शास्त्री

प्रश्न 88. "प्रयोग सभी कालों के कवियों ने किया है ·····किसी एक काल में किसी विशेष दिशा में प्रयोग करने की प्रवृत्ति स्वाभाविक ही है।" यह वक्तव्य निम्नलिखित रचनाकारों में किसका है ?
या **प्रयोगवाद के प्रवर्तक हैं—** (2012)
या **प्रयोगवादी काव्यधारा के प्रतिनिधि कवि हैं—** (2011)
(क) 'निराला' **(ख) 'अज्ञेय'**
(ग) 'प्रसाद' (घ) महादेवी वर्मा

प्रश्न 89. कौन-सी रचना भारतेन्दु युग में लिखी गयी है ? (2010)
(क) प्रेममाधुरी (ख) कामायनी
(ग) निरूपमा (घ) युगवाणी

प्रश्न 90. 'पंत' जी के उस काव्य-ग्रन्थ का नाम लिखिए जिसमें उनकी सांस्कृतिक एवं दार्शनिक विचारधारा व्यक्त हुई है—
(क) चिदम्बरा (ख) उत्तरा (ग) पल्लव **(घ) लोकायतन**

प्रश्न 91. रामभक्ति शाखा से सम्बन्धित हैं— (2009)
या **कृष्णभक्तिधारा से सम्बन्धित नहीं है—** (2009)
(क) कुम्भनदास (ख) परमानन्ददास
(ग) नाभादास (घ) चतुर्भुजदास

प्रश्न 92. निम्नलिखित में प्रगतिवाद की कौन-सी समयावधि मान्य है? (2009)
(क) 1900 ई० से 1918 ई० (ख) 1918 ई० से 1936 ई०
(ग) 1936 ई० से 1943 ई० (घ) 1943 ई० से 1953 ई०

प्रश्न 93. 'तारसप्तक' से सम्बन्धित हैं— (2009)
(क) रामविलास शर्मा (ख) नरेन्द्र शर्मा
(ग) भवानीप्रसाद मिश्र (घ) धर्मवीर भारती

प्रश्न 94. विद्यापति के पदों में कहीं-कहीं पुट है— (2016)
(क) शृंगार का **(ख) भक्ति का**
(ग) नीति का (घ) प्रशस्ति का

प्रश्न 95. 'सूरसागर' के वर्ण्यविषय का आधार है— (2016)
(क) श्रीमद्भागवत (ख) विष्णुपुराण
(ग) केनोपनिषद् (घ) मनुस्मृति

प्रश्न 96. निम्नलिखित में सही सुमेलित है— (2010)
(क) भारत-भारती—महाकाव्य (ख) प्रणभंग—चरितकाव्य
(ग) गीतिका—वीरकाव्य **(घ) रश्मिरथी—खण्डकाव्य**

प्रश्न 97. कौन-सी कृति महाकाव्य नहीं है? (2012)
(क) श्रीरामचरितमानस (ख) साकेत
(ग) यामा (घ) पद्मावत

प्रश्न 98. रीतिकाल का काव्य है— (2009)
(क) पृथ्वीराज रासो **(ख) रामचन्द्रिका**
(ग) कामायनी (घ) विनयपत्रिका

प्रश्न 99. कौन-सी भूषण की रचना नहीं है ? (2009, 13)
(क) शिवा-बावनी (ख) छत्रसाल दशक
(ग) शिवराजभूषण **(घ) रामचन्द्रिका**

प्रश्न 100. कौन-सा कवि रामभक्ति शाखा से सम्बन्धित नहीं है ? (2009)
(क) तुलसीदास **(ख) नन्ददास** (ग) अग्रदास (घ) नाभादास

प्रश्न 101. कबीर के दोहों को नाम से जाना जाता है— (2012)
(क) दूहा (ख) सबद **(ग) साखी** (घ) पद

प्रश्न 102. नवधा भक्ति के प्रकार हैं— (2012)
(क) एक (ख) तीन (ग) आठ— **(घ) नौ**

प्रश्न 103. 'साकेत' की नायिका है— (2012)
(क) यशोधरा **(ख) उर्मिला** (ग) राधा (घ) द्रौपदी

प्रश्न 104. 'भारत-भारती' की रचना-विधा है— (2014, 15)
(क) कहानी (ख) उपन्यास (ग) नाटक **(घ) काव्य**

प्रश्न 105. रामधारी सिंह 'दिनकर' को ज्ञानपीठ पुरस्कार मिला है— (2012, 15, 16, 18)
(क) 'कुरुक्षेत्र' पर (ख) 'रश्मिरथी' पर
(ग) 'उर्वशी' पर (घ) 'हुँकार' पर

प्रश्न 106. 'दूसरा सप्तक' के कवि हैं— (2014)
(क) रामविलास शर्मा (ख) गिरिजा कुमार माथुर
(ग) केदारनाथ सिंह **(घ) भवानीप्रसाद मिश्र**

प्रश्न 107. 'तीसरा सप्तक' का प्रकाशन वर्ष है— (2012, 14, 17)
(क) सन् 1959 ई० (ख) सन् 1954 ई०
(ग) सन् 1951 ई० (घ) सन् 1957 ई०

प्रश्न 108. निम्नलिखित में से किस काव्य-कृति पर 'भारतीय ज्ञानपीठ' पुरस्कार नहीं मिला है? (2012)
(क) चिदम्बरा (ख) कितनी नावों में कितनी बार
(ग) उर्वशी **(घ) प्रियप्रवास**

प्रश्न 109. अयोध्यासिंह उपाध्याय 'हरिऔध' युग के कवि हैं— (2012)
(क) भारतेन्दु (ख) प्रगतिवाद **(ग) द्विवेदी** (घ) छायावाद

प्रश्न 110. नयी कविता का आरम्भ हुआ— (2013)
(क) 1954 ई० में (ख) 1940 ई० में
(ग) 1950 ई० में (घ) 1955 ई० में

प्रश्न 111. कौन-सी रचना धर्मवीर भारती की है ? (2013)
(क) अणिमा (ख) अपरा **(ग) अन्धा युग** (घ) अर्चना

प्रश्न 112. 'नौका-विहार' कविता अवतरित है— (2015)
(क) 'गुंजन' से (ख) 'वीणा' से
(ग) 'पल्लव' से (घ) 'युगान्त' से

प्रश्न 113. कबीर के गुरु का नाम था— (2016)
(क) वल्लभाचार्य (ख) नरहरिदास
(ग) रामानन्द (घ) रामकृष्ण परमहंस

प्रश्न 114. चन्दबरदाई की रचना है— (2015)
(क) पृथ्वीराज रासो (ख) खुमाण रासो
(ग) राउल वेल (घ) जय मयंक जस चन्द्रिका

प्रश्न 115. अष्टछाप के कवि नहीं हैं— (2015)
(क) सूरदास (ख) कुम्भनदास **(ग) तुलसीदास** (घ) कृष्णदास

प्रश्न 116. रीतिबद्ध काव्यधारा के कवि नहीं हैं— (2015, 17)
(क) जसवंत सिंह (ख) याकूब खाँ
(ग) दलपति राय वंशीधर **(घ) घनानन्द**

प्रश्न 117. 'दूसरा सप्तक' का प्रकाशन वर्ष है— (2015, 16)
(क) 1943 ई० **(ख) 1951 ई०** (ग) 1959 ई० (घ) 1976 ई०

प्रश्न 118. 'विद्यापति' कवि हैं— (2015)
(क) भक्तिकाल के (ख) रीतिकाल के
(ग) आदिकाल के (घ) आधुनिककाल के

प्रश्न 119. अयोध्यासिंह उपाध्याय 'हरिऔध' की रचना है— (2015)
(क) साकेत (ख) पल्लव **(ग) प्रियप्रवास** (घ) गीत

प्रश्न 120. छायावाद के प्रवर्तक माने जाते हैं— (2015)
(क) सूर्यकान्त त्रिपाठी 'निराला' **(ख) जयशंकर प्रसाद**
(ग) सुमित्रानन्दन पन्त (घ) महादेवी वर्मा

प्रश्न 121. 'संसद से सड़क तक' किस कवि की रचना है? (2012, 15)
(क) 'मुक्तिबोध' (ख) 'नागार्जुन' **(ग) 'धूमिल'** (घ) 'अज्ञेय'

प्रश्न 122. भवानीप्रसाद मिश्र कवि-रूप में संगृहीत हैं— (2015)
(क) तारसप्तक में **(ख) दूसरा सप्तक में**
(ग) तीसरा सप्तक में (घ) चौथा सप्तक में

प्रश्न 123. 'श्रीकृष्णगीतावली', 'विनयपत्रिका' और 'कवितावली' के रचयिता हैं— (2015)
(क) तुलसीदास (ख) सूरदास
(ग) भूषण (घ) भारतेन्दु हरिश्चन्द्र

प्रश्न 124. हिन्दी साहित्य के 'आदिकाल' के लिए 'बीज-वपन काल' नाम दिया है— (2015, 16, 18)
(क) रामचन्द्र शुक्ल ने (ख) डॉ० रामकुमार वर्मा ने
(ग) आचार्य महावीरप्रसाद द्विवेदी ने
(घ) डॉ० मोहन अवस्थी ने

प्रश्न 125. तारसप्तक के सम्पादक हैं— (2012, 15, 17)
(क) 'अज्ञेय' (ख) गिरिजाकुमार माथुर
(ग) धर्मवीर भारती (घ) मुक्तिबोध

प्रश्न 126. वात्सल्य रस के सम्राट कहे जाते हैं— (2015)
या **'शृंगार' और 'वात्सल्य' रस के अमर कवि हैं—**
(क) तुलसीदास **(ख) सूरदास**
(ग) परमानन्ददास (घ) कुम्भनदास

प्रश्न 127. हिन्दी का प्रथम कवि माना जाता है— (2015, 16)
(क) शबरपा **(ख) सरहपा** (ग) लुइपा (घ) कण्हपा

प्रश्न 128. मैथिलीशरण गुप्त की रचना में राष्ट्रप्रेम की भावना परिलक्षित होती है— (2016)
(क) भारत-भारती में (ख) जयद्रथ वध में
(ग) साकेत में (घ) पंचवटी में

प्रश्न 129. 'परशुराम की प्रतीक्षा' काव्य कृति है— (2016)
(क) गजानन माधव 'मुक्तिबोध' की
(ख) रामधारीसिंह 'दिनकर' की
(ग) गिरिजाकुमार माथुर की
(घ) धर्मवीर भारती की

प्रश्न 130. 'कला और बूढ़ा चाँद' पर सुमित्रानन्दन पन्त को पुरस्कार प्राप्त हुआ— (2016, 17)
(क) साहित्य अकादमी (ख) ज्ञानपीठ
(ग) मंगलाप्रसाद (घ) सोवियत लैण्ड नेहरू

प्रश्न 131. 'अलंकार-रत्नाकर' के लेखक हैं— (2016)
(क) याकूब खाँ (ख) जसवन्त सिंह
(ग) दलपति राय वंशीधर (घ) भिखारीदास

प्रश्न 132. मध्वाचार्य का वाद है— (2016)
(क) द्वैतवाद (ख) अद्वैतवाद
(ग) द्वैताद्वैतवाद (घ) शुद्धाद्वैतवाद

प्रश्न 133. 'मुकरियाँ' रचना है— (2016)
(क) मधुकर कवि की (ख) कुशल राय की
(ग) अमीर खुसरो की (घ) भट्ट केदार की

प्रश्न 134. 'प्रयोगवाद' को 'नई कविता' की संज्ञा दी— (2016)
(क) गिरिजाकुमार माथुर ने (ख) केदारनाथ सिंह ने
(ग) 'अज्ञेय' ने (घ) धर्मवीर भारती ने

प्रश्न 135. आदिकाल को वीरगाथा काल का नामकरण किया— (2016)
(क) हजारीप्रसाद द्विवेदी ने (ख) डॉ० रामकुमार वर्मा ने
(ग) आचार्य रामचन्द्र शुक्ल ने (घ) मिश्रबन्धु ने

प्रश्न 136. प्रेम माधुरी के रचयिता हैं— (2016)
(क) प्रतापनारायण मिश्र (ख) बालकृष्ण भट्ट
(ग) लाला श्री निवासदास **(घ) भारतेन्दु हरिश्चन्द्र**

प्रश्न 137. मैथिलीशरण गुप्त की रचना है— (2016)
(क) प्रियप्रवास **(ख) साकेत**
(ग) कामायनी (घ) लोकायतन

प्रश्न 138. चिन्तामणि कवि हैं— (2016)
(क) रीतिसिद्ध वर्ग के (ख) रीतियुक्त वर्ग के
(ग) रीतिरहित वर्ग के **(घ) रीतिबद्ध वर्ग के**

प्रश्न 139. खालिक बरी के रचयिता हैं— (2015, 16)
(क) कुशलनाथ (ख) भट्ट केदार
(ग) मलिक मुहम्मद जायसी **(घ) अमीर खुसरो**

प्रश्न 140. 'रामभक्ति शाखा' के कवि नहीं हैं— (2016)
(क) तुलसीदास (ख) अग्रदास **(ग) नन्ददास** (घ) नाभादास

प्रश्न 141. बिहारी 'सतसई' में दोहों की संख्या है— (2016)
(क) 719 (ख) 713 (ग) 700 (घ) 724

प्रश्न 142. 'गंगावतरण' काव्यकृति के रचयिता हैं— (2016)
(क) अयोध्यासिंह उपाध्याय 'हरिऔध'
(ख) जगन्नाथदास 'रत्नाकर'
(ग) सुमित्रानन्दन पन्त
(घ) भारतेन्दु हरिश्चन्द्र

प्रश्न 143. रामधारीसिंह 'दिनकर' की रचना नहीं है— (2016)
(क) रश्मिरथी (ख) चक्रवाल
(ग) परशुराम की प्रतीक्षा **(घ) सुनहले शैवाल**

प्रश्न 144. 'अज्ञेय' को 'भारतीय ज्ञानपीठ पुरस्कार' प्राप्त हुआ— (2016)
(क) 'कितनी नावों में कितनी बार' पर
(ख) 'अरी ओ करुणा प्रभामय' पर
(ग) 'आँगन के पार द्वार' पर
(घ) 'ऐसा कोई घर आपने देखा है' पर

प्रश्न 145. जयशंकर प्रसादकृत 'कामायनी' किस प्रकार का काव्य है? (2017)
(क) खण्डकाव्य **(ख) महाकाव्य**
(ग) मुक्तक काव्य (घ) इनमें से कोई नहीं

प्रश्न 146. पन्त जी की किस रचना पर ज्ञानपीठ पुरस्कार दिया गया है? (2017)
(क) लोकायतन (ख) पल्लव **(ग) चिदम्बरा** (घ) वीणा

प्रश्न 147. अज्ञेय जी को निम्नलिखित में से किस वाद का प्रतीक माना जाता है? (2017)
(क) छायावाद (ख) प्रगतिवाद
(ग) हालावाद **(घ) प्रयोगवाद**

प्रश्न 148. निम्नलिखित में से रीतिबद्ध धारा के कवि कौन नहीं हैं? (2017)
(क) चिन्तामणि (ख) मतिराम
(ग) द्विजदेव **(घ) पद्माकर**

प्रश्न 149. हिन्दी साहित्य के आदिकाल के लिए 'सिद्ध सापन्तकाल' नाम दिया है— (2017)
(क) राहुल सांकृत्यायन ने (ख) रामचन्द्र शुक्ल ने
(ग) रामकुमार वर्मा ने (घ) डॉ० नगेन्द्र ने

प्रश्न 150. हिन्दी साहित्य के किस काल को स्वर्ण युग कहा जाता है? (2017)
(क) आदिकाल **(ख) भक्तिकाल**
(ग) रीतिकाल (घ) आधुनिककाल

प्रश्न 151. 'पारिजात' किस कवि के गीतों का संकलन है? (2017)
(क) सुमित्रानन्दन पन्त
(ख) अयोध्या सिंह उपाध्याय 'हरिऔध'
(ग) महादेवी वर्मा (घ) मैथिलीशरण गुप्त

प्रश्न 152. 'अज्ञेय' द्वारा सम्पादित सप्तकों की संख्या है— (2017)
(क) एक (ख) दो **(ग) तीन** (घ) चार

प्रश्न 153. किस कवि को 'ज्ञानपीठ पुरस्कार' नहीं मिला? (2017, 18)
(क) रामधारी सिंह 'दिनकर' को (ख) सुमित्रानन्दन पन्त को
(ग) जयशंकर प्रसाद को (घ) महादेवी वर्मा को

प्रश्न 154. 'प्रगतिशील लेखक संघ' की स्थापना हुई थी— (2017)
(क) सन् 1935 में (ख) सन् 1936 में
(ग) सन् 1938 में (घ) सन् 1943 में

प्रश्न 155. मैथिलीशरण गुप्त द्वारा रचित कृति है— (2017)
(क) 'प्रदक्षिणा' (ख) 'दानलीला'
(ग) 'रसकलश' (घ) 'अतिमा'

प्रश्न 156. सुमित्रानन्दन पन्त की रचना नहीं है— (2017)
(क) पल्लव (ख) स्वर्णधूलि
(ग) ग्रंथि **(घ) रसवन्ती**

प्रश्न 157. अयोध्या सिंह उपाध्याय 'हरिऔध' की रचना है— (2017)
(क) रसकलश (ख) युगान्तर
(ग) ग्राम्या (घ) हुँकार

प्रश्न 158. 'प्रसाद' की निम्न कृतियों में से एक कृति के नायक मनु हैं। वह कृति है— (2017)
(क) प्रेम पथिक (ख) झरना
(ग) कामायनी (घ) कानन-कुसुम

प्रश्न 159. निम्न में से कौन मैथिलीशरण गुप्त की एक अनूदित रचना है— (2017)
(क) मेघनाद वध (ख) यशोधरा
(ग) प्रदक्षिणा (घ) सिद्धराज

प्रश्न 160. कवि 'हरिऔध' का रस है— (2017)
(क) करुण (ख) श्रृंगार (ग) भक्ति (घ) वीर

प्रश्न 161. 'चित्राधार' काव्य की भाषा है— (2017)
(क) अवधी **(ख) ब्रज**
(ग) कन्नौजी (घ) भोजपुरी

प्रश्न 162. कवि पन्त समाजवाद की ओर उन्मुख हुए— (2017)
(क) ग्राम्या में (ख) स्वर्णधूलि में
(ग) चिदम्बरा में (घ) ग्रन्थि में

प्रश्न 163. 'दिनकर' को ज्ञानपीठ पुरस्कार मिला— (2017)
(क) वर्ष 1970 में (ख) वर्ष 1971 में
(ग) वर्ष 1972 में (घ) वर्ष 1974 में

प्रश्न 164. निम्नलिखित में कौन प्रेमाश्रयी शाखा के कवि नहीं हैं? (2017)
(क) जायसी **(ख) सूरदास** (ग) मंझन (घ) कुतुबन

प्रश्न 165. कौन-सी रचना 'अज्ञेय' की नहीं है? (2017)
(क) बावरा अटेरी (ख) सुनहले शैवाल
(ग) इत्यलप् **(घ) रेणुका**

प्रश्न 166. रामधारी सिंह 'दिनकर' द्वारा रचित ग्रन्थ है— (2017)
(क) हुँकार (ख) धूप के धान
(ग) कालजयी (घ) चित्राधार

प्रश्न 167. 'आँगन के पार-द्वार' रचना है— (2018)
(क) जयशंकर प्रसाद की (ख) महादेवी वर्मा की
(ग) अज्ञेय की (घ) सुमित्रानन्दन पंत की

प्रश्न 168. हिन्दी साहित्य के आदिकाल के लिए चारण काल नाम दिया है— (2018)
(क) राहुल सांकृत्यायन ने (ख) रामचन्द्र शुक्ल ने
(ग) रामकुमार वर्मा ने (घ) डॉ० नगेन्द्र ने

प्रश्न 169. 'लहर' के रचनाकार हैं— (2018)
(क) जयशंकर प्रसाद (ख) गिरिजा कुमार माथुर
(ग) हरिवंशराय 'बच्चन' (घ) सुमित्रानन्दन पंत

प्रश्न 170. निम्नलिखित में 'नई कविता' के कवि हैं— (2018)
(क) जयशंकर प्रसाद
(ख) रामधारी सिंह 'दिनकर'

(ग) जगन्नाथदास रत्नाकर
(घ) सच्चिदानंद हीरानन्द वात्स्यायन 'अज्ञेय'

प्रश्न 171. हिन्दी साहित्य के किस काल को 'पूर्व-मध्य' काल कहा जाता है? (2018)
(क) आदिकाल **(ख) भक्तिकाल**
(ग) रीतिकाल (घ) आधुनिककाल

प्रश्न 172. 'कामायनी' रचना है— (2018)
(क) सूर्यकान्त त्रिपाठी 'निराला' की
(ख) महादेवी वर्मा की
(ग) जयशंकर प्रसाद की
(घ) मोहन अवस्थी की

प्रश्न 173. 'कितनी नावों में कितनी बार' काव्यकृति है— (2015, 18)
(क) सच्चिदानंद हीरानन्द वात्स्यायन 'अज्ञेय' की
(ख) हरिवंशराय 'बच्चन' की
(ग) गिरिजा कुमार माथुर की (घ) सुमित्रानन्दन पन्त की

प्रश्न 174. कविता में चार चाँद लगाने वाली शक्ति है— (2018)
(क) अभिधा (ख) लक्षणा **(ग) व्यंजना** (घ) तात्पर्या

प्रश्न 175. 'खुमान रासो' के रचयिता हैं— (2018)
(क) नरपति नाल्ह **(ख) दलपति विजय**
(ग) चन्दबरदाई (घ) जगनिक

प्रश्न 176. 'रसिकप्रिया' रचना है— (2018)
(क) मतिराम की **(ख) केशवदास की**
(ग) नरपति नाल्ह की (घ) सुमित्रानन्दन पन्त की

प्रश्न 177. अग्रदास किस काव्यधारा के कवि हैं? (2018)
(क) कृष्ण काव्यधारा के (ख) सूफी काव्यधारा के
(ग) वीर काव्यधारा के **(घ) राम काव्यधारा के**

प्रश्न 178. 'पपीहों की वह पीन पुकार' किसकी पंक्ति है? (2018)
(क) भारतेन्दु की (ख) जयशंकर प्रसाद की
(ग) सुमित्रानन्दन पन्त की (घ) महादेवी की

प्रश्न 179. 'प्रियप्रवास' काव्यकृति का मुख्य रस है— (2018)
(क) संयोग शृंगार (ख) करुण
(ग) वियोग शृंगार (घ) शान्त

प्रश्न 180. 'धर्म के प्रति अनास्था' तथा 'शोषक-वर्ग के प्रति घृणा' प्रमुख विशेषता है— (2018)
(क) 'छायावाद' की **(ख) 'प्रगतिवाद' की**
(ग) 'प्रयोगवाद' की (घ) 'नयी कविता' की

प्रश्न 181. 'महाभारत' के 'शान्तिपर्व' के कथानक पर आधारित 'दिनकर' की काव्यकृति है— (2018)
(क) 'रेणुका' **(ख) 'कुरुक्षेत्र'**
(ग) 'सामधेनी' (घ) 'हारे को हरिनाम'

प्रश्न 182. 'छायावादोत्तर काल' के कवि हैं— (2018)
(क) जगन्नाथदास 'रत्नाकर'
(ख) सूर्यकान्त त्रिपाठी 'निराला'
(ग) सच्चिदानन्द हीरानन्द वात्स्यायन 'अज्ञेय'
(घ) मैथिलीशरण गुप्त

प्रश्न 183. जयशंकर प्रसाद द्वारा ब्रजभाषा में रचित काव्य संग्रह है– (2018)
(क) 'चित्राधार' (ख) 'कामायनी' (ग) 'लहर' (घ) 'आँसू'

प्रश्न 184. 'वैदेही वनवास' काव्य कृति है— (2018)
(क) खण्डकाव्य (ख) मुक्तककाव्य
(ग) महाकाव्य (घ) चम्पूकाव्य

प्रश्न 185. 'ग्रन्थि' काव्यसंग्रह के रचयिता हैं— (2018)
(क) सुमित्रानन्दन पन्त (ख) महादेवी वर्मा
(ग) रामधारी सिंह 'दिनकर'
(घ) अयोध्यासिंह उपाध्याय 'हरिऔध'

प्रश्न 186. 'निम्नलिखित में से कौन-सी रचना महाकाव्य नहीं है? (2018)
(क) पद्मावत (ख) कामायनी **(ग) रश्मिरथी** (घ) साकेत

प्रश्न 187. 'जयशंकर प्रसाद के काव्य की सिद्धावस्था है— (2018)
(क) आँसू (ख) झरना (ग) लहर **(घ) कामायनी**

प्रश्न 188. 'अज्ञेय' जी की रचना है— (2018)
(क) कुरुक्षेत्र **(ख) हरी घास पर क्षण-भर**
(ग) रश्मिरथी (घ) हुँकार

प्रश्न 189. अयोध्या सिंह उपाध्याय 'हरिऔध' की रचना है– (2018)
(क) वैदेही वनवास (ख) यशोधरा
(ग) लहर (घ) गुंजन

प्रश्न 190. रीतिमुक्त कवि हैं— (2018)
(क) बिहारी (ख) भूषण (ग) केशव **(घ) घनानंद**

अथवा

✿ निम्नलिखित में से किन्हीं पाँच प्रश्नों के उत्तर लिखिए—

प्रश्न 1. हिन्दी-काव्य-साहित्य के विविध कालों का समय बताइए।
उत्तर— (1) आदिकाल (वीरगाथाकाल) — सन् 993 से 1318 ई० तक।
(2) पूर्व-मध्यकाल (भक्तिकाल)— सन् 1318 से 1643 ई० तक।
(3) उत्तर-मध्यकाल (रीतिकाल)— सन् 1643 से 1843 ई० तक।
(4) आधुनिककाल (गद्यकाल) — सन् 1843 से अब तक।
उपर्युक्त काल-विभाजन आचार्य रामचन्द्र शुक्ल के 'हिन्दी-साहित्य का इतिहास' के आधार पर दिया गया है।

प्रश्न 2. काव्य के कितने भेद होते हैं ?
उत्तर— दो भेद—(i) श्रव्य काव्य और (ii) दृश्य काव्य।

प्रश्न 3. प्रबन्ध काव्य तथा मुक्तक काव्य में क्या अन्तर है ?
उत्तर— प्रबन्ध काव्य में धारावाहिक कथा होती है, जब कि मुक्तक काव्य में प्रत्येक पद स्वत: पूर्ण होता है। उसमें कथा की सूत्रबद्धता नहीं होती।

प्रश्न 4. प्रबन्ध काव्य के कितने भेद होते हैं ?
उत्तर— दो भेद—(i) महाकाव्य और (ii) खण्डकाव्य।

प्रश्न 5. महाकाव्य और खण्डकाव्य में अन्तर बताइए।
उत्तर— महाकाव्य की कथा में जीवन की सर्वांगीण झाँकी होती है; जबकि खण्डकाव्य में जीवन के एक पक्ष का चित्रण होता है। महाकाव्य की विस्तृत कथावस्तु पर अनेक खण्डकाव्य लिखे जा सकते हैं।

प्रश्न 6. किन्हीं दो महाकाव्यों के नाम लिखिए।
उत्तर— (i) श्रीरामचरितमानस और (ii) कामायनी।

प्रश्न 7. किन्हीं दो खण्डकाव्यों के नाम लिखिए।
उत्तर— (i) जयद्रथ वध और (ii) हल्दीघाटी।

प्रश्न 8. हिन्दी पद्य-साहित्य के इतिहास के विभिन्न कालों के नाम लिखिए।
उत्तर— (i) वीरगाथा काल, (ii) भक्तिकाल,
(iii) रीतिकाल, तथा (iv) आधुनिक काल।

प्रश्न 9. 'वीरगाथा काल' के लिए प्रयुक्त दो अतिरिक्त नामों का उल्लेख कीजिए।
उत्तर— (i) आदिकाल तथा
(ii) चारणकाल।

प्रश्न 10. वीरगाथा काल में साहित्य रचना की प्रमुख धाराओं का उल्लेख कीजिए।
उत्तर— वीरगाथा काल (आदिकाल) में साहित्य रचना की अग्रलिखित तीन धाराएँ थीं—

प्रथम— संस्कृत साहित्य की धारा।
द्वितीय— प्राकृत एवं अपभ्रंश की धारा।
तृतीय— हिन्दी-साहित्य की धारा।

प्रश्न 11. हिन्दी का प्रथम कवि किसे माना जाता है ? उनका रचनाकाल कब से प्रारम्भ हुआ ?

उत्तर— **सरहपा** को हिन्दी का प्रथम कवि माना जाता है। उनका रचनाकाल 769 ई० से प्रारम्भ हुआ।

प्रश्न 12. आदिकाल के साहित्य को कितने वर्गों में विभाजित किया जा सकता है ?

उत्तर— पाँच वर्गों में—(i) सिद्ध साहित्य, (ii) जैन साहित्य, (iii) नाथ साहित्य, (iv) रासो साहित्य तथा (v) लौकिक साहित्य।

प्रश्न 13. नाथ साहित्य के प्रवर्तक कौन थे ?

उत्तर— गोरखनाथ।

प्रश्न 14. आदिकाल (वीरगाथा काल) के किन्हीं दो कवियों एवं उनकी एक-एक रचना का नाम लिखिए।

या **'पृथ्वीराज रासो' के रचनाकार का नाम लिखिए।** (2013)

या **आदिकाल के दो रचनाकारों के नाम लिखिए।** (2015)

उत्तर— आदिकाल (वीरगाथा काल) के दो कवि तथा उनकी रचनाएँ निम्नवत् हैं—

(i) कवि चन्दबरदाई — पृथ्वीराज रासो
(ii) कवि जगनिक — परमाल रासो

प्रश्न 15. 'बीसलदेव रासो' के रचयिता का नामोल्लेख कीजिए। (2010)

उत्तर— बीसलदेव रासो—नरपति नाल्ह।

प्रश्न 16. ज्ञानमार्गी शाखा के दो कवियों के नाम लिखिए। (2010, 13)

उत्तर (i) कबीर तथा (ii) नानक।

प्रश्न 17. हिन्दी-साहित्य की भक्तिकालीन ज्ञानाश्रयी शाखा की दो विशेषताएँ संक्षेप में लिखिए।

उत्तर— (i) ज्ञानाश्रयी शाखा में निर्गुण ब्रह्म की उपासना हुई तथा (ii) जाति-पाँति, रूढ़ियों व मिथ्याडम्बरों का विरोध हुआ।

प्रश्न 18. निर्गुण भक्ति की प्रेमाश्रयी शाखा की दो विशेषताएँ लिखिए।

उत्तर— (i) यह फारसी की मसनवी शैली में रचित है।
(ii) अवधी भाषा में काव्य-रचना हुई।

प्रश्न 19. प्रेमाश्रयी शाखा के किसी एक कवि द्वारा रचित दो ग्रन्थों के नाम लिखिए। (2009)

उत्तर— कवि—**मलिक मुहम्मद जायसी** और उनकी रचना का नाम है—**पद्मावत** (महाकाव्य) और **अखरावट**।

प्रश्न 20. तुलसी द्वारा विरचित दो प्रसिद्ध काव्यकृतियों के नाम लिखिए। (2010)

उत्तर— तुलसीदास जी के दो ग्रन्थ—(i) श्रीरामचरितमानस (अवधी) तथा (ii) विनयपत्रिका (ब्रजभाषा)।

प्रश्न 21. भक्तिकाल की तीन सामान्य प्रवृत्तियों का उल्लेख कीजिए।

उत्तर— (i) जीव की नश्वरता का समान रूप से वर्णन है।
(ii) प्रभु के नाम-स्मरण तथा गुरु की महत्ता का वर्णन सभी कवियों ने किया है।
(iii) कवियों के नामोल्लेख की प्रवृत्ति रही है।

प्रश्न 22. रीतिकाल में वीर रस की रचना करने वाले एक कवि और उनके द्वारा रचित एक ग्रन्थ का नाम लिखिए।

उत्तर— **कवि**—भूषण। **ग्रन्थ**—शिवराज भूषण।

प्रश्न 23. रीतिकाल की दो प्रमुख प्रवृत्तियों (विशेषताओं) का उल्लेख कीजिए। (2015)

उत्तर— (i) रीतिकाल की कविता का प्रमुख स्वर शृंगारिकता का था।
(ii) आलंकारिकता रीतिकालीन काव्य की दूसरी प्रमुख प्रवृत्ति है।

प्रश्न 24. रीतिबद्ध काव्य के अभिप्राय को स्पष्ट करते हुए उस प्रवृत्ति की किन्हीं दो रचनाओं के नाम लिखिए।

उत्तर— जिन काव्यग्रन्थों में काव्य-तत्त्वों के लक्षण देकर उदाहरण-रूप में काव्य-रचना की जाती है, उन्हें रीतिबद्ध काव्य कहते हैं।
इस प्रवृत्ति की दो रचनाओं के नाम हैं—(i) रसविलास (आचार्य चिन्तामणि) तथा (ii) कविप्रिया (केशवदास)।

प्रश्न 25. रीतिकाल के किन्हीं दो प्रसिद्ध कवियों के नाम उनकी एक-एक रचना सहित लिखिए।

उत्तर— (i) बिहारी—**सतसई** तथा (ii) केशवदास—**कविप्रिया**।

प्रश्न 26. रीतिमुक्त काव्य के दो कवियों के नाम लिखिए। (2013, 14)

उत्तर— (i) घनानन्द तथा (ii) ठाकुर।

प्रश्न 27. भारतेन्दु युग के दो कवियों के नाम उनकी एक-एक रचना सहित लिखिए। (2010)

उत्तर— (i) भारतेन्दु हरिश्चन्द्र—**प्रेम माधुरी** तथा (ii) श्रीधर पाठक—**वनाष्टक**।

प्रश्न 28. द्विवेदी युग के दो महाकाव्यों तथा उनके रचयिताओं के नाम लिखिए।

या **'साकेत' महाकाव्य के रचनाकार कौन हैं?** (2013)

उत्तर— (i) **साकेत**—मैथिलीशरण गुप्त तथा (ii) **प्रियप्रवास**—अयोध्यासिंह उपाध्याय 'हरिऔध'।

प्रश्न 29. द्विवेदी युग के काव्य की दो विशेषताएँ लिखिए।

उत्तर— (i) काव्य में ब्रजभाषा के स्थान पर खड़ी बोली की प्रतिष्ठा हुई तथा (ii) स्वदेश-प्रेम तथा स्वदेशी गौरव पर आधारित काव्य रचे गये।

प्रश्न 30. छायावादी दो कवियों तथा उनकी एक-एक रचना का नाम लिखिए।

उत्तर— (i) जयशंकर प्रसाद—**कामायनी** तथा (ii) महादेवी वर्मा—**दीपशिखा**।

प्रश्न 31. छायावादी कविता की दो प्रमुख प्रवृत्तियाँ बताइए।

उत्तर— (i) आध्यात्मिक छाया दर्शन की प्रवृत्ति रही है तथा (ii) दुःख और निराशा के स्वर सुनाई पड़ते हैं।

प्रश्न 32. छायावादी कविता के ह्रास के दो कारण लिखिए।

उत्तर— (i) छायावादी कविता में सूक्ष्म और वायवीय कल्पनाओं की अधिकता थी। (ii) स्थूल जगत की कठोर वास्तविकता से उसका कोई सम्बन्ध नहीं रह गया था।

प्रश्न 33. प्रगतिवादी कविता की दो विशेषताएँ लिखिए।

उत्तर— (i) प्रगतिवादी काव्य में सामाजिक यथार्थ का चित्रण हुआ, तथा
(ii) नारी के प्रति स्वस्थ दृष्टिकोण अपनाया गया।

प्रश्न 34. प्रगतिवादी युग के दो कवियों तथा उनकी एक-एक रचना का नाम लिखिए।

उत्तर— (i) रामधारी सिंह 'दिनकर'—**उर्वशी**।
(ii) शिवमंगल सिंह 'सुमन'—**विन्ध्य हिमालय से**।

प्रश्न 35. छायावादोत्तर काल की कविता का काल-विभाजन लिखिए।

उत्तर— (क) प्रगतिवाद, प्रयोगवाद (1938—1959 ई०); (ख) नयी कविता का काल (1959 ई० से वर्तमान तक)।

प्रश्न 36. 'तारसप्तक' का क्या अभिप्राय है ?

या **'तारसप्तक' के सम्पादक का नाम लिखिए।** (2013)

उत्तर— 'तारसप्तक' में सात कवियों की रचनाएँ संकलित हैं। ये सात कवि थे—अज्ञेय, मुक्तिबोध, नेमिचन्द्र, भारत भूषण, प्रभाकर माचवे, गिरिजाकुमार माथुर तथा रामविलास शर्मा। अज्ञेय ने सन् 1943 ई० में उक्त सात कवियों की रचनाएँ 'तारसप्तक' के नाम से सम्पादित और प्रकाशित कीं।

प्रश्न 37. 'दूसरा सप्तक' के कवियों के नाम लिखिए। यह कब प्रकाशित हुआ? (2016)

उत्तर— 'दूसरा सप्तक' में भवानीप्रसाद मिश्र, शकुन्त माथुर, हरिनारायण व्यास, शमशेर बहादुर सिंह, नरेश मेहता, रघुवीर सहाय तथा धर्मवीर भारती की कविताएँ संकलित थीं। इस सप्तक की रचनाओं में आत्मान्वेषण पर बल दिया गया था तथा यह सन् 1951 ई० में प्रकाशित हुआ।

प्रश्न 38. भक्तिकाल की चार प्रमुख काव्यकृतियों के नाम लिखिए।
या भक्ति काव्यधारा की दो पुस्तकों के नाम लिखिए। (2009)

उत्तर— बीजक, पद्मावत, सूरसागर तथा श्रीरामचरितमानस।

प्रश्न 39. किन्हीं दो प्रयोगवादी कवियों के नाम लिखिए। (2014)

उत्तर— (i) 'अज्ञेय' तथा (ii) धर्मवीर भारती।

प्रश्न 40. नयी कविता से आप क्या समझते हैं ?
या 'नयी कविता' का आरम्भ कब से माना जाता है? (2012, 13)

उत्तर— इसका आरम्भ सन् 1954 ई० में जगदीश गुप्त और डॉ० रामस्वरूप चतुर्वेदी के सम्पादन में 'नयी कविता' के प्रकाशन से हुआ। यह कविता किसी वाद से बँधकर नहीं चलती।

प्रश्न 41. नयी कविता की दो आधारभूत विशेषताओं का उल्लेख करते हुए किन्हीं दो रचनाओं के नाम लिखिए।

उत्तर— (i) इसमें आधुनिक काव्य के नये रूप का शुभारम्भ हुआ तथा (ii) नयी कविता किसी दर्शन (वाद) से नहीं बँधी है।

दो रचनाओं के नाम हैं—

(i) **चाँद का मुँह टेढ़ा है**—गजानन माधव 'मुक्तिबोध'।

(ii) **खुशबू के शिलालेख**—भवानीप्रसाद मिश्र।

प्रश्न 42. नयी कविता के दो महत्त्वपूर्ण कवियों के नाम लिखिए।

उत्तर— (i) जगदीश गुप्त तथा (ii) नरेश मेहता।

प्रश्न 43. नयी कविता की किसी एक प्रमुख रचना और उसके लेखक का नामोल्लेख कीजिए।

उत्तर— **युग की गंगा**—केदारनाथ अग्रवाल।

प्रश्न 44. 'नवगीत' की किन्हीं दो आधारभूत विशेषताओं का उल्लेख कीजिए।

उत्तर— नवगीत की दो आधारभूत विशेषताएँ हैं—(i) सर्वत्र भावानुकूल भाषा का प्रयोग तथा (ii) स्वस्थ बिम्ब एवं प्रतीक विधान।

प्रश्न 45. आदिकाल (वीरगाथाकाल) की प्रमुख विशेषताएँ बताइए। (2009)

उत्तर— (1) आदिकाल में अधिकांश रासो ग्रन्थ लिखे गये; जैसे—पृथ्वीराज रासो, परमाल रासो आदि। इनमें आश्रयदाताओं की अतिशयोक्तिपूर्ण प्रशंसा है। (2) वीर और शृंगार रस की प्रधानता है। (3) युद्धों का सजीव वर्णन किया गया है। (4) काव्यभाषा के रूप में डिंगल और पिंगल का प्रयोग हुआ है। (5) काव्य-शैलियों में प्रबन्ध और गीति शैलियों का प्रयोग मिलता है। (6) सामूहिक राष्ट्रीय भावना का अभाव रहा है।

प्रश्न 46. कृष्ण-काव्यधारा के प्रमुख कवियों के नाम लिखिए। (2009)
या अष्टछाप के किन्हीं दो कवियों का नाम लिखिए।

उत्तर— अष्टछाप के कवि ही कृष्ण-काव्यधारा के प्रमुख कवि थे। महाप्रभु वल्लभाचार्य जी के चार शिष्यों एवं अपने चार शिष्यों को मिलाकर महाप्रभु के सुपुत्र गोसाईं विट्ठलनाथ जी ने अष्टछाप की स्थापना की, जिसके आठ कवि थे—सूरदास, कुम्भनदास, परमानन्ददास, कृष्णदास, छीतस्वामी, गोविन्ददास, चतुर्भुजदास, नन्ददास। इनके अतिरिक्त कृष्ण काव्यधारा के अन्य प्रमुख कवि हैं—मीरा, रसखान, हितहरिवंश और नरोत्तमदास।

प्रमुख काव्यकृतियाँ और उनके रचनाकार

आदिकाल (वीरगाथाकाल)

खुमान रासो (2011) —दलपति विजय
बीसलदेव रासो (2009, 18) —नरपति नाल्ह
हम्मीर रासो —शार्ङ्गधर
परमाल रासो —जगनिक
पृथ्वीराज रासो (2013) —चन्दबरदाई
विजयपाल रासो —नाल्हसिंह
कीर्तिलता —विद्यापति
सन्देश रासक —अब्दुल रहमान
पउमचरिउ —स्वयम्भू
भविसयत्तकहा —धनपाल
भरतेश्वर बाहुबली रास —मुनि जिनविजय
रेवंतगिरि रास (2010) —विजयसेन सूरि
श्रावकाचार —देवसेन
स्थूलिभद्र रास —जिनधर्म सूरि
प्राकृतपैंगलम् —लक्ष्मणधर
जयचन्द प्रकाश —भट्ट केदार
जयमयंक जस-चन्द्रिका (2014) —मधुकर भट्ट
मृगावती —कुतुबन

भक्तिकाल (पूर्वमध्यकाल)

साखी —कबीरदास
बीजक —कबीरदास
पद्मावत —मलिक मुहम्मद जायसी
अखरावट —मलिक मुहम्मद जायसी
आखिरी कलाम —मलिक मुहम्मद जायसी
चित्ररेखा —मलिक मुहम्मद जायसी
सूरसागर —सूरदास
सूरसारावली —सूरदास
साहित्य लहरी (2010, 11, 16) —सूरदास
गोवर्धनलीला —सूरदास
नागलीला —सूरदास
भ्रमरगीत —सूरदास
पद-संग्रह —सूरदास
सूर पचीसी —सूरदास
श्रीरामचरितमानस —गोस्वामी तुलसीदास
विनयपत्रिका (2010) —गोस्वामी तुलसीदास
कवितावली (2009, 11) —गोस्वामी तुलसीदास
गीतावली —गोस्वामी तुलसीदास
दोहावली —गोस्वामी तुलसीदास
कृष्ण गीतावली —गोस्वामी तुलसीदास
रामलला नहछू —गोस्वामी तुलसीदास
रामाज्ञा प्रश्नावली —गोस्वामी तुलसीदास
हनुमान बाहुक —गोस्वामी तुलसीदास
पार्वती मंगल —गोस्वामी तुलसीदास
जानकी मंगल —गोस्वामी तुलसीदास
बरवै रामायण —गोस्वामी तुलसीदास
वैराग्य सन्दीपनी —गोस्वामी तुलसीदास

रीतिकाल (उत्तरमध्यकाल)

रामचन्द्रिका (2012, 14) —केशवदास
कविप्रिया —केशवदास
रसिकप्रिया (2009) —केशवदास
नखशिख —केशवदास
रतन बावनी —केशवदास
वीरसिंहदेव चरित —केशवदास
विज्ञानगीता —केशवदास
जहाँगीर-जस-चन्द्रिका —केशवदास
सतसई (2011) —बिहारी
शिवराज भूषण (2010) —भूषण

शिवाबावनी (2011) —भूषण
शिवा शौर्य —भूषण
छत्रसाल दशक (2009) —भूषण
भूषण उल्लास —भूषण
दूषण उल्लास —भूषण
भूषण हजारा —भूषण
कविकुल कल्पतरु (2010, 14) —चिन्तामणि
छन्द-विचार —चिन्तामणि
पिंगल —चिन्तामणि
शृंगार-मंजरी —चिन्तामणि
रस-मंजरी (2011, 18) —नन्ददास
काव्य-निर्णय —भिखारीदास
सुधानिधि —तोष
रस-रहस्य —कुलपति मिश्र
रसार्णव —सुखदेव मिश्र
इश्कनामा —बोधा
नरसीजी का मायरा —मीराबाई
रागगोविन्द —मीराबाई
गीतगोविन्द की टीका —मीराबाई
सुदामाचरित —नरोत्तमदास
बरवै नायिका भेद —रहीम
शृंगार सोरठा —रहीम
मदनाष्टक —रहीम
रहीम सतसई —रहीम
रासपंचाध्यायी —रहीम
नगर-शोभा —रहीम
सुजान रसखान —रसखान
प्रेमवाटिका —रसखान
कश्मीर सुषमा —श्रीधर पाठक
वनाष्टक —श्रीधर पाठक
श्रान्त पथिक —श्रीधर पाठक
एकान्तवासी योगी —श्रीधर पाठक
कवित्त रत्नाकर —सेनापति
रसराज —मतिराम
ललित-ललाम —मतिराम
मतिराम सतसई —मतिराम
छन्दसार —मतिराम
साहित्यसार —मतिराम
लक्षण शृंगार —मतिराम
शब्द-रसायन —देव
अष्टधाम —देव
प्रेमदीपिका —देव
रसविलास —देव
भाव विलास —देव
सुजान विनोद —देव
जगद्विनोद —पद्माकर
पद्माभरण —पद्माकर
गंगालहरी —पद्माकर
हिम्मतबहादुर बिरुदावली —पद्माकर
प्रबोध पचासा —पद्माकर
कोकसागर —घनानन्द
सुजान सागर —घनानन्द
विरहलीला —घनानन्द
रसकेलिवल्ली —घनानन्द
कृपाकन्द —घनानन्द

आधुनिककाल (भारतेन्दु युग)

प्रेम-फुलवारी —भारतेन्दु हरिश्चन्द्र
प्रेम-प्रलाप —भारतेन्दु हरिश्चन्द्र
प्रेम-माधुरी (2016) —भारतेन्दु हरिश्चन्द्र
प्रेम तरंग —भारतेन्दु हरिश्चन्द्र
प्रेमाश्रु वर्णन —भारतेन्दु हरिश्चन्द्र
प्रेम सरोवर —भारतेन्दु हरिश्चन्द्र
प्रेम मालिका (2012) —भारतेन्दु हरिश्चन्द्र
भारत वीरत्व —भारतेन्दु हरिश्चन्द्र
विजयवल्लरी —भारतेन्दु हरिश्चन्द्र
विजयिनी —भारतेन्दु हरिश्चन्द्र
विजयपताका —भारतेन्दु हरिश्चन्द्र
उर्दू का स्यापा —भारतेन्दु हरिश्चन्द्र
बन्दर सभा —भारतेन्दु हरिश्चन्द्र
नये जमाने की मुकरी —भारतेन्दु हरिश्चन्द्र

आधुनिककाल (द्विवेदी युग)

गंगावतरण (2010, 11, 15) —जगन्नाथदास 'रत्नाकर'
उद्धवशतक (2009, 11, 12) —'रत्नाकर'
गंगालहरी —'रत्नाकर'
शृंगार लहरी (2011) —'रत्नाकर'
हिंडोला —'रत्नाकर'
हरिश्चन्द्र —'रत्नाकर'
कलकाशी —'रत्नाकर'
समालोचनादर्श —'रत्नाकर'
प्रकीर्ण गद्यावली —'रत्नाकर'
विष्णुलहरी —'रत्नाकर'
वैदेही वनवास (2011, 17) —अयोध्यासिंह उपाध्याय 'हरिऔध'
प्रिय प्रवास (2009, 11) —'हरिऔध'
रस-कलश (2009, 12) —'हरिऔध'
चोखे चौपदे —'हरिऔध'
रुक्मिणी-परिणय —'हरिऔध'
प्रद्युम्न-विजय —'हरिऔध'
चुभते चौपदे —'हरिऔध'
रसिक रहस्य —'हरिऔध'
प्रेमाम्बु-वारिधि —'हरिऔध'
प्रेम प्रपंच —'हरिऔध'
प्रेमाम्बु प्रश्रवण — 'हरिऔध'
प्रेमाम्बु प्रवाह —'हरिऔध'
साकेत (2011, 12, 14, 16) —मैथिलीशरण गुप्त
भारत भारती (2014) —मैथिलीशरण गुप्त
यशोधरा —मैथिलीशरण गुप्त
द्वापर (2017) —मैथिलीशरण गुप्त
रंग में भंग —मैथिलीशरण गुप्त
जयद्रथ-वध —मैथिलीशरण गुप्त
पंचवटी (2009) —मैथिलीशरण गुप्त
सिद्धराज (2010) —मैथिलीशरण गुप्त
अनघ —मैथिलीशरण गुप्त
चन्द्रहास —मैथिलीशरण गुप्त
तिलोत्तमा —मैथिलीशरण गुप्त
शकुन्तला —मैथिलीशरण गुप्त
त्रिपथगा —मैथिलीशरण गुप्त
कुणाल गीत —मैथिलीशरण गुप्त
नहुष —मैथिलीशरण गुप्त
अंजलि और अर्घ्य —मैथिलीशरण गुप्त
पृथिवी पुत्र —मैथिलीशरण गुप्त

आधुनिककाल (छायावादी युग)

कामायनी (2009, 11, 13) —जयशंकर प्रसाद
आँसू (2010, 16) —जयशंकर प्रसाद
लहर —जयशंकर प्रसाद
झरना (2009, 10) —जयशंकर प्रसाद
प्रेमपथिक (2011) —जयशंकर प्रसाद
चित्राधार (2011) —जयशंकर प्रसाद
कानन कुसुम (2014) —जयशंकर प्रसाद
करुणालय —जयशंकर प्रसाद
उर्वशी —जयशंकर प्रसाद
प्रेमराज्य —जयशंकर प्रसाद
शोकोच्छ्वास —जयशंकर प्रसाद
अनामिका (2012) —सूर्यकान्त त्रिपाठी 'निराला'
परिमल —'निराला'
गीतिका (2014) —'निराला'
कुकुरमुत्ता —'निराला'
अणिमा (2011) —'निराला'
अर्चना —'निराला'
राम की शक्तिपूजा —'निराला'
अपरा —'निराला'
सरोज-स्मृति —'निराला'
तुलसीदास —'निराला'
नये पत्ते —'निराला'
बेला —'निराला'
आराधना —'निराला'
गीत पुंज —'निराला'
जुही की कली —'निराला'
वीणा —सुमित्रानन्दन पन्त
पल्लव (2010, 11, 12) —सुमित्रानन्दन पन्त
गुंजन —सुमित्रानन्दन पन्त
युगान्त —सुमित्रानन्दन पन्त
युगवाणी —सुमित्रानन्दन पन्त
ग्राम्या —सुमित्रानन्दन पन्त
उत्तरा —सुमित्रानन्दन पन्त
लोकायतन (2011) —सुमित्रानन्दन पन्त
कला और बूढ़ा चाँद (2017) —सुमित्रानन्दन पन्त
चिदम्बरा (2011) —सुमित्रानन्दन पन्त
ग्रन्थि —सुमित्रानन्दन पन्त
स्वर्ण किरण —सुमित्रानन्दन पन्त
स्वर्ण-धूलि —सुमित्रानन्दन पन्त
युगपथ —सुमित्रानन्दन पन्त
युगान्तर —सुमित्रानन्दन पन्त
परिवर्तन —सुमित्रानन्दन पन्त
वाणी —सुमित्रानन्दन पन्त
रश्मि-बंधु —सुमित्रानन्दन पन्त
किरण-वीणा —सुमित्रानन्दन पन्त
पल्लविनी —सुमित्रानन्दन पन्त
समाधिता —सुमित्रानन्दन पन्त
गीत-हंस —सुमित्रानन्दन पन्त
गन्धवीथी —सुमित्रानन्दन पन्त
सत्यकाम —सुमित्रानन्दन पन्त
ऋता —सुमित्रानन्दन पन्त
नीहार (2013) —महादेवी वर्मा
नीरजा —महादेवी वर्मा
सान्ध्यगीत (2009) —महादेवी वर्मा
दीपशिखा (2011) —महादेवी वर्मा
यामा (2009, 10, 11, 16, 17) —महादेवी वर्मा
रश्मि (2010) —महादेवी वर्मा
सप्तपर्णा —महादेवी वर्मा
सन्धिनी (2014, 17) —महादेवी वर्मा
आधुनिक कवि —महादेवी वर्मा

आधुनिककाल (प्रगतिवादी, प्रयोगवादी, नयी कविता)

रेणुका (2011) —रामधारी सिंह 'दिनकर'
हुँकार —'दिनकर'
कुरुक्षेत्र —'दिनकर'
उर्वशी (2009, 11, 12) —'दिनकर'
रश्मिरथी —'दिनकर'
रसवन्ती —'दिनकर'
सामधेनी (2011) —'दिनकर'
चक्रवाल —'दिनकर'
हारे को हरिनाम (2018) —'दिनकर'
द्वन्द्वगीत —'दिनकर'
परशुराम की प्रतीक्षा (2017) —'दिनकर'
नीम के पत्ते —'दिनकर'
नीलकुसुम —'दिनकर'
सीपी और शंख —'दिनकर'
आत्मा की आँखें —'दिनकर'
इतिहास के आँसू —'दिनकर'
बापू —'दिनकर'
धूपछाँह —'दिनकर'
नये सुभाषित —'दिनकर'
बारदोली विजय —'दिनकर'
धूप और धुआँ —'दिनकर'
प्रणभंग —'दिनकर'
इत्यलम् —सच्चिदानन्द हीरानन्द वात्स्यायन 'अज्ञेय'
हरी घास पर क्षण भर (2010, 18) —'अज्ञेय'
इन्द्रधनु रौंदे हुए ये —'अज्ञेय'
आँगन के पार द्वार (2011, 18) —'अज्ञेय'
अरी ओ करुणा प्रभामय (2009) —'अज्ञेय'
सुनहले शैवाल —'अज्ञेय'
बावरा अहेरी (2009) —'अज्ञेय'
महावृक्ष के नीचे —'अज्ञेय'
भग्नदूत —'अज्ञेय'
पूर्वा —'अज्ञेय'
चिन्ता —'अज्ञेय'
रूपांवरा —'अज्ञेय'
कितनी नावों में कितनी बार (2011) —'अज्ञेय'
तारसप्तक —'अज्ञेय'
सागर-मुद्रा —'अज्ञेय'
नदी के बाँक पर छाया —'अज्ञेय'
पहले मैं सन्नाटा बुनता हूँ —'अज्ञेय'
शूल-फूल —नरेन्द्र शर्मा
कर्णफूल —नरेन्द्र शर्मा
प्रवासी के गीत —नरेन्द्र शर्मा
पलाश वन —नरेन्द्र शर्मा
रक्तचन्दन —नरेन्द्र शर्मा

अग्निशस्य	—नरेन्द्र शर्मा
कदली वन	—नरेन्द्र शर्मा
द्रौपदी	—नरेन्द्र शर्मा
उत्तरजय	—नरेन्द्र शर्मा
सुवर्णा	—नरेन्द्र शर्मा
गीतफरोश	—भवानीप्रसाद मिश्र
चकित है दुःख	—भवानीप्रसाद मिश्र
अँधेरी कविताएँ	—भवानीप्रसाद मिश्र
बुनी हुई रस्सी	—भवानीप्रसाद मिश्र
गांधी पंचशती	—भवानीप्रसाद मिश्र
खुशबू के शिलालेख	—भवानीप्रसाद मिश्र
फसलें और फूल	—भवानीप्रसाद मिश्र
अनाम तुम आते हो	—भवानीप्रसाद मिश्र
त्रिकाल सन्ध्या	—भवानीप्रसाद मिश्र
कालजयी	—भवानीप्रसाद मिश्र
धूप के धान	—गिरिजाकुमार माथुर
मंजीर	—गिरिजाकुमार माथुर
नाश और निर्माण	—गिरिजाकुमार माथुर
शिलापंख चमकीले	—गिरिजाकुमार माथुर
जो बँध नहीं सका	—गिरिजाकुमार माथुर
छाया मत छूना	—गिरिजाकुमार माथुर
भीतरी नदी की यात्रा	—गिरिजाकुमार माथुर
साक्षी रहे वर्तमान	—गिरिजाकुमार माथुर
पृथ्वीकल्प	—गिरिजाकुमार माथुर
चाँद का मुँह टेढ़ा है (2014)	—गजानन माधव 'मुक्तिबोध'
भूरी-भूरी खाक धूल	—गजानन माधव 'मुक्तिबोध'
कनुप्रिया	—धर्मवीर भारती
ठण्डा लोहा	—धर्मवीर भारती
सात गीत वर्ष	—धर्मवीर भारती
अन्धा युग (2013)	—धर्मवीर भारती
चित्ररेखा	—रामकुमार वर्मा
उत्तरायण	—रामकुमार वर्मा
वीर हम्मीर	—रामकुमार वर्मा
चित्तौड़ की चिता	—रामकुमार वर्मा
अंजलि	—रामकुमार वर्मा
अभिशाप	—रामकुमार वर्मा
संकेत	—रामकुमार वर्मा
रूपराशि	—रामकुमार वर्मा
चन्द्रकिरण	—रामकुमार वर्मा
पथिक	—रामनरेश त्रिपाठी
ग्राम्यगीत	—रामनरेश त्रिपाठी
मिलन	—रामनरेश त्रिपाठी
स्वप्न	—रामनरेश त्रिपाठी
हिमतरंगिणी	—माखनलाल चतुर्वेदी
वेणु लो गूँजे धरा	—माखनलाल चतुर्वेदी
हिमकिरीटिनी	—माखनलाल चतुर्वेदी
माता	—माखनलाल चतुर्वेदी
समर्पण	—माखनलाल चतुर्वेदी
युगचरण	—माखनलाल चतुर्वेदी
मुकुल	—सुभद्रा कुमारी चौहान
त्रिधारा	—सुभद्रा कुमारी चौहान
झंडे की इज्जत में	—सुभद्रा कुमारी चौहान
स्वदेश के प्रति	—सुभद्रा कुमारी चौहान
जलियाँवाला बाग	—सुभद्रा कुमारी चौहान
झाँसी की रानी	—सुभद्रा कुमारी चौहान
युगाधार	—सोहनलाल द्विवेदी
दूध बताशा	—सोहनलाल द्विवेदी
भैरवी	—सोहनलाल द्विवेदी
विषपान	—सोहनलाल द्विवेदी
वासवदत्ता	—सोहनलाल द्विवेदी
कुणाल	—सोहनलाल द्विवेदी
वासंती	—सोहनलाल द्विवेदी
चित्रा	—सोहनलाल द्विवेदी
प्रभाती	—सोहनलाल द्विवेदी
बाँसुरी	—सोहनलाल द्विवेदी
झरना	—सोहनलाल द्विवेदी
बिगुल	—सोहनलाल द्विवेदी
चेतना	—हरिवंशराय 'बच्चन'
मधुकलश	—हरिवंशराय 'बच्चन'
बुद्ध का नाचघर	—हरिवंशराय 'बच्चन'
मधुशाला	—हरिवंशराय 'बच्चन'
मधुबाला	—हरिवंशराय 'बच्चन'
निशा-निमन्त्रण	—हरिवंशराय 'बच्चन'
एकान्त संगीत	—हरिवंशराय 'बच्चन'
आकुल अन्तर	—हरिवंशराय 'बच्चन'
सतरंगिनी	—हरिवंशराय 'बच्चन'
मिलन-यामिनी	—हरिवंशराय 'बच्चन'
प्रणय-पत्रिका	—हरिवंशराय 'बच्चन'
त्रिभंगिमा	—हरिवंशराय 'बच्चन'
चार खेमे चौंसठ खूँटे	—हरिवंशराय 'बच्चन'
भस्मांकुर	—नागार्जुन
युगधारा	—नागार्जुन
सतरंगे पंखों वाली	—नागार्जुन
प्यासी पथराई आँखें	—नागार्जुन
तुमने कहा था	—नागार्जुन
खिचड़ी विप्लव देखा हमने	—नागार्जुन
हजार-हजार बाँहों वाली	—नागार्जुन
प्रलय-सृजन	—शिवमंगल सिंह 'सुमन'
हिल्लोल	—'सुमन'
जीवन के गान	—'सुमन'
पर आँखें नहीं भरीं	—'सुमन'
विन्ध्य हिमाचल	—'सुमन'
मिट्टी की बलात्	—'सुमन'
युग की गंगा	—केदारनाथ अग्रवाल
नींद के बादल	—केदारनाथ अग्रवाल
लोक और आलोक	—केदारनाथ अग्रवाल
फूल नहीं रंग बोलते हैं	—केदारनाथ अग्रवाल
आग का आइना	—केदारनाथ अग्रवाल
पंख और पतवार	—केदारनाथ अग्रवाल
हे मेरी तुम	—केदारनाथ अग्रवाल
धरती	—त्रिलोचन शास्त्री
दिगन्त	—त्रिलोचन शास्त्री
संसद से सड़क तक (2012, 15)	—सुदामा पाण्डेय 'धूमिल'

3

गद्यांश पर आधारित प्रश्नोत्तर

प्रश्न-परिचय— सामान्य हिन्दी के **खण्ड 'क'** के **तृतीय प्रश्न** के अन्तर्गत पाठ्य-पुस्तक **'गद्य गरिमा'** में संकलित विभिन्न पाठों में से **दो गद्यांश** दिये जाएँगे, जिनमें से किसी **एक गद्यांश** पर आधारित **पाँच** प्रश्नों के उत्तर देने होंगे। इस प्रश्न के लिए कुल **2 × 5 = 10 अंक** निर्धारित हैं।

प्रश्न— **दिए गए गद्यांश पर आधारित निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दीजिए—**

राष्ट्र का स्वरूप

(1) धरती माता की कोख में जो अमूल्य निधियाँ भरी हैं जिनके कारण वह वसुंधरा कहलाती है उससे कौन परिचित न होना चाहेगा? लाखों-करोड़ों वर्षों से अनेक प्रकार की धातुओं को पृथिवी के गर्भ में पोषण मिला है। दिन-रात बहने वाली नदियों ने पहाड़ों को पीस-पीसकर अगणित प्रकार की मिट्टियों से पृथिवी की देह को सजाया है। हमारे भावी आर्थिक अभ्युदय के लिए इन सबकी जाँच-पड़ताल अत्यन्त आवश्यक है। पृथिवी की गोद में जन्म लेने वाले जड़-पत्थर कुशल शिल्पियों से सँवारे जाने पर अत्यन्त सौन्दर्य के प्रतीक बन जाते हैं। नाना भाँति के अनगढ़ नग विन्ध्य की नदियों के प्रवाह में सूर्य की धूप से चिलकते रहते हैं, उनको जब चतुर कारीगर पहलदार कटाव पर लाते हैं तब उनके प्रत्येक घाट से नयी शोभा और सुन्दरता फूट पड़ती है। वे अनमोल हो जाते हैं। देश के नर-नारियों के रूप-मंडन और सौन्दर्य-प्रसाधन में इन छोटे पत्थरों का भी सदा से कितना भाग रहा है; अतएव हमें उनका ज्ञान होना भी आवश्यक है।

(i) उपर्युक्त गद्यांश के पाठ और लेखक का नाम लिखिए।

(ii) रेखांकित अंश की व्याख्या कीजिए।

(iii) दिन-रात बहने वाली नदियों ने किस प्रकार से पृथिवी की देह को सजाया है?

(iv) पृथिवी की गोद में जन्म लेने वाले जड़-पत्थर कैसे सौन्दर्य के प्रतीक बन जाते हैं?

(v) लेखक ने हमें किनके योगदान के बारे में बताते हुए उनसे परिचित होने की प्रेरणा दी है?

उत्तर—(i) प्रस्तुत गद्यावतरण हमारी पाठ्य-पुस्तक **'गद्य-गरिमा'** में संकलित एवं भारतीय संस्कृति के अध्येता **डॉ० वासुदेवशरण अग्रवाल** द्वारा लिखित **'राष्ट्र का स्वरूप'** शीर्षक निबन्ध से अवतरित है।

अथवा

पाठ का नाम — राष्ट्र का स्वरूप।
लेखक का नाम —वासुदेवशरण अग्रवाल।

(ii) **रेखांकित अंश की व्याख्या**—विद्वान् लेखक ने कहा है कि धरती माता की कोख में अमूल्य रत्न भरे पड़े हैं। इन्हीं रत्नों के कारण पृथ्वी का एक नाम वसुन्धरा (वसुओं = रत्नों को धारण करने वाली) भी है। बहुमूल्य रत्न, धातुएँ व खनिज पदार्थ, अन्न, फल, जल और इसी प्रकार की असंख्य अनमोल वस्तुओं, जिन्हें भूमि अपने आँचल में छिपाये रहती है, से हमारा प्रगाढ़ परिचय होना ही चाहिए।

(iii) दिन-रात बहने वाली नदियों ने पहाड़ों को पीस-पीसकर अगणित प्रकार की मिट्टियों से पृथिवी की देह को सजाया है।

(iv) पृथिवी की गोद में जन्म लेने वाले जड़-पत्थर कुशल शिल्पियों के सँवारे जाने पर अत्यन्त सौन्दर्य के प्रतीक बन जाते हैं।

(v) लेखक ने हमें छोटे-छोटे पत्थरों के योगदान के बारे में बताते हुए उन अमूल्य निधियों से परिचित होने की प्रेरणा दी है।

(2) राष्ट्र का तीसरा अंग जन की संस्कृति है। मनुष्यों ने युगों-युगों में जिस सभ्यता का निर्माण किया है वही उसके जीवन की श्वास-प्रश्वास है। बिना संस्कृति के जन की कल्पना कबंधमात्र है; संस्कृति ही जन का मस्तिष्क है। संस्कृति के विकास और अभ्युदय के द्वारा ही राष्ट्र की वृद्धि सम्भव है। राष्ट्र के समग्र रूप में भूमि और जन के साथ-साथ जन की संस्कृति का महत्त्वपूर्ण स्थान है। यदि भूमि और जन अपनी संस्कृति से विरहित कर दिए जाएँ तो राष्ट्र का लोप समझना चाहिए। जीवन के विटप का पुष्प संस्कृति है। संस्कृति के सौन्दर्य और सौरभ में ही राष्ट्रीय जन के जीवन का सौन्दर्य और यश अन्तर्निहित है। ज्ञान और कर्म दोनों के पारस्परिक प्रकाश की संज्ञा संस्कृति है।

(i) उपर्युक्त गद्यांश के पाठ और लेखक का नाम लिखिए।

(ii) रेखांकित अंश की व्याख्या कीजिए।

(iii) राष्ट्र के समग्र रूप में भूमि और जन के साथ-साथ किसका महत्त्वपूर्ण स्थान है?

(iv) कब राष्ट्र का लोप समझना चाहिए?

(v) संस्कृति के सौन्दर्य और सौरभ में क्या अन्तर्निहित है?

उत्तर—(i) प्रस्तुत गद्यावतरण हमारी पाठ्य-पुस्तक **'गद्य-गरिमा'** में संकलित एवं भारतीय संस्कृति के अध्येता **डॉ० वासुदेवशरण अग्रवाल** द्वारा लिखित **'राष्ट्र का स्वरूप'** शीर्षक निबन्ध से अवतरित है।

अथवा

पाठ का नाम — राष्ट्र का स्वरूप।
लेखक का नाम —वासुदेवशरण अग्रवाल।

(ii) **रेखांकित अंश की व्याख्या**—वास्तव में संस्कृति मनुष्य का मस्तिष्क है और मनुष्य के जीवन में मस्तिष्क सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण अंग है, क्योंकि मानव-शरीर का संचालन और नियन्त्रण उसी से होता है। जिस प्रकार से मस्तिष्क से रहित धड़ को व्यक्ति नहीं कहा जा सकता है अर्थात् मस्तिष्क के बिना मनुष्य की कल्पना नहीं की जा सकती, उसी प्रकार संस्कृति के बिना भी मानव-जीवन की कल्पना नहीं की जा सकती है। इसलिए संस्कृति के विकास और उसकी उन्नति में ही किसी राष्ट्र का विकास, उन्नति और समृद्धि निहित है।

(iii) राष्ट्र के समग्र रूप में भूमि और जन के साथ-साथ जन की संस्कृति का महत्त्वपूर्ण स्थान है।

(iv) यदि भूमि और जन अपनी संस्कृति से विरहित कर दिए जाएँ तो राष्ट्र का लोप समझना चाहिए।

(v) संस्कृति के सौन्दर्य और सौरभ में राष्ट्रीय जन के जीवन का सौन्दर्य और यश अन्तर्निहित है।

(3) साहित्य, कला, नृत्य, गीत, आमोद-प्रमोद, अनेक रूपों में राष्ट्रीय जन अपने-अपने मानसिक भावों को प्रकट करते हैं। आत्मा का जो विश्वव्यापी

आनंद-भाव है, वह इन विविध रूपों में साकार होता है। यद्यपि बाह्य रूप की दृष्टि से संस्कृति के ये बाहरी लक्षण अनेक दिखायी पड़ते हैं, किन्तु आन्तरिक आनंद की दृष्टि से उनमें एकसूत्रता है। जो व्यक्ति सहृदय है, वह प्रत्येक संस्कृति के आनंद-पक्ष को स्वीकार करता है और उससे आनंदित होता है। इस प्रकार की उदार भावना ही विविध जनों से बने हुए राष्ट्र के लिए स्वास्थ्यकर है।

(i) उपर्युक्त गद्यांश के पाठ और लेखक का नाम लिखिए।
(ii) रेखांकित अंश की व्याख्या कीजिए।
(iii) किन रूपों में राष्ट्रीय जन अपने-अपने मानसिक भावों को प्रकट करते हैं?
(iv) सहृदय व्यक्ति किसको स्वीकार करते हुए आनंदित होता है?
(v) प्रस्तुत पंक्तियों में लेखक ने राष्ट्र के किस स्वरूप पर प्रकाश डाला है?

उत्तर—(i) प्रस्तुत गद्यावतरण हमारी पाठ्य-पुस्तक **'गद्य-गरिमा'** में संकलित एवं भारतीय संस्कृति के अध्येता **डॉ० वासुदेवशरण अग्रवाल** द्वारा लिखित **'राष्ट्र का स्वरूप'** शीर्षक निबन्ध से अवतरित है।

अथवा

पाठ का नाम— राष्ट्र का स्वरूप।
लेखक का नाम—वासुदेवशरण अग्रवाल।

(ii) **रेखांकित अंश की व्याख्या**—लेखक कहते हैं कि एक ही राष्ट्र के भीतर अनेकानेक उपसंस्कृतियाँ फलती-फूलती हैं। इन संस्कृतियों के अनुयायी नाना प्रकार के आमोद-प्रमोदों में अपने हृदय के उल्लास को प्रकट किया करते हैं। साहित्य, कला, नृत्य, गीत इत्यादि संस्कृति के विविध अंग हैं। इनका प्रस्तुतीकरण उस आनन्द की भावना को व्यक्त करने के लिए किया जाता है, जो सम्पूर्ण विश्व की आत्माओं में विद्यमान है।

(iii) साहित्य, कला, नृत्य, आमोद-प्रमोद, अनेक रूपों में राष्ट्रीय जन अपने-अपने मासिक भावों को प्रकट करते हैं।

(iv) सहृदय व्यक्ति प्रत्येक संस्कृति के आनन्द-पक्ष को स्वीकार करते हुए उससे आनन्दित होता है।

(v) प्रस्तुत पंक्तियों में लेखक ने विविध संस्कृति वाले राष्ट्र की एकसूत्रता और उसके एकीकृत स्वरूप पर प्रकाश डाला है।

(4) पूर्वजों ने चरित्र और धर्म-विज्ञान, साहित्य, कला और संस्कृति के क्षेत्र में जो कुछ भी पराक्रम किया है उस सारे विस्तार को हम गौरव के साथ धारण करते हैं और उसके तेज को अपने भावी जीवन में साक्षात् देखना चाहते हैं। यही राष्ट्र-संवर्धन का स्वाभाविक प्रकार है। जहाँ अतीत वर्तमान के लिए भाररूप नहींहै, जहाँ भूत वर्तमान को जकड़ नहीं रखना चाहता वरन् अपने वरदान से पुष्ट करके उसे आगे बढ़ाना चाहता है, उस राष्ट्र का हम स्वागत करते हैं।

(i) उपर्युक्त गद्यांश के पाठ और लेखक का नाम लिखिए।
(ii) रेखांकित अंश की व्याख्या कीजिए।
(iii) पूर्वजों की किन उपलब्धियों को हम गौरव के साथ धारण करते हैं?
(iv) किस राष्ट्र का हम स्वागत करते हैं?
(v) प्रस्तुत गद्यांश का आशय स्पष्ट कीजिए।

उत्तर—(i) प्रस्तुत गद्यावतरण हमारी पाठ्य-पुस्तक **'गद्य-गरिमा'** में संकलित एवं भारतीय संस्कृति के अध्येता **डॉ० वासुदेवशरण अग्रवाल** द्वारा लिखित **'राष्ट्र का स्वरूप'** शीर्षक निबन्ध से अवतरित है।

अथवा

पाठ का नाम— राष्ट्र का स्वरूप।
लेखक का नाम—वासुदेवशरण अग्रवाल।

(ii) **रेखांकित अंश की व्याख्या**—विद्वान लेखक कहते हैं कि हमारे पूर्वजों ने धर्म, विज्ञान, साहित्य, कला और संस्कृति के क्षेत्र में महान् सफलताएँ प्राप्त की थीं। हम उनकी उपलब्धियों पर गौरव का अनुभव करते हैं। उन्होंने जो महान् कार्य किये, हमें उन्हें अपने जीवन में अपनाना चाहिए। हमें इसमें गौरव की अनुभूति होनी चाहिए कि हम उनके महान् कार्यों का अनुसरण कर रहे हैं। अपने पुरखों के महान् आदर्शों को अपने जीवन में उतारने से हमारा जीवन सफल और महान् बनेगा। राष्ट्र की प्रगति और समृद्धि का स्वाभाविक तरीका यही है। ऐसा करने से ही राष्ट्र की उन्नति सम्भव है।

(iii) पूर्वजों ने चरित्र और धर्म विज्ञान, साहित्य, कला और संस्कृति के क्षेत्र में जो कुछ भी उपलब्धियाँ की हैं उनको हम गौरव के साथ साधारण करते हैं।

(iv) जहाँ अतीत वर्तमान के लिए भाररूप नहीं है, जहाँ भूत वर्तमान को जकड़ नहीं रखना चाहता वरन् अपने वरदान से पुष्ट करके उसे आगे बढ़ाना चाहता है, उस राष्ट्र का हम स्वागत करते हैं।

(v) प्रस्तुत गद्यांश का आशय यह है कि राष्ट्र की उन्नति उसकी प्राचीन परम्पराओं से संदेश लेकर भविष्य के लिए समयानुकूल नवीन प्रयास करने पर निर्भर करती हैं।

राबर्ट नर्सिंग होम में

(1) मैंने बहुतों को रूप से पाते देखा था, बहुतों को धन से और गुणों से भी बहुतों को पाते देखा था पर मानवता के आँगन में समर्पण और प्राप्ति का यह अद्भुत सौम्य स्वरूप आज अपनी ही आँखों देखा कि कोई अपनी पीड़ा से किसी को पाये और किसी का उत्सर्ग सदा किसी को पीड़ा के लिए ही सुरक्षित रहे।

(i) उपर्युक्त गद्यांश के पाठ और लेखक का नाम लिखिए।
(ii) रेखांकित अंश की व्याख्या कीजिए।
(iii) लेखक ने समर्पण और प्राप्ति का कौन-सा अद्भुत सौम्य स्वरूप देखा?
(iv) प्राय: गुणी व्यक्ति का लोगों पर क्या प्रभाव पड़ता है?
(v) प्रस्तुत गद्यांश के माध्यम से लेखक ने किसकी झाँकी प्रस्तुत की है?

उत्तर—(i) प्रस्तुत गद्यावतरण हमारी पाठ्य-पुस्तक **'गद्य-गरिमा'** में संकलित एवं प्रसिद्ध रिपोर्ताज और संस्मरण लेखक **श्री कन्हैयालाल मिश्र 'प्रभाकर'** द्वारा लिखित **राबर्ट नर्सिंग होम में** पाठ निबन्ध से अवतरित है।

अथवा

पाठ का नाम— राबर्ट नर्सिंग होम में।
लेखक का नाम—श्री कन्हैयालाल मिश्र 'प्रभाकर'।

(ii) **रेखांकित अंश की व्याख्या**—लेखक कहता है कि मैंने संसार में ऐसे बहुत-से व्यक्तियों को देखा है, जो अपनी विशिष्ट विशेषताओं से लोगों को अपना बना लेते हैं एवं अपार यश अर्जित करते हैं। कुछ लोग अपने रूप-सौन्दर्य द्वारा लोगों को अपनी ओर आकर्षित करते हैं तो कुछ ऐसे भी लोग होते हैं, जिनके पास अपार धन होता है और वे उसके बल पर लोगों पर अपना प्रभाव जमाते हैं या दूसरों को आत्मीय बना लेते हैं। कुछ व्यक्ति ऐसे होते हैं, जिनमें कोई विशिष्ट गुण होता है और वे अपने गुणों द्वारा बहुत कुछ प्राप्त कर लेते हैं; परन्तु आज लेखक ने एक ऐसी अद्भुत नारी को देखा, जिसने मानवता के लिए सर्वस्व समर्पित करके दूसरों की श्रद्धा और आदर को प्राप्त किया है।

(iii) लेखक ने समर्पण और प्राप्ति का यह अद्भुत सौम्य स्वरूप देखा कि कोई अपनी पीड़ा से किसी को पाए और किसी का उत्सर्ग सदा किसी को पीड़ा के लिए ही सुरक्षित रहे।

(iv) प्राय: गुणी व्यक्ति का लोगों पर यह प्रभाव पड़ता है कि वे अपने गुणों के द्वारा दूसरों को अपना बना लेते हैं।

(v) प्रस्तुत गद्यांश के माध्यम से लेखक ने विश्वप्रसिद्ध मानव-सेविका मदर टेरेसा की सेवा-भावना एवं आत्म-त्याग की मनोरम झाँकी प्रस्तुत की है।

(2) यह अनुभव कितना चमत्कारी है कि यहाँ जो जितनी अधिक बूढ़ी है वह उतनी ही अधिक उत्फुल्ल, मुसकानमयी है। यह किस दीपक की जोत है? जागरूक जीवन की! लक्ष्यदर्शी जीवन की! सेवा-निरत जीवन की! अपने विश्वासों के साथ एकाग्र जीवन की। भाषा के भेद रहे हैं, रहेंगे भी, पर यह जोत विश्व की सर्वोत्तम जोत है।

गद्यांश पर आधारित प्रश्नोत्तर

(i) उपर्युक्त गद्यांश के पाठ और लेखक का नाम लिखिए।
(ii) रेखांकित अंश की व्याख्या कीजिए।
(iii) भिन्न-भिन्न प्रान्तों में भाषा में क्या अन्तर देखने को मिलता है?
(iv) कौन-सी ज्योति विश्व की सर्वोत्तम ज्योति है?
(v) प्रस्तुत गद्यांश में लेखक ने किसके मुसकानमय जीवन का चित्रांकन किया है?

उत्तर—(i) प्रस्तुत गद्यावतरण हमारी पाठ्य-पुस्तक '**गद्य-गरिमा**' में संकलित एवं प्रसिद्ध रिपोर्ताज और संस्मरण लेखक **श्री कन्हैयालाल मिश्र 'प्रभाकर'** द्वारा लिखित **राबर्ट नर्सिंग होम में** पाठ से उद्धृत है।

अथवा

पाठ का नाम— राबर्ट नर्सिंग होम में।
लेखक का नाम—श्री कन्हैयालाल मिश्र 'प्रभाकर'।

(ii) **रेखांकित अंश की व्याख्या**—मदर मार्गरेट इन्दौर के नर्सिंग होम की सर्वाधिक वृद्धा नर्स हैं। लेखक ने वहाँ रहकर देखा कि उस नर्सिंग होम में जो जितनी वृद्धा नर्स है, वह उतनी ही अधिक सेवा-परायण, कर्त्तव्यपरायण, क्रियाशील, प्रसन्न और मुसकानमयी है।
(iii) भिन्न-भिन्न प्रान्तों में भाषा में भिन्न-भिन्न अन्तर देखने को मिलते हैं।
(iv) सबके हृदय में एक अद्भुत ज्योति प्रज्वलित है, वह है सेवा और प्यार की ज्योति। यही ज्योति विश्व की सर्वोत्तम ज्योति है।
(v) लेखक ने प्रस्तुत गद्यांश में राबर्ट नर्सिंग होम में समर्पित भाव से सेवारत और सर्वाधिक वृद्धा नर्स मार्गरेट के मुसकानमय जीवन का चित्रांकन किया है।

अशोक के फूल

(1) भारतीय साहित्य में, और इसलिए जीवन में भी, इस पुष्प का प्रवेश और निर्गम दोनों ही विचित्र नाटकीय व्यापार हैं। ऐसा तो कोई नहीं कह सकता कि कालिदास के पूर्व भारतवर्ष में इस पुष्प का कोई नाम ही नहीं जानता था; परन्तु कालिदास के काव्यों में यह जिस शोभा और सौकुमार्य का भार लेकर प्रवेश करता है, वह पहले कहाँ था। उस प्रवेश में नववधू के गृह-प्रवेश की भाँति शोभा है, गरिमा है, पवित्रता है और सुकुमारता है। फिर एकाएक मुसलमानी सल्तनत की प्रतिष्ठा के साथ-ही-साथ यह मनोहर पुष्प साहित्य के सिंहासन से चुपचाप उतार दिया गया। नाम तो लोग बाद में भी लेते थे, पर उसी प्रकार जिस प्रकार बुद्ध, विक्रमादित्य का। अशोक को जो सम्मान कालिदास से मिला, वह अपूर्व था।

(i) उपर्युक्त गद्यांश के पाठ और लेखक का नाम लिखिए।
(ii) रेखांकित अंश की व्याख्या कीजिए।
(iii) अशोक का पुष्प कालिदास के महाकाव्य में किस भाँति शोभा पाता है?
(iv) अशोक के पुष्प को कब साहित्य के सिंहासन से उतार फेंका गया?
(v) लेखक ने किसे विचित्र नाटकीय व्यापार बताया है?

उत्तर—(i) प्रस्तुत गद्यावतरण हमारी पाठ्य-पुस्तक '**गद्य-गरिमा**' में संकलित तथा हिन्दी के सुविख्यात निबन्धकार **आचार्य हजारीप्रसाद द्विवेदी** द्वारा लिखित '**अशोक के फूल**' नामक ललित निबन्ध से अवतरित है।

अथवा

पाठ का नाम—अशोक के फूल।
लेखक का नाम—आचार्य हजारीप्रसाद द्विवेदी।

(ii) **रेखांकित अंश की व्याख्या**—आचार्य हजारीप्रसाद द्विवेदी जी अशोक के फूल के बारे में बताते हुए कह रहे हैं कि भारतीय साहित्यिक वाङ्मय और भारतीय जीवन में अशोक के फूल का प्रवेश और फिर विलुप्त हो जाना विचित्र नाटकीय स्थिति के सदृश है। कालिदास ने अपने काव्य में इस पुष्प को सर्वाधिक महत्त्व प्रदान किया है। कालिदास के काव्य में यह पुष्प जिस सुन्दरता और सुकुमारता के साथ वर्णित होता है, वैसा उनके पूर्ववर्ती किसी कवि के काव्य में नहीं होता।
(iii) अशोक का पुष्प कालिदास के महाकाव्य में नववधू के गृह-प्रवेश की भाँति शोभा पाता है।
(iv) अशोक का पुष्प मुसलमानी सल्तनत की प्रतिष्ठा के साथ-साथ ही साहित्य के सिंहासन से चुपचाप उतार फेंका गया।
(v) लेखक ने भारतीय साहित्य और भारतीय जीवन में अशोक के पुष्प के प्रवेश और निर्गम को विचित्र नाटकीय व्यापार बताया है।

(2) कहते हैं, दुनिया बड़ी भुलक्कड़ है! केवल उतना ही याद रखती है, जितने से उसका स्वार्थ सधता है। बाकी को फेंककर आगे बढ़ जाती है। शायद अशोक से उसका स्वार्थ नहीं सधा। क्यों उसे वह याद रखती? सारा संसार स्वार्थ का अखाड़ा ही तो है।

(i) उपर्युक्त गद्यांश के पाठ और लेखक का नाम लिखिए।
(ii) रेखांकित अंश की व्याख्या कीजिए।
(iii) अशोक को विस्मृत करने का आधार किसे माना गया है?
(iv) लेखक ने दुनिया का किस तरह का व्यवहार बताया है?
(v) स्वार्थ का अखाड़ा किसे कहा गया है?

उत्तर—(i) प्रस्तुत गद्यावतरण हमारी पाठ्य-पुस्तक '**गद्य-गरिमा**' में संकलित तथा हिन्दी के सुविख्यात निबन्धकार **आचार्य हजारीप्रसाद द्विवेदी** द्वारा लिखित '**अशोक के फूल**' नामक ललित निबन्ध से अवतरित है।

अथवा

पाठ का नाम—अशोक के फूल।
लेखक का नाम—आचार्य हजारीप्रसाद द्विवेदी।

(ii) **रेखांकित अंश की व्याख्या**—द्विवेदी जी कहते हैं कि यह संसार बड़ा स्वार्थी है। यह उन्हीं बातों को याद रखता है, जिनसे उसका कोई स्वार्थ सिद्ध होता है, अन्यथा व्यर्थ की स्मृतियों से यह अपने आपको बोझिल नहीं बनाना चाहता। यह उन्हीं वस्तुओं को याद रखता है, जो उसके दैनिक जीवन की स्वार्थ-पूर्ति में सहायता पहुँचाती हैं। बदलते समय की दृष्टि में अनुपयोगी होने से यदि कोई वस्तु उपेक्षित हो जाती है तो यह उसे भूलकर आगे बढ़ जाता है।
(iii) अशोक को विस्मृत करने का आधार स्वार्थवृत्ति को माना गया है।
(iv) लेखक ने दुनिया के व्यवहार को इस तरह का बताया है कि यह केवल उतना ही याद रखती है जितने से इसका स्वार्थ सधता है। बाकी को फेंककर आगे बढ़ जाती है।
(v) सारे संसार को स्वार्थ का अखाड़ा कहा गया है।

(3) मुझे मानव-ज़ाति की दुर्दम-निर्मम धारा के हजारों वर्ष का रूप साफ दिखाई दे रहा है। मनुष्य की जीवनी-शक्ति बड़ी निर्मम है, वह सभ्यता और संस्कृति के वृथा मोहों को रौंदती चली आ रही है। न जाने कितने धर्माचारों, विश्वासों, उत्सवों और व्रतों को धोती-बहाती यह जीवन-धारा आगे बढ़ी है। संघर्षों से मनुष्य ने नयी शक्ति पाई है। हमारे सामने समाज का आज जो रूप है, वह न जाने कितने ग्रहण और त्याग का रूप है। देश और जाति की विशुद्ध संस्कृति केवल बाद की बात है।

(i) उपर्युक्त गद्यांश के पाठ और लेखक का नाम लिखिए।
(ii) रेखांकित अंश की व्याख्या कीजिए।
(iii) मनुष्य की जीवन-शक्ति को निर्मम क्यों बताया गया है?
(iv) लेखक ने किसे बाद की बात बताया है?
(v) ग्रहण और त्याग का रूप क्या है?

उत्तर—(i) प्रस्तुत गद्यावतरण हमारी पाठ्य-पुस्तक '**गद्य-गरिमा**' में संकलित तथा हिन्दी के सुविख्यात निबन्धकार **आचार्य हजारीप्रसाद द्विवेदी** द्वारा लिखित '**अशोक के फूल**' नामक ललित निबन्ध से अवतरित है।

अथवा

पाठ का नाम—अशोक के फूल।
लेखक का नाम—आचार्य हजारीप्रसाद द्विवेदी।

(ii) **रेखांकित अंश की व्याख्या**—आचार्य हजारीप्रसाद द्विवेदी जी कह रहे हैं कि मानव-जाति के विकास के हजारों वर्षों के इतिहास के मनन और चिन्तन के परिणामस्वरूप उन्होंने जो अनुभव किया है वह यह है कि मनुष्य में जो जिजीविषा है वह अत्यधिक निर्मम और मोह-माया के बन्धनों से रहित है। सभ्यता और संस्कृति के जो कतिपय व्यर्थ बन्धन या मोह थे, उन सबको रौंदती हुई वह सदैव आगे बढ़ती चली गयी।

(iii) मनुष्य की जीवन-शक्ति को निर्मम इसलिए बताया गया है क्योंकि वह सभ्यता और संस्कृति के वृथा मोहों को रौंदती चली आ रही है।

(iv) देश और जाति की अवशुद्ध संस्कृति को बाद की बात बताया है।

(v) वर्तमान समाज का रूप न जाने कितने ग्रहण और त्याग का रूप है।

(4) अशोक का फूल तो उसी मस्ती में हँस रहा है। पुराने चित्त से इसको देखने वाला उदास होता है। वह अपने को पंडित समझता है। पंडिताई भी एक बोझ है–जितनी ही भारी होती है, उतनी ही तेजी से डुबाती है।

(i) उपर्युक्त गद्यांश के पाठ और लेखक का नाम लिखिए।

(ii) रेखांकित अंश की व्याख्या कीजिए।

(iii) अशोक को देखकर कौन उदास होता है?

(iv) उपर्युक्त गद्यांश के माध्यम से लेखक विद्वत्ता के बारे में जनसामान्य को क्या सन्देश देना चाहता है?

(v) प्रस्तुत गद्यांश का आशय स्पष्ट कीजिए।

उत्तर—(i) प्रस्तुत गद्यावतरण हमारी पाठ्य-पुस्तक '**गद्य-गरिमा**' में संकलित तथा हिन्दी के सुविख्यात निबन्धकार **आचार्य हजारीप्रसाद द्विवेदी** द्वारा लिखित '**अशोक के फूल**' नामक ललित निबन्ध से अवतरित है।

अथवा

पाठ का नाम—अशोक के फूल।
लेखक का नाम—आचार्य हज़ारीप्रसाद द्विवेदी।

(ii) **रेखांकित अंश की व्याख्या**—पाण्डित्य अर्थात् विद्वत्ता भी एक भार है। यह जितनी भारी होती है, उतनी ही तेजी से मनुष्य को डुबाती है। विद्वत्ता अहंकार को उत्पन्न करती है और अहंकार मनुष्य के विनाश का कारण होता है। जो जितना बड़ा विद्वान् होता है, वह उतना ही बड़ा अहंकारी भी होता है। रावण का उदाहरण हमारे समक्ष है। उस जैसा विद्वान् धरती पर शायद ही पैदा हुआ हो। लेकिन उसके अहंकार ने उसका सर्वनाश कर दिया।

(iii) अशोक को पुराने चित्त से देखने वाला उदास होता है।

(iv) उपर्युक्त गद्यांश के माध्यम से लेखक सन्देश देना चाहता है कि विद्वत्ता को सहज और जीवन का अंग होना चाहिए जिससे वह व्यक्ति को उत्थान की ओर प्रेरित करेगी।

(v) प्रस्तुत गद्यांश का आशय यह है कि व्यक्ति को अपने उत्थान से उत्साहित और पतन से निरुत्साहित नहीं होना चाहिए। प्रत्येक स्थिति में समभाव से रहना चाहिए।

भाषा और आधुनिकता

(1) भाषा स्वयं संस्कृति का एक अटूट अंग है। संस्कृति परम्परा से निःसृत होने पर भी, परिवर्तनशील और गतिशील है। उसकी गति विज्ञान की प्रगति के साथ जोड़ी जाती है। वैज्ञानिक आविष्कारों के प्रभाव के कारण उद्भूत नयी सांस्कृतिक हलचलों को शाब्दिक रूप देने के लिए भाषा के परम्परागत प्रयोग पर्याप्त नहीं हैं। इसके लिए नये प्रयोगों की, नयी भाव-योजनाओं को व्यक्त करने के लिए नये शब्दों की खोज की महती आवश्यकता है।

(i) उपर्युक्त गद्यांश के पाठ और लेखक का नाम लिखिए।

(ii) रेखांकित अंश की व्याख्या कीजिए।

(iii) प्रस्तुत अवतरण के माध्यम से लेखक ने किस बात पर बल दिया है?

(iv) संस्कृति का एक अटूट अंग क्या है?

(v) किसकी गति विज्ञान की प्रगति के साथ जोड़ी जाती है?

उत्तर—(i) प्रस्तुत गद्यावतरण हमारी पाठ्य-पुस्तक '**गद्य-गरिमा**' में संकलित तथा श्रेष्ठ विचारक व निबन्धकार **जी० सुन्दर रेड्डी** द्वारा लिखित '**भाषा और आधुनिकता**' शीर्षक शोधपरक निबन्ध से अवतरित है।

अथवा

पाठ का नाम—भाषा और आधुनिकता।
लेखक का नाम—जी० सुन्दर रेड्डी

(ii) **रेखांकित अंश की व्याख्या**—भाषा में जो प्रयोग प्राचीनकाल से चले आ रहे हैं, वे नये सांस्कृतिक परिवर्तनों को व्यक्त करने में समर्थ नहीं हैं। नित्यप्रति संस्कृति में हुए परिवर्तनों को भाषा द्वारा व्यक्त करने के लिए भाषा में नये-नये प्रयोगों, नये-नये शब्दों की खोज का कार्य होना बहुत आवश्यक है, जिससे बदलते हुए नये भावों को उचित रूप से व्यक्त किया जा सके।

(iii) प्रस्तुत गद्यावतरण में लेखक ने विज्ञान की प्रगति के कारण जो सांस्कृतिक परिवर्तन होता है, उसे शब्दों द्वारा व्यक्त करने के लिए भाषा में नये प्रयोगों की आवश्यकता पर बल दिया है।

(iv) संस्कृति का एक अटूट अंग भाषा है।

(v) संस्कृति की गति विज्ञान की प्रगति के साथ जोड़ी जाती है।

(2) विज्ञान की प्रगति के कारण नयी चीजों का निरंतर आविष्कार होता रहता है। जब कभी नया आविष्कार होता है, उसे एक नयी संज्ञा दी जाती है। जिस देश में उसकी सृष्टि की जाती है वह देश उस आविष्कार के नामकरण के लिए नया शब्द बनाता है; वही शब्द प्रायः अन्य देशों में बिना परिवर्तन के वैसे ही प्रयुक्त किया जाता है। यदि हर देश उस चीज के लिए अपना-अपना अलग नाम देता रहेगा, तो उस चीज को समझने में ही दिक्कत होगी। जैसे–रेडियो, टेलीविजन, स्पुतनिक।

(i) उपर्युक्त गद्यांश के पाठ और लेखक का नाम लिखिए।

(ii) रेखांकित अंश की व्याख्या कीजिए।

(iii) कौन-सा देश किसी आविष्कृत चीज के नामकरण के लिए नया शब्द देता है?

(iv) यदि हर देश आविष्कृत चीजों को अपना-अपना अलग नाम देता रहे तो क्या होगा?

(v) नई चीजों के आविष्कार होने का क्या कारण है?

उत्तर—(i) प्रस्तुत गद्यावतरण हमारी पाठ्य-पुस्तक '**गद्य-गरिमा**' में संकलित तथा श्रेष्ठ विचारक व निबन्धकार **जी० सुन्दर रेड्डी** द्वारा लिखित '**भाषा और आधुनिकता**' शीर्षक शोधपरक निबन्ध से अवतरित है।

अथवा

पाठ का नाम—भाषा और आधुनिकता।
लेखक का नाम—जी० सुन्दर रेड्डी

(ii) **रेखांकित अंश की व्याख्या**—लेखक का कथन है कि यदि कोई विदेशी शब्द अपने भाव का सम्प्रेषण करने में सक्षम है तो उसमें परिवर्तन नहीं करना चाहिए। उदाहरण के लिए—आज प्रत्येक देश में विज्ञान के क्षेत्र में भिन्न-भिन्न आविष्कार हो रहे हैं और उन्हें नये-नये नाम दिये जा रहे हैं। प्रत्येक देश अपने द्वारा आविष्कृत वस्तु का अपनी भाषा के अनुसार नामकरण कर रहा है और दूसरे देशों में भी वही नाम प्रचलित होता जा रहा है।

(iii) जिस देश में किसी चीज की सृष्टि की जाती है वही देश उस आविष्कृत चीज के नामकरण के लिए नया शब्द देता है।

(iv) यदि हर देश आविष्कृत चीजों को अपना-अपना अलग नाम देता रहे तो उस चीज को समझने में दिक्कत होगी।

(v) नई चीजों के आविष्कार होने का कारण विज्ञान की प्रगति है।

(3) नये शब्द, नये मुहावरे एवं नयी रीतियों के प्रयोगों से युक्त भाषा को व्यावहारिकता प्रदान करना ही भाषा में आधुनिकता लाना है। दूसरे शब्दों में

केवल आधुनिक-युगीन विचारधाराओं के अनुरूप नये शब्दों के गढ़ने मात्र से ही भाषा का विकास नहीं होता; वरन् नये पारिभाषिक शब्दों को एवं नूतन शैली-प्रणालियों को व्यवहार में लाना ही भाषा को आधुनिकता प्रदान करना है।

(i) उपर्युक्त गद्यांश के पाठ और लेखक का नाम लिखिए।
(ii) रेखांकित अंश की व्याख्या कीजिए।
(iii) किसके गढ़ने मात्र से भाषा का विकास नहीं होता?
(iv) किन चीजों को व्यवहार में लाना ही भाषा को आधुनिकता प्रदान करना है?
(v) उपर्युक्त गद्यांश के माध्यम से लेखक ने कौन-सी बात बताई है?

उत्तर—(i) प्रस्तुत गद्यावतरण हमारी पाठ्य-पुस्तक '**गद्य-गरिमा**' में संकलित तथा श्रेष्ठ विचारक व निबन्धकार **जी० सुन्दर रेड्डी** द्वारा लिखित '**भाषा और आधुनिकता**' शीर्षक शोधपरक निबन्ध से अवतरित है।

अथवा

पाठ का नाम—भाषा और आधुनिकता।
लेखक का नाम—जी० सुन्दर रेड्डी

(ii) **रेखांकित अंश की व्याख्या**—किसी भाषा में आधुनिकता का समावेश तभी हो सकता है, जब उसमें नये-नये जनप्रचलित शब्दों, मुहावरों तथा लोकोक्तियों को समाहित कर लिया जाए। इन बातों के समावेश से भाषा व्यावहारिक हो जाती है।
(iii) आधुनिक-युगीन विचारधाराओं के अनुरूप नये शब्दों के गढ़ने मात्र से भाषा का विकास नहीं होता।
(iv) नये पारिभाषिक शब्दों को एवं नूतन शैली प्रणालियों को व्यवहार में लाना ही भाषा को आधुनिकता प्रदान करना है।
(v) उपर्युक्त गद्यांश में लेखक ने भाषा को आधुनिक बनाने के उपाय बताए हैं।

निन्दा रस

(1) अद्भुत है मेरा यह मित्र। उसके पास दोषों का 'केटलाग' है। मैंने सोचा कि जब वह हर परिचित की निन्दा कर रहा है, तो क्यों न मैं लगे हाथ विरोधियों की गत, इसके हाथों करा लूँ। मैं अपने विरोधियों का नाम लेता गया और वह उन्हें निन्दा की तलवार से काटता चला। जैसे लकड़ी चीरने की आरा मशीन के नीचे मजदूर लकड़ी का लट्ठा खिसकाता जाता है और वह चीरता जाता है, वैसे ही मैंने विरोधियों के नाम एक-एक कर खिसकाये और वह उन्हें काटता गया। कैसा आनन्द था। दुश्मनों को रण-क्षेत्र में एक के बाद एक कटकर गिरते हुए देखकर योद्धा को ऐसा ही सुख होता होगा।

(i) उपर्युक्त गद्यांश के पाठ और लेखक का नाम लिखिए।
(ii) रेखांकित अंश की व्याख्या कीजिए।
(iii) लेखक ने किसका उदाहरण आरा मशीन से दिया है?
(iv) लेखक ने अपने विरोधियों की गत किसके हाथों कराने का विचार किया?
(v) योद्धा को क्या देखकर निन्दक के जैसा ही सुख प्राप्त होता होगा?

उत्तर—(i) प्रस्तुत गद्यावतरण हमारी पाठ्य-पुस्तक '**गद्य-गरिमा**' में संकलित तथा हिन्दी के प्रसिद्ध व्यंग्यकार **श्री हरिशंकर परसाई** द्वारा लिखित '**निन्दा रस**' शीर्षक व्यंग्यात्मक निबन्ध से अवतरित है।

अथवा

पाठ का नाम—निन्दा रस।
लेखक का नाम—हरिशंकर परसाई।

(ii) **रेखांकित अंश की व्याख्या**—लेखक श्री हरिशंकर परसाई जी का कहना है कि उनका निन्दक मित्र बहुत ही अद्भुत और विचित्र है जिसके पास दोषों और बुराइयों का अच्छा-खासा सूची-पत्र है। उनके सम्मुख जिस किसी की भी चर्चा छिड़ जाती वह उसी की निन्दा में चार-छः वाक्य बोल दिया करता था। लेखक के मन में विचार आया कि क्यों न वह भी अपने कुछ-एक परिचितों की जो उसके विरोधी हैं, की निन्दा उसके माध्यम से करवा ले।
(iii) लेखक ने निन्दक का उदाहरण आरा मशीन से दिया है।
(iv) लेखक ने अपने विरोधियों की गत निन्दक मित्र के हाथों कराने का विचार किया।
(v) दुश्मनों को रण-क्षेत्र में एक के बाद एक कटकर गिरते हुए देखकर योद्धा को निन्दक जैसा ही सुख प्राप्त होता होगा।

(2) ईर्ष्या-द्वेष से प्रेरित निन्दा भी होती है। लेकिन इसमें वह मजा नहीं जो मिशनरी भाव से निन्दा करने में आता है। इस प्रकार का निन्दक बड़ा दुखी होता है। ईर्ष्या-द्वेष से चौबीसों घंटे जलता है और निन्दा का जल छिड़ककर कुछ शांति अनुभव करता है। ऐसा निन्दक बड़ा दयनीय होता है। अपनी अक्षमता से पीड़ित वह बेचारा दूसरे की सक्षमता के चाँद को देखकर सारी रात श्वान जैसा भौंकता है। ईर्ष्या-द्वेष से प्रेरित निन्दा करने वाले को कोई दण्ड देने की जरूरत नहीं है। वह निन्दक बेचारा स्वयं दण्डित होता है। आप चैन से सोइए और वह जलन के कारण सो नहीं पाता। उसे और क्या दंड चाहिए?

(i) उपर्युक्त गद्यांश के पाठ और लेखक का नाम लिखिए।
(ii) रेखांकित अंश की व्याख्या कीजिए।
(iii) मिशनरी निन्दक शान्ति का अनुभव कब करता है?
(iv) किस प्रकार के निन्दक को दण्ड देने की कोई जरूरत नहीं होती? कारण सहित उत्तर दीजिए।
(v) अपनी अक्षमता से पीड़ित निन्दक दूसरे की सक्षमता के चाँद को देखकर कैसा व्यवहार करता है?

उत्तर—(i) प्रस्तुत गद्यावतरण हमारी पाठ्य-पुस्तक '**गद्य-गरिमा**' में संकलित तथा हिन्दी के प्रसिद्ध व्यंग्यकार **श्री हरिशंकर परसाई** द्वारा लिखित '**निन्दा रस**' शीर्षक व्यंग्यात्मक निबन्ध से अवतरित है।

अथवा

पाठ का नाम—निन्दा रस।
लेखक का नाम—हरिशंकर परसाई।

(ii) **रेखांकित अंश की व्याख्या**—लेखक ने कहा है कि निन्दा ईर्ष्या भाव से प्रेरित होती है और मिशनरी भाव से भी। मिशनरी भाव से की गयी निन्दा बिना किसी द्वेष-भाव के धर्म-प्रचार जैसे पुण्य कार्य की भावना से की जाती है। ईर्ष्या भाव से प्रेरित होकर निन्दा करने में वह आनन्द नहीं आता, जो मिशनरी भाव से प्रेरित होकर निन्दा करने में आता है
(iii) मिशनरी निन्दक ईर्ष्या-द्वेष से चौबीसों घण्टे जलता है और निन्दा का जल छिड़ककर कुछ शान्ति अनुभव करता है।
(iv) मिशनरी निन्दक को दण्ड देने की कोई जरूरत नहीं होती। कारण यह कि ऐसा निन्दक बेचारा स्वयं दण्डित होता है।
(v) अपनी अक्षमता से पीड़ित निन्दक दूसरे की सक्षमता को चाँद को देखकर सारी रात श्वान जैसा भौंकता है।

(3) निन्दा का उद्गम ही हीनता और कमजोरी से होता है। मनुष्य अपनी हीनता से दबता है। वह दूसरों की निन्दा करके ऐसा अनुभव करता है कि वे सब निकृष्ट हैं और वह उनसे अच्छा है। उसके अहं की इससे तुष्टि होती है। बड़ी लकीर को कुछ मिटाकर छोटी लकीर बड़ी बनती है। ज्यों-ज्यों कर्म क्षीण होता जाता है, त्यों-त्यों निन्दा की प्रवृत्ति बढ़ती जाती है। कठिन कर्म ही ईर्ष्या-द्वेष और इनसे उत्पन्न निन्दा को मारता है। इन्द्र बड़ा ईर्ष्यालु माना जाता है क्योंकि वह निठल्ला है। स्वर्ग में देवताओं को बिना उगाया अन्न, बे बनाया महल और बिन बोये फल मिलते हैं। अकर्मण्यता में उन्हें अप्रतिष्ठित होने का भय बना रहता है, इसलिए कर्मी मनुष्यों से उन्हें ईर्ष्या होती है।

(i) उपर्युक्त गद्यांश के पाठ और लेखक का नाम लिखिए।
(ii) रेखांकित अंश की व्याख्या कीजिए।
(iii) निन्दा का उद्गम कहाँ से होता है?
(iv) निन्दक व्यक्ति दूसरों की निन्दा करके कैसा अनुभव करता है?
(v) इन्द्र को ईर्ष्यालु क्यों माना जाता है?

उत्तर—(i) प्रस्तुत गद्यावतरण हमारी पाठ्य-पुस्तक '**गद्य-गरिमा**' में संकलित तथा हिन्दी के प्रसिद्ध व्यंग्यकार **श्री हरिशंकर परसाई** द्वारा लिखित '**निन्दा रस**' शीर्षक व्यंग्यात्मक निबन्ध से अवतरित है।

अथवा

पाठ का नाम—निन्दा रस।

लेखक का नाम—हरिशंकर परसाई।

(ii) **रेखांकित अंश की व्याख्या**—लेखक कहता है कि इन्द्र को बड़ा ईर्ष्यालु माना जाता है; क्योंकि वह निठल्ला रहता है, उसे कुछ नहीं करना पड़ता। उसे खाने के लिए अन्न नहीं उगाना पड़ता, फल पाने के लिए पेड़ नहीं बोने पड़ते तथा रहने के लिए बना-बनाया महल मिल जाता है। स्वर्ग में ये सभी चीजें स्वत: प्राप्त हो जाती हैं, इन्हें प्राप्त करने के लिए कुछ भी श्रम नहीं करना पड़ता। खाली रहने के कारण उसे अपनी अप्रतिष्ठा का डर बना रहता है। इसलिए वह किसी तपस्वी को तपस्या करते देखकर, किसी कर्मठ व्यक्ति को श्रेष्ठ कर्म करते देखकर ही भयभीत हो जाता है कि कहीं यह अपनी कर्मठता से मेरे पद को न छीन ले; अत: वह उससे ईर्ष्या करने लगता है।

(iii) निन्दा का उद्गम हीनता और कमजोरी से होता है।

(iv) निन्दक व्यक्ति दूसरों की निन्दा करके ऐसा अनुभव करता है कि वे सब निकृष्ट हैं और वह उनसे अच्छा है।

(v) निठल्ला होने के कारण इन्द्र को ईर्ष्यालु माना जाता है।

हम और हमारा आदर्श

(1) मैं खासतौर से युवा छात्रों से ही क्यों मिलता हूँ? इस सवाल का जवाब तलाशते हुए मैं अपने छात्र-जीवन के दिनों के बारे में सोचने लगा। रामेश्वरम् के द्वीप से बाहर निकलकर यह कितनी लम्बी यात्रा रही। पीछे मुड़कर देखता हूँ तो विश्वास नहीं होता। आखिर वह क्या था जिसके कारण यह सम्भव हो सका? महत्त्वाकांक्षा? कई बातें मेरे दिमाग में आती हैं। मेरा ख्याल है कि सबसे महत्त्वपूर्ण बात यह रही कि मैंने अपने योगदान के मुताबिक ही अपना मूल्य आँका। बुनियादी बात जो आपको समझनी चाहिए वह यह है कि आप जीवन की अच्छी चीजों को पाने का हक रखते हैं, उनका जो ईश्वर की दी हुई हैं। जब तक हमारे विद्यार्थियों और युवाओं को यह भरोसा नहीं होगा कि वे विकसित भारत के नागरिक बनने के योग्य हैं तब तक वे जिम्मेदार और ज्ञानवान् नागरिक भी कैसे बन सकेंगे।

(i) उपर्युक्त गद्यांश के पाठ और लेखक का नाम लिखिए।

(ii) रेखांकित अंश की व्याख्या कीजिए।

(iii) डॉ० ए०पी०जे० अब्दुल कलाम खासतौर से किससे मिलते थे?

(iv) डॉ० अब्दुल कलाम की कामयाबी के लिए सबसे महत्त्वपूर्ण बात क्या रही?

(v) व्यक्ति किन चीजों को पाने का हक रखता है?

उत्तर—(i) प्रस्तुत गद्यावतरण हमारी पाठ्य-पुस्तक '**गद्य-गरिमा**' में संकलित '**डॉ० ए०पी०जे० अब्दुल कलाम**' के तेजस्वी मन से '**हम और हमारा आदर्श**' का सम्पादित अंश है।

अथवा

पाठ का नाम— हम और हमारा आदर्श।

लेखक का नाम—डॉ० ए०पी०जे० अब्दुल कलाम।

(ii) **रेखांकित अंश की व्याख्या**—अनेकानेक उपलब्धियों एवं प्रसिद्धियों के धनी डॉ० ए०पी०जे० अब्दुल कलाम ने प्रस्तुत अंश के माध्यम से भारतीय युवाओं को यह बताना चाहा है कि जब तक उन्हें यह विश्वास नहीं होगा कि वे देश के नागरिक बनने की सम्पूर्ण योग्यता स्वयं में रखते हैं तब तक वे एक जिम्मेदार और ज्ञानवान नागरिक नहीं बन सकते अर्थात् जब तक व्यक्ति को अपनी कीमत का आकलन नहीं होगा तब तक वह महत्त्वपूर्ण कार्य नहीं कर सकता।

(iii) डॉ० ए०पी०जे० अब्दुल कलाम खासतौर से देश के युवा छात्रों से मिलते थे।

(iv) डॉ० ए०पी०जे० अब्दुल कलाम की कामयाबी के लिए सबसे महत्त्वपूर्ण बात यह रही कि उन्होंने अपने योगदान के मुताबिक ही अपने मूल्य का आकलन किया।

(v) व्यक्ति उन सभी अच्छी चीजों को पाने का हक रखता है जो ईश्वर की दी हुई हैं।

(2) मैं यह नहीं मानता कि समृद्धि और अध्यात्म एक-दूसरे के विरोधी हैं या भौतिक वस्तुओं की इच्छा रखना कोई गलत सोच है। उदाहरण के तौर पर, मैं खुद न्यूनतम वस्तुओं का भोग करते हुए जीवन बिता रहा हूँ लेकिन मैं सर्वत्र समृद्धि की कद्र करता हूँ, क्योंकि समृद्धि अपने साथ सुरक्षा तथा विश्वास लाती है, जो अंततः हमारी आजादी को बनाए रखने में सहायक हैं। आप अपने आस-पास देखेंगे तो पाएँगे कि खुद प्रकृति भी कोई काम आधे-अधूरे मन से नहीं करती। किसी बगीचे में जाइए। मौसम में आपको फूलों की बहार देखने को मिलेगी। अथवा ऊपर की तरफ ही देखें, यह ब्रह्माण्ड आपके अनंत तक फैला दिखाई देगा, आपके यकीन से भी परे।

(i) उपर्युक्त गद्यांश के पाठ और लेखक का नाम लिखिए।

(ii) रेखांकित अंश की व्याख्या कीजिए।

(iii) लेखक किनको एक-दूसरे का विरोधी नहीं मानता?

(iv) डॉ० कलाम संवृद्धि की कद्र क्यों करते हैं?

(v) प्रस्तुत गद्यांश में लेखक ने छात्रों को क्या संदेश दिया है?

उत्तर—(i) प्रस्तुत गद्यावतरण हमारी पाठ्य-पुस्तक '**गद्य-गरिमा**' में संकलित '**डॉ० ए०पी०जे० अब्दुल कलाम**' के तेजस्वी मन से '**हम और हमारा आदर्श**' का सम्पादित अंश है।

अथवा

पाठ का नाम— हम और हमारा आदर्श।

लेखक का नाम—डॉ० ए०पी०जे० अब्दुल कलाम।

(ii) **रेखांकित अंश की व्याख्या**—प्रस्तुत पंक्तियों के माध्यम से अब्दुल कलाम जी समृद्धि की कद्र करते हुए कहते हैं कि व्यक्ति को कामयाब होने के लिए वह सभी हरसम्भव प्रयास करने चाहिए जो वह कर सकता है। किसी भी कार्य को अधूरा नहीं छोड़ना चाहिए अर्थात् काम करते हुए उससे ऊबकर उसे बीच में नहीं छोड़ देना चाहिए। इसके लिए प्रकृति का उदाहरण प्रस्तुत करते हुए वे कहते हैं कि यदि आप अपने आस-पास देखें तो आपको ऐसे प्रकृति के बहुत-से उदाहरण मिल जाएँगे जो कि पूर्ण होते दिखेंगे यानी प्रकृति अपने किसी भी काम को अधूरे मन से नहीं करती। आप किसी फूलों के बाग में ही पहुँच जाइए; वहाँ मौसम में आपको फूलों की बहार देखने को मिलेगी, क्योंकि मौसम ने अपने काम को अधूरा नहीं छोड़ा। या फिर आप अपने ऊपर की ओर ही देखें तो आपको यह ब्रह्माण्ड इस तरह विस्तृत दिखाई देगा जिसका कोई अन्त नहीं है, जहाँ तक आप सोच भी नहीं सकते अर्थात् यह नभ भी हमें विस्तृत होने का यानी पूर्णता का सन्देश देता है।

(iii) लेखक संवृद्धि और अध्यात्म को एक-दूसरे का विरोधी नहीं मानता।

(iv) डॉ० कलाम संवृद्धि की कद्र इसलिए करते हैं, क्योंकि संवृद्धि अपने साथ सुरक्षा तथा विश्वास लाती है, जो अन्ततः हमारी आजादी को बनाए रखने में सहायक है।

(v) प्रस्तुत गद्यांश के माध्यम से लेखक ने छात्रों को प्रगति करने के लिए किसी भी कार्य को पूर्ण करके ही चैन लेने का सन्देश दिया है।

Sdc Study Subscribe

4 पद्यांश पर आधारित प्रश्नोत्तर

प्रश्न-परिचय— सामान्य हिन्दी के **खण्ड 'क'** के **चतुर्थ प्रश्न** के अन्तर्गत पाठ्य-पुस्तक **'काव्यांजलि'** में संकलित विभिन्न पाठों में से **दो पद्यांश** दिये जाएँगे, जिनमें से किसी **एक पद्यांश** पर आधारित **पाँच** प्रश्नों के उत्तर देने होंगे। इस प्रश्न के लिए कुल **2 × 5 = 10** अंक निर्धारित हैं।

प्रश्न— **दिए गए पद्यांश पर आधारित निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दीजिए—**

अयोध्यासिंह उपाध्याय 'हरिऔध'

पवन-दूतिका

(1) **बैठी खिन्ना यक दिवस वे गेह में थीं अकेली ।**
आके आँसू दृग-युगल में थे धरा को भिगोते ।।
आई धीरे इस सदन में पुष्प-सद्गंध को ले ।
प्रातः वाली सुपवन इसी काल वातायनों से ।।
संतापों को विपुल बढ़ता देख के दुःखिता हो ।
धीरे बोली स-दुःख उससे श्रीमति राधिका यों ।।
प्यारी प्रातः पवन इतना क्यों मुझे है सताती ।
क्या तू भी है कलुषित हुई काल की क्रूरता से ।।

(i) उपर्युक्त पद्यांश के शीर्षक और कवि का नाम लिखिए।
(ii) रेखांकित अंश की व्याख्या/भावार्थ लिखिए।
(iii) घर में दुःखी होकर एक दिन अकेले कौन बैठा था?
(iv) फूलों की सुगंध से युक्त होकर राधा के घर में किसने प्रवेश किया?
(v) राधा ने प्रातःकालीन वायु से दुःखित होकर क्या कहा?

उत्तर—(i) प्रस्तुत पद महाकवि **अयोध्यासिंह उपाध्याय 'हरिऔध'** द्वारा रचित **'प्रियप्रवास'** से हमारी पाठ्य-पुस्तक **'काव्यांजलि'** में संकलित **'पवन-दूतिका'** शीर्षक काव्यांश से उद्धृत है।

अथवा

शीर्षक का नाम—पवन-दूतिका।
कवि का नाम—अयोध्यासिंह उपाध्याय 'हरिऔध'।

(ii) **रेखांकित अंश की व्याख्या/भावार्थ**—प्रातःकालीन सुखद वायु पुष्पों की सुगंध लेकर धीरे से खिड़कियों के रास्ते उस घर में प्रविष्ट हुई। जो राधा घर में बहुत दुःखी होकर अकेली बैठी थीं। वायु संयोग में सुखद लगती थी, वही अब वियोग में दुःख बढ़ाने वाली सिद्ध हुई, अतः उस वायु के कारण अपनी व्यथा को और बढ़ता देखकर राधा बहुत दुःखित होकर उससे बोलीं कि हे प्यारी प्रभातकालीन वायु! तू मुझे इतना क्यों सता रही है? क्या तू भी मेरे भाग्य की कठोरता से प्रभावित होकर दूषित हो गयी है अर्थात् समय या भाग्य तो मेरे विपरीत है ही, पर क्या तू भी उससे प्रभावित होकर मेरा दुःख बढ़ाने पर तुली है, जब कि सामान्यतः तू लोगों को सुख देने वाली मानी जाती है?

(iii) एक दिन राधा घर में दुःखी होकर अकेली बैठी हुई थीं।
(iv) फूलों की सुगंध से युक्त होकर राधा के घर प्रातःकालीन सुखद वायु ने प्रवेश किया।
(v) राधा ने प्रातःकालीन वायु से दुःखित होकर कहा कि हे प्रभातकालीन वायु! तू मुझे क्यों सताती है? क्या तू भी मेरे भाग्य की कठोरता से प्रभावित होकर दूषित हो गई है।

(2) **लज्जाशीला पथिक महिला जो कहीं दृष्टि आये ।**
होने देना विकृत-वसना तो न तू सुन्दरी को ।।
जो थोड़ी भी श्रमित वह हो गोद ले श्रान्ति खोना ।
होंठों की औ कमल-मुख की म्लानतायें मिटाना ।।
कोई क्लान्ता कृषक-ललना खेत में जो दिखावे ।
धीरे-धीरे परस उसकी क्लान्तियों को मिटाना ।।
जाता कोई जलद यदि हो व्योम में तो उसे ला ।
छाया द्वारा सुखित करना, तप्त भूतांगना को ।।

(i) उपर्युक्त पद्यांश के शीर्षक और कवि का नाम लिखिए।
(ii) रेखांकित अंश की व्याख्या कीजिए।
(iii) राधा पवन-दूतिका से राह में पथिकों के साथ कैसा व्यवहार करने को कहती हैं?
(iv) राधा ने पवन-दूतिका को पथिक कृषक-स्त्री के ऊपर किसके द्वारा छाया करने को कहा है?
(v) 'कृषक-ललना' शब्द में कौन-सा समास होगा?

उत्तर—(i) प्रस्तुत पद महाकवि **अयोध्यासिंह उपाध्याय 'हरिऔध'** द्वारा रचित **'प्रियप्रवास'** से हमारी पाठ्य-पुस्तक **'काव्यांजलि'** में संकलित **'पवन-दूतिका'** शीर्षक काव्यांश से उद्धृत है।

अथवा

शीर्षक का नाम—पवन-दूतिका।
कवि का नाम—अयोध्यासिंह उपाध्याय 'हरिऔध'।

(ii) **रेखांकित अंश की व्याख्या**—हे पवन ! यदि तुझे मार्ग में कोई लाजवन्ती स्त्री दिखाई पड़े तो इतने वेग से न बहना कि उसके वस्त्र उड़कर अस्त-व्यस्त हो जाएँ और उसका शरीर उघड़ जाए। यदि वह थोड़ी-सी भी थकी दिखाई दे तो उसे गोद में लेकर अर्थात् उसे चारों ओर से घेरकर उसकी थकान मिटा देना, जिससे कि (थकान के कारण) उसके सूखे होंठ और मुरझाया हुआ कमल-सदृश मुख प्रफुल्लित हो उठे।

(iii) राधा पवन-दूतिका से राह में पथिकों के साथ परोपकार का व्यवहार करने को कहती हैं।
(iv) राधा ने पवन-दूतिका को थकित कृषक-स्त्री के ऊपर मेघ द्वारा छाया करने को कहा है।
(v) 'कृषक-ललना' शब्द में **'तत्पुरुष समास'** होगा।

(3) **तू देखेगी जलद-तन को जा वहीं तद्गता हो ।**
होंगे लोने नयन उनके ज्योति-उत्कीर्णकारी ।।
मुद्रा होगी वर बदन की मूर्ति-सी सौम्यता की ।
सीधे साधे वचन उनके सिक्त होंगे सुधा से ।।
नीले फूले कमल दल-सी गात की श्यामता है ।
पीला प्यारा वसन कटि में पैन्हते हैं फबीला ।।
छूटी काली अलक मुख की कान्ति को है बढ़ाती ।
सद्वस्त्रों में नवल तन की फूटती-सी प्रभा है ।।

(i) उपर्युक्त पद्यांश के शीर्षक और कवि का नाम लिखिए।
(ii) रेखांकित अंश की व्याख्या कीजिए।
(iii) प्रस्तुत पंक्तियों में राधा पवन-दूतिका को किसकी पहचान बताती हैं?

(iv) श्रीकृष्ण के नेत्रों की शोभा कैसी है?
(v) श्रीकृष्ण कटि में कैसा वस्त्र धारण करते हैं?

उत्तर—(i) प्रस्तुत पद महाकवि **अयोध्यासिंह उपाध्याय 'हरिऔध'** द्वारा रचित **'प्रियप्रवास'** से हमारी पाठ्य-पुस्तक **'काव्यांजलि'** में संकलित **'पवन-दूतिका'** शीर्षक काव्यांश से उद्धृत है।

अथवा

शीर्षक का नाम—पवन-दूतिका।
कवि का नाम—अयोध्यासिंह उपाध्याय 'हरिऔध'।

(ii) **रेखांकित अंश की व्याख्या**—राधा कहती हैं कि हे पवन! वहाँ जाकर तू मेघ के समान शोभा वाले श्रीकृष्ण को देखेगी। उनके शरीर की श्यामलता खिले हुए नीलकमल के समान मोहक है। मेरे प्रियतम कृष्ण कटि में आकर्षक पीला वस्त्र धारण करते हैं। उनके मुख पर लटकी हुई काले बालों की लट उनकी शोभा को चार चाँद लगा रही होगी। उनके सुन्दर वस्त्रों से उनके मनोहर शरीर की शोभा अत्यधिक बढ़ रही होगी।
(iii) प्रस्तुत पंक्तियों में राधा पवन-दूतिका को श्रीकृष्ण की पहचान बताती हैं।
(iv) श्रीकृष्ण के सुन्दर नेत्र प्रकाश बिखेरते हैं।
(v) श्रीकृष्ण कटि में पीला वस्त्र धारण करते हैं।

(4) **कोई प्यारा कुसुम कुम्हला गेह में जो पड़ा हो ।**
तो प्यारे के चरण पर ला डाल देना उसी को ।।
यों देना ऐ पवन बतला फूल-सी एक बाला ।
म्लाना हो हो कमल-पग को चूमना चाहती है ।।

(i) उपर्युक्त पद्यांश के शीर्षक और कवि का नाम लिखिए।
(ii) रेखांकित अंश की व्याख्या कीजिए।
(iii) राधा पवन-दूतिका से मुरझाए हुए पुष्प को कहाँ डाल देने के लिए कह रही हैं?
(iv) मुरझाए हुए पुष्प की उपमा किससे की गई है?
(v) श्रीकृष्ण के कमल के समान कोमल चरणों को कौन चूमना चाहता है?

उत्तर—(i) प्रस्तुत पद महाकवि **अयोध्यासिंह उपाध्याय 'हरिऔध'** द्वारा रचित **'प्रियप्रवास'** से हमारी पाठ्य-पुस्तक **'काव्यांजलि'** में संकलित **'पवन-दूतिका'** शीर्षक काव्यांश से उद्धृत है।

अथवा

शीर्षक का नाम—पवन-दूतिका।
कवि का नाम—अयोध्यासिंह उपाध्याय 'हरिऔध'।

(ii) **रेखांकित अंश की व्याख्या**—हे पवन ! कृष्ण के घर पहुँचकर यदि कोई मुरझाया हुआ सुन्दर फूल वहाँ पड़ा मिल जाए तो उसे प्रिय कृष्ण के चरणों में लाकर रख देना। इस प्रकार तू उन्हें यह बता देना कि इसी फूल की तरह विरह में मुरझाई हुई एक तरुणी (राधा) आपके कमल समान कोमल चरणों को चूमना चाहती है। शायद उस मुरझाए फूल को देखकर ही उन्हें मेरी याद आ जाए।
(iii) राधा पवन-दूतिका से मुरझाए हुए पुष्प को श्रीकृष्ण के चरणों में लाकर डाल देने के लिए कह रही हैं।
(iv) मुरझाए हुए पुष्प की उपमा राधा से की गई है।
(v) श्रीकृष्ण के कमल के समान कोमल चरणों को राधाजी चूमना चाहती हैं।

मैथिलीशरण गुप्त

कैकेयी का अनुताप

(1) **तदनन्तर बैठी सभा उटज के आगे,**
नीले वितान के तले दीप बहु जागे ।
टकटकी लगाये नयन सुरों के थे वे,
परिणामोत्सुक उन भयातुरों के थे वे ।
उत्फुल्ल करौंदी-कुंज वायु रह-रहकर,
करती थी सबको पुलक-पूर्ण मह-महकर ।
वह चन्द्रलोक था, कहाँ चाँदनी वैसी,
प्रभु बोले गिरा गंभीर नीरनिधि जैसी ।

(i) उपर्युक्त पद्यांश के शीर्षक और कवि का नाम लिखिए।
(ii) रेखांकित अंश की व्याख्या कीजिए।
(iii) भरत किसे लेने चित्रकूट गए हुए हैं?
(iv) अयोध्या का राज्य किसे मिला था?
(v) "प्रभु बोले गिरा गंभीर नीरनिधि जैसी।" पंक्ति में कौन-सा अलंकार है?

उत्तर—(i) प्रस्तुत पद्यांश **श्री मैथिलीशरण गुप्त** द्वारा रचित **'साकेत'** महाकाव्य से हमारी पाठ्य-पुस्तक **'काव्यांजलि'** में संकलित **'कैकेयी का अनुताप'** शीर्षक काव्यांश से उद्धृत है।

अथवा

शीर्षक का नाम—कैकेयी का अनुताप।
कवि का नाम—मैथिलीशरण गुप्त।

(ii) **रेखांकित अंश की व्याख्या**—पंचवटी में तारों से परिपूर्ण चाँदनी रात्रि में सभा हो रही थी। उस सभा में अयोध्या से भरत के साथ आये हुए सभी लोग शान्ति से बैठे हुए थे। उपस्थित सभी लोग उस सभा में होने वाले निर्णय के परिणाम को जानने के लिए उत्सुक थे। उस सभा के मौन को तोड़ते हुए राम ने भरत को सम्बोधित करते हुए कहा कि 'हे भरत! अब तुम अपनी इच्छा तो बताओ।' राम के द्वारा अत्यधिक गम्भीर वाणी में बोलने से सभा को ऐसा प्रतीत हुआ कि समुद्र का जल गम्भीर गर्जन कर रहा हो।
(iii) भरत राम को लेने चित्रकूट गए हुए थे।
(iv) अयोध्या का राज्य भरत को मिला था।
(v) अलंकार—उपमा, अनुप्रास।

(2) **कहते आते थे यही अभी नरदेही,**
'माता न कुमाता, पुत्र कुपुत्र भले ही।'
अब कहें सभी यह हाय ! विरुद्ध विधाता–
'है पुत्र पुत्र ही, रहे कुमाता माता।'
बस मैंने इसका बाह्य-मात्र ही देखा,
दृढ़ हृदय न देखा, मृदुल गात्र ही देखा ।
परमार्थ न देखा, पूर्ण स्वार्थ ही साधा,
इस कारण ही तो हाय आज यह बाधा !
युग-युग तक चलती रहे कठोर कहानी–
'रघुकुल में भी थी एक अभागिन रानी।'

(i) उपर्युक्त पद्यांश के शीर्षक और कवि का नाम लिखिए।
(ii) रेखांकित अंश की व्याख्या कीजिए।
(iii) पद्यांश के अनुसार, आज तक लोग क्या कहते आए हैं?
(iv) किसने प्रायश्चित्त किया है कि मैंने पुत्र का कोमल शरीर ही देखा, उसका दृढ़ हृदय नहीं देखा?
(v) इन पंक्तियों में कैकेयी को किस बात पर पश्चात्ताप हुआ है?

उत्तर—(i) प्रस्तुत पद्यांश **श्री मैथिलीशरण गुप्त** द्वारा रचित **'साकेत'** महाकाव्य से हमारी पाठ्य-पुस्तक **'काव्यांजलि'** में संकलित **'कैकेयी का अनुताप'** शीर्षक काव्यांश से उद्धृत है।

अथवा

शीर्षक का नाम—कैकेयी का अनुताप।
कवि का नाम—मैथिलीशरण गुप्त।

(ii) **रेखांकित अंश की व्याख्या**—कैकेयी श्रीराम से कहती है कि आज तक मनुष्य यही कहते आये थे कि पुत्र कितना ही दुष्ट क्यों न हो, परन्तु माता उसके प्रति कभी भी दुर्भाव नहीं रखती है। अब तो मेरे चरित्र के कारण लोगों का इस उक्ति पर से विश्वास हट जाएगा और संसार के लोग यही कहा करेंगे कि माता दुष्टतापूर्ण व्यवहार कर सकती है, परन्तु पुत्र कभी कुपुत्र नहीं हो सकता।

(iii) पद्यांश के अनुसार, आज तक लोग यही कहते आए हैं कि पुत्र कुपुत्र हो सकता है पर माता कुमाता नहीं हो सकती।
(iv) कैकेयी ने प्रायश्चित्त किया है कि मैंने पुत्र का कोमल शरीर ही देखा उसका दृढ़-हृदय नहीं देखा।
(v) इन पंक्तियों में कैकेयी को अपने ऊपर लगने वाले कलंक और पुत्र की प्रवृत्ति को न पहचान पाने का पश्चात्ताप हुआ है।

(3) **निजजन्म जन्म में सुने जीव यह मेरा–**
धिक्कार ! उसे था महास्वार्थ ने घेरा।–"
"सौ बार धन्य वह एक लाल की माई,
जिस जननी ने है जना भरत-सा भाई ।"
पागल-सी प्रभु के साथ सभा चिल्लाई
"सौ बार धन्य वह एक लाल की माई ।"

(i) उपर्युक्त पद्यांश के शीर्षक और कवि का नाम लिखिए।
(ii) रेखांकित अंश की व्याख्या कीजिए।
(iii) कैकेयी स्वयं को धिक्कारती हुई क्या कहती हैं?
(iv) कैकेयी के प्रायश्चित्त के उपरान्त श्रीराम उनसे क्या कहते हैं?
(v) प्रभु राम के साथ कैकेयी के अपराध का अपमार्जन करती हुई सभा क्या चिल्ला उठी?

उत्तर—(i) प्रस्तुत पद्यांश **श्री मैथिलीशरण गुप्त** द्वारा रचित **'साकेत'** महाकाव्य से हमारी पाठ्य-पुस्तक **'काव्यांजलि'** में संकलित **'कैकेयी का अनुताप'** शीर्षक काव्यांश से उद्धृत है।

अथवा

शीर्षक का नाम—कैकेयी का अनुताप।
कवि का नाम—मैथिलीशरण गुप्त।

(ii) **रेखांकित अंश की व्याख्या**—कैकेयी स्वयं को धिक्कारती हुई कहती है कि मैं सद्गति न पाऊँ और जन्म-जन्मान्तरों में मेरे प्राण यही सुनते रहें कि रघुकुल की उस रानी को धिक्कार है, जिसे घोर स्वार्थ ने घेरकर ऐसा अनुचित कर्म कराया कि उसने धर्म का विचार बिल्कुल छोड़ दिया और अधर्म का आचरण किया।
(iii) कैकेयी स्वयं को धिक्कारती हुई कहती हैं कि मैं सद्गति न पाऊँ और जन्म-जन्मान्तर तक मेरे प्राण यही सुनते रहें कि रघुकुल की रानी ने स्वार्थवश ऐसे अनुचित कर्म कराए।
(iv) कैकेयी के प्रायश्चित्त के उपरान्त श्रीराम उनसे कहते हैं कि तुम अभागिन नहीं हो, वरन् वह माता तो सौ-सौ बार धन्य है, जिसने भरत जैसे भाई को जन्म दिया।
(v) प्रभु राम के साथ कैकेयी के अपराध का अपमार्जन करती हुई सभा चिल्ला उठी की भरत जैसे महान् धर्मशील पुत्र को जन्म देने वाली माता धन्य है, सैकड़ों बार धन्य है।

(4) **मुझको यह प्यारा और इसे तुम प्यारे,**
मेरे दुगुने प्रिय, रहो न मुझसे न्यारे ।
मैं इसे न जानूँ, किन्तु जानते हो तुम,
अपने से पहले इसे मानते हो तुम ।
तुम भ्राताओं का प्रेम परस्पर जैसा,
यदि वह सब पर यों प्रकट हुआ है वैसा ।
तो पाप-दोष भी पुण्य-तोष है मेरा,
मैं रहूँ पंकिला, पद्म-कोष है मेरा ।

(i) उपर्युक्त पद्यांश के शीर्षक और कवि का नाम लिखिए।
(ii) रेखांकित अंश की व्याख्या कीजिए।
(iii) श्रीराम को कौन प्यारा है?
(iv) कैकेयी को कौन दोगुने प्रिय हैं? क्यों?
(v) "मैं रहूँ पंकिला, पद्म-कोष है मेरा।" पंक्ति में कौन-सा अलंकार है?

उत्तर—(i) प्रस्तुत पद्यांश **श्री मैथिलीशरण गुप्त** द्वारा रचित **'साकेत'** महाकाव्य से हमारी पाठ्य-पुस्तक **'काव्यांजलि'** में संकलित **'कैकेयी का अनुताप'** शीर्षक काव्यांश से उद्धृत है।

अथवा

शीर्षक का नाम—कैकेयी का अनुताप।
कवि का नाम—मैथिलीशरण गुप्त।

(ii) **रेखांकित अंश की व्याख्या**—कैकेयी श्रीराम से कहती हैं कि हे राम! मुझे यह भरत प्रिय है और भरत को तुम प्रिय हो। इस प्रकार तो तुम मुझे दोगुने प्रिय हो। तुम दोनों भाइयों के बीच जिस प्रकार का प्रेम सब लोगों के सामने प्रकट हुआ है, उससे तो मेरे पाप का दोष भी पुण्य के सन्तोष में बदल गया है। मुझे तो यह सन्तोष है कि मैं स्वयं कीचड़ के समान निन्दनीय हूँ, किन्तु मेरी कोख से कमल के समान निर्मल भरत का जन्म हुआ।
(iii) श्रीराम को भरत प्यारे हैं।
(iv) कैकेयी को भरत प्रिय हैं और भरत को राम प्रिय हैं इसलिए कैकेयी को राम और भरत दोगुने प्रिय हैं।
(v) रूपक अलंकार।

गीत

(1) **निरख सखी, ये खंजन आये,**
फेरे उन मेरे रंजन ने नयन इधर मन भाये !
फैला उनके तन का आतप, मन से सर सरसाये,
घूमें वे इस ओर वहाँ, ये हंस यहाँ उड़ छाये !
करके ध्यान आज इस जन का निश्चय वे मुसकाये,
फूल उठे हैं कमल, अधर-से यह बन्धूक सुहाये !
स्वागत, स्वागत, शरद, भाग्य से मैंने दर्शन पाये,
नभ से मोती वारे, लो, ये अश्रु अर्घ्य भर लाये ।।

(i) उपर्युक्त पद्यांश के शीर्षक और कवि का नाम लिखिए।
(ii) रेखांकित अंश की व्याख्या कीजिए।
(iii) उर्मिला द्वारा किस ऋतु का स्वागत किया गया है?
(iv) हंसों को देखकर उर्मिला क्या अनुमान लगाती है?
(v) बन्धूक पुष्पों में उर्मिला ने किसका आभास पाया है?

उत्तर—(i) प्रस्तुत पद्यांश **श्री मैथिलीशरण गुप्त** द्वारा रचित **'साकेत'** महाकाव्य से हमारी पाठ्य-पुस्तक **'काव्यांजलि'** में संकलित **'गीत'** शीर्षक काव्यांश से उद्धृत है।

अथवा

शीर्षक का नाम—गीत।
कवि का नाम—मैथिलीशरण गुप्त।

(ii) **रेखांकित अंश की व्याख्या**—हे शरत्! तुम्हारा स्वागत है; क्योंकि तुम्हारे आगमन पर मैंने खंजन पक्षियों में प्रिय के नेत्रों का, धूप में प्रिय के तप का, हंसों में उनकी गति और हास्य का तथा बन्धूक पुष्पों में उनके अधरों का आभास पाया है। आकाश ने ओस की बूँदों के रूप में मोती न्योछावर कर तुम्हारा स्वागत किया है और मैं अपने आँसुओं का अर्घ्य देकर तुम्हारी अभ्यर्थना करती हूँ।
(iii) उर्मिला द्वारा शरत् ऋतु का स्वागत किया गया है।
(iv) हंसों को देखकर उर्मिला यह अनुमान लगाती हैं कि प्रियतम इस ओर घूमे होंगे अथवा निश्चय ही मेरा ध्यान करके मुस्कराए होंगे।
(v) बन्धूक पुष्पों में उर्मिला ने प्रियतम के अधरों का आभास पाया है।

(2) **मुझे फूल मत मारो,**
मैं अबला बाला वियोगिनी, कुछ तो दया विचारो ।
होकर मधु के मीत मदन, पटु, तुम कटु, गरल न गारो,

मुझे विकलता, तुम्हें विफलता, ठहरो, श्रम परिहारो।
नहीं भोगिनी यह मैं कोई, जो तुम जाल पसारो,
बल हो तो सिन्दूर-बिन्दु यह-यह हरनेत्र निहारो !
रूप-दर्प कन्दर्प, तुम्हें तो मेरे पति पर वारो,
लो, यह मेरी चरण-धूलि उस रति के सिर पर धारो।।

(i) उपर्युक्त पद्यांश के शीर्षक और कवि का नाम लिखिए।
(ii) रेखांकित अंश की व्याख्या कीजिए।
(iii) वसंत का मित्र कौन है?
(iv) उर्मिला ने शिव का तीसरा नेत्र किसे बताया है?
(v) उर्मिला ने अपने पति को किससे अधिक सुन्दर बताया है?

उत्तर—(i) प्रस्तुत पद्यांश **श्री मैथिलीशरण गुप्त** द्वारा रचित **'साकेत'** महाकाव्य से हमारी पाठ्य-पुस्तक **'काव्यांजलि'** में संकलित **'गीत'** शीर्षक काव्यांश से उद्धृत है।

अथवा

शीर्षक का नाम—गीत।
कवि का नाम—मैथिलीशरण गुप्त।

(ii) **रेखांकित अंश की व्याख्या**—राम के वन-गमन के समय सीता राम के साथ ही रहती हैं। भरत और शत्रुघ्न की पत्नियाँ माण्डवी और श्रुतकीर्ति भी उनसे अलग नहीं होती हैं। मात्र उर्मिला ही अपने पति से अलग रहती हैं; क्योंकि लक्ष्मण राम के साथ ही वन को गये हैं। उर्मिला के विरह-वर्णन में परम्परागत रूप में षड्ऋतु-वर्णन का चित्रण करने के साथ-साथ लाक्षणिक वैचित्र्य की झलक भी दिखाई गयी है। वसन्त ऋतु के आगमन पर उर्मिला कामदेव से आग्रह कर रही हैं कि वे उनके ऊपर अपने पुष्प रूपी बाण न चलाएँ; क्योंकि वे एक अबला और विरहिणी स्त्री हैं। पुराणों के अनुसार कामदेव को काम-वासना के अधिष्ठाता ईश्वर के रूप में माना जाता है। कामदेव का साथी-सहयोगी वसन्त ऋतु है, वाहन कोयल नामक पक्षी है तथा लड़ाई के अस्त्र-शस्त्र फूलों से बने हुए धनुष और बाण हैं। इसीलिए उर्मिला फूलों से न मारने के लिए आग्रह कर रही हैं।

(iii) वसंत का मित्र कामदेव है।
(iv) उर्मिला ने अपने सिन्दूर-बिन्दु को शिव का तीसरा नेत्र बताया है।
(v) उर्मिला ने अपने पति को कामदेव से अधिक सुन्दर बताया है।

जयशंकर प्रसाद

गीत

प्रश्न—दिए गए पद्यांश को पढ़कर उस पर आधारित प्रश्नों के उत्तर लिखिए—

बीती विभावरी जाग री।
अम्बर-पनघट में डुबो रही-
तारा-घट ऊषा-नागरी।
खग-कुल कुल-कुल सा बोल रहा,
किसलय का अंचल डोल रहा,
लो यह लतिका भी भर लायी-
मधु-मुकुल नवल रस-गागरी।
अधरों में राग अमन्द पिये,
अलकों में मलयज बन्द किये-
तू अब तक सोयी है आली !
आँखों में भरे विहाग री।

(i) उपर्युक्त पद्यांश के शीर्षक और कवि का नाम लिखिए।
(ii) रेखांकित अंश की व्याख्या कीजिए।
(iii) प्रस्तुत पंक्तियों में किस समय का सुन्दर वर्णन किया गया है?
(iv) कौन आकाशरूपी पनघट पर तारारूपी घड़े को डुबो रहा है?
(v) 'खग-कुल कुल-कुल सा बोल रहा' पंक्ति में कौन-सा अलंकार है?

उत्तर—(i) प्रस्तुत गीत महाकवि **श्री जयशंकर प्रसाद** के **'लहर'** नामक कविता-संग्रह से हमारी पाठ्य-पुस्तक **'काव्यांजलि'** में संकलित **'गीत'** शीर्षक रचना से उद्धृत है।

अथवा

शीर्षक का नाम—गीत।
कवि का नाम—जयशंकर प्रसाद।

(ii) **रेखांकित अंश की व्याख्या**—इस गीत में मानवीकरण द्वारा प्रातःकाल की शोभा का सुन्दर चित्रण किया गया है। एक सखी दूसरी सखी से कहती है कि हे सखी! रात बीत चुकी है। अब तू उठ। आकाशरूपी पनघट पर ऊषारूपी चतुर नारी तारारूपी घड़ा डुबो रही है; अर्थात् तारे एक-एक करके छिपते चले जा रहे हैं।

(iii) प्रस्तुत पंक्तियों में प्रातःकाल की शोभा का सुन्दर वर्णन किया गया है।
(iv) उषारूपी चतुर नारी आकाशरूपी पनघट पर तारारूपी घड़े को डुबो रही है।
(v) अलंकार—अनुप्रास, रूपक।

श्रद्धा-मनु

(1) "कौन तुम ? संसृति-जलनिधि तीर
तरंगों से फेंकी मणि एक,
कर रहे निर्जन का चुपचाप
प्रभा की धारा से अभिषेक ?
मधुर विश्रान्त और एकान्त-
जगत का सुलझा हुआ रहस्य
एक करुणामय सुन्दर मौन
और चंचल मन का आलस्य !"

(i) उपर्युक्त पद्यांश के शीर्षक और कवि का नाम लिखिए।
(ii) रेखांकित अंश की व्याख्या कीजिए।
(iii) उक्त पंक्तियों में कौन किसका परिचय पूछ रहा है?
(iv) कौन अपनी कान्ति से वीराने को शोभायमान कर रहा है?
(v) 'प्रभा की धारा से अभिषेक?' पंक्ति में कौन-सा अलंकार है?

उत्तर—(i) प्रस्तुत पद्यांश **श्री जयशंकर प्रसाद** के **'कामायनी'** महाकाव्य से हमारी पाठ्य-पुस्तक **'काव्यांजलि'** में संकलित **'श्रद्धा-मनु'** शीर्षक कविता से उद्धृत है।

अथवा

शीर्षक का नाम—श्रद्धा-मनु।
कवि का नाम—जयशंकर प्रसाद।

(ii) **रेखांकित अंश की व्याख्या**—प्रस्तुत पद्यांश में श्रद्धा मनु से उनका परिचय पूछ रही है कि संसाररूपी सागर के तट पर तरंगों (लहरों) द्वारा फेंकी गयी किसी मणि के सदृश तुम कौन हो, जो चुपचाप बैठे अपनी शोभा की किरणों से इस निर्जन प्रदेश को स्नान करा रहे हो; अर्थात् जिस प्रकार लहरें समुद्र के तल से किसी मणि को उठाकर तट पर पटक देती हैं, उसी प्रकार सांसारिक आघातों से ठुकराये हुए हे भव्य पुरुष! तुम कौन हो?

(iii) उक्त पंक्तियों में श्रद्धा मनु का परिचय पूछ रही हैं।
(iv) मनु भव्य पुरुष की भाँति अपनी कांति से वीराने को शोभायमान कर रहे हैं।
(v) रूपक अलंकार।

(2) समर्पण लो सेवा का सार
सजल संसृति का यह पतवार;
आज से यह जीवन उत्सर्ग
इसी पद तल में विगत विकार।

(i) उपर्युक्त पद्यांश के शीर्षक और कवि का नाम लिखिए।
(ii) रेखांकित अंश की व्याख्या कीजिए।
(iii) श्रद्धा किसकी जीवनसंगिनी बनकर सेवा करना चाहती हैं?

(iv) किसका समर्पण मनु की जीवन-नौका के लिए पतवार के समान सिद्ध होगा?
(v) 'सजल संसृति का यह पतवार।' पंक्ति में कौन-सा अलंकार है?

उत्तर—(i) प्रस्तुत पद्यांश **श्री जयशंकर प्रसाद** के '**कामायनी**' महाकाव्य से हमारी पाठ्य-पुस्तक '**काव्यांजलि**' में संकलित '**श्रद्धा-मनु**' शीर्षक कविता से उद्धृत है।

अथवा

शीर्षक का नाम—श्रद्धा-मनु।
कवि का नाम—जयशंकर प्रसाद।

(ii) **रेखांकित अंश की व्याख्या**—श्रद्धा मानवता को सफल और समृद्ध बनाने के लिए मनु के समक्ष आत्मसमर्पण करती है और कहानी है कि यह मेरा आत्मसमर्पण संसार-सागर में निरुद्देश्य भटकने वाली तुम्हारी जीवन-नौका के लिए पतवार के समान सिद्ध होगा अर्थात् तुम्हारे जीवन को निश्चित दिशा देगा। आज से तुम्हारे चरणों में बिना किसी स्वार्थभावना के मैं अपने जीवन को न्योछावर करती हूँ।
(iii) श्रद्धा मनु की जीवनसंगिनी बनकर उनकी सेवा करना चाहती हैं।
(iv) श्रद्धा का समर्पण मनु की जीवन-नौका के लिए पतवार के समान सिद्ध होगा।
(v) अनुप्रास अलंकार।

(3) **डरो मत अरे अमृत सन्तान**
अग्रसर है मंगलमय वृद्धि
पूर्ण आकर्षण जीवन-केन्द्र
खिंची आवेगी सकल समृद्धि!

(i) उपर्युक्त पद्यांश के शीर्षक और कवि का नाम लिखिए।
(ii) रेखांकित अंश की व्याख्या कीजिए।
(iii) मनु ने संसार और जीवन को क्या मान लिया था?
(iv) श्रद्धा मनु को किसकी संतान बताकर उत्साहित करती हैं?
(v) कब सकल समृद्धि पास खिंची चली आएगी?

उत्तर—(i) प्रस्तुत पद्यांश **श्री जयशंकर प्रसाद** के '**कामायनी**' महाकाव्य से हमारी पाठ्य-पुस्तक '**काव्यांजलि**' में संकलित '**श्रद्धा-मनु**' शीर्षक कविता से उद्धृत है।

अथवा

शीर्षक का नाम—श्रद्धा-मनु।
कवि का नाम—जयशंकर प्रसाद।

(ii) **रेखांकित अंश की व्याख्या**—प्रसाद जी के 'कामायनी' महाकाव्य की नायिका श्रद्धा निवृत्ति पथ पर अग्रसर मनु को प्रवृत्ति पथ पर लाने का प्रयास करती है। मनु ने संसार को निराशा से भरा और जीवन को उपायहीन मान लिया था। श्रद्धा उनमें जीवन के प्रति उत्साह भरती हुई कहती है कि—तुम कभी न मरने वाले देवताओं की सन्तान हो; अत: भयभीत क्यों होते हो? तुम्हारे सामने मंगलों की भरपूर समृद्धि है। तुम उसे पाने का साहस तो करके देखो।
(iii) मनु ने संसार को निराशा से भरा और जीवन को उपायहीन मान लिया था।
(iv) श्रद्धा मनु को कभी न मरने वाले देवताओं की संतानें बताकर उत्साहित करती हैं।
(v) जब भय समाप्त हो जाएगा और मन के अन्दर जीने का उत्साह पैदा हो जाएगा तब सब सकल समृद्धि पास खिंची चली आएगी।

(4) **शक्ति के विद्युत्कण जो व्यस्त**
विकल बिखरे हैं, हो निरुपाय;
समन्वय उसका करे समस्त
विजयिनी मानवता हो जाय।

(i) उपर्युक्त पद्यांश के शीर्षक और कवि का नाम लिखिए।
(ii) रेखांकित अंश की व्याख्या कीजिए।
(iii) इन पंक्तियों में श्रद्धा ने मनु को कौन-सी बात बताई है?
(iv) समस्त सृष्टि की रचना किनसे हुई है?
(v) श्रद्धा मनु को किस प्रकार मानवता का साम्राज्य स्थापित करने के लिए प्रेरित करती हैं?

उत्तर—(i) प्रस्तुत पद्यांश **श्री जयशंकर प्रसाद** के '**कामायनी**' महाकाव्य से हमारी पाठ्य-पुस्तक '**काव्यांजलि**' में संकलित '**श्रद्धा-मनु**' शीर्षक कविता से उद्धृत है।

अथवा

शीर्षक का नाम—श्रद्धा-मनु।
कवि का नाम—जयशंकर प्रसाद।

(ii) **रेखांकित अंश की व्याख्या**—श्रद्धा मनु से कहती है कि जीवन के प्रति हताशा और निराशा को त्यागकर आपको लोक-मंगल के कार्यों में लगना चाहिए। इसके लिए सबसे महत्त्वपूर्ण और मुख्य कार्य संसार की विभिन्न शक्तियों में पारस्परिक समन्वय स्थापित करना है। विश्व की विद्युत्-कणों के समान जो भी करोड़ों-करोड़ शक्तियाँ हैं, वे सब बिखरी पड़ी हैं, जिस कारण जीवन में उनका कोई भी उपयोग नहीं हो पा रहा है। उन सब शक्तियों को एकत्रित कीजिए और उनमें आया समन्वय स्थापित कीजिए, जिससे उन शक्तियों का अधिक-से-अधिक उपयोग हो सके। इसी में मानवता का कल्याण निहित है। यदि आप यह समन्वय स्थापित करने में सफल हो गए तो सर्वत्र मानवता का साम्राज्य स्थापित हो जाएगा।
(iii) इन पंक्तियों में श्रद्धा ने मनु को मानवता की विजय का उपाय बताया है।
(iv) समस्त सृष्टि की रचना शक्तिशाली विद्युत्-कणों से हुई है।
(v) श्रद्धा ने मनु को बिखरी पड़ी समस्त शक्तियों को एकत्रित करके उनके उपयोग द्वारा मानवता का साम्राज्य स्थापित करने के लिए प्रेरित किया है।

सुमित्रानन्दन पन्त

नौका-विहार

(1) **जब पहुँची चपला बीच धार,**
छिप गया चाँदनी का कगार !
दो बाहों से दूरस्थ तीर धारा का कृश कोमल शरीर
आलिंगन करने को अधीर !
अति दूर, क्षितिज पर विटप-माल लगती भू-रेखा-सी अराल,
अपलक नभ नील-नयन विशाल;
माँ के उर पर शिशु-सा, समीप, सोया धारा में एक द्वीप,
उर्मिल प्रवाह को कर प्रतीप,
वह कौन विहग? क्या विकल कोक, उड़ता हरने निज विरह शोक?
छाया की कोकी को विलोक !

(i) उपर्युक्त पद्यांश के शीर्षक और कवि का नाम लिखिए।
(ii) रेखांकित अंश की व्याख्या कीजिए।
(iii) कब चाँद-सा चमकता हुआ रेत का कगार कवि की आँखों से ओझल हो गया?
(iv) धारा के बीच से देखने पर गंगा के दोनों तट किसके समान लगते हैं?
(v) धारा के बीच स्थित द्वीप कैसा दिखाई पड़ता है?

उत्तर—(i) यह पद्यांश कविवर **सुमित्रानन्दन पन्त** द्वारा रचित '**नौका-विहार**' शीर्षक कविता से उद्धृत है और हमारी पाठ्य-पुस्तक '**काव्यांजलि**' में संकलित है।

अथवा

शीर्षक का नाम—नौका-विहार।
कवि का नाम—सुमित्रानन्दन पन्त।

(ii) **रेखांकित अंश की व्याख्या**—जब नौका गंगा की बीच धारा में पहुँची तो हमने देखा कि चाँदनी में चाँद-सा चमकता हुआ रेतीला कगार हमारी दृष्टि से ओझल हो गया। गंगा के दूर-दूर स्थित दोनों तट फैली हुई दो बाँहों के समान लग रहे थे, जो गंगा-धारा के दुबले-पतले कोमल नारी शरीर का आलिंगन करने के लिए अधीर थे; अर्थात् अपने में कस लेना चाहते थे।

(iii) जब नाव बीच धारा में पहुँची तब कवि ने देखा कि चाँदनी रात में चाँद-सा चमकता हुआ रेतीला कगार आँखों से ओझल हो गया।

(iv) धारा के बीच में देखने पर गंगा के दोनों तट फैली हुई दो भुजाओं के समान लग रहे हैं, जो गंगा के दुबले-पतले शरीर का आलिंगन करने के लिए अधीर हैं।

(v) धारा के बीच स्थित द्वीप ऐसा दिखाई पड़ता है जैसे माँ की छाती से चिपककर कोई नन्हा बालक सोया हुआ हो।

(2) **ज्यों-ज्यों लगती है नाव पार**
उर में आलोकित शत विचार ।
इस धारा-सा ही जग का क्रम, शाश्वत इस जीवन का उद्गम,
शाश्वत है गति, शाश्वत संगम !
शाश्वत नभ का नीला विकास, शाश्वत शशि का यह रजत हास,
शाश्वत लघु लहरों का विलास !
हे जग-जीवन के कर्णधार ! चिर जन्म-मरण के आर-पार,
शाश्वत जीवन-नौका-विहार?
मैं भूल गया अस्तित्व ज्ञान, जीवन का यह शाश्वत प्रमाण,
करता मुझको अमरत्व दान !

(i) उपर्युक्त पद्यांश के शीर्षक और कवि का नाम लिखिए।
(ii) रेखांकित अंश की व्याख्या कीजिए।
(iii) इस संसार की गति कवि को किसके समान लगती है?
(iv) गंगा के दोनों किनारे कवि को किसके समान लगते हैं?
(v) कवि क्या भूल गया था?

उत्तर—(i) यह पद्यांश कविवर **सुमित्रानन्दन पन्त** द्वारा रचित '**नौका-विहार**' शीर्षक कविता से उद्धृत है और हमारी पाठ्य-पुस्तक '**काव्यांजलि**' में संकलित है।

अथवा

शीर्षक का नाम—नौका-विहार।
कवि का नाम—सुमित्रानन्दन पन्त।

(ii) **रेखांकित अंश की व्याख्या**—जिस प्रकार गंगा की धारा अनादि काल से प्रवाहित होती चली आ रही है, उसी प्रकार यह जगत् (संसार) भी अनादि काल से चला आ रहा है। जिस प्रकार गंगा के जल का उद्गम, प्रवाह एवं सागर में मिलना शाश्वत (निश्चित) है उसी प्रकार जीवन का उत्पन्न होना, गतिशील होना और अन्त में विराट् तत्त्व में विलीन हो जाना भी सनातन ही है।

(iii) इस संसार की गति कवि को धारा के समान ही लगती है।
(iv) गंगा के दोनों किनारे जन्म और मृत्यु के समान सनातन लगते हैं।
(v) कवि जीवन का वास्तविकस्वरूप भूल गया था।

परिवर्तन

(1) **आज बचपन का कोमल गात**
जरा का पीला पात !
चार दिन सुखद चाँदनी रात
और फिर अन्धकार, अज्ञात !
शिशिर-सा झर नयनों का नीर
झुलस देता गालों के फूल ।
प्रणय का चुम्बन छोड़ अधीर
अधर जाते अधरों को भूल !
मृदुल होठों का हिमजल हास
उड़ा जाता निःश्वास समीर,
सरल भौंहों का शरदाकाश
घेर लेते घन, घिर गम्भीर !
शून्य साँसों का विधुर वियोग
छुड़ाता अधर मधुर संयोग,
मिलन के पल केवल दो चार,
विरह के कल्प अपार !
अरे, वे अपलक चार नयन,
आठ आँसू रोते निरुपाय,
उठे रोओं के आलिंगन
कसक उठते काँटों-से हाय !

(i) उपर्युक्त पद्यांश के शीर्षक और कवि का नाम लिखिए।
(ii) रेखांकित अंश की व्याख्या कीजिए।
(iii) बचपन का कोमल और सुन्दर शरीर वृद्धावस्था आने पर कैसा हो जाता है?
(iv) वृद्धावस्था की गहरी साँसें किसे उड़ा देती हैं?
(v) कवि ने सुःख और दुःख की क्या समयावधि बतायी है?

उत्तर—(i) यह पद्यांश **श्री सुमित्रानन्दन पन्त** द्वारा रचित '**परिवर्तन**' शीर्षक कविता से उद्धृत है। यह कविता हमारी पाठ्य-पुस्तक '**काव्यांजलि**' में संकलित है।

अथवा

शीर्षक का नाम—परिवर्तन।
कवि का नाम—सुमित्रानन्दन पन्त।

(ii) **रेखांकित अंश की व्याख्या**—मनुष्य को इस संसार में प्रियजनों से मिलने का सुख बहुधा कुछ ही पल मिल पाता है। अभी वह उन क्षणों का पूर्ण आनन्द भी नहीं ले पाता कि वियोग का क्षण आ पहुँचता है, जो अनन्त काल तक खिंचता चला जाता है। वस्तुतः समय की गति संयोग में अत्यधिक अल्पकालिक और वियोग में अत्यन्त दीर्घकालिक हो जाती है। लेकिन वास्तव में ऐसा नहीं होता। मिलन-विरह समकालिक है। मिलन के क्षण आनन्द की अनुभूति कराते हैं इसलिए वे शीघ्र बीत गये प्रतीत होते हैं, जबकि विरह के क्षण दुःखपूर्ण होते हैं। कष्ट से व्यतीत होने के कारण वे स्थायी रूप से रुक गये प्रतीत होते हैं।

(iii) बचपन का कोमल शरीर वृद्धावस्था आने पर पीले, सूखे, खुरदरे पत्ते के समान हो जाता है।
(iv) वृद्धावस्था की गहरी साँसें बचपन की होंठों पर ओस की बूँद के समान निर्मल और मोहक हँसी को उड़ा देती हैं।
(v) कवि ने सुःख के क्षणों को दो-चार दिन यानी बहुत कम तथा दुःख के समय को कल्पों के समान लम्बा (लगभग सम्पूर्ण जीवन) बताया है।

(2) **अहे निष्ठुर परिवर्तन !**
तुम्हारा ही तांडव नर्तन
विश्व का करुण विवर्तन !
तुम्हारा ही नयनोन्मीलन,
निखिल उत्थान, पतन !
अहे वासुकि सहस्रफन !
लक्ष अलक्षित चरण तुम्हारे चिह्न निरन्तर
छोड़ रहे हैं जग के विक्षत वक्षःस्थल पर !
शत-शत फेनोच्छ्वसित, स्फीत फूत्कार भयंकर
घुमा रहे हैं घनाकार जगती का अम्बर
मृत्यु तुम्हारा गरल दंत, कंचुक कल्पान्तर

अखिल विश्व ही विवर,
वक्र कुण्डल
दिङ्मंडल !

(i) उपर्युक्त पद्यांश के शीर्षक और कवि का नाम लिखिए।
(ii) रेखांकित अंश की व्याख्या कीजिए।
(iii) कवि ने निष्ठुर किसे कहा है?
(iv) नित्यप्रति होने वाले परिवर्तन किसके समान दृष्टिगोचर नहीं होते?
(v) कवि ने मृत्यु को क्या बताया है?

उत्तर—(i) यह पद्यांश **श्री सुमित्रानन्दन पन्त** द्वारा रचित **'परिवर्तन'** शीर्षक कविता से उद्धृत है। यह कविता हमारी पाठ्य-पुस्तक **'काव्यांजलि'** में संकलित है।

अथवा

शीर्षक का नाम—परिवर्तन।
कवि का नाम—सुमित्रानन्दन पन्त।

(ii) **रेखांकित अंश की व्याख्या**—कवि ने परिवर्तन को हजार फनों वाले नागराज वासुकि का रूप दिया है और बताया है कि परिवर्तन रूपी सर्प के रहने का बिल (विवर) सम्पूर्ण विश्व है, क्योंकि परिवर्तन सर्वत्र ही व्याप्त है। सम्पूर्ण दिशाओं का मण्डल ही इसकी गोलाकार कुण्डली है। सभी दिशाओं और सम्पूर्ण संसार में ऐसा कोई भी स्थान नहीं बचा है जहाँ परिवर्तन का प्रभाव न होता हो।
(iii) कवि ने परिवर्तन को निष्ठुर कहा है।
(iv) नित्यप्रति होने वाले परिवर्तन वासुकि सर्प के पैरों के समान दृष्टिगोचर नहीं होते।
(v) कवि ने मृत्यु को वासुकि नाग का विषैला दाँत बताया है।

बापू के प्रति

(1) तुम मांसहीन, तुम रक्तहीन
हे अस्थिशेष ! तुम अस्थिहीन,
तुम शुद्ध बुद्ध आत्मा केवल,
हे चिर पुराण ! हे चिर नवीन !
तुम पूर्ण इकाई जीवन की,
जिसमें असार भव-शून्य लीन,
आधार अमर, होगी जिस पर
भावी की संस्कृति समासीन ।

(i) उपर्युक्त पद्यांश के शीर्षक और कवि का नाम लिखिए।
(ii) रेखांकित अंश की व्याख्या कीजिए।
(iii) कौन हड्डियों का ढाँचा मात्र प्रतीत होते हैं?
(iv) गाँधी जी को कवि ने चिर पुराण तथा चिर नवीन क्यों कहा है?
(v) गाँधी जी के आदर्शों पर भविष्य में किसे खड़ा होना पड़ेगा?

उत्तर—(i) यह पद्यांश **श्री सुमित्रानन्दन पन्त** द्वारा रचित **'बापू के प्रति'** शीर्षक कविता से उद्धृत है। यह कविता हमारी पाठ्य-पुस्तक **'काव्यांजलि'** में संकलित है।

अथवा

शीर्षक का नाम—बापू के प्रति।
कवि का नाम—सुमित्रानन्दन पन्त।

(ii) **रेखांकित अंश की व्याख्या**—हे बापू! जैसी जीवन्मुक्त योगियों की दशा होती है, वैसी ही दशा आपकी भी है। तुममें मानव-जीवन की पूर्णता (चरम आदर्श) निहित है, जिसमें (अर्थात् पूर्णता में) विश्व की समस्त असारता लीन हो जाएगी। आशय यह है कि संसार तुम्हारे मार्ग पर चलकर अपना खोखलापन दूर करके मानव-जीवन की चरम सार्थकता को प्राप्त करेगा। तुम जिन सिद्धान्तों के आधार पर खड़े हो, वे अमर हैं, शाश्वत हैं। इसलिए भविष्य की मानव-संस्कृति को तुम्हारे ही आदर्शों पर खड़े होना पड़ेगा; अर्थात् आपके द्वारा दिये गये विचार और ज्ञान ही मानव-जाति के लिए आधार होंगे।
(iii) गाँधी जी देखने में हड्डियों का ढाँचा मात्र प्रतीत होते हैं।
(iv) गाँधी जी को शुद्ध ज्ञानस्वरूप आत्मा अर्थात् आत्मस्वरूप होने के कारण कवि ने चिर पुराण तथा चिर नवीन कहा है।
(v) गाँधी जी के आदर्शों पर भविष्य की मानव-संस्कृति को खड़ा होना पड़ेगा।

(2) सुख भोग खोजने आते सब,
आये तुम करने सत्य-खोज,
जग की मिट्टी के पुतले जन,
तुम आत्मा के, मन के मनोज !
जड़ता, हिंसा, स्पर्धा में भर
चेतना, अहिंसा, नम्र ओज,
पशुता का पंकज बना दिया
तुमने मानवता का सरोज ।

(i) उपर्युक्त पद्यांश के शीर्षक और कवि का नाम लिखिए।
(ii) रेखांकित अंश की व्याख्या कीजिए।
(iii) अधिकांश मनुष्य संसार में आकर किसकी खोज में लग जाते हैं?
(iv) गाँधी जी का भौतिकवादी मनुष्य पर क्या प्रभाव पड़ा?
(v) 'तुम आत्मा के, मन के मनोज!' पंक्ति में कौन-सा अलंकार होगा?

उत्तर—(i) यह पद्यांश **श्री सुमित्रानन्दन पन्त** द्वारा रचित **'बापू के प्रति'** शीर्षक कविता से उद्धृत है। यह कविता हमारी पाठ्य-पुस्तक **'काव्यांजलि'** में संकलित है।

अथवा

शीर्षक का नाम—बापू के प्रति।
कवि का नाम—सुमित्रानन्दन पन्त।

(ii) **रेखांकित अंश की व्याख्या**—वह पशुता की कीचड़ से उत्पन्न कमलवत् था। तुमने उसे मानवीयतारूपी निर्मल जल वाले सरोवर से उत्पन्न कमल बना दिया; अर्थात् तुमने भौतिकवादी मनुष्य को अध्यात्मवादी बना दिया।
(iii) अधिकांश मनुष्य संसार में सुख की खोज में लग जाते हैं।
(iv) गाँधी जी ने भौतिकवादी मनुष्य को अध्यात्मवादी बना दिया अर्थात् लोगों को मानवीय गुणों के आधार पर जीना सिखा दिया।
(v) रूपक अलंकार।

महादेवी वर्मा

गीत 1

(1) चिर सजग आँखें उनींदी आज कैसा व्यस्त बाना !
जाग तुझको दूर जाना
अचल हिमगिरि के हृदय में आज चाहे कम्प हो ले,
या प्रलय के आँसुओं में मौन अलसित व्योम रो ले;
आज पी आलोक को डोले तिमिर की घोर छाया,
जाग या विद्युत-शिखाओं में निठुर तूफान बोले !
पर तुझे है नाश-पथ पर, चिह्न अपने छोड़ आना !
जाग तुझको दूर जाना

(i) उपर्युक्त पद्यांश के शीर्षक और कवि का नाम लिखिए।
(ii) रेखांकित अंश की व्याख्या कीजिए।
(iii) प्रस्तुत पद्यांश के माध्यम से कवयित्री ने पथिक को क्या प्रेरणा दी है?
(iv) मार्ग में आने वाली अनेकानेक कठिनाइयों के बावजूद भी पथिक को विनाश और विध्वंश के बीच क्या छोड़ जाना है?
(v) 'हिमगिरि' शब्द के दो पर्यायवाची शब्द लिखिए।

उत्तर—(i) प्रस्तुत पद्यांश **श्रीमती महादेवी वर्मा** द्वारा रचित **सान्ध्यगीत** नामक कविता-संग्रह से हमारी पाठ्य-पुस्तक **'काव्यांजलि'** में संकलित **'गीत 1'** शीर्षक कविता से उद्धृत है।

अथवा

शीर्षक का नाम— गीत 1
कवयित्री का नाम—महादेवी वर्मा।

(ii) **रेखांकित अंश की व्याख्या**—कवयित्री महादेवी वर्मा कहती हैं कि हे पथिक! तुम्हारी सदा सचेत रहने वाली आँखों में यह खुमारी कैसी है और तुम्हारी वेशभूषा इतनी अस्त-व्यस्त क्यों हो रही है? ऐसा प्रतीत हो रहा है कि तुम अपने घर पर ही विश्राम कर रहे हो। सम्भवत: तुम यह भूल गये हो कि तुम्हें लम्बी यात्रा पर जाना है। इसीलिए तुम जाग जाओ, क्योंकि तुम्हारा प्राप्य या लक्ष्य बहुत दूर है। इसीलिए तुम्हें आलस्य में पड़े न रहकर तुरन्त निकल जाना चाहिए। आशय यह है कि साधक को साधना-मार्ग में अनेक कठिनाइयों-बाधाओं का सामना करना पड़ता है। जो साधक इनसे घबराकर या हताश होकर बैठ जाता है, वह अपने लक्ष्य तक कभी नहीं पहुँच पाता। इसलिए साधक को आगे बढ़ते रहने के लिए सदैव तत्पर रहना चाहिए।

(iii) प्रस्तुत पद्यांश के माध्यम से कवयित्री ने पथिक को निरन्तर अपने लक्ष्य की ओर बढ़ते जाने की प्रेरणा दी है।

(iv) मार्ग में आने वाली अनेकानेक कठिनाइयों के बावजूद भी पथिक को विनाश और विध्वंस के बीच नव-निर्माण के चित्र छोड़ जाना है।

(v) 'हिमगिरि' शब्द के दो पर्यायवाची हैं—हिमालय, गिरिराज।

(2) **कह न ठंडी साँस में अब भूल वह जलती कहानी,**
आग हो उर में तभी दृग में सजेगा आज पानी;
हार भी तेरी बनेगी मानिनी जय की पताका,
राख क्षणिक पतंग की है अमर दीपक की निशानी !
है तुझे अंगार-शय्या पर मृदुल कलियाँ बिछाना !
जाग तुझको दूर जाना !

(i) उपर्युक्त पद्यांश के शीर्षक और कवि का नाम लिखिए।
(ii) रेखांकित अंश की व्याख्या कीजिए।
(iii) इस पद्यांश से कवयित्री का आशय स्पष्ट कीजिए।
(iv) किसकी राख अमर दीपक की भाग बनकर अमर हो जाती है?
(v) 'क्षणिक' शब्द से मूल शब्द और प्रत्यय अलग करके लिखिए।

उत्तर—(i) प्रस्तुत पद्यांश **श्रीमती महादेवी वर्मा** द्वारा रचित **सान्ध्यगीत** नामक कविता-संग्रह से हमारी पाठ्य-पुस्तक **'काव्यांजलि'** में संकलित **'गीत 1'** शीर्षक कविता से उद्धृत है।

अथवा

शीर्षक का नाम— गीत 1
कवयित्री का नाम—महादेवी वर्मा।

(ii) **रेखांकित अंश की व्याख्या**—कवयित्री का कहना है कि यदि किसी के हृदय में अज्ञात प्रियतम के प्रति सच्चा प्रेम है तथा उसके हृदय में अपने प्रियतम से मिलने की एकनिष्ठ छटपटाहट विद्यमान है तो इस स्थिति में उसको मिलने वाली हार भी जीत ही मानी जाएगी। भाव यह है कि प्रेम की सफलता इसी में है कि हम एकनिष्ठ भाव से अपने प्रेम को प्रदर्शित करते रहें, चाहे हमारा अपने प्रियतम से मिलन हो या न हो। आशय यह है कि जीवात्मा अविनाशी परमात्मा पर अपने को मिटाकर भी अक्षय पुण्य एवं गौरव की अधिकारिणी बनती है।

(iii) इस पद्यांश से कवयित्री का आशय है कि साधना के कष्टों से घबराकर साधक को हार नहीं माननी चाहिए। साधना-पथ पर मिली असफलता भी गौरव का ही कारण बनती है।

(iv) पतंगा दीपक पर जलकर राख बन जाता है। उसकी राख अमर दीपक का भाग बनकर अमर हो जाती है।

(v) क्षणिक = क्षण + इक।

गीत 2

पंथ होने दो अपरिचित प्राण रहने दो अकेला !
घेर ले छाया अमा बन,
आज कज्जल-अश्रुओं में रिमझिमा ले यह घिरा घन !
और होंगे नयन सूखे,
तिल बुझे औ' पलक रूखे,
आर्द्र चितवन में यहाँ
शत विद्युतों में दीप खेला !

(i) उपर्युक्त पद्यांश के शीर्षक और कवि का नाम लिखिए।
(ii) रेखांकित अंश की व्याख्या कीजिए।
(iii) कवयित्री को साधना-पथ पर आगे बढ़ने से कौन नहीं रोक सकता?
(iv) कवयित्री के साधनारूपी दीपक पर किनका कोई प्रभाव नहीं पड़ता?
(v) 'प्राण' तथा 'अश्रु' शब्दों के वचन बताइए।

उत्तर—(i) प्रस्तुत पद्यांश **श्रीमती महादेवी वर्मा** द्वारा लिखित **'दीपशिखा'** नामक कविता-संग्रह से हमारी पाठ्य-पुस्तक **'काव्यांजलि'** में संकलित **'गीत 2'** नामक कविता से उद्धृत है।

अथवा

शीर्षक का नाम—गीत 2
कवयित्री का नाम—महादेवी वर्मा।

(ii) **रेखांकित अंश की व्याख्या**—महादेवी जी कह रही हैं कि लक्ष्य-पथ पर यदि कोई साथ न भी चले, अकेला ही चलना पड़े, तब भी वे निरन्तर आगे बढ़ती रहेंगी और अपरिचित मार्ग के समस्त संकटों को सहर्ष झेलकर अज्ञात प्रियतम के पास पहुँच जाएँगी। ऐसा उनका दृढ़विश्वास है।

(iii) कवयित्री को मार्ग में आने वाली बाधाएँ साधना-पथ पर आगे बढ़ने से नहीं रोक सकतीं।

(iv) कवयित्री के साधनारूपी दीपक पर घनघोर वर्षा और कौंधती बिजलियों का कोई प्रभाव नहीं पड़ता।

(v) 'प्राण' तथा 'अश्रु' सदा बहुवचन में रहने वाले शब्द हैं।

गीत 3

(1) **मैं नीर भरी दुख की बदली !**
स्पन्दन में चिर निस्पन्द बसा,
क्रन्दन में आहत विश्व हँसा,
नयनों में दीपक से जलते
पलकों में निर्झरिणी मचली ।
मेरा पग पग संगीत-भरा,
श्वासों से स्वप्न-पराग झरा,
नभ के नव रँग बुनते दुकूल,
छाया में मलय-बयार पली !

(i) उपर्युक्त पद्यांश के शीर्षक और कवि का नाम लिखिए।
(ii) रेखांकित अंश की व्याख्या कीजिए।
(iii) प्रस्तुत पंक्तियों में कवयित्री ने स्वयं को क्या बताया है?
(iv) कवयित्री के निरन्तर रुदन का क्या कारण है?
(v) कवयित्री आकाश से अपने हृदय की समानता करते हुए क्या कहती है?

उत्तर—(i) यह पद्यांश **श्रीमती महादेवी वर्मा** द्वारा रचित **'सान्ध्य-गीत'** नामक काव्य-संग्रह से हमारी पाठ्य-पुस्तक **'काव्यांजलि'** में संकलित **'गीत 3'** शीर्षक कविता से उद्धृत है।

अथवा

शीर्षक का नाम—गीत 3
कवयित्री का नाम—महादेवी वर्मा।

(ii) **रेखांकित अंश की व्याख्या**—कवयित्री महादेवी वर्मा का कहना है कि मैं नीर-भरी दु:ख की बदली हूँ; अर्थात् मेरा जीवन दु:ख की बदलियों से घिरा हुआ है। जिस प्रकार बदली आकाश में रहती है; किन्तु दूर-दूर तक फैले हुए आकाश का कोई भी कोना उसका स्थायी निवास नहीं होता, वह तो इधर-उधर भ्रमण करती रहती है। उसी प्रकार इस विस्तृत संसार में भी 'मेरा' कहने के लिए मेरे पास कुछ भी नहीं है। मेरा तो इतना ही परिचय और इतना ही इतिहास है कि मैं कल आई थी और आज जा रही हूँ। कवयित्री का आशय यह है कि मानव-जीवन क्षणिक है; अर्थात् जो आज है, वह कल नहीं होगा। समग्र मानव-जीवन का मात्र इतना ही परिचय है और इतना ही इतिहास है।

(iii) प्रस्तुत पंक्तियों में कवयित्री ने स्वयं को दु:ख की बदली बताया है।

(iv) प्रीतम से मिलने की व्याकुलता कवयित्री के निरन्तर रुदन का कारण है।

(v) कवयित्री आकाश से अपने हृदय की समानता करते हुए कहती हैं कि जिस प्रकार आकाश बहुरंगी मेघरूपी दुपट्टे से सुशोभित है उसी प्रकार मेरा हृदय भी बहुरंगी नाना अभिलाषाओं से रँगा हुआ है।

रामधारी सिंह 'दिनकर'

पुरूरवा

कौन है अंकुश, इसे मैं भी नहीं पहचानता हूँ ।
पर, सरोवर के किनारे कंठ में जो जल रहा है ।
उस तृषा, उस वेदना को जानता हूँ ।
सिन्धु-सा उद्दाम, अपरम्पार मेरा बल कहाँ है ?
गूँजता जिस शक्ति का सर्वत्र जयजयकार,
उस अटल संकल्प का सम्बल कहाँ है ?
यह शिला-सा वक्ष, ये चट्टान-सी मेरी भुजाएँ,
सूर्य के आलोक से दीपित, समुन्नत भाल,
मेरे प्राण का सागर अगम, उत्ताल, उच्छल है ।
सामने टिकते नहीं वनराज, पर्वत डोलते हैं,
काँपता है कुंडली मारे समय का व्याल,
मेरी बाँह में मारुत, गरुड़, गजराज का बल है ।
मर्त्य मानव की विजय का तूर्य हूँ मैं,
उर्वशी ! अपने समय का सूर्य हूँ मैं ।
अंध तम के भाल पर पावक जलाता हूँ,
बादलों के सीस पर स्यन्दन चलाता हूँ ।

(i) उपर्युक्त पद्यांश के शीर्षक और कवि का नाम लिखिए।

(ii) रेखांकित अंश की व्याख्या कीजिए।

(iii) राजा पुरूरवा किससे अपने मन की दुविधाग्रस्त स्थिति का वर्णन कर रहे हैं?

(iv) ऐसा क्या है जो राजा पुरूरवा को उर्वशी जैसी रूपसी के पास होने पर भी कामना पूरी करने पर रोक रहा है?

(v) हे उर्वशी! मैं अपने समय का सूर्य हूँ।'' इस बात का क्या आशय है?

उत्तर—(i) ये पंक्तियाँ महाकवि **रामधारीसिंह 'दिनकर'** द्वारा रचित नाटकीय महाकाव्य **'उर्वशी'** के तृतीय अंक से हमारी पाठ्य-पुस्तक **'काव्यांजलि'** में संकलित **'पुरूरवा'** शीर्षक काव्यांश से उद्धृत हैं।

अथवा

शीर्षक का नाम— पुरूरवा।
कवि का नाम—रामधारी सिंह 'दिनकर'।

(ii) **रेखांकित अंश की व्याख्या**—पुरूरवा कहते हैं कि मैं उस अंकुश या प्रतिबन्ध के विषय में नहीं जानता कि वह कौन-सी शक्ति है, जो मुझे अपनी प्यास बुझाने से रोक रही है। मेरी स्थिति उस व्यक्ति की-सी है, जो प्रेम सरोवर के किनारे बैठा है, किन्तु प्यास की पीड़ा से व्याकुल होने पर भी वह अपनी प्यास नहीं बुझा पाता। ऐसा क्यों होता है, यह मैं स्वयं नहीं समझ पाता। पुरूरवा का आशय है कि उर्वशी जैसी अनुपम रूपसी पास होने पर भी और स्वयं कामाग्नि से विह्वल होने पर भी वह अपनी कामना पूरी क्यों नहीं कर पा रहा है। सम्भवतया उसके सत्संस्कार उसे इस समाज विरुद्ध सम्बन्ध बनाने से रोक रहे हैं।

(iii) राजा पुरूरवा अप्सरा उर्वशी से अपने मन की दुविधाग्रस्त स्थिति का वर्णन कर रहे हैं।

(iv) राजा पुरूरवा के सत्संस्कार हैं जो उसे समाज के विरुद्ध सम्बन्ध बनाने से रोक रहे हैं।

(v) 'हे उर्वशी! मैं अपने समय का सूर्य हूँ' इस बात का आशय है कि जैसे सूर्य के तेज के सामने तारे फीके पड़ जाते हैं वैसे ही मेरे दुर्धर्ष तेज के सामने संसार के सारे राजा-गण निस्तेज हो चुके हैं।

उर्वशी

(1)
मैं नहीं गगन की लता
तारकों में पुलकिता फूलती हुई,
मैं नहीं व्योमपुर की बाला,
विधु की तनया, चन्द्रिका-संग,
पूर्णिमा-सिन्धु की परमोज्ज्वल आभा-तरंग,
मैं नहीं किरण के तारों पर झूलती हुई भू पर उतरी ।
मैं नाम-गोत्र से रहित पुष्प,
अम्बर में उड़ती हुई मुक्त आनन्द-शिखा
इतिवृत्त हीन,
सौन्दर्य-चेतना की तरंग;
सुर-नर-किन्नर गन्धर्व नहीं,
प्रिय! मैं केवल अप्सरा
विश्वनर के अतृप्त इच्छा-सागर से समुद्भूत ।

(i) उपर्युक्त पद्यांश के शीर्षक और कवि का नाम लिखिए।

(ii) रेखांकित अंश की व्याख्या कीजिए।

(iii) इस पद्यांश में उर्वशी ने किसे अपना परिचय दिया है?

(iv) आकाश में उड़ती हुई स्वच्छन्द आनन्द की शिखा कौन है?

(v) 'मैं नाम-गोत्र से रहित पुष्प' पंक्ति में कौन-सा अलंकार है?

उत्तर—(i) यह पद्यांश राष्ट्रकवि **रामधारी सिंह 'दिनकर'** द्वारा रचित **'उर्वशी'** महाकाव्य से हमारी पाठ्य-पुस्तक **'काव्यांजलि'** में संकलित **'उर्वशी'** शीर्षक काव्यांश से उद्धृत है।

अथवा

शीर्षक का नाम—उर्वशी
कवि का नाम—रामधारी सिंह 'दिनकर'।

(ii) **रेखांकित अंश की व्याख्या**—मैं नक्षत्रों के बीच में रहकर प्रसन्नतापूर्वक फलने-फूलने वाली आकाश की लता नहीं हूँ, न मैं आकाश में स्थित किसी नगर से उतरी युवती हूँ, न ही मैं चन्द्रमा की पुत्री हूँ, जो चाँदनी के साथ चन्द्रकिरणरूपी तारों पर लटककर पृथ्वी पर उतरी हो और न ही मैं पूर्णिमा के चन्द्रमा के उज्ज्वल प्रकाशरूपी सागर की हिलोरें लेती लहर हूँ। मैं तो मानव के हृदय में सुखोपभोग की अतृप्त इच्छाओं का जो सागर लहरा रहा है, उसी से उत्पन्न हुई केवल एक अप्सरा हूँ।

(iii) इस पद्यांश में उर्वशी ने राजा पुरूरवा को अपना परिचय दिया है।

(iv) उर्वशी आकाश में उड़ती हुई स्वच्छन्द आनन्द की शिखा है।

(v) रूपक अलंकार।

(2)
देवालय में देवता नहीं, केवल मैं हूँ ।
मेरी प्रतिमा को घेर उठ रही अगुरु-गन्ध,

बज रहा अर्चना में मेरी मेरा नूपुर ।
भू-नभ का सब संगीत नाद मेरे निस्सीम प्रणय का है,
सारी कविता जयगान एक मेरी त्रयलोक-विजय का है ।

(i) उपर्युक्त पद्यांश के शीर्षक और कवि का नाम लिखिए।
(ii) रेखांकित अंश की व्याख्या कीजिए।
(iii) इन पंक्तियों में नारी की विश्वव्यापी शक्ति का वर्णन कौन कर रहा है?
(iv) उर्वशी ने मन्दिरों में देवताओं के स्थान पर किसका वास बताया है?
(v) संसार का समस्त काव्य किसका गान करता है?

उत्तर—(i) यह पद्यांश राष्ट्रकवि **रामधारीसिंह 'दिनकर'** द्वारा रचित **'उर्वशी'** महाकाव्य से हमारी पाठ्य-पुस्तक **'काव्यांजलि'** में संकलित **'उर्वशी'** शीर्षक काव्यांश से उद्धृत है।

अथवा

शीर्षक का नाम —उर्वशी।
कवि का नाम —रामधारी सिंह 'दिनकर'।

(ii) **रेखांकित अंश की व्याख्या**—उर्वशी कह रही है कि मन्दिरों में देवताओं का नहीं, अपितु मेरा ही वास है। आशय यह है कि देव-प्रतिमाएँ मनुष्य की सौन्दर्य चेतना का परिणाम हैं और इस सौन्दर्य चेतना का मूल आधार नारी है। इस प्रकार मन्दिरों में देव-प्रतिमाओं के विभिन्न रूपों में मनुष्य वस्तुतः सौन्दर्य की साकार प्रतिमा नारी को ही अपने श्रद्धा-सुमन अर्पित करता है। अतः स्पष्ट है कि देवालयों में देव-प्रतिमाओं के स्थान पर मुख्यतः नारी ही अधिष्ठित है।
(iii) इन पंक्तियों में नारी की विश्वव्यापी शक्ति का वर्णन उर्वशी कर रही है।
(iv) उर्वशी ने मन्दिरों में देवताओं के स्थान पर स्वयं का वास बताया है।
(v) संसार का समस्त काव्य नारी के ही त्रैलोक्य-विजय का गान करता है।

अभिनव मनुष्य

(1)
यह मनुज, ब्रह्माण्ड का सबसे सुरम्य प्रकाश,
कुछ छिपा सकते न जिससे भूमि या आकाश ।
यह मनुज जिसकी शिखा उद्दाम,
कर रहे जिसको चराचर भक्तियुक्त प्रणाम ।
यह मनुज, जो सृष्टि का शृंगार,
ज्ञान का, विज्ञान का, आलोक का आगार ।
'व्योम से पाताल तक सब कुछ इसे है ज्ञेय'
पर, न यह परिचय मनुज का, यह न उसका श्रेय ।
श्रेय उसका, बुद्धि पर चैतन्य उर की जीत;

(i) उपर्युक्त पद्यांश के शीर्षक और कवि का नाम लिखिए।
(ii) रेखांकित अंश की व्याख्या कीजिए।
(iii) आकाश और पृथ्वी का कोई भी तत्त्व किससे अज्ञात नहीं रह सकता?
(iv) संसार के सभी जड़-चेतन पदार्थ किस कारण मनुष्य को प्रणाम करते हैं?
(v) 'आकाश' शब्द के दो पर्यायवाची शब्द लिखिए।

उत्तर—(i) प्रस्तुत पद्यांश कविवर **रामधारी सिंह 'दिनकर'** द्वारा रचित **'कुरुक्षेत्र'** काव्य के छठे सर्ग से हमारी पाठ्य-पुस्तक **'काव्यांजलि'** में संकलित **'अभिनव मनुष्य'** शीर्षक काव्यांश से उद्धृत है।

अथवा

शीर्षक का नाम —अभिनव मनुष्य।
कवि का नाम —रामधारी सिंह 'दिनकर'।

(ii) **रेखांकित अंश की व्याख्या**—कवि कहता है कि आज मनुष्य ने वैज्ञानिक प्रगति के बल पर इस संसार के विषय में सब कुछ जान लिया है। पृथ्वी के गर्भ से लेकर सुदूर अन्तरिक्ष तक के सभी रहस्यों का उद्घाटन कर दिया है। चाँद-तारे, सूरज आदि की स्थिति को स्पष्ट कर दिया है कि आसमान में कहाँ और कैसे टिके हैं? पृथ्वी के गर्भ में जहाँ शीतल जल का अथाह भण्डार है, वहीं दहकता लावा भी विद्यमान है; उसके द्वारा यह भी ज्ञात किया जा चुका है। किन्तु यह ज्ञान-विज्ञान तो मनुष्यता की पहचान नहीं है और न ही इससे मानवता का कल्याण हो सकता है। संसार का कल्याण तो केवल इस बात में निहित है कि प्रत्येक मनुष्य प्राणिमात्र से स्नेह करे, उसे अपने समान ही समझे, यही मनुष्यता की अथवा मनुष्य होने की पहचान भी है, अन्यथा ज्ञान-विज्ञान की जानकारी तो एक कम्प्यूटर भी रखता है, मगर उसमें मानवीय संवेदनाएँ नहीं होतीं; अतः उसे मनुष्य नहीं कहा जा सकता।
(iii) आकाश और पृथ्वी का कोई भी तत्त्व अभिनव मनुष्य से अज्ञात नहीं रह सकता।
(iv) आज का यह अभिनव मनुष्य इतना बुद्धिमान हो गया है कि इसके यश की अदम्य-शिखा सर्वत्र शोभित है जिसे संसार के सभी जड़-चेतन पदार्थ शक्तिपूर्वक प्रणाम करते हैं।
(v) 'आकाश' शब्द के दो पर्यायवाची शब्द हैं—नभ, शून्य।

(2)
सावधान, मनुष्य ! यदि विज्ञान है तलवार,
तो इसे दे फेंक, तजकर मोह, स्मृति के पार ।
हो चुका है सिद्ध, है तू शिशु अभी अज्ञान;
फूल काँटों की तुझे कुछ भी नहीं पहचान ।
खेल सकता तू नहीं ले हाथ में तलवार,
काट लेगा अंग, तीखी है बड़ी यह धार ।

(i) उपर्युक्त पद्यांश के शीर्षक और कवि का नाम लिखिए।
(ii) रेखांकित अंश की व्याख्या कीजिए।
(iii) कवि ने भौतिकवादी और वैज्ञानिक युग के मानव को क्या चेतावनी दी है?
(iv) कवि ने तलवार किसे बताया है और इसका इस्तेमाल करने से मनुष्य को क्यों मना किया है?
(v) 'तलवार' शब्द के दो पर्यायवाची लिखिए।

उत्तर—(i) प्रस्तुत पद्यांश कविवर **रामधारी सिंह 'दिनकर'** द्वारा रचित **'कुरुक्षेत्र'** काव्य के छठे सर्ग से हमारी पाठ्य-पुस्तक **'काव्यांजलि'** में संकलित **'अभिनव मनुष्य'** शीर्षक काव्यांश से उद्धृत है।

अथवा

शीर्षक का नाम —अभिनव मनुष्य।
कवि का नाम —रामधारी सिंह 'दिनकर'।

(ii) **रेखांकित अंश की व्याख्या**—कवि श्री रामधारी सिंह 'दिनकर' मनुष्य को सचेत करते हुए कहते हैं कि हे मनुष्य! यह सिद्ध हो चुका है कि तुम अभी एक शिशु के समान अज्ञानी हो। तुम अपने ही हाथों अपना सर्वनाश करने पर तुले हुए हो। तुम्हें फूल और काँटों की कुछ भी पहचान नहीं है; अर्थात् तुम्हें यह पहचान नहीं है कि तुम्हारे लिए क्या लाभदायक है और क्या हानिकारक। अणुबम का प्रयोग करके विज्ञान पर गर्व करने वाले मनुष्य ने अपनी अबोधता और विवेकहीनता को सिद्ध कर दिया है।
(iii) कवि ने भौतिकवादी और वैज्ञानिक युग के मानव को यह चेतावनी दी है कि यदि तू अभी सावधान नहीं हुआ तो तुझे विज्ञान के दुष्परिणाम भोगने पड़ेंगे।
(iv) कवि ने विज्ञान को तलवार बताया है और इसे मनमानी क्रीड़ा का माध्यम बना लेना स्वयं का नुकसान करना है। इसलिए इसके प्रचण्ड प्रभाव से बचने के लिए मनुष्य को मना किया है।
(v) 'तलवार' शब्द के दो पर्यायवाची हैं—खड्ग तथा कृपाण।

सच्चिदानन्द हीरानन्द वात्स्यायन 'अज्ञेय'

मैंने आहुति बनकर देखा

वे रोगी होंगे प्रेम जिन्हें अनुभव-रस का कटु प्याला है–
वे मुर्दे होंगे प्रेम जिन्हें सम्मोहन-कारी हाला है।
मैंने विदग्ध हो जान लिया, अन्तिम रहस्य पहचान लिया–
मैंने आहुति बनकर देखा यह प्रेम यज्ञ की ज्वाला है !

(i) उपर्युक्त पद्यांश के शीर्षक और कवि का नाम लिखिए।

(ii) रेखांकित अंश की व्याख्या कीजिए।
(iii) कवि ने रोगी किसे बताया है?
(iv) किनको संवेदनाहीन मृतक की संज्ञा दी गयी है?
(v) कवि ने यह कैसे सिद्ध किया है कि प्रेम यज्ञ की ज्वाला के समान पवित्र और कल्याणकारी है?

उत्तर—(i) प्रस्तुत पंक्तियाँ प्रयोगवाद के प्रवर्तक **श्री सच्चिदानन्द हीरानन्द वात्स्यायन 'अज्ञेय'** द्वारा रचित **'पूर्वा'** कविता-संग्रह से हमारी पाठ्य-पुस्तक **'काव्यांजलि'** में संकलित **'मैंने आहुति बनकर देखा'** शीर्षक कविता से उद्धृत हैं।

अथवा

शीर्षक का नाम—मैंने आहुति बनकर देखा।
कवि का नाम—सच्चिदानन्द हीरानन्द वात्स्यायन 'अज्ञेय'।

(ii) **रेखांकित अंश की व्याख्या**—कवि अज्ञेय का कहना है कि प्रेम जीवन में माधुर्य और सरसता का संचार करता है तथा व्यक्ति को एक नवीन चेतना और उत्साहित करने वाली नव-प्रेरणा प्रदान करता है। यह निष्प्राण व्यक्ति में भी प्राण डाल देता है। कवि कहता है कि मैंने स्वयं अनुभूत करके प्रेम के सच्चे स्वरूप और उसकी महत्ता को जान लिया है। मुझे प्रेम का यह तत्त्व अथवा रहस्य ज्ञात हो गया है कि प्रेम यज्ञ की उस ज्वाला के समान पवित्र और कल्याणकारी है, जो भौतिक एवं आध्यात्मिक दोनों ही दृष्टियों से व्यक्ति के लिए आवश्यक और मंगलकारी है। साथ ही प्रेम के इस मंगलकारी स्वरूप की अनुभूति तथा प्रेमरूपी यज्ञ की ज्वाला के दर्शन उसी समय सम्भव हो पाते हैं, जब व्यक्ति स्वयं प्रेमरूपी यज्ञ में अपनी आहुति देता है। आशय यह है कि कठिनाइयों और बाधाओं को पार करके तथा संघर्ष में तपकर ही हम प्रेम के तत्त्व को पहचान सकते हैं।

(iii) कवि ने उन लोगों को रोगी बताया है जो प्रेम को कटु अनुभवों का प्याला बताते हैं।
(iv) जो लोग प्रेम को अचेतन करने वाली मदिरा कहते हैं उनको संवेदनाहीन मृतक की संज्ञा दी है।
(v) कवि ने स्वयं व्यक्तिगत गहन अनुभूति के आधार पर यह सिद्ध किया है कि प्रेम यज्ञ की ज्वाला के समान पवित्र और कल्याणकारी है।

हिरोशिमा

(1) **छायाएँ मानव-जन की**
नहीं मिटीं लम्बी हो-होकर :
मानव ही सब भाप हो गये ।
छायाएँ तो अभी लिखी हैं,
झुलसे हुए पत्थरों पर
उजड़ी सड़कों की गच पर ।

(i) उपर्युक्त पद्यांश के शीर्षक और कवि का नाम लिखिए।
(ii) रेखांकित अंश की व्याख्या कीजिए।
(iii) प्रस्तुत अंश में किसका वर्णन हुआ है?
(iv) परमाणु हमले से कहाँ पर तुरन्त ही सब कुछ समाप्त हो गया?
(v) हिरोशिमा की उजड़ी सड़कों पर आज भी कितनी काली छायाएँ देखी जा सकती हैं?

उत्तर—(i) प्रस्तुत पंक्तियाँ प्रयोगवाद के प्रवर्तक **श्री सच्चिदानन्द हीरानन्द वात्स्यायन 'अज्ञेय'** द्वारा रचित **'पूर्वा'** कविता-संग्रह से हमारी पाठ्य-पुस्तक **'काव्यांजलि'** में संकलित **'हिरोशिमा'** शीर्षक कविता से उद्धृत हैं।

अथवा

शीर्षक का नाम—हिरोशिमा।
कवि का नाम—सच्चिदानन्द हीरानन्द वात्स्यायन 'अज्ञेय'।

(ii) **रेखांकित अंश की व्याख्या**—'अज्ञेय' जी ने कहा है कि परमाणु शक्ति के दुरुपयोग से मानवता त्रस्त होती है। मानव के साथ-साथ प्रकृति और दूसरे जीव-जन्तु भी समूल नष्ट हो जाते हैं। द्वितीय विश्व युद्ध के अन्त में अमेरिका ने जापान देश के हिरोशिमा और नागासाकी नगरों पर परमाणु बमों से हमला किया तो मनुष्य द्वारा रचे गये उस सूर्य की रोशनी में वहाँ की जनता भाप बन कर उड़ गयी थी। लोगों की छायाएँ डूबते सूर्य के प्रकाश में जैसे लम्बी होकर मिटती हैं, वैसी हिरोशिमा में नहीं मिटी थीं, वहाँ तुरन्त ही सब कुछ समाप्त हो गया था। आज तक भी वहाँ की उजड़ी सड़कों और परमाणु बमों की आग से झुलसे पत्थरों पर उस त्रासदी की काली छायाएँ स्पष्ट देखी जा सकती हैं।

(iii) प्रस्तुत अंश में अमेरिका के परमाणु बमों द्वारा जापान के हिरोशिमा और नागासाकी नगरों में हुए भीषण नर-संहार का वर्णन हुआ है।
(iv) हिरोशिमा और नागासाकी नगरों में परमाणु हमले से तुरन्त ही सब-कुछ समाप्त हो गया।
(v) हिरोशिमा की उजड़ी सड़कों पर परमाणु बस की आग से झुलसे पत्थरों पर उस त्रासदी की काली छायाएँ स्पष्ट देखी जा सकती हैं।

(2) **मानव का रचा हुआ सूरज**
मानव को भाप बनाकर सोख गया।
पत्थर पर लिखी हुई यह
जली हुई छाया
मानव की साखी है ।

(i) उपर्युक्त पद्यांश के शीर्षक और कवि का नाम लिखिए।
(ii) रेखांकित अंश की व्याख्या कीजिए।
(iii) मानव का रचा हुआ सूरज क्या है?
(iv) अणुबमरूपी सूरज किसे और किस प्रकार भाप बनाकर सोख गया?
(v) कौन आज भी महाविनाश के गवाह हैं?

उत्तर—(i) प्रस्तुत पंक्तियाँ प्रयोगवाद के प्रवर्तक **श्री सच्चिदानन्द हीरानन्द वात्स्यायन 'हिरोशिमा'** द्वारा रचित **'पूर्वा'** कविता-संग्रह से हमारी पाठ्य-पुस्तक **'काव्यांजलि'** में संकलित **'हिरोशिमा'** शीर्षक कविता से उद्धृत हैं।

अथवा

शीर्षक का नाम—हिरोशिमा।
कवि का नाम—सच्चिदानन्द हीरानन्द वात्स्यायन 'अज्ञेय'।

(ii) **रेखांकित अंश की व्याख्या**—परमाणु बम के रूप में मनुष्य ने मानो कृत्रिम सूरज की रचना कर ली है। इसके विस्फोट में सूरज के समान ही अत्यधिक ताप उत्पन्न होता है। अमेरिका ने जब हिरोशिमा पर परमाणु बम गिराया तो विस्फोट के समय उससे इतना ताप और प्रकाश उत्पन्न हुआ कि लगा आसमान से टूटकर सूरज ही धरती पर आ गिरा हो। उस समय मनुष्य भाप बनकर उड़ गया और उसकी राख तक शेष न रही। सूर्य में भी इतना ही ताप है कि उसके पास पहुँचकर कोई भी वस्तु ठोस अथवा द्रव अवस्था में नहीं रहती, वरन् वह गैस में परिवर्तित हो जाती है, ऐसा ही हिरोशिमा के परमाणु बम विस्फोट के समय हुआ था। जहाँ पर बम गिरा था, वहाँ की अधिकांश वस्तुएँ विशेषकर पेड़-पौधे और जीव-जन्तु अत्यधिक ताप के कारण भाप (गैस) बनकर उड़ गये थे। यह वैज्ञानिक प्रगति के महाविनाश का प्रथम प्रमाण था।

(iii) मानव का रचा हुआ सूरज अणुबम है।
(iv) अणुबमरूपी सूरज ने मनुष्यों को उसी प्रकार जलाकर भस्म कर डाला जिस प्रकार सूर्य पानी को भाप बना डालता है।
(v) अणुबम की आग ने मानव तो मानव, पत्थर तक को जलाकर काला कर डाला, जो आज भी उस महाविनाश की गाथा के गवाह हैं। ❑

Sdc Study Subscribe

5 लेखक एवं कवि परिचय

प्रश्न-परिचय— सामान्य हिन्दी के **खण्ड 'क'** का **पंचम प्रश्न** पाठ्य-पुस्तक **'गद्य गरिमा व काव्यांजलि'** में संकलित विभिन्न लेखकों एवं कवियों के साहित्यिक परिचय, जीवनी, भाषा-शैली एवं साहित्यिक विशेषताओं पर आधारित होगा। यह प्रश्न दो भागों 'क' एवं 'ख' में विभक्त होगा, जिसके लिए क्रमशः **2+2=4** तथा **2+2=4 अंक** निर्धारित होंगे। इसके अन्तर्गत **तीन/चार** लेखकों एवं **तीन/चार** कवियों के नाम दिये जाएँगे, जिनमें से किसी **एक** लेखक एवं **एक** कवि के बारे में आपको लिखना होगा। इस प्रश्न के लिए कुल **8 अंक** निर्धारित हैं। शब्द-सीमा अधिकतम 80 शब्द होगी।

प्रश्न (क)—निम्नलिखित लेखकों में से किसी एक लेखक का साहित्यिक परिचय देते हुए उनकी रचनाओं का उल्लेख कीजिए—

(1) वासुदेवशरण अग्रवाल **(2) आचार्य हजारीप्रसाद द्विवेदी**
(3) हरिशंकर परसाई **(4) डॉ० ए०पी०जे० अब्दुल कलाम**

(1) वासुदेवशरण अग्रवाल

(2009, 10, 11, 12, 13, 14, 15, 16, 17, 18)

जीवन-परिचय—डॉ० अग्रवाल का जन्म **सन् 1904 ई०** में **मेरठ** जनपद के **खेड़ा ग्राम** में हुआ था। इनके माता-पिता लखनऊ में रहते थे; अतः इनका बचपन लखनऊ में व्यतीत हुआ और यहीं इनकी प्रारम्भिक शिक्षा भी हुई। इन्होंने काशी हिन्दू विश्वविद्यालय से एम०ए० तथा लखनऊ विश्वविद्यालय से 'पाणिनिकालीन भारत' नामक शोध-प्रबन्ध पर डी०लिट्० की उपाधि प्राप्त की। डॉ० अग्रवाल ने पालि, संस्कृत एवं अंग्रेजी भाषाओं; भारतीय संस्कृति और पुरातत्त्व का गहन अध्ययन करके उच्चकोटि के विद्वान् के रूप में प्रसिद्धि प्राप्त की और काशी हिन्दू विश्वविद्यालय में 'पुरातत्त्व एवं प्राचीन इतिहास विभाग' के अध्यक्ष और बाद में आचार्य पद को सुशोभित किया। डॉ० अग्रवाल ने लखनऊ तथा मथुरा के पुरातत्त्व संग्रहालयों में निरीक्षक पद पर, केन्द्रीय सरकार के पुरातत्त्व विभाग में संचालक पद पर तथा दिल्ली के राष्ट्रीय संग्रहालय में अध्यक्ष तथा आचार्य पद पर भी कार्य किया। भारतीय संस्कृति और पुरातत्त्व का यह महान् पण्डित एवं साहित्यकार **सन् 1967 ई०** में परलोक सिधार गया।

साहित्यिक योगदान—डॉ० अग्रवाल भारतीय संस्कृति, पुरातत्त्व और प्राचीन इतिहास के प्रकाण्ड पण्डित एवं अन्वेषक थे। इनके मन में भारतीय संस्कृति को वैज्ञानिक अनुसन्धान की दृष्टि से प्रकाश में लाने की उत्कट इच्छा थी; अतः इन्होंने उत्कृष्ट कोटि के अनुसन्धानात्मक निबन्धों की रचना की। इनके अधिकांश निबन्ध प्राचीन भारतीय इतिहास और संस्कृति से सम्बद्ध हैं। इन्होंने अपने निबन्धों में प्रागैतिहासिक, वैदिक एवं पौराणिक धर्म का उद्घाटन किया। निबन्ध के अतिरिक्त इन्होंने पालि, प्राकृत और संस्कृत के अनेक ग्रन्थों का सम्पादन और पाठ-शोधन का कार्य किया। जायसी के 'पद्मावत' पर इनकी टीका सर्वश्रेष्ठ मानी जाती है। इन्होंने बाणभट्ट के 'हर्षचरित' का सांस्कृतिक अध्ययन प्रस्तुत किया और प्राचीन महापुरुषों—श्रीकृष्ण, वाल्मीकि, मनु आदि का आधुनिक दृष्टि से बुद्धिसम्मत चरित्र प्रस्तुत किया। हिन्दी-साहित्य के इतिहास में अपनी मौलिकता, विचारशीलता और विद्वत्ता के लिए ये चिरस्मरणीय रहेंगे।

कृतियाँ—डॉ० वासुदेवशरण अग्रवाल ने निबन्ध, शोध एवं सम्पादन के क्षेत्र में महत्त्वपूर्ण कार्य किया। इनकी प्रमुख रचनाओं का विवरण निम्नवत् है

निबन्ध-संग्रह—'पृथिवीपुत्र', 'कल्पलता', 'कला और संस्कृति', 'कल्पवृक्ष', 'भारत की एकता', 'माता भूमिः पुत्रोऽहं पृथिव्याः', 'वाग्धारा' आदि इनके प्रसिद्ध निबन्ध-संग्रह हैं।

शोध प्रबन्ध—'पाणिनिकालीन भारतवर्ष'।

आलोचना-ग्रन्थ—'पद्मावत की संजीवनी व्याख्या' तथा 'हर्षचरित का सांस्कृतिक अध्ययन'।

सम्पादन—पालि, प्राकृत और संस्कृत के एकाधिक ग्रन्थों का।

साहित्य में स्थान—भारतीय संस्कृति और पुरातत्त्व के विद्वान डॉ० वासुदेवशरण अग्रवाल का निबन्ध-साहित्य अत्यधिक समृद्ध है। पुरातत्त्व और अनुसन्धान के क्षेत्र में उनकी समता कोई नहीं कर सकता। विचार-प्रधान निबन्धों के क्षेत्र में तो इनका योगदान सर्वथा अविस्मरणीय है। निश्चय ही हिन्दी-साहित्य में इनका मूर्धन्य स्थान है।

(2) आचार्य हजारीप्रसाद द्विवेदी

(2009, 10, 11, 12, 13, 14, 15, 16, 17, 18)

जीवन-परिचय—हिन्दी के श्रेष्ठ निबन्धकार आचार्य हजारीप्रसाद द्विवेदी का जन्म **सन् 1907 ई०** में **बलिया** जिले के **दूबे का छपरा** नामक ग्राम में हुआ था। इनके पिता **श्री अनमोल द्विवेदी** ज्योतिष और संस्कृत के प्रकाण्ड विद्वान थे; अतः इन्हें ज्योतिष और संस्कृत की शिक्षा उत्तराधिकार में प्राप्त हुई। काशी जाकर इन्होंने संस्कृत-साहित्य और ज्योतिष का उच्च स्तरीय ज्ञान प्राप्त किया। इनकी प्रतिभा का विशेष विकास विश्वविख्यात संस्था शान्ति निकेतन में हुआ। वहाँ ये 11 वर्ष तक हिन्दी भवन के निदेशक के रूप में कार्य करते रहे। वहीं इनके विस्तृत अध्ययन और लेखन का कार्य प्रारम्भ हुआ। सन् 1949 ई० में लखनऊ विश्वविद्यालय ने इन्हें डी०लिट्० की उपाधि से तथा सन् 1957 ई० में भारत सरकार ने 'पद्मभूषण' की उपाधि से विभूषित किया। इन्होंने काशी हिन्दू विश्वविद्यालय और पंजाब विश्वविद्यालय में हिन्दी विभाग के अध्यक्ष पद पर कार्य किया तथा उत्तर प्रदेश सरकार की हिन्दी ग्रन्थ अकादमी के अध्यक्ष रहे। तत्पश्चात् ये हिन्दी-साहित्य सम्मेलन प्रयाग के सभापति भी रहे। **19 मई, 1979 ई०** को यह वयोवृद्ध साहित्यकार रुग्णता के कारण स्वर्ग सिधार गया।

साहित्यिक योगदान—हजारीप्रसाद द्विवेदी साहित्य के प्रख्यात निबन्धकार, इतिहास-लेखक, अन्वेषक, आलोचक, सम्पादक तथा उपन्यासकार के अतिरिक्त कुशल वक्ता और सफल अध्यापक भी थे। वे मौलिक चिन्तक, भारतीय संस्कृति और इतिहास के मर्मज्ञ, बंगला तथा संस्कृत के प्रकाण्ड विद्वान थे। इनकी रचनाओं में नवीनता और प्राचीनता का अपूर्व समन्वय था। इनके साहित्य पर संस्कृत भाषा, आचार्य रामचन्द्र शुक्ल और रवीन्द्रनाथ ठाकुर का स्पष्ट प्रभाव है। इन्होंने 'विश्वभारती' और 'अभिनव भारतीय' ग्रन्थमाला का सम्पादन किया। इन्होंने अपभ्रंश और लुप्तप्राय जैन-साहित्य को प्रकाश में लाकर अपनी गहन शोध-दृष्टि का परिचय दिया। निबन्धकार के रूप में विचारात्मक निबन्ध लिखकर भारतीय संस्कृति और साहित्य की रक्षा की। इन्होंने नित्यप्रति के जीवन की गतिविधियों और अनुभूतियों का मार्मिकता के साथ चित्रण किया है। ये हिन्दी ललित निबन्ध लेखकों में अग्रगण्य हैं। द्विवेदी जी की साहित्य-सेवा को **डी०लिट्०**, **पद्मभूषण** और **मंगलाप्रसाद पारितोषिक** से सम्मानित किया गया है।

आलोचक के रूप में द्विवेदी जी ने हिन्दी-साहित्य के इतिहास पर नवीन दृष्टि से विचार किया। इन्होंने हिन्दी-साहित्य का आदिकाल में नवीन सामग्री के आधार पर शोधपरक विश्लेषण प्रस्तुत किया है। सूर-साहित्य पर इन्होंने भावपूर्ण आलोचना प्रस्तुत की है। इनके समीक्षात्मक निबन्ध विभिन्न संग्रहों में संगृहीत हैं।

उपन्यासकार के रूप में द्विवेदी जी ने चार उपन्यासों की रचना की। इनके उपन्यास सांस्कृतिक पृष्ठभूमि पर आधारित हैं। इनमें इतिहास और कल्पना के समन्वय द्वारा नयी शैली और उनकी मौलिक प्रतिभा का परिचय मिलता है।

रचनाएँ—आचार्य द्विवेदी का साहित्य बहुत विस्तृत है। इन्होंने अनेक विधाओं में उत्तम साहित्य की रचना की। इनकी प्रमुख रचनाएँ निम्नलिखित हैं—

1. **निबन्ध-संग्रह**—'अशोक के फूल', 'कुटज', 'विचार-प्रवाह', 'विचार और वितर्क', 'आलोक पर्व', 'कल्पलता'।
2. **आलोचना-साहित्य**—'सूरदास', 'कालिदास की लालित्य योजना', 'कबीर', 'साहित्य- सहचर', 'साहित्य का मर्म'।
3. **इतिहास**—'हिन्दी-साहित्य की भूमिका', 'हिन्दी-साहित्य का आदिकाल', 'हिन्दी-साहित्य'।
4. **उपन्यास**—'बाणभट्ट की आत्मकथा', 'चारुचन्द्रलेख', 'पुनर्नवा' और 'अनामदास का पोथा'।
5. **सम्पादन**—'नाथ सिद्धों की बानियाँ', 'संक्षिप्त पृथ्वीराज रासो', 'सन्देश रासक'।
6. **अनूदित रचनाएँ**—'प्रबन्ध चिन्तामणि', 'पुरातन प्रबन्ध-संग्रह', 'प्रबन्धकोश', 'विश्वपरिचय', 'लाल कनेर', 'मेरा बचपन' आदि।

साहित्य में स्थान—आचार्य हजारीप्रसाद द्विवेदी जी हिन्दी गद्य के प्रतिभाशाली रचनाकार थे। इन्होंने साहित्य के इतिहास-लेखन को नवीन दिशा प्रदान की। वे प्रकाण्ड विद्वान, उच्चकोटि के विचारक और समर्थ आलोचक थे। गम्भीर आलोचना, विचारप्रधान निबन्धों और उत्कृष्ट उपन्यासों की रचना कर द्विवेदी जी ने निश्चय ही हिन्दी-साहित्य में गौरवपूर्ण स्थान पा लिया है।

(3) हरिशंकर परसाई

(2009, 10, 11, 12, 13, 14, 15, 16, 17, 18)

जीवन-परिचय—श्री हरिशंकर जी का जन्म मध्य प्रदेश में **इटारसी** के निकट **जमानी** नामक स्थान पर **22 अगस्त, 1924** ई० को हुआ था। आरम्भ से लेकर स्नातक स्तर तक इनकी शिक्षा मध्य प्रदेश में हुई। नागपुर विश्वविद्यालय से इन्होंने हिन्दी में एम०ए० की परीक्षा उत्तीर्ण की। परसाई जी ने कुछ वर्षों तक अध्यापन-कार्य किया तथा साथ-साथ साहित्य-सृजन आरम्भ किया। नौकरी को साहित्य-सृजन में बाधक जानकर इन्होंने उसे तिलांजलि दे दी और स्वतन्त्रतापूर्वक साहित्य-सृजन में जुट गये। इन्होंने जबलपुर से 'वसुधा' नामक साहित्यिक मासिक पत्रिका का सम्पादन और प्रकाशन आरम्भ किया, परन्तु आर्थिक घाटे के कारण उसे बन्द कर देना पड़ा। इनकी रचनाएँ साप्ताहिक हिन्दुस्तान, धर्मयुग आदि पत्रिकाओं में नियमित रूप से प्रकाशित होती रहीं। परसाई जी ने मुख्यत: व्यंग्यप्रधान ललित निबन्धों की रचना की है। **10 अगस्त, 1995 ई०** को जबलपुर में इनका देहावसान हो गया।

साहित्यिक योगदान—परसाई जी हिन्दी व्यंग्य के आधार-स्तम्भ थे। इन्होंने हिन्दी व्यंग्य को नयी दिशा प्रदान की है और अपनी रचनाओं में व्यक्ति और समाज की विसंगतियों पर से परदा हटाया है। 'विकलांग श्रद्धा का दौर' ग्रन्थ पर इन्हें साहित्य अकादमी पुरस्कार प्राप्त हुआ। इसके अतिरिक्त 'उत्तर प्रदेश हिन्दी साहित्य संस्थान' तथा 'मध्य प्रदेश कला परिषद्' द्वारा भी इन्हें सम्मानित किया गया। इन्होंने कथाकार, उपन्यासकार, निबन्धकार तथा सम्पादक के रूप में हिन्दी-साहित्य की महान सेवा की।

रचनाएँ—परसाई जी अपनी कहानियों, उपन्यासों तथा निबन्धों में व्यक्ति और समाज की कमजोरियों, विसंगतियों और आडम्बरपूर्ण जीवन पर गहरी चोट करते हैं। इनकी प्रमुख रचनाएँ निम्नलिखित हैं

1. **कहानी-संग्रह**—'हँसते हैं, रोते हैं', 'जैसे उनके दिन फिरे'।
2. **उपन्यास**—'रानी नागफनी की कहानी', 'तट की खोज'।
3. **निबन्ध-संग्रह**—'तब की बात और थी', 'भूत के पाँव पीछे', 'बेईमानी की परत', 'पगडण्डियों का जमाना', 'सदाचार का तावीज', 'शिकायत मुझे भी है', 'और अन्त में'।

इनकी समस्त रचनाओं का संग्रह 'परसाई ग्रन्थावली' के नाम से प्रकाशित हो चुका है।

साहित्य में स्थान—परसाई जी हिन्दी साहित्य के एक समर्थ व्यंग्यकार थे। इन्होंने हिन्दी निबन्ध साहित्य में हास्य-व्यंग्य प्रधान निबन्धों की रचना करके एक विशेष अभाव की पूर्ति की है। इनकी शैली का प्राण व्यंग्य और विनोद है। अपनी विशिष्ट शैली से परसाई जी ने हिन्दी साहित्य में अपना प्रमुख स्थान बना लिया है।

(4) डॉ० ए०पी०जे० अब्दुल कलाम

जीवन-परिचय—डॉ० ए०पी०जे० अब्दुल कलाम का जन्म 15 अक्टूबर, 1931 को तमिलनाडु के रामेश्वरम् में एक मुसलमान परिवार में हुआ। उनके पिता जैनुलअबिदीन एक नाविक थे और उनकी माता अशिअम्मा एक गृहिणी थीं, उनके परिवार की आर्थिक स्थिति ठीक नहीं थी, इसलिए उन्हें छोटी उम्र से ही काम करना पड़ा। अपने पिता की आर्थिक मदद के लिए बालक कलाम स्कूल के बाद समाचार-पत्र वितरण का कार्य करते थे। अपने स्कूल के दिनों में कलाम पढ़ाई-लिखाई में सामान्य थे, पर नयी चीज सीखने के लिए हमेशा तैयार रहते थे। उनके अन्दर सीखने की भूख थी और वो पढ़ाई पर घंटों ध्यान देते थे। उन्होंने अपनी स्कूल की पढ़ाई रामनाथपुरम स्च्वार्त्ज मैट्रिकुलेशन स्कूल से पूरी की और उसके बाद तिरुचिरापल्ली के सेंट जोसेफ कॉलेज में दाखिला लिया, जहाँ से उन्होंने सन् 1954 में भौतिक विज्ञान में स्नातक किया। वर्ष 1960 में कलाम ने मद्रास इंस्टीट्यूट ऑफ टेक्नोलॉजी से इंजीनियरिंग की पढ़ाई पूरी की।

मद्रास इंस्टीट्यूट ऑफ टेक्नोलॉजी से इंजीनियरिंग की पढ़ाई पूरी करने के बाद कलाम रक्षा अनुसन्धान और विकास संगठन (डीआरडीओ) में वैज्ञानिक के तौर पर भर्ती हुए। कलाम ने अपने कैरियर की शुरुआत भारतीय सेना के लिए एक छोटे हेलीकॉप्टर डिजाइन बनाकर की।

वर्ष 1969 में उनका स्थानान्तरण भारतीय अंतरिक्ष अनुसन्धान संगठन (इसरो) में हुआ। यहाँ वो भारत के सैटेलाइट लांच व्हीकल परियोजना के निदेशक के तौर पर नियुक्त किये गये थे। इसरो में शामिल होना कलाम के कैरियर का सबसे अहम मोड़ था और जब उन्होंने सैटेलाइट लांच व्हीकल परियोजना पर कार्य आरम्भ किया तब उन्हें लगा जैसे वे वही कार्य कर रहे हैं जिसमें उनका मन लगता है।

1963-64 के दौरान उन्होंने अमेरिका के अन्तरिक्ष संगठन नासा की भी यात्रा की। परमाणु वैज्ञानिक राजा रमन्ना, जिनके देख-रेख में भारत ने पहला परमाणु परीक्षण किया, ने कलाम को वर्ष 1974 में पोखरण में परमाणु परीक्षण देखने के लिए भी बुलाया था। भारत सरकार ने महत्त्वाकांक्षी 'इंटीग्रेटेड गाइडेड मिसाइल डेवलपमेंट प्रोग्राम' का प्रारम्भ डॉ० कलाम की देख-रेख में किया। वह इस परियोजना के मुख्य कार्यकारी थे। इस परियोजना ने देश को अग्नि और पृथ्वी जैसी मिसाइलें दी हैं।

जुलाई, 1992 से लेकर दिसम्बर, 1999 तक डॉ० कलाम प्रधानमंत्री के वैज्ञानिक सलाहकार और रक्षा अनुसन्धान और विकास संगठन (डीआरडीओ) के सचिव थे। भारत ने पहला दूसरा परमाणु परीक्षण इसी दौरान किया था। इसमें एक महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाई थी। आर०चिदम्बरम के साथ डॉ० कलाम इस परियोजना के समन्वयक थे। इस दौरान मिले मीडिया कवरेज ने उन्हें देश का सबसे बड़ा परमाणु वैज्ञानिक बना दिया।

एक रक्षा वैज्ञानिक के तौर पर उनकी उपलब्धियों और प्रसिद्धि के मद्देनजर एन०डी०ए० की गठबंधन सरकार ने उन्हें वर्ष 2002 में राष्ट्रपति पद का उम्मीदवार बनाया तथा 25 जुलाई, 2002 को उन्होंने भारत के 11वें राष्ट्रपति के रूप में शपथ ली। डॉ० कलाम देश के ऐसे तीसरे राष्ट्रपति थे जिन्हें राष्ट्रपति बनने से पहले ही भारतरत्न से नवाजा जा चुका था।

कलाम हमेशा से देश के युवाओं और उनके भविष्य को बेहतर बनाने के बारे में बातें करते थे। इसी सम्बन्ध में उन्होंने देश के युवाओं के लिए ''ह्वाइट कैन आई गिव'' पहल की शुरुआत भी की जिसका उद्देश्य भ्रष्टाचार का सफाया है। देश के युवाओं में उनकी लोकप्रियता को देखते हुए उन्हें 2 बार (2003 और 2004) 'एम०टी०वी० यूथ आइकॉन ऑफ द इयर अवार्ड' के लिए मनोनीत भी किया गया था।

शिक्षण के अलावा डॉ० कलाम ने कई पुस्तकें भी लिखीं जिनमें प्रमुख हैं—**'इंडिया 2020 : अ विजन फॉर द न्यू मिलेनियम,'' विंग्स ऑफ फायर :**

ऐन ऑटोबायोग्राफी', 'इग्नाइटेड माइंड्स : अनलीशिंग द पॉवर विदिन इंडिया', 'मिशन इंडिया', 'इंडोमिटेबल स्पिरिट' आदि।

देश और समाज के लिए किये गये उनके कार्यों के लिए डॉ० कलाम को अनेक पुरस्कारों से सम्मानित किया गया। लगभग 40 विश्वविद्यालयों ने उन्हें मानद की डॉक्टरेट की उपाधि दी और भारत सरकार ने उन्हें पद्मभूषण, पद्मविभूषण और भारत के सबसे बड़े नागरिक सम्मान 'भारतरत्न' से अलंकृत किया।

26 जुलाई, 2015 को भारतीय प्रबंधन संस्थान, शिलाँग, में अध्यापन कार्य के दौरान उन्हें दिल का दौरा पड़ा जिसके बाद करोड़ों लोगों के प्रिय और चहेते डॉ० अब्दुल कलाम परलोक सिधार गये।

प्रश्न (ख)—निम्नलिखित कवियों में से किसी एक कवि का साहित्यिक-परिचय देते हुए उनकी कृतियों का उल्लेख कीजिए—

(1) मैथिलीशरण गुप्त **(2) जयशंकर प्रसाद**
(3) महादेवी वर्मा **(4) रामधारी सिंह 'दिनकर'**

(1) मैथिलीशरण गुप्त

(2009, 10, 11, 12, 13, 14, 15, 16, 17, 18)

जीवन-परिचय—राष्ट्रकवि मैथिलीशरण गुप्त का जन्म **संवत् 1943 वि० (सन् 1886 ई०)** में, **चिरगाँव** (जिला झाँसी) में हुआ था। इनके पिता का नाम **सेठ रामचरण गुप्त** था। सेठ रामचरण गुप्त स्वयं एक अच्छे कवि थे। गुप्त जी पर अपने पिता का पूर्ण प्रभाव पड़ा। आचार्य महावीरप्रसाद द्विवेदी से भी इन्हें बहुत प्रेरणा मिली। ये द्विवेदी जी को अपना गुरु मानते थे। गुप्त जी को प्रारम्भ में अंग्रेजी पढ़ने के लिए झाँसी भेजा गया, किन्तु वहाँ इनका मन न लगा; अत: घर पर ही इनकी शिक्षा का प्रबन्ध किया गया, जहाँ इन्होंने अंग्रेजी, संस्कृत और हिन्दी का अध्ययन किया। गुप्त जी बड़े ही विनम्र, हँसमुख और सरल स्वभाव के व्यक्ति थे। इनके काव्य में भारतीय संस्कृति का प्रेरणाप्रद चित्रण हुआ है। इन्होंने अपनी कविताओं द्वारा राष्ट्र में जागृति तो उत्पन्न की ही, साथ ही सक्रिय रूप से असहयोग आन्दोलनों में भी भाग लेते रहे, जिसके फलस्वरूप इन्हें जेल भी जाना पड़ा। **'साकेत'** महाकाव्य पर इन्हें हिन्दी-साहित्य-सम्मेलन, प्रयाग से **मंगलाप्रसाद पारितोषिक** भी मिला। भारत सरकार ने गुप्त जी को इनकी साहित्य-सेवा के लिए **पद्मभूषण** से सम्मानित किया और राज्यसभा का सदस्य भी मनोनीत किया। जीवन के अन्तिम क्षणों तक ये निरन्तर साहित्य-सृजन करते रहे। **12 दिसम्बर, 1964 ई० (संवत् 2021 वि०)** को माँ-भारती का यह महान् साधक पञ्चतत्त्व में विलीन हो गया।

साहित्यिक सेवाएँ—गुप्त जी का झुकाव गीतिकाव्य की ओर था और राष्ट्रप्रेम इनकी कविता का प्रमुख स्वर रहा। इनके काव्य में भारतीय संस्कृति का प्रेरणाप्रद चित्रण हुआ है। इन्होंने अपनी कविताओं द्वारा राष्ट्र में जागृति तो उत्पन्न की ही, साथ ही सक्रिय रूप से असहयोग आन्दोलनों में भी भाग लेते रहे, जिसके फलस्वरूप इन्हें जेल भी जाना पड़ा। **'साकेत'** महाकाव्य पर इन्हें हिन्दी-साहित्य-सम्मेलन, प्रयाग से **मंगलाप्रसाद पारितोषिक** भी मिला। भारत सरकार ने गुप्त जी को इनकी साहित्य-सेवा के लिए **पद्मभूषण** से सम्मानित किया और राज्यसभा का सदस्य भी मनोनीत किया।

रचनाएँ—गुप्त जी की समस्त रचनाएँ दो प्रकार की हैं—(1) अनूदित तथा (2) मौलिक।

इनकी **अनूदित** रचनाओं में दो प्रकार का साहित्य है—कुछ काव्य और कुछ नाटक। इन अनूदित ग्रन्थों में संस्कृत के यशस्वी नाटककार भास के 'स्वप्नवासवदत्ता' का अनुवाद उल्लेखनीय है। 'वीरांगना', 'मेघनाद-वध', 'वृत्र-संहार' आदि इनकी अन्य अनूदित रचनाएँ हैं।

इनकी प्रमुख **मौलिक** काव्य-रचनाएँ निम्नवत् हैं—

साकेत—यह उत्कृष्ट महाकाव्य है, जो 'श्रीरामचरितमानस' के बाद राम-काव्य का प्रमुख स्तम्भ है।

भारत-भारती—इसमें भारत की दिव्य संस्कृति और गौरव का गान किया गया है।

यशोधरा—इसमें बुद्ध की पत्नी यशोधरा के चरित्र को उजागर किया गया है।

द्वापर, जयभारत, विष्णुप्रिया—इनमें हिन्दू संस्कृति के प्रमुख पात्रों के चरित्र का पुनरावलोकन कर कवि ने अपनी पुनर्निर्माण कला उत्कृष्ट रूप में प्रदर्शित की है।

गुप्त जी की अन्य प्रमुख काव्य-रचनाएँ इस प्रकार हैं—रंग में भंग, जयद्रथ-वध, किसान, पंचवटी, हिन्दू, सैरिन्ध्री, सिद्धराज, नहुष, हिडिम्बा, त्रिपथगा, काबा और कर्बला, गुरुकुल, वैतालिक, मंगल घट, अजित आदि। 'अनघ', 'तिलोत्तमा', 'चन्द्रहास' नामक तीन छोटे-छोटे पद्यबद्ध रूपक भी इन्होंने लिखे हैं।

साहित्य में स्थान—राष्ट्रकवि मैथिलीशरण गुप्त आधुनिक हिन्दी के सर्वाधिक लोकप्रिय कवि रहे हैं। खड़ी बोली को काव्य के साँचे में ढालकर परिष्कृत करने का जो असाधारण कौशल इन्होंने दिखाया, वह अविस्मरणीय रहेगा। इन्होंने राष्ट्र को जगाया और उसकी चेतना को वाणी दी है। ये भारतीय संस्कृति के यशस्वी उद्गाता एवं परम वैष्णव होते हुए भी विश्वबन्धुत्व की भावना से ओत-प्रोत थे। ये सच्चे अर्थों में इस राष्ट्र के महनीय मूल्यों के प्रतीक और आधुनिक भारत के सच्चे राष्ट्रकवि थे।

(2) जयशंकर प्रसाद

(2010, 11, 12, 13, 16, 17, 18)

जीवन-परिचय—जयशंकर प्रसाद का जन्म **काशी** के एक प्रतिष्ठित वैश्य परिवार में **माघ शुक्ल दशमी संवत् 1945 वि० (सन् 1889 ई०)** में हुआ था। इनके पिता का नाम **देवीप्रसाद** था। ये तम्बाकू के एक प्रसिद्ध व्यापारी थे। बचपन में ही पिता की मृत्यु हो जाने से इनकी प्रारम्भिक शिक्षा घर पर ही हुई। घर पर ही इन्होंने हिन्दी, अंग्रेजी, संस्कृत, उर्दू, फारसी का गहन अध्ययन किया। ये बड़े मिलनसार, हँसमुख तथा सरल स्वभाव के थे। इनका बचपन बहुत सुख से बीता, किन्तु उदार प्रकृति तथा दानशीलता के कारण ये ऋणी हो गये। अपनी पैतृक सम्पत्ति का कुछ भाग बेचकर इन्होंने ऋण से छुटकारा पाया। अपने जीवन में इन्होंने कभी अपने व्यवसाय की ओर ध्यान नहीं दिया। परिणामस्वरूप इनकी आर्थिक स्थिति बिगड़ती गयी और चिन्ताओं ने इन्हें घेर लिया।

बाल्यावस्था से ही इन्हें काव्य के प्रति अनुराग था, जो उत्तरोत्तर बढ़ता ही गया। ये बड़े स्वाभिमानी थे, अपनी कहानी अथवा कविता के लिए पुरस्कारस्वरूप एक पैसा भी नहीं लेते थे। यद्यपि इनका जीवन बड़ा नपा-तुला और संयमशील था, किन्तु दु:खों के निरन्तर आघातों से ये न बच सके और **संवत् 1994 वि० (सन् 1937 ई०)** में अल्पावस्था में ही क्षय रोग से ग्रस्त होकर स्वर्ग सिधार गये।

साहित्यिक सेवाएँ—श्री जयशंकर प्रसाद छायावाद के प्रवर्तक, उन्नायक तथा प्रतिनिधि कवि होने के साथ-साथ युग प्रवर्तक नाटककार, कथाकार तथा उपन्यासकार भी थे। विशुद्ध मानवतावादी दृष्टिकोण वाले प्रसाद जी ने अपने काव्य में आध्यात्मिक आनन्दवाद की प्रतिष्ठा की है। प्रेम और सौन्दर्य इनके काव्य के प्रमुख विषय रहे हैं, किन्तु मानवीय संवेदना उनकी कविता का प्राण है।

रचनाएँ—प्रसाद जी अनेक विषयों एवं भाषाओं के प्रकाण्ड पण्डित और प्रतिभासम्पन्न कवि थे। इन्होंने नाटक, उपन्यास, कहानी, निबन्ध आदि सभी साहित्यिक विधाओं पर अपनी लेखनी चलायी और अपने कृतित्व से इन्हें अलंकृत किया। इनका काव्य हिन्दी-साहित्य की अमूल्य निधि है। इनके प्रमुख काव्यग्रन्थों का विवरण निम्नवत् है—

कामायनी—यह प्रसाद जी की कालजयी रचना है। इसमें मानव को श्रद्धा और मनु के माध्यम से हृदय और बुद्धि के समन्वय का सन्देश दिया गया है। इस रचना पर कवि को **मंगलाप्रसाद पारितोषिक** भी मिल चुका है।

आँसू—यह प्रसाद जी का वियोग का काव्य है। इसमें वियोगजनित पीड़ा और दु:ख मुखर हो उठा है।

लहर—यह प्रसाद जी का भावात्मक काव्य-संग्रह है।

झरना—इसमें प्रसाद जी की छायावादी कविताएँ संकलित हैं, जिसमें सौन्दर्य और प्रेम की अनुभूति साकार हो उठी है।

कहानी—आकाशदीप, इन्द्रजाल, प्रतिध्वनि, आँधी।

उपन्यास—कंकाल, तितली, इरावती (अपूर्ण)।

निबन्ध—काव्य और कला तथा अन्य निबन्ध।

चम्पू—प्रेम राज्य।

इनके अन्य काव्य-ग्रन्थ **चित्राधार, कानन-कुसुम, करुणालय, महाराणा का महत्त्व, प्रेम-पथिक** आदि हैं।

साहित्य में स्थान—प्रसाद जी असाधारण प्रतिभाशाली कवि थे। उनके काव्य में एक ऐसा नैसर्गिक आकर्षण एवं चमत्कार है कि सहृदय पाठक उसमें रसमग्न होकर अपनी सुध-बुध खो बैठता है। निस्सन्देह वे आधुनिक हिन्दी-काव्य-गगन के अप्रतिम तेजोमय मार्तण्ड हैं।

(3) महादेवी वर्मा

(2009, 10, 11, 12, 13, 14, 16, 17, 18)

जीवन-परिचय—महादेवी वर्मा का जन्म **फर्रूखाबाद** के एक शिक्षित कायस्थ परिवार में **सन् 1907 ई० (संवत् 1963 वि०)** में होलिका दहन के दिन हुआ था। इनके पिता **श्री गोविन्दप्रसाद वर्मा,** भागलपुर के एक कॉलेज में प्रधानाचार्य थे। इनकी माता **हेमरानी** परम विदुषी धार्मिक महिला थीं एवं नाना ब्रजभाषा के एक अच्छे कवि थे। महादेवी जी पर इन सभी का प्रभाव पड़ा और अन्ततः वे एक प्रसिद्ध कवयित्री, प्रकृति एवं परमात्मा की निष्ठावान् उपासिका और सफल प्रधानाचार्या के रूप में प्रतिष्ठित हुईं। इनकी प्रारम्भिक शिक्षा इन्दौर में और उच्च शिक्षा प्रयाग में हुई। संस्कृत से एम०ए० उत्तीर्ण करने के बाद ये प्रयाग महिला विद्यापीठ में प्रधानाचार्या हो गयीं। इनका विवाह 9 वर्ष की अल्पायु में ही हो गया था। इनके पति **श्री रूपनारायण सिंह** एक डॉक्टर थे, परन्तु इनका दाम्पत्य जीवन सफल नहीं था। विवाहोपरान्त ही इन्होंने एफ०ए०, बी०ए० और एम०ए० परीक्षाएँ सम्मानसहित उत्तीर्ण कीं। महादेवी जी ने घर पर ही चित्रकला तथा संगीत की शिक्षा भी प्राप्त की।

इन्होंने नारी-स्वातन्त्र्य के लिए संघर्ष किया, परन्तु अपने अधिकारों की रक्षा के लिए नारियों का शिक्षित होना भी आवश्यक बताया। कुछ वर्षों तक ये उत्तर प्रदेश विधान-परिषद् की मनोनीत सदस्या भी रहीं। भारत के राष्ट्रपति से इन्होंने **'पद्मभूषण'** की उपाधि प्राप्त की। हिन्दी साहित्य सम्मेलन की ओर से इन्हें **'सेकसरिया पुरस्कार'** तथा **'मंगलाप्रसाद पारितोषिक'** मिला। मई 1983 ई० में **'भारत-भारती'** तथा नवम्बर, 1983 ई० में **यामा** पर **'ज्ञानपीठ पुरस्कार'** से इन्हें सम्मानित किया गया। **11 सितम्बर, 1987 ई० (संवत् 2044 वि०)** को इस महान् लेखिका का स्वर्गवास हो गया।

साहित्यिक सेवाएँ—श्रीमती महादेवी वर्मा का मुख्य रचना क्षेत्र काव्य है। इनकी गणना छायावादी कवियों की वृहत् चतुष्टयी (प्रसाद, पन्त, निराला और महादेवी) में होती है। इनके काव्य में **वेदना की प्रधानता** है। काव्य के अतिरिक्त इनकी बहुत-सी **श्रेष्ठ गद्य-रचनाएँ** भी हैं। इन्होंने प्रयाग में 'साहित्यकार संसद' की स्थापना करके साहित्यकारों का मार्गदर्शन भी किया। **'चाँद'** पत्रिका का सम्पादन करके इन्होंने नारी को अपनी स्वतन्त्रता और अधिकारों के प्रति सजग किया है।

महादेवी वर्मा जी के जीवन पर महात्मा गाँधी का तथा कला-साहित्य साधना पर कवीन्द्र रवीन्द्र का प्रभाव पड़ा। इनका हृदय अत्यन्त करुणापूर्ण, संवेदनायुक्त एवं भावुक था। इसलिए इनके साहित्य में भी वेदना की गहरी टीस है।

रचनाएँ—महादेवी जी का प्रमुख कृतित्व इस प्रकार है

1. **नीहार**—यह इनका प्रथम प्रकाशित काव्य-संग्रह है।
2. **रश्मि**—इसमें आत्मा-परमात्मा विषयक आध्यात्मिक गीत हैं।
3. **नीरजा**—इस संग्रह के गीतों में इनकी जीवन-दृष्टि का विकसित रूप दृष्टिगोचर होता है।
4. **सान्ध्यगीत**—इसमें इनके शृंगारपरक गीतों को संकलित किया गया है।
5. **दीपशिखा**—इसमें इनके रहस्य-भावना-प्रधान गीतों का संग्रह है।
6. **यामा**—यह महादेवी जी के भाव-प्रधान गीतों का संग्रह है।

इसके अतिरिक्त 'सन्धिनी', 'आधुनिक कवि' तथा 'सप्तपर्णा' इनके अन्य काव्य-संग्रह हैं। 'अतीत के चलचित्र', 'स्मृति की रेखाएँ', 'शृंखला की कड़ियाँ' इनकी महत्त्वपूर्ण गद्य रचनाएँ हैं।

साहित्य में स्थान—निष्कर्ष रूप में महादेवी जी वर्तमान हिन्दी-कविता की सर्वश्रेष्ठ गीतकार हैं। इनके भावपक्ष और कलापक्ष दोनों ही अतीव पुष्ट हैं। अपने साहित्यिक व्यक्तित्व एवं अद्वितीय कृतित्व के आधार पर, हिन्दी साहित्याकाश में महादेवी जी का गरिमामय पद ध्रुव तारे की भाँति अटल है।

(4) रामधारी सिंह 'दिनकर'

(2009, 10, 11,12, 14, 15, 16, 17, 18)

जीवन-परिचय—श्री रामधारी सिंह 'दिनकर' का जन्म **30 सितम्बर, 1908 ई० (संवत् 1965 वि०)** को **जिला मुँगेर (बिहार)** के **सिमरिया** नामक ग्राम में हुआ था। इनके पिता का नाम **श्री रवि सिंह** और माता का नाम **श्रीमती मनरूप देवी** था। इनकी दो वर्ष की अवस्था में ही पिता का देहावसान हो गया; अतः बड़े भाई वसन्त सिंह और माता की छत्रछाया में ही ये बड़े हुए। इनकी आरम्भिक शिक्षा गाँव की पाठशाला में ही हुई। अपने विद्यार्थी जीवन से ही इन्हें आर्थिक कष्ट झेलने पड़े। विद्यालय के लिए घर से पैदल दस मील रोज आना-जाना इनकी विवशता थी। इन्होंने मैट्रिक (हाईस्कूल) की परीक्षा मोकामा घाट स्थित रेलवे हाईस्कूल से उत्तीर्ण की और हिन्दी में सर्वाधिक अंक प्राप्त करके 'भूदेव' स्वर्णपदक जीता। **1932 ई०** में पटना से इन्होंने बी०ए० की परीक्षा उत्तीर्ण की। ग्रामीण परम्पराओं के कारण दिनकर जी का विवाह किशोरावस्था में ही हो गया। अपने पारिवारिक दायित्वों के प्रति दिनकर जी जीवन भर सचेत रहे और इसी कारण इन्हें कई प्रकार की नौकरी करनी पड़ी। सन् **1932 ई०** में बी० ए० करने के बाद ये एक नये स्कूल में अध्यापक बने। सन् **1934 ई०** में इस पद को छोड़कर सीतामढ़ी में सब-रजिस्ट्रार बने। सन् **1950 ई०** में बिहार सरकार ने इन्हें मुजफ्फरपुर के स्नातकोत्तर महाविद्यालय में हिन्दी-विभागाध्यक्ष के पद पर नियुक्त किया। सन् **1952 ई०** से सन् **1963 ई०** तक ये राज्यसभा के सदस्य मनोनीत किये गये। इन्हें केन्द्रीय सरकार की हिन्दी-समिति का परामर्शदाता भी बनाया गया। सन् **1964 ई०** में ये भागलपुर विश्वविद्यालय के कुलपति बने। दिनकर जी को कवि-रूप में पर्याप्त सम्मान मिला। **'पद्मभूषण'** की उपाधि, **'साहित्य अकादमी'** पुरस्कार, **द्विवेदी पदक, डी०लिट्०** की मानद उपाधि, **राज्यसभा की सदस्यता** आदि इनके कृतित्व की राष्ट्र द्वारा स्वीकृति के प्रमाण हैं। **सन् 1972 ई०** में इन्हें 'उर्वशी' के लिए **'ज्ञानपीठ पुरस्कार'** से भी सम्मानित किया गया। इनका स्वर्गवास **24 अप्रैल, 1974 ई० (संवत् 2031 वि०)** को मद्रास (चेन्नई) में हुआ।

साहित्यिक सेवाएँ—दिनकर जी की सबसे प्रमुख विशेषता उनकी परिवर्तनकारी सोच रही है। उनकी कविता का उद्भव छायावाद युग में हुआ और वह प्रगतिवाद, प्रयोगवाद, नयी कविता आदि के युगों से होकर गुजरी। इस दीर्घकाल में जो आरम्भ से अन्त तक उनके काव्य में रही, वह है उनका राष्ट्रीय स्वर। 'दिनकर' जी राष्ट्रीय भावनाओं के ओजस्वी गायक रहे हैं। इन्होंने देशानुराग की भावना से ओत-प्रोत, पीड़ितों के प्रति सहानुभूति की भावना से परिपूर्ण तथा क्रान्ति की भावना जगाने वाली रचनाएँ लिखी हैं। ये लोक के प्रति निष्ठावान, सामाजिक दायित्व के प्रति सजग तथा जनसाधारण के प्रति समर्पित कवि रहे हैं।

कृतियाँ—दिनकर जी का साहित्य विपुल है, जिसमें काव्य के अतिरिक्त विविध-विषयक गद्य-रचनाएँ भी हैं। इनकी प्रमुख **काव्य-रचनाएँ**—

1. रेणुका, 2. हुंकार, 3. कुरुक्षेत्र तथा 4. उर्वशी हैं।

इनके अतिरिक्त दिनकर जी के अन्य **काव्यग्रन्थ** निम्नलिखित हैं—

5. खण्डकाव्य—रश्मिरथी, 6. कविता-संग्रह—(i) रसवन्ती, (ii) द्वन्द्वगीत, (iii) सामधेनी, (iv) बापू, (v) इतिहास के आँसू, (vi) धूप और धुआँ, (vii) नीम के पत्ते, (viii) नीलकुसुम, (ix) चक्रवाल, (x) कविश्री, (xi) सीपी और शंख, (xii) परशुराम की प्रतीक्षा, (xiii) स्मृति-तिलक, (xiv) हारे को हरिनाम आदि, 7. बाल-साहित्य—धूप-छाँह, मिर्च का मजा, सूरज का ब्याह।

साहित्य में स्थान—दिनकर जी की सबसे बड़ी विशेषता है, उनका समय के साथ निरन्तर गतिशील रहना। यह उनके क्रान्तिकारी व्यक्तित्व और ज्वलन्त प्रतिभा का परिचायक है। फलतः गुप्त जी के बाद ये ही राष्ट्रकवि पद के सच्चे अधिकारी बने और इन्हें **'युग-चरण', 'राष्ट्रीय-चेतना का वैतालिक'** और **'जन-जागरण का अग्रदूत'** जैसे विशेषणों से विभूषित किया गया। ये हिन्दी के गौरव हैं, जिन्हें पाकर सचमुच हिन्दी कविता धन्य हुई। ❑

Sdc Study Subscribe

6 'कथा भारती' पर आधारित प्रश्न

प्रश्न-परिचय— सामान्य हिन्दी के **खण्ड 'क'** का **छठा प्रश्न** पाठ्य-पुस्तक **'कथा भारती'** में संकलित विभिन्न कहानियों पर आधारित होगा। इसके अन्तर्गत **दो विकल्पात्मक प्रश्न** पूछे जाएँगे। इस प्रश्न के लिए कुल **4 अंक** निर्धारित हैं। शब्द-सीमा अधिकतम 80 शब्द होगी।

परीक्षार्थी ध्यान दें— **कथा** भारती से पूछे जाने वाले प्रश्न में पुस्तक में संकलित **दो** कहानियों के नाम देकर उनमें से किसी **एक** का **उद्देश्य** लिखने को कहा जाएगा तथा इसके विकल्प में दिये गये प्रश्न में **दो** कहानियों के नाम देकर किसी **एक** का **सारांश** लिखने को कहा जाएगा।

प्रश्न— निम्नलिखित में से किसी एक कहानी के आधार पर लेखक का उद्देश्य स्पष्ट कीजिए—

(1) पंचलाइट **(2) लाटी**
(3) बहादुर **(4) ध्रुवयात्रा**

(1) पंचलाइट

(2010, 11, 12, 13, 14, 15, 16, 17, 18)

फणीश्वरनाथ 'रेणु' जी हिन्दी-जगत् के सुप्रसिद्ध आंचलिक कथाकार हैं। अनेक जन-आन्दोलनों से वे निकट से जुड़े रहे, इस कारण ग्रामीण अंचलों से उनका निकट का परिचय है। उन्होंने अपने पात्रों की कल्पना किसी कॉफी हाउस में बैठकर नहीं की अपितु वे स्वयं अपने पात्रों के बीच रहे हैं। बिहार के अंचलों के सजीव चित्र इनकी कथाओं के अलंकार हैं। 'पंचलाइट' भी बिहार के आंचलिक परिवेश की कहानी है। शीर्षक कथा का केन्द्रबिन्दु है। शीर्षक को पढ़कर ही पाठक कहानी को पढ़ने के लिए उत्सुक हो जाता है।

इस कहानी के द्वारा 'रेणु' जी ने ग्रामीण अंचल का वास्तविक चित्र खींचा है। गोधन के द्वारा पेट्रोमैक्स जला देने पर उसकी सभी गलतियाँ माफ कर दी जाती हैं; उस पर लगे सारे प्रतिबन्ध हट जाते हैं तथा उसे मनोनुकूल आचरण की छूट भी मिल जाती है। इससे स्पष्ट होता है कि आवश्यकता बड़े-से-बड़े रूढ़िगत संस्कार और परम्परा को व्यर्थ साबित कर देती है। कथानक संक्षिप्त रोचक, सरल, मनोवैज्ञानिक और यथार्थवादी है। इसी केन्द्रीय भाव के आधार पर कहानी के एक महत्त्वपूर्ण उद्देश्य को स्पष्ट किया गया है।

इस प्रकार 'पंचलाइट' जलाने की समस्या और उसके समाधान के माध्यम से कहानीकार ने ग्रामीण मनोविज्ञान का सजीव चित्र उपस्थित कर दिया है। ग्रामवासी जाति के आधार पर किस प्रकार टोलियों में विभक्त हो जाते हैं और आपस में ईर्ष्या-द्वेष युक्त भावों से भरे रहते हैं, इसका बड़ा ही सजीव चित्रण इस कहानी में हुआ है। रेणु जी ने यह भी दर्शाया है कि भौतिक विकास के इस आधुनिक युग में भी भारतीय गाँव और कुछ जातियाँ कितने अधिक पिछड़े हुए हैं। कहानी के माध्यम से 'रेणु' जी ने अप्रत्यक्ष रूप से ग्राम-सुधार की प्रेरणा भी दी है।

(2) लाटी

(2012, 14, 15, 16, 17, 18)

शिवानी हिन्दी की एक प्रसिद्ध महिला कथाकार रही हैं। इनकी कहानियों में नारी के विभिन्न रूपों का सुन्दर चित्रण हुआ है। सामाजिक रूढ़ियों और आडम्बरों पर ये शालीन व्यंग्य करती हैं।

'लाटी' कहानी एक घटना-प्रधान कहानी है। इस कहानी में कप्तान जोशी का वर्णन है, जो अपनी बीमार पत्नी 'बानो' से अत्यधिक प्रेम करते हैं। टी०बी० की मरीज होने के कारण जब उनकी पत्नी जिन्दगी से निराश हो जाती है तो वह नदी में कूदकर आत्महत्या करने का प्रयास करती है तथा बाद में लाटी बनकर कप्तान से मिलती है परन्तु बोल नहीं पाती। इस कहानी का उद्देश्य मध्यम वर्गीय समाज में पति के बिना अकेली रहने वाली पत्नी के जीवन की त्रासदी को दिखाना है। इसके साथ ही लेखिका अपने पाठक को महिला द्वारा ही महिला के शोषण तथा आज के समाज की वास्तविकता से भी अवगत कराना चाहती है। इस कहानी में प्रारम्भ से अन्त तक पाठक के हृदय को बाँध लेने का गुण विद्यमान है।

(3) बहादुर

(2009, 11, 12, 13, 14, 15, 16, 17, 18)

आधुनिक कथा-जगत् में प्रेमचन्द की कहानी-कला को अक्षुण्ण रखने वाले कलाकारों में अमरकान्त अग्रणी हैं। इनकी कहानियों में मध्यम-वर्ग तथा निम्न-वर्ग की पारिवारिक परिस्थितियों का सजीव, आदर्श तथा यथार्थवादी चित्रण मिलता है। इनकी 'बहादुर' कहानी; मध्यमवर्गीय परिवार में नौकरी करने वाले बहादुर नाम के पहाड़ी लड़के पर आधारित एक रोचक, सुगठित, संक्षिप्त तथा समस्यामूलक कहानी है। इसमें बताया गया है कि मात्र पूँजीपति ही श्रम का शोषण नहीं करते, वरन् सामान्य मध्यम-वर्ग भी इस कुकृत्य में पीछे नहीं है। इस कहानी का उद्देश्य समाज में उत्पन्न वर्ग-संघर्ष को मानवीय सहानुभूति द्वारा समाप्त करने का सन्देश देना है। शोषितों के प्रति मानवता एवं प्रेम का व्यवहार, ऊँच-नीच के भेद के कारण दिलों में पड़ी दरार को भर देता है। बहादुर भी मानवीय स्नेह एवं संवेदनाओं का भूखा है। मालिक द्वारा पीटे जाने और प्रतिक्रिया स्वरूप उसके द्वारा घर छोड़ दिये जाने पर परिवार के सभी लोगों को पश्चात्ताप का अनुभव होता है। वे स्वयं को दोषी महसूस करते हैं। धनी और निर्धन का वर्ग-भेद मानवीय भावनाएँ ही कम कर सकती हैं। लेखक का मुख्य उद्देश्य दोनों के हृदयों का परिवर्तन है और सबके प्रति सहानुभूतिपूर्ण व्यवहार बनाये रखने का सन्देश देना है।

(4) ध्रुवयात्रा

(2013, 14, 15, 16, 18)

जैनेन्द्र कुमार महान् कथाकार हैं। ये व्यक्तिवादी दृष्टि से पात्रों का मनोविश्लेषण करने में कुशल हैं। प्रेमचन्द की परम्परा के अग्रगामी लेखक होते हुए भी इन्होंने हिन्दी कथा-साहित्य को नवीन शिल्प प्रदान किया। 'ध्रुवयात्रा' जैनेन्द्र कुमार की सामाजिक, मनोविश्लेषणात्मक, यथार्थवादी रचना है। कहानी- कला के कतिपय प्रमुख तत्त्वों के आधार पर इस कहानी की समीक्षा निम्नवत् है—

1. **शीर्षक**—कहानी का शीर्षक आकर्षक और जिज्ञासापूर्ण है। सार्थकता तथा सरलता इस शीर्षक की विशेषता है। कहानी का शीर्षक अपने में कहानी के सम्पूर्ण भाव को समेटे हुए है तथा प्रारम्भ से अन्त तक कहानी इसी ध्रुवयात्रा पर ही टिकी है। कहानी का प्रारम्भ नायक के ध्रुवयात्रा से आगमन पर होता है और कहानी का समापन भी ध्रुवयात्रा के प्रारम्भ के पूर्व ही नायक के समापन के साथ होता है। अत: कहानी का शीर्षक स्वयं में पूर्ण और समीचीन है।
2. **कथानक**—श्रेष्ठ कथाकार के रूप में स्थापित जैनेन्द्र कुमार जी ने अपनी कहानियों को कहानी-कला की दृष्टि से आधुनिक रूप प्रदान किया है। ये अपनी कहानियों में मानवीय गुणों; यथा—प्रेम, सत्य तथा करुणा; को आदर्श रूप में स्थापित करते हैं।

इस कहानी की कथावस्तु का आरम्भ राजा रिपुदमन की ध्रुवयात्रा से वापस लौटने से प्रारम्भ होता है। कथानक का विकास रिपुदमन और आचार्य मारुति के वार्तालाप, तत्पश्चात् रिपुदमन और उसकी अविवाहिता प्रेमिका उर्मिला के वार्तालाप और उर्मिला तथा आचार्य मारुति के मध्य हुए वार्तालाप से होता है। कहानी के मध्य में ही यह स्पष्ट होता है कि उर्मिला ही मारुति की पुत्री है। कहानी का अन्त और चरमोत्कर्ष राजा रिपुदमन द्वारा आत्मघात किये जाने से होता है।

प्रस्तुत कहानी में कहानीकार ने एक सुसंस्कारित युवती के उत्कृष्ट प्रेम की पराकाष्ठा को दर्शाया है तथा प्रेम को नारी से बिलकुल अलग और सर्वोच्च स्थान पर प्रतिष्ठित किया है। कहानी का प्रत्येक पात्र कर्तव्य के प्रति निष्ठा एवं नैतिकता के प्रति पूर्णरूपेण सतर्क दिखाई पड़ता है और जिसकी पूर्ण परिणति के लिए वह अपना जीवन अर्पण करने से भी नहीं डरता। कहानी मनोवैज्ञानिकता के साथ-साथ दार्शनिकता से भी ओत-प्रोत है और संवेदनाप्रधान होने के कारण पाठक के अन्तस्तल पर अपनी अमिट छाप छोड़ती हैं। निष्कर्ष रूप में कहा जा सकता है कि ध्रुवयात्रा एक अत्युत्कृष्ट कहानी है।

3. **उद्देश्य**—प्रस्तुत कहानी में कहानीकार जैनेन्द्र जी ने बताया है कि प्रेम एक पवित्र बन्धन है और विवाह एक सामाजिक बन्धन। प्रेम में पवित्रता होती है और विवाह में स्वार्थता। प्रेम की भावना व्यक्ति को उसके लक्ष्य तक पहुँचने में मदद करती है। उर्मिला कहती है, **''हाँ, स्त्री रो रही है, प्रेमिका प्रसन्न है। स्त्री की मत सुनना, मैं भी पुरुष की नहीं सुनूँगी। दोनों जने प्रेम की सुनेंगे। प्रेम जो अपने सिवा किसी दया को, किसी कुछ को नहीं जानता।''**

निष्कर्ष रूप में कह सकते हैं कि प्रेम को ही सर्वोच्च दर्शाना इस कहानी का मुख्य उद्देश्य है, जिसमें कहानीकार को पूर्ण सफलता मिली है।

अथवा

प्रश्न— निम्नलिखित में से किसी एक कहानी का सारांश अपने शब्दों में लिखिए—

(1) ध्रुवयात्रा (2) पंचलाइट
(3) बहादुर (4) लाटी

(1) ध्रुवयात्रा

(2012, 13, 14, 16, 17, 18)

'ध्रुवयात्रा' हिन्दी के सुप्रसिद्ध कहानीकार जैनेन्द्र कुमार द्वारा रचित कहानी है। जैनेन्द्र जी मुंशी प्रेमचन्द की परम्परा के अग्रणी कहानीकार हैं। मनोवैज्ञानिक कहानियाँ लिखकर इन्होंने हिन्दी कहानी-कला के क्षेत्र में एक नवीन अध्याय को जोड़ा है। प्रस्तुत कहानी में इन्होंने मानवीय संवेदना को मनोवैज्ञानिक तथा दार्शनिक दृष्टिकोण में समन्वित करके एक नवीन धारा को जन्म दिया और कहानी 'ध्रुवयात्रा' की रचना की। इस कहानी का सारांश निम्नवत् है—

''राजा रिपुदमन बहादुर उत्तरी ध्रुव को जीतकर अर्थात् उत्तरी ध्रुव की यात्रा करके यूरोप के नगरों से बधाइयाँ लेते हुए भारत आ रहे हैं'' इस खबर को सभी समाचार-पत्रों ने मुखपृष्ठ पर मोटे अक्षरों में प्रकाशित किया।

उर्मिला, जो राजा रिपुदमन की प्रेमिका है और जिसने उनसे विवाह किये बिना उनके बच्चे को जन्म दिया है, ने भी इस समाचार को पढ़ा। उसने यह भी पढ़ा कि वे अब बम्बई पहुँच चुके हैं, जहाँ उनके स्वागत की तैयारियाँ जोर-शोर से की जा रही हैं। ..... उन्हें अपने सम्बन्ध में इस प्रकार के प्रदर्शनों में तनिक भी उल्लास नहीं है। ..... इसलिए वे बम्बई में न ठहरकर प्रात: होने के पूर्व ही दिल्ली पहुँच गये। ..... उनके चाहने वाले उन्हें अवकाश नहीं दे रहे हैं, ऐसा लगता है कि वे आराम के लिए कुछ दिन के लिए अन्यत्र जाएँगे।

राजा रिपुदमन को अपने से ही शिकायत है। उन्हें नींद नहीं आती है। वे अपने किये पर पश्चात्ताप कर रहे हैं। जब उर्मिला ने उनसे शादी के लिए कहा था तो उन्होंने परिवारीजनों के डर से मना कर दिया था। उनकी वही भूल आज उन्हें पीड़ा प्रदान कर रही है। वह उसके विषय में बहुत चिन्तित हैं।

दिल्ली में आकर वे आचार्य मारुति से मिलते हैं, जिनके बारे में उन्होंने यूरोप में भी बहुत सुन रखा था। आचार्य मारुति तरह-तरह की चिकित्सकीय जाँच के परिणामों को ठीक बताते हुए उन्हें विवाह करने की सलाह देते हैं। लेकिन रिपुदमन स्वयं को विवाह के अयोग्य बताते हुए इसे बन्धन में बँधना कहते हैं। आचार्य मारुति उन्हें प्रेम-बन्धन में बँधने की सलाह देते हैं और कहते हैं कि 'प्रेम का इनकार स्वयं से इनकार है।'

अगले दिन राजा रिपुदमन उर्मिला से मिलते हैं और अपने बच्चे का नामकरण करते हैं। वे उर्मिला से समाज के विपरीत अपने द्वारा किये गये व्यवहार के लिए क्षमा माँगते हैं और अपने व उर्मिला के सम्बन्धों को एक परिणति देना चाहते हैं। लेकिन उर्मिला मना करती है और उनसे सतत आगे बढ़ते रहने के लिए कहती है। वह पुत्र की ओर दिखाती हुई कहती है कि तुम मेरे ऋण से उऋण हो और मेरी ओर से आगामी गति के लिए मुक्त हो।

रिपुदमन उर्मिला को आचार्य मारुति के विषय में बताता है। वह उसे ढोंगी, महत्त्व का शत्रु और साधारणता का अनुचर बताती है। वह कहती है कि तुम्हारे लिए स्त्रियों की कमी नहीं है, लेकिन मैं तुम्हारी प्रेमिका हूँ और तुम्हें सिद्धि तक पहुँचाना चाहती हूँ, जो कि मृत्यु के भी पार है।

रिपुदमन आचार्य मारुति से मिलता है तथा उसे बताता है कि वह उर्मिला के साथ विवाह करके साथ में रहने के लिए तैयार था, लेकिन उसने मुझे ध्रुवयात्रा के लिए प्रेरित किया और कुछ मेरी स्वयं की भी इच्छा थी। अब वह मुझे सिद्धि तक जाने के लिए प्रेरित कर रही है। आचार्य मारुति स्वीकार करते हैं कि उर्मिला उनकी ही पुत्री है। वे उसे विवाह के लिए समझाएँगे।

जब उर्मिला आचार्य के बुलवाने पर उनके पास जाती है तो वे उससे विवाह के लिए कहते हैं। वह कहती है कि शास्त्र से स्त्री को नहीं जाना जा सकता उसे तो सिर्फ प्रेम से जाना जा सकता है। वे उसे रिपुदमन से विवाह के लिए समझाते हैं, लेकिन वह नहीं मानती। वह स्पष्ट कहती है कि मुक्ति का पथ अकेले का है। अन्त में आचार्य उर्मिला के ऊपर इस रहस्य को प्रकट कर देते हैं कि वे ही उसके पिता हैं। 'इस अभागिन को भूल जाइएगा' यह कहती हुई वह उनके पास से चली जाती है।

रिपुदमन के पूछने पर उर्मिला बताती है कि वह आचार्य से मिल चुकी है। रिपुदमन उसके कहने पर दक्षिणी ध्रुव के शटलैण्ड द्वीप के लिए जहाज तय करते हैं। अब उर्मिला उनको रोकना चाहती है, लेकिन वे नहीं रुकते। वे चले जाते हैं।

रिपुदमन की ध्रुव पर जाने की खबर पूरी दुनिया को ज्ञात हो जाती है। उर्मिला को भी अखबारों के माध्यम से सारी खबर ज्ञात होती रहती है और वह इन्हीं कल्पनाओं में डूबी रहती है।

तीसरे दिन के अखबार में उर्मिला राजा रिपुदमन की आत्महत्या की खबर का एक-एक अंश पूरे ध्यान से पढ़ती है। अखबार वालों ने एक पत्र भी छापा था, जिसमें रिपुदमन ने स्वीकार किया था कि उनकी यह यात्रा नितान्त व्यक्तिगत थी, जिसे सार्वजनिक किया गया। मैं किसी से मिले आदेश और उसे दिये गये अपने वचन को पूरा नहीं कर पा रहा हूँ, इसलिए होशो हवाश में अपना काम-तमाम कर रहा हूँ। भगवान मेरे प्रिय के अर्थ मेरी आत्मा की रक्षा करे।''

यहीं पर कहानी समाप्त हो जाती है।

(2) पंचलाइट

(2009, 10, 11, 12, 13, 14, 15, 16, 17, 18)

'पंचलाइट' रेणु जी की आंचलिक कहानी है। कहानी में बिहार के एक पिछड़े गाँव के परिवेश का सुन्दर चित्रण प्रस्तुत किया गया है।

महतो टोली में अशिक्षित लोग हैं। उन्होंने रामनवमी के मेले से पेट्रोमैक्स खरीदा, जिसे वे 'पंचलैट' कहते हैं। 'पंचलाइट' को ये सीधे-सादे लोग सम्मान की चीज समझते हैं। पंचलाइट को देखने के लिए टोली के सभी बालक, औरतें और मर्द इकट्ठे हो जाते हैं। सरदार अपनी पत्नी को आदेश देता है कि शुभ कार्य को करने से पहले वह पूजा-पाठ का प्रबन्ध कर ले। सभी उत्साहित हैं, परन्तु समस्या उठती है कि 'पंचलैट' जलाएगा कौन ? सीधे-सादे लोग पेट्रोमैक्स को जलाना भी नहीं जानते।

इस टोली में गोधन नाम का एक युवक है। वह गाँव की मुनरी नामक एक युवती से प्रेम करता है। मुनरी की माँ ने पंचों से गोधन की शिकायत की थी कि वह उसके घर के सामने से सिनेमा का गाना गाकर निकलता है। इस कारण पंचों ने उसे जाति से निकाल रखा है। मुनरी को पता है कि गोधन पंचलाइट जला सकता है। वह चतुराई से यह बात पंचों तक पहुँचा देती है। पंच गोधन को पुन: जाति में ले लेते हैं। वह 'पंचलाइट' को जला देता है। मुनरी की माँ गुलरी काकी प्रसन्न होकर गोधन को शाम के भोजन का निमन्त्रण देती है। पंच भी अति उत्साहित होकर गोधन को कह देते हैं—**''तुम्हारा सात खून माफ। खूब गाओ सलीमा का गाना।''** पंचलाइट की रोशनी में लोग भजन-कीर्तन करते हैं तथा उत्सव मनाते हैं।

कहानी का कथानक सजीव है। सीधे-सादे अनपढ़ लोगों की संवेदनाओं को वाणी देने में रेणु जी समर्थ रहे हैं। इस कहानी में आंचलिक जीवन की सजीव झाँकी प्रस्तुत की गयी है।

(3) बहादुर

(2010, 11, 14, 15, 16, 17,18)

अमरकान्त जी द्वारा लिखी कहानी 'बहादुर', एक मध्यमवर्गीय परिवार में नौकर के साथ परिवारजनों द्वारा किये गये अत्यधिक कटु व्यवहार की कहानी है। लेखक ने स्वयं को कहानी का पात्र बनाते हुए कहानी की आत्म-कथात्मक रूप में रचना की है।

अपने से सम्पन्न रिश्तेदारों के घर नौकर द्वारा जुटाई सुविधा एवं शान को देखकर लेखक की पत्नी निर्मला स्वयं भी एक नौकर रखना चाहती है। बहादुर नेपाल का 12-13 साल का लड़का है, जो अपनी माँ के दुर्व्यवहार से तंग आकर घर छोड़कर शहर चला आता है और निर्मला के परिवार में नौकर रख लिया जाता है। निर्मला और उसका परिवार बहादुर के प्रति पहले तो अच्छा व्यवहार करते हैं, परन्तु धीरे-धीरे कठोरता बरतने लगते हैं। वह घर का सारा कार्य करता है, इसके बावजूद उसके साथ गाली-गलौज से मारपीट तक की नौबत आ जाती है। झूठी चोरी का इल्जाम लगाकर उसे अपमानित किया जाता है और पीटा जाता है। अन्तत: बहादुर घर छोड़कर चला जाता है। अब परिवार के सभी सदस्य उसे ढूँढ़ते हैं; क्योंकि उसके कारण सब आराम के आदी हो चुके हैं।

बहादुर की उपयोगिता देखकर सभी अब अपना घरेलू कार्य करने से घबराते हैं, बहादुर के घर छोड़ जाने पर वे सभी पश्चात्ताप करते हैं तथा अच्छा व्यवहार करने की सोचते हैं। परन्तु अब पछताये होत क्या, जब चिड़िया चुग गयी खेत।

बहादुर में सहनशीलता और स्वाभिमान की भावना कूट-कूटकर भरी हुई है। उसके इसी चरित्र के कारण यह कहानी हमें प्रिय है।

(4) लाटी

(2012, 13, 15, 16, 18)

प्रसिद्ध उपन्यासकार एवं कथा-लेखिका शिवानी द्वारा कृत 'लाटी' कहानी एक घटना प्रधान कहानी है। इस कहानी में कप्तान जोशी का वर्णन है, जो अपनी बीमार पत्नी 'बानो' से अत्यधिक प्रेम करते हैं। टी०बी० की मरीज होने के कारण जब उनकी पत्नी जिन्दगी से निराश हो जाती है तो वह नदी में कूदकर आत्महत्या करने का प्रयास करती है तथा बाद में लाटी बनकर कप्तान से मिलती है परन्तु बोल नहीं पाती। इस कहानी का सारांश अग्रलिखित है—

कप्तान जोशी गोठिया टी०बी० सैनेटोरियम के तीन नम्बर के बँगले में दो गुना किराया देकर अपनी रोगिणी पत्नी 'बानो' के साथ रहता था। 'बानो' से अत्यधिक प्रेम के कारण वह उसको देख सहज भाव से मुस्करा देता तथा उसे प्रसन्न करने की पूरी कोशिश करता। बँगले के बरामदे में पत्नी के पलँग के पास वह दिन भर कुर्सी डाले बैठा रहता। कभी अपने हाथों से टेम्प्रेचर चार्ट भरता और कभी समय देख-देखकर दवाइयाँ देता। पास के बँगले के मरीज बड़ी तृष्णा और चाव से इनकी कबूतर-सी जोड़ी देखते। ऐसी घातक बीमारी पर भी बड़े यत्न और स्नेह से कप्तान अपनी पत्नी की सेवा करता था। विवाह के दो वर्ष बाद ही 'बानो' को भयंकर तपेदिक हो गयी। कप्तान दिन-रात सेवा करता तथा उसे बेहद प्यार करता। माता-पिता के पत्र आते कि यह भयंकर बीमारी है, तुम बचकर रहो। माँ ने रो-रोकर पत्र लिखा कि मेरे दस-बीस बेटे नहीं हैं, तुम अकेले हो। कप्तान पर इन बातों का कोई असर नहीं होता। उसने 'बानो' की सेवा-सुश्रूषा में कोई कमी नहीं रखी।

'बानो' से विवाह के ठीक तीसरे दिन कप्तान को बसरा जाना पड़ा। बानो को छोड़कर जाना उसके लिए असहनीय था। उसने बानो से पहली मुलाकात में ही उसका नाम पूछा। जब उसने अपना नाम बानो बताया तो कप्तान ने मजाक में कहा कि यह तो मुसलमानी नाम है। जब बानो की आँखें छलक उठीं तो कप्तान बोला मैं तो तुम्हें छेड़ रहा था—कितना प्यारा नाम है? अभी बानो केवल सोलह वर्ष की थी। कप्तान दो वर्ष बाद वापस आता है। इस बीच बानो ने सात सात ननदों के ताने सुने, भतीजों के कपड़े धोये, ससुर के होज बिने, पहाड़-सी नुकीली छतों पर पाँच-पाँच सेर उड़द पीस कर बड़ियाँ डालीं। उससे कहा गया कि तेरे पति को जापानियों ने कैद कर लिया है, अब वह कभी नहीं लौटेगा। सास और चचिया सास के व्यंग्य बाण उसे व्याकुल कर देते। वह घुलती गयी और एक दिन क्षय रोग से पीड़ित होकर उसने चारपाई पकड़ ली।

दो साल बाद कप्तान आया और आकर बानो को देखने चल दिया तो घर वालों के चेहरे लटक गये। एक प्राइवेट वार्ड के बरामदे में लेटी बानो को देखकर कप्तान के होश उड़ गये। दो वर्ष में बानो घिसकर और भी बच्ची बन गयी थी। कप्तान को देखकर उसकी आँखों से आँसू टपकने लगे।

बानो की नाजुक हालत देखकर अन्तत: डॉक्टर ने कप्तान को नोटिस दे दिया कि कमरा खाली करके मरीज को घर ले जाइए। कप्तान ने बानो से कहा घर नहीं, दूसरी जगह चलेंगे। सुबह उठा तो कप्तान ने देखा कि बानो पलँग पर नहीं थी। दूसरे दिन नदी के घाट पर बानो की साड़ी मिली तो वह समझ गया कि उसने आत्महत्या करने का प्रयास किया है।

कप्तान का एक साल में ही विवाह हो जाता है। दो बेटे और एक बेटी उसकी दूसरी पत्नी प्रभा ने उसे दिये। कप्तान अब मेजर हो गया। पन्द्रह-सोलह साल बाद कप्तान प्रभा के साथ नैनीताल घूमने आया। प्रभा की जिद पर वह सड़क की ही चाय की दुकान पर उसके साथ चाय पीने बैठ गया। वहीं पर वैष्णवी साध्वियों के झुण्ड के साथ उसे बानो मिलती है, जो कि अब जीभ कट जाने के कारण बोल नहीं पाती और उसकी याददाश्त भी जाती रही है। प्रभा उसकी सुन्दरता पर मुग्ध थी। वैष्णवियों के ही बातचीत से कप्तान को यह निश्चित हो जाता है कि लाटी ही बानो है। उसका प्रेम अभी भी बानो के प्रति समाप्त नहीं हुआ था। लेकिन अब वह जीवन की दौड़ में बहुत आगे बढ़ चुका था। वह सोच ही रहा था कि प्रभा ने चलने के लिए कह दिया, वह उठ खड़ा हुआ। उसे अनुभव हुआ कि कुछ ही पलों में वह बूढ़ा और खोखला हो चुका है। यहीं पर कथा का समापन हो जाता है। ❑

7

'स्वपठित नाटक' पर आधारित प्रश्न

प्रश्न-परिचय— सामान्य हिन्दी के **खण्ड 'क'** के **सातवें प्रश्न** के अन्तर्गत 'स्वपठित नाटक' (आपके जनपद में निर्धारित) पर आधारित **दो विकल्पात्मक प्रश्न** पूछे जाएँगे, जिनमें से किसी एक प्रश्न का उत्तर आपको देना होगा। इस प्रश्न के लिए कुल **4 अंक** निर्धारित हैं। शब्द-सीमा अधिकतम 80 शब्द होगी।

परीक्षार्थी ध्यान दें— 'स्वपठित नाटक' से पूछे जाने वाले प्रश्न कथानक के सारांश अथवा विविध घटनाएँ तथा चरित्र-चित्रण से सम्बन्धित और एक-दूसरे के विकल्प के रूप में पूछे जाएँगे।

आन का मान

वाराणसी, चन्दौली, लखनऊ, इटावा, बरेली, फर्रुखाबाद, एटा, शाहजहाँपुर, उन्नाव, हमीरपुर आदि जनपदों के लिए। नवसृजित जनपदों के विद्यार्थी अपने जनपद में निर्धारित नाटक के सम्बन्ध में अपने विषय-अध्यापक से जानकारी प्राप्त कर लें।

प्रश्न 1. 'आन का मान' नाटक के किसी अंक (द्वितीय) का सारांश लिखिए। (2009, 10, 15, 17, 18)

या **'आन का मान' के कथानक की मार्मिकता पर प्रकाश डालिए।**

या **'आन का मान' नाटक के पहले अंक की कथावस्तु पर प्रकाश डालिए।** (2010, 11, 13, 14, 15, 16, 17)

या **'आन का मान' नाटक के आधार पर प्रथम अंक का सारांश लिखिए।** (2018)

या **'आन का मान' नाटक के आधार पर 'अजीतसिंह' का चरित्रांकन कीजिए।** (2017, 18)

या **'आन का मान' नाटक की कथावस्तु (सारांश) संक्षेप में लिखिए।** (2009, 10, 11, 12, 14, 16, 17, 18)

या **'आन का मान' नाटक के तीसरे अंक की कथावस्तु पर प्रकाश डालिए।** (2015, 16, 18)

उत्तर—

प्रथम अंक

श्री हरिकृष्ण 'प्रेमी' द्वारा रचित 'आन का मान' नाटक का आरम्भ रेगिस्तान के एक मैदान से हुआ है। यह काल भारत में औरंगजेब की सत्ता का है। इस समय जोधपुर में महाराजा जसवन्त सिंह का राज्य था। वीर दुर्गादास उन्हीं के कर्त्तव्यनिष्ठ सेवक हैं जो कि महाराजा की मृत्यु के उपरान्त उनके अवयस्क पुत्र अजीत के संरक्षक बनते हैं। नाटक का कथानक दुर्गादास के चारों ओर घूमता है। अकबर द्वितीय के पुत्र बुलन्द अख्तर और पुत्री सफीयतुन्निसा हैं। दोनों भाई-बहन औरंगजेब की राष्ट्र-विरोधी नीतियों का विरोध करते हैं। उनकी बातों से यह भी आभास होता है कि अकबर द्वितीय ने औरंगजेब के अत्याचारों के विरोध में वीर दुर्गादास से मित्रता कर ली थी। दुर्गादास ने अकबर द्वितीय को बादशाह घोषित कर दिया था, परन्तु औरंगजेब की एक चालवश उसे ईरान भाग जाना पड़ा।

सफीयत और बुलन्द दुर्गादास के पास ही रह जाते हैं। अजीतसिंह युवक होकर जोधपुर का शासन सँभाल लेता है। अजीतसिंह सफीयत से प्रेम करता है। सफीयत जानती है कि हिन्दू युवक और मुसलमान युवती का विवाह कठिन होगा। दुर्गादास भी अजीत को राजपूत धर्म की मर्यादा का ध्यान दिलाता है—**''मान रखना राजपूत की आन होती है और इस आन का मान रखना उसके जीवन का व्रत होता है।''**

द्वितीय अंक

इस नाटक के सर्वाधिक मार्मिक स्थलों से सम्बन्धित **दूसरे अंक** की कथा भीम नदी के तट पर स्थित ब्रह्मपुरी से प्रारम्भ होती है। औरंगजेब ने इस नगरी का नाम 'इस्लामपुरी' रख दिया है। औरंगजेब की दो पुत्रियाँ मेहरुन्निसा व जीनतुन्निसा आती हैं। मेहरुन्निसा गीत गाती है। वह औरंगजेब के कुकृत्यों एवं अत्याचारों की निन्दा करती है। उसका मानना है कि औरंगजेब के कार्यों ने हिन्दू और मुसलमानों के बीच दीवार खड़ी की है। जीनतुन्निसा औरंगजेब की निन्दा नहीं करती अपितु अपने पिता की सेवा करना चाहती है। औरंगजेब में क्रोध व निराशा का कारण वह उसका स्नेहविहीन रह जाना बताती है।

तभी औरंगजेब आकर कहता है कि उसने उन दोनों की बातें सुन ली हैं। मेहरुन्निसा द्वारा गिनाये गये अपने अत्याचारों को अपनी भूल मानकर वह पश्चात्ताप करता है। वह अपने बेटों, विशेषकर अकबर (द्वितीय) के प्रति अपनी क्रूरता के लिए दु:खी व खिन्न होता है। सफीयत एवं बुलन्द अख्तर के प्रति वह अपना असीम स्नेह प्रदर्शित करता है।

औरंगजेब अपनी **वसीयत** में अपने पुत्रों को जनता से उदार व्यवहार के लिए तथा अपनी मृत्यु के बाद सादगी से अपना अन्तिम संस्कार करने को कहता है। मेहरुन्निसा औरंगजेब पर व्यंग्य करती है कि वह यह भी लिखवाये कि उसके पुत्र भी उसी के समान क्रूर कार्य करें।

जिस समय वसीयत लिखी जा रही है, तभी ईश्वरदास दुर्गादास को बन्दी बनाकर औरंगजेब के पास लाता है। औरंगजेब क्रोधित होकर दुर्गादास को मारने की धमकी देता है। ईश्वरदास विरोध करता है और तलवार खींच लेता है। अपने बेटे अकबर (द्वितीय) के पुत्र बुलन्द अख्तर एवं सफीयतुन्निसा को पाने के लिए औरंगजेब दुर्गादास से सौदेबाजी करता है, परन्तु दुर्गादास अस्वीकार कर देता है।

तृतीय अंक

नाटक के तीसरे और अन्तिम अंक में अजीतसिंह पुन: सफीयत से जीवन-साथी बनने का निवेदन करता है, परन्तु सफीयत अजीत को लोकहित के लिए स्वहित का त्याग करने का परामर्श देती है। वह कहती है—**''महाराज ! प्रेम केवल भोग की ही माँग नहीं करता, वह त्याग और बलिदान भी चाहता है।''** बुलन्द तथा दुर्गादास के विरोध की अजीत परवाह नहीं करता तथा सफीयत को अपने साथ चलने के लिए कहता है। दुर्गादास पालकी में सफीयत को ले जाना चाहते हैं। अजीत नाराज होकर पालकी को रोककर कहते हैं—**''दुर्गादास जी ! मारवाड़ में आप रहेंगे या मैं रहूँगा ..... ।''** दुर्गादास मातृभूमि को अन्तिम प्रणाम करके चले जाते हैं। नाटक की कथा यहीं समाप्त हो जाती है।

प्रश्न 2. 'आन का मान' नाटक के आधार पर वीर दुर्गादास का चरित्र-चित्रण कीजिए। (2009, 10, 11, 12, 13, 14, 15, 16, 17, 18)

या **'आन का मान' नाटक के प्रमुख पात्र (नायक) का चरित्र-चित्रण कीजिए।** (2009, 10, 11, 12, 13, 14, 15, 16, 18)

या **''दुर्गादास का चरित्र 'आन का मान' नाटक का प्राणतत्त्व है।'' इस कथन की समीक्षा कीजिए।** (2009)

या **'आन का मान' नाटक के आधार पर उस प्रमुख पात्र का चरित्र-चित्रण कीजिए जिसने आपको सबसे अधिक प्रभावित किया हो।** (2015)

या **'आन का मान' नाटक के प्रमुख पात्र की चारित्रिक विशेषताएँ लिखिए।** (2017)

उत्तर— 'आन का मान' नाटक का नायक 'वीर दुर्गादास राठौर' है। दुर्गादास उच्च मानवीय गुणों से युक्त वीर पुरुष है। इसकी चारित्रिक विशेषताएँ निम्नलिखित हैं—

1. **मानवतावादी दृष्टिकोण**—दुर्गादास एक सच्चा व उच्च श्रेणी का मानव है। वह ऐसे किसी भी सिद्धान्त को आदर्श नहीं मानता, जो मानवता के विरुद्ध हो। वह औरंगजेब के बेटे को मुसलमान होते हुए भी अपना मित्र बनाता है। प्राणों की बाजी लगाकर अकबर की बेटी 'सफीयत' की रक्षा करता है। दुर्गादास कहता है—**''मानवता का मानव के साथ जो नाता है, वह स्वार्थ का नाता नहीं, शहजादा हुजूर।''**
2. **हिन्दू-मुस्लिम समन्वय भाव**—दुर्गादास धार्मिक भेदभाव को नहीं मानता। उसकी दृष्टि में मानवता ही धर्म है। वह कहता है—**''न केवल मुसलमान ही भारत है, न केवल हिन्दू ही। दोनों को यहीं जीना है, यहीं मरना है।''**
3. **आन का पक्का राजपूत**—दुर्गादास अपने वचनों के प्रति निष्ठावान है। उसका मत है—''मान रखना राजपूत की आन होती है और इस आन का मान रखना उसके जीवन का व्रत होता है।''
4. **सत्य, न्याय व देशप्रेमी**—दुर्गादास सत्य का प्रतीक है, न्याय में विश्वास रखता है तथा सच्चा देशभक्त है। वह कहता है—**''राजपूतों की तलवार सदा सत्य, न्याय, स्वाभिमान और स्वदेश की रक्षक होकर रही है।''**
5. **स्वामिभक्त और निश्छल**—वह स्वामिभक्त और निश्छल है। कासिम उसके विषय में कहता है—**''संसार-भर में हाथ में दीपक लेकर घूम आएँगे, तब भी दुर्गादास जैसे शुभचिन्तक, वीर, स्वामिभक्त और निश्छल व्यक्ति न पाएँगे।''**
6. **कर्त्तव्यपरायण**—'दुर्गादास' कर्त्तव्यपरायण व्यक्ति है। वह सदैव अपने कर्त्तव्य को प्राथमिकता देता है। औरंगजेब भी वीर दुर्गादास के कर्त्तव्यपरायण होने की बात ईश्वरदास से कहता है।
7. **सच्चा मित्र**—वीरवर दुर्गादास एक सच्चा मित्र है। औरंगजेब का पुत्र अकबर द्वितीय उसका मित्र है। वह मित्रता का ईमानदारी व सच्चाई के साथ पालन करता है। अकबर द्वितीय के सभी साथी उसका साथ छोड़ देते हैं, परन्तु दुर्गादास सच्चे मित्र की तरह उसका साथ देता है। वह अकबर द्वितीय को औरंगजेब के हाथों से बचाने के लिए उसे ईरान भेज देता है।
8. **सुशासन का समर्थक**—दुर्गादास सदैव अच्छे शासन एवं सुव्यवस्था का समर्थक रहा है। वह कहता है—**''सुशासन को प्रजा; राजा का प्यार और भगवान का वरदान मानती है।''**

इस प्रकार वीर दुर्गादास उच्च आदर्शों वाला मानव है। वह स्वामिभक्त, कर्त्तव्यपरायण, मानवता में विश्वास रखने वाला, सच्चा मित्र तथा हिन्दू-मुस्लिम एकता का समर्थक है। उसके ये सभी मानवीय गुण उसके उदात्त चरित्र के प्रमाण हैं।

प्रश्न 3. सफीयतुन्निसा का चरित्र-चित्रण कीजिए। (2013, 14)

या **'आन का मान' नाटक के आधार पर स्त्री पात्र 'सफीयतुन्निसा' का चरित्रांकन कीजिए।** (2015)

या **'आन का मान' नाटक की नायिका की चारित्रिक विशेषताएँ लिखिए।** (2017, 18)

उत्तर— सफीयतुन्निसा; श्री हरिकृष्ण 'प्रेमी' द्वारा रचित 'आन का मान' नाटक की प्रमुख नारी-पात्र है। वह औरंगजेब के पुत्र अकबर द्वितीय की पुत्री है। सफीयतुन्निसा का चरित्र-चित्रण निम्नलिखित विशेषताओं के आधार पर किया जा सकता है—

1. **अत्यन्त रूपवती**—सफीयतुन्निसा की आयु 17 वर्ष है और वह अत्यन्त आकर्षक रूप वाली है। नाटक के सभी पात्र उसके रूप-सौन्दर्य पर मुग्ध हैं।
2. **वाक्पटु**—सफीयतुन्निसा विभिन्न परिस्थितियों में अपनी वाक्पटुता का प्रभावपूर्ण प्रदर्शन करती है। उसके व्यंग्यपूर्ण कथन तर्क पर आधारित और मर्मभेदी हैं।
3. **संगीत में रुचि**—वह एक उच्चकोटि की संगीत-साधिका है। उसका मधुर स्वर सहज ही दूसरों का हृदय जीत लेता है।
4. **त्याग एवं देश-प्रेम की भावना**—उसमें त्याग एवं बलिदान की भावना कूट-कूटकर भरी हुई है। राष्ट्रहित में वह अपना सब कुछ बलिदान करने के लिए तत्पर दिखाई देती है।
5. **कर्त्तव्यनिष्ठ**—सफीयतुन्निसा देश के प्रति अपनी अनुकरणीय कर्त्तव्यनिष्ठा का परिचय देती है। राष्ट्र के प्रति अपने कर्त्तव्य का निर्वाह करने के उद्देश्य से ही वह अपने भाई के हाथ में राखी बाँधकर उसे युद्धभूमि में प्राणोत्सर्ग के लिए भेज देती है।
6. **शान्तिप्रिय एवं हिंसा-विरोधी**—सफीयतुन्निसा की कामना है कि उसके देश में सर्वत्र शान्ति का वातावरण रहे तथा सभी देशवासी सुखी और समृद्ध हों। किसी भी प्रकार के हिंसापूर्ण कार्यों का वह प्रबल विरोध करती है।
7. **आदर्श प्रेमिका**—सफीयतुन्निसा जोधपुर के युवा शासक अजीतसिंह से सच्चा प्रेम करती है, किन्तु प्रेम की उद्वेगपूर्ण स्थिति में भी वह अपना सन्तुलन बनाये रखती है। वह अजीतसिंह को भी धीरज बँधाती है और उसे लोकहित के लिए आत्महित का त्याग करने की सलाह देती हुई कहती है—**''महाराज ! प्रेम केवल भोग की ही माँग नहीं करता, वह त्याग और बलिदान भी चाहता है।''**

इस प्रकार सफीयतुन्निसा 'आन का मान' नाटक की एक आदर्श नारी-पात्र है। नाटक में उसके चरित्र को विशेष रूप से इस दृष्टि से उभारा गया है कि वह अजीतसिंह से प्रेम करते हुए भी राज्य व अजीतसिंह के कल्याणार्थ अपने विवाह के लिए तैयार नहीं होती।

प्रश्न 4. 'आन का मान' नाटक के आधार पर औरंगजेब का चरित्र-चित्रण कीजिए। (2010, 14, 15, 16, 17)

या **'आन का मान' नाटक के किसी एक पात्र का चरित्र-चित्रण कीजिए।** (2013)

उत्तर—

औरंगजेब का चरित्र-चित्रण

श्री हरिकृष्ण 'प्रेमी' द्वारा रचित 'आन का मान' नाटक में औरंगजेब; वीर दुर्गादास का प्रतिद्वन्द्वी है तथा उसे खलनायक के रूप में चित्रित किया गया है। वह पूरे भारत पर एकछत्र राज्य की कामना करने वाला मुगल सम्राट् है। वह जीवन भर हिन्दुओं और उनके मन्दिरों के अस्तित्व को खत्म करने के लिए कुचक्र रचता रहता है। उसकी प्रमुख चारित्रिक विशेषताएँ निम्नलिखित हैं—

1. **कट्टर धार्मिक और संकीर्ण हृदय व्यक्ति**—औरंगजेब संकीर्ण हृदय वाला कट्टर सुन्नी-मुसलमान है। इस्लाम के आगे सभी धर्म उसकी दृष्टि में हेय हैं। मानव-मात्र के लिए वह इस्लाम को ही श्रेयस्कर मानता है। वह जोधपुर के कुमार अजीतसिंह को भी मुसलमान बनाना चाहता है।
2. **नृशंस और निर्दय**—औरंगजेब सत्ता-प्राप्ति के लिए सब-कुछ करने को तैयार हो जाता है। वह अपने भाई दारा और शुजा की हत्या तक कर देता है तथा अपने पिता शाहजहाँ, पुत्र कामबख्श और पुत्री जेबुन्निसा को बन्दी बना लेता है। उसे किसी पर भी दया नहीं आती।
3. **सादा जीवन**—औरंगजेब विलासिता से दूर रहकर सादा जीवन व्यतीत करने का पक्षपाती है। वह अपना निजी व्यय सरकारी खजाने से नहीं, वरन् टोपी सिलकर और कुरान की आयतें लिखकर उनकी बिक्री से प्राप्त आय से चलाता है।
4. **आत्मग्लानि से युक्त**—औरंगजेब को अपने द्वारा किये गये नृशंस कार्यों के प्रति वृद्धावस्था में ग्लानि होती है। उन्हें सोचकर वह दु:खी होता है। अपनी वसीयत में वह अपने पुत्रों से स्वयं को क्षमा करने की बात लिखता है तथा पुत्र-स्नेह से विह्वल होकर वह अपने पुत्र अकबर द्वितीय को छाती से लगाने के लिए आतुर हो जाता है। मेहरुन्निसा से वह कहता है—''औरंगजेब बातों के जहर से मरने वाला नहीं है।'' मेहर के दण्ड देने की बात सुनकर वह कहता है—**''हाथ थक गये हैं बेटी! सिर काटते-काटते।''**

5. **स्नेहसिक्त पिता**—औरंगजेब जवानी में अपने पिता और सन्तान दोनों के प्रति क्रूरता का व्यवहार करता है, किन्तु बुढ़ापे में आकर उसके हृदय में वात्सल्य का संचार होता है। वह अपने पुत्र अकबर द्वितीय, जो ईरान चला गया है, को हृदय से लगाने के लिए बेचैन है तथा अन्य स्वजनों से मिलने के लिए भी व्याकुल है।

निष्कर्ष रूप में कहा जा सकता है कि औरंगजेब एक कठोर शासक के रूप में चित्रित किया गया है। अन्तिम समय में उसके चरित्र में परिवर्तन आता है और वह दयालु एवं स्नेही व्यक्ति के रूप में बदल जाता है।

कुहासा और किरण

मेरठ, बागपत, आजमगढ़, मुरादाबाद, ज्योतिबा फूले नगर, बलिया, रायबरेली, झाँसी, सुल्तानपुर, लखीमपुर खीरी, बदायूँ, पीलीभीत, गाजियाबाद, गौतमबुद्ध नगर, मऊ आदि जनपदों के लिए। नवसृजित जनपदों के विद्यार्थी अपने जनपद में निर्धारित नाटक के सम्बन्ध में अपने विषय-अध्यापक से जानकारी प्राप्त कर लें।

प्रश्न 1. 'कुहासा और किरण' नाटक की कथावस्तु/कथानक पर प्रकाश डालिए अथवा सारांश लिखिए। (2009, 10, 11, 12, 13, 14, 15, 16, 18)

या **'कुहासा और किरण' नाटक के द्वितीय अंक की कथा का सारांश लिखिए।** (2011, 12, 14, 15, 16, 17)

या **'कुहासा और किरण' नाटक के तृतीय अंक की कथा का सारांश लिखिए।** (2011, 12, 15, 16, 17, 18)

या **'कुहासा और किरण' नाटक के प्रथम अंक की कथावस्तु लिखिए।** (2012, 14, 15, 16, 17, 18)

या **'कुहासा और किरण' नाटक के अन्तिम अंक की कथावस्तु लिखिए।** (2016, 17)

या **'कुहासा और किरण' का कथासार अपने शब्दों में लिखिए।** (2017)

उत्तर—

प्रथम अंक

नाटक के प्रथम अंक का प्रारम्भ नेताजी कृष्ण चैतन्य के निवास पर उनकी षष्ठिपूर्ति के अवसर पर उनकी सेक्रेटरी सुनन्दा और अमूल्य के वार्तालाप से होता है। उन्होंने इस अवसर पर नेताजी को बधाई दी। अन्य लोग भी उन्हें बधाई देने के लिए पहुँचे। अब कृष्ण चैतन्य सामाजिक कार्यकर्त्ता के रूप में ₹ 250 प्रतिमाह राजनीतिक पेंशन पाते हैं। वे प्रत्येक प्रकार के गैर-कानूनी कार्य करते हैं। उन्होंने सुनन्दा नामक लड़की को अपनी व्यक्तिगत सचिव नियुक्त किया और उसके माध्यम से ब्लैकमेल जैसे घृणित कार्य भी किये। कृष्ण चैतन्य के ये कार्य उसकी पत्नी गायत्री को नहीं सुहाते थे। देशभक्त राजेन्द्र के पुत्र अमूल्य के नौकरी की तलाश में कृष्ण चैतन्य के पास आने पर वे उसे विपिन बिहारी के यहाँ सम्पादक की नौकरी दिला देते हैं। अमूल्य के रिश्ते की एक बहन प्रभा; चैतन्य के यहाँ आती-जाती है।

चन्द्रशेखर की विक्षिप्त पत्नी मालती; कृष्ण चैतन्य से राजनीतिक पेंशन दिलाने का आग्रह करने हेतु उसके पास आती है और उसको पहचान लेती है। वहाँ उपस्थित अमूल्य को भी उसकी असली स्थिति का आभास हो जाता है।

द्वितीय अंक

नाटक के द्वितीय अंक का प्रारम्भ विपिन बिहारी के निजी कक्ष से होता है। पाँच-पाँच पत्रिकाओं के मालिक विपिन बिहारी अपने कक्ष में बैठे हैं। अमूल्य के आवेदन-पत्र को पढ़कर विपिन बिहारी उसके पिता के विषय में पूछते हैं। अमूल्य ने **मुलतान षड्यन्त्र केस** के विषय में विपिन बिहारी को बताया। सुनन्दा ने विपिन बिहारी से कहा कि कृष्ण चैतन्य कांग्रेस का मुखौटा लगाये एक देशद्रोही है, किन्तु विपिन बिहारी किसी भी कीमत पर कृष्ण चैतन्य का विरोध करने का साहस नहीं कर पाता। सभी को यह पता चल जाता है कि आज का महान कांग्रेसी नेता 'कृष्ण चैतन्य' देशद्रोही, मित्रघाती मुखबिर कृष्णदेव है। अपनी वास्तविकता को प्रकट हुआ देख कृष्ण चैतन्य 'अमूल्य' को फँसाने का प्रयास करता है। यातनाओं के कारण अमूल्य आत्महत्या करने का भी प्रयास करता है, परन्तु पुलिस उसको बचाकर अस्पताल ले जाती है। कृष्ण चैतन्य की पत्नी गायत्री को यह सब जानकर बहुत ग्लानि हुई। वह अपने पति को सभी बुरे कार्य छोड़ने का परामर्श देती है। गायत्री की कार एक ट्रक के साथ टकरा जाती है और गायत्री का देहान्त हो जाता है। पत्नी की मृत्यु के बाद चैतन्य को आत्मग्लानि होती है। यहीं पर दूसरा अंक समाप्त हो जाता है।

तृतीय अंक

नाटक के तृतीय अंक का आरम्भ कृष्ण चैतन्य के निवास से होता है। कृष्ण चैतन्य अपनी पत्नी गायत्री के चित्र के सम्मुख बैठकर अपनी भूलों के लिए प्रायश्चित्त करते हैं तथा गायत्री के बलिदान की महत्ता को स्वीकार करते हैं। सभी लोग शंकित हैं कि यह मामला गायत्री की मृत्यु का नहीं वरन् आत्महत्या का है। सुनन्दा द्वारा दी गयी सूचना पर वहाँ गुप्तचर विभाग के अधिकारी आ जाते हैं। सुनन्दा अमूल्य का परिचय देते हुए उसे निर्दोष बताती है। कृष्ण चैतन्य भी कागज-चोरी की कहानी को मनगढ़न्त बताते हैं। वे विपिन बिहारी और उमेशचन्द्र के कुकृत्यों का भी पर्दाफाश कर देते हैं। तभी मालती अपनी पेंशन के लिए उनके पास पहुँच जाती है। कृष्ण चैतन्य उससे क्षमा-याचना करते हुए उसे अपना सर्वस्व सौंप देते हैं। विपिन बिहारी और उमेशचन्द्र को बन्दी बना लिया जाता है। गुप्तचर अधिकारी कृष्ण चैतन्य को भी साथ चलने के लिए कहते हैं। वे अपनी पत्नी के चित्र को प्रणाम करके उनके साथ चल देते हैं। अमूल्य को निर्दोष सिद्ध होने पर छोड़ दिया जाता है। उसके—**"बलिदान कभी व्यर्थ नहीं जाता"**—इस कथन के साथ ही नाटक समाप्त हो जाता है।

प्रश्न 2. सुनन्दा के चरित्र की प्रमुख विशेषताओं का संक्षेप में उल्लेख कीजिए। (2009, 11, 12, 13, 14, 16)

या **'कुहासा और किरण' नाटक के प्रमुख नारी-पात्र का चरित्र-चित्रण कीजिए।** (2010, 11, 12, 13, 15, 16)

या **'कुहासा और किरण नाटक के आधार पर 'सुनन्दा' का चरित्रांकन (चरित्र-चित्रण) कीजिए।** (2015, 16, 17, 18)

या **'कुहासा और किरण' की नायिका का चरित्र-चित्रण कीजिए।** (2017)

उत्तर— श्री विष्णु प्रभाकर द्वारा रचित 'कुहासा और किरण' नाटक की सुनन्दा प्रमुख नारी-पात्र है। उसके चरित्र की प्रमुख विशेषताएँ निम्नवत् हैं—

1. **भ्रष्टाचार की विरोधी नवयुवतियों की प्रतिनिधि**—वह उन नवयुवतियों का प्रतिनिधित्व करती है, जो जागरूक एवं सजग हैं। सुनन्दा दूरदर्शी, साहसी, चतुर, विनोदी, कर्त्तव्यपरायणा एवं देश में व्याप्त भ्रष्टाचार को समाप्त करने के लिए संकल्पबद्ध एक सहयोगी तथा कर्मशीला नवयुवती है। उसे अमूल्य से सहानुभूति है तथा वह समाज के पाखण्डियों के रहस्य खोलने में अन्त तक अमूल्य का साथ देती है। मुखौटाधारी भ्रष्टाचारियों से वह कहती है—**"मैं पुकार-पुकार कर कहूँगी कि आप सब भ्रष्ट हैं, नीच हैं, देशद्रोही हैं। आज नहीं तो कल आपको समाज के सामने जवाब देना होगा।"**
2. **जागरूक नवयुवती**—सुनन्दा, कृष्ण चैतन्य की सेक्रेटरी है। उसकी आयु 25 वर्ष है। वह जागरूक नवयुवती है और समाचार-पत्रों के महत्त्व तथा उसमें निहित शक्ति को पहचानती है। उसी के शब्दों में—**"शक्ति-संचालन का सूत्र जितना समाचार-पत्रों के हाथ में है, उतना और किसी के नहीं।"**
3. **वाक्पटु**—सुनन्दा की वाक्पटुता देखते ही बनती है। वह उमेशचन्द्र और कृष्ण चैतन्य की मिली-भगत से परिचित है। उसकी व्यंग्यपूर्ण वाक्पटुता देखिए—**"आकाश जैसे पृथ्वी को आवृत्त किये है, वैसे ही आप उनको (कृष्ण चैतन्य को) आवृत्त किये हैं। आकाश के कारण ही पृथ्वी अन्नपूर्णा होती है।"**
4. **देशद्रोहियों की प्रबल विरोधी**—स्वच्छ मुखौटाधारी देशद्रोहियों का सुनन्दा प्रबल विरोध करती है। वह विपिन बिहारी को भी खरी-खोटी सुनाती है। वह उससे कृष्ण चैतन्य के विषय में स्पष्ट कहती है—**"क्या आपको अब भी पता नहीं कि कृष्ण चैतन्य वह नहीं हैं जो दिखाई देते हैं। वह मुखौटा लगाये एक देशद्रोही हैं।"**
5. **मुखौटाधारियों की विरोधिनी**—अवसर आने पर सुनन्दा मुखौटाधारियों का प्रबल विरोध करती है। यहाँ तक कि वह चाहती है कि

गायत्री द्वारा लिखा गया पत्र पुलिस के हवाले कर दिया जाए, क्योंकि पत्र पुलिस के हाथ में पहुँचने पर कृष्ण चैतन्य की परेशानी बढ़ सकती थी। वह उमेशचन्द्र अग्रवाल को लक्ष्य कर कहती है—**''मुझे घिनौने चेहरों से सख्त नफरत है। गायत्री माँ के बलिदान के पीछे जो उदात्त भावना है, वह जनता तक पहुँचनी ही चाहिए।''**

6. **सहृदया**—सुनन्दा के हृदय में अमूल्य के प्रति सहानुभूति है। वह उसकी विवशता को समझती है। जब अमूल्य झूठी चोरी के जुर्म में गिरफ्तार कर लिया जाता है तब वह अन्याय से जूझने के लिए तत्पर हो जाती है।

इस प्रकार सुनन्दा एक प्रगतिशील, व्यवहारकुशल व स्वदेश-प्रेमी नवयुवती के रूप में पाठकों पर अपनी विशिष्ट छाप छोड़ती है।

प्रश्न 3. 'कुहासा और किरण' नाटक में 'अमूल्य' के चारित्रिक-वैशिष्ट्य पर प्रकाश डालिए। (2009; 10, 11, 12, 13, 14, 16)

या **'कुहासा और किरण' नाटक के प्रमुख पुरुष पात्र/ नायक का चरित्र-चित्रण कीजिए।** (2014, 15, 16, 17, 18)

या **'कुहासा और किरण' नाटक के आधार पर अमूल्य का चरित्रांकन कीजिए।** (2017)

उत्तर— 'अमूल्य' देशभक्त राजेन्द्र का पुत्र है। वह ऐसे नवयुवकों का प्रतिनिधित्व करता है, जो देश के भ्रष्ट वातावरण में भी ईमानदार जीवन जीना चाहते हैं तथा जिन्हें देश से प्रेम है। इसके चरित्र की प्रमुख विशेषताएँ निम्नवत् हैं—

1. **देशभक्त युवक**—अमूल्य का पिता सच्चा देशभक्त था। पिता के गुण अमूल्य में भी विद्यमान हैं। वह देश को व्यक्ति से अधिक मूल्यवान मानता है। उसका कथन है—**''हमारे लिए देश सबसे ऊपर है। देश की स्वतन्त्रता हमने प्राणों की बलि देकर पायी थी, उसे अब कलंकित न होने देंगे।''**
2. **कर्त्तव्यपरायण**—अमूल्य कर्त्तव्यों के प्रति जागरूक है। पिता की असमय मृत्यु के पश्चात् भी परिश्रम के बल पर अपना अध्ययन पूरा करता है। जिस कार्य पर भी लगता है, पूर्ण लगन के साथ उसे पूरा करता है।
3. **सत्यवादी**—अमूल्य सत्यवादी है। कृष्ण चैतन्य जैसे व्यक्ति के सम्पर्क में आकर भी वह अपनी ईमानदारी और सच्चाई का रास्ता नहीं छोड़ता। षड्यन्त्र में फँसने पर भी वह दृढ़ रहता है और कहता है—**''चलिए, कहीं भी चलिए। मुझे जो कहना है, वह कहूँगा।''**
4. **निर्भीक तथा साहसी**—अमूल्य साहसी युवक है। वह पुलिस इंस्पेक्टर से डरता नहीं, विपिन बिहारी को सबके सामने बेईमान कहता है—**''यह षड्यन्त्र है ..... आप देशभक्त की पोशाक पहने देशद्रोही हैं, भेड़िये हैं।''**
5. **आदर्श मार्गदर्शक**—अमूल्य आधुनिक युवकों के लिए एक आदर्श मार्गदर्शक है। वह भ्रष्ट आचरण वाले व्यक्तियों के मुखौटे उतारने के लिए संकल्प लेता है। देश-सेवा के प्रति अमूल्य के शब्दों को देखिए—**''अब आवश्यकता है कि हम देश-सेवा का अर्थ समझें। जो शैतान मुखौटे लगाये शिव बनकर घूम रहे हैं, उनके वे मुखौटे उतारकर उनकी वास्तविकता प्रकट करें।''**
6. **सरल स्वभाव वाला**—अमूल्य सरल स्वभाव वाला स्वामिभक्त युवक है। सुनन्दा उसके सरल स्वभाव को देखकर ही कहती है—**''पिताजी की बात अभी रहने दो। देखा नहीं था तुमने? उनका नाम सुनकर सब चौंक पड़े थे। उनसे पिताजी की बात मत कहना अभी।''**

इस प्रकार 'कुहासा और किरण' नाटक का सबसे अमूल्य चरित्र 'अमूल्य' है। वह नाटक का नायक भी है। भ्रष्टाचार तथा निराशापूर्ण कुहासे को भेदकर कर्त्तव्यनिष्ठा, दृढ़ता, सत्यता, देशभक्ति, निर्भीकता की स्वर्णिम प्रकाश-किरणों से वह समाज को आलोकित करना चाहता है। 'तमसो मा ज्योतिर्गमय' के आदर्श का प्रतीक 'अमूल्य' है।

प्रश्न 4. 'कुहासा और किरण' के आधार पर कृष्ण चैतन्य का चरित्र-चित्रण कीजिए। (2012, 13, 14, 17, 18)

या **'कुहासा और किरण' नाटक के आधार पर कृष्ण चैतन्य की चारित्रिक विशेषताओं पर प्रकाश डालिए।** (2010, 14, 16, 18)

उत्तर— **कृष्ण चैतन्य का चरित्र-चित्रण**

'कुहासा और किरण' नाटक में 'कृष्ण चैतन्य' का चरित्र अवसरवादी, स्वार्थी तथा सभी प्रकार से भ्रष्ट व्यक्ति के रूप में प्रस्तुत किया गया है। वह नाटक का खलनायक है। आज कृष्ण चैतन्य जैसे अनेक नेता अपनी स्वार्थ सिद्धि हेतु; समाज और देश को खोखला करने में लगे हैं। कृष्ण चैतन्य के चरित्र से सम्बद्ध धनात्मक और ऋणात्मक विशिष्टताओं की विवेचना निम्नलिखित है—

1. **अवसरवादी**—कृष्ण चैतन्य पक्का अवसरवादी है। वह पहले अंग्रेजों का दलाल बना रहता है, फिर कांग्रेसी नेता बन जाता है।
2. **मित्रघाती**—वह अपने साथियों की मुखबिरी करके उन्हें पकड़वा देता है। इस प्रकार मित्रघाती होने का भी वह दोषी है, यद्यपि वह इस कलंक को छिपाने की भरसक चेष्टा करता है।
3. **चतुर-चालाक**—कृष्ण चैतन्य चतुर तथा चालाक है। उसका मत है—**''कुछ करने से पहले सौ बार सोच लेना बुद्धिमानी का लक्षण है।''**
4. **भ्रष्टाचार का प्रतीक**—कृष्ण चैतन्य सभी प्रकार के गलत हथकण्डों में माहिर है। वह ब्लैकमेल करता है, रिश्वत लेता है। इसी प्रकार की दूसरी अनेक बुराइयाँ; जैसे—क्रूरता, कठोरता और धनलिप्सा का आधिक्य भी उसमें विद्यमान है।
5. **देशद्रोही**—'मुलतान षड्यन्त्र' की मुखबिरी करके वह देशद्रोही बनता है। इसके उपरान्त भी वह समाज तथा देश के साथ गद्दारी करता ही रहता है।
6. **कृत्रिमता तथा आडम्बर से परिपूर्ण**—कृष्ण चैतन्य का जीवन कृत्रिमता तथा आडम्बर से पूर्ण है। वह मुलतान केस में अंग्रेजों का मुखबिर बनकर देश के साथ गद्दारी करता है, किन्तु देश और समाज की सेवा का ढोंग रचता है, जिससे वह शासन और जनता दोनों की आँखों में धूल झोंकता रहता है।
7. **प्रभावशाली व्यक्तित्व**—कृष्ण चैतन्य का व्यक्तित्व प्रभावशाली है। उसके प्रभावशाली व्यक्तित्व के कारण ही सरकार व प्रशासन पर उसका पर्याप्त प्रभाव है।
8. **दूरदर्शी**—कृष्ण चैतन्य दूरदर्शी व्यक्ति है। अपनी दूरदर्शिता के कारण ही वह अपने वास्तविक नाम 'कृष्णदेव' को बदलकर 'कृष्ण चैतन्य' रख लेता है। विपिन बिहारी के यहाँ अमूल्य की नियुक्ति उसकी दूरदर्शिता का ही परिचायक है।
9. **आत्मपरिष्कार की भावना**—गायत्री का बलिदान कृष्ण चैतन्य में प्रायश्चित्त का भाव उत्पन्न करता है। वह गायत्री के चित्र के सम्मुख पश्चात्ताप करते हुए कहता है—**''मेरी आँखें खोलने के लिए तुमने प्राण दे दिये।''**
10. **कूटनीतिज्ञ**—कृष्ण चैतन्य एक प्रतिभाशाली और कूटनीतिज्ञ पात्र है। यह ठीक है कि वह अपनी प्रतिभा का दुरुपयोग करता है, जिसके कारण उसका चरित्र घृणित हो जाता है, परन्तु यदि उसकी प्रतिभा का सदुपयोग होता तो वह एक श्रेष्ठ पुरुष बन सकता था।

इस प्रकार कृष्ण चैतन्य के चरित्र में अनेकानेक दोष हैं। अन्त में वह अपनी भूलों के लिए प्रायश्चित्त करते हुए कहता है—**''चलिए टमटा साहब, मैंने देश के साथ जो गद्दारी की है, उसकी सजा मुझे मिलनी चाहिए।''** इस प्रकार अन्त में अपने दोषों के परिष्कार के प्रयास से वह पाठकों की सहानुभूति का पात्र बन जाता है।

राजमुकुट

बुलन्दशहर, मथुरा, कानपुर, कानपुर देहात, मिर्जापुर, बस्ती, देवरिया, बाँदा, रामपुर, सिद्धार्थनगर, सोनभद्र आदि जनपदों के लिए। नवसृजित जनपदों के विद्यार्थी अपने जनपद में निर्धारित नाटक के सम्बन्ध में अपने विषय-अध्यापक से जानकारी प्राप्त कर लें।

प्रश्न 1. श्री व्यथित हृदय द्वारा लिखित 'राजमुकुट' नाटक का सारांश लिखिए। (2012, 13, 14, 15, 16, 17)

या **'राजमुकुट' नाटक की कथावस्तु (कथानक) संक्षेप में लिखिए।** (2009, 10, 11, 12, 13, 14, 15, 16, 17, 18)

या **'राजमुकुट' नाटक के द्वितीय अंक का कथा-सार लिखिए।** (2010, 15, 16)

या **'राजमुकुट' नाटक के तृतीय अंक का कथा-सार संक्षेप में लिखिए।** (2009, 12, 13, 14, 16, 17, 18)

या **'राजमुकुट' नाटक के प्रथम अंक की कथा अपने शब्दों में लिखिए।** (2015, 16)

या **'राजमुकुट' नाटक के चतुर्थ अंक की कथा अपने शब्दों में लिखिए।** (2017, 18)

उत्तर—

प्रथम अंक

प्रस्तुत नाटक के प्रथम अंक की कथा मेवाड़ के राणा जगमल के महल से आरम्भ होती है। राणा जगमल एक विलासी और क्रूर शासक है। वह अपनी मर्यादा का निर्वाह करना भूल गया था तथा सुरा-सुन्दरी में डूबा रहता था। ऐसे ही समय में राष्ट्रनायक कृष्णजी चन्दावत, राजसभा में पहुँचते हैं तथा राणा जगमल को उसके नीच कर्मों के लिए भला-बुरा कहते हैं। वे जगमल से 'मेवाड़ का मुकुट' उचित पात्र को सौंपने के लिए आग्रह करते हैं। जगमल उनकी बात स्वीकार कर लेते हैं तथा चन्दावत से योग्य उत्तराधिकारी चुनने के लिए कहते हैं। चन्दावत; राणा जगमल से राजमुकुट लेकर प्रताप के शीश पर रख देते हैं। प्रजा में खुशी की लहर दौड़ जाती है। प्रताप विदेशी शासक से लोहा लेने का प्रण करते हैं तथा देश की स्वतन्त्रता की रक्षा करने का संकल्प लेते हैं। यह संकल्प नाटक की कथा को आगे बढ़ाने में सहायक है।

द्वितीय अंक

प्रताप मेवाड़ के राजा बनते ही अपनी प्रजा के खोये हुए सम्मान की रक्षा करते हैं। वे प्रजा में वीरता का संचार करने के लिए अनेक आयोजन भी करते हैं। ऐसे ही एक आयोजन के अवसर पर जंगली सूअर के आखेट को लेकर प्रताप तथा उनके भाई शक्तिसिंह में विवाद हो जाता है। विवाद बढ़ जाने पर दोनों भाई शस्त्र निकालकर एक-दूसरे से भिड़ जाते हैं। भावी अनिष्ट की आशंका या राजकुल को संकट से बचाने के लिए राजपुरोहित अपनी कटार से अपना ही प्राणान्त कर लेते हैं। प्रताप शक्तिसिंह को देश से निर्वासित कर देते हैं। शक्तिसिंह अपने को अपमानित अनुभव करते हैं तथा अकबर के साथ मिल जाते हैं।

तृतीय अंक

मानसिंह राणा प्रताप से बहुत प्रभावित था। एक बार वह राणा प्रताप से मिलने आया। राणा उसे विधर्मी और पतित समझते थे; क्योंकि मानसिंह की बुआ मुगल सम्राट अकबर की विवाहिता पत्नी थीं। इसलिए राणा ने उससे स्वयं भेंट न करके उसके स्वागतार्थ अपने पुत्र अमरसिंह को नियुक्त किया। मानसिंह ने इसे अपना अपमान समझा और इस अपमान का बदला चुकाने की बात कहकर वहाँ से चला गया तथा दिल्ली के सम्राट अकबर से जा मिला। चतुर अकबर अवसर का लाभ उठाकर महाराणा प्रताप पर आक्रमण कर देता है। हल्दीघाटी के इतिहास-प्रसिद्ध युद्ध में महाराणा प्रताप को बचाने के लिए कृष्णजी चन्दावत, प्रताप के सिर से मुकुट उतारकर स्वयं पहन लेते हैं और युद्धभूमि में देश के लिए अपने प्राणों का बलिदान कर देते हैं। प्रताप बच जाते हैं, परन्तु दो मुगल सैनिक प्रताप का पीछा करते हैं। ऐसे समय पर शक्तिसिंह का भ्रातृ-प्रेम जाग्रत होता है और वे पीछा करके दोनों मुगलों को मार देते हैं। शक्तिसिंह और प्रताप आपस में गले मिलते हैं। इसी समय राणा प्रताप का प्रिय घोड़ा चेतक अपने प्राण त्याग देता है।

चतुर्थ अंक

हल्दीघाटी का युद्ध समाप्त हो जाता है, परन्तु राणा हार नहीं मानते। अकबर प्रताप की देशभक्ति, त्याग और वीरता का लोहा मानते हैं तथा वे महाराणा प्रताप के प्रशंसक बन जाते हैं। एक दिन प्रताप के पास एक संन्यासी आता है। प्रताप संन्यासी का उचित सत्कार न कर पाने के कारण अत्यधिक व्यथित हैं। इसी समय राणा की पुत्री चम्पा घास की बनी रोटी लेकर आती है, जिसे एक वन-बिलाव छीनकर भाग जाता है। चम्पा गिर जाती है और पत्थर से टकराकर उसकी मृत्यु हो जाती है। कुछ समय पश्चात् अकबर संन्यासी वेश में वहाँ आता है और कहता है कि **"आप उस अकबर से तो सन्धि कर सकते हैं जो भारतमाता को अपनी माँ समझता है, जो आपकी भाँति उसकी जय बोलता है।"** इसी समय अकबर राणा को 'भारतमाता का सपूत' बताता है और प्रताप के दर्शन करके अपने को धन्य मानता है। संघर्षरत प्रताप रोगग्रस्त हो जाते हैं। वे शक्तिसिंह तथा अपने सभी साथियों से स्वतन्त्रता-प्राप्ति का वचन लेते हैं। 'भारतमाता की जय' घोष के साथ ही महाराणा का देहान्त हो जाता है।

'राजमुकुट' की यह कथा भारत के स्वर्णिम इतिहास और एक रणबाँकुरे वीर की अमर कहानी है।

प्रश्न 2. 'राजमुकुट' नाटक के प्रमुख पात्र (नायक) महाराणा प्रताप का चरित्र-चित्रण कीजिए। (2009, 10, 11, 12, 13, 14, 17)

या **'राजमुकुट' नाटक के आधार पर प्रतापसिंह का चरित्रांकन कीजिए।** (2015, 16, 18)

या **'राजमुकुट' नाटक के नायक की चरित्रगत विशेषताओं को संक्षेप में लिखिए।** (2017, 18)

उत्तर— 'राजमुकुट' नाटक के नायक महाराणा प्रताप सिंह हैं। नाटक में उनके चरित्र का मूल्यांकन करने वाली राज्याभिषेक से लेकर मृत्यु तक की घटनाएँ हैं। राणा प्रताप की चारित्रिक विशेषताओं को निम्नवत् प्रस्तुत किया जा सकता है—

1. **आदर्श भारतीय नायक**—भारतीय नाट्यशास्त्र में आदर्श नायक के गुणों के अनुरूप महाराणा का चरित्र 'धीरोदात्त नायक' का आदर्श चरित्र है। वे उच्च कुल में उत्पन्न हुए वीर, साहसी तथा संयमी हैं।
2. **दृढ़प्रतिज्ञ तथा कर्त्तव्यनिष्ठ**—महाराणा दृढ़निश्चयी तथा अपने कर्त्तव्य के प्रति निष्ठावान हैं। राजमुकुट धारण करने के अवसर पर उनके शब्द हैं—**"मेरा जयनाद ! मुझे महाराणा बनाकर मेरा जयनाद न बोलो साथियो ! जय बोलो भारत की, मेवाड़ की ! मैं प्रतिज्ञा करता हूँ कि प्राणों में साँस रहते हुए प्रजा-प्रभु की दी हुई इस भेंट को मलिन न करूँगा।"**
3. **स्वतन्त्रता का दीवाना**—प्रताप जीवनपर्यन्त स्वतन्त्रता के लिए संघर्ष करते रहे। सब कुछ खोकर भी वे अकबर के सामने झुकते नहीं। बच्चे भूख से मर जाते हैं, फिर भी वह लौह-पुरुष अडिग रहता है। मृत्यु के समय भी एक ही लगन है, एक ही इच्छा है, एक ही अभिलाषा है : देश की स्वतन्त्रता—**"बन्धुओ! वीरो ! प्रतिज्ञा करो, मुझे वचन दो कि तुम मेरे देश की ..... अपने देश की स्वतन्त्रता के प्रहरी बनोगे।"**
4. **सत्ता-लिप्सा से दूर**—राणा देशभक्त व स्वतन्त्रता के दीवाने हैं, परन्तु वे राजा बनना नहीं चाहते। प्रताप का मत है—**"मेवाड़ का राणा मैं ! नहीं-नहीं कृष्ण-जी आप भूल रहे हैं। मेवाड़ के महाराणा का पद महान है, बहुत महान है।"**
5. **भारतीय संस्कृति, धर्म तथा मान-मर्यादा के रक्षक**—महाराणा भारतीय संस्कृति के पोषक हैं। वे धर्म की रक्षा करना अपना कर्त्तव्य समझते हैं। संन्यासी के रूप में अकबर जब उनके पास पहुँचता है तो वे उसका आदर करते हैं, परन्तु खाने के लिए कुछ भी न दे पाने में असमर्थ होने के कारण उन्हें कष्ट होता है। वे कहते हैं—**"आज कई दिनों से बच्चे घास की रोटियों पर निर्वाह कर रहे थे तो क्या संन्यासी अतिथि को भी घास की ही रोटियाँ खिलाऊँ ?"**

   धर्म के प्रति भी राणा के मन में निष्ठा है। पुरोहित का बलिदान देखकर राणा कहते हैं—**"देशभक्त पुरोहित तुम धन्य हो। तुमने अपने अनुरूप ही अपना बलिदान दिया है। ज्ञान और चेतना से दूर हम अधमों को तुमने प्रकाश दिखाया है .....।"**
6. **पराक्रमी योद्धा**—राणा वीर हैं। हल्दीघाटी का ऐतिहासिक युद्ध उनके शौर्य का साक्षी है। प्रताप अपने सैनिकों से कहते हैं—**"चलो युद्ध का राग गाते हुए हम सब हल्दीघाटी की युद्धभूमि में चलें और रक्तदान से चण्डी माता को प्रसन्न करके उनसे विजय का शुभ आशीर्वाद लें।"**

इस प्रकार राणा का चरित्र अनेक अमूल्य गुणों की खान है। वे आदर्श देशभक्त, त्यागी, साहसी, उदार, वीर, दृढ़निश्चयी तथा उदात्त हैं। वे प्रजा को मित्र मानते हैं। मुगल सम्राट अकबर भी उनकी प्रशंसा करते हुए कहते हैं—**"महाराणा प्रताप भारत के अनमोल रत्न हैं।"**

प्रश्न 3. 'राजमुकुट' नाटक के आधार पर शक्तिसिंह की चारित्रिक विशेषताओं पर प्रकाश डालिए। (2009, 10, 15, 16, 17)

उत्तर— शक्तिसिंह; श्री व्यथित हृदयकृत 'राजमुकुट' नाटक के नायक मेवाड़ के महाराणा प्रताप का छोटा भाई है। महाराणा के इस सुयोग्य अनुज के चरित्र की प्रमुख विशेषताएँ निम्नलिखित हैं—

1. **परम देशभक्त**—शक्तिसिंह देशप्रेम और त्याग की प्रतिमा है। उसके हृदय में अपने भाई के समान देश की दासता, जनता की व्यथा और शासन के अत्याचारों के विरुद्ध आक्रोश है। वह मेवाड़ के घर-घर में जीवन और जागृति का मन्त्र फूँकना चाहता है। वह अपने देश के मंगल के लिए सब-कुछ करने को तत्पर है—**''माता-मही ! तू मेरी भुजाओं में शक्ति दे कि मैं जगमल के सिंहासन को उलट सकूँ।.....मेवाड़ में सुख-शान्ति स्थापित कर सकूँ।''**
2. **राज्य-वैभव के प्रति अनासक्त**—शक्तिसिंह का चरित्र त्याग भाव से परिपूर्ण है। उसे राज्य-वैभव में कोई आसक्ति नहीं है। अहेरिया उत्सव पर वन-शूकर के वध पर महाराणा से तकरार हो जाने पर दोनों में तलवारें खिंच जाती हैं, जिसमें मध्यस्थता करते हुए पुरोहित की हत्या हो जाती है। इस अपराध में उसे राज्य से निर्वासित कर दिया जाता है, जिसे वह सहर्ष स्वीकार कर लेता है।
3. **निर्भीक एवं स्पष्ट वक्ता**—शक्तिसिंह में निर्भीकता और स्पष्ट बात कहने का साहस द्रष्टव्य है। वह अकबर की सेना में सम्मिलित हो जाता है, किन्तु अकबर द्वारा मेवाड़ का सर्वनाश करने का संकल्प लेने पर वह उसकी सहायता करने को तैयार नहीं होता।
4. **भ्रातृ-प्रेमी**—शक्तिसिंह के हृदय में अपने भाई महाराणा के प्रति अनन्य प्रेम है। राणा प्रताप और शक्तिसिंह का युद्धभूमि में सामना होता है। युद्ध में ही राणा के घोड़े चेतक की मृत्यु हो जाती है। राणा उसके शव के निकट चिन्तित भाव से बैठे हुए थे, तभी दो मुगल सैनिकों को महाराणा पर प्रहार करते हुए देखकर शक्तिसिंह एक ही वार में दोनों को मौत के घाट उतार देता है और महाराणा से क्षमायाचना करता है—**''वह आया है मेवाड़ के महाराणा से क्षमायाचना करने, उनकी स्नेहमयी गोद में बैठकर पश्चात्ताप करने और उनकी वीरता की पवित्र गंगा में अपने कलुषित-कल्मषों को धोने।''**
5. **साम्प्रदायिक सद्भावना तथा राष्ट्रीय एकता का पोषक**—शक्तिसिंह यह सोचता है कि अकबर और प्रताप मिलकर ऐसे भारत की रचना कर सकते हैं, जिसमें धर्म और सम्प्रदाय का वैमनस्य नहीं होगा। ऐसा भारत ही अखण्ड राष्ट्र हो सकता है। वह हिन्दू और मुस्लिम सम्प्रदायों को मिल-जुलकर रहने का सन्देश देता है—**''तुम उन्हें विदेशी और विधर्मी समझ रहे हो, क्या वे फिर काबुल, कंधार और ईरान लौट जाएँगे ? ..... वे अब इसी देश में रहेंगे और उसी प्रकार उसी कण्ठ से भारतमाता की जय बोलेंगे।''**
6. **अन्तर्द्वन्द्व से घिरा**—शक्तिसिंह उज्ज्वल चरित्र का व्यक्ति है। वह प्रतिशोध की भावना और देशभक्ति के द्वन्द्व से घिर जाता है, किन्तु अन्त में देशभक्ति की भावना की विजय होती है। तब वह सोचता है—**''प्रतिहिंसा की भावना से उत्तेजित होकर दानव बन जाना ठीक नहीं।''** इन सहज दुर्बलताओं ने तो उसके चरित्र को यथार्थ का स्पर्श देकर निखार दिया है।

प्रश्न 4. 'राजमुकुट' नाटक के आधार पर मुगल सम्राट् अकबर का चरित्र-चित्रण कीजिए। (2014, 15, 16, 18)

उत्तर—

अकबर का चरित्र-चित्रण

श्री व्यथित हृदय द्वारा रचित 'राजमुकुट' नाटक में मुगल सम्राट् अकबर एक प्रमुख पात्र है। वह महाराणा प्रताप का प्रतिद्वन्द्वी है। उसके चरित्र की निम्नलिखित विशेषताएँ दृष्टिगोचर होती हैं—

1. **व्यावहारिक और अवसरवादी व्यक्ति**—अकबर व्यावहारिक और अवसरवादी व्यक्ति है। अपने इसी गुण के कारण वह शक्तिसिंह के हृदय में जगी प्रतिशोध की भावना को तीव्र कर देता है—**''छलिया संसार को छल और प्रपंचों से परास्त करने का पाठ पढ़ो। ..... संसार में भावुकता से काम नहीं चल सकता शक्ति!''**
2. **महत्त्वाकांक्षी**—सम्राट् अकबर बहुत महत्त्वाकांक्षी है। वह मन-ही-मन मेवाड़-विजय का संकल्प करता है—**''मैं अपने जीवन के उस अभाव को पूरा करूँगा, मेवाड़ के गौरवमय भाल को झुकाकर अपने साम्राज्य की प्रभुता बढ़ाऊँगा।''**
3. **मानव-स्वभाव का पारखी**—अकबर बहुत बुद्धिमान है। वह शक्तिसिंह, मानसिंह और राणा प्रताप के चरित्र का सही मूल्यांकन करता है—**''एक प्रताप है, जो मातृभूमि के लिए प्राण हथेली पर लिये फिरता है और एक तुम हो, जो मातृभूमि के सर्वनाश के लिए खाइयाँ खोदते फिरते हो।''**
4. **सद्गुणों का प्रशंसक**—अकबर व्यक्ति के सद्गुणों की प्रशंसा करने से नहीं चूकता, चाहे वे सद्गुण उसके शत्रु में ही क्यों न हों। यह विशेषता उसे महानता प्रदान करती है। वे हृदय से राणा की वीरता और स्वाभिमान की प्रशंसा करता है—**''..... धन्य है मेवाड़ ! और धन्य हैं मेवाड़ की गोद में पलने वाले महाराणा प्रताप ! प्रताप मनुष्य रूप में देवता हैं, मानवता की अखण्ड ज्योति हैं।''**
5. **साम्प्रदायिक सद्भावना का प्रतीक**—अकबर हिन्दू-मुसलमानों को एकता के सूत्र में बाँधना चाहता है। उसके द्वारा स्थापित 'दीन-ए-इलाही' मत इसी साम्प्रदायिक सद्भावना का प्रतीक है। वह मानवीय गुणों का आदर करता है। वह महाराणा की ओर मित्रता का हाथ बढ़ाते हुए कहता है—**''हमारा और आपका मिलन ! यह दो व्यक्तियों का मिलन नहीं महाराणा ! दो धर्म-प्रवाहों का मिलन है, जिससे इस देश की संस्कृति सुदृढ़ तथा पुष्ट होगी।''**
6. **कूटनीतिज्ञ**—अकबर कुशल कूटनीतिज्ञ है। वह प्रत्येक निर्णय कूटनीति से लेता है। उसकी चतुर कूटनीति का एक उदाहरण द्रष्टव्य है—**''प्रताप का भाई शक्तिसिंह स्वयं जादू के जाल में फँसकर माया की तरंगों में डुबकियाँ लगा रहा है। उसी को मेवाड़ के विध्वंस का साधन बनाऊँगा।''**

गरुड़ध्वज

आगरा, गोरखपुर, जौनपुर, फैजाबाद, अम्बेडकर नगर, बिजनौर, फतेहपुर, गोण्डा, सीतापुर, प्रतापगढ़, बहराइच, ललितपुर, फिरोजाबाद, महाराजगंज आदि जनपदों के लिए। नवसृजित जनपदों के विद्यार्थी अपने जनपद में निर्धारित नाटक के सम्बन्ध में अपने विषय-अध्यापक से जानकारी प्राप्त कर लें।

प्रश्न 1. गरुड़ध्वज' नाटक की कथावस्तु (कथानक) को संक्षेप में लिखिए। (2009, 10, 11, 12, 13, 14, 15, 16, 18)

या **'गरुड़ध्वज' नाटक की कथा का सार अपनी भाषा में प्रस्तुत कीजिए।** (2010, 11, 13, 14)

या **'गरुड़ध्वज' नाटक के प्रथम अंक का कथासार अपने शब्दों में लिखिए।** (2012, 13, 16, 17)

या **'गरुड़ध्वज' नाटक के द्वितीय अंक की कथा संक्षेप में लिखिए।** (2009, 13, 14, 15, 16, 17, 18)

या **'गरुड़ध्वज' नाटक के अन्तिम (तृतीय) अंक की घटनाओं का संक्षेप में वर्णन कीजिए।** (2009, 14, 16, 17, 18)

या **'गरुड़ध्वज' नाटक के किसी एक अंक के कथानक पर प्रकाश डालिए।** (2010)

उत्तर—

प्रथम अंक

नाटक के प्रथम अंक में पहली घटना विदिशा में घटित होती है। विक्रममित्र स्वयं को सेनापति सम्बोधित कराते हैं, महाराज नहीं। विक्रममित्र के सफल शासन में प्रजा सुखी है। बौद्धों के पाखण्ड को समाप्त करके ब्राह्मण धर्म की स्थापना की गयी है। सेनापति विक्रममित्र ने वासन्ती नामक एक युवती का उद्धार किया है। उसके पिता वासन्ती को किसी यवन को सौंपना चाहते थे। वासन्ती, एकमोर नामक युवक से प्रेम करती है। इसी समय कवि और योद्धा कालिदास प्रवेश करते

हैं। कालिदास; विक्रममित्र को आजन्म ब्रह्मचारी रहने के कारण 'भीष्म पितामह' कहते हैं। विक्रममित्र इस समय सतासी वर्ष के हैं। इसी समय साकेत के एक यवन-श्रेष्ठी की कन्या कौमुदी का सेनापति देवभूति द्वारा अपहरण करने की सूचना विक्रममित्र को मिलती है। देवभूति कन्या का अपहरण कर उसे काशी ले जाते हैं। विक्रममित्र कालिदास को काशी पर आक्रमण करने की आज्ञा देते हैं।

द्वितीय अंक

नाटक के दूसरे अंक में दो घटनाएँ प्रस्तुत की गयी हैं। प्रथम में तक्षशिला के राजा अन्तिलिक का मन्त्री 'हलोदर' विक्रममित्र से अपने राज्य के दूत के रूप में मिलता है। हलोदर भारतीय संस्कृति में आस्था रखता है तथा सीमा-विवाद को वार्त्ता के द्वारा सुलझाना चाहता है। वार्त्ता सफल रहती है तथा हलोदर विक्रममित्र को अपने राजा की ओर से रत्नजड़ित स्वर्ण गरुड़ध्वज भेंटस्वरूप देता है।

विक्रममित्र के आदेशानुसार कालिदास काशी पर आक्रमण करते हैं तथा अपने ज्ञान और विद्वत्ता से काशी के दरबार में बौद्ध आचार्यों को प्रभावित कर देते हैं। वे कौमुदी का अपहरण करने वाले देवभूति तथा काशी नरेश को बन्दी बनाकर विदिशा ले जाते हैं। नाटक के इसी भाग में वासन्ती काशी विजयी 'कालिदास' का स्वागत उनके गले में पुष्पमाला डालकर करती है।

तृतीय अंक

नाटक के तृतीय तथा अन्तिम अंक की कथा 'अवन्ति' में प्रस्तुत की गयी है। विषमशील के नेतृत्व में अनेक वीरों ने मालवा को शकों से मुक्त कराया। विषमशील के शौर्य के कारण अनेक राजा उसके समर्थक हो जाते हैं। अवन्ति में महाकाल का एक मन्दिर है, इस पर गरुड़ध्वज फहराता रहता है। मन्दिर का पुजारी मलयवती और वासन्ती को बताता है कि युद्ध की सभी योजनाएँ इसी मन्दिर में बनती हैं। इसी समय विषमशील युद्ध जीतकर आते हैं तथा काशिराज अपनी पुत्री वासन्ती का विवाह कालिदास के साथ विक्रममित्र की आज्ञा लेकर कर देते हैं। इसी अंक में विषमशील का राज्याभिषेक होता है तथा कालिदास को मन्त्री-पद पर नियुक्त किया जाता है। राजमाता जैन आचार्यों को क्षमादान देती हैं। कालिदास की मन्त्रणा से विषमशील का नाम उसके पिता महेन्द्रादित्य तथा विक्रममित्र के आधार पर विक्रमादित्य रखा जाता है। विक्रममित्र संन्यासी बन जाते हैं तथा कालिदास अपने राजा विक्रमादित्य के नाम पर उसी दिन से **विक्रम संवत्** का प्रवर्तन करते हैं। नाटक की कथा यहीं समाप्त हो जाती है।

प्रश्न 2. 'गरुड़ध्वज' नाटक के प्रमुख पुरुष पात्र (नायक) विक्रममित्र का चरित्र-चित्रण कीजिए। (2009, 10, 11, 12, 13, 14, 15, 16, 17)

उत्तर—प्रस्तुत नाटक में विषमशील तथा विक्रममित्र दो प्रमुख पात्र हैं। नाटक का नायक विक्रममित्र है। विक्रममित्र नाटक के आरम्भ से अन्त तक की सभी घटनाओं के साथ जुड़ा रहता है। यह कहा जा सकता है कि सारे कथानक का मेरुदण्ड विक्रममित्र है, जिसने सबसे अधिक प्रभावित किया है। **विक्रममित्र** पुष्यमित्र के शुंगवंश का अन्तिम सेनापति है। वह ब्रह्मचारी, सदाचारी, वीर, कुशल राजनीतिज्ञ तथा प्रजावत्सल है। शासन का संचालन कुशलता से करता है। उसके चरित्र की प्रधान विशेषताएँ निम्नलिखित हैं—

1. **सज्जन महापुरुष**—विक्रममित्र सज्जन महापुरुष है। वह स्वयं को 'महाराज' कहलाना पसन्द नहीं करता। लोग उसे सेनापति कहते हैं। नारियों के प्रति सम्मान का भाव सदा उसके मन में रहता है।
2. **अनुशासनप्रिय**—विक्रममित्र अनुशासनप्रिय है। सेनापति के स्थान पर 'महाराज' कहे जाने पर सेवक को डर हो जाता है कि कहीं सेनापति दण्ड न दें।
3. **प्रजा का सेवक**—विक्रममित्र प्रजा को अपनी सन्तान की भाँति स्नेह करता है। वह अत्याचारी नहीं है। उसका मत है—**"सेनापति धर्म और जाति का सबसे बड़ा सेवक है।"**
4. **भागवत् धर्म के रक्षक**—विक्रममित्र भारतवर्ष में मिटती हुई वैदिक संस्कृति तथा ब्राह्मण धर्म का रक्षक है। धर्म और उसकी प्रतिष्ठा के लिए आजन्म संघर्ष करता है। उसका सेवक कालिदास काशी में बौद्धों को निरुत्तर कर देता है।
5. **संगठित राष्ट्रनिर्माता**—उस समय देश छोटे-छोटे राज्यों में बँटा हुआ था। विक्रममित्र ने उन्हें इकट्ठा करने का सफल प्रयास किया। विक्रममित्र का मत है—**"देश का गौरव, इसके सुख और शान्ति की रक्षा मेरा धर्म है।"** वे कालिदास का विवाह काशी के नरेश की पुत्री से कराते हैं। विक्रममित्र के संन्यास के समय तक मगध, साकेत तथा अवन्ति को मिलाकर एक सुदृढ़ राज्य की स्थापना हो चुकी होती है।
6. **निष्काम कर्मवीर**—विक्रममित्र राजा होते हुए भी महाराजा कहलाना पसन्द नहीं करते हैं। स्वयं को प्रजा का सेवक ही मानते हैं। विषमशील के योग्य हो जाने पर उसे शासक बनाकर स्वयं संन्यासी हो जाते हैं। कालिदास उन्हें 'भीष्म पितामह' ठीक ही कहता है।
7. **नीतिप्रिय**—आचार्य विक्रममित्र 'गरुड़ध्वज' नाटक के महत्त्वपूर्ण पात्र हैं। नायक विषमशील की सफलता का एकमात्र कारण सेनापति विक्रममित्र ही हैं। वह नागसेन पुष्कर से कहते हैं—**"तुम जानते हो विक्रममित्र के शासन में अनीति चाहे कितनी छोटी क्यों न हो, छिपी नहीं रह सकती है।"**

इस प्रकार विक्रममित्र न्यायप्रिय, प्रजावत्सल, वीर शासक और निष्काम महामानव हैं।

प्रश्न 3. 'गरुड़ध्वज' नाटक के आधार पर (नायिका) वासन्ती का चरित्र-चित्रण कीजिए। (2009, 10, 12, 13, 14, 16, 18)

या **'गरुड़ध्वज' के प्रमुख नारी-पात्र (नायिका) के विषय में अपने विचार प्रकट कीजिए।** (2012, 15)

उत्तर— श्री लक्ष्मीनारायण मिश्र द्वारा रचित 'गरुड़ध्वज' नाटक की नायिका वासन्ती है। वासन्ती काशिराज की इकलौती पुत्री है। वासन्ती के चरित्र में निम्नलिखित प्रमुख विशेषताएँ पायी जाती हैं—

1. **अनुपम सुन्दरी**—वासन्ती रूप और गुण दोनों में अद्वितीय है। उसका सौन्दर्य कालिदास जैसे संयमी पुरुष को भी आकर्षित कर लेता है। उसके सौन्दर्य की प्रशंसा करते हुए कुमार विषमशील कालिदास से कहते हैं—**"और तुम्हारी वासन्ती-रूप और गुण का इतना अद्भुत मिश्रण .....पता नहीं, कितने कुण्ड इस पर्वतीय स्रोत के सामने फीके पड़ेंगे।"**
2. **उदारता और प्रेमभावना से परिपूर्ण**—वासन्ती विश्व के समस्त प्राणियों के लिए अपने हृदय में उदार भावना रखती है। उसमें बड़े-छोटे, अपने-पराये सभी के लिए एक समान प्रेमभाव ही भरा हुआ है।
3. **धार्मिक संकीर्णता से त्रस्त**—पिता के बौद्ध धर्मानुयायी होने के कारण कोई भी राज-परिवार वासन्ती से विवाह-सम्बन्ध के लिए तैयार नहीं होता। अन्त में उसके पिता काशिराज उसे 50 वर्षीय यवन राजकुमार को सौंप देने का निश्चय कर लेते हैं, जबकि वासन्ती उससे विवाह नहीं करना चाहती। इस प्रकार वासन्ती तत्कालीन समाज में व्याप्त धार्मिक संकीर्णता से त्रस्त है।
4. **आत्मग्लानि से विक्षुब्ध**—वासन्ती आत्मग्लानि से विक्षुब्ध होकर अपने जीवन से छुटकारा पाना चाहती है और अपनी जीवन-लीला समाप्त करने का प्रयास करती है, परन्तु विक्रममित्र उसको ऐसा करने से रोक लेते हैं। वह असहाय होकर कहती है—**"वह महापुरुष कौन होगा, जो स्वेच्छा से आग के साथ विनोद करेगा।"**
5. **स्वाभिमानिनी**—वासन्ती धार्मिक संकीर्णता से त्रस्त होने पर भी अपना स्वाभिमान नहीं खोती। वह किसी ऐसे राजकुमार से विवाह-बन्धन में नहीं बँधना चाहती, जो विक्रममित्र के दबाव के कारण ऐसा करने के लिए विवश हो।
6. **सहृदया और विनोदप्रिय**—वासन्ती विक्षुब्ध और निराश होने पर भी सहृदया और विनोदप्रिय दृष्टिगोचर होती है। वह कालिदास के काव्य-रस का पूरा आनन्द लेती है।
7. **आदर्श प्रेमिका**—वासन्ती एक सहृदया, सुन्दर, आदर्श प्रेमिका है। वह निष्कलंक और पवित्र है।

सार रूप में यह कहा जा सकता है कि वासन्ती एक आदर्श नारी-पात्र है और इस नाटक की नायिका है।

प्रश्न 4. 'गरुड़ध्वज' के आधार पर कालिदास का चरित्र-चित्रण कीजिए। (2010, 11, 12, 13, 16, 17, 18)

उत्तर— 'गरुड़ध्वज' के पुरुष पात्रों में कालिदास भी एक प्रमुख पात्र हैं। विक्रममित्र शुंगवंशीय शासक एवं वीर सेनापति के रूप में प्रमुख पात्र है। इसके पश्चात् द्वितीय एवं तृतीय क्रम पर क्रमशः विषमशील, कालिदास का ही नाम आता है। विषमशील और विक्रममित्र तो प्रबुद्ध, शासक, सेनापति और शूरवीर पुरुष है। कालिदास शकारि विक्रमादित्य के दरबारी रत्नों में एक मुख्य रत्न माने जाते थे। ये एक विद्वान् कवि थे और वीर सैनिक भी थे; अतः वे विषमशील तथा विक्रममित्र से भी कुछ अधिक गुणों के स्वामी हैं। उनके चरित्र की कुछ प्रमुख विशेषताएँ निम्नवत् हैं—

1. **वीरता**—कालिदास एक वीर पुरुष हैं। जब देवभूति कौमुदी का अपहरण कर लेता है तो कालिदास उसे काशी में घेर कर पकड़ लाते हैं। उसकी इसी वीरता पर मुग्ध होकर काशी की राजकुमारी वासन्ती उससे प्रेम करने लगती है और काशिराज भी प्रसन्न होकर उन दोनों के विवाह की स्वीकृति देते हैं।
2. **सच्चा-मित्र**—कालीदास विषमशील का मित्र है, इसीलिए विषमशील के साथ उसका हास-परिहास चलता रहता है। वह मलयवती के बारे में राजकुमार विषमशील से चुटकी लेता हुआ कहता है—
   ''किस तरह भूल गये विदिशा के प्रासाद का वह उपवन.....। घूम-घामकर मलयवती को आँखों से पी जाना चाहते थे।''
3. **सच्चा-प्रेमी और कवि**—वह वासन्ती का सच्चा प्रेमी है। वासन्ती को भी उस पर पूरा विश्वास है। वह वासन्ती के बारे में कहता है—''मैं सब कुछ जानता हूँ। उन्होंने तो उस यवन को देखा भी नहीं, फिर उसकी पवित्रता में शंका उत्पन्न करना तो पार्वती की पवित्रता में शंका उत्पन्न करना होगा। इसके अतिरिक्त वे एक महाकवि भी हैं। जैसा कि मलयवती ने कहा भी है—क्यों महाकवि को यह क्या सूझी है ?''

निष्कर्ष रूप में कहा जा सकता है कि कालिदास 'गरुड़ध्वज' के अन्य पुरुष-पात्रों की अपेक्षा विलक्षण हैं। वे वीर, सच्चे मित्र, सच्चे प्रेमी और महाकवि भी हैं। वे शासक भी हैं और शासित भी; वे वीर हैं, न्यायप्रिय हैं, कठोर हैं और कोमल भी हैं।

प्रश्न 5. 'गरुड़ध्वज' के आधार पर विषमशील का चरित्र-चित्रण कीजिए। (2010, 15, 18)

या **'गरुड़ध्वज' नाटक के आधार पर विषमशील के शौर्य एवं त्याग का वर्णन कीजिए।** (2013)

उत्तर— कुमार विषमशील 'गरुड़ध्वज' नाटक के दूसरे प्रमुख पात्र हैं। ये धीरोदात्त स्वभाव के उच्च कुलीन श्रेष्ठ पुरुष हैं। आदि से अन्त तक इनके चरित्र का क्रमिक विकास होता है। इनके चरित्र में निम्नलिखित विशेषताएँ पायी जाती हैं—

1. **उदार और गुणग्राही**—कुमार विषमशील मालवा के गर्दभिल्लवंशी महाराज महेन्द्रादित्य के वीर सुपुत्र हैं अपने महान् कुल के अनुरूप ही उनमें उदारता और गुणग्राहकता विद्यमान है। कवि कालिदास की विद्वत्ता, वीरता आदि गुणों को देखकर वे उनके गुणों पर ऐसे मुग्ध हो जाते हैं कि उनसे अलग होना नहीं चाहते।
2. **महान वीर**—वीरता कुमार विषमशील के चरित्र की महती विशेषता है। अपनी वीरता के कारण वह शकारि क्षत्रियों को पराजित कर भारी विजय प्राप्त करते हैं। कुमार की वीरता और योग्यता को देखकर ही आचार्य विक्रममित्र उसे सम्राट् बनाकर निश्चिन्त हो जाते हैं।
3. **सच्चा-प्रेमी**—कुमार विषमशील एक भावुक व्यक्ति है। उसके हृदय में दया, प्रेम, उत्साह आदि मानवीय भावनाएँ पर्याप्त मात्रा में पायी जाती हैं। स्वभाव से धीर होते हुए भी कुमारी मलयवती को देखकर उनके हृदय में प्रेम अंकुरित हो जाता है।
4. **विवेकशील**—कुमार विषमशील एक विवेकशील व्यक्ति के रूप में चित्रित हुए हैं। वे भली-भाँति समझते हैं कि किस प्रकार, किस अवसर पर अथवा किस स्थान पर किस प्रकार की बात करनी चाहिए। कालिदास के साथ उसका व्यवहार मित्रों जैसा होता है, हास और उपहास भी होता है किन्तु सेनापति विक्रममित्र के सामने वे सर्वत्र संयत और शिष्ट-आचरण करते हैं। वासन्ती और मलयवती के साथ बातें करते समय वह भावुक हो उठते हैं। किसी काम को करने से पूर्व वह विवेक से काम लेते हैं तथा उसके दूरगामी परिणाम को सोचते हैं। जब सेनापति विक्रममित्र साकेत और पाटलिपुत्र का राज्य भी उसे सौंपते हैं तो वह बहुत विवेक से काम लेता है। अवन्ति में रहकर सुदूर पूर्व के इन राज्यों की व्यवस्था करना कोई सरल काम नहीं था। इसलिए वह विक्रममित्र से निवेदन करता है—
   ''आचार्य! अभी कुछ दिन आप महात्मा काशिराज के साथ उधर की व्यवस्था करें। मैं चाहता हूँ, मेरे सिर पर किसी मनस्वी ब्राह्मण की छाया रहे और फिर मैं यह देख भी नहीं सकता कि जिस क्षेत्र में प्रायः डेढ़ सौ वर्षों से आपके पूर्व-पुरुषों का अनुशासन रहा, वह अकस्मात् इस प्रकार मिट जाये।''
5. **कृतज्ञता** कुमार विषमशील दूसरे के किये हुए उपकार से अपने को उपकृत मानता है। कालिदास के उपकार के प्रति कृतज्ञता प्रकट करते हुए वह कहता है—''और वह राज्य मुझे देकर मुझ पर, मेरे मन, मेरे प्राण पर राज्य करने की युक्ति निकाल ली। ..... मैं सुखी हूँ ..... तुम्हारा अधिकार मेरे मन पर सदैव बना रहे..... महाकाल से मेरी यही कामना है।''

निष्कर्ष रूप में कहा जा सकता है कि कुमार विषमशील का चरित्र एक सुयोग्य राजकुमार का चरित्र है। वह स्वभाव से उदार, गुणग्राही तथा भावुक व्यक्ति है। उसमें वीरता, विवेकशीलता आदि कुछ ऐसे गुण हैं जिनके आधार पर उसमें एक श्रेष्ठ शासक बनने की क्षमता सिद्ध हो जाती है। उसका चरित्र स्वाभाविक तथा मानवीय है।

सूत-पुत्र

इलाहाबाद, सहारनपुर, अलीगढ़, मुजफ्फरनगर, शामली, गाजीपुर, मैनपुरी, जालौन, हरदोई, बाराबंकी आदि जनपदों के लिए। नवसृजित जनपदों के विद्यार्थी अपने जनपद में निर्धारित नाटक के सम्बन्ध में अपने विषय-अध्यापक से जानकारी प्राप्त कर लें।

प्रश्न 1 'सूत-पुत्र' नाटक का कथासार अपने शब्दों में लिखिए। (2009, 10, 11, 12, 13, 14, 15, 16, 17, 18)

या **'सूत-पुत्र' नाटक के प्रथम अंक की कथा को संक्षेप में लिखिए।** (2009, 11, 12, 13, 15)

या **'सूत-पुत्र' नाटक के द्वितीय अंक की कथा का सार संक्षेप में लिखिए।** (2012, 16, 17)

या **द्रौपदी स्वयंवर की कथा 'सूत-पुत्र' नाटक के आधार पर लिखिए।** (2013, 14, 18)

या **'सूत-पुत्र' नाटक के तृतीय अंक की कथा का सार अपने शब्दों में लिखिए।** (2011, 13, 14, 15)

या **'सूत-पुत्र' नाटक के आधार पर कर्ण-इन्द्र अथवा कर्ण-कुन्ती संवाद का सारांश लिखिए।** (2010)

या **'सूत-पुत्र' के चतुर्थ अंक के आधार पर सिद्ध कीजिए कि कर्ण युद्धवीर होने के साथ-साथ दानवीर भी था।** (2010, 14)

या **द्रौपदी स्वयंवर का कथानक अपने शब्दों में लिखिए।** (2013, 17)

या **'सूत-पुत्र' नाटक के अन्तिम अंक का कथानक अपने शब्दों में लिखिए।** (2016, 17)

या **'सूत-पुत्र' नाटक के चतुर्थ अंक का सार (कथावस्तु) लिखिए।** (2017, 18)

उत्तर—

प्रथम अंक

'सूत-पुत्र' नाटक के लेखक डॉ० गंगासहाय 'प्रेमी' हैं। इस नाटक के कथासूत्र 'महाभारत' से लिये गये हैं। परशुराम जी उत्तराखण्ड के आश्रम में निवास करते हैं। उन्होंने प्रतिज्ञा की है कि वह केवल ब्राह्मणों को ही धनुष चलाना सिखाएँगे, क्षत्रियों को नहीं। 'कर्ण' एक महान धनुर्धर बनना चाहते हैं; अतः वे स्वयं को ब्राह्मण बताकर परशुराम जी से धनुर्विद्या सीखने लगते हैं। एक दिन परशुराम जी,

कर्ण की जंघा पर सिर रखकर सोये हुए होते हैं कि एक कीड़ा कर्ण की जंघा को काटने लगता है, जिससे रक्तस्राव होने लगता है। रक्तस्राव होने पर भी 'कर्ण' दर्द सहन कर जाते हैं। कर्ण की सहनशीलता को देखकर परशुराम जी को उसके क्षत्रिय होने का सन्देह होता है। पूछने पर कर्ण उन्हें सत्य बता देते हैं। परशुराम जी क्रुद्ध होकर शाप देते हैं कि अन्त समय में तुम हमारे द्वारा सिखाई गयी विद्या को भूल जाओगे। कर्ण वहाँ से वापस चले आते हैं।

द्वितीय अंक

डॉ० गंगासहाय 'प्रेमी' कृत 'सूत-पुत्र' नाटक के **दूसरे अंक** में द्रौपदी के विवाह का वर्णन है। पांचाल-नरेश द्रुपद के यहाँ उनकी अद्वितीया सुन्दरी पुत्री द्रौपदी का स्वयंवर होता है। स्वयंवर की शर्त के अनुसार प्रतिभागी को खौलते तेल की कड़ाही में ऊपर लगे खम्बे पर एक घूमते चक्र में बँधी मछली की आँख बेधनी थी। अनेक राजकुमार इसमें असफल हो जाते हैं। कर्ण अपनी विद्या पर विश्वास कर मछली की आँख बेधने आते हैं, लेकिन अपने परिचय से राजा द्रुपद को सन्तुष्ट नहीं कर पाते और द्रुपद उन्हें प्रतियोगिता के लिए अयोग्य घोषित कर देते हैं। कर्ण के तेजस्वी रूप तथा विद्रोही स्वभाव से प्रसन्न होकर दुर्योधन ने उसे अपने राज्य के एक प्रदेश 'अंग देश' का राजा घोषित कर दिया, किन्तु ऐसा करके भी दुर्योधन, कर्ण की पात्रता और क्षत्रियत्व को पुष्ट नहीं कर पाता। यह प्रसंग ही दुर्योधन व कर्ण की मित्रता का सेतु सिद्ध होता है। ब्राह्मण वेश में अर्जुन और भीम सभा-मण्डप में आते हैं। अर्जुन मछली की आँख बेधकर द्रौपदी से विवाह कर लेते हैं। अर्जुन तथा भीम को दुर्योधन पहचान लेता है। दुर्योधन द्रौपदी को बलपूर्वक छीनने के लिए कर्ण से कहता है, परन्तु कर्ण इस अनैतिक कार्य के लिए तैयार नहीं होते। दुर्योधन अर्जुन से संघर्ष करता है, परन्तु घायल होकर वापस आ जाता है और कर्ण को बताता है कि ब्राह्मण वेशधारी और कोई नहीं अर्जुन और भीम ही हैं। इस बात में भी कोई सन्देह नहीं रह जाता है कि पाण्डवों को लाक्षागृह में जलाकर मार डालने की उसकी योजना असफल हो गयी है। कर्ण पाण्डवों को बड़ा भाग्यशाली बताता है।

द्वितीय अंक

डॉ० गंगासहाय 'प्रेमी' कृत 'सूत-पुत्र' नाटक के **तीसरे अंक** में कर्ण के तपोस्थान का वर्णन है। कर्ण सूर्य भगवान की उपासना करते हैं। सूर्य भगवान साक्षात् दर्शन देकर उसे कवच तथा कुण्डल देते हैं और उनके जन्म का सारा रहस्य उन्हें बताते हैं। साथ ही आशीर्वाद देते हैं कि जब तक ये कवच-कुण्डल तुम्हारे शरीर पर रहेंगे, तब तक तुम्हारा कोई अनिष्ट नहीं होगा। सूर्य भगवान कर्ण को आगामी भारी संकटों से सचेत करते हैं और कहते हैं कि इन्द्र तुमसे इन कवच और कुण्डल की माँग करेंगे। कर्ण के पिछले जीवन की कथा भी सूर्य भगवान उन्हें बता देते हैं, लेकिन माता का नाम नहीं बताते। कुछ समय बाद इन्द्र; अर्जुन की रक्षा के लिए ब्राह्मण वेश में आकर दानवीर कर्ण से कवच व कुण्डल का दान ले लेते हैं। कर्ण की दानशीलता से प्रसन्न होकर वे उन्हें एक अमोघ शक्ति प्रदान करते हैं, जिसका वार कभी खाली नहीं जाता। इन्द्र कर्ण को यह रहस्य भी बता देते हैं कि कुन्ती से, सूर्य के द्वारा, कुमारी अवस्था में उनका जन्म हुआ है। इस जानकारी के कुछ समय बाद कुन्ती कर्ण के आश्रम में आती है और कर्ण को बताती है कि वे उनके ज्येष्ठ पुत्र हैं। वह कर्ण से रणभूमि में पाण्डवों को न मारने का वंचन चाहती है; परन्तु कर्ण ऐसा करने में अपनी असमर्थता व्यक्त करते हैं। वे कुन्ती को आश्वासन देते हैं कि वे अर्जुन के अतिरिक्त अन्य किसी पाण्डव को नहीं मारेंगे। कुन्ती कर्ण को आशीर्वाद देकर चली जाती है। नाटक का तीसरा अंक यहीं समाप्त हो जाता है।

चतुर्थ अंक

डॉ० गंगासहाय प्रेमी द्वारा रचित 'सूत-पुत्र' नाटक के **चतुर्थ** (अन्तिम) **अंक** में अर्जुन तथा कर्ण के युद्ध का वर्णन है। यह अंक नाटक का सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण और प्रभावित करने वाला अंक है। इसमें नाटक के नायक कर्ण की दानवीरता, बाहुबल और दृढ़प्रतिज्ञता जैसे गुणों का उद्घाटन हुआ है। कर्ण और अर्जुन का युद्ध होता है। कर्ण अपने बाणों के प्रहार से अर्जुन के रथ को युद्ध-क्षेत्र में पीछे हटा देते हैं। कृष्ण कर्ण की प्रशंसा करते हैं, जो अर्जुन को अच्छी नहीं लगती। कृष्ण अर्जुन को बताते हैं कि तुम्हारी पताका पर 'महावीर', रथ के पहियों पर 'शेषनाग' और तीनों लोकों का भार लिये मैं रथ पर स्वयं प्रस्तुत हूँ, फिर भी कर्ण ने रथ को पीछे हटा दिया, निश्चय ही वह प्रशंसा का पात्र है। युद्धस्थल में कर्ण के रथ का पहिया दलदल में फँस जाता है। अर्जुन निहत्थे कर्ण को बाण-वर्षा करके घायल कर देते हैं। कर्ण मर्मान्तक रूप से घायल हो गिर पड़ते हैं और सन्ध्या हो जाने के कारण युद्ध बन्द हो जाता है। श्रीकृष्ण कर्ण की दानवीरता एवं प्रतिज्ञा पालन की प्रशंसा करते हैं। कर्ण की दानवीरता की परीक्षा लेने के लिए श्रीकृष्ण व अर्जुन घायल कर्ण के पास सोने का दान माँगने जाते हैं। कर्ण अपने सोने का दाँत तोड़कर देता है, परन्तु रक्त लगा होने के कारण अशुद्ध बताकर कृष्ण उन्हें लेना स्वीकार नहीं करते। तब रक्त लगे दाँतों की शुद्धि के लिए कर्ण बाण मारकर धरती से जल निकालता है और दाँतों को धोकर ब्राह्मण वेषधारी कृष्ण को दे देता है। अब श्रीकृष्ण और अर्जुन वास्तविक रूप में प्रकट हो जाते हैं। श्रीकृष्ण कर्ण से लिपट जाते हैं और अर्जुन कर्ण के चरण पकड़ लेते हैं। यहीं पर 'सूत-पुत्र' नाटक की कथा का मार्मिक व अविस्मरणीय अन्त होता है।

प्रश्न 2. 'सूत-पुत्र' नाटक के आधार पर कुन्ती का चरित्र-चित्रण कीजिए। (2009, 10, 12, 13, 15, 16)

उत्तर— डॉ० गंगासहाय 'प्रेमी' द्वारा रचित 'सूत-पुत्र' नाटक की प्रमुख नारी-पात्र है कुन्ती। उसके चरित्र की प्रमुख विशेषताएँ निम्नलिखित हैं—

1. **मातृ-भावना**—कुन्ती का हृदय मातृ-भावना से परिपूर्ण है। युद्ध का निश्चय सुनते ही वह अपने पुत्रों के कल्याण के लिए व्याकुल हो उठती है। यद्यपि उसने कर्ण का परित्याग कर दिया था और किसी के सामने भी उसे अपने पुत्र के रूप में स्वीकार नहीं किया था; किन्तु अपने मातृत्व के बल पर ही वह उसके पास जाती है और कहती है—**"तुम मेरी पहली सन्तान हो कर्ण ! मैंने लोकापवाद के भय से ही तुम्हारा त्याग किया था।"**
2. **कुशल नीतिज्ञ**—कुन्ती अपने पुत्रों की विजय और कुशलक्षेम के लिए अपने त्यक्त-पुत्र कर्ण (जिसे असवर्ण घोषित कर दिया गया था) को अपने पक्ष में करने का प्रयास करती है। जब कर्ण यह कहता है कि पाण्डव यदि मुझे सार्वजनिक रूप में अपना भाई स्वीकार करें तब ही उनकी रक्षा करना मेरा कर्त्तव्य हो सकता है, तो कुन्ती तत्काल ही कह देती है—**"कर्ण तुम्हारे पाँचों अनुज सार्वजनिक रूप से तुम्हें अपना अग्रज स्वीकार करने को प्रस्तुत हैं।"** इस प्रकार उसमें राजनीतिक कुशलता पूर्ण रूप से विद्यमान थी।
3. **स्पष्टवादिता**—स्पष्टवादिता कुन्ती के चरित्र का सबसे बड़ा गुण है। वह माता होकर भी अपने पुत्र कर्ण के सामने अपने कौमार्य में उसे जन्म देने के प्रसंग और उसे अपना पुत्र होने की बात कहते नहीं हिचकती। कर्ण द्वारा यह पूछे जाने पर कि तुमने किस आवश्यकता की पूर्ति के लिए सूर्यदेव से सम्पर्क स्थापित किया, वह कहती है—**"पुत्र ! तुम्हारी माता के मन में वासना का भाव बिल्कुल नहीं था।"**
4. **वाक्पटु**—कुन्ती बातचीत में भी बहुत कुशल है। वह अपनी बातें इतनी कुशलता से कहती है कि कर्ण एक नारी, एक माँ की विवशता को समझकर उसकी भूलों पर ध्यान न दे तथा उसकी बात मान ले। वह कर्ण को पहले पुत्र और बाद में कर्ण कहकर अपने मनोभावों को प्रदर्शित कर देती है और इस प्रकार अपनी वाक्पटुता का परिचय देती है।
5. **सूक्ष्म दृष्टि**—कुन्ती में प्रत्येक विषय को परखने और तदनुकूल कार्य करने की सूक्ष्म दृष्टि थी। कर्ण जब उससे कहता है कि तुम यह कैसे जानती हो कि मैं तुम्हारा वही पुत्र हूँ जिसको तुमने गंगा की धारा में प्रवाहित कर दिया था; तब कुन्ती उससे कहती है—**"क्या तुम्हारे पैरों की अंगुलियाँ मेरे पैरों की अंगुलियों से मिलती-जुलती नहीं हैं।"**

इस प्रकार नाटककार ने थोड़े ही विवरण में कुन्ती के चरित्र को कुशलता से दर्शाया है।

प्रश्न 3. 'सूत-पुत्र' नाटक के प्रमुख पुरुष पात्र (नायक) कर्ण का चरित्र-चित्रण कीजिए। (2009, 10, 11, 12, 13, 14, 15, 16, 17, 18)

उत्तर— डॉ० गंगासहाय 'प्रेमी' द्वारा रचित 'सूत-पुत्र' नाटक का प्रमुख पात्र कर्ण है। कर्ण ही इस नाटक का नायक भी है। कर्ण के चरित्र में वे सभी गुण विद्यमान हैं जो एक नायक में होने चाहिए। संक्षेप में 'कर्ण' के चरित्र में निम्नलिखित विशेषताएँ थीं—

1. **सच्चा गुरुभक्त—** 'कर्ण' गुरुभक्त है। जंघा से रक्तस्राव होता रहा, परन्तु वह कष्ट सहकर भी गुरु की निद्रा भंग नहीं होने देता। गुरु उसे शाप देते हैं, परन्तु उसके मन में गुरु के प्रति श्रद्धाभाव कम नहीं होता। वह उनकी निन्दा नहीं सुन सकता। द्रौपदी-स्वयंवर के समय वह कहता है—**''मेरे गुरु की निन्दा में आपने अब यदि एक भी शब्द कहा तो यह स्वयंवर-मण्डप युद्ध-स्थल में बदल जाएगा।''**
2. **धनुर्विद्या में प्रवीण—** 'कर्ण' ने धनुष चलाने की शिक्षा परशुराम से प्राप्त की। वह अपने समय का सर्वश्रेष्ठ बाण चलाने वाला है। अनुपम धनुर्धारी अर्जुन भी उसे पराजित करने में समर्थ नहीं होता।
3. **नारी के प्रति श्रद्धाभाव—** 'कर्ण' के प्रति सबसे बड़ा अन्याय नारी ने किया है, परन्तु फिर भी वह नारी के प्रति श्रद्धाभाव रखता है—**''नारी विधाता का वरदान है। नारी सभ्यता, संस्कृति की प्रेरणा है। नारी का अपहरण कभी भी सह्य नहीं हो सकता।''**
4. **सच्चा मित्र—** कर्ण एक सच्चा मित्र है। वह जीवन भर दुर्योधन की मित्रता का निर्वाह करता है। कुन्ती उससे दुर्योधन का पक्ष छोड़ने के लिए कहती है, परन्तु वह मित्रता के बन्धन को तोड़कर विश्वासघाती नहीं बनना चाहता।
5. **अद्वितीय दानी—** कर्ण की दानवीरता अनुपम है। इन्द्र को वह अपने प्राणरक्षक कवच और कुण्डल दान कर देता है। युद्धभूमि में घायल पड़े हुए होने पर भी ब्राह्मण वेशधारी कृष्ण और अर्जुन को अपना स्वर्णजड़ित दाँत तोड़कर दे देता है।
6. **दृढ़प्रतिज्ञ, निर्भीक तथा महान योद्धा—** कर्ण अपने वचनों का सदैव दृढ़ता से पालन करता है। कुन्ती को दिये गये वचन का उसने युद्ध में पूर्णरूपेण पालन किया। वह अत्यन्त निर्भीक योद्धा है। अपने गुरु परशुराम से वह कहता है—**''शाप से मैं नहीं डरता गुरुदेव! आपका दिया हुआ शाप भी मैं वरदान समझूँगा।''** कर्ण एक महान योद्धा भी है। इसीलिए भीष्म और द्रोणाचार्य के बाद उसे सेनापति बनाया जाता है। सामान्य सैनिकों को मारना अथवा उनसे युद्ध करना वह अपना अपमान समझता है। अर्जुन के रथ को पीछे हटा देने पर कृष्ण भी उसकी प्रशंसा करते हैं। वह सच्चा महारथी है।
7. **प्रबल नैतिक—** कर्ण उच्च कोटि के संस्कारों से युक्त है, अतः वह नैतिकता को अपने जीवन में विशेष महत्त्व प्रदान करता है। द्रौपदी के अपहरण की बात पर वह दुर्योधन से कहता है—**''दूसरे अनुचित करते हैं इसलिए हम भी अनुचित करें, यह नीति नहीं है। किसी की पत्नी का अपहरण परम्परा से निन्दनीय है।''**

संक्षेप में कहा जा सकता है कि 'कर्ण' उदात्त स्वभाव वाला धीर-वीर नायक है।

प्रश्न 4. 'सूत-पुत्र' के आधार पर श्रीकृष्ण के चरित्र पर प्रकाश डालिए। (2014, 18)

या **'सूत-पुत्र' नाटक के आधार पर श्रीकृष्ण की चारित्रिक विशेषताएँ लिखिए।** (2010, 15, 16)

या **'सूत-पुत्र' नाटक के किसी एक पात्र का चरित्र-चित्रण कीजिए।** (2014)

उत्तर—

श्रीकृष्ण का चरित्र-चित्रण

डॉ० गंगासहाय 'प्रेमी' द्वारा रचित 'सूत-पुत्र' नाटक का कथानक संस्कृत के महाकाव्य 'महाभारत' पर आधारित है। यद्यपि इस नाटक का कथानक पूर्ण रूप से कर्ण को केन्द्रबिन्दु मानकर ही अग्रसर होता है, परन्तु श्रीकृष्ण भी एक प्रभावशाली पात्र के रूप में उपस्थित हुए हैं।

प्रस्तुत नाटक में श्रीकृष्ण की चारित्रिक विशेषताओं को निम्नवत् प्रस्तुत किया गया है—

1. **वीरता के प्रशंसक—** यद्यपि श्रीकृष्ण अर्जुन के मित्र हैं और उसके सारथी भी, परन्तु वे कर्ण की वीरता एवं शक्ति के प्रशंसक हैं। उन्हें इस बात पर प्रसन्नता होती है कि कर्ण सभी प्रकार से सुरक्षित अर्जुन के रथ को पीछे हटा देता है। वे कहते हैं—**''धन्य हो कर्ण ! तुम्हारे समान धनुर्धर सम्भवतः पृथ्वी पर दूसरा नहीं है।''**
2. **कुशल राजनीतिज्ञ—** कर्ण के पास, सूर्य के द्वारा दिये गये कवच-कुण्डलों को इन्द्र को दान कर देने पर, इन्द्र से प्राप्त एक अमोघ शक्ति थी जिसे कर्ण अर्जुन के वध के लिए सुरक्षित रखना चाहता है; परन्तु श्रीकृष्ण कर्ण की उस शक्ति का प्रयोग घटोत्कच पर करा देते हैं। यह श्रीकृष्ण की दूरदर्शिता एवं कुशल राजनीति का ही परिणाम था।
3. **कुशल-वक्ता—** श्रीकृष्ण कुशल वक्ता के रूप में प्रस्तुत हुए हैं। अर्जुन निहत्थे कर्ण पर बाण नहीं चलाना चाहता था। श्रीकृष्ण उसके भावों को उत्तेजित करते हैं और इस तरह बात करते हैं कि अर्जुन को धनुष पर बाण चढ़ाने के लिए विवश होना पड़ता है।
4. **अवसर को न चूकने वाले—** कर्ण के ऊपर बाण छोड़ने के लिए वे अर्जुन से कहते हैं—**''अगर तुम इस अवस्था में कर्ण पर बाण नहीं चलाओगे तो दूसरी अवस्था में वह तुम्हें बाण चलाने नहीं देगा।''** वे अर्जुन से कहते हैं—**''यही समय है, जब तुम कर्ण को अपने बाणों का लक्ष्य बनाकर सदा के लिए युद्ध-भूमि में सुला सकते हो। .....शीघ्रता करो ! अवसर का लाभ उठाओ।''**
5. **महाज्ञानी—** श्रीकृष्ण ज्ञानी पुरुष के रूप में प्रस्तुत हुए हैं। वे अर्जुन से कहते हैं—**''मृत्यु को देखकर बड़े-बड़े योद्धा, तपस्वी और ज्ञानी तक व्याकुल हो उठते हैं।''** वे अर्जुन को समझाते हैं—**''शरीर के साथ आत्मा का बन्धन बहुत दृढ़ होता है।''** इस प्रकार उनके ज्ञान और विद्वत्ता का स्पष्ट आभास मिलता है।
6. **पश्चात्ताप की भावना—** श्रीकृष्ण को इस बात का पश्चात्ताप है कि कर्ण का वध न्यायोचित ढंग से नहीं हुआ। वे मानते हैं—**''हमने अपनी विजय-प्राप्ति के स्वार्थवश कर्ण के साथ जो कुछ अन्याय किया है, हम इस प्रकार यश दिलाकर उसे भी थोड़ा हल्का कर सकेंगे।''**

अस्तु; श्रीकृष्ण रंगमंच पर यद्यपि कुछ देर के लिए नाटक के अन्त में ही आते हैं, तथापि इतने से ही उनके व्यक्तित्व की झलक स्पष्ट रूप से मिल जाती है।

प्रश्न 5. परशुराम का चरित्र-चित्रण कीजिए। (2012, 13)

या **'सूत-पुत्र' नाटक के आधार पर 'परशुराम' का चरित्रांकन कीजिए।** (2015, 16, 18)

या **'सूत-पुत्र' के आधार पर परशुराम की चारित्रिक विशेषताओं का संक्षेप में उल्लेख कीजिए।** (2009)

उत्तर—

परशुराम का चरित्र-चित्रण

डॉ० गंगासहाय प्रेमी द्वारा रचित 'सूत-पुत्र' नाटक में परशुराम को ब्राह्मणत्व एवं क्षत्रियत्व के गुणों से समन्वित महान् तेजस्वी और दुर्धर्ष योद्धा के रूप में चित्रित किया गया है। परशुराम कर्ण के गुरु हैं। इनके पिता का नाम जमदग्नि है। परशुराम अपने समय के धनुर्विद्या के अद्वितीय ज्ञाता थे। नाटक के अनुसार इनकी चारित्रिक विशेषताओं का विवेचन निम्नवत् है—

1. **ओजयुक्त व्यक्तित्व—** परशुराम का व्यक्तित्व ओजयुक्त है। नाटककार ने उनके व्यक्तित्व का चित्रण इस प्रकार किया है— **''परशुराम की अवस्था दो सौ वर्ष के लगभग है। वे हृष्ट-पुष्ट शरीर वाले सुदृढ़ व्यक्ति हैं। चेहरे पर सफेद, लम्बी-घनी दाढ़ी और शीश पर लम्बी-लम्बी श्वेत जटाएँ हैं।''**
2. **महान धनुर्धर—** परशुराम अद्वितीय धनुर्धारी हैं। सुदूर प्रदेशों से ब्राह्मण बालक इनके पास हिमालय की घाटी में स्थित आश्रम में शस्त्र-विद्या ग्रहण करने आते हैं। इनके द्वारा दीक्षित शिष्यों को उस समय अद्वितीय माना जाता था। भीष्म पितामह भी इन्हीं के प्रिय शिष्यों में से एक थे।
3. **मानव-स्वभाव के पारखी—** परशुराम मानव-स्वभाव के अचूक पारखी हैं। वे कर्ण के क्षत्रियोचित व्यवहार से जान जाते हैं कि यह ब्राह्मण न होकर क्षत्रिय-पुत्र है। वे उससे निस्संकोच कहते हैं—**''तुम क्षत्रिय हो कर्ण! तुम्हारे माता-पिता दोनों ही क्षत्रिय रहे हैं।''**
4. **आदर्श गुरु—** परशुराम एक आदर्श गुरु हैं। वे शिष्यों को पुत्रवत् स्नेह करते हैं और उनके कष्ट-निवारण के लिए सदैव तत्पर रहते हैं। कर्ण की जंघा में कीड़ा काट लेता है और मांस में प्रविष्ट हो जाता है, जिससे

रक्त की धारा प्रवाहित होने लगती है। इससे परशुराम का हृदय द्रवित हो उठता है। वे तुरन्त उसके घाव पर नखरचनी का प्रयोग करते हैं और कर्ण को सान्त्वना देते हैं। यह घटना गुरु परशुराम के सहृदय होने को प्रमाणित करती है।

5. **श्रेष्ठ ब्राह्मण**— परशुराम एक श्रेष्ठ ब्राह्मण हैं। वे विद्या-दान को ब्राह्मण का सर्वप्रमुख कार्य मानते हैं। जो ब्राह्मण धनलोलुप हैं, परशुराम की दृष्टि में वे नीच तथा पतित हैं, इसीलिए वे द्रोणाचार्य को निम्नकोटि का ब्राह्मण मानते हैं और कहते हैं—**''द्रोणाचार्य तो पतित ब्राह्मण हैं। ब्राह्मण क्षत्रिय का गुरु हो सकता है, सेवक अथवा वृत्तिभोगी नहीं।''**
6. **उदारमना**— परशुराम सहृदय तथा उदारमना हैं। वे अपने कर्त्तव्यपालन में वज्र के समान कठोर हैं, लेकिन दूसरों की दयनीय दशा को देखकर द्रवीभूत भी हो जाते हैं। ब्राह्मण का छद्म रूप धारण करने के कारण वे कर्ण को शाप दे देते हैं, लेकिन जब कर्ण की शोचनीय तथा दुःख-भरी दशा का अवलोकन करते हैं तो वे उसके प्रति सहृदय हो जाते हैं। वे कहते हैं—**''जिस माता से तुम्हें ममता और वात्सल्य मिलना चाहिए था, उससे तुमने कठोर निर्मम निर्वासन पाया। जिस गुरु से तुम्हें वरदान मिलना चाहिए था, उसी ने तुम्हें शाप दिया।''** उनके इस कथन से उनके उदारमना होने की पुष्टि होती है।
7. **कर्त्तव्यनिष्ठ**— परशुराम एक कर्त्तव्यनिष्ठ व्यक्ति हैं। कर्त्तव्यपालन में वे बड़ी-से-बड़ी बाधाओं को सहर्ष स्वीकार करने को उद्यत रहते हैं। उनकी कर्त्तव्यनिष्ठा से प्रभावित होकर कर्ण उनसे कहता है—**''आपके हृदय में कोई कठोरता अथवा निर्ममता नहीं रही है। आपने जिसे कर्त्तव्य समझा है, जीवन भर उसी का पालन निष्ठापूर्वक किया है।''**
8. **महाक्रोधी**—यद्यपि परशुराम जी में अनेक गुण हैं, तथापि क्रोध पर अभी उन्होंने पूर्णतया विजय नहीं पायी है। क्रोध में आकर वे अपने महान् त्यागी शिष्य कर्ण को भी जब शाप दे देते हैं तो संवेदनशील पाठक का हृदय हाहाकार कर उठता है। वह मानव मन के इस विकराल विकार को, ऋषियों तक को अपना शिकार बनाते देखता है।

इस प्रकार हम कह सकते हैं कि परशुराम तपोनिष्ठ तेजस्वी ब्राह्मण हैं। वे एक आदर्श शिक्षक तथा उदार हृदय के स्वामी हैं। उनमें ब्राह्मणत्व तथा क्षत्रियत्व दोनों के गुणों का अद्भुत समन्वय है। ❑

8 स्वपठित 'खण्डकाव्य' पर आधारित प्रश्न

प्रश्न-परिचय— सामान्य हिन्दी के **खण्ड 'क'** का **आठवाँ प्रश्न** पाठ्यक्रम में निर्धारित विभिन्न खण्डकाव्यों पर आधारित होगा। इसके अन्तर्गत पठित खण्डकाव्य (जनपद में निर्धारित) पर आधारित **दो विकल्पात्मक** प्रश्न दिये जाएँगे, जिनमें से किसी **एक** प्रश्न का उत्तर आपको लिखना होगा। इसके लिए **4 अंक** निर्धारित हैं। शब्द-सीमा अधिकतम 80 शब्द होगी।

परीक्षार्थी ध्यान दें— परीक्षा में खण्डकाव्य की निर्धारित पुस्तक से खण्डकाव्य की कथावस्तु, पात्रों का चरित्र-चित्रण (चारित्रिक विशेषताएँ) तथा प्रमुख घटनाओं पर आधारित प्रश्न पूछे जाएँगे।

श्रवणकुमार

मेरठ, बागपत, आजमगढ़, बस्ती, रायबरेली, बाँदा, हरदोई, बहराइच, हमीरपुर, गाजियाबाद, गौतमबुद्ध नगर, मऊ, सिद्धार्थ नगर जनपदों के लिए। नवसृजित जनपदों के विद्यार्थी अपने जनपद में निर्धारित खण्डकाव्य के सम्बन्ध में अपने विषय-अध्यापक से जानकारी प्राप्त कर लें।

प्रश्न 1. 'श्रवणकुमार' खण्डकाव्य की कथावस्तु पर संक्षेप में प्रकाश डालिए। (2009, 10, 11, 12, 13, 14, 15, 16, 18)

या **'श्रवणकुमार' खण्डकाव्य के प्रमुख सामाजिक प्रसंगों का वर्णन कीजिए।** (2017)

उत्तर— [**संकेत**—सभी सर्गों की कथावस्तु को संक्षेप में लिखिए।]

प्रश्न 2. 'श्रवणकुमार' खण्डकाव्य के 'अयोध्या सर्ग' की कथा अपने शब्दों में लिखिए। (2011, 13, 15, 16)

या **'श्रवणकुमार' खण्डकाव्य के आधार पर प्रथम सर्ग की कथावस्तु लिखिए।** (2017)

उत्तर— **प्रथम सर्ग : अयोध्या**

प्रथम सर्ग में 'श्रवणकुमार' खण्डकाव्य के कथानक की पृष्ठभूमि तैयार की गयी है। इसमें अयोध्या नगरी की स्थापना, उसका नामकरण, राज्यकुल के वैभव एवं उसकी गौरवमयी विशेषताओं का वर्णन किया गया है; यथा—

सरि सरयू के पावन तट पर है साकेत नगर छविमान।
जिसमें श्री शोभा वैभव के कभी तने थे विपुल वितान॥
मनु-वंशज इक्ष्वाकु भूप की कीर्ति-पताका लोक-ललाम।
अनुपम शोभाधाम अयोध्या चित्ताकर्षक अति अभिराम॥

कवि ने यह भी बताया कि अयोध्या में सर्वत्र नैतिकता और सदाचार विद्यमान है। इस नगरी में सभी वस्तुओं का विक्रय उचित मूल्य पर होता है। यहाँ के नर-नारी परस्पर यथोचित सम्मान करते हैं। इस प्रकार अयोध्या का जीवन सहज और आनन्द से परिपूर्ण है। इस सर्ग में अयोध्या की रम्य-प्रकृति का चित्रण भी किया गया है। ऐसी अयोध्या के शब्द-वेध-निपुण राजकुमार दशरथ एक दिन शिकार करने की योजना बनाते हैं—

ऐसे वातावरण भव्य में दशरथ-उर में उठी उमंग।
देखें सरयू-वन में मृगया आज दिखाती है क्या रंग॥

प्रश्न 3. 'श्रवणकुमार' खण्डकाव्य के 'आश्रम सर्ग' की कथा अपने शब्दों में लिखिए। (2018)

उत्तर— **द्वितीय सर्ग : आश्रम**

द्वितीय सर्ग के आरम्भ में सरयू नदी के वन-प्रान्तर के रमणीक आश्रम का मनोहारी चित्रण हुआ है, जिसमें श्रवणकुमार और उसके नेत्रहीन माता-पिता सानन्द निवास कर रहे हैं। इस आश्रम में सर्वत्र सुख-शान्ति है जहाँ सदैव शरद् एवं वसन्त का वैभव व्याप्त रहता है। स्वच्छ जल से भरे तालाबों में कमल खिले हुए हैं। यहाँ मनुष्य, पशु-पक्षी, कीट-पतंग सब परस्पर सहज प्रेम-भाव से रहते हैं। यहाँ द्वेष और कटुता नाममात्र को भी नहीं है। आश्रम के वर्णन में कवि ने भारतीय दर्शन का चिन्तन प्रस्तुत किया है। आश्रम के शान्त-सौन्दर्यमय प्राकृतिक एवं आध्यात्मिक वातावरण में ही युवक श्रवणकुमार के चरित्र का विकास होता है। वह माता-पिता की आज्ञानुसार ही नित्य-प्रति कार्य करता है तथा उनकी सेवा में लगा रहता है—

जननी और जनक को श्रद्धा-सहित नवाकर शीश।
आह्निक-क्रिया निवृत्ति-हेतु जाता सरयू-तट पा आशीष ॥

प्रश्न 4. 'श्रवणकुमार' के आखेट सर्ग की कथा संक्षेप में अपने शब्दों में लिखिए। (2011, 12, 16)

उत्तर— **तृतीय सर्ग : आखेट**

तृतीय सर्ग में एक ओर दशरथ मृग-शावक के वध का स्वप्न देखते हैं। दूसरी ओर श्रवणकुमार जब जल लेने जाता है तो उसकी बायीं आँख फड़कने लगती है। शकुन-अपशकुन तथा स्वप्न-विचार से दोनों ही अशुभ हैं। स्वप्न में मृग-शावक-वध से दशरथ व्याकुल हो जाते हैं। वे ब्रह्म-मुहूर्त में जागकर आखेट हेतु वन की ओर चल देते हैं।

दूसरी ओर; उसी समय श्रवणकुमार के माता-पिता को बहुत अधिक प्यास लगती है और वह माता-पिता की आज्ञानुसार नदी से जल लेने चल देता है। जल में पात्र डूबने की ध्वनि को किसी हिंसक पशु की ध्वनि समझकर दशरथ शब्दभेदी बाण चला देते हैं, जो सीधे श्रवणकुमार के हृदय में जाकर लगता है। श्रवणकुमार का चीत्कार सुनकर दशरथ विस्मय, चिन्ता और शोक में डूब जाते हैं। उन्हें हतप्रभ एवं किंकर्त्तव्यविमूढ़ देख उनका सारथी उन्हें सान्त्वना देता है। प्रस्तुत सर्ग में श्रवणकुमार की मातृ-पितृ-भक्ति, शकुन-अपशकुन तथा दशरथ की आखेट-रुचि पर प्रकाश डाला गया है।

प्रश्न 5. 'श्रवणकुमार' खण्डकाव्य के 'श्रवण' शीर्षक चतुर्थ सर्ग का सारांश अपने शब्दों में लिखिए। (2014, 16, 18)

या 'श्रवणकुमार' खण्डकाव्य के किसी मार्मिक अंश की कथा का उल्लेख कीजिए। (2012, 13, 14)

उत्तर— **चतुर्थ सर्ग : श्रवण**

चतुर्थ सर्ग का आरम्भ श्रवणकुमार के मार्मिक विलाप से होता है। उसकी समझ में यह नहीं आता कि उसका कोई शत्रु नहीं, फिर भी उस पर किसने बाण छोड़ दिया? बाण लगने पर भी उसे अपनी चिन्ता नहीं, वरन् अपने वृद्ध एवं प्यासे माता-पिता की चिन्ता है—

मुझे बाण की पीड़ा सम्प्रति इतनी नहीं सताती है।
पितरों के भविष्य की चिन्ता जितनी व्यथा बढ़ाती है ॥

दशरथ आहत श्रवणकुमार को देखकर तथा उसके मार्मिक क्रन्दन को सुनकर व्याकुल हो जाते हैं।

श्रवणकुमार के आँखें खोलने पर सारथी बताता है कि ये अजपुत्र दशरथ हैं और मृगया (शिकार) के भ्रम में आज इनसे यह भयंकर भूल हो गयी है। श्रवणकुमार कहता है कि राजन्! मुझे मारकर आपने एक नहीं वरन् एक साथ तीन प्राणियों के प्राण लिये हैं। मेरे अन्धे माता-पिता आश्रम में प्यासे बैठे हुए मेरी प्रतीक्षा कर रहे हैं। आप यह जल का पात्र लेकर वहाँ जाइए और उन्हें मेरे प्राण-त्याग की सूचना दे दीजिए। यह कहकर श्रवणकुमार प्राण त्याग देता है। उसके शव को सारथी की देखभाल में छोड़ अत्यन्त दु:खी मन से दशरथ जलपात्र लेकर आश्रम की ओर चल देते हैं।

इस सर्ग में कवि ने श्रवणकुमार के सात्त्विक जीवन, उसके कारुणिक अन्त और दशरथ के मन में उत्पन्न आत्मग्लानि एवं शोकाकुलता का बहुत ही मार्मिक वर्णन किया है।

प्रश्न 6. 'श्रवणकुमार' खण्डकाव्य के पाँचवें सर्ग की कथा लिखिए। (2012)

उत्तर— **पंचम सर्ग : दशरथ**

पंचम सर्ग का आरम्भ दशरथ के अन्तर्द्वन्द्व, विषाद, आत्मग्लानि और अपराध-भावना से होता है—

हाय चलेगी युग-युगान्त तक अब मेरी यह पाप कथा।
जो मुझको ही नहीं वंशजों को भी देगी मर्म व्यथा ॥

इसी प्रकार के मानसिक उद्वेगों से आकुल-व्याकुल दशरथ आश्रम पहुँच जाते हैं।

प्रश्न 7. 'श्रवणकुमार' खण्डकाव्य के छठवें सर्ग 'सन्देश' की कथा संक्षेप में लिखिए। (2011, 14,15, 17)

उत्तर— **षष्ठ सर्ग : सन्देश**

षष्ठ सर्ग में श्रवणकुमार के माता-पिता की असहाय दशा तथा दशरथ के क्षोभ का बड़ा ही मार्मिक चित्रण हुआ है। श्रवणकुमार के माता-पिता उसके आने की प्रतीक्षा में व्याकुल हैं। दशरथ की पदचाप सुनकर वे पूछते हैं—

श्रवण-पिता ने कहा, "आज प्रिय क्यों कर तुमने किया विलम्ब ?
करती रही विविध आशंका अब तक वत्स तुम्हारी अम्ब।"

ऋषि-दम्पती पर्याप्त समय तक अपने पुत्र के गुणों का वर्णन करते रहते हैं। तत्पश्चात् दशरथ उन्हें जल-ग्रहण करने के लिए कहते हैं तो वे शंकित होकर उनका परिचय पूछते हैं। अन्त में दशरथ उन्हें वह हृदयविदारक दुर्घटना का समाचार सुना देते हैं, जिसे सुनते ही वे करुण विलाप कर उठते हैं और हाहाकार करते अपने मृतक पुत्र के स्पर्श के लिए दशरथ के साथ चल देते हैं।

प्रश्न 8. 'श्रवणकुमार' खण्डकाव्य के सातवें (सप्तम) सर्ग 'अभिशाप' का सारांश लिखिए। (2009, 10, 12, 13, 15, 16, 17)

उत्तर— **सप्तम सर्ग : अभिशाप**

'श्रवणकुमार' खण्डकाव्य के सप्तम सर्ग में ऋषि-दम्पती का करुण विलाप चित्रित हुआ है। सरयू-तट पर अपने मृतक पुत्र के शरीर को स्पर्श कर उनके धैर्य का बाँध टूट जाता है। वे विलाप करते-करते अचेत हो जाते हैं। कुछ देर बाद वे सचेत होते हैं तो पुन: विलाप कर उठते हैं—

कौन हमारे लिए विपिन से कन्द मूल फल लाएगा।
कौन अतिथि-सा हमें खिलाने में सच्चा सुख पाएगा ॥

इस प्रकार श्रवणकुमार के माता-पिता उसके गुणों और सुकर्मों का स्मरण कर-करके हृदयविदारक विलाप करते हैं। अन्त में श्रवणकुमार के पिता दशरथ से कहते हैं कि यद्यपि आपने यह पाप अनजाने में किया है, परन्तु पाप तो पाप ही है। इसलिए—

पुत्र-शोक से कलप रहा हूँ जिस प्रकार मैं, अजनन्दन।
सुत-वियोग में प्राण तजोगे इसी भाँति करके क्रन्दन ॥

प्रश्न 9. 'श्रवणकुमार' खण्डकाव्य में 'निर्वाण' सर्ग की कथावस्तु लिखिए। (2018)

उत्तर— **अष्टम सर्ग : निर्वाण**

इस सर्ग में शाप के कारण दशरथ बहुत अधिक दु:खी हैं। पर्याप्त विलाप करने के बाद श्रवणकुमार के पिता को यह आत्मबोध होता है कि मेरे उदार एवं शान्त हृदय में क्रोध कैसे आ गया ? मैंने तो व्यर्थ ही दशरथ को शाप दे दिया। मेरे पुत्र का वध तो नियति के विधान के अनुसार दशरथ के हाथों ही होना था। फिर इसमें किसी का क्या दोष ?

वे श्रवणकुमार को जलांजलि देने के लिए उठते हैं, तभी दिव्य रूपधारी श्रवणकुमार कहता है—

मैं प्रतिकृत हो गया आपकी सेवा परिचर्या कर तात।
मुझे श्रेष्ठ पद मिला आज है पा आशीष तुम्हारा मात ॥

पुत्र-शोक में व्याकुल ऋषि-दम्पति रुदन करते-करते प्राण-त्याग देते हैं और सारथी द्वारा तैयार की गयी चिता में श्रवणकुमार एवं उसके पिता-माता तीनों के नश्वर शरीर भस्म हो जाते हैं।

प्रश्न 10. 'श्रवणकुमार' खण्डकाव्य के नायक श्रवणकुमार का चरित्र-चित्रण कीजिए। (2009, 10, 11,12, 13, 14, 15, 16, 17, 18)

उत्तर— श्रवणकुमार प्रस्तुत खण्डकाव्य का प्रमुख पात्र है। 'श्रवणकुमार' की कथा आरम्भ से अन्त तक उसी से सम्बद्ध है; अत: इस खण्डकाव्य का नायक श्रवणकुमार है। उसकी प्रमुख चारित्रिक विशेषताएँ निम्नलिखित हैं—

1. **मातृ-पितृभक्त**—श्रवणकुमार अपने माता-पिता का एकमात्र आदर्श पुत्र है। वह प्रात:काल से सायंकाल तक अपने वृद्ध एवं नेत्रहीन माता-पिता की सेवा में लगा रहता है। दशरथ के बाण से बिद्ध होकर भी श्रवणकुमार को अपने प्यासे माता-पिता की ही चिन्ता सता रही है—

मुझे बाण की पीड़ा सम्प्रति इतनी नहीं सताती है।
पितरों के भविष्य की चिन्ता जितनी व्यथा बढ़ाती है ॥

2. **निश्छल एवं सत्यवादी**— श्रवणकुमार के पिता वैश्य और माता शूद्र वर्ण की थीं। जब दशरथ ब्रह्म-हत्या की सम्भावना व्यक्त करते हैं, तो श्रवणकुमार उन्हें सत्य बता देता है—

वैश्य पिता माता शूद्रा थी मैं यों प्रादुर्भूत हुआ।
संस्कार के सत्य भाव से मेरा जीवन पूत हुआ॥

श्रवणकुमार स्पष्टवादी है। वह किसी से कुछ नहीं छिपाता। वह सत्यकाम, जाबालि आदि के समान ही अपने कुल, गोत्र आदि का परिचय देता है।

3. **क्षमाशील एवं सरल स्वभाव वाला**— श्रवणकुमार का स्वभाव बहुत ही सरल है। उसके मन में किसी के प्रति ईर्ष्या, द्वेष, क्रोध एवं वैर नहीं है। दशरथ के बाण से बिद्ध होने पर भी वह अपने समीप आये सन्तप्त दशरथ का सम्मान ही करता है।

4. **भारतीय संस्कृति का सच्चा प्रेमी**— श्रवणकुमार भारतीय संस्कृति का सच्चा प्रेमी है। धर्म के दस लक्षणों को वह अपने जीवन में धारण किये है—

दम अस्तेय अक्रोध सत्य धृति, विद्या क्षमा बुद्धि सुकुमार।
शौच तथा इन्द्रिय-निग्रह हैं, दस सदस्य मेरे परिवार॥

वेद के अनुसार माता, पिता, गुरु, अतिथि तथा पति के लिए पत्नी और पत्नी के लिए पति ये पाँच 'देवता' कहलाते हैं तथा ये ही पूजा के योग्य हैं। श्रवणकुमार भी माता, पिता, गुरु और अतिथि की देवतुल्य पूजा करता है।

5. **आत्मसन्तोषी**— श्रवणकुमार को किसी वस्तु के प्रति लोभ-मोह नहीं है। उसे भोग एवं ऐश्वर्य की तनिक भी चाह नहीं है। वह तो सन्तोषी स्वभाव का है—

वल्कल वसन विटप देते हैं, हमको इच्छा के अनुकूल।
नहीं कभी हमको छू पाती, भोग ऐश्वर्य वासन्न-धूल॥

6. **संस्कार को महत्त्व देने वाला**— श्रवणकुमार समदर्शी है। वह कर्म, शील एवं संस्कारों को महत्त्व देता है। उसके जीवन में पवित्रता संस्कारों के प्रभाव के कारण ही है—

विप्र द्विजेतर के शोणित में अन्तर नहीं रहे यह ध्यान।
नहीं जन्म के संस्कार से, मानव को मिलता सम्मान॥

इस प्रकार श्रवणकुमार उदार, परोपकारी, सर्वगुणसम्पन्न तथा खण्डकाव्य का नायक है।

प्रश्न 11. 'श्रवणकुमार' के आधार पर दशरथ का चरित्र-चित्रण कीजिए। (2009, 10, 11, 12, 13, 14, 15, 16, 17, 18)

उत्तर रघुवंशी राजा अज के पुत्र दशरथ 'श्रवणकुमार' खण्डकाव्य में आरम्भ से अन्त तक विद्यमान हैं। मूल रूप से दशरथ इस खण्डकाव्य के प्राण हैं। दशरथ की चारित्रिक विशेषताएँ निम्नलिखित हैं—

1. **उत्तम-कुलोत्पन्न**— राजा दशरथ उत्तम-कुलोत्पन्न हैं। उनका वंश 'इक्ष्वाकु' नाम से प्रसिद्ध है। पृथु, त्रिशंकु, सगर, दिलीप, रघु, हरिश्चन्द्र और अज; दशरथ के इतिहासप्रसिद्ध पूर्वज रहे हैं। उन्हें अपने वंश पर गर्व है—

क्षत्रिय हूँ मम शिरा जाल में रघुवंशी है रक्त प्रवाह।
हस्ति पोत अथवा मृगेन्द्र के पाने की है उत्कट चाह॥

2. **लोकप्रिय शासक**— राजा दशरथ प्रजावत्सल एवं योग्य शासक हैं। उनके राज्य में सबको न्याय मिलता है, चोरी कहीं नहीं होती है, प्रजा सब प्रकार से सुखी व सन्तुष्ट है तथा विद्वज्जनों का यथोचित् सत्कार होता है—

सुख समृद्धि आमोदपूर्ण था कौशलेश का शुभ शासन।
दुःख था केवल एक दुःख को, जिसे मिला था निर्वासन॥

3. **धनुर्विद्या में निपुण**— कुमार दशरथ धनुर्विद्या में निपुण और शब्दभेदी बाण चलाने में पारंगत हैं। आखेट में उनकी विशेष रुचि है। इसीलिए श्रावण मास में वर्षा के अनन्तर जब चारों ओर हरियाली छाई रहती है तब वे आखेट का निश्चय करते हैं।

4. **विनम्र एवं दयालु**— दशरथ में तनिक भी अहंकार नहीं है। दूसरे का दुःख देखकर वे बहुत अधिक व्याकुल हो जाते हैं। स्वप्न में मृग-शावक के वध से ही वे दुःखी हो उठते हैं।

5. **संवेदनशील एवं पश्चात्ताप करने वाले**— दशरथ अपने किये अनुचित कार्य पर आत्मग्लानि से भर उठते हैं तथा उसका प्रायश्चित्त करते रहते हैं। श्रवणकुमार की हत्या पर उनके प्रायश्चित्त एवं आत्मग्लानि उनके सच्चे पश्चात्ताप पर किया गया आर्तनाद है—

फटो धरणि, मैं समा सकूँ तुम करो ग्रहण, मम भाग्य जगे।
पर वसुन्धरे! मुझे शरण दे-तुम्हें न कहीं कलंक लगे॥

6. **आत्म-तपस्वी**— दशरथ न्यायप्रिय होने के साथ-साथ आत्म-तपस्वी भी हैं। वे अपने अपराध को स्वयं अक्षम्य मानते हैं—

करें मुनीश क्षमा वे होंगे, निस्पृह करुणा सिन्धु अगाध।
पर मेरे मन न्यायालय में क्षम्य नहीं है यह अपराध॥

7. **तेजस्वी**— दशरथ एक तेजस्वी राजकुमार हैं। जब वह श्रवणकुमार के पास पहुँचते हैं तो वह उनके रूप से प्रभावित हो उठता है। उनके प्रत्येक अंग से तेज मानो फूटा पड़ता है।

निष्कर्ष रूप में कहा जा सकता है कि दशरथ का चरित्र महान गुणों से विभूषित है जो कि प्रायश्चित्त और आत्मग्लानि की अग्नि में तपकर और भी शुद्ध हो गया है। कवि दशरथ का चरित्र-चित्रण करने में पूर्ण सफल रहा है।

त्यागपथी

आगरा, गोरखपुर, गाजीपुर, बरेली, सुल्तानपुर, जालौन, लखीमपुर, गोण्डा, शाहजहाँपुर, फिरोजाबाद, महाराजगंज, बाराबंकी जनपदों के लिए। नवसृजित जनपदों के विद्यार्थी अपने जनपद में निर्धारित खण्डकाव्य के सम्बन्ध में अपने विषय-अध्यापक से जानकारी प्राप्त कर लें।

प्रश्न 1. 'त्यागपथी' खण्डकाव्य की कथावस्तु (कथासार / कथानक) को संक्षेप में लिखिए। (2009, 10, 11, 12, 13, 14, 15, 16, 17, 18)

या **'त्यागपथी' खण्डकाव्य की प्रमुख घटनाओं को अपने शब्दों में लिखिए।** (2018)

उत्तर— [**संकेत**—सभी सर्गों की कथावस्तु को संक्षेप में लिखिए।]

प्रश्न 2. 'त्यागपथी' में वर्णित भारत की राजनीतिक उथल-पुथल का वर्णन कीजिए। (2012, 13, 14)

उत्तर— [**संकेत**—प्रथम तीन सर्गों की कथावस्तु को संक्षेप में लिखिए।]

प्रश्न 3. 'त्यागपथी' खण्डकाव्य के तृतीय सर्ग का सारांश लिखिए। (2011, 14, 15, 16, 17, 18)

या **'त्यागपत्री' खण्डकाव्य के प्रथम एवं द्वितीय सर्ग की कथा अपने शब्दों में लिखिए।** (2015)

या **'त्यागपथी' के प्रथम तीन सर्गों के आधार पर सम्राट हर्षवर्द्धन के जीवन की कहानी लिखिए।**

या **'त्यागपथी' खण्डकाव्य के द्वितीय सर्ग का सारांश लिखिए।** (2014, 17, 18)

उत्तर—

प्रथम सर्ग

थानेश्वर के राजकुमार हर्षवर्द्धन वन में आखेट हेतु गये थे। वहीं उन्हें अपने पिता प्रभाकरवर्द्धन के विषम ज्वर-प्रदाह का समाचार मिलता है। कुमार तुरन्त लौट आते हैं। वे पिता के रोग का बहुत उपचार करवाते हैं, परन्तु उन्हें सफलता नहीं मिलती। हर्षवर्द्धन के बड़े भाई राज्यवर्द्धन उत्तरापथ पर हूणों से युद्ध करने में लगे थे। हर्षवर्द्धन ने दूत के साथ अपने अग्रज को पिता की अस्वस्थता का समाचार पहुँचाया। इधर हर्षवर्द्धन की माता अपने पति की दशा बिगड़ती देख आत्मदाह के लिए तैयार हो जाती हैं। हर्ष ने उन्हें बहुत समझाया, पर वे नहीं मानीं और हर्ष के पिता की मृत्यु से पूर्व ही वे आत्मदाह कर लेती हैं। कुछ समय पश्चात् राजा प्रभाकरवर्द्धन की भी मृत्यु हो जाती है। पिता का अन्तिम संस्कार कर हर्षवर्द्धन शोकाकुल मन से राजमहल में लौट आते हैं। उन्हें इस बात की बड़ी चिन्ता है कि पिता की मृत्यु का समाचार सुनकर अनुजा (बहन) राज्यश्री तथा अग्रज (भाई) राज्यवर्द्धन की क्या दशा होगी?

द्वितीय सर्ग

राज्यवर्द्धन हूणों को परास्त कर सेनासहित अपने नगर सकुशल लौट आते हैं। शोकविह्वल हर्षवर्द्धन की दशा देख वे बिलख-बिलखकर रोते हैं। माता-पिता की

मृत्यु से शोकाकुल राज्यवर्द्धन वैराग्य लेने का निश्चय कर लेते हैं, किन्तु तभी उन्हें समाचार मिलता है कि मालवराज ने उनकी छोटी बहन राज्यश्री के पति गृहवर्मन को मार डाला है तथा राज्यश्री को कारागार में डाल दिया है। राज्यवर्द्धन वैराग्य को भूल मालवराज का विनाश करने चल देते हैं। राज्यवर्द्धन गौड़ नरेश को पराजित कर देते हैं, परन्तु गौड़ नरेश छलपूर्वक उनकी हत्या करवा देता है। हर्षवर्द्धन को जब यह समाचार मिलता है तो वे विशाल सेना लेकर मालवराज से युद्ध करने के लिए चल पड़ते हैं। मार्ग में हर्षवर्द्धन को समाचार मिलता है कि उनकी छोटी बहन राज्यश्री बन्धनमुक्त होकर; विन्ध्याचल की ओर वन में चली गयी है। यह समाचार पाकर हर्षवर्द्धन बहन को खोजने वन की ओर चल देते हैं। वन में दिवाकर मित्र के आश्रम में उन्हें एक भिक्षुक से यह समाचार मिलता है कि राज्यश्री आत्मदाह करने वाली है। वे शीघ्र ही पहुँचकर राज्यश्री को आत्मदाह करने से बचा लेते हैं। वे दिवाकर मित्र और राज्यश्री को अपने साथ ले कन्नौज लौट आते हैं।

तृतीय सर्ग

हर्षवर्द्धन अपनी बहन के छीने हुए राज्य को पुनः प्राप्त करने के लिए अपनी विशाल सेना के साथ कन्नौज पर आक्रमण कर देते हैं। वहाँ अनीतिपूर्वक अधिकार जमाने वाला मालव-कुलपुत्र भाग जाता है। राज्यवर्द्धन का हत्यारा गौड़पति-शशांक भी अपने गौड़-प्रदेश को भाग जाता है। सभी लोग हर्षवर्द्धन से कन्नौज का राजा बनने की प्रार्थना करते हैं, परन्तु हर्ष अपनी बहन का राज्य लेने से मना कर देते हैं। वे अपनी बहन से सिंहासन पर बैठने को कहते हैं, परन्तु बहन भी राज-सिंहासन ग्रहण करने से मना कर देती है। फिर हर्षवर्द्धन ही कन्नौज के संरक्षक बनकर अपनी बहन के नाम से वहाँ का शासन चलाते हैं।

इसके बाद छह वर्षों तक हर्षवर्द्धन का दिग्विजय-अभियान चलता है। उन्होंने कश्मीर, पंचनद, सारस्वत, मिथिला, उत्कल, गौड़, नेपाल, वल्लभी, सोरठ आदि सभी राज्यों को जीतकर तथा यवन, हूण और अन्य विदेशी शत्रुओं का नाश करके देश को अखण्ड और शक्तिशाली बनाकर एक सुसंगठित राज्य बनाया। अपनी बहन के स्नेहवश वे अपनी राजधानी भी कन्नौज को ही बनाते हैं और अनेक वर्षों तक धर्मपूर्वक शासन करते हैं। उनके राज्य में प्रजा सुखी थी तथा धर्म, संस्कृति और कला की भी पर्याप्त उन्नति हो रही थी।

प्रश्न 4. 'त्यागपथी' खण्डकाव्य के चतुर्थ सर्ग की कथा अपने शब्दों में लिखिए। (2014, 16, 18)

उत्तर—

चतुर्थ सर्ग

राज्यश्री एक बड़े राज्य की शासिका होकर भी दुःखी है। वह सब कुछ छोड़कर गेरुए वस्त्र धारणकर भिक्षुणी बनना चाहती है। वह हर्षवर्द्धन से संन्यास ग्रहण करने की आज्ञा माँगने जाती है तो हर्षवर्द्धन उसे समझाते हैं कि तुम तो मन से संन्यासिनी ही हो। यदि तुम गेरुए वस्त्र ही धारण करना चाहती हो तो अपने वचनानुसार मैं भी तुम्हारे साथ ही संन्यास ले लूँगा। तभी दिवाकर मित्र आकर उन्हें समझाते हैं कि वास्तव में आप दोनों भाई-बहन का मन संन्यासी है, किन्तु आज देश की रक्षा एवं सेवा संन्यास-ग्रहण करने से अधिक महत्त्वपूर्ण है। दिवाकर मित्र के समझाने पर दोनों संन्यास का विचार त्याग कर देशसेवा में लग जाते हैं।

प्रश्न 5. 'त्यागपथी' खण्डकाव्य के पंचम (अन्तिम) सर्ग की कथा अपनी भाषा (अपने शब्दों) में लिखिए। (2013, 14, 15, 16, 17, 18)

उत्तर—

पंचम सर्ग (अन्तिम सर्ग)

हर्षवर्द्धन एक आदर्श सम्राट के रूप में शासन करते हैं। उनके राज्य में प्रजा सब प्रकार से सुखी है, विद्वानों की पूजा की जाती है। सभी प्रजाजन आचरणवान्, धर्मपालक, स्वतन्त्र तथा सुरुचिसम्पन्न हैं। महाराज हर्षवर्द्धन सदैव जन-कल्याण एवं शास्त्र-चिन्तन में लगे रहते हैं। अपने भाई के ऐसे धर्मानुशासन को देखकर राज्यश्री भी प्रसन्न रहती है। सम्पूर्ण राज्य एकता के सूत्र में बँधा हुआ है। एक बार हर्षवर्द्धन तीर्थराज प्रयाग में सम्पूर्ण राजकोष को दान कर देने की घोषणा करते हैं—

हुई थी घोषणा सम्राट की साम्राज्य भर से,
करेंगे त्याग सारा कोष ले संकल्प कर में।

सब कुछ दान करके वे अपनी बहन से माँगकर वस्त्र पहनते हैं। इसके पश्चात् प्रत्येक पाँच वर्ष बाद वे इसी प्रकार अपना सर्वस्व दान करने लगे। इस दान को वे प्रजा-ऋण से मुक्ति का नाम देते हैं। अपने जीवन में वे छह बार इस प्रकार के सर्वस्व-दान का आयोजन करते हैं। हर्षवर्द्धन संसारभर में भारतीय संस्कृति का प्रसार करते हैं। इस प्रकार कर्त्तव्यपरायण, त्यागी, परोपकारी, परमवीर, महाराज हर्षवर्द्धन का शासन सब प्रकार से सुखकर तथा कल्याणकारी सिद्ध होता है।

प्रश्न 6. 'त्यागपथी' खण्डकाव्य के नायक (प्रमुख पात्र) हर्षवर्द्धन का चरित्र-चित्रण कीजिए। (2009, 10, 11, 12, 13, 14, 15, 16, 17, 18)

उत्तर— हर्षवर्द्धन 'त्यागपथी' के नायक हैं। इस खण्डकाव्य की सम्पूर्ण कथा का केन्द्र वही हैं। सम्पूर्ण घटनाचक्र उन्हीं के चारों ओर घूमता है। कथा आरम्भ से अन्त तक हर्षवर्द्धन से ही सम्बद्ध रहती है।

हर्षवर्द्धन के चरित्र की मुख्य विशेषताएँ निम्नलिखित हैं—

1. **आदर्श पुत्र एवं भाई**—इस खण्डकाव्य में हर्षवर्द्धन एक आदर्श पुत्र एवं आदर्श भाई के रूप में पाठकों के समक्ष आते हैं। अपने पिता के रुग्ण होने का समाचार पाकर वे आखेट से तुरन्त लौट आते हैं और यथासामर्थ्य उनकी चिकित्सा करवाते हैं। पिता के स्वस्थ न होने तथा माता द्वारा आत्मदाह करने की बात सुनकर वे भाव-विह्वल हो जाते हैं। वे अपनी माता से कहते हैं—

   मुझ मन्द पुण्य को छोड़ न माँ भी जाओ।
   छोड़ो विचार यह, मुझे चरणों में लिपटाओ॥

   आदर्श पुत्र के समान ही वे आदर्श भाई का कर्त्तव्य भी पूरा करते हैं। वे अपनी बहन राज्यश्री को अग्निदाह करने एवं संन्यास लेने से रोकते हैं। बड़े भाई राज्यवर्द्धन के प्रति भी उनका अपार प्रेम है।
2. **देश-प्रेमी**—हर्षवर्द्धन सच्चे देश-प्रेमी हैं। उन्होंने छोटे राज्यों को एक साथ मिलाकर विशाल राज्य की स्थापना की। देश की एकता एवं रक्षा हेतु वे बड़े-से-बड़ा युद्ध करने से भी नहीं हिचकते थे। उन्होंने एक बड़े राज्य की स्थापना ही नहीं की वरन् धर्मपूर्वक शासन भी किया। देश-सेवा ही उनके जीवन का व्रत है।
3. **अजेय योद्धा**—हर्षवर्द्धन एक अजेय योद्धा हैं। विद्रोही उनके तेजबल के आगे ठहर नहीं पाता। कोई भी राजा उन्हें पराजित नहीं कर सका। भारत के इतिहास में महाराज हर्षवर्द्धन की दिग्विजय, उनका युद्ध-कौशल और उनकी अनुपम वीरता स्वर्णाक्षरों में लिखी है।
4. **श्रेष्ठ शासक**—महाराज हर्षवर्द्धन एक श्रेष्ठ शासक हैं। उनका सम्पूर्ण जीवन प्रजा के हितार्थ ही समर्पित है। उनका शासन धर्म-शासन है। उनके शासन में सभी जनों को समान न्याय एवं सुख उपलब्ध है।
5. **महान त्यागी**—हर्षवर्द्धन महान त्यागी एवं आत्मसंयमी हैं। आत्मसंयम एवं सर्वस्व त्याग करने के कारण ही कवि ने उन्हें 'त्यागपथी' के नाम से पुकारा है। प्रयाग में छह बार अपना सर्वस्व प्रजा के लिए दे देना उनके महान त्याग का प्रमाण है। सर्वस्व दान के बाद वे अपने पहनने के वस्त्र भी अपनी बहन राज्यश्री से माँगकर पहनते हैं—

   दिये सम्राट ने निज वस्त्र आभूषण वहाँ पर।
   बहिन से भीख में माँग वसन पहिना वहाँ पर॥
6. **धर्मपरायण**—हर्षवर्द्धन के जीवन में धर्मपरायणता कूट-कूटकर भरी हुई है। उन्होंने शैव, शाक्त, वैष्णव और वेद-मत को एक साथ रखा। उन्होंने किसी के प्रति भी भेदभाव नहीं बरता।
7. **कर्त्तव्यनिष्ठ एवं दृढ़निश्चयी**—सम्राट हर्ष ने आजीवन अपने कर्त्तव्य का पालन किया। प्रारम्भ में इच्छा न होते हुए भी अपने भाई के कहने पर राज्य सँभाला और प्रत्येक संकटापन्न स्थिति में अपने कर्त्तव्य को निभाया। बहन राज्यश्री को वनों में खोजकर वे अपनी कर्त्तव्यनिष्ठा का परिचय देते हैं तथा भाई की छल से की गयी हत्या का समाचार सुनकर उन्होंने जो प्रतिज्ञा की थी, उससे उनके दृढ़निश्चय का पता चलता है—

   लेकर चरण रज आर्य की करता प्रतिज्ञा आज मैं,
   निर्मूल कर दूँगा धरा से अधर्म गौड़ समाज मैं।

इस प्रकार यह स्पष्ट होता है कि हर्ष का चरित्र एक महान राजा, आदर्श भाई, आदर्श पुत्र और महान त्यागी का चरित्र है, जिसके लिए प्रजा की सुख-सुविधा ही सर्वोपरि है और वह अपने मानवीय कर्त्तव्यों के प्रति भी निष्ठावान है।

प्रश्न 7. 'त्यागपथी' खण्डकाव्य के आधार पर राज्यश्री (प्रमुख नारी पात्र) का चरित्र-चित्रण कीजिए। (2008, 09, 11, 12, 13, 14, 15, 16, 17, 18)

उत्तर— राज्यश्री सम्राट हर्षवर्द्धन की छोटी बहन है। हर्षवर्द्धन के चरित्र के बाद राज्यश्री का चरित्र ही ऐसा है, जो पाठकों के हृदय एवं मस्तिष्क पर छा जाता है। राज्यश्री के चरित्र की विशेषताएँ निम्नवत् हैं—

1. **आदर्श नारी**—राज्यश्री आदर्श पुत्री, आदर्श बहन और आदर्श पत्नी के रूप में हमारे समक्ष आती है। वह यौवनावस्था में विधवा हो जाती है तथा गौड़पति द्वारा बन्दिनी बना ली जाती है। भाई राज्यवर्द्धन की मृत्यु के बाद वह कारागार से भाग जाती है और वन में भटकती हुई आत्मदाह के लिए तैयार हो जाती है; किन्तु अपने भाई हर्षवर्द्धन द्वारा बचा लेने पर वह तन-मन-धन से प्रजा की सेवा में ही अपना जीवन अर्पित कर देती है। हर्ष द्वारा राज्य सौंपे जाने पर भी वह राज्य स्वीकार नहीं करती। यही है उसका आदर्श रूप, जो सबको आकर्षित करता है—

   विपुल साम्राज्य की अग्रज सहित वह शासिका थी,
   अभ्यन्तर से तथागत की अनन्य उपासिका थी।

2. **देशभक्त एवं जनसेविका**—राज्यश्री के मन में देशप्रेम और लोक-कल्याण की भावना कूट-कूटकर भरी हुई है। हर्ष के समझाने पर वह वैधव्य का दुःख झेलती हुई भी देश-सेवा में लगी रहती है। देशप्रेम के कारण संन्यासिनी बनने का विचार छोड़ देती है तथा शेष जीवन को देश-सेवा में ही लगाने का व्रत लेती है।

3. **करुणामयी नारी**—राज्यश्री ने माता-पिता की मृत्यु तथा पति और बड़े भाई की मृत्यु के अनेक दुःख झेले। इन दुःखों ने उसे करुणा की मूर्ति बना दिया। अपने अग्रज हर्षवर्द्धन से मिलते समय उसकी कारुणिक दशा अत्यन्त मार्मिक है—

   सतत बिलखती थी बहिन माता-पिता की याद कर।
   ले नाम सखियों का, उमड़ती थी नदी-सी वारि भर॥
   था साश्रु अग्रज धैर्य देता माथ उसका ढाँपकर।
   रोती रही अविरल बहिन बेतस लता-सी काँपकर॥

4. **त्यागमयी नारी**—राज्यश्री का जीवन त्याग की भावना से आलोकित है। भाई हर्षवर्द्धन द्वारा कन्नौज का राज्य दिये जाने पर भी वह उसे स्वीकार नहीं करती। वह कहती है—

   स्वीकार न मुझको कान्यकुब्ज सिंहासन।
   बैठो उस पर तुम करो शौर्य से शासन॥

   हर्षवर्द्धन के समझाने पर भी वह नाममात्र की ही शासिका बनी रहती है।

5. **सुशिक्षिता एवं ज्ञान-सम्पन्न**—राज्यश्री सुशिक्षिता एवं शास्त्रों के ज्ञान से सम्पन्न है। जब आचार्य दिवाकर मित्र संन्यास धर्म का तात्त्विक विवेचन करते हुए उसे मानव-कल्याण के कार्य में लगने का उपदेश देते हैं तब वह इसे स्वीकार कर लेती है और आचार्य की आज्ञा का पूर्णरूपेण पालन करती है।

इस प्रकार राज्यश्री का चरित्र एक आदर्श भारतीय नारी का चरित्र है। उसके पातिव्रत-धर्म, देश-धर्म, करुणा और कर्त्तव्यनिष्ठा के आदर्श निश्चय ही अनुकरणीय हैं।

रश्मिरथी

मुजफ्फरनगर, शामली, बुलन्दशहर, मथुरा, वाराणसी, चन्दौली, फतेहपुर, उन्नाव, देवरिया आदि जनपदों के लिए। नवसृजित जनपदों के विद्यार्थी अपने जनपद में निर्धारित खण्डकाव्य के सम्बन्ध में अपने विषय-अध्यापक से जानकारी प्राप्त कर लें।

प्रश्न 1. 'रश्मिरथी' खण्डकाव्य की कथावस्तु (कथानक या कथासार) का संक्षेप में परिचय लिखिए। (2009,10,11,12,13,14, 15, 16, 17, 18)

या 'रश्मिरथी' खण्डकाव्य की प्रमुख कथा का निरूपण कीजिए। (2018)

उत्तर [**संकेत**—सभी सर्गों की कथावस्तु को संक्षेप में लिखिए।]

प्रश्न 2. 'रश्मिरथी' खण्डकाव्य के प्रथम सर्ग की कथा अपने शब्दों में लिखिए। (2017, 18)

उत्तर— **प्रथम सर्ग : कर्ण का शौर्य-प्रदर्शन**

प्रथम सर्ग के आरम्भ में कवि ने अग्नि के समान तेजस्वी एवं पवित्र पुरुषों की पृष्ठभूमि बनाकर कर्ण का परिचय दिया है। कर्ण की माता कुन्ती और पिता सूर्य थे। कर्ण कुन्ती के गर्भ से कौमार्यावस्था में उत्पन्न हुए थे, इसलिए कुन्ती ने लोकलाज के भय से उस नवजात शिशु को नदी में बहा दिया, जिसे एक निम्न जाति (सूत) के व्यक्ति ने पकड़ लिया और उसका पालन-पोषण किया। सूत के घर पलकर भी कर्ण शूरवीर, शीलवान, पुरुषार्थी और शस्त्र व शास्त्र-मर्मज्ञ बने। एक बार द्रोणाचार्य ने कौरव व पाण्डव राजकुमारों के शस्त्र-कौशल का सार्वजनिक प्रदर्शन किया। सभी लोग अर्जुन की बाण-विद्या पर मुग्ध हो गये, किन्तु तभी धनुष-बाण लिये कर्ण भी सभा में उपस्थित हो गया और उसने अर्जुन को द्वन्द्व-युद्ध के लिए चुनौती दी

आँख खोलकर देख, कर्ण के हाथों का व्यापार।
फूले सस्ता सुयश प्राप्त कर, उस नर को धिक्कार॥

कर्ण की इस चुनौती से सम्पूर्ण सभा आश्चर्यचकित रह गयी, तभी कृपाचार्य ने उसका नाम, जाति और गोत्र पूछे। इस पर कर्ण ने अपने को सूत-पुत्र बतलाया। फिर कृपाचार्य ने कहा कि राजपुत्र अर्जुन से समता प्राप्त करने के लिए तुम्हें पहले कहीं का राज्य प्राप्त करना चाहिए। इस पर दुर्योधन ने कर्ण की वीरता से मुग्ध होकर, उसे अंगदेश का राजा बना दिया और अपना मुकुट उतारकर कर्ण के सिर पर रख दिया। इस उपकार के बदले भावविह्वल कर्ण सदैव के लिए दुर्योधन का मित्र बन गया। इधर कौरव कर्ण को ससम्मान अपने साथ ले जाते हैं और उधर कुन्ती भाग्य की दुःखद विडम्बना पर मन मसोसती लड़खड़ाती हुई अपने रथ के पास पहुँचती है।

प्रश्न 3. 'रश्मिरथी' खण्डकाव्य के 'आश्रमवास' सर्ग की कथा अपने शब्दों में लिखिए। (2012, 18)

उत्तर— **द्वितीय सर्ग : आश्रमवास**

द्वितीय सर्ग का आरम्भ परशुराम के आश्रम-वर्णन से होता है। पाण्डवों के विरोध के कारण द्रोणाचार्य ने जब कर्ण को अपना शिष्य नहीं बनाया तो कर्ण परशुराम के आश्रम में धनुर्विद्या सीखने के लिए जाता है। परशुराम क्षत्रियों को शिक्षा नहीं देते थे। कर्ण के कवच और कुण्डल देखकर परशुराम ने उसे ब्राह्मण कुमार समझा और अपना शिष्य बना लिया।

एक दिन परशुराम कर्ण की जंघा पर सिर रखकर सो रहे थे कि तभी एक विषैला कीट कर्ण की जंघा को काटने लगा। गुरु की निद्रा न खुल जाए, इस कारण कर्ण अपने स्थान से हिला तक नहीं। जंघा से बहते रक्त की धारा के स्पर्श से परशुराम की निद्रा टूट गयी। कर्ण की इस अद्भुत सहनशक्ति को देखकर परशुराम ने कहा कि ब्राह्मण में इतनी सहनशक्ति नहीं होती, इसलिए तू अवश्य ही क्षत्रिय या अन्य जाति का है। कर्ण स्वीकार कर लेता है कि मैं सूत-पुत्र हूँ। क्रुद्ध परशुराम ने उसे तुरन्त अपने आश्रम से चले जाने को कहा और शाप दिया कि मैंने तुझे जो ब्रह्मास्त्र विद्या सिखलायी है, तू अन्त समय में उसे भूल जाएगा—

सिखलाया ब्रह्मास्त्र तुझे जो, काम नहीं वह आएगा।
है यह मेरा शाप समय पर, उसे भूल तू जाएगा॥

कर्ण गुरु की चरणधूलि लेकर आँसू-भरे नेत्रों से आश्रम छोड़कर चल देता है।

प्रश्न 4. 'रश्मिरथी' खण्डकाव्य के तृतीय सर्ग 'कृष्ण सन्देश' की कथा संक्षेप में लिखिए। (2012, 14, 15, 16, 18)

उत्तर— **तृतीय सर्ग : कृष्ण सन्देश**

कौरवों से द्यूत में हारने के कारण पाण्डवों को बारह वर्ष का वनवास तथा एक साल का अज्ञातवास भोगना पड़ा। तेरह वर्ष की यह अवधि व्यतीत कर पाण्डव अपने नगर इन्द्रप्रस्थ लौट आते हैं। पाण्डवों की ओर से श्रीकृष्ण कौरवों से सन्धि का प्रस्ताव लेकर हस्तिनापुर जाते हैं। श्रीकृष्ण ने कौरवों को बहुत समझाया, परन्तु दुर्योधन ने सन्धि-प्रस्ताव ठुकरा दिया तथा उल्टे श्रीकृष्ण को ही बन्दी बनाने का असफल प्रयास किया।

दुर्योधन के न मानने पर श्रीकृष्ण ने कर्ण को समझाया कि अब तो युद्ध निश्चित है, परन्तु उसे टालने का एकमात्र यही उपाय है कि तुम दुर्योधन का साथ छोड़ दो; क्योंकि तुम कुन्ती-पुत्र हो। अब तुम ही इस भारी विनाश को रोक सकते हो। इस पर कर्ण आहत होकर व्यंग्यपूर्वक पूछता है कि आप आज मुझे कुन्ती पुत्र बताते हैं। उस दिन क्यों नहीं कहा था, जब मैं जाति-गोत्रहीन सूत-पुत्र बना भरी सभा में अपमानित हुआ था। मुझे स्नेह और सम्मान तो दुर्योधन ने ही दिया था। मेरा तो रोम-रोम दुर्योधन का ऋणी है।

फिर भी आप मेरे जन्म का रहस्य युधिष्ठिर को मत बताइएगा; क्योंकि मेरे जन्म का रहस्य जानने पर वे ज्येष्ठ पुत्र होने के कारण अपना राज्य मुझे दे देंगे और मैं वह राज्य दुर्योधन को दे डालूँगा—

धरती की तो है क्या बिसात ? आ जाये अगर बैकुण्ठ हाथ।
उसको भी न्यौछावर कर दूँ, कुरुपति के चरणों पर धर दूँ ॥

इतना कहकर और श्रीकृष्ण को प्रणाम कर कर्ण चला जाता है।

इस सर्ग की कथा से जहाँ हमें श्रीकृष्ण के महान कूटनीतिज्ञ और अलौकिक शक्तिसम्पन्न होने की विशिष्टता दृष्टिगोचर होती है वहीं कर्ण के अन्दर हमें सच्चे मित्र और मित्र के प्रति कृतज्ञ होने के गुण दिखाई पड़ते हैं।

प्रश्न 5. 'रश्मिरथी' के पंचम सर्ग में कुन्ती-कर्ण के संवाद का सारांश अपने शब्दों में लिखिए। (2011, 12, 13, 14, 15, 16)

उत्तर— **पंचम सर्ग : माता की विनती**

इस सर्ग का आरम्भ कुन्ती की चिन्ता से होता है। कुन्ती इस कारण चिन्तित है कि रण में मेरे पुत्र कर्ण और अर्जुन परस्पर युद्ध करेंगे। कुन्ती व्याकुल हो कर्ण से मिलने जाती है। उस समय कर्ण सन्ध्या कर रहा था, आहट पाकर कर्ण का ध्यान टूट जाता है। उसने कुन्ती को प्रणाम कर उसका परिचय पूछा। कुन्ती ने बताया कि तू सूत-पुत्र नहीं मेरा पुत्र है। तेरा जन्म मेरी कोख से तब हुआ था, जब मैं अविवाहिता थी। मैंने लोक-लज्जा के भय से तुझे मंजूषा (पेटी) में रखकर नदी में बहा दिया था, परन्तु अब मैं यह सहन नहीं कर सकती कि मेरे ही पुत्र एक-दूसरे से युद्ध करें; अत: मैं तुझसे प्रार्थना करने आयी हूँ कि तुम अपने छोटे भ्राताओं के साथ मिलकर राज्य का भोग करो।

कर्ण ने कहा कि मुझे अपने जन्म के विषय में सब कुछ ज्ञात है, परन्तु मैं अपने मित्र दुर्योधन का साथ कभी नहीं छोड़ सकता। असहाय कुन्ती ने कहा कि तू सबको दान देता है, क्या अपनी माँ को भीख नहीं दे सकता? कर्ण ने कहा कि माँ! मैं तुम्हें एक नहीं चार पुत्र दान में देता हूँ। मैं अर्जुन को छोड़कर तुम्हारे किसी पुत्र को नहीं मारूँगा। यदि अर्जुन के हाथों मैं मारा गया तो तुम पाँच पुत्रों की माँ रहोगी ही, परन्तु यदि मैंने युद्ध में अर्जुन को मार दिया तो विजय दुर्योधन की होगी और मैं दुर्योधन का साथ छोड़कर तुम्हारे पास आ जाऊँगा। तब भी तुम पाँच पुत्रों की ही माँ रहोगी। कुन्ती निराश मन लौट आती है—

हो रहा मौन राधेय चरण को छूकर,
दो बिन्दु अश्रु के गिरे दृगों से चूकर।
बेटे का मस्तक सूँघ बड़े ही दुःख से,
कुन्ती लौटी कुछ कहे बिना ही मुख से ॥

प्रश्न 6. 'रश्मिरथी' के आधार पर अन्तिम सप्तम सर्ग (कर्ण के बलिदान) की कथा संक्षेप में लिखिए। (2011, 12, 14, 15, 16, 17, 18)

उत्तर—'रश्मिरथी' का यह अन्तिम सर्ग है। कौरव सेनापति कर्ण ने पाण्डवों की सेना पर भीषण आक्रमण किया। कर्ण की गर्जना से पाण्डव सेना में भगदड़ मच जाती है। युधिष्ठिर युद्धभूमि से भागने लगते हैं तो कर्ण उन्हें पकड़ लेता है, किन्तु कुन्ती को दिये वचन का स्मरण कर युधिष्ठिर को छोड़ देता है। इसी प्रकार भीम, नकुल और सहदेव को भी पकड़-पकड़कर छोड़ देता है। कर्ण का सारथी शल्य उसके रथ को अर्जुन के रथ के निकट ले आता है। कर्ण के भीषण बाण-प्रहार से अर्जुन मूर्च्छित हो जाता है। चेतना लौटने पर श्रीकृष्ण अर्जुन को पुन: कर्ण से युद्ध करने के लिए उत्तेजित करते हैं। दोनों ओर से घमासान युद्ध होता है। तभी कर्ण के रथ का पहिया रक्त के कीचड़ में फँस जाता है। कर्ण रथ से उतरकर पहिया निकालने लगता है। इसी समय श्रीकृष्ण अर्जुन को कर्ण पर बाण-प्रहार करने के लिए कहते हैं—

खड़ा है देखता क्या मौन भोले !
शरासन तान, बस अवसर यही है,
घड़ी फिर और मिलने की नहीं है।
विशिख कोई गले के पार कर दे,
अभी ही शत्रु का संहार कर दे।

कर्ण धर्म की दुहाई देता है तो श्रीकृष्ण उसे कौरवों के पूर्व कुकर्मों का स्मरण दिलाते हैं। इसी वार्त्तालाप में अवसर देखकर अर्जुन कर्ण पर प्रहार कर देता है और कर्ण की मृत्यु हो जाती है।

अन्त में युधिष्ठिर आदि सभी कर्ण की मृत्यु पर प्रसन्न हैं, किन्तु श्रीकृष्ण दु:खी हैं। वे युधिष्ठिर से कहते हैं कि विजय तो अवश्य मिली, पर मिली मर्यादा खोकर। वास्तव में चरित्र की दृष्टि से तो कर्ण ही विजयी रहा। आप लोग कर्ण को भीष्म और द्रोणाचार्य की भाँति ही सम्मान दीजिए। यहाँ पर इस खण्डकाव्य की कथा समाप्त हो जाती है।

प्रश्न 7. 'रश्मिरथी' के आधार पर कर्ण के चरित्र की प्रमुख विशेषताओं का उल्लेख कीजिए। (2009, 10, 11, 12, 13, 14, 15, 16, 18)

या **'रश्मिरथी' के नायक का चरित्र-चित्रण कीजिए।** (2016, 17)

उत्तर—'रश्मिरथी' कर्ण के चरित्र पर आधारित खण्डकाव्य है। कर्ण का चरित्र शील की प्रतिमूर्ति, शौर्य व पौरुष का अगाध सिन्धु, शक्ति का स्रोत, सत्य-साधना-दान-त्याग का तपोवन तथा आर्य-संस्कृति का आलोकमय तेज है। कर्ण के चरित्र की प्रमुख विशेषताएँ निम्नवत् हैं—

1. **उत्कृष्ट चरित्र**—कर्ण 'रश्मिरथी' का नायक है। काव्य की सम्पूर्ण कथा कर्ण के चारों ओर घूमती है। काव्य का नामकरण भी कर्ण को ही नायक सिद्ध करता है। 'रश्मिरथी' का अर्थ है—वह मनुष्य, जिसका रथ रश्मि अर्थात् पुण्य का हो। इस काव्य में कर्ण का चरित्र ही पुण्यतम है। कर्ण के आगे अन्य किसी पात्र का चरित्र नहीं ठहर पाता। कर्ण के सम्बन्ध में कवि के ये शब्द द्रष्टव्य हैं—

   तन से समरशूर, मन से भावुक, स्वभाव से दानी।
   जाति गोत्र का नहीं, शील का पौरुष का अभिमानी ॥

2. **साहसी और वीर योद्धा**—इस खण्डकाव्य के आरम्भ में ही कर्ण हमें एक वीर योद्धा के रूप में दिखाई देता है। शस्त्र-विद्या-प्रदर्शन के समय वह प्रदर्शन-स्थल पर उपस्थित होकर अर्जुन को ललकारता है तो सब स्तब्ध रह जाते हैं। जब इस पर कृपाचार्य कर्ण से उसकी जाति-गोत्र आदि पूछते हैं तो कर्ण उनसे कहता है—

   पूछो मेरी जाति, शक्ति हो तो मेरे भुज बल से।
   रवि-समान दीप्ति ललाट से, और कवच कुण्डल से ॥

3. **सच्चा मित्र**—दुर्योधन ने जाति-अपमान से कर्ण की रक्षा उसे राजा बनाकर की, तभी से कर्ण दुर्योधन का अभिन्न मित्र बन गया। कृष्ण और कुन्ती के समझाने पर भी वह दुर्योधन का साथ नहीं छोड़ता और अन्त समय तक अपनी मित्रता के प्रति पूर्ण समर्पित रहता है।

4. **सच्चा गुरुभक्त और विनयी**—कर्ण गुरु के प्रति परम विनयी एवं श्रद्धालु है। कीट कर्ण की जाँघ काटकर भीतर घुस जाता है, रक्त की धारा बहने लगती है, पर कर्ण पैर नहीं हिलाता; क्योंकि हिलने से उसकी जाँघ पर सिर रखकर सोये गुरु की नींद खुल जाएगी। आँखें खुलने पर वह गुरु को वास्तविकता बता देता है तो वे क्रोधित होकर उसे आश्रम से निकाल देते हैं, परन्तु कर्ण अपनी विनय नहीं छोड़ता और जाते समय भी गुरु की चरण-धूलि लेता है।

5. **परम दानवीर**—कर्ण के चरित्र की एक प्रमुख विशेषता यह है कि वह धन-सम्पत्ति की लिप्सा से मुक्त है। इसलिए प्रतिदिन प्रात:काल सन्ध्या-वन्दन करने के बाद वह याचकों को दान देता है। ब्राह्मण-वेश में आये इन्द्र को वह अपने जीवन-रक्षक कवच और कुण्डल तक दान में दे देता है। अपनी माता कुन्ती को युधिष्ठिर, भीम, नकुल और सहदेव को न मारने का अभयदान देता है। कर्ण की दानशीलता के सम्बन्ध में कवि कहता है—

रवि-पूजन के समय सामने, जो भी याचक आता था।
मुँह माँगा वह दान कर्ण से, अनायास ही पाता था॥

6. **महान सेनानी**—कौरवों की ओर से कर्ण महाभारत के युद्ध में सेनापति है। वह शर-शय्या पर लेटे भीष्म पितामह से युद्ध हेतु आशीर्वाद लेने जाता है। भीष्म उसके विषय में कहते हैं—

अर्जुन को मिले कृष्ण जैसे। तुम मिले कौरवों को वैसे॥

युद्ध में कर्ण ने अपने रण-कौशल से पाण्डवों की सेना में हा-हाकार मचा दिया। उसकी वीरता की प्रशंसा श्रीकृष्ण भी करते हैं।

7. **अन्य विशेषताएँ**—श्रीकृष्ण का युधिष्ठिर से कहा गया निम्नलिखित कथन कर्ण की चारित्रिक श्रेष्ठता की पुष्टि करता है—

हृदय का निष्कपट, पावन क्रिया का,
दलित हारक, समुद्धारक त्रिया का।
बड़ा बेजोड़ दानी था, सदय था,
युधिष्ठिर! कर्ण का अद्भुत हृदय था॥

इस प्रकार हम पाते हैं कि कवि का मुख्य मन्तव्य कर्ण के चरित्र के शीलपक्ष, मैत्रीभाव एवं शौर्य का चित्रण करना रहा है, जिसके लिए उसने कर्ण को राज्य और विजय की गलत महत्त्वाकांक्षाओं से पीड़ित न दिखाकर षड्यन्त्रों, परीक्षाओं और प्रलोभनों की स्थितियों में उसे अडिग चित्रित किया है। यही स्थिति उसको खण्डकाव्य का महान नायक बना देती है।

प्रश्न 8. 'रश्मिरथी' के आधार पर श्रीकृष्ण का चरित्र-चित्रण कीजिए। (2012, 14, 15, 16, 17, 18)

या **'रश्मिरथी' खण्डकाव्य के आधार पर 'कृष्ण' की चारित्रिक विशेषताओं का उल्लेख कीजिए।** (2015)

या **'रश्मिरथी' के प्रतिनायक का चरित्र-चित्रण कीजिए।** (2017)

या **'रश्मिरथी' खण्डकाव्य के नायक का चरित्र-चित्रण कीजिए।** (2017)

उत्तर—'रश्मिरथी' खण्डकाव्य में श्रीकृष्ण के चरित्र की निम्नलिखित विशेषताएँ दिखाई देती हैं—

1. **युद्ध-विरोधी**—पाण्डवों के वनवास से लौटने के बाद श्रीकृष्ण कौरवों को समझाने के लिए स्वयं हस्तिनापुर जाते हैं और युद्ध टालने का भरसक प्रयास कर करते हैं, किन्तु हठी दुर्योधन नहीं मानता। इसके बाद वे कर्ण को भी समझाते हैं, परन्तु कर्ण भी अपने प्रण से नहीं हटता। अन्त में श्रीकृष्ण कहते हैं—

यश मुकुट मान सिंहासन ले, बस एक भीख मुझको दे दे।
कौरव को तज रण रोक सखे, भू का हर भावी शोक सखे॥

2. **निर्भीक एवं स्पष्टवादी**—श्रीकृष्ण केवल अनुनय-विनय ही करना नहीं जानते, वरन् वे निर्भीक एवं स्पष्ट वक्ता भी हैं। जब दुर्योधन समझाने से नहीं मानता तो वे उसे चेतावनी देते हुए कहते हैं—

तो ले मैं भी अब जाता हूँ, अन्तिम संकल्प सुनाता हूँ।
याचना नहीं अब रण होगा, जीवन-जय या कि मरण होगा॥

3. **शीलवान व व्यावहारिक**—श्रीकृष्ण के सभी कार्य उनके शील के परिचायक हैं। वास्तव में वे एक सदाचारपूर्ण समाज की स्थापना करना चाहते हैं। वे शील को ही जीवन का सार मानते हैं—

नहीं पुरुषार्थ केवल जाति में है, विभा का सार शील पुनीत में है।
साथ ही वह सांसारिक सिद्धि और सफलता के सभी सूत्रों से भी अवगत हैं।

4. **गुणों के प्रशंसक**—श्रीकृष्ण अपने विरोधी के गुणों का भी आदर करते हैं। कर्ण उनके विरुद्ध लड़ता है, परन्तु श्रीकृष्ण कर्ण का गुणगान करते नहीं थकते—

..... वीर शत बार धन्य, तुझ-सा न मित्र कोई अनन्य।

5. **महान कूटनीतिज्ञ**—श्रीकृष्ण महान कूटनीतिज्ञ हैं। पाण्डवों की विजय श्रीकृष्ण की कूटनीति के कारण ही हुई। वे पाण्डवों की ओर के कूटनीतिज्ञ का कार्य कर दुर्योधन की बड़ी शक्ति कर्ण को उससे अलग करने का प्रयत्न करते हैं। उनकी कूटनीतिज्ञता का प्रमाण कर्ण से कहा गया उनका यह कथन है—

कुन्ती का तू ही तनय श्रेष्ठ, बलशील, में परम श्रेष्ठ।
मस्तक पर मुकुट धरेंगे हम, तेरा अभिषेक करेंगे हम॥

6. **अलौकिक शक्तिसम्पन्न**—कवि ने श्रीकृष्ण के चरित्र में जहाँ मानव-स्वभाव के अनुरूप अनेक साधारण विशेषताओं का समावेश किया है, वहीं उन्हें अलौकिक शक्ति-सम्पन्न रूप देकर लीलापुरुष भी सिद्ध किया है। जब दुर्योधन उन्हें कैद करना चाहता है, तब वे अपने विराट स्वरूप में प्रकट हो जाते हैं—

हरि ने भीषण हुंकार किया, अपना स्वरूप विस्तार किया।
डगमग डगमग दिग्गज डोले, भगवान् कुपित होकर बोले–
"जंजीर बढ़ाकर साध मुझे, हाँ हाँ दुर्योधन बाँध मुझे।"

इस प्रकार इस खण्डकाव्य में श्रीकृष्ण को श्रेष्ठ कूटनीतिज्ञ, किन्तु महान् लोकोपकारक के रूप में चित्रित करके कवि ने उनके पौराणिक चरित्र को युगानुरूप बनाकर प्रस्तुत किया है। कवि के इस प्रस्तुतीकरण की विशेषता यह है कि इससे कहीं भी उनके पौराणिक स्वरूप को क्षति नहीं पहुँची है। कृष्ण का यह व्यक्तित्व कवि की कविता में युगानुसार प्रकट हुआ है।

प्रश्न 9. 'रश्मिरथी' के आधार पर कुन्ती का चरित्र-चित्रण कीजिए। (2009, 10, 11, 16, 17, 18)

या **'रश्मिरथी' खण्डकाव्य में प्रस्तुत कुन्ती के मन की घुटन का विवेचन कीजिए।**

उत्तर— कुन्ती पाण्डवों की माता है। अविवाहिता कुन्ती के गर्भ से सूर्य-पुत्र कर्ण का जन्म हुआ था। इस प्रकार कुन्ती के पाँच नहीं वरन् छः पुत्र थे। कुन्ती की चारित्रिक विशेषताएँ निम्नवत् हैं—

1. **वात्सल्यमयी माता**—कुन्ती को जब यह ज्ञात होता है कि कर्ण का उसके अन्य पाँच पुत्रों से युद्ध होने वाला है तो वह कर्ण को मनाने उसके पास पहुँच जाती है। उस समय कर्ण सूर्य की उपासना कर रहा था। अपने पुत्र कर्ण के तेजोमय रूप को देख कुन्ती फूली नहीं समाती। सन्ध्या से आँखें खोलने पर कर्ण स्वयं को राधा का पुत्र बताता है तो कुन्ती यह सुनकर व्याकुल हो जाती है—

रे कर्ण! बेध मत मुझे निदारुण शर से।
राधा का सुत तू नहीं, तनय मेरा है॥

कर्ण के पास से निराश लौटती हुई कुन्ती कर्ण को अपने अंक में भर लेती है, जो उसके वात्सल्य का प्रमाण है।

2. **अन्तर्द्वन्द्व ग्रस्त**—जब कुन्ती के ही पुत्र परस्पर शत्रु बने खड़े हैं, तब कुन्ती के हृदय में अन्तर्द्वन्द्व की भीषण आँधी उठ रही थी। वह इस समय बड़ी ही उलझन में पड़ी हुई है। पाँचों पाण्डवों और कर्ण में से किसी की हानि हो, पर वह हानि तो कुन्ती की ही होगी। वह अपने पुत्रों का सुख-दुःख अपना सुख-दुःख समझती है—

दो में किसका उर फटे, फटूँगी मैं ही।
जिसकी भी गर्दन कटे, कटूँगी मैं ही॥

3. **समाज-भीरु**—कुन्ती लोक-लाज से बहुत अधिक भयभीत एक भारतीय नारी की प्रतीक है। कौमार्यावस्था में सूर्य से उत्पन्न नवजात शिशु (कर्ण) को वह लोक-निन्दा के भय से गंगा की लहरों में बहा देती है। इस बात को वह कर्ण के समक्ष भी स्वीकार करती है—

मंजूषा में धर वज्र कर मन को,
धारा में आयी छोड़ हृदय के धन को।

कर्ण को युवा और वीरत्व की प्रतिमूर्ति बने देखकर भी अपना पुत्र कहने का साहस नहीं कर पाती। जब युद्ध की विभीषिका सम्मुख आ जाती है, तो वह कर्ण से अपनी दयनीय स्थिति को निम्नलिखित शब्दों में व्यक्त करती है—

बेटा धरती पर बड़ी दीन है नारी,
अबला होती, सचमुच योषिता कुमारी।
है कठिन बन्द करना समाज के मुख को,
सिर उठा न पा सकती पतिता निज सुख को।

4. **निश्छल**—कुन्ती का हृदय छलरहित है। वह कर्ण के पास मन में कोई छल रखकर नहीं, वरन् निष्कपट भाव से गयी थी। यद्यपि कर्ण उसकी बातें स्वीकार नहीं करता, किन्तु कुन्ती उसके प्रति अपना ममत्व कम नहीं करती।

5. **बुद्धिमती और वाक्पटु**—कुन्ती एक बुद्धिमती नारी है। वह अवसर को पहचानने तथा दूरगामी परिणाम का अनुमान करने में समर्थ है। कर्ण-अर्जुन युद्ध का निश्चय जानकर वह समुचित कदम उठाती है—

सोचा कि आज भी चूक अगर जाऊँगी,
भीषण अनर्थ फिर रोक नहीं पाऊँगी ।
फिर भी तू जीता रहे, न अपयश जाने,
अब आ क्षणभर मैं तुझे अंक में भर लूँ ॥

इस प्रकार कवि ने 'रश्मिरथी' में कुन्ती के चरित्र में कई उच्चकोटि के गुणों के साथ-साथ मातृत्व के भीषण अन्तर्द्वन्द्व की सृष्टि करके, इस विवश माँ की ममता को महान् बना दिया है।

आलोकवृत्त

सहारनपुर, अलीगढ़, इलाहाबाद, फर्रुखाबाद, मैनपुरी, सीतापुर, मिर्जापुर, सोनभद्र जनपदों के लिए। नवसृजित जनपदों के विद्यार्थी अपने जनपद में निर्धारित खण्डकाव्य के सम्बन्ध में अपने विषय-अध्यापक से जानकारी प्राप्त कर लें।

प्रश्न 1. 'आलोकवृत्त' खण्डकाव्य की कथावस्तु (कथानक अथवा सारांश) पर संक्षेप में (अपने शब्दों में) प्रकाश डालिए। (2009, 11, 12, 13, 14, 15, 16, 17, 18)

उत्तर— [**संकेत**—सभी सर्गों की कथावस्तु को संक्षेप में लिखिए।]

प्रश्न 2. 'आलोकवृत्त' खण्डकाव्य के 'भारत के स्वर्णिम अतीत' नामक प्रथम सर्ग का कथानक लिखिए। (2012, 16, 18)

उत्तर—

प्रथम सर्ग : भारत का स्वर्णिम अतीत

प्रथम सर्ग में कवि ने भारत के अतीत के गौरव तथा तत्कालीन पराधीनता का वर्णन किया है। कवि ने बताया है कि भारत वेदों की भूमि रहा है। भारतवर्ष ने ही संसार को सर्वप्रथम ज्ञान की ज्योति दी थी, किन्तु दुर्भाग्यवश एक समय ऐसा आया कि भारतवासी यह भूल गये कि हम कितने गौरवमण्डित थे ? इसका परिणाम यह हुआ कि भारतवर्ष सैकड़ों वर्ष तक दासता की बेड़ियों में जकड़ा रहा। सन् 1857 ई० की क्रान्ति के पश्चात् गुजरात के 'पोरबन्दर' नामक स्थान पर एक दिव्य ज्योतिर्मय विभूति मोहनदास करमचन्द गांधी के रूप में प्रकट हुई, जिसने हमें विदेशियों की दासता से मुक्त करवाया।

प्रश्न 3. 'आलोकवृत्त' खण्डकाव्य के द्वितीय सर्ग का सारांश लिखिए। (2011, 12, 16, 18)

उत्तर— द्वितीय सर्ग में गांधी जी के जीवन के क्रमिक विकास पर प्रकाश डाला गया है। वे बचपन में कुसंगति में फँस गये थे, किन्तु शीघ्र ही उन्होंने अपने पिता के समक्ष अपनी त्रुटियों पर पश्चात्ताप किया और दुर्गुणों को सदैव के लिए छोड़ने की प्रतिज्ञा की और आजीवन उसका निर्वाह किया। इसके बाद कस्तूरबा के साथ गांधी जी का विवाह हुआ। इसके कुछ समय बाद उनके पिताजी का देहान्त हो गया। वे उच्च शिक्षा प्राप्त करने के लिए इंग्लैण्ड गये। उनकी माँ ने विदेश में रहकर मांस-मदिरा का प्रयोग न करने के लिए समझाया—

मद्य-मांस-मदिराक्षी से बचने की शपथ दिलाकर ।
माँ ने तो दी विदा पुत्र को मंगल तिलक लगाकर ॥

इंग्लैण्ड में सात्त्विक जीवन व्यतीत करते हुए भी वे एक दिन एक कलुषित स्थान पर पहुँच गये, लेकिन उन्होंने अपने चरित्र को कलुषित होने से बचा लिया। वहाँ से वे बैरिस्टर बनकर भारत लौटे। भारत आने पर उन्हें उनकी माता के देहान्त का दुःखद समाचार मिला। यहीं पर द्वितीय सर्ग की कथा समाप्त हो जाती है।

प्रश्न 4. 'आलोकवृत्त' खण्डकाव्य के तृतीय सर्ग का सारांश लिखिए। (2012, 15, 16)

उत्तर— तृतीय सर्ग में गांधी जी के अफ्रीका में निवास का वर्णन है। एक बार रेलगाड़ी में यात्रा करते समय एक गोरे अंग्रेज ने उन्हें काला होने के कारण अपमानित करके रेलगाड़ी से नीचे उतार दिया। रंगभेद की इस कुटिल नीति से गांधी जी के हृदय को बहुत दुःख पहुँचा। वे भारतीयों की दुर्दशा से चिन्तित हो उठे। यहाँ पर कवि ने गांधी जी के मन में उत्पन्न अन्तर्द्वन्द्व का बड़ा सुन्दर चित्रण किया है। गांधी जी ने सत्य और अहिंसा का सहारा लेकर असत्य और हिंसा का सामना करने का दृढ़निश्चय किया। अपनी जन्मभूमि से दूर विदेश की भूमि पर उन्होंने मानवता के उद्धार का प्रण लिया—

पशु-बल के सम्मुख आत्मा की शक्ति जगानी होगी ।
मुझे अहिंसा से हिंसा की आग बुझानी होगी ॥

सत्य और अहिंसा के इस मार्ग को उन्होंने सत्याग्रह का नाम दिया। गांधी जी ने दक्षिण अफ्रीका में सैकड़ों सत्याग्रहियों का नेतृत्व किया। दक्षिण अफ्रीका में संघर्ष-समाप्ति के साथ ही तृतीय सर्ग समाप्त हो जाता है।

प्रश्न 5. 'आलोकवृत्त' खण्डकाव्य के चतुर्थ सर्ग की कथा संक्षेप में लिखिए। (2011, 14, 15, 16, 18)

उत्तर— चतुर्थ सर्ग में गांधी जी दक्षिण अफ्रीका से भारत लौट आते हैं। भारत आकर गांधी जी ने लोगों को स्वतन्त्रता प्राप्त करने हेतु जाग्रत किया। उन्होंने साबरमती नदी के तट पर अपना आश्रम बनाया। अनेक लोग गांधी जी के अनुयायी हो गये। डॉ० राजेन्द्र प्रसाद, जवाहरलाल नेहरू, सरदार वल्लभभाई पटेल, विनोबा भावे, राजगोपालाचारी, सरोजिनी नायडू, 'दीनबन्धु', मदनमोहन मालवीय, सुभाषचन्द्र बोस आदि अनेक प्रमुख देश-प्रेमी भी गांधी जी के अनुयायी बन गये। अंग्रेज देश की जनता पर भारी अत्याचार कर रहे थे। गांधी जी ने चम्पारन में नील की खेती को लेकर आन्दोलन आरम्भ किया; जिसमें वे सफल हुए। एक अंग्रेज द्वारा अपनी पत्नी के हाथों गांधी जी को विष देने तक का प्रयास किया गया, परन्तु वह स्त्री गांधी जी के दर्शन कर ऐसा न कर सकी। इसके विपरीत उन दोनों का हृदय-परिवर्तन हो गया। इसी सर्ग में खेड़ा-सत्याग्रह का वर्णन भी हुआ है। कवि ने इस सत्याग्रह में सरदार वल्लभभाई पटेल का चरित्र-चित्रण विशेष रूप से किया है।

प्रश्न 6. 'आलोकवृत्त' खण्डकाव्य के पंचम सर्ग का सारांश लिखिए। (2011)
या **'आलोकवृत्त' खण्डकाव्य की प्रमुख घटना का वर्णन कीजिए।** (2016)

उत्तर— पंचम सर्ग में कवि ने यह चित्रित किया है कि गांधी जी के नेतृत्व में स्वाधीनता आन्दोलन निरन्तर बढ़ता गया। अंग्रेजों की दमन-नीति भी बढ़ती गयी। गांधी जी के नेतृत्व में स्वतन्त्रता-प्रेमियों का समूह नागपुर पहुँचता है। नागपुर के कांग्रेस-अधिवेशन में गांधी जी के ओजस्वी भाषण ने भारतवर्ष के लोगों में नयी स्फूर्ति भर दी, किन्तु अंग्रेजों की 'फूट डालो और शासन करो' की नीति ने हिन्दुओं-मुसलमानों में साम्प्रदायिक दंगे करवा दिये। गांधी जी को बन्दी बना लिया गया। उन्होंने सत्याग्रह का कार्यक्रम स्थगित कर दिया। कारागार से छूटने के बाद उन्होंने हिन्दू-मुस्लिम एकता, शराब-मुक्ति, हरिजनोत्थान, खादी-प्रचार आदि रचनात्मक कार्यों में अपना सम्पूर्ण समय लगाना आरम्भ कर दिया। हिन्दू-मुस्लिम एकता के लिए गांधी जी ने इक्कीस दिनों का उपवास रखा—

आत्मशुद्धि का यज्ञ कठिन यह पूरा होने को जब आया ।
बापू ने इक्कीस दिनों के अनशन का संकल्प सुनाया ॥

फिर लाहौर में पूर्ण स्वतन्त्रता के प्रस्ताव के साथ ही पाँचवाँ सर्ग समाप्त हो जाता है।

प्रश्न 7. 'आलोकवृत्त' खण्डकाव्य के 'षष्ठ' सर्ग और 'अष्टम सर्ग' का सारांश संक्षेप में अपने शब्दों में लिखिए। (2009, 11, 12, 14)

उत्तर—

षष्ठ सर्ग : नमक सत्याग्रह

इस सर्ग में गांधी जी द्वारा चलाये गये नमक-सत्याग्रह का वर्णन हुआ है। गांधी जी ने समुद्रतट पर बसे 'डाण्डी' नामक स्थान की पैदल यात्रा 24 दिनों में पूरी की। नमक आन्दोलन में हजारों लोगों को बन्दी बनाया गया। अंग्रेज सरकार ने लन्दन में 'गोलमेज सम्मेलन' बुलाया, जिसमें गांधी जी को आमन्त्रित किया गया। इसके परिणामस्वरूप सन् 1937 ई० में 'प्रान्तीय स्वराज्य' की स्थापना हुई। इसके साथ ही षष्ठ सर्ग समाप्त हो जाता है।

अष्टम सर्ग : भारतीय स्वतन्त्रता का अरुणोदय

अष्टम सर्ग का आरम्भ भारत की स्वतन्त्रता से किया गया है। स्वतन्त्रता-प्राप्ति के पश्चात् देशभर में हिन्दू-मुस्लिम-साम्प्रदायिक दंगे हो जाते हैं। गांधी जी को इससे बहुत दु:ख हुआ। वे ईश्वर से प्रार्थना करते हैं—

प्रभो ! इस देश को सत्पथ दिखाओ, लगी जो आग भारत में बुझाओ।
मुझे दो शक्ति इसको शान्त कर दूँ, लपट में रोष की निज शीश धर दूँ॥

इस कल्याण-कामना के साथ ही यह खण्डकाव्य समाप्त हो जाता है।

प्रश्न 8. 'आलोकवृत्त' खण्डकाव्य के 'सप्तम सर्ग' का सारांश लिखिए। (2014, 15, 16, 17, 18)

उत्तर— द्वितीय विश्वयुद्ध आरम्भ हो गया। अंग्रेज सरकार भारतीयों का सहयोग तो चाहती थी, किन्तु उन्हें पूर्ण अधिकार देना नहीं चाहती थी। क्रिप्स मिशन की असफलता के बाद 1942 ई० में गांधी जी ने 'अंग्रेजो भारत छोड़ो' का नारा दिया। सम्पूर्ण देश में अंग्रेजों के विरुद्ध विद्रोह की ज्वाला भड़क उठी। इसका वर्णन कवि ने बड़े ही सजीव रूप से किया है—

थे महाराष्ट्र-गुजरात उठे, पंजाब-उड़ीसा साथ उठे।
बंगाल इधर, मद्रास उधर, मरुथल में थी ज्वाला घर-घर॥

कवि ने इस आन्दोलन का वर्णन अत्यधिक ओजस्वी भाषा में किया है। बम्बई अधिवेशन के बाद गांधी जी सहित सभी भारतीय नेता जेल में डाल दिये जाते हैं। पूरे देश में इसकी विद्रोही प्रतिक्रिया होती है। कवि के शब्दों में—

जब क्रान्ति लहर चल पड़ती है, हिमगिरि की चूल खड़ती है।
साम्राज्य उलटने लगते हैं, इतिहास पलटने लगते हैं॥

इस सर्ग में कवि ने गांधी जी एवं कस्तूरबा के मध्य हुए एक वार्तालाप का भी भावपूर्ण चित्रण किया है जिसमें गांधी जी के मानवीय स्वभाव और कस्तूरबा की सेवा-भावना, मूक त्याग और बलिदान का सम्यक् निरूपण किया है।

प्रश्न 9. 'आलोकवृत्त' के आधार पर गांधी जी की चारित्रिक विशेषताओं पर प्रकाश डालिए। (2009, 10, 11, 12, 13, 14, 15, 16, 18)

या 'आलोकवृत्त' खण्डकाव्य के आधार पर महात्मा गांधी के जीवन व राष्ट्रीय आदर्शों पर प्रकाश डालिए। (2015)

या 'आलोकवृत्त' के किसी एक प्रमुख पात्र का चरित्र-चित्रण कीजिए। (2017, 18)

या 'आलोकवृत्त' खण्डकाव्य के नायक का चरित्रांकन कीजिए। (2017, 18)

उत्तर— 'आलोकवृत्त खण्डकाव्य' के आधार पर गांधी जी के चरित्र की प्रमुख विशेषताएँ निम्नवत् हैं—

1. **सामान्य मानवीय दुर्बलताएँ**—गांधी जी का आरम्भिक जीवन एक साधारण मनुष्य की भाँति मानवीय दुर्बलताओं वाला रहा है। उन्होंने एक बार अपने गुरु से छुपकर मांसभक्षण किया था; किन्तु बाद में उन्होंने अपनी इन दुर्बलताओं पर अपनी आत्मिक-शक्ति के बल पर पूर्ण विजय पा ली।
2. **देश-प्रेमी**—'आलोकवृत्त' में गांधी जी के चरित्र की सर्वप्रथम विशेषता उनका देशप्रेम है। वे देशप्रेम के कारण अनेक बार कारागार जाते हैं, जहाँ उन्हें अंग्रेजों के अपमान-अत्याचार सहने पड़ते हैं। उन्होंने अपना सर्वस्व देश के लिए न्योछावर कर दिया। भारत के लिए उनका कहना था—

तू चिर प्रशान्त, तू चिर अजेय
सुर-मुनि-वन्दित, स्थित, अप्रमेय
हे सगुण ब्रह्म, वेदादि-गेय
हे चिर अनादि हे चिर अशेष
मेरे भारत, मेरे स्वदेश।

3. **सत्य और अहिंसा के प्रबल समर्थक**—गांधी जी देश की स्वतन्त्रता केवल सत्य और अहिंसा के द्वारा ही प्राप्त करना चाहते हैं। असत्य और हिंसा का मार्ग उन्हें अच्छा नहीं लगता। वे कहते हैं—

पशुबल के सम्मुख आत्मा की, शक्ति जगानी होगी।
मुझे अहिंसा से हिंसा की, आग बुझानी होगी॥

4. **दृढ़ आस्तिक**—गांधी जी पुरुषार्थी हैं तो भी वे ईश्वर की सत्ता में अटूट विश्वास रखते हैं। वे प्रत्येक कार्य ईश्वर को साक्षी मानकर करते हैं। यही कारण है कि वे मात्र पवित्र साधनों का प्रयोग ही उचित समझते हैं—

क्या होगा परिणाम सोच लूँ, पर क्यों सोचूँ, वह तो।
मेरा क्षेत्र नहीं, स्रष्टा का, जो प्रभु करे वही हो॥

5. **स्वतन्त्रता-प्रेमी**—गांधी जी के जीवन का मूल उद्देश्य भारत को स्वतन्त्र करवाना है। वे भारतमाता की स्वतन्त्रता के लिए कुछ भी करने को तैयार हैं। वे देशवासियों को परतन्त्रता की बेड़ियाँ काटने के लिए प्रेरित करते हुए कहते हैं—

जाग तुझे तेरी अतीत, स्मृतियाँ धिक्कार रही हैं।
जाग-जाग तुझे भावी, पीढ़ियाँ पुकार रही हैं॥

6. **मानवतावादी**—गांधी जी मानव-मानव में अन्तर नहीं मानते। वे सबके लिए समानता के सिद्धान्त में विश्वास करते हैं। उन्होंने जीवन-भर ऊँच-नीच, जाति-पाँति और रंग-भेद का डटकर विरोध किया। इस भेदभाव से उन्हें बहुत दु:ख होता था—

जिसने मारा मुझे, कौन वह, हाथ नहीं क्या मेरा।
मानवता तो एक, भिन्न, बस उसका-मेरा घेरा॥

7. **भावनात्मक, राष्ट्रीय और हिन्दू-मुस्लिम एकता के समर्थक**—गांधी जी 'विश्वबन्धुत्व' और 'वसुधैव कुटुम्बकम्' की भावना से ओत-प्रोत थे। वे सभी को सुखी व समृद्ध देखना चाहते थे। इन्होंने भारत की समग्र जनता को एकता के सूत्र में बाँधने के लिए जीवन-पर्यन्त प्रयास किया और हिन्दू-मुसलमानों को भाई-भाई की तरह रहने की प्रेरणा दी। उनका कहना था—

यदि मिलकर इस राष्ट्रयज्ञ में सब कर्त्तव्य निभायें अपना,
एक वर्ष में ही पूरा हो मेरा रामराज्य का सपना।

निष्कर्ष रूप में कहा जा सकता है कि एक श्रेष्ठ मानव में जितने भी मानवोचित गुण हो सकते हैं, वे सभी महात्मा गांधी में विद्यमान थे।

प्रश्न 10. 'आलोकवृत्त' खण्डकाव्य की रचना के उद्देश्य (शिक्षा-संदेश) पर प्रकाश डालिए। (2010, 15)

या 'आलोकवृत्त' खण्डकाव्य के नामकरण की सार्थकता को स्पष्ट करते हुए इसके उद्देश्य पर प्रकाश डालिए। (2009)

या 'आलोकवृत्त' में निसूचित जीवन के प्रमुख मूल्यों को अपने शब्दों में व्यक्त कीजिए। (2009)

या 'आलोकवृत्त' खण्डकाव्य में जीवन के श्रेष्ठ मूल्य वर्णित हैं। संक्षेप में लिखिए। (2017)

उत्तर— 'आलोकवृत्त' खण्डकाव्य नामकरण (शीर्षक) की सार्थकता—कवि गुलाब खण्डेलवाल ने 'आलोकवृत्त' में महात्मा गांधी के सदाचार एवं मानवता के गुणों से प्रकाशित व्यक्तित्व को चित्रित किया है। इस खण्डकाव्य का विषय उद्देश्य एवं मूलभाव यही है। महात्मा गांधी के जीवन को हम प्रकाश-स्वरूप कह सकते हैं, क्योंकि उन्होंने भारतीय संस्कृति की चेतना को अपने सद्गुणों एवं सद्विचारों से प्रकाशित किया है। उन्होंने विश्व में सत्य, प्रेम, अहिंसा आदि मानवीय भावनाओं का प्रकाश फैलाया। अत: हम इस जीवन वृत्त को आलोकवृत्त कह सकते हैं। इस दृष्टिकोण से यह शीर्षक उपयुक्त है। यह महात्मा गांधी के जीवन, उनके चरित्र, उनके गुणों, सिद्धान्तों एवं दर्शन को पूर्णरूपेण परिभाषित करता हुआ एक साहित्यिक एवं दार्शनिक शीर्षक है।

आलोकवृत्त का उद्देश्य—कवि गुलाब खण्डेलवाल ने महात्मा गांधी के जीवन व कार्यों के द्वारा हमें देश-प्रेम, भावात्मक एकता, राष्ट्रीय एकता, लोककल्याण की भावना, मानव मूल्यों की स्थापना, साधनों की पवित्रता, सत्य, अहिंसा और प्रेम की भावना आदि का सन्देश दिया है। प्रस्तुत खण्डकाव्य मनुष्य के जीवन में आशा और आलोक विकीर्ण करता हुआ, उसे मानवता के उच्चतम शिखरों की ओर उन्मुख करता हुआ, उसे मानवता और संस्कृति की चेतना के परिष्कृत रूप में प्रस्तुत करता है। अपने इस उद्देश्य को उन्होंने काव्य के नायक महात्मा गाँधी के मुख से कहलवाया है—

यदि मिलकर इस राष्ट्रयज्ञ में सब कर्त्तव्य निभायें अपना,
एक वर्ष में ही पूरा हो मेरा रामराज्य का सपना।

मुक्तियज्ञ

मुरादाबाद, सम्भल, ज्योतिबा फूले नगर, कानपुर, कानपुर देहात, जौनपुर, फैजाबाद, अम्बेडकरनगर, एटा, ललितपुर आदि जनपदों के लिए। नवसृजित जनपदों के विद्यार्थी अपने जनपद में निर्धारित खण्डकाव्य के सम्बन्ध में अपने विषय-अध्यापक से जानकारी प्राप्त कर लें।

प्रश्न 1. 'मुक्तियज्ञ' की कथावस्तु (कथानक या कथासार) संक्षेप में लिखिए। (2009, 10, 11, 12, 13; 14, 15, 16, 17, 18)

या 'मुक्तियज्ञ' खण्डकाव्य के आधार पर भारतीय स्वतन्त्रता संग्राम की विशिष्ट (प्रमुख) घटनाओं का वर्णन कीजिए। (2012, 13, 16)

या 'मुक्तियज्ञ' खण्डकाव्य की प्रमुख घटनाओं का वर्णन कीजिए। (2018)

या 'मुक्तियज्ञ' खण्डकाव्य के आधार पर स्वतन्त्रता-संग्राम का विवरण प्रस्तुत कीजिए। (2017)

उत्तर— 'मुक्तियज्ञ' खण्डकाव्य सुमित्रानन्दन पन्त द्वारा विरचित 'लोकायतन' महाकाव्य का एक अंश है। इस अंश में भारत के स्वतन्त्रता आन्दोलन की गाथा है। 'मुक्तियज्ञ' की कथावस्तु संक्षेप में निम्नवत् है—

गांधी जी साबरमती आश्रम से अंग्रेजों के नमक-कानून को तोड़ने के लिए चौबीस दिनों की यात्रा पूर्ण करके डाण्डी गाँव पहुँचे और सागरतट पर नमक बनाकर 'नमक कानून' तोड़ा—

वह प्रसिद्ध डाण्डी यात्रा थी, जन के राम गये थे फिर वन।
सिन्धु तीर पर लक्ष्य विश्व का डाण्डी ग्राम बना बलि प्रांगण ॥

गांधी जी का उद्देश्य नमक बनाना नहीं था वरन् इसके माध्यम से वे अंग्रेजों के इस कानून का विरोध करना और जनता में चेतना उत्पन्न करना चाहते थे। यद्यपि उनके इस विरोध के आधार सत्य और अहिंसा थे, किन्तु अंग्रेजों का दमन-चक्र पहले की भाँति ही चलने लगा। गांधी जी तथा अन्य नेताओं को अंग्रेजों ने कारागार में डाल दिया। जैसे-जैसे दमन-चक्र बढ़ता गया वैसे-वैसे ही मुक्तियज्ञ भी तीव्र होता गया। गांधी जी ने भारतीयों को स्वदेशी वस्तु के प्रयोग और विदेशी वस्तुओं के बहिष्कार के लिए प्रोत्साहित किया। सम्पूर्ण देश में यह आन्दोलन फैल गया। समस्त देशवासी स्वतन्त्रता आन्दोलन में एकजुट होकर गांधी जी के पीछे हो गये। इस प्रकार गांधी जी ने भारतीयों में एक अपूर्व उत्साह एवं जागृति उत्पन्न कर दी।

गांधी जी ने अछूतों को समाज में सम्मानपूर्ण स्थान दिलवाने के लिए आमरण अनशन आरम्भ किया। महात्मा गांधी के नेतृत्व में भारतीयों ने अंग्रेजों से संघर्ष का निर्णय किया। सन् 1927 ई० में साइमन कमीशन भारत आया। भारतीयों द्वारा इस कमीशन का पूर्ण बहिष्कार किया गया। मैक्डॉनल्ड एवार्ड के द्वारा केन्द्र एवं प्रान्त की सीमाओं से सम्पूर्ण भारतवर्ष को विभिन्न साम्प्रदायिक टुकड़ों में विभक्त कर दिया गया। इससे असन्तोष और भी ज्यादा बढ़ गया। कांग्रेस ने विभिन्न प्रान्तों में कुछ नेताओं के समर्थन से मन्त्रिमण्डल बनाना स्वीकार किया। शीघ्र ही विश्वयुद्ध छिड़ गया। कांग्रेस के सहयोग की शर्तें ब्रिटिश सरकार को मान्य नहीं थीं। फलत: गांधी जी ने 'सविनय अवज्ञा आन्दोलन' शुरू कर दिया। जापान के विश्वयुद्ध में सम्मिलित हो जाने से भारत में भी खतरे की सम्भावनाएँ उत्पन्न होने लगीं। ऐसी स्थिति में ब्रिटिश सरकार ने भारत की समस्याओं पर विचार करने के लिए 'क्रिप्स मिशन' भेजा, जिसका भारतीय जनता ने विरोध किया। सन् 1942 ई० में गांधी जी ने 'अंग्रेजो, भारत छोड़ो' का नारा लगा दिया। उसी रात्रि में गांधी जी व अन्य नेतागण बन्दी बना लिये गये और अंग्रेजों ने बालकों, वृद्धों और स्त्रियों तक पर भीषण अत्याचार आरम्भ कर दिये। इन अत्याचारों के कारण भारतीयों में और अधिक आक्रोश उत्पन्न हो उठा। चारों ओर हड़ताल और तालाबन्दी हो गयी। अंग्रेजी शासन इस आन्दोलन से हिल गया। कारागार में ही गांधी जी की पत्नी कस्तूरबा का देहान्त हो गया। पूरे देश में अंग्रेजों के विरुद्ध प्रबल आक्रोश एवं हिंसा भड़क उठी थी।

सन् 1942 ई० में ही भारत की पूर्ण स्वतन्त्रता की माँग की गयी थी। अंग्रेजों के प्रोत्साहन पर मुस्लिम लीग ने भारत विभाजन की माँग की। अन्तत: 15 अगस्त, 1947 ई० को अंग्रेजों ने भारत को मुक्त कर दिया। अंग्रेजों ने भारत और पाकिस्तान के रूप में देश का विभाजन करवा दिया। एक ओर तो देश में स्वतन्त्रता का उत्सव मनाया जा रहा था, दूसरी ओर नोआखाली में हिन्दू और मुसलमानों के बीच संघर्ष हो गया। गांधी जी ने इससे दु:खी होकर आमरण उपवास रखने का निश्चय किया।

30 जनवरी, 1948 ई० को नाथूराम गोडसे ने गांधी जी की गोली मारकर हत्या कर दी। इस दु:खान्त घटना के पश्चात् कवि द्वारा भारत की एकता की कामना के साथ इस काव्य का अन्त हो जाता है।

इस प्रकार इस खण्डकाव्य का आधार-फलक बहुत विराट् है और उस पर कवि पन्त द्वारा बहुत सुन्दर और प्रभावशाली चित्र खींचे गये हैं। इसमें उस युग का इतिहास अंकित है, जब भारत में एक हलचल मची हुई थी और सम्पूर्ण देश में क्रान्ति की आग सुलग रही थी। इसमें व्यक्त राष्ट्रीयता और देशभक्ति संकुचित नहीं है। निष्कर्ष रूप में **मुक्तियज्ञ** गांधी-युग के स्वर्णिम इतिहास का काव्यात्मक आलेख है।

प्रश्न 2 'मुक्तियज्ञ' खण्डकाव्य का नायक कौन है ? उसका चारित्रिक विश्लेषण कीजिए। (2009, 10, 11, 12, 13, 14, 15, 18)

या 'मुक्तियज्ञ' के आधार पर गांधी जी की चारित्रिक विशेषताओं पर प्रकाश डालिए। (2011, 12, 13, 14, 15, 16, 17, 18)

या 'मुक्तियज्ञ' खण्डकाव्य के नायक का चरित्रांकन कीजिए। (2017)

उत्तर— 'मुक्तियज्ञ' काव्य के आधार पर गांधी जी की चारित्रिक विशेषताएँ निम्नवत् हैं—

1. **प्रभावशाली व्यक्तित्व—** गांधी जी का आन्तरिक व्यक्तित्व बहुत अधिक प्रभावशाली है। उनकी वाणी में अद्भुत चुम्बकीय प्रभाव था। उनकी डाण्डी यात्रा के सम्बन्ध में कवि ने लिखा है—

वह प्रसिद्ध डाण्डी यात्रा थी,
जन के राम गये थे फिर वन।
सिन्धु तीर पर लक्ष्य विश्व का,
डाण्डी ग्राम बना बलि प्रांगण ॥

2. **सत्य, प्रेम और अहिंसा के प्रबल समर्थक—** 'मुक्तियज्ञ' में गांधी जी के जीवन के सिद्धान्तों में सत्य, प्रेम और अहिंसा प्रमुख हैं। अपने इन तीन आध्यात्मिक अस्त्रों के बल पर ही गांधी जी ने अंग्रेज सरकार की नींव हिला दी। इन सिद्धान्तों को वे अपने जीवन में भी अक्षरश: उतारते थे। उन्होंने कठिन-से-कठिन परिस्थिति में भी सत्य, अहिंसा और प्रेम का मार्ग नहीं छोड़ा।

3. **दृढ़प्रतिज्ञ—** 'मुक्तियज्ञ' के नायक गांधी जी ने जो भी कार्य आरम्भ किया, उसे पूरा करके ही छोड़ा। वे अपने निश्चय पर अटल रहते हैं। उन्होंने नमक कानून तोड़ने की प्रतिज्ञा की तो उसे पूरा भी कर दिखाया—

प्राण त्याग दूँगा पथ पर ही,
उठा सका मैं यदि न नमक-कर।
लौट न आश्रम में आऊँगा,
जो स्वराज ला सका नहीं घर ॥

4. **जन-नेता—** 'मुक्तियज्ञ' के नायक गांधी जी सम्पूर्ण भारत में जन-जन के प्रिय नेता हैं। उनके एक संकेतमात्र पर ही लाखों नर-नारी अपना सर्वस्व न्योछावर करने को तत्पर रहते हैं; यथा—

मुट्ठी-भर हड्डियाँ बुलातीं,
छात्र निकल पड़ते सब बाहर।
लोग छोड़ घर-द्वार, मान, पद,
हँस-हँस बन्दी-गृह देते भर ॥

5. **मानवता के अग्रदूत—** 'मुक्तियज्ञ' के नायक गांधी जी अपना सम्पूर्ण जीवन मानवता के कल्याण में ही लगा देते हैं। उनका दृढ़ विश्वास है कि मानव-मन में उत्पन्न घृणा, घृणा से नहीं अपितु प्रेम से मरती है। वे हिंसा पर टिकी हुई संस्कृति को मानवीय नहीं मानते—

घृणा, घृणा से नहीं मरेगी,
बल प्रयोग पशु साधन निर्दय।
हिंसा पर निर्मित भू-संस्कृति,
मानवीय होगी न, मुझे भय॥

6. **लोकपुरुष**—'मुक्तियज्ञ' में गांधी जी एक लोकपुरुष के रूप में पाठकों के समक्ष आते हैं। इस सम्बन्ध में कवि कहता है—

संस्कृति के नवीन त्याग की
मूर्ति, अहिंसा ज्योति, सत्यव्रत।
लोक-पुरुष स्थितप्रज्ञ, स्नेह धन,
युगनायक, निष्काम कर्मरत॥

7. **समदृष्टा**—गांधी जी सबको समान दृष्टि से देखते थे। उनकी दृष्टि में न कोई बड़ा था और न ही कोई छोटा। छुआछूत को वे समाज का कलंक मानते थे। उनकी दृष्टि में कोई अछूत नहीं था।

इस प्रकार 'मुक्तियज्ञ' के नायक गांधी जी महान् लोकनायक; सत्य, अहिंसा और प्रेम के समर्थक; दृढ़प्रतिज्ञ, निर्भीक और साहसी पुरुष के रूप में सामने आते हैं। कवि ने गांधी जी में सभी लोक-कल्याणकारी गुणों का समावेश करते हुए उनके चरित्र को एक नया स्वरूप प्रदान किया है।

सत्य की जीत

बिजनौर, रामपुर, पीलीभीत, लखनऊ, झाँसी, इटावा, बदायूँ, बलिया, प्रतापगढ़ आदि जनपदों के लिए। नवसृजित जनपदों के विद्यार्थी अपने जनपद में निर्धारित खण्डकाव्य के सम्बन्ध में अपने विषय-अध्यापक से जानकारी प्राप्त कर लें।

प्रश्न 1 'सत्य की जीत' खण्डकाव्य का कथानक (कथावस्तु) संक्षेप में लिखिए। (2009, 10, 11, 12, 13, 14, 15, 16, 17, 18)

या **'सत्य की जीत' नामक खण्डकाव्य की प्रमुख घटनाओं का सारांश लिखिए।** (2015)

या **'सत्य की जीत' खण्डकाव्य के आधार पर 'द्रौपदी चीर-हरण' घटना अपने शब्दों में लिखिए।** (2018)

उत्तर— प्रस्तुत खण्डकाव्य की कथा द्रौपदी के चीरहरण से सम्बद्ध है। यह कथानक महाभारत के सभापर्व में द्यूतक्रीड़ा की घटना पर आधारित है। यह एक अत्यन्त लघुकाव्य है, जिसमें कवि ने पुरातन आख्यान को वर्तमान सन्दर्भों में प्रस्तुत किया है। इसकी कथा संक्षेप में इस प्रकार है—

दुर्योधन पाण्डवों को द्यूतक्रीड़ा के लिए आमन्त्रित करता है। पाण्डव उसके निमन्त्रण को स्वीकार कर लेते हैं और अपना सर्वस्व हारने के पश्चात् अन्त में द्रौपदी को भी हार जाते हैं। इस पर कौरव भरी सभा में द्रौपदी को वस्त्रहीन करके अपमानित करना चाहते हैं। दुःशासन राजमहल से द्रौपदी के केश खींचते हुए सभा में लाता है। द्रौपदी को यह अपमान असह्य हो जाता है। वह सिंहनी के समान गरजती हुई दुःशासन को ललकारती है।

इसके पश्चात् द्रौपदी और दुःशासन में नारी परपुरुष द्वारा किये गये अत्याचार, नारी और पुरुष की सामाजिक समानता और उनके अधिकार, उनकी शक्ति, धर्म-अधर्म, सत्य-असत्य, शस्त्र और शास्त्र, न्याय-अन्याय आदि विषयों पर वाद-विवाद होता है। 'युधिष्ठिर अपना सर्वस्व हार चुके हैं तो मुझे दाँव पर लगाने का उन्हें क्या अधिकार रह गया है'? द्रौपदी के इस तर्क से सभी सभासद प्रभावित होते हैं। वह कहती है कि सरल हृदय युधिष्ठिर कौरवों की कुटिल चालों में आकर छले गये हैं; अतः सभा में उपस्थित धर्मज्ञ यह निर्णय दें कि क्या वे अधर्म और कपट की विजय को स्वीकार करते हैं अथवा सत्य और धर्म की हार को अस्वीकार?

दुःशासन कहता है कि शास्त्र-बल से बड़ा शस्त्र-बल होता है। कर्ण, शकुनि और दुर्योधन, दुःशासन के इस कथन का पूर्ण समर्थन करते हैं। नीतिवान विकर्ण दुःशासन की शस्त्र-बल की नीति का विरोध करता है। वह कहता है कि यदि शास्त्र-बल से शस्त्र-बल ऊँचा और महत्त्वपूर्ण हो जाएगा तो मानवता का विकास अवरुद्ध हो जाएगा; क्योंकि शस्त्र-बल मानवता को पशुता में बदल देता है। वह इस बात पर बल देता है कि द्रौपदी द्वारा प्रस्तुत तर्क पर धर्मपूर्वक और न्यायसंगत निर्णय होना चाहिए।

कौरव 'विकर्ण' की बात को स्वीकार नहीं करते। हारे हुए युधिष्ठिर अपने उत्तरीय वस्त्र उतार देते हैं। दुःशासन द्रौपदी के वस्त्र खींचने के लिए हाथ बढ़ाता है। उसके इस कुकर्म पर द्रौपदी अपने सम्पूर्ण आत्मबल के साथ सत्य का सहारा लेकर उसे ललकारती है और वस्त्र खींचने की चुनौती देती है। मदान्ध दुःशासन द्रौपदी का चीर खींचने के लिए हाथ बढ़ाता है। द्रौपदी रौद्र रूप धारण कर लेती है। उसके तेजोद्दीप्त रूप को देख दुःशासन उसके वस्त्र खींचने में स्वयं को असमर्थ पाता है।

सभी सभासद कौरवों की निन्दा तथा द्रौपदी के सत्य और न्यायपूर्ण पक्ष का समर्थन करते हैं। वे कहते हैं कि यदि पाण्डवों के प्रति होते हुए इस अन्याय को आज रोका नहीं गया तो इसका परिणाम बहुत बुरा होगा।

अन्त में धृतराष्ट्र उठते हैं और पाण्डवों को मुक्त करने तथा उनका राज्य लौटाने के लिए दुर्योधन को आदेश देते हैं। इसके साथ ही वे द्रौपदी का पक्ष लेते हुए उसका समर्थन करते हैं तथा सत्य, न्याय, धर्म की प्रतिष्ठा तथा संसार का कल्याण करना ही मानव-जीवन का उद्देश्य बताते हैं। वे पाण्डवों की कल्याण-कामना करते हुए द्रौपदी के विचारों को उचित ठहराते हैं। वे उसके प्रति किये गये दुर्व्यवहार के लिए उससे क्षमा माँगते हैं तथा कहते हैं—

जहाँ है सत्य, जहाँ है धर्म,
जहाँ है न्याय, वहाँ है जीत।
तुम्हारे यश-गौरव के दिग्-
दिगन्त में गूँजेंगे स्वर, गीत॥

निष्कर्ष रूप में कहा जा सकता है कि इस खण्डकाव्य की कथा द्रौपदी के चीरहरण की अत्यन्त संक्षिप्त किन्तु मार्मिक घटना पर आधारित है। द्वारिकाप्रसाद माहेश्वरी जी ने इस कथा को युग के अनुकूल बनाकर नारी के सम्मान की रक्षा करने के संकल्प को दुहराया है।

प्रश्न 2. 'सत्य की जीत' खण्डकाव्य के आधार पर नायिका (द्रौपदी) का चरित्र-चित्रण कीजिए। (2009, 10, 12, 13, 14, 15, 16, 17, 18)

उत्तर— द्रौपदी 'सत्य की जीत' खण्डकाव्य की नायिका है। सम्पूर्ण कथा उसके चारों ओर घूमती है। 'सत्य की जीत' खण्डकाव्य के आधार पर द्रौपदी के चरित्र की प्रमुख विशेषताएँ निम्नवत् हैं—

1. **आत्मविश्वासी**—'सत्य की जीत' खण्डकाव्य में अत्यधिक विकट समय होते हुए भी द्रौपदी बड़े आत्मविश्वास से दुःशासन को अपना परिचय देती हुई कहती है—

जानता नहीं कि मैं हूँ कौन ? द्रौपदी धृष्टद्युम्न की बहन।
पाण्डु कुलवधू भीष्म धृतराष्ट्र, विदुर को कब रे यह सहन॥

2. **स्वाभिमानिनी सबला**—द्रौपदी स्वाभिमानिनी है। वह अपना अपमान नारी-जाति का अपमान समझती है और वह इसे सहन नहीं करती। 'सत्य की जीत' की द्रौपदी महाभारत की द्रौपदी की भाँति असहाय, अबला और संकोची नारी नहीं है। यह द्रौपदी तो अन्यायी, अधर्मी पुरुषों से जमकर संघर्ष करने वाली है।

3. **विवेकशीला**—द्रौपदी पुरुष के पीछे-पीछे आँख बन्द कर चलने वाली नारी नहीं, वरन् विवेक से कार्य करने वाली नारी है। वह भरी सभा में यह सिद्ध कर देती है कि द्यूत में स्वयं को हारने वाले युधिष्ठिर को मुझे दाँव पर लगाने का कोई अधिकार नहीं था—

प्रथम महाराज युधिष्ठिर मुझे या, कि थे गये स्वयं को हार।
स्वयं को यदि तो उनको मुझे, हारने का था क्या अधिकार॥

4. **साध्वी**—द्रौपदी में शक्ति, ओज, तेज, स्वाभिमान और बुद्धि के साथ-साथ सत्य, शील और धर्म का पालन करने की शक्ति भी है। द्रौपदी के चरित्र की श्रेष्ठता से प्रभावित धृतराष्ट्र उसकी प्रशंसा करते हुए कहते हैं—

द्रौपदी धर्मनिष्ठ है सती,
साध्वी न्याय सत्य साकार।
इसी से आज सभी से प्राप्त,
उसे बल सहानुभूति अपार॥

5. **ओजस्विनी**— 'सत्य की जीत' की नायिका द्रौपदी ओजस्विनी है। अपना अपमान होने पर वह सिंहनी की भाँति दहाड़ती दु:शासन द्वारा केश खींचने के बाद वह रौद्र-रूप धारण कर लेती है।

6. **सत्य, न्याय और धर्म की एकनिष्ठ साधिका**— द्रौपदी सत्य और न्याय की अजेय शक्ति और असत्य तथा अधर्म की मिथ्या शक्ति का विवेचन बहुत संयत शब्दों में करती हुई कहती है—

सत्य का पक्ष, धर्म का पक्ष,
न्याय का पक्ष लिये मैं साथ।
अरे, वह कौन विश्व में शक्ति,
उठा सकती जो मुझ पर हाथ॥

7. **नारी-जाति की पक्षधर**— 'सत्य की जीत' की द्रौपदी आदर्श भारतीय नारी है। उसमें अपार शक्ति, सामर्थ्य, बुद्धि, आत्मसम्मान, सत्य, धर्म, व्यवहारकुशलता, वाक्पटुता, सदाचार आदि गुण विद्यमान हैं। अपने सम्मान को ठेस लगने पर वह सभा में गरज उठती है—

मौन हो जा मैं सह सकती न, कभी भी नारी का अपमान।
दिखा दूँगी तुझको अभी, गरजती आँखों का तूफान॥

निष्कर्ष रूप में कहा जा सकता है कि द्रौपदी पाण्डव-कुलवधू, वीरांगना, स्वाभिमानी, आत्मगौरव-सम्पन्न, सत्य और न्याय की पक्षधर, सती-साध्वी, नारीत्व के स्वाभिमान से मण्डित एवं नारी जाति का आदर्श है।

प्रश्न 3. 'सत्य की जीत' के आधार पर दु:शासन का चरित्र-चित्रण (चरित्रांकन) कीजिए। (2009, 10, 11, 16, 17, 18)

या 'सत्य की जीत' के एक प्रमुख पुरुष-पात्र (दु:शासन) के चरित्र की विशेषताएँ बताइए। (2009, 11, 14, 18)

उत्तर— प्रस्तुत खण्डकाव्य में दु:शासन एक प्रमुख पात्र है जो दुर्योधन का छोटा भाई तथा धृतराष्ट्र का पुत्र है। उसके चरित्र की प्रमुख विशेषताएँ निम्नवत् हैं—

1. **अहंकारी एवं बुद्धिहीन**— दु:शासन को अपने बल पर बहुत अधिक घमण्ड है। विवेक से उसे कुछ लेना-देना नहीं है। वह स्वयं को सर्वश्रेष्ठ और महत्त्वपूर्ण मानता है तथा पाण्डवों का भरी सभा में अपमान करता है। सत्य, प्रेम और अहिंसा की अपेक्षा वह पाशविक शक्तियों को ही सब कुछ मानता है—

शस्त्र जो कहे वही है सत्य, शस्त्र जो करे वही है कर्म।
शस्त्र जो लिखे वही है शास्त्र, शस्त्र-बल पर आधारित धर्म॥

इसीलिए परिवारजन और सभासदों के बीच द्रौपदी को निर्वस्त्र करने में वह तनिक भी लज्जा नहीं मानता है।

2. **नारी का अपमान करने वाला**— द्रौपदी के साथ हुए तर्क-वितर्क में दु:शासन का नारी के प्रति पुरातन और रूढ़िवादी दृष्टिकोण प्रकट हुआ है। दु:शासन नारी को पुरुष की दासी और भोग्या तथा पुरुष से दुर्बल मानता है। नारी की दुर्बलता का उपहास उड़ाते हुए वह कहता है—

कहाँ नारी ने ले तलवार, किया है पुरुषों से संग्राम।
जानती है वह केवल पुरुष, भुजदण्डों में करना विश्राम॥

3. **शस्त्र-बल विश्वासी**— दु:शासन शस्त्र-बल को सब कुछ समझता है। उसे धर्म-शास्त्र और धर्मज्ञों में कोई विश्वास नहीं है। इन्हें तो वह शस्त्र के आगे हारने वाले मानता है—

धर्म क्या है और क्या है सत्य, मुझे क्षणभर चिन्ता इसकी न।
शास्त्र की चर्चा होती वहाँ, जहाँ नर होता शस्त्र-विहीन॥

4. **दुराचारी**— दु:शासन हमारे समक्ष एक दुराचारी व्यक्ति के रूप में आता है। वह मानवोचित व्यवहार भी नहीं जानता। वह अपने बड़ों व गुरुजनों के सामने भी अभद्र व्यवहार करने में संकोच नहीं करता। वह शास्त्रज्ञों, धर्मज्ञों व नीतिज्ञों पर कटाक्ष करता है और उन्हें दुर्बल बताता है—

लिया दुर्बल मानव ने ढूँढ़, आत्मरक्षा का सरल उपाय।
किन्तु जब होता सम्मुख शस्त्र, शास्त्र हो जाता निरुपाय॥

5. **धर्म और सत्य का विरोधी**— धर्म और सत्य का शत्रु दु:शासन आध्यात्मिक शक्ति का विरोधी एवं भौतिक शक्ति का पुजारी है। वह सत्य, धर्म, न्याय, अहिंसा जैसे उदार आदर्शों की उपेक्षा करता है।

6. **सत्य व सतीत्व से पराजित**— दु:शासन की चीर-हरण में असमर्थता इस तथ्य की पुष्टि करती है कि सत्य की ही जीत होती है। वह शक्ति से मदान्ध होकर तथा सत्य, धर्म एवं न्याय की दुहाई देने को दुर्बलता का चिह्न बताता हुआ जैसे ही द्रौपदी का चीर खींचने के लिए हाथ आगे बढ़ाता है, वैसे ही द्रौपदी के शरीर से प्रकट होने वाले सतीत्व की ज्वाला से पराजित हो जाता है।

दु:शासन के चरित्र की दुर्बलताओं या विशेषताओं का उद्घाटन करते हुए **डॉ० ओंकार प्रसाद माहेश्वरी** लिखते हैं, "लोकतन्त्रीय चेतना के जागरण के इस युग में अब भी कुछ ऐसे साम्राज्यवादी प्रकृति के दु:शासन हैं, जो दूसरों के बढ़ते मान-सम्मान को नहीं देख सकते तथा दूसरों की भूमि और सम्पत्ति को हड़पने के लिए प्रतिक्षण घात लगाये हुए बैठे रहते हैं। इस काव्य में दु:शासन उन्हीं का प्रतीक है।"

प्रश्न 4. 'सत्य की जीत' खण्डकाव्य के आधार पर दुर्योधन का चरित्र-चित्रण कीजिए। (2011, 12, 17)

उत्तर— 'सत्य की जीत' खण्डकाव्य में दुर्योधन का चरित्र एक तुच्छ शासक का चरित्र है। वह असत्य, अन्याय तथा अनैतिकता का आचरण करता है। वह छल विद्या में निपुण अपने मामा शकुनि की सहायता से पाण्डवों को द्यूतक्रीड़ा के लिए आमन्त्रित करता है और उनका सारा राज्य जीत लेता है। दुर्योधन चाहता है कि पाण्डव द्रौपदी सहित उसके दास-दासी बनकर रहे। वह द्रौपदी को सभा के बीच में वस्त्रहीन करके अपमानित करना चाहता है। उसके चरित्र की निम्नलिखित विशेषताएँ हैं—

1. **शस्त्रबल का पुजारी**— दुर्योधन सत्य, धर्म और न्याय में विश्वास नहीं रखता। वह शारीरिक तथा तलवार के बल में आस्था रखता है। आध्यात्मिक एवं आत्मिक बल की उपेक्षा करता है। दु:शासन के मुख से शस्त्रबल की प्रशंसा और शास्त्रबल की निन्दा सुनकर वह प्रसन्नता से खिल उठता है।

2. **अनैतिकता का अनुयायी**— दुर्योधन न्याय और नीति को छोड़कर अनीति का अनुसरण करता है। भले-बुरे का विवेक वह बिलकुल नहीं करता। अपने अनुयायियों को भी अनीति के मार्ग पर चलने के लिए प्रेरित करना ही उसकी नीति है। जब दु:शासन द्रौपदी का चीरहरण करने में असमर्थ हो जाता है तो दु:शासन की इस असमर्थता को वह सहन नहीं कर पाता है और अभिमान में गरज कर कहता है—

कर रहा क्या, यह व्यर्थ प्रलाप, भय वश था दु:शासन वीर।
कहा दुर्योधन ने उठ गरज, खींच क्या नहीं खिचेगी चीर॥

3. **मातृद्वेषी**— दुर्योधन बाह्य रूप में पाण्डवों को अपना भाई बताता है किन्तु आन्तरिक रूप से उनकी जड़ें काटता है। वह पाण्डवों का सर्वस्व हरण करके उन्हें अपमानित और दर-दर का भिखारी बनाना चाहता है। द्रौपदी के शब्दों में—

किन्तु भीतर-भीतर चुपचाप, छिपाये तुमने अनगिन पाश।
फँसाने को पाण्डव निष्कपट, चाहते थे तुम उनका नाश॥

4. **असहिष्णुता**— दुर्योधन स्वभाव से बड़ा ईर्ष्यालु है। पाण्डवों का बढ़ता हुआ यश तथा सुख-शान्तिपूर्ण जीवन उसकी ईर्ष्या का कारण बन जाता है। वह रात-दिन पाण्डवों के विनाश की ही योजना बनाता रहता है। उसके ईर्ष्यालु स्वभाव का चित्रण देखिए—

ईर्ष्या तुम को हुई अवश्य, देख जग में उनका सम्मान।
विश्व को दिखलाना चाहते, रहे तुम अपनी शक्ति महान्॥

संक्षेप में, हम कह सकते हैं कि दुर्योधन का चरित्र एक साम्राज्यवादी शासक का चरित्र है। ❑

'गद्य गरिमा' में संकलित पाठों के लेखकों का संक्षिप्त परिचय

क्रम संख्या	लेखक	जन्म-मृत्यु और जन्म-स्थान	भाषा	शैली	प्रमुख रचनाएँ	गद्य साहित्य का युग
1.	**वासुदेवशरण अग्रवाल**	सन् 1904–सन् 1967 खेड़ा (मेरठ)	शुद्ध परिमार्जित संस्कृतनिष्ठ खड़ी बोली।	विचारात्मक, गवेषणात्मक, व्याख्यात्मक, भावात्मक, उद्धरण।	**निबन्ध :** पृथिवीपुत्र, कल्पलता, वाग्धारा, कल्पवृक्ष, कला और संस्कृति, भारत की एकता, माता भूमिः पुत्रोऽहं पृथिव्याः। **शोध :** पाणिनिकालीन भारतवर्ष। **सम्पादन :** जायसीकृत पद्मावत की संजीवनी व्याख्या, बाणभट्ट के हर्षचरित का सांस्कृतिक अध्ययन।	शुक्ल युग
2.	**कन्हैयालाल मिश्र 'प्रभाकर'**	सन् 1906–9 मई, 1995 देवबन्द (सहारनपुर)	सरल-सुबोध, व्यावहारिक, प्रौढ़ परिमार्जित खड़ी बोली।	भावात्मक, वर्णनात्मक, नाटकीय।	**रेखाचित्र :** माटी हो गयी सोना, भूले-बिसरे चेहरे, जिन्दगी मुस्कायी। **लघु कथा :** आकाश के तारे, धरती के फूल। **संस्मरण :** दीप जले शंख बाजे। **ललित निबन्ध :** क्षण बोले कण मुस्काये, बाजे पायलिया के घुँघरू। **सम्पादन :** नया जीवन विकास।	शुक्लोत्तर युग
3.	**हजारीप्रसाद द्विवेदी**	सन् 1907–सन् 19 मई, 1979 दूबे का छपरा (बलिया)	शुद्ध परिमार्जित प्रौढ़, सरस मुहावरेदार खड़ी बोली।	विचारात्मक, गवेषणात्मक, आलंकारिक, भावात्मक, सूत्रात्मक।	**निबन्ध :** अशोक के फूल, कुटज, विचार-प्रवाह। **उपन्यास :** बाणभट्ट की आत्मकथा, पुनर्नवा, चारुचन्द्र लेख, अनामदास का पोथा। **आलोचना :** कबीर, सूर साहित्य, साहित्य का मर्म। **इतिहास :** हिन्दी-साहित्य की भूमिका, हिन्दी-साहित्य का आदिकाल। **सम्पादन :** नाथ-सिद्धों की बानियाँ, सन्देश रासक।	शुक्लोत्तर युग
4.	**जी० सुन्दर रेड्डी**	सन् 1919 आन्ध्र प्रदेश	भावानुकूल शुद्ध, परिमार्जित खड़ी बोली।	विवेचनात्मक, प्रश्नात्मक, आलोचनात्मक, गवेषणात्मक।	साहित्य और समाज, मेरे विचार, वैचारिकी, शोध और बोध, हिन्दी और तेलुगू : एक तुलनात्मक अध्ययन।	स्वातन्त्र्योत्तर युग
5.	**हरिशंकर परसाई**	सन् 22 अगस्त, 1924–10 अगस्त, 1995 जमानी (इटारसी) मध्य प्रदेश	सरल और व्यावहारिक भाषा।	व्यंग्य और विनोद प्रधान, आत्म-परक और प्रश्नात्मक।	**कहानी :** हँसते हैं, रोते हैं; जैसे उनके दिन फिरे। **उपन्यास :** रानी नागफनी की कहानी, तट की खोज। **निबन्ध :** तब की बात और थी, शिकायत मुझे भी है, भूत के पाँव पीछे, सदाचार का ताबीज।	स्वातन्त्र्योत्तर युग
6.	**डॉ० ए०पी०जे० अब्दुल कलाम**	सन् 1931 रामेश्वरम् (तमिलनाडु) सन् 2015	संस्कृतनिष्ठ शुद्ध परिमार्जित खड़ी बोली	वर्णनात्मक, भावात्मक, आत्मपरक, शब्द-चित्रात्मक	इण्डिया 2020: अ विजन फॉर द न्यू मिलेनियम, विंग्स ऑफ फायर : ऐन ऑटोबायोग्राफी यूनाइटेड माइण्ड्स, मिशनइण्डिया।	आधुनिककाल

'काव्यांजलि' में संकलित रचनाओं के कवियों का संक्षिप्त परिचय

क्रम संख्या	कवि	जन्म-मृत्यु और जन्म-स्थान	भाषा	रस/छन्द/अलंकार	वर्ण्य-विषय /रचनाएँ	काल/युग/धारा/शाखा
1.	**अयोध्यासिंह उपाध्याय 'हरिऔध'**	सन् 1865 सन् 1945 निजामाबाद (आजमगढ़)	खड़ी बोली	शृंगार, वात्सल्य/कवित्त, सवैया, मालिनी, मन्दाक्रान्ता/श्लेष, रूपक, उत्प्रेक्षा।	वात्सल्य वर्णन, राधा-कृष्ण का लोक हितकारी रूप, भारतीय संस्कृति, प्रिय-प्रवास, रस-कलश, वैदेही वनवास, रुक्मिणी-परिणय, चौखे चौपदे, चुभते चौपदे, प्रद्युम्न विजय।	आधुनिककाल (द्विवेदी युग)
2.	**मैथिलीशरण गुप्त**	सन् 1886 से सन् 1964 चिरगाँव (झाँसी)	खड़ी बोली	शृंगार, वीर, करुण/गीतिका, हरिगीतिका/रूपक, उत्प्रेक्षा, उपमा।	राम-कथा, स्वदेश का गौरव-गान, राष्ट्र-चेतना, विश्वबन्धुत्व, समाज-सुधार, नारी-प्रतिष्ठा/साकेत, रंग में भंग, यशोधरा, द्वापर, भारत-भारती, पंचवटी, सिद्धराज, विष्णुप्रिया, जय भारत, जयद्रथ वध।	आधुनिककाल (द्विवेदी युग)
3.	**जयशंकर प्रसाद**	सन् 1889 से सन् 1937 काशी	खड़ी बोली	शृंगार, शान्त, वीर/गीत, सखी, रोला आदि/रूपक, उपमा, उत्प्रेक्षा, मानवीकरण, अतिशयोक्ति।	संयोग एवं विप्रलम्भ शृंगार का चित्रण, प्राकृतिक सौन्दर्य, भारतीय संस्कृति का गुणगान/कामायनी, आँसू, लहर, झरना, प्रेम-पथिक, चित्राधार, कानन-कुसुम।	आधुनिककाल (छायावादी युग)
4.	**सुमित्रानन्दन पन्त**	सन् 1900 से सन् 1977 कौसानी (अल्मोड़ा)	खड़ी बोली	शृंगार, शान्त/गीत, प्रतीकात्मक, ध्वन्यात्मक/रूपक, उपमा, उत्प्रेक्षा, मानवीकरण।	प्रकृति-चित्रण, मानवतावाद, सौन्दर्य और प्रेम, विरह-वेदना, जनसामान्य का प्रतिनिधित्व/वीणा, पल्लव, युगवाणी, लोकायतन, चिदम्बरा, युगपथ, उत्तरा आदि।	आधुनिककाल (छायावादी युग)
5.	**महादेवी वर्मा**	सन् 1907 से सन् 1987 फर्रूखाबाद	खड़ी बोली	शृंगार, शान्त/गीत/रूपक, उपमा, उत्प्रेक्षा, मानवीकरण, विरोधाभास।	वेदना, रहस्यवादी प्रवृत्ति, भावमय प्रकृति-चित्रण/नीहार, रश्मि, नीरजा, सान्ध्य-गीत, दीपशिखा, यामा।	आधुनिककाल (छायावादी युग)
6.	**रामधारीसिंह 'दिनकर'**	सन् 1908 से सन् 1974 सिमरिया ग्राम, जिला मुँगेर (बिहार)	खड़ी बोली	शृंगार, वीर/मुक्तक, गीत, सवैया, घनाक्षरी/रूपक, उपमा, उत्प्रेक्षा, मानवीकरण।	राष्ट्रीयता, प्रगतिशीलता, सौन्दर्य और प्रेम, प्रकृति-चित्रण, सामयिक समस्याएँ, नारी के विविध रूप/उर्वशी, कुरुक्षेत्र, रश्मिरथी, प्रणभंग, रेणुका, सामधेनी, धूप-छाँह, हुँकार।	आधुनिककाल (प्रगतिवादी युग)
7.	**सच्चिदानन्द हीरानन्द वात्स्यायन 'अज्ञेय'**	सन् 1911 से सन् 1987 कर्तारपुर (पंजाब)	खड़ी बोली	शृंगार/अतुकान्त/उपमा, रूपक, श्लेष।	कुण्ठा और घुटन की अभिव्यक्ति, बौद्धिकता व मनोविश्लेषण, प्रेम और सौन्दर्य, प्रकृति-चित्रण/बावरा अहेरी, आँगन के पार द्वार, सुनहरे शैवाल, इन्द्रधनु रौंदे हुए ये, महावृक्ष के नीचे, चिन्ता, इत्यलम्।	आधुनिककाल (प्रयोगवादी काव्यधारा)

खण्ड 'ख'

9 संस्कृत के गद्यांशों एवं पद्यांशों का ससन्दर्भ हिन्दी में अनुवाद

प्रश्न-परिचय— सामान्य हिन्दी के **खण्ड 'ख'** का **नौवाँ प्रश्न** पाठ्य-पुस्तक **'संस्कृत दिग्दर्शिका'** के विभिन्न पाठों में दिये गये गद्यांशों एवं पद्यांशों/श्लोकों के हिन्दी-अनुवाद पर आधारित होगा। यह प्रश्न दो भागों—'क' व 'ख' में विभक्त होगा। भाग 'क' में **दो गद्यांश** दिये जाएँगे, जिनमें से किसी **एक** का ससन्दर्भ हिन्दी में अनुवाद करना होगा। इसके लिए **2 + 5 = 7 अंक** निर्धारित हैं। भाग 'ख' में **दो पद्यांश/श्लोक** दिये जाएँगे, जिनमें से किसी **एक** का ससन्दर्भ हिन्दी में अनुवाद करना होगा। इसके लिए भी **2 + 5 = 7 अंक** निर्धारित हैं।

प्रश्न (क)— दिए गए संस्कृत गद्यांशों में से किसी एक का सन्दर्भसहित हिन्दी में अनुवाद कीजिए–

गद्यांश

भोजस्यौदार्यम्

(1) ततः कदाचिद् द्वारपाल आगत्य महाराजं भोजं प्राह—'देव, कौपीनावशेषो विद्वान् द्वारि वर्तते' इति। राजा 'प्रवेशय' इति। ततः प्रविष्टः सः कविः भोजमालोक्य अद्य मे दारिद्र्यनाशो भविष्यतीति मत्वा तुष्टो हर्षाश्रूणि मुमोच। राजा तमालोक्य प्राह—'कवे, किं रोदिषि' इति। ततः कविराह— राजन्! आकर्णयमद्गृहस्थितिम्।

सन्दर्भ—प्रस्तुत गद्यांश हमारी पाठ्य-पुस्तक **'संस्कृत दिग्दर्शिका'** के **'भोजस्यौदार्यम्'** पाठ से उद्धृत है।

अनुवाद—इसके बाद कभी द्वारपाल ने आकर महाराज भोज से कहा—"देव, केवल लँगोटी पहने (अति दरिद्र) एक विद्वान् द्वार पर खड़े हैं।" (राजा बोले)—"प्रवेश कराओ।" तब प्रविष्ट होकर उस कवि ने भोज को देखकर 'आज मेरी दरिद्रता का नाश हो जाएगा' यह मानकर (विश्वास कर) प्रसन्न हो खुशी के आँसू बहाये। राजा ने उसे देखकर कहा—"हे कवि, रोते क्यों हो ?" तब कवि बोला—"राजन् मेरे घर की दशा सुनिए।"

(2) राजा तस्यै लक्षं दत्त्वा कालिदासं प्राह–'सखे, त्वमपि प्रभातं वर्णय' इति। ततः कालिदासः प्राह–

अभूत् प्राची पिङ्गा रसपतिरिव प्राप्य कनकं
गतच्छायश्चन्द्रो बुधजन इव ग्राम्यसदसि ।
क्षणं क्षीणास्तारा नृपतय इवानुद्यमपराः
न दीपा राजन्ते द्रविणरहितानामिव गुणाः ।।

राजातितुष्टः तस्मै प्रत्यक्षरं लक्षं ददौ।

सन्दर्भ—पूर्ववत्।

अनुवाद—राजा ने उसे एक लाख (रुपये) देकर कालिदास से कहा, "मित्र तुम भी प्रभात का वर्णन करो।" तब कालिदास ने कहा—

पूर्व दिशा उसी प्रकार पीली हो गयी है जैसे सुवर्ण के संयोग से पारा (पीला हो जाता है), चन्द्रमा उसी प्रकार कान्तिहीन ((फीका) दिख पड़ता है जैसे गँवारों (मूर्खों) की सभा में विद्वान्। तारे क्षणभर में ((सहसा) उसी प्रकार क्षीण हो गये हैं जैसे उद्योगरहित राजागण की राज्यश्री (क्षीण हो जाती है) और दीपक उसी प्रकार शोभा नहीं पाते जैसे धनहीन व्यक्तियों के गुण। (निर्धन व्यक्ति चाहे कितना भी गुणी हो, समाज में उसके गुणों का उचित मूल्यांकन या आदर नहीं होता और धनी व्यक्ति गुणहीन हो, तो भी समाज उसे आदर देता है।)

राजा ने अति सन्तुष्ट होकर उसे प्रत्येक अक्षर पर एक लाख (रुपये) दे दिये।

आत्मज्ञ एव सर्वज्ञः

(3) याज्ञवल्क्य उवाच—न वा अरे मैत्रेयि! पत्युः कामाय पतिः प्रियो भवति। आत्मनस्तु वै कामाय पतिः प्रियो भवति। न वा अरे, जायायाः कामाय जाया प्रिया भवति, आत्मनस्तु वै कामाय जाया प्रिया भवति। न वा अरे, पुत्रस्य वित्तस्य च कामाय पुत्रो वित्तं वा प्रियं भवति, आत्मनस्तु वै कामाय पुत्रो वित्तं वा प्रियं भवति। न वा अरे, सर्वस्य कामाय सर्वं प्रियं भवति, आत्मनस्तु वै कामाय सर्वं प्रियं भवति।

तस्माद् आत्मा वा अरे मैत्रेयि! द्रष्टव्यः दर्शनार्थं श्रोतव्यः, मन्तव्यः निदिध्यासितव्यश्च। आत्मनः खलु दर्शनेन इदं सर्वं विदितं भवति। (2015, 17)

सन्दर्भ—प्रस्तुत गद्यांश हमारी पाठ्य-पुस्तक **'संस्कृत दिग्दर्शिका'** के **'आत्मज्ञ एव सर्वज्ञः'** पाठ से उद्धृत है।

अनुवाद—याज्ञवल्क्य बोले—"अरी मैत्रेयी! पति की इच्छापूर्ति के लिए (नारी को) पति प्रिय नहीं होता, अपनी ही इच्छापूर्ति के लिए पति प्रिय होता है। (अपने स्वार्थ से ही वह पति को चाहती अथवा प्रेम करती है।) अरी न ही, पत्नी की इच्छापूर्ति के लिए (पति को) पत्नी प्रिय होती है, (वरन्) अपनी इच्छापूर्ति के लिए पत्नी प्रिय होती है। न ही अरे, पुत्र या धन की कामना से पुत्र या धन प्रिय होता है, (वरन्) अपनी ही कामना (पूर्ति) के लिए पुत्र या धन प्रिय होता है। न ही सभी की कामना से सब प्रिय होते हैं, (वरन्) अपनी ही कामना (की पूर्ति) के लिए सब प्रिय होते हैं।

इसलिए हे मैत्रेयी! आत्मा ही देखने योग्य है, देखने के लिए (अर्थात् यदि देखना हो तो उसके लिए वह) सुनने योग्य है, मनन करने योग्य है और ध्यान करने योग्य है। निश्चय ही आत्म-दर्शन से (आत्मा के स्वरूप के ज्ञान से) इस सबका ज्ञान हो जाता है।"

संस्कृतभाषायाः महत्त्वम्

(4) धन्योऽयं भारतदेशः यत्र समुल्लसति जनमानसपावनी, भव्यभावोद्भाविनी, शब्द-सन्दोह-प्रसविनी सुरभारती। विद्यमानेषु निखिलेष्वपि वाङ्मयेषु अस्याः वाङ्मयं सर्वश्रेष्ठं सुसम्पन्नं च वर्तते। इयमेव भाषा संस्कृतनाम्नापि लोके प्रथिता अस्ति। अस्माकं रामायण-महाभारताद्यैतिहासिकग्रन्थाः, चत्वारो वेदाः, सर्वाः उपनिषदाः, अष्टादशपुराणानि, अन्यानि च महाकाव्यनाट्यादीनि अस्यामेव भाषायां लिखितानि सन्ति। इयमेव भाषा सर्वासामार्यभाषाणां जननीति मन्यते भाषातत्त्वविद्भिः। संस्कृतस्य गौरवं बहुविधज्ञानाश्रयत्वं व्यापकत्वं च न कस्यापि दृष्टेरविषयः। संस्कृतस्य गौरवमेव दृष्टिपथमानीय सम्यगुक्तमाचार्यप्रवरेण दण्डिना—

संस्कृतं नाम दैवी वागन्वाख्याता महर्षिभिः। (2010, 12, 13, 15, 17)

सन्दर्भ—प्रस्तुत गद्यांश हमारी पाठ्य-पुस्तक '**संस्कृत दिग्दर्शिका**' के '**संस्कृतभाषायाः महत्त्वम्**' शीर्षक पाठ से उद्धृत है।

अनुवाद—यह भारत देश धन्य है, जहाँ मनुष्यों के पवित्र मनों को प्रसन्न करने वाली, उच्च भावों को उत्पन्न करने वाली, शब्दराशि को जन्म देने वाली देववाणी (संस्कृत) सुशोभित है। (वर्तमानकाल में) विद्यमान समस्त साहित्यों में इसका साहित्य सर्वश्रेष्ठ एवं सुसमृद्ध है। यही भाषा संसार में संस्कृत के नाम से भी प्रसिद्ध है। हमारे रामायण, महाभारत आदि ऐतिहासिक ग्रन्थ, चारों वेद, सारे उपनिषद्, अट्ठारह पुराण तथा अन्य महाकाव्य, नाटक आदि इसी भाषा में लिखे गये हैं। भाषाविज्ञानियों ने इसी भाषा को सारी आर्यभाषाओं की जननी माना है। संस्कृत का गौरव, उसमें अनेक प्रकार के ज्ञान का होना तथा उसकी व्यापकता किसी की दृष्टि से छिपी नहीं (किसी को अज्ञात नहीं) है। संस्कृत के गौरव को ध्यान में रखकर ही आचार्यश्रेष्ठ दण्डी ने ठीक ही कहा है
संस्कृत को महर्षियों ने दिव्य वाणी (देवताओं की भाषा) कहा है।

(5) संस्कृतस्य साहित्यं सरसं, व्याकरणञ्च सुनिश्चितम्। तस्य गद्ये पद्ये च लालित्यं, भावबोधसामर्थ्यम्, अद्वितीयं श्रुतिमाधुर्यञ्च वर्तते। किं बहुना चरित्रनिर्माणार्थं, यादृशीं सत्प्रेरणां संस्कृतवाङ्मयं ददाति न तादृशीं किञ्चिदन्यत्। मूलभूतानां मानवीयगुणानां यादृशी विवेचना संस्कृतसाहित्ये वर्तते नान्यत्र तादृशी। दया, दानं, शौचम्, औदार्यम्, अनसूया, क्षमा, अन्ये चानेके गुणाः अस्य साहित्यस्य अनुशीलनेन सञ्जायन्ते।

संस्कृतसाहित्यस्य आदिकविः वाल्मीकिः, महर्षिर्व्यासः, कविकुलगुरुः कालिदासः अन्ये च भास-भारवि-भवभूत्यादयो महाकवयः स्वकीयैः ग्रन्थरत्नैः अद्यापि पाठकानां हृदि विराजन्ते। इयं भाषा अस्माभिः मातृसमं सम्माननीया वन्दनीया च, यतो भारतमातुः स्वातन्त्र्यं, गौरवम्, अखण्डत्वं सांस्कृतिकमेकत्वञ्च संस्कृतेनैव सुरक्षितुं शक्यन्ते। इयं संस्कृतभाषा सर्वासु भाषासु प्राचीनतमा श्रेष्ठा चास्ति। ततः सुष्ठूक्तम् 'भाषासु मुख्या मधुरा दिव्या गीर्वाणभारती' इति। (2009, 10, 14, 15, 16, 17, 18)

सन्दर्भ—पूर्ववत्।

अनुवाद—संस्कृत का साहित्य सरस है और (उसका) व्याकरण सुनिश्चित है। उसके गद्य और पद्य में लालित्य (सौन्दर्य), भावों का बोध (ज्ञान कराने) की क्षमता और अद्वितीय कर्णमधुरता (कानों को प्रिय लगना) है। अधिक क्या, चरित्र-निर्माण की जैसी उत्तम प्रेरणा संस्कृत साहित्य देता है वैसी (प्रेरणा) अन्य कोई (साहित्य) नहीं। मूलभूत मानवीय गुणों का जैसा विवेचन संस्कृत साहित्य में मिलता है वैसा अन्य कहीं नहीं। दया, दान, पवित्रता, उदारता, ईर्ष्या (या द्वेष) रहित होना, क्षमा तथा अन्यान्य अनेक गुण इसके साहित्य के अनुशीलन (अध्ययन एवं मनन) से (मनुष्य में) उत्पन्न होते हैं।
संस्कृत साहित्य के आदिकवि वाल्मीकि, महर्षि वेदव्यास, कविकुलगुरु कालिदास, भास, भारवि-भवभूति आदि अन्य महाकवि अपने श्रेष्ठ ग्रन्थों द्वारा आज भी पाठकों के हृदय में विराजते हैं (अर्थात् उनके ग्रन्थों को पढ़कर पाठक आज भी उन्हें याद करते हैं)। यह भाषा हमारे लिए माता के समान आदरणीया और पूजनीया है; क्योंकि भारतमाता की स्वतन्त्रता, गौरव, अखण्डता एवं सांस्कृतिक एकता संस्कृत के द्वारा ही सुरक्षित रह सकती है। यह संस्कृत भाषा (विश्व की) समस्त भाषाओं में सर्वाधिक प्राचीन एवं श्रेष्ठ है। इसलिए यह ठीक ही कहा गया है, '(सब) भाषाओं में देववाणी (संस्कृत) मुख्य, मधुर और दिव्य (अलौकिक) है।'

जातक-कथा

उलूकजातकम्

(6) अतीते प्रथमकल्पे जनाः एकमभिरूपं सौभाग्यप्राप्तं सर्वाकारपरिपूर्णं पुरुषं राजानमकुर्वन्। चतुष्पदा अपि सन्निपत्य एकं सिंहं राजानमकुर्वन्। ततः शकुनिगणाः हिमवत्-प्रदेशे एकस्मिन् पाषाणे सन्निपत्य 'मनुष्येषु राजा प्रज्ञायते तथा चतुष्पदेषु च। अस्माकं पुनरन्तरे राजा नास्ति। अराजको वासो नाम न वर्तते। एको राजस्थाने स्थापयितव्यः इति उक्तवन्तः। अथ ते परस्परमवलोकयन्तः एकमुलूकं दृष्ट्वा 'अयं नो रोचते' इत्यवोचन्। (2013, 17)

सन्दर्भ—यह गद्यांश हमारी पाठ्य-पुस्तक '**संस्कृत दिग्दर्शिका**' के '**जातक-कथा**' पाठ के '**उलूकजातकम्**' शीर्षक से उद्धृत है।

अनुवाद—प्राचीन काल के प्रथम कल्प में मनुष्यों ने एक सुन्दर, सौभाग्यशाली एवं समस्त सुलक्षणों से युक्त पुरुष को राजा बनाया। चौपायों (पशुओं) ने भी इकट्ठे होकर एक सिंह को राजा बनाया। तब पक्षियों ने हिमालय प्रदेश में एक शिलातल पर इकट्ठे होकर कहा—"मनुष्यों में राजा दीख पड़ता है, वैसे ही चौपायों में भी, किन्तु हमारे बीच कोई राजा नहीं है। राजा के बिना रहना ठीक नहीं। (हमें भी) किसी को राजा के पद पर नियुक्त करना चाहिए। तब उन्होंने (राजा की खोज में) एक-दूसरे पर दृष्टि दौड़ाते हुए एक उल्लू को देखकर कहा, 'यह हमको पसन्द है'।"

नृत्यजातकम्

(7) अतीते प्रथमकल्पे चतुष्पदाः सिंहं राजानमकुर्वन्। मत्स्या आनन्दमत्स्यं, शकुनयः सुवर्णहंसम्। तस्य पुनः सुवर्णराजहंसस्य दुहिता हंसपोतिका अतीव रूपवती आसीत्। स तस्यै वरमदात् यत् सा आत्मनश्चित्तरुचितं स्वामिनं वृणुयात् इति। हंसराजः तस्यै वरं दत्त्वा हिमवति शकुनिसङ्घे संन्यपतत्। नानाप्रकाराः हंसमयूरादयः शकुनिगणाः समागत्य एकस्मिन् महति पाषाणतले संन्यपतन्। हंसराजः आत्मनः चित्तरुचितं स्वामिकम् आगत्य वृणुयात् इति दुहितरमादिदेश। (2012, 18)

सन्दर्भ—यह गद्यांश हमारी पाठ्य-पुस्तक '**संस्कृत दिग्दर्शिका**' के '**जातक-कथा**' पाठ के '**नृत्यजातकम्**' शीर्षक से अवतरित है।

अनुवाद—प्राचीन काल में प्रथम कल्प में चौपायों (पशुओं) ने सिंह को राजा बनाया। मछलियों ने आनन्द मत्स्य (मछली) को एवं पक्षियों ने सुवर्ण हंस को (राजा बनाया)। उस सुवर्ण राजहंस की पुत्री हंसपोतिका (हंसकुमारी) अत्यधिक रूपवती थी। उस (हंसराज) ने उसे (हंसकुमारी को) वर दिया कि वह अपने मनोनुकूल पति का वरण करे। हंसराज ने उसे वर देकर हिमालय के पक्षियों के समुदाय को इकट्ठा कराया। विभिन्न प्रकार के हंस, मोर आदि पक्षीगण आकर एक विशाल शिलातल पर इकट्ठे हुए। हंसराज ने पुत्री को आदेश दिया कि (वह) आकर अपने मनपसन्द पति को चुने।

(8) सा शकुनिसङ्घे अवलोकयन्ती मणिवर्णग्रीवं चित्रप्रेक्षणं मयूरं दृष्ट्वा 'अयं मे स्वामिको भवतु' इत्यभाषत। मयूरः 'अद्यापि तावन्मे बलं न पश्यसि' इति अतिगर्वेण लज्जाञ्च त्यक्त्वा तावन्महतः शकुनिसङ्घस्य मध्ये पक्षौ प्रसार्य नर्तितुमारब्धवान्। नृत्यन् चाप्रतिच्छन्नोऽभूत्। सुवर्णराजहंसः लज्जितः—'अस्य नैव ह्रीः अस्ति न बर्हाणां समुत्थाने लज्जा। नास्मै गतत्रपाय स्वदुहितरं दास्यामि' इत्यकथयत्।

हंसराजः तदैव परिषन्मध्ये आत्मनः भागिनेयाय हंसपोतकाय दुहितरमददात्। मयूरो हंसपोतिकामप्राप्य लज्जितः तस्मात् स्थानात् पलायितः। हंसराजोऽपि हृष्टमानसः स्वगृहम् अगच्छत्। (2010, 12, 18)

सन्दर्भ—पूर्ववत्।

अनुवाद—उसने पक्षी समुदाय पर दृष्टि डालते हुए नीलमणि के रंग की गर्दन और रंग-बिरंगे (या विचित्र) पंखों वाले मोर को देखकर कहा, 'यह मेरा स्वामी हो।' मोर ने (यह कहते हुए कि) 'आज भी तुम मेरा बल नहीं देखती हो' (अर्थात् अभी तुमने मेरा पराक्रम देखा ही कहाँ है?); बड़े गर्व से निर्लज्जतापूर्वक उस बड़े पक्षी समुदाय के बीच पंख फैलाकर नाचना शुरू किया और नाचते हुए नग्न हो गया। सुवर्ण राजहंस ने लज्जित होकर कहा—"इसे तो न (अन्दर का) संकोच है और न ही पंखों को उठाने में (बाहर की) लज्जा। इस निर्लज्ज को मैं अपनी पुत्री नहीं दूँगा।" यह मेरी पुत्री से विवाह योग्य नहीं है।
हंसराज ने उसी परिषद् के बीच अपने भांजे हंसकुमार को पुत्री दे दी। मोर हंसपुत्री को न पाकर लजाकर उस स्थान से भाग गया। हंसराज भी प्रसन्न मन से अपने घर को चला गया।

महामना मालवीयः

(9) महामनस्विनः मदनमोहनमालवीयस्य जन्म प्रयागे प्रतिष्ठित-परिवारेऽभवत्। अस्य पिता पण्डितव्रजनाथमालवीयः संस्कृतस्य सम्मान्यः विद्वान् आसीत्। अयं प्रयागे एव संस्कृतपाठशालायां राजकीयविद्यालये म्योरसेण्ट्रल महाविद्यालये च शिक्षां प्राप्य अत्रैव राजकीय विद्यालये अध्यापनम् आरब्धवान्। युवकः मालवीयः स्वकीयेन प्रभावपूर्णभाषणेन जनानां मनांसि अमोहयत्। अतः अस्य सुहृदः तं प्राड्विवाकपदवीं प्राप्य देशस्य श्रेष्ठतरां सेवां कर्तुं प्रेरितवन्तः। तदनुसारम् अयं विधिपरीक्षामुत्तीर्य प्रयागस्थे उच्चन्यायालये प्राड्विवाककर्म कर्तुमारभत्। विधेः प्रकृष्टज्ञानेन मधुरालापेन उदारव्यवहारेण चायं शीघ्रमेव मित्राणां न्यायाधीशानाञ्च सम्मानभाजनमभवत्। (2009, 13, 17, 18)

सन्दर्भ—यह गद्य-खण्ड हमारी पाठ्य-पुस्तक **'संस्कृत दिग्दर्शिका'** के **'महामना मालवीयः'** नामक पाठ से उद्धृत है।

[**विशेष**—*इस पाठ के सभी गद्यांशों के लिए यही सन्दर्भ प्रयुक्त होगा।*]

अनुवाद—महामना (महा बुद्धिमान्) मदनमोहन मालवीय का जन्म प्रयाग के प्रतिष्ठित (सम्मानित) परिवार में हुआ था। इनके पिता पण्डित ब्रजनाथ मालवीय संस्कृत के प्रतिष्ठित विद्वान् थे। इन्होंने प्रयाग में ही संस्कृत पाठशाला, राजकीय विद्यालय एवं म्योर सेण्ट्रल महाविद्यालय में शिक्षा प्राप्त करके यहाँ ही राजकीय विद्यालय में पढ़ाना आरम्भ किया। युवक मालवीय अपने प्रभावपूर्ण भाषण से मनुष्यों का मन मोह लेते थे। इसलिए इनके मित्रों ने इन्हें वकील की पदवी प्राप्त करके देश की उच्चतर सेवा करने को प्रेरित किया। उसी के अनुसार इन्होंने कानून की परीक्षा उत्तीर्ण करके प्रयाग में उच्च न्यायालय में वकालत आरम्भ कर दी। कानून के उत्कृष्ट ज्ञान, मधुर वार्त्तालाप एवं उदार व्यवहार से ये शीघ्र ही मित्रों एवं न्यायाधीशों के सम्मानपात्र बन गये।

(10) महापुरुषाः लौकिक-प्रलोभनेषु बद्धाः नियतलक्ष्यान्न कदापि भ्रश्यन्ति। देशसेवानुरक्तोऽयं युवा उच्चन्यायालयस्य परिधौ स्थातुं नाशक्नोत्। पण्डितमोतीलालनेहरू-लालालाजपतरायप्रभृतिभिः अन्यैः राष्ट्रनायकैः सह सोऽपि देशस्य स्वतन्त्रतासङ्ग्रामेऽवतीर्णः। देहल्यां त्रयोविंशतितमे कांग्रेसस्याधिवेशनेऽयम् अध्यक्षपदमलङ्कृतवान्। 'रोलट एक्ट' इत्याख्यस्य विरोधेऽस्य ओजस्विभाषणं श्रुत्वा आङ्ग्लशासकाः भीताः जाताः। बहुवारं कारागारे निक्षिप्तोऽपि अयं वीरं देशसेवाव्रतं नात्यजत्। (2009, 12, 15, 16, 18)

अनुवाद—महापुरुष सांसारिक प्रलोभनों में फँसकर (अपने) निश्चित लक्ष्य से कभी विचलित नहीं होते। देश-सेवा में अनुरक्त यह युवक उच्च न्यायालय की सीमाओं में (बँधकर) न रह सका। पण्डित मोतीलाल नेहरू, लाला लाजपतराय जैसे अन्य राष्ट्रीय नेताओं के साथ वे भी देश के स्वतन्त्रता संग्राम में उतरे। दिल्ली में कांग्रेस के तेईसवें अधिवेशन के अध्यक्ष पद को इन्होंने सुशोभित किया। 'रॉलेट ऐक्ट' के विरोध में इनके ओजस्वी भाषण को सुनकर अंग्रेज शासक भयभीत हो उठे। बहुत बार जेल में डाले जाने पर भी इस वीर ने देशसेवा का व्रत नहीं छोड़ा।

(11) हिन्दी-संस्कृताङ्ग्लभाषासु अस्य समानः अधिकारः आसीत्। हिन्दीहिन्दुहिन्दुस्थानानामुत्थानाय अयं निरन्तरं प्रयत्नमकरोत्। शिक्षयैव देशे समाजे च नवीनः प्रकाशः उदेति अतः श्रीमालवीयः वाराणस्यां काशीहिन्दूविश्वविद्यालयस्य संस्थापनमकरोत्। अस्य निर्माणाय अयं जनान् धनम् अयाचत जनाश्च महत्यस्मिन् ज्ञानयज्ञे प्रभूतं धनमस्मै प्रायच्छन्, तेन निर्मितोऽयं विशालः विश्वविद्यालयः भारतीयानां दानशीलतायाः श्रीमालवीयस्य यशसः च प्रतिमूर्तिरिव विभाति। साधारणस्थितिकोऽपि जनः महतोत्साहेन मनस्वितया पौरुषेण च असाधारणमपि कार्यं कर्तुं क्षमः इत्यदर्शयत् मनीषिमूर्धन्यः मालवीयः। एतदर्थमेव जनास्तं महामना इत्युपाधिना अभिधातुमारब्धवन्तः। (2013, 14, 16, 17, 18)

अनुवाद—इनका हिन्दी, संस्कृत और अंग्रेजी भाषाओं पर समान अधिकार था। हिन्दी, हिन्दू, हिन्दुस्तान की उन्नति के लिए ये निरन्तर प्रयत्न करते रहे। शिक्षा द्वारा ही देश और समाज में नवीन प्रकाश का उदय होता है, इसलिए श्री मालवीय ने वाराणसी में काशी हिन्दू विश्वविद्यालय की स्थापना की। इसके निर्माण के लिए इन्होंने लोगों से धन माँगा और लोगों ने इस महान् ज्ञानयज्ञ में इन्हें प्रचुर धन दिया। इनके द्वारा बनवाया हुआ यह विशाल विश्वविद्यालय भारतीयों की दानशीलता और श्री मालवीय के यश की प्रतिमूर्ति की भाँति सुशोभित हो रहा है। साधारण स्थिति का मनुष्य भी महान् उत्साह, बुद्धिमत्ता एवं पुरुषार्थ से असाधारण कार्य करने में सक्षम होता है, यह बुद्धिमानों में श्रेष्ठ मालवीय जी ने दिखा दिया। इसी कारण लोगों ने इन्हें महामना की उपाधि से पुकारना आरम्भ कर दिया।

(12) महामना विद्वान् वक्ता, धार्मिको नेता, पटुः पत्रकारश्चासीत्। परमस्य सर्वोच्चगुणः जनसेवैव आसीत्। यत्र कुत्रापि अयं जनान् दुःखितान् पीड्यमानांश्चापश्यत् तत्रैव सः शीघ्रमेव उपस्थितः, सर्वविधं साहाय्यञ्च अकरोत्। प्राणिसेवा अस्य स्वभाव एवासीत्। (2017)

अद्यास्माकं मध्येऽनुपस्थितोऽपि महामना मालवीयः स्वयशसोऽमूर्तरूपेण प्रकाशं वितरन् अन्धे तमसि निमग्नान् जनान् सन्मार्गं दर्शयन् स्थाने-स्थाने, जने-जने उपस्थित एव। (2010, 11, 12, 15)

अनुवाद—महामना विद्वान् वक्ता (भाषणकर्त्ता), धार्मिक नेता एवं कुशल पत्रकार थे, किन्तु इनका सर्वोच्च गुण जनसेवा ही था। जहाँ कहीं भी ये लोगों को दुःखित और पीड़ित देखते थे, वहीं शीघ्र उपस्थित होकर सब प्रकार की सहायता करते थे। प्राणियों की सेवा इनका स्वभाव ही था।

आज हमारे बीच विद्यमान न होने पर भी महामना मालवीय अमूर्त रूप से अपने यश का प्रकाश फैलाते हुए घोर अन्धकार में डूबे मनुष्यों को सन्मार्ग दिखाते हुए स्थान-स्थान पर प्रत्येक मनुष्य के अन्दर उपस्थित हैं ही।

पञ्चशील-सिद्धान्ताः

(13) पञ्चशीलमिति शिष्टाचारविषयकाः सिद्धान्ताः। महात्मा गौतमबुद्धः एतान् पञ्चापि सिद्धान्तान् पञ्चशीलमिति नाम्ना स्वशिष्यान् शास्ति स्म। एत एवायं शब्दः अधुनापि तथैव स्वीकृतः। इमे सिद्धान्ताः क्रमेण एवं सन्ति—(1) अहिंसा, (2) सत्यम्, (3) अस्तेयम्, (4) अप्रमादः, (5) ब्रह्मचर्यम् इति।

बौद्धयुगे इमे सिद्धान्ताः वैयक्तिकजीवनस्य अभ्युत्थानाय प्रयुक्ता आसन्। परमद्य इमे सिद्धान्ताः राष्ट्राणां परस्परमैत्रीसहयोगकारणानि, विश्व-बन्धुत्वस्य विश्वशान्तेश्च साधनानि सन्ति। राष्ट्रनायकस्य श्रीजवाहरलालनेहरूमहोदयस्य प्रधानमन्त्रित्वकाले चीनदेशेन सह भारतस्य मैत्री पञ्चशीलसिद्धान्तानधिकृत्य एवाभवत्। यतो हि उभावपि देशौ बौद्धधर्मे निष्ठावन्तौ। आधुनिके जगति पञ्चशीलसिद्धान्ताः नवीनं राजनैतिकं स्वरूपं गृहीतवन्तः। (2018)

सन्दर्भ—प्रस्तुत गद्य-खण्ड हमारी पाठ्य-पुस्तक **'संस्कृत दिग्दर्शिका'** के **'पञ्चशील-सिद्धान्ताः'** नामक पाठ से उद्धृत है।

अनुवाद—पंचशील शिष्टाचार-सम्बन्धी सिद्धान्त हैं। महात्मा गौतम बुद्ध ने इन पाँच सिद्धान्तों का पंचशील के नाम से अपने शिष्यों को उपदेश दिया था। इसलिए यह शब्द अब भी वैसा ही स्वीकृत है। ये सिद्धान्त क्रमशः इस प्रकार हैं—(1) अहिंसा, (2) सत्य, (3) अस्तेय (चोरी न करना), (4) अप्रमाद: (प्रमाद न करना) तथा (5) ब्रह्मचर्य।

बौद्ध-युग में ये सिद्धान्त व्यक्तिगत जीवन की उन्नति के लिए प्रयुक्त थे, किन्तु आजकल ये सिद्धान्त राष्ट्रों की पारस्परिक मैत्री एवं सहयोग के आधार (तथा) विश्व-बन्धुत्व और विश्व-शान्ति के साधन हैं। राष्ट्रनायक श्री जवाहरलाल नेहरू महोदय के प्रधानमन्त्रित्व-काल में चीन देश के साथ भारत की मैत्री पंचशील सिद्धान्तों के आधार पर ही हुई थी; क्योंकि दोनों ही देश बौद्ध धर्म में आस्था रखते थे। आधुनिक विश्व में पंचशील सिद्धान्तों ने नया राजनीतिक स्वरूप ग्रहण किया है।

संस्कृत के गद्यांशों एवं पद्यांशों का ससन्दर्भ हिन्दी में अनुवाद

प्रश्न (ख)— दिए गए पद्यांशों/श्लोकों में किसी एक का ससन्दर्भ हिन्दी में अनुवाद कीजिए—

पद्यांश / श्लोक

भोजस्यौदार्यम्

(1) **अये लाजानुच्चैः पथि वचनमाकर्ण्य गृहिणी**
शिशौः कर्णौ यत्नात् सुपिहितवती दीनवदना ।
मयि क्षीणोपाये यदकृतं दृशावश्रुबहुले
तदन्तःशल्यं मे त्वमसि पुनरुद्धर्तुमुचितः ।। (2010, 15, 17)

सन्दर्भ—यह पद्यांश हमारी पाठ्य-पुस्तक **'संस्कृत दिग्दर्शिका'** के **'भोजस्यौदार्यम्'** पाठ से उद्धृत है।

[**विशेष**—*इस पाठ के सभी पद्यांशों के लिए यही सन्दर्भ प्रयुक्त होगा।*]

अनुवाद—"(घर से बाहर) रास्ते पर (खील बेचने वाले के द्वारा) ऊँचे स्वर से 'अरे, खीलें लो' की आवाज सुनकर मेरी दीन मुख वाली पत्नी ने बच्चों के कानों को सँभालकर बन्द कर दिया (जिससे कि वे सुनकर खीलें दिलवाने का हठ न करें) और मुझ दरिद्र पर जो आँसुओं से भरी दृष्टि डाली, वह मेरे हृदय में काँटे की तरह गड़ गयी, जिसे निकालने में आप ही समर्थ हैं।"

(2) **विरलविरलाः स्थूलास्ताराः कलाविव सज्जनाः**
मन इव मुनेः सर्वत्रैव प्रसन्नमभून्नभः ।
अपसरति च ध्वान्तं चित्तात्सतामिव दुर्जनः
व्रजति च निशा क्षिप्रं लक्ष्मीरनुद्यमिनामिव ।। (2013, 18)

अनुवाद—(इस प्रभात बेला में) बड़े तारे कलियुग में सज्जनों के समान बहुत कम हो गये हैं, मुनियों के मन (या अन्तःकरण) के सदृश आकाश सर्वत्र निर्मल (स्वच्छ) हो गया है, अन्धकार सज्जनों के चित्त से दुर्जनों (के कुकृत्यों की स्मृति) के समान दूर हो गया है और रात्रि उद्योगरहित (पुरुषार्थहीन) व्यक्ति की समृद्धि के समान शीघ्र समाप्त होती जा रही है (अर्थात् जो व्यक्ति धन कमाने में उद्योग न करके पहले से जमा धन ही व्यय किये जाता है, उसकी समृद्धि जिस प्रकार शीघ्रतापूर्वक घटती जाती है, उसी प्रकार रात भी शीघ्रता से समाप्त होती जा रही है)।

(3) **अभूत् प्राची पिङ्गा रसपतिरिव प्राप्य कनकं**
गतच्छायश्चन्द्रो बुधजन इव ग्राम्यसदसि।
क्षणं क्षीणास्तारा नृपतय इवानुद्यमपराः
न दीपा राजन्ते द्रविणरहितानामिव गुणाः।। (2018)

अनुवाद—राजा ने उसे एक लाख (रुपये) देकर कालिदास से कहा, "मित्र तुम भी प्रभात का वर्णन करो।" तब कालिदास ने कहा—

पूर्व दिशा उसी प्रकार पीली हो गयी है जैसे सुवर्ण के संयोग से पारा (पीला हो जाता है), चन्द्रमा उसी प्रकार कान्तिहीन ((फीका) दिख पड़ता है जैसे गँवारों (मूर्खों) की सभा में विद्वान्। तारे क्षणभर में ((सहसा) उसी प्रकार क्षीण हो गये हैं जैसे उद्योगरहित राजागण की राज्यश्री (क्षीण हो जाती है) और दीपक उसी प्रकार शोभा नहीं पाते जैसे धनहीन व्यक्तियों के गुण। (निर्धन व्यक्ति चाहे कितना भी गुणी हो, समाज में उसके गुणों का उचित मूल्यांकन या आदर नहीं होता और धनी व्यक्ति गुणहीन हो, तो भी समाज उसे आदर देता है।)

जातक-कथा

(4) **न मे रोचते भद्रं वः उलूकस्याभिषेचनम् ।**
अक्रुद्धस्य मुखं पश्य कथं क्रुद्धो भविष्यति ।। (2017)

सन्दर्भ—प्रस्तुत श्लोक हमारी पाठ्य-पुस्तक **'संस्कृत दिग्दर्शिका'** के **'जातक-कथा'** पाठ के **'उलूकजातकम्'** शीर्षक से उद्धृत है।

अनुवाद—तुम लोगों का इस उल्लू को राजा बनाना मुझे ठीक नहीं लगता। इस समय के क्रोधहीन मुख को ही देखो, क्रुद्ध होने पर यह कैसा (विकृत) हो जाएगा ?

सुभाषितरत्नानि

(5) **भाषासु मुख्या मधुरा दिव्या गीर्वाणभारती।**
तस्या हि मधुरं काव्यं तस्मादपि सुभाषितम्।। (2011, 13, 18)

सन्दर्भ—यह श्लोक हमारी पाठ्य-पुस्तक **'संस्कृत दिग्दर्शिका'** के **'सुभाषितरत्नानि'** पाठ से अवतरित है।

[**विशेष**—*इस पाठ के सभी श्लोकों के लिए यही सन्दर्भ प्रयुक्त होगा।*]

अनुवाद—भाषाओं में संस्कृत सबसे प्रधान, मधुर और अलौकिक है। उससे (अधिक) मधुर उसका काव्य है और उस (काव्य) से (अधिक) मधुर उसके सुभाषित (सुन्दर वचन या सूक्तियाँ) हैं।

(6) **सुखार्थिनः कुतो विद्या कुतो विद्यार्थिनः सुखम् ।**
सुखार्थी वा त्यजेद् विद्यां विद्यार्थी वा त्यजेत् सुखम् ।।
(2011, 13, 17)

अनुवाद—सुख चाहने वाले को विद्या कहाँ और विद्या चाहने वाले (विद्यार्थी) को सुख कहाँ ? (इसलिए) सुख की इच्छा करने वाले को विद्या (प्राप्त करने की इच्छा) छोड़ देनी चाहिए अथवा विद्या चाहने वाले (विद्यार्थी) को सुख छोड़ देना चाहिए (आशय यह है कि विद्या बड़े कष्टों से प्राप्त होती है, इसलिए जो सुख की कामना वाले हैं, उन्हें विद्यार्जन की आशा छोड़ देनी चाहिए और यदि विद्या अर्जित करना चाहते हैं, तो सुख की इच्छा छोड़ देनी चाहिए)।

(7) **जल-बिन्दु-निपातेन क्रमशः पूर्यते घटः।**
स हेतुः सर्वविद्यानां धर्मस्य च धनस्य च ।। (2016,18)

अनुवाद—जल की एक-एक बूँद गिरने से क्रमशः घड़ा भर जाता है। समस्त विद्याओं, धर्म और धन (को संग्रह करने) का भी यही हेतु (कारण, रहस्य) है (अर्थात् निरन्तर उद्योग करते रहने से ही धीरे-धीरे ये तीनों वस्तुएँ संगृहीत हो पाती हैं।)।

(8) **काव्य-शास्त्र-विनोदेन कालो गच्छति धीमताम् ।**
व्यसनेन च मूर्खाणां निद्रया कलहेन वा ।। (2015, 17)

अनुवाद—बुद्धिमानों का समय काव्य और शास्त्रों (की चर्चा) के विनोद (आनन्द) में बीतता है और मूर्खों का (समय) बुरे शौकों में, सोने में या लड़ाई-झगड़े में (बीतता) है।

(9) **न चौरहार्यं न च राजहार्यं**
न भ्रातृभाज्यं न च भारकारि।
व्यये कृते वर्द्धत एव नित्यं
विद्याधनं सर्वधनप्रधानम्।। (2017)

अनुवाद—विद्यारूपी धन समस्त धनों में प्रधान (श्रेष्ठ) है; (क्योंकि) न तो चोर उसे चुरा सकता है, न राजा उसे छीन सकता है, न भाई बाँट सकता है, न यह बोझ बनता है; अर्थात् भार-रूप नहीं है और खर्च करने से यह निरन्तर बढ़ता जाता है (अन्य धनों के समान घटता नहीं)।

(10) **परोक्षे कार्यहन्तारं प्रत्यक्षे प्रियवादिनम् ।**
वर्जयेत्तादृशं मित्रं विषकुम्भं पयोमुखम् ।। (2009, 12, 14, 17)

अनुवाद—जो पीठ पीछे काम बिगाड़ने वाला हो, पर सामने मीठा बोलने वाला हो, ऐसे मित्र को उसी प्रकार छोड़ देना चाहिए, जिस प्रकार विष से भरे घड़े को, जिसके ऊपरी भाग में दूध हो (छोड़ दिया जाता है।)।

(11) **उदेति सविता ताम्रस्ताम्र एवास्तमेति च।**
सम्पत्तौ च विपत्तौ च महतामेकरूपता।। (2009, 16)

अनुवाद—सूर्य उदित होते समय लाल होता है और अस्त होते समय भी लाल ही होता है। (इस प्रकार) सम्पत्ति और विपत्ति (दोनों स्थितियों) में महापुरुष एक रूप रहते हैं (अर्थात् सुख में हर्षित और दुःख में पीड़ित नहीं होते अपितु समभाव से सुख और दुःख दोनों को ग्रहण करते हैं।)।

(12) **विद्या विवादाय धनं मदाय शक्तिः परेषां परिपीडनाय।**
खलस्य साधोः विपरीतमेतज्ज्ञानाय दानाय च रक्षणाय।।
(2010, 14, 15, 17)

अनुवाद—खल (दुष्ट व्यक्ति) की विद्या वाद-विवाद के लिए, धन घमण्ड के लिए और शक्ति दूसरों को सताने के लिए होती है। इसके विपरीत साधु (सज्जन) की विद्या ज्ञान-प्राप्ति के लिए, धन दान के लिए और शक्ति (दूसरों की) रक्षा के लिए होती है।

(13) सहसा विदधीत न क्रियामविवेकः परमापदां पदम् ।
वृणुते हि विमृश्यकारिणं गुणलुब्धाः स्वयमेव सम्पदः ।। (2012)

अनुवाद—सहसा (बिना विचारे यकायक) कोई काम नहीं करना चाहिए, (क्योंकि) विचारहीनता भयंकर आपत्तियों का घर है। जो व्यक्ति खूब सोच-विचारकर कार्य करता है, उसके गुणों पर रीझी हुई लक्ष्मी स्वतः ही उसका वरण करती है।

(14) वज्रादपि कठोराणि मृदूनि कुसुमादपि ।
लोकोत्तराणां चेतांसि को नु विज्ञातुमर्हति ।। (2010, 12, 17)

अनुवाद—असाधारण पुरुषों (महापुरुषों) के वज्र से भी अधिक कठोर और पुष्प से भी अधिक कोमल हृदय को भला कौन समझ सकता है ?

(15) प्रीणाति यः सुचरितैः पितरं स पुत्रो
यद् भर्तुरेव हितमिच्छति तत् कलत्रम् ।
तन्मित्रमापदि सुखे च समक्रियं यद्
एतत्त्रयं जगति पुण्यकृतो लभन्ते ।। (2013, 15, 18)

अनुवाद—जो अपने अच्छे चरित्र (सुकर्मों) से पिता को प्रसन्न करे, वही पुत्र है। जो पति का हित (भलाई) चाहती हो, वही पत्नी है। जो (अपने मित्र की) आपत्ति (दुःख) और सुख में एक-सा व्यवहार करे, वही मित्र है। इन तीन (अच्छे पुत्र, अच्छी पत्नी और सच्चे मित्र) को संसार में पुण्यात्मा-जन ही पाते हैं (अर्थात् बड़े पुण्यों के फलस्वरूप ही ये तीन प्राप्त होते हैं)।

(16) कामान् दुग्धे विप्रकर्षत्यलक्ष्मीं ।
कीर्तिं सूते दुष्कृतं या हिनस्ति।
शुद्धां शान्तां मातरं मङ्गलानां
धेनुं धीराः सूनृतां वाचमाहुः।। (2011)

अनुवाद—जो (सुभाषित वाणी) इच्छाओं को दुहती है, दरिद्रता को दूर करती है, कीर्ति को जन्म देती है (और जो) पाप को नष्ट करती है, (जो) शुद्ध, शान्त (और) मंगलों की माता है, (उस) गाय को धैर्यवान् लोगों ने सुभाषित वाणी कहा है।

(17) व्यतिषजति पदार्थानान्तरः कोऽपि हेतुः
न खलु बहिरुपाधीन् प्रीतयः संश्रयन्ते ।
विकसति हि पतङ्गस्योदये पुण्डरीकं
द्रवति च हिमरश्मावुद्गतेः चन्द्रकान्तः।। (2009)

अनुवाद—कोई आन्तरिक कारण ही पदार्थों को (आपस में) मिलाता है (या उनमें परस्पर प्रीति स्थापित करता है)। प्रीति (या प्रेम) निश्चय ही बाह्य कारणों (या विशेषताओं) पर आश्रित (निर्भर) नहीं होती; जैसे—सूर्य के उदित होने पर ही कमल खिलता है और चन्द्रमा के निकलने पर ही चन्द्रकान्तमणि द्रवित होती है।

(18) निन्दन्तु नीतिनिपुणा यदि वा स्तुवन्तु
लक्ष्मीः समाविशतु गच्छतु वा यथेष्टम् ।
अद्यैव वा मरणमस्तु युगान्तरे वा
न्याय्यात् पथः प्रविचलन्ति पदं न धीराः ।। (2009, 18)

अनुवाद—लोकनीति में कुशल लोग चाहे (धैर्यवानों की) निन्दा करें, चाहे प्रशंसा; लक्ष्मी आये या स्वेच्छानुसार चली जाए; आज ही मरण हो जाए, चाहे युगों बाद हो, किन्तु धैर्यवान् पुरुष न्यायमार्ग से एक पग भी विचलित नहीं होते।

(19) ऋषयो राक्षसीमाहुः वाचमुन्मन्तदृप्तयो ।
सः योनिः सर्ववैराणां सा हि लोकस्य निर्ऋतिः।। (2018)

अनुवाद—ऋषियों ने उन्मत्त और अहंकारी पुरुषों की वाणी को राक्षसी कहा है, (क्योंकि) वह समस्त वैरों को जन्म देने वाली और संसार की विपत्ति का कारण होती है अर्थात् अहंकार से भरी वाणी दूसरों के मन पर चोट करके शत्रुता को जन्म देती है और संसार के सारे झगड़े उसी के कारण होते हैं। ❑

10 मुहावरे एवं लोकोक्तियाँ

प्रश्न-परिचय— सामान्य हिन्दी के **खण्ड 'ख'** का **दसवाँ प्रश्न** मुहावरे एवं लोकोक्तियों से सम्बन्धित होगा। इसके अन्तर्गत आपको **दो मुहावरे** एवं **दो लोकोक्तियाँ** दी जाएँगी, जिनमें से किसी **एक** मुहावरे अथवा लोकोक्ति का अर्थ लिखते हुए स्वनिर्मित वाक्य में प्रयोग करना होगा। इसके लिए कुल **1 + 1 = 2 अंक** निर्धारित हैं।

प्रश्न— **निम्नलिखित मुहावरों और लोकोक्तियों में से किसी एक का अर्थ लिखिए और अपने वाक्य में प्रयोग कीजिए—**

मुहावरे

1. अन्धे की लाठी (एकमात्र सहारा)—कमल अपने वृद्ध माता-पिता के लिए अन्धे की लाठी था।
2. अन्त बिगाड़ना (अन्तिम दिनों में बुरा करना)—पंकज की नौकरी तो जाने ही वाली थी। रुपयों की हेरा-फेरी करके उसने अपना अन्त बिगाड़ लिया। (2010)
3. अक्ल के पीछे लट्ठ लिये फिरना (मूर्खतापूर्ण कार्य करना)—तुम तो अक्ल के पीछे लट्ठ लिये फिरते हो, जो दूसरों के झगड़े में पड़कर सिर फोड़वा आये।
4. अक्ल पर पत्थर पड़ना (बुद्धि नष्ट होना)—मेरी ही अक्ल पर पत्थर पड़ गये थे, जो बैंक की नौकरी छोड़ बैठा।
5. अक्ल चरने जाना (बुद्धि से काम न लेना)—बड़े भाई पर हाथ उठाते समय मेरी अक्ल चरने चली गयी थी। (2015)
6. अगर-मगर करना (हुज्जत या तर्क करना, टाल-मटोल करना)—सुनीता किसी के द्वारा कही गयी बात को बिना अगर-मगर किये स्वीकार ही नहीं करती। (2016)
7. अपना उल्लू सीधा करना (स्वार्थ सिद्ध करना)—आजकल नेता लोग वोट के लिए खुशामद करके अपना उल्लू सीधा करते हैं। (2012, 13, 17, 18)
8. अपने पैरों पर आप कुल्हाड़ी मारना (अपनी हानि स्वयं करना)— पढ़ाई का समय व्यर्थ में गँवाकर तुमने अपने पैरों पर आप कुल्हाड़ी मारी है।
9. अपना-सा मुँह लेकर रह जाना (लज्जित होना)—राजेश की झूठी बात की वास्तविकता का जब सभी सहकर्मियों को पता चल गया तो राजेश अपना-सा मुँह लेकर रह गया। (2014)
10. अपने मुँह मियाँ मिट्ठू बनना (अपनी प्रशंसा स्वयं करना)— आजकल के नेता अपने मुँह मियाँ मिट्ठू बनने में गर्व का अनुभव करते हैं। (2010, 15)
11. अपने पैरों पर खड़ा होना (स्वावलम्बी होना)—विकास के माता-पिता उसकी शादी करना चाहते थे, लेकिन उसने कहा कि जब तक वह अपने पैरों पर खड़ा नहीं होगा, तब तक शादी नहीं करेगा। (2011, 16, 17)

12. अंगारे सिर पर रखना (विपत्ति मोल लेना) सभी कार्य सोच-समझकर करने चाहिए। सीता का हरण कर रावण ने बेवजह अंगारे सिर पर रख लिए। (2015, 18)
13. अंगार उगलना (कठोर बात कहना)—वह बातें क्या कर रहा था, मानो अंगारे उगल रहा था। (2016)
14. अंगारे बरसना (अत्यधिक गर्मी पड़ना)—इस वर्ष तो अप्रैल माह में ही अंगारे बरसने लगे। बाद के महीनों में न जाने क्या होगा। (2016)
15. अंगूठा दिखाना (स्पष्ट मना कर देना)—जब तक लिपिक ने उसका कार्य नहीं कर दिया था, तब तक वह उसे कुछ राशि देने का वायदा करता रहा। काम होते ही उसने लिपिक को अँगूठा दिखा दिया। (2009, 14)
16. अंगूठी का नगीना (सर्वोपयुक्त जोड़ा मिलना)—राम के लिए सीता और शिव के लिए पार्वती अँगूठी के नगीने के समान ही थीं। (2013)
17. अण्डे सेना (घर पर बैठे रहना)—आपको हड़ताल छोड़ अपने काम पर लौट जाना चाहिए। यहाँ पर अण्डे सेने से लाभ नहीं होगा। (2017)
18. आँख दिखाना (धमकाना)—वह मुझसे ₹ 500 उधार तो बड़ी नम्रता से माँगकर ले गया, अब मैं माँगता हूँ तो मुझे आँखें दिखाता है।
19. आँखों पर परदा पड़ना (वास्तविक न दिखाई देना) भारत की आँखों पर तो ऐसा परदा पड़ गया है कि विश्वसघाती चीन को भी वह अपना मित्र समझ बैठा है। (2015)
20. आँखें फेरना (मुँह मोड़ना)—नीरज ने अपने मित्र को मुसीबत में देखकर आँखें फेर लीं। (2015)
21. आँखों में धूल झोंकना (धोखा देना)—अनेक व्यापारी मिलावट करके ग्राहकों की आँखों में धूल झोंक रहे हैं। (2010)
22. आँखों का तारा होना (अत्यन्त प्रिय होना)—राम कौशल्या की आँखों के तारे थे। (2012, 16, 17)
23. आँखें चार होना (निगाह मिलना, प्रेम होना)—बातों-ही-बातों में टोनी और किरण की आँखें चार हो गयीं।
24. आँखें नीची होना (शर्मिन्दा होना)—घोटाले में पकड़े गये मन्त्रियों की आँखें उसी समय नीची होती हैं, जब पत्रकारों द्वारा उनकी तस्वीरें उतारी जाती हैं। (2013)
25. आकाश से बातें करना (बहुत ऊँचा होना)—न्यूयॉर्क में कई मकान आकाश से बातें करते प्रतीत होते हैं।
26. आग में घी डालना (क्रोध को और बढ़ाना)—किसी भी वाद-विवाद के समय बीती बातों का जिक्र आग में घी डालने का काम करता है। (2016, 18)
27. आ बैल मुझे मार (मुसीबत मोल लेना)—रमेश ने अपने अधिकारी की बात न मानकर मुसीबत मोल ले ली इसे कहते हैं आ बैल मुझे मार। (2018)
28. आग बबूला होना (अत्यधिक क्रोधित होना)—कार्य में लापरवाही बरतने का मिथ्या दोषारोपण किये जाने के कारण विकास अपने अधिकारी पर आग बबूला हो उठा। (2013)
29. आस्तीन का साँप (विश्वासघाती मित्र)—भारत चीन को मित्र समझता था। भारत पर आक्रमण करके उसने स्वयं को आस्तीन का साँप सिद्ध कर दिया। (2014)
30. आसमान पर थूकना (महान् व्यक्ति पर दोषारोपण करना)—देश के राष्ट्रपति के ऊपर कदाचार का आरोपण आसमान पर थूकने जैसा है। (2009)
31. आसमान के तारे तोड़ना (असम्भव काम)—तुम प्रधानमन्त्री बनने के स्वप्न देख रहे हो। तुम्हारे जैसे गँवार के लिए तो विधायक बनना भी आसमान के तारे तोड़ने से कम नहीं है।
32. आसमान सिर पर उठाना (बहुत अधिक शोर मचाना)—मोहन का मिजाज बहुत गर्म है। वह जरा-जरा-सी बातों पर आसमान सिर पर उठा लेता है।
33. आठ-आठ आँसू रोना (अत्यधिक आँसू बहाना)—अपने पिता के स्वर्गवास पर आलोक के साथ परिवार के सभी सदस्य आठ-आठ आँसू रोये। (2018)
34. आधा तीतर आधा बटेर (न इधर का न उधर का)—अध्यापक ने छात्रों को समझाया कि या तो अंग्रेजी में बात किया करें या हिन्दी में। बातचीत के दौरान आधा तीतर आधा बटेर उचित नहीं। (2013, 16)
35. आसमान टूट पड़ना (असम्भव घटित होना)—यदि सरकारी गोदामों में रखा गया अतिरिक्त अनाज गरीबों को मुफ्त दे दिया जाएगा, तो आसमान नहीं टूट पड़ेगा। (2013)
36. आप काज महाकाज (अपना कार्य सबसे महत्त्वपूर्ण)—अनिमेश के लिए दूसरे के बहुत महत्त्वपूर्ण कार्य का भी कोई महत्त्व नहीं होता। उसका तो यही मानना है कि आप काज महाकाज।
37. आकाश-पाताल एक कर देना (असीमित प्रयत्न करना)—इस वर्ष आई० ए०एस० परीक्षा की तैयारी के लिए सुरेश ने आकाश-पाताल एक कर दिया। (2014, 16, 17)
38. इज्जत मिट्टी में मिलना (सम्मान नष्ट होना)—बेटा, तुमने तो चोरी करके मेरी इज्जत मिट्टी में मिला दी। (2009)
39. इधर की उधर लगाना (चुगली करना)—इधर की उधर लगाते-लगाते ही अनिल ने दो लोगों के घनिष्ठ सम्बन्ध में दरार पैदा कर दी। (2010)
40. ईंट से ईंट बजाना (समूल विनाश करना)—यदि कोई शत्रु देश भारत पर आक्रमण करने का दु:साहस करेगा तो भारतीय सैनिक उसकी ईंट-से-ईंट बजा देंगे। (2016)
41. ईद का चाँद होना (अधिक दिनों में दिखायी देना)—भाई विपिन, जब से तुम इंजीनियर बने हो, ईद का चाँद हो गये हो। (2011, 13, 14, 16, 17)
42. ईंट का जवाब पत्थर से देना (दुष्ट के साथ दुष्टता का व्यवहार करना)—भारत शान्तिप्रिय देश है, परन्तु पाकिस्तान ने यदि उसके साथ कोई अनुचित कार्य किया, तो ईंट का जवाब पत्थर से दिया जाएगा। (2016, 17)
43. उड़ती चिड़िया पहचानना (के पंख गिनना) (दूर से ही वास्तविकता को समझ जाना)—चोर दारोगा को अपने चोर न होने की दुहाई दे रहा था। दारोगा ने उससे कहा कि मैं अनाड़ी नहीं हूँ, मैं उड़ती चिड़िया पहचानता हूँ। (2018)
44. उल्टी गंगा बहाना (नियम-विरुद्ध कार्य करना) मोहन का मित्र सदैव उसके हित की बात करता है, परन्तु वह उसे अपना विरोधी बताकर हमेशा उल्टी गंगा बहाता है। (2015)
45. उल्लू सीधा करना (स्वार्थ सिद्ध करना)—राम ने श्याम से ही अपने सारे कठिन कार्य करवा कर अपना उल्लू सीधा कर लिया। (2016)
46. उँगलियों पर नचाना (मनमानी करना)—स्त्रैण पुरुषों को उनकी स्त्रियाँ हमेशा अपनी उँगलियों पर नचाया करती हैं। (2012, 15)
47. ऊँट के मुँह में जीरा (अति अल्प साधन)—गुजरात की प्राकृतिक आपदा से पीड़ित जनता के लिए दो-चार लाख रुपये की आर्थिक सहायता तो ऊँट के मुँह में जीरे के समान है। (2010, 12, 13, 15)
48. एक अनार सौ बीमार (एक वस्तु को प्राप्त करने के लिए बहुत लोगों का प्रयास करना)—आजकल एक छोटी-सी नौकरी के लिए सैकड़ों सिफारिशें आती हैं। इसी को कहते हैं—एक अनार सौ बीमार। (2010, 13)
49. एक आँख से देखना (समान भाव रखना)—राज्यवर्धन एक दयालु एवं प्रजापालक राजा थे। वे सभी को एक आँख से देखते थे। (2015)
50. एक ही लकड़ी से हाँकना (अच्छे-बुरे की पहचान न होना)—पराधीनता के दिनों में अंग्रेजों ने उचित-अनुचित का विवेक न करते हुए सभी भारतवासियों को एक ही लकड़ी से हाँक दिया। (2017)
51. ओखली में सिर देना (जान-बूझकर मुसीबत मोल लेना)—जब ओखली में सिर दे ही दिया है, तब डरना व्यर्थ है। (2010)
52. कोल्हू का बैल होना (दिन-रात काम करना)—बहुत-से लोग कमाई के लिए कोल्हू का बैल बने रहते हैं, अपने स्वास्थ्य का भी ध्यान नहीं रखते।
53. कान में तेल डालना (ध्यान न देना)—कर्मचारियों के वेतन बढ़ाने की माँग करने पर सरकार कानों में तेल डालकर बैठ गयी।

54. कान पर जूँ न रेंगना (अनसुनी करना)—जनता अपनी समस्याओं के समाधान के लिए गुहार लगाती रहती है, पर अफसरों के कान पर जूँ तक नहीं रेंगती। (2009, 15, 18)

55. कान का कच्चा (झूठी शिकायत पर ध्यान देने वाला)—जो अधिकारी कान का कच्चा होता है, उसके विश्वसनीय कर्मचारी उसका साथ छोड़ देते हैं। (2009)

56. कच्चा चिट्ठा खोलना (कमियाँ प्रकट करना)—विपक्षी दल के नेताओं ने अपनी सारी शक्ति सरकार का कच्चा चिट्ठा खोलने में ही व्यय कर दी। (2010, 17)

57. कुएँ में भाँग पड़ना (सबका एकसमान उन्मत्त होना)—इस घर के सभी सदस्य एक ही तरह के हैं। मालूम पड़ता है कि कुएँ में ही भाँग पड़ी हुई है।

58. कूपमण्डूक होना (अल्पज्ञ होना) तुम्हारा मित्र कूपमण्डूक है। वह अपने घर के अलावा कुछ नहीं जानता। (2015, 18)

59. हाथ-पाँव मारना (अत्यधिक प्रयत्न करना)—अपनी बेटी को एम०बी० बी०एस० में अच्छे कॉलेज में प्रवेश दिलाने के लिए उसके पिता आशुतोष ने खूब हाथ-पाँव मारे, लेकिन सफल न हो सके। (2012, 18)

60. काला अक्षर भैंस बराबर (बिल्कुल अशिक्षित)—तुम अंग्रेजी का अखबार लेकर क्या करोगे, तुम्हारे लिए तो अंग्रेजी काला अक्षर भैंस बराबर है। (2015)

61. कलेजा ठण्डा होना (चैन पड़ना)—भूतपूर्व मन्त्री जी की चुनाव में जमानत जब्त हो जाने पर विपक्षी नेताओं का कलेजा ठण्डा हो गया।

62. कलेजा मुँह को आना (अत्यधिक व्याकुल होना)—पत्नी के असामयिक निधन का समाचार सुनते ही उसका कलेजा मुँह को आ गया। (2016)

63. कलेजे पर साँप लोटना (ईर्ष्या से जल उठना)—राघव को नयी कार की सवारी करते देखकर शीतल के कलेजे पर साँप लोटने लगा। (2009)

64. कीचड़ उछालना (दोष लगाना)—तुम एक साधु पुरुष पर कीचड़ उछाल रहे हो। तुम्हें शर्म आनी चाहिए। (2010)

65. खटाई में पड़ना (झमेले में पड़ना)—अकाल और सूखे जैसी प्राकृतिक आपदा के समय देश के विकास-कार्य खटाई में पड़ जाते हैं। (2016)

66. खेत रहना (युद्ध में मारा जाना)—ईरान-इराक युद्ध में लाखों जवान खेत रहे। (2012)

67. खून का प्यासा (जानी दुश्मन)—राम और रहीम आजकल एक-दूसरे के खून के प्यासे बने हुए हैं। (2017)

68. खून सफेद होना (प्रेम और आत्मीयता की भावना समाप्त होना)—पिता की मृत्यु के बाद दोनों भाइयों में सम्पत्ति का बँटवारा क्या हुआ, दोनों के तो खून ही सफेद हो गये। (2011, 17)

69. खून सूखना (भयग्रस्त होना)—आतंकवादियों की गतिविधियों के कारण सीमा के निकट रहने वालों का खून सूखता रहता है। (2018)

70. खून-पसीना एक करना (कठिन परिश्रम करना)—मजदूर दिन भर बोरी ढोने में खून-पसीना एक करते हैं, तब कहीं उन्हें एक समय का भोजन मिल पाता है।

71. खाक छानना (बेकार भटकना)—आजकल शिक्षित बेरोजगार सड़कों पर खाक छानते घूम रहे हैं।

72. गले का हार होना (बहुत प्रिय होना)—विमल अपने ननिहाल में आकर अपने नाना के गले का हार बन गया है। (2018)

73. गड़े मुर्दे उखाड़ना (पुरानी बातों को याद दिलाना)—स्त्रियाँ छोटे-मोटे लड़ाई-झगड़ों में गड़े मुर्दे उखाड़कर एक-दूसरे को भला-बुरा कहती हैं। (2014, 16)

74. गागर में सागर भरना (संक्षेप में बहुत कुछ कह देना)—महाकवि बिहारी ने अपनी 'सतसई' के दोहों में 'गागर में सागर' भर दिया। (2012,13,16)

75. गाल बजाना (डींग मारना)—मात्र गाल बजाने से ही तुम किसी काम में सफल नहीं हो सकते। सफलता के लिए कठिन परिश्रम की आवश्यकता होती है। (2014)

76. घोड़े बेचकर सोना (निश्चिन्त होना)—तुम तो अब लड़की की शादी करके आराम से घोड़े बेचकर सो जाओ। (2017)

77. घाव पर नमक छिड़कना (दुःखी को और दुःखी करना)—तुम उस विधवा को ताने देकर उसके घावों पर क्यों नमक छिड़क रहे हो। (2010, 13)

78. घड़ों पानी पड़ना (लज्जित होना)—मोहन सिगरेट पी रहा था कि उसके पिताजी आ गये। उस पर घड़ों पानी पड़ गया। (2013)

79. घर फूँक तमाशा देखना (अपनी हानि पर आनन्दित होना)—युवाओं को आतंकवाद में फँसाकर आतंकवादी संगठन घर फूँक तमाशा देखने की कहावत को चरितार्थ कर रहे हैं। (2013, 2017)

80. घी के दीये जलाना (खुशियाँ मनाना)—भ्रष्ट अधिकारी का तबादला होने पर सभी कर्मचारियों ने घी के दीये जलाये। (2015, 16)

81. चम्पत होना (भाग जाना)—आयकर अधिकारियों के उड़नदस्ते को देखकर बड़े-बड़े व्यापारी शहर से चम्पत हो जाते हैं। (2009)

82. चार चाँद लगाना (शोभा बढ़ाना)—मदर टेरेसा ने कुष्ठ रोगियों के लिए लगे चिकित्सा शिविर में पधारकर आयोजन में चार चाँद लगा दिये।

83. चाँदी काटना (अधिक लाभ प्राप्त करना)—आपात् स्थिति से पूर्व काले धन्धे में लगे व्यक्ति कृत्रिम कमी उत्पन्न करके चाँदी काट रहे हैं। (2017)

84. चिकना घड़ा होना (बेशर्म होना)—हर आदमी मोहन की बुराई करता है, परन्तु वह ऐसा चिकना घड़ा है कि उस पर कोई प्रभाव नहीं होता।

85. चींटी के पर निकलना (अति सामान्य व्यक्ति द्वारा घमण्ड करना)—आजकल उसका दिमाग सातवें आसमान पर है। रोज धमकियाँ दे रहा है। लगता है कि चींटी के पर निकल आए हैं। (2016)

86. चिराग तले अँधेरा (सबको सुविधा देने वालों का स्वयं सुविधाओं से वंचित रह जाना)—हमारे अध्यापक महोदय का लड़का पढ़ाई में बहुत कमजोर है। इसे कहते हैं—चिराग तले अँधेरा।

87. छक्के छुड़ाना (बुरी तरह हराना)—भारतीय सेना ने पाकिस्तानी सेना के छक्के छुड़ा दिये। (2014, 15)

88. छोटे मुँह बड़ी बात करना (अपनी योग्यता से अधिक बात करना)—तुम अपने सज्जन पिता को उपदेश देकर छोटे मुँह बड़ी बात कर रहे हो।

89. छठी का दूध याद आना (प्रतिद्वन्द्वी के द्वारा किंकर्त्तव्यविमूढ़ कर दिया जाना)—सतपाल से युवावस्था में लड़ने पर भी अनेकानेक पहलवानों को छठी का दूध याद आ गया था।

90. छाती पर मूँग दलना (अत्यधिक कष्ट देना)—तुमको पढ़ा-लिखा दिया, परिश्रम करो और कोई नौकरी-धन्धा देखो। कब तक मेरी छाती पर मूँग दलते रहोगे। (2017)

91. छाती पर साँप लोटना (ईर्ष्या होना)—मेरे लड़के के सरकारी अफसर बन जाने पर रिश्तेदारों की छाती पर साँप लोटने लगा। (2012, 17)

92. जले पर नमक छिड़कना (दुःखी व्यक्ति को और दुःख देना)—रामू को अपने अनुत्तीर्ण होने का बड़ा दुःख था। इस पर उसके भाई ने उसे खरी-खोटी सुनाकर जले पर नमक छिड़क दिया।

93. टका-सा जवाब देना (साफ इनकार कर देना)—आजकल सरकारी कर्मचारी छोटे-छोटे कामों पर भी अपने अफसरों को टका-सा जवाब दे देते हैं।

94. टोपी उछालना (बेइज्जत करना)—तुम्हारे पास पैसे हैं, इसका अर्थ यह नहीं है कि तुम सबकी टोपी उछालते रहो। (2013)

95. ठकुरसुहाती करना (खुशामद या चापलूसी करना)—स्वाभिमानी व्यक्ति भूखा मर जाता है, किन्तु वह किसी की ठकुरसुहाती नहीं करता।

96. ठगा-सा रह जाना (चकित रह जाना) जादूगर के प्रत्यक्ष चमत्कारों को देखकर मैं ठगा-सा रह गया। (2015)

97. डूबते को तिनके का सहारा (दुःख में पड़े हुए को थोड़ी सहायता ही बहुत होती है)—मोहनलाल की नौकरी छूट जाने पर सेठ जी ने अपने यहाँ ₹ 500 मासिक पर मुनीम रखकर डूबते को तिनके का सहारा दे दिया।

98. तलवे चाटना (चापलूसी करना)—उसने अपने अधिकारियों के बहुत तलवे चाटे, परन्तु पदोन्नति आज तक नहीं हुई।

99. तारे गिनना (बेचैनी से रात्रि व्यतीत करना)—मैं तुम्हारी याद में तारे गिनता रहा।

100. तिल का ताड़ बनाना (छोटी-सी बात को बड़ी बनाना)—बात तो बहुत छोटी-सी थी, उन्होंने आपस में झगड़ा करके तिल का ताड़ बना दिया। (2012, 14, 16)

101. थाली का बैंगन होना (पक्ष बदलते रहना) रंजन की बात पर कोई विश्वास नहीं करता। वह कभी इस ओर हो जाता है और कभी उस ओर। उसे तो थाली का बैंगन कहना चाहिए। (2015)

102. दूध की नदियाँ बहाना (धन का वैभव दिखलाना)—आजकल के नेतागण अपने पुत्र-पुत्रियों के वैवाहिक समारोहों में जमकर दूध की नदियाँ बहाते हैं। (2013)

103. दाँत खट्टे करना (हराना)—भारतीय सेना ने सन् 1971 के युद्ध में पाकिस्तानी सेना के दाँत खट्टे कर दिये थे। (2009, 10)

104. दाँतों तले अँगुली दबाना (चकित रह जाना)—अजन्ता-ऐलोरा की गुफाओं को देखकर दर्शकगण दाँतों तले अँगुली दबा लेते हैं। (2012, 14, 18)

105. दाल में कुछ काला होना (गड़बड़ होना)—तुम रात भर सड़कों पर इधर से उधर घूमते रहे हो, जरूर कुछ दाल में काला है। (2016)

106. दुधारी तलवार कलेजे पर फिरना (दोनों ओर से संकट या दुःख का अनुभव होना)—मुझे झूठ बोलकर कर्त्तव्यपालन न करने का दुःख तथा सच बोलकर पिटने का भय था। इस प्रकार दुधारी तलवार मेरे कलेजे पर फिर रही थी।

107. दूध का दूध पानी का पानी करना (ठीक न्याय करना)— न्यायाधीश ने दूध का दूध और पानी का पानी कर दिया। (2015)

108. तोते की तरह रटना (बिना अर्थ समझे पाठ याद करना)—परीक्षा के समय विद्यार्थी तोते की तरह सब कुछ रट लेते हैं। उनको यह समझना चाहिए कि विद्या रटने से नहीं मिलती। (2013)

109. नाक कटना (इज्जत गँवाना)—अजय परीक्षा में नकल करते हुए पकड़ा गया, उसने तो विद्यालय की नाक ही कटा दी।

110. नहले पर दहला चलना (किसी की कही बात को अपनी बात कहकर महत्त्वहीन सिद्ध करना)—शेखर राजनीतिक दाँव-पेंच पर अपनी शेखी मार रहा था कि चन्द्रन ने अपनी बात कहकर उसकी बात गलत कर दी। सभी ने कहा कि चन्द्रन ने तो नहले पर दहला चला दिया। (2017)

111. नानी याद आना (कष्ट में सुख याद आते हैं)—जब शहजादे को स्वयं परिश्रम करके रोटी कमानी पड़ेगी तो नानी याद आ जाएगी।

112. नौ दो ग्यारह होना (भाग जाना)—चोर पुलिस को देखते ही नौ दो ग्यारह हो जाते हैं। (2009, 11, 13)

113. नाक रगड़ना (दीनतापूर्वक प्रार्थना करना)—थोड़ी-बहुत सुविधाएँ प्राप्त करने के लिए अधिकारियों के सामने नाक रगड़ना अच्छी बात नहीं है (2012)

114. नाक बचाना (इज्जत बचा लेना)—प्रदीप ने विवाह के समय पर अनिल को धन प्रदान करके उसकी नाक बचा ली। (2011)

115. नाकों चने चबाना (अत्यधिक परेशान करना)—रमेश ने सुरेश से कहा कि तुम मुझे कमजोर समझने की गलती हरगिज मत करना। मैं तुम्हें नाकों चने न चबवा दूँ तो मेरा नाम बदल देना। (2012)

116. पत्ता काटना (किसी का बना-बनाया काम बिगाड़ना)—राजेश की फर्म के मालिक तक पहुँच है। इसका फायदा उठाते हुए वह शेष सहकर्मियों के पत्ते आये दिन काटता रहता है।

117. पानी-पानी होना (लज्जित होना)—मेहमान के सम्मुख अपने नौकर के प्रति पुत्र के अशिष्ट व्यवहार को देखकर पिता पानी-पानी हो गया। (2011)

118. पगड़ी उछालना (बेइज्जत करना)—किसी इज्जतदार आदमी की पगड़ी उछालना इंसानियत नहीं है।

119. पहाड़ टूट पड़ना (अत्यधिक मुसीबतें आना)—राम के पिता की मृत्यु से उसके परिवार पर मानो पहाड़ ही टूट पड़ा। (2010, 13)

120. पेट में दाढ़ी होना (अत्यधिक धूर्त होना)—श्याम की आयु केवल पन्द्रह साल की है किन्तु वह बहुत अधिक चालाक है। उसकी बातें सुनकर एक व्यक्ति ने कहा कि इस लड़के के पेट में तो दाढ़ी है। (2012, 14)

121. पापड़ बेलना (बड़ी विपत्ति झेलना)—आजकल के तकनीकी शिक्षा प्राप्त नवयुवकों को भी नौकरी पाने के लिए बहुत पापड़ बेलने पड़ते हैं। (2010, 14)

122. पानी उतर जाना (इज्जत समाप्त हो जाना)—रमेश की चोरी पकड़े जाने के बाद से पड़ोसियों की निगाह में उसका पानी उतर गया। (2014)

123. प्राण हथेली पर रखना (मृत्यु के लिए तैयार रहना)—भारतीय सैनिक सदैव प्राण हथेली पर रखकर अपने शत्रुओं का सामना करते हैं। (2018)

124. फूला न समाना (बहुत प्रसन्न होना)—अपनी कक्षा में प्रथम स्थान प्राप्त करके मैं फूला नहीं समा रहा था।

125. बगुला भगत बनना (पाखण्डी बनना)—वह साधु दुकान से माल चोरी करते रँगे हाथों पकड़ लिया गया। गेरुवे वस्त्र पहनकर बड़ा बगुला भगत बनता था।

126. बाल-बाँका न होना (कुछ भी हानि न पहुँचना)—इस मुकदमे में तुम चाहे जितना ही धन व्यय कर लो, किन्तु उनका बाल-बाँका नहीं हो सकता। (2017)

127. बात बिगड़ना (काम बिगड़ जाना)—आपस की फूट से बात बिगड़ ही जाती है।

128. भण्डाफोड़ करना (भेद खोलना)—कल तक तो गोपाल भक्त बना हुआ था और लोगों का धन-हरण कर रहा था। मगर आज महेश ने अन्ततः उसका भण्डाफोड़ कर ही दिया। (2011)

129. भीगी बिल्ली बनना (भय से दबना)—वह अपने मालिक के सामने भीगी बिल्ली बना रहता है। (2010)

130. मंत्र फूँकना (अनुचित बातें समझाना)—दो भाइयों के विवाद में अक्सर पड़ोसी और रिश्तेदार दोनों ही मन्त्र फूँकते रहते हैं। (2014)

131. मुँह में पानी भर आना (खाने को जी ललचाना)—ताजी जलेबी देखकर तुम्हारे मुँह में पानी आ गया।

132. मुँह फुलाना (नाराज होना, रूठना)—राजेश ने विकास से उधार रुपये माँगे थे। प्रयास करने पर भी इन्तजाम न होने पर विकास ने मना कर दिया। राजेश ने इस बात पर मुँह फुला लिया।

133. मूँछें नीची हो जाना (अभिमान नष्ट होने के कारण लज्जित होना)—दूसरों से उधार ले-लेकर हरीश खर्च करता था और अपनी मूँछों पर ताव दिया करता था। एक बकायेदार ने कई लोगों के सामने अपने बाकी के रुपए माँग लिये, जिससे उसकी मूँछें नीची हो गयीं।

134. मुट्ठी गरम करना (रिश्वत देना)—आजकल दफ्तरों में क्लर्कों की मुट्ठी गर्म किये बिना कोई फाइल आगे नहीं सरकती। (2013, 16)

135. मैदान मारना (विजय प्राप्त करना)—रमेश ने 100 मीटर की दौड़ में अन्य सभी प्रतिभागियों को पराजित कर मैदान मार लिया। (2009)

136. रंग में भंग पड़ना (आनन्द में विघ्न होना)—सिनेमाहॉल में कुछ लोगों में झगड़ा होने के कारण अधिकांश दर्शकों के रंग में भंग पड़ गया। (2012, 14)

137. रोंगटे खड़े होना (भयभीत होना)—रमेश खेत की पगडण्डी पर चला जा रहा था। पगडण्डी पर ही साँप फन फैलाये खड़ा था। साँप को देखते ही उसके रोंगटे खड़े हो गये।

138. रास्ता नापना (जाना)—विकास योगेश के घर बैठकर बेवजह गप्पे मार रहा था। अन्ततः योगेश को कहना ही पड़ा कि अब तुम अपना रास्ता नापो, मुझे भी कुछ काम करना है।

139. रँगा सियार होना (धोखा देने वाला)—घर में रह रहा साधु कपड़े लेकर भाग गया तो साधुरूपी उस रँगे सियार का भेद खुल ही गया। (2009)

140. लोहे के चने चबाना (कठोर परिश्रम करना)—किसी प्रतियोगी परीक्षा में चयन के लिए लोहे के चने चबाने पड़ते हैं। (2012)

141. लाल-पीला होना (क्रोधित होना)—नीरज विकास को देखकर लाल-पीला हो जाता है। (2010,12)

142. श्रीगणेश करना (प्रारम्भ करना)—आज मैंने पुस्तक लिखने का श्रीगणेश कर दिया। (2018)

143. **सोने पे सुहागा (अच्छी वस्तु में एक और गुण बढ़ना)**—वह हिन्दी का अच्छा ज्ञाता है, यदि थोड़ी-सी संस्कृत भी सीख ले तो सोने पे सुहागा हो जाए।

144. **सीधे मुँह बात न करना (ठीक व्यवहार न करना)**—जब से वह लोकसभा का सदस्य बना, सीधे मुँह बात भी नहीं करता है।

145. **साँच को आँच नहीं (सच्चे मनुष्य को भय नहीं होता)**—मैं जानता हूँ कि साँच को आँच नहीं, इसलिए मैं पुलिस से क्यों डरूँ, क्योंकि मैंने कोई गलत काम तो किया नहीं। (2009)

146. **सिर मुँड़ाते ही ओले पड़ना (काम के शुरू होते ही विघ्नों का आ पड़ना)**—मोहन को अनाज के व्यापार से तीन वर्षों के नुकसान के बाद लाभ होना शुरू ही हुआ था कि मुनीम हजार रुपये लेकर भाग गया। बेचारे को सिर मुँड़ाते ही ओले पड़े। (2009)

147. **सिर उठाना (विरोध में खड़े होना, बगावत करना)**—भगवान् श्रीकृष्ण के सम्मुख कंस, जरासन्ध, शिशुपाल जैसे अनेक दुराचारियों ने सिर उठाये, जो उनके द्वारा मार दिये गये। (2011)

148. **सूरज को दीपक दिखाना (अति गुणवान् या बुद्धिमान को कुछ बताना या लिखना अथवा किसी अति प्रसिद्ध पुरुष का परिचय देना)**—महात्मा गांधी के चरित्र के बारे में कुछ भी कहना सूरज को दीपक दिखाने के समान है। (2015)

149. **हवाई किले बनाना (ऊँची कल्पनाएँ करना)**—अभी तो तुम्हारा परीक्षाफल भी नहीं आया, अभी से हवाई किले बनाने लगे हो। (2014)

150. **हवा हो जाना (गायब हो जाना)**—दानवीर कर्ण युद्ध-क्षेत्र में न जाने कहाँ हवा हो गया। (2017)

151. **हथियार डाल देना (हार मान लेना)**—कारगिल के युद्ध में पाकिस्तानी सेना ने भारत की सेना के आगे हथियार डाल दिये। (2015)

152. **हाथ पर हाथ धरकर बैठना (निकम्मा होना)**—परिश्रमशील व्यक्ति कभी हाथ पर हाथ धरकर नहीं बैठते। वे सदैव कुछ-न-कुछ करते रहते हैं। (2009, 11)

153. **हवा से बातें करना (बहुत तेज चलना)**—जापान में स्टेशन छोड़ते ही बुलेट ट्रेन हवा से बातें करने लगती है।

154. **हाथ पीले करना (विवाह करना)**—वर्तमान युग में किसी सामान्य व्यक्ति के लिए अपनी बेटी के हाथ पीले करना अत्यधिक कठिन कार्य है।

155. **हाथ के तोते उड़ जाना (चकित रह जाना)**—राजेश के बैग में बीस हजार रुपये थे। एक लुटेरा दिन में ही चालू सड़क पर चाकू दिखाकर बैग छीन ले गया। ऐसा लगा राजेश के तो हाथ के तोते ही उड़ गये; क्योंकि दिन में तो वह ऐसा सोच ही नहीं सकता था। (2015)

156. **हाथ धो बैठना (गँवा देना)**—इतना बोझ मत उठाया करो, किसी दिन जान से हाथ धो बैठोगे।

157. **हाथ-पाँव फूलना (व्यग्र होना, घबड़ा जाना)**—राकेश रात्रि में रेलवे स्टेशन से वापस आ रहा था। रास्ते में एक खूँखार से लगने वाले व्यक्ति को देखकर उसके हाथ-पाँव फूल गये। (2010, 15)

लोकोक्तियाँ

1. **अधजल गगरी छलकत जाय (कम होने पर अधिक का दिखावा करना)**—नरेश कमाता तो है तीन हजार रुपये महीने और पाँच हजार रुपये का सूट बनवा लिया, जैसे बड़ा धनी हो। इसी को कहते हैं—'अधजल गगरी छलकत जाय।' (2009,12, 15, 17)

2. **अपनी-अपनी डफली, अपना-अपना राग (अपने-अपने मतलब की बात करना)**—राकेश के परिवार का कोई भी सदस्य किसी की बात नहीं मानता। सभी 'अपनी-अपनी डफली अपना-अपना राग' अलापते हैं। (2016)

3. **अपना हाथ जगन्नाथ (अपने पुरुषार्थ से ही मनुष्य को सफलता मिलती है)**—परिश्रम करोगे, तभी अपनी रोजी-रोटी ठीक से कमा सकोगे। लगता है कि तुमने ये कहावत सुनी ही नहीं है—'अपना हाथ जगन्नाथ'। (2011)

4. **अपनी करनी पार उतरनी (जैसी करनी वैसा फल)**—यदि व्यक्ति अच्छा काम करता है तो उसे अच्छा फल मिलेगा और यदि बुरा काम करता है तो बुरा। पुराने लोगों ने उचित ही कहा है कि 'अपनी करनी पार उतरनी'। (2010, 12, 15)

5. **अटका बनिया देय उधार (दबा हुआ मनुष्य सब कुछ कर सकता है)**—राकेश के अजय के पास पच्चीस हजार रुपये बाकी थे। राकेश के बार-बार माँगने पर अजय ने उसे कई अन्य कामों में फँसा दिया। खीझकर राकेश बोल उठा—'अटका बनिया देय उधार' कहावत सही ही कही गयी है। (2013)

6. **आम के आम गुठलियों के दाम (दुहरा लाभ प्राप्त करना)**—सोहन ने चावल तो पहले ही अच्छे दामों पर बेच दिये थे। अब धान की भूसियों को बेचकर भी पैसे बना रहा है। इसी को कहते हैं—'आम के आम गुठलियों के दाम'। (2012, 17)

7. **आँख के अन्धे गाँठ के पूरे (मूर्ख लेकिन धनी)**—लाभचन्द मूर्ख तो है लेकिन है धनपति। ऐसे ही लोगों के लिए कहा गया है—'आँख के अन्धे गाँठ के पूरे'।

8. **आँख का अन्धा नाम नयनसुख (नाम के विपरीत गुण होना)**—करोड़ीमल नाम के व्यक्ति को भीख माँग कर अपना पेट पालना पड़ता है। यह तो वही बात हुई—'आँख का अन्धा नाम नयनसुख'। (2010, 12, 15)

9. **आये थे हरि भजन को, ओटन लगे कपास (करना चाहिए था कुछ, करने लगे कुछ और)**—ज्ञानी उद्धव गोपियों का मन कृष्ण की भक्ति से हटाकर, निराकार की ओर मोड़ने गये थे, पर स्वयं ज्ञान-मार्ग छोड़कर प्रेममार्गी बन गये। इसी को कहते हैं—'आये थे हरि भजन को, ओटन लगे कपास'। (2012, 15, 17)

10. **आगे नाथ न पीछे पगहा (बन्धनहीन)**—रामू के कार्यों का अनुसरण मत करो, क्योंकि उसके तो 'आगे नाथ न पीछे पगहा'। लेकिन तुम्हारे साथ तो ऐसा नहीं है। (2011, 15, 16)

11. **आसमान से गिरा, खजूर पर अटका (एक मुसीबत से छूटा तो दूसरी मुसीबत में पड़ गया)**—चुनाव आयोग ने जयललिता को चुनाव लड़ने से रोक दिया था। तब राज्यपाल फातिमा बीबी ने उन्हें मुख्यमन्त्री तो बना दिया, परन्तु सर्वोच्च न्यायालय के फैसले के बाद जयललिता को मुख्यमन्त्री पद भी छोड़ना पड़ा। इसी को कहते हैं—'आसमान से गिरा, खजूर पर अटका'। (2018)

12. **आप भला तो जग भला (अच्छे के लिए सभी अच्छे होते हैं)**—दूसरों से तुम्हें क्या मतलब, तुम अपना काम करो और उसी में मन लगाओ, क्योंकि 'आप भला तो जग भला'। (2012)

13. **आधी तज सारी को धावै, आधी रहे न सारी पावै (अधिक पाने के लालच में जो अपना है उसे भी गँवा देना)**—ललित के पास गाढ़ी कमाई के कुछ रुपये थे। अधिक कमाने के लिए उसने इसे ऊँची ब्याज दर पर उधार दे दिया। उधार लेने वाले की मृत्यु हो गयी और ललित का मूलधन भी डूब गया। इसी को कहते हैं—'आधी तज सारी को धावै, आधी रहे न सारी पावै'। (2013)

14. **इधर कुआँ उधर खाई (सभी ओर परेशानी)**—शेर से बचने के लिए हेनरी पेड़ पर चढ़ गया। घबराहट में जिस डाल पर वह बैठा उस पर एक विषैला सर्प पहले से था। इसी परिस्थिति को कहते हैं—'इधर कुआँ उधर खाई'। (2014)

15. **उल्टे बाँस बरेली को (विपरीत कार्य वाला)**—मन्त्री जी ने बाँस से बने फर्नीचर मँगाने का आदेश मुम्बई की एक कम्पनी को दिलाकर 'उल्टे बाँस बरेली को' कहावत चरितार्थ की। (2016)

16. **उल्टा चोर कोतवाल को डाँटे (अपना दोष स्वीकार न करके निर्दोष को दोष देना)**—सुनील से जब प्रधानाचार्य से की गयी उसकी उद्दण्डता के बारे में मैंने पूछा तो वह मुझे ही दोषी ठहराने लगा। ठीक ही कहा गया है—'उल्टा चोर कोतवाल को डाँटे'। (2009, 11)

17. **ऊँची दुकान, फीका पकवान या ढोल के भीतर पोल (दिखावा अधिक और वास्तविकता कम)**—'मॉडल स्कूल' में बच्चे का दाखिला क्यों करा रहे हो ? विद्यालयों के नाम पर तो वह 'ऊँची दुकान, फीका पकवान' वाली कहावत को चरितार्थ करता है। (2012, 15)

18. **ऊधौ का लेना न माधव को देना (किसी से कोई सम्बन्ध न रखना/तटस्थ रहना)**—वह तो कार्यालय आता है, काम करता है और वापस घर चला जाता है। महीने के अन्त में अपनी तनख्वाह ले लेता है। उसके ऊपर यह कहावत सही उतरती है 'ऊधौ का लेना न माधव को देना'। (2018)

19. **एक ही थैली के चट्टे-बट्टे (एक-जैसे दुर्गुणों वाले)**—राम सिंह हो या ध्यान सिंह—ये जितने भी नेता हैं, सभी 'एक ही थैली के चट्टे-बट्टे' हैं।

20. **एक म्यान में दो तलवार (एक ही स्थान पर दो विचारधाराएँ नहीं रह सकतीं)**—राहुल ने अजय से कहा कि तुम या तो मुझसे मित्रता कर लो या रिशी से। दोनों से सम्बन्ध निभाना उसी प्रकार सम्भव नहीं है जिस प्रकार 'एक म्यान में दो तलवार' का रहना सम्भव नहीं है। (2012, 15)

21. **एक तो चोरी, दूसरे सीना जोरी (एक तो गलत कार्य करना और दूसरे बहस भी करना)**—शिक्षक ने छात्र को काम पूरा न करने पर डाँटा तो वह उनसे काम के कठिन और परिमाण में अधिक होने की शिकायत करने लगा। इस पर शिक्षक ने उससे कहा कि एक तो चोरी और दूसरे सीना जोरी। (2012)

22. **एक पन्थ दो काज (एक प्रयत्न से दोहरा लाभ)**—मोहन परीक्षा देने हरिद्वार गया था। उसने परीक्षा भी दे दी और गंगा स्नान भी कर आया। इसे कहते हैं—'एक पन्थ दो काज'। (2011, 18)

23. **एक मछली सारे तालाब को गन्दा कर देती है (एक के बुरा होने पर पूरे समूह को दोष लगता है)**—कक्षा में नकल करते हुए टीपू पकड़ा गया, लेकिन पूरी कक्षा के विद्यार्थियों की परीक्षा रद्द कर दी गयी, इसीलिए ठीक ही कहा गया है—'एक मछली सारे तालाब को गन्दा कर देती है'।

24. **एक तो करेला दूजा नीम चढ़ा (बुरे व्यक्ति में अन्य बुरे व्यक्ति की संगति से अवगुणों में वृद्धि हो जाना)**—रमेश तो वैसे ही सबसे बेवजह उलझता रहता था और अब तो उसकी शादी भी झगड़ालू लड़की से हो गयी। अब तो वह वैसा ही हो गया है, जैसे—'एक तो करेला दूजा नीम चढ़ा'। (2014)

25. **एक हाथ से ताली नहीं बजती (एक पक्ष की ओर से झगड़ा नहीं हो सकता)**—यह तो असम्भव है कि तुमने उसे कुछ न कहा हो और वह तुम्हें पीटने लगा हो, क्योंकि 'एक हाथ से ताली नहीं बजती'।

26. **एकै साधे सब सधै, सब साधे सब जाय (कार्य-सिद्धि के लिए ही सहयोग लेना चाहिए)**—विकास एक बार किसी मुसीबत में पड़ गया। उसने कई लोगों से सलाह माँगी और उन पर अमल भी किया। लेकिन उसकी मुसीबत घटने के स्थान पर बढ़ गयी। किसी ने सच ही कहा है कि एकै साधे सब सधै, सब साधे सब जाय। (2012)

27. **ओखली में सिर दिया तो मूसलों से क्या डरना (काम शुरू कर देने पर बाधाओं से भयभीत नहीं होना चाहिए)**—जब परीक्षा का फॉर्म भर दिया है तो पढ़ाई में मेहनत करनी ही पड़ेगी, क्योंकि 'जब ओखली में सिर दिया है तो मूसलों से क्या डरना'। (2016)

28. **औछे की प्रीत, बालू की भीत (ओछे मनुष्य की मित्रता स्थायी नहीं होती)**—विद्वानों ने बहुत ही अनुभव करने के बाद यह कहावत बिलकुल सही लिखी है 'ओछे की प्रीत, बालू की भीत'। (2012)

29. **कहाँ राजा भोज, कहाँ गंगू तेली (आकाश-पाताल का अन्तर)**—तुम बार-बार सुरेश की बात करते हो। वह भला राधेश्याम की बराबरी क्या करेगा ? 'कहाँ राजा भोज, कहाँ गंगू तेली'। (2013)

30. **का वर्षा जब कृषी सुखाने (अवसर बीतने पर साधन प्राप्त होना व्यर्थ ही होता है)**—गोस्वामी तुलसीदास जी ने ठीक ही कहा है—"का वर्षा जब कृषी सुखाने। समय चूकि पुनि का पछिताने।।" (2009, 11, 16)

31. **कागज की नाव नहीं चलती (दिखावटी किन्तु सारहीन वस्तु समय पर काम नहीं देती)**—केवल फैशन से कुछ भी हासिल नहीं होगा, अपने में कुछ गुण पैदा करो क्योंकि 'कागज की नाव नहीं चलती'। (2009)

32. **काठ की हाँड़ी एक बार ही चढ़ती है (धोखा एक बार ही दिया जा सकता है)**—एक बार एक हजार रुपये देकर ही मैं पछता रहा हूँ। आगे आपके बहकावे में नहीं आ सकता, क्योंकि आप नहीं जानते कि 'काठ की हाँड़ी एक बार ही चढ़ती है'। (2016)

33. **कोयले की दलाली में हाथ काले (जैसा काम वैसा परिणाम)**—मैं तो हुकुमसिंह के साथ केवल सैर करने गया था, किया कुछ भी नहीं था; लेकिन मुझे व्यर्थ में ही सजा मिल गयी; क्योंकि 'कोयले की दलाली में हाथ काले' होते ही हैं। (2015)

34. **कंगाली में आटा गीला (कमी में और नुकसान होना)**—रहीम की नौकरी तो कहीं लग नहीं पा रही थी और पिता की बीमारी का खर्चा उसके ऊपर अलग से आ पड़ा। इसी को कहते हैं—'कंगाली में आटा गीला'।

35. **कभी घी घना, कभी मुट्ठी-भर चना** या **कभी गाड़ी नाव पर कभी नाव गाड़ी पर (परिस्थितियाँ सदैव एक-सी नहीं रहतीं)**—माधव कभी पूआ-पकवान खाते समय भी नाक-भौं सिकोड़ता था। आज उसे भरपेट अन्न भी दुर्लभ हो गया है। समय-समय की बात है—'कभी घी घना, कभी मुट्ठी भर चना'। (2012)

36. **कानी के ब्याह में सौ जोखिम (एक दोष होने पर अनेक विघ्न आना)**—घर से निकलने में तुमने देर कर दी, अब उस मार्ग की अनेक बसें निकल गयीं और कोई अन्य वाहन भी नहीं मिल पा रहा है। सच ही कहा गया है—'कानी के ब्याह में सौ जोखिम'।

37. **खग जाने खग ही की भाषा (निकट-सम्पर्क का व्यक्ति ही किसी के गुण-दोषों को जान सकता है)**—तुम्हें तो रामू की पत्नी में सारे गुण ही दिखाई देते हैं। उसकी वास्तविकता तो रामू की माँ से पूछो; क्योंकि 'खग जाने खग ही की भाषा'। (2013)

38. **खरबूजे को देखकर खरबूजा रंग बदलता है (संगति का असर अवश्य पड़ता है)**—नीलाम्बर बड़ा सज्जन था, लेकिन जब से वह तुम्हारे साथ रहने लगा है उसका तो दिमाग ही पलट गया, क्योंकि ठीक ही कहा गया है—'खरबूजे को देखकर खरबूजा रंग बदलता है'।

39. **खरी मजूरी चोखा काम (बिना किसी समस्या के अच्छी आय)**—मुझे हलवाई की दुकान से पन्द्रह सौ रुपये प्रति माह नकद एवं दोनों समय का भोजन मिल जाता है, ऊपर से ग्राहकों की बख्शीश, न कोई झगड़ा न झंझट और समय-समय पर छुट्टियाँ भी मिल जाती हैं। इसी को कहते हैं—'खरी मजूरी चोखा काम'। (2009, 14)

40. **खिसियानी बिल्ली खम्भा नोचे (लज्जित होकर क्रोध प्रकट करना)**—तुम नरेश का कुछ नहीं बिगाड़ पाये, तो मुझे शरीफ समझ लड़ने के लिए बार-बार छेड़ रहे हो क्योंकि 'खिसियानी बिल्ली खम्भा नोंचती' ही है। (2015)

41. **खोदा पहाड़ निकली चुहिया (अत्यधिक परिश्रम का नगण्य फल मिलना)**—बोफोर्स तोपों के सौदे में दलाली के प्रकरण पर वर्षों से चल रही जाँच-पड़ताल का नतीजा 'खोदा पहाड़ निकली चुहिया' जैसा ही है। (2012, 14)

42. **गंगा गये गंगादास, जमुना गये जमुनादास (सिद्धान्तहीन व्यक्ति, दलबदलू)**—आजकल के नेता राजनीति में जिस दल में अपना फायदा देखते हैं उसी दल की सदस्यता ग्रहण कर लेते हैं। जिस दल में जाते हैं, उसके स्थायी रूप से होकर नहीं रह पाते। उनके विषय में तो यही कहना उचित है—'गंगा गये गंगादास, जमुना गये जमुनादास'। (2011, 15)

43. **गुड़ खाये गुलगुलों से परहेज (दिखावटी परहेज)**—प्याज से बनी पकौड़ियाँ तो तुम बड़े चाव से खाते हो, लेकिन प्याज खाने से इतना परहेज करते हो। तुम जैसों के लिए ही कहा गया है कि 'गुड़ खाये गुलगुलों से परहेज'। (2018)

44. **गुरु कीजै जान, पानी पीजै छान (अच्छी तरह समझकर काम करना)**—आशाराम बापू का दुराचारी रूप सामने आने पर उसने बहुत-से भक्तों को पुरानी कहावत 'गुरु कीजै जान, पानी पीजै छान' याद आ गई। (2016)

45. **घर की मुर्गी दाल बराबर** या **घर का जोगी जोगड़ा, आन गाँव का सिद्ध (घर की चीज का महत्त्व नहीं होता है)**—बाजार से परदे के लिए कपड़ा खरीदना था, लेकिन जेब में पैसा नहीं था। ससुराल से आयी बेशकीमती चादर रखी थी उसी को परदे के स्थान पर लटका दिया। उचित ही कहा है—'घर की मुर्गी दाल बराबर'। (2009,12, 16)

46. घर का भेदी लंका ढावे (आपस की फूट विनाश कर देती है)—जयचन्द ने मुहम्मद गोरी को बुलावा न भेजा होता तो देश दीर्घकालीन गुलामी से बच जाता। इसीलिए कहा गया है—'घर का भेदी लंका ढावे'। (2011, 15, 16 17)

47. घर खीर तो बाहर खीर (जो हमारे पास है, वही दूसरों से भी मिलता है)—आज हमने हलवा बनाया तो पड़ोसी के यहाँ से सेवइयाँ आ गयीं। सही ही कहा गया है—'घर खीर तो बाहर खीर'। (2013)

48. घोड़े को लात और आदमी को बात (जानवर को मार से और मनुष्य को बात से नियन्त्रण में किया जाता है)—हाथी को अंकुश से, घोड़े को लगाम से, सिंह को कोड़े से नियन्त्रित किया जाता है, जबकि मनुष्य को दण्ड से नियन्त्रित करने की आवश्यकता कम ही होती है। ठीक ही कहा गया है—"घोड़े को लात और आदमी को बात।" (2014, 16)

49. घी कहाँ गिरा, दाल में (अपनी बहुमूल्य वस्तु का किसी अपने के ही काम आना)—प्रदीप ने पाँच लाख रुपये लगाकर अपने छोटे भाई को एक व्यवसाय करा दिया। उसकी पत्नी ने कहा यदि ये रुपये वापस न मिले तो क्या करोगे ? प्रदीप ने कहा न भी मिले तो कोई बात नहीं; घी गिरा कहाँ दाल में ही न; जमीन पर तो नहीं गिरा।

50. चमड़ी जाए पर दमड़ी न जाए (अत्यधिक कंजूस होना)—राहुल से कुछ भी प्राप्त होने की आशा मत रखना; क्योंकि उसने तो अपने जीवन का सिद्धान्त ही बना रखा है—'चमड़ी जाए पर दमड़ी न जाए।' (2011)

51. चार दिन की चाँदनी, फिर अँधेरी रात (सुख के दिन हमेशा नहीं रहते)—धन-दौलत पर गर्व नहीं करना चाहिए। यह तो तारों की तरह सवेरा होते ही विलीन हो जाती है। कहा भी गया है—'चार दिन की चाँदनी, फिर अँधेरी रात'। (2012, 14)

52. चोर की दाढ़ी में तिनका (दोषी सदैव सशंकित रहता है)—दीनदयाल की पुस्तक खोने पर अध्यापक ने सभी छात्रों से तलाशी देने के लिए कहा तो रामू ने सकपकाकर अपना बस्ता ही खिड़की से बाहर फेंक दिया। इससे स्पष्ट हो गया कि 'चोर की दाढ़ी में तिनका'। (2010, 15, 17)

53. चोर-चोर मौसेरे भाई (बुरे व्यक्तियों में जल्दी मेल हो जाता है)—वीरू और राजू दोनों ही नियमित मद्यपान करते थे। एक दिन दोनों में परिचय हुआ और शीघ्र ही दोनों में घनिष्ठ मित्रता हो गयी। किसी ने ठीक ही कहा है कि 'चोर-चोर मौसेरे भाई' होते हैं। (2016)

54. चोर चोरी से जाए हेराफेरी से न जाए (बुरी आदत मुश्किल से ही छूट पाती है)—एक चोर ने एक महात्मा के समझाने पर चोरी करना छोड़ दिया, लेकिन अब वह लोगों के एक स्थान पर रखे हुए सामान को दूसरे स्थान पर रख देता था। उसकी इस आदत को जानने वाले कहा करते थे कि चोर चोरी से जाए हेराफेरी से न जाए।

55. छछूँदर के सिर पर चमेली का तेल (अपात्र को ऐसी वस्तु मिलना, जिसका वह पात्र न हो)—नीलम जैसी रूप-यौवन-सम्पन्ना कन्या का विवाह मद्यप अनिल के साथ! लोगों ने कहा—यह तो ठीक वैसा ही हुआ, जैसे 'छछूँदर के सिर पर चमेली का तेल'। (2014)

56. जहाँ चाह वहाँ राह (इच्छा हो तो काम हो जाता है)—प्रीति ने अध्यापिका बनने के लिए बी०ए० तृतीय वर्ष से ही बी०एड० में प्रवेश के लिए रात-दिन पढ़ना आरम्भ कर दिया। वह प्रवेश-परीक्षा में सर्वोत्तम आयी और बी०एड० भी उसने एक वर्ष में ही कर लिया। इसी को कहते हैं कि "जहाँ चाह, वहाँ राह"। (2014)

57. जो गरजते हैं सो बरसते नहीं (बातें करने वाले काम नहीं करते)—मनीष सड़क पर खड़े होकर जोर-जोर से जेबकतरे को पकड़ने के लिए चिल्लाता ही रहा। दौड़कर जेबकतरे को पकड़ने की उसकी हिम्मत नहीं हुई। उसके जैसे लोगों के लिए ही कहा गया है—"जो गरजते हैं सो बरसते नहीं"। (2014)

58. जाके पाँव न फटी बिवाई, वो क्या जाने पीर पराई (स्वयं मुसीबत में पड़ने वाला ही दूसरों की मुसीबत को समझता है)—डकैतों ने बन्दूक की नोंक पर मोहन का लाखों रुपया लूट लिया। उसका बड़बोला पड़ोसी दीनू बोला कि मैं होता तो डकैतों की बन्दूक छीन लेता और रुपया भी न देता। इस पर ग्राम-प्रधान ने कहा कि 'जाके पाँव न फटी बिवाई, वो क्या जाने पीर पराई'। (2013)

59. जैसे करनी वैसी भरनी/जैसा बोओगे वैसा काटोगे (बुरे काम का बुरा नतीजा)—यदि आप अच्छे काम करेंगे तो आपको अच्छा फल मिलेगा और यदि बुरे काम करेंगे तो बुरा फल मिलेगा। सही ही कहा गया है कि 'जैसी करनी वैसी भरनी'। (2016, 18)

60. ढाक के तीन पात (एक ही बात बार-बार कहना)—रमेश ने महेश से कहा कि तुमने एक बार कह दिया और मैंने सुन लिया। क्यों वही ढाक के तीन पात किये जा रहे हो।

61. तीन में न तेरह में मृदंग बजाये डेरा में (बिना काम-काज का व्यक्ति दूसरों को परेशान ही करता है)—आजकल अनेक सरकारी कार्यालयों में ऐसे अधिकारियों और कर्मचारियों का बोलबाला है, जो कि स्वयं न तो तीन में हैं और न तेरह में लेकिन वे डेरे में मृदंग बजाते ही रहते हैं। (2013)

62. तू डाल-डाल मैं पात-पात (तुम होशियार तो मैं महा होशियार)—बाबूदीन ने अपने नौकर से कहा—"मुझे लकड़ियों की चोरी के विषय में बताओ। तुम यह अच्छी प्रकार से समझ लो कि 'तुम डाल-डाल, मैं पात-पात'। मैं किसी प्रकार तुम्हारा पीछा नहीं छोड़ूँगा।" (2010)

63. थोथा चना बाजे घना (कम योग्यता होने पर भी अधिक योग्यता का दिखावा करना)—इसे राजनीति का कुछ भी ज्ञान नहीं है, फिर भी बड़े-बड़े नेताओं की आलोचना करने से इसका जी नहीं भरता। तभी तो किसी ने कहा है कि 'थोथा चना बाजे घना'। (2011)

64. दान की बछिया के दाँत नहीं देखे जाते (मुफ्त की वस्तुओं में दोष नहीं देखा जाता)—रवीन्द्र ने अपने कर्मचारियों में 100 कम्बल वितरित किये, जो कि बेहद सस्ते थे। किसी ने कुछ भी नहीं कहा क्योंकि सभी इस कहावत को समझते थे कि 'दान की बछिया के दाँत नहीं देखे जाते'। (2009)

65. दाल-भात में मूसलचन्द (दो के बीच में तीसरे का अनधिकार प्रवेश)—राम और श्याम में किसी बात पर हाथा-पाई हो रही थी कि रास्ते से गुजरता मोहन बीच-बचाव करने लगा। एक अन्य व्यक्ति ने मोहन को समझाया कि क्यों व्यर्थ 'दाल-भात में मूसलचन्द' बन रहे हो।

66. दूध का जला मट्ठा भी फूँक-फूँककर पीता है (एक बार धोखा खाकर आदमी सावधान हो जाता है)—भाजपा ने मायावती को दो बार उत्तर प्रदेश का मुख्यमन्त्री बनाया था। तब के अनुभव अच्छे नहीं थे। अब तीसरी बार मायावती को मुख्यमन्त्री बनाते समय उन्होंने सभी पहलुओं पर गम्भीरता से विचार किया, क्योंकि 'दूध का जला मट्ठा भी फूँक-फूँककर पीता है'।

67. दूर के ढोल सुहावने (दूर की वस्तु अच्छी लगती है)—तुम्हारी पत्नी क्या कम खूबसूरत है जो तुम धर्मेन्द्र की पत्नी की प्रशंसा कर रहे हो। तुम्हें शायद पता नहीं है कि 'दूर के ढोल सुहावने' लगते ही हैं। (2014)

68. धोबी का कुत्ता न घर का न घाट का (कहीं का न रहना)—मन्त्री-पद पाने के लिए उसने अपना दल छोड़ दिया। जब दूसरे दल में मन्त्री-पद न मिला तो शीर्ष नेताओं की निन्दा करने के कारण वह वहाँ से भी निकाल दिया गया। अब लोग कहते हैं—'धोबी का कुत्ता न घर का न घाट का'। (2010, 16, 18)

69. न नौ मन तेल होगा, न राधा नाचेगी (किसी काम को करने के लिए असम्भव-सी शर्त लगाना)—प्रधानमन्त्री ने भाषण दिया कि जिस दिन भारत के सभी नेता ईमानदार हो जाएँगे, उसी दिन देश से गरीबी हट जाएगी। इस कथन को सुनकर एक श्रोता ने कहा कि 'न नौ मन तेल होगा, न राधा नाचेगी'। (2018)

70. न रहेगा बाँस, न बजेगी बाँसुरी (झगड़े को समूल नष्ट करना)—"यदि तुम अपने अन्य दाँतों को खराब होने से बचाना चाहते हो तो जिन दो दाँतों में

कीड़े लग गये हैं, उन्हें निकलवा दो'', डॉक्टर ने मरीज को सलाह दी; क्योंकि कहा गया है—'न रहेगा बाँस, न बजेगी बाँसुरी'। (2014, 18)

71. नाच न जाने आँगन टेढ़ा (योग्यता न होने पर बहाने बनाना)—निशान्त से गणित का एक प्रश्न हल न हो पाया तो वह कहने लगा कि कलम ही ठीक नहीं चल रही है। इसी को कहते हैं—'नाच न जाने आँगन टेढ़ा'। (2011, 12, 13, 16)

72. नाम बड़े और दर्शन छोटे (व्यक्ति जैसा दिखाई देता है उसमें वैसे गुण न होना)—वह दुकान तो केवल नाम की ही बड़ी दुकान है, सामानों की गुणवत्ता तो है ही नहीं। उसे देखकर तो 'नाम बड़े और दर्शन छोटे' कहावत याद आ जाती है। (2013)

73. नौ नकद न तेरह उधार (उधार की अपेक्षा थोड़ा नकद अच्छा)—श्यामू ने अपने मित्र से कहा कि अभी लोगे तो अस्सी रुपये दूँगा और दीपावली के बाद लोगे तो सौ रुपये, इस पर उसके मित्र ने कहा—नहीं भाई, 'नौ नकद न तेरह उधार', अतः मुझे अभी ही दे दो। (2010, 14, 15)

74. नौ दिन चले अढ़ाई कोस (अति मन्द गति से कार्य करना)—परदे की सिलाई का मामूली-सा कार्य और इसी में तुमने सात दिन लगा दिये। तुम्हारे जैसे लोगों के लिए ही कहा गया है—'नौ दिन चले अढ़ाई कोस'। (2009, 11, 15)

75. पराधीन सपनेहुँ सुख नाहीं (पराधीनता में कभी सुख नहीं होता)—नौकरी में कभी समय नहीं मिलता, एक मिनट को भी चैन नहीं है। खान-पान का भी कोई ठिकाना नहीं, सोने-बैठने के लिए क्या कहा जाए। ठीक ही कहा गया है—'पराधीन सपनेहुँ सुख नाहीं। करि विचार देखहुँ मन माहिं।।'

76. प्यासा ही कुएँ के पास जाता है (कार्य-सिद्धि के लिए स्वयं प्रयास करना पड़ता है)—राजीव को किसी व्यक्ति से काम के मद में रुपये लेने थे। जब राजीव ने उससे कहा तो उसने उत्तर दिया कि जब मेरा काम था तो मैं तुम्हारे पास आया, अब अपने रुपये लेने के लिए तो तुमको मेरे पास आना ही होगा। लगता है कि तुमने यह कहावत नहीं सुनी है—'प्यासा ही कुएँ के पास जाता है'। (2013)

77. बकरे की माँ कब तक खैर मनाएगी (आने वाली मुसीबत से कब तक बचा जा सकता है)—अनेक चोरियों का अभियुक्त दीना एक दिन चोरी करते हुए रँगे हाथों पकड़ा गया। यह समाचार सुनकर दीना के पड़ोसी ने कहा कि आखिर 'बकरे की माँ कब तक खैर मनाएगी'।

78. बगल में छोरा नगर में ढिंढोरा (आस-पास रखी वस्तु को दूर-दूर तक ढूँढ़ना)—बबिता ने अपनी सन्दूक की ताली टेबिल पर रखी थी। बाद में उसे खोजने में उसने सारा घर खोज डाला। अन्त में ताली उसे टेबिल पर ही मिली। उसके पति रणधीर ने कहा कि इसी को कहते हैं—'बगल में छोरा नगर में ढिंढोरा'

79. बाप ने मारी मेंढकी, बेटा तीरन्दाज (सामान्य कार्यों में असमर्थता और पुत्र की बड़े कामों को करने की शेखी मारना)—रघुराज ने जीवन-पर्यन्त कार्य करके आजीविका नहीं कमायी। उसका लड़का आये दिन लोगों से कहता रहता है कि मैंने ये कर दिया, मैंने वो कर दिया। उसकी ऐसी बातें सुनकर एक व्यक्ति ने अन्ततः कह ही दिया—'बाप ने मारी मेंढकी, बेटा तीरन्दाज'।

80. बन्दर क्या जाने अदरक का स्वाद (किसी चीज के गुणों को न जानने वाला उसके महत्त्व को नहीं समझ सकता)—पश्चिमी संगीत की धुनों पर थिरकने वाले युवाओं के सामने शास्त्रीय संगीत का कोई महत्त्व नहीं है। उनके लिए तो यह कहावत सत्य प्रतीत होती है कि—'बन्दर क्या जाने अदरक का स्वाद'। (2010, 14, 18)

81. बूँद-बूँद करके तालाब भर जाता है (थोड़ा-थोड़ा बचाने से बहुत इकट्ठा हो जाता है)—विकास ने दो सौ रुपये महीने का बैंक में आवर्ती जमाखाता खोला और उसमें रुपये भी जमा करता रहा। पाँच साल बाद जब उसने रुपये निकाले तो उसे पन्द्रह हजार से भी अधिक रुपये मिले। विकास के मुँह से बरबस निकल पड़ा— 'बूँद-बूँद करके निश्चित ही तालाब भर जाता है'। (2013)

82. भागते भूत की लँगोटी ही सही (कुछ न मिलने पर जो भी मिला वही अच्छा)—घनश्याम अपना उधार माँगने के लिए दामोदर के यहाँ गया। उसने इधर-उधर की अनेक बातें की लेकिन एक भी पैसा नहीं लौटाया। अन्त में कहा—लो ये 10 किलो आलू ले जाओ, घर पर काम आ जाएँगे। घनश्याम ने मन में सोचा—चलो ठीक है, 'भागते भूत की लँगोटी ही सही' और आलू उठाकर वापस लौट आया। (2009)

83. भरी गगरिया चुपके जाए (ज्ञानी आदमी गम्भीर होता है)—पास के डेरे वाले महात्माजी ज्ञानी और गम्भीर हैं। ये 'अधजल गगरी छलकत जाए' जैसे न होकर 'भरी गगरिया चुपके जाए' जैसे हैं। (2016, 17)

84. भूखे भजन न होय गोपाला (भूखा व्यक्ति कुछ नहीं कर सकता)—अनिल माँ से कुछ खाने के लिए माँग रहा था। माँ ने उससे चीनी लाने के लिए कहा। अनिल ने कहा कि जब तक मुझे कुछ खाने के लिए नहीं मिलता, मैं कुछ नहीं कर सकता; क्योंकि भूखे भजन न होय गोपाला। (2010)

85. मतलबी यार किसके, दम लगाया खिसके (स्वार्थी व्यक्ति अपना स्वार्थ सिद्ध कर चलता बनता है)—'मतलबी यार किसके, दम लगाया खिसके' यह कहावत आजकल के मित्रों पर पूरी तरह लागू होती है। (2016)

86. मन चंगा तो कठौती में गंगा (मन की पवित्रता ही सच्ची तीर्थयात्रा है)—क्या रखा है काशी और रामेश्वरम् में ? अपने मन को पवित्र करो तो वही काशी के समान है। सन्त रविदास ने कहा भी है—'मन चंगा तो कठौती में गंगा'। (2009)

87. मेरी तेरे आगे, तेरी मेरे आगे (चुगली खाना)—अमित से सँभलकर रहना वह तो हर समय 'मेरी तेरे आगे, तेरी मेरे आगे' करता रहता है। (2016)

88. मान न मान मैं तेरा मेहमान (व्यर्थ में गले पड़ना)—कुछ लोगों की ऐसी आदत होती है कि वे मेहमान बनकर आ धमकते हैं और जबरदस्ती अपनी खातिरदारी करवाकर 'मान न मान मैं तेरा मेहमान' कहावत को चरितार्थ करते हैं। (2011)

89. मुख में राम बगल में छुरी (ऊपर से भला बनकर धोखा देना)—यहाँ तुम रोज मुझसे मीठी-मीठी बातें करते थे और कल तुमने कचहरी में मेरे खिलाफ झूठी गवाही दी। तुम्हारे जैसे लोगों के लिए ही कहा गया है—'मुख में राम बगल में छुरी'। (2012)

90. रस्सी जल गयी, ऐंठ नहीं गयी (अहित होने पर भी अकड़ का बना रहना)—न्यायालय द्वारा दोषी पाये जाने पर दारोगा जी को सजा हो गयी। जेल में भी वे कैदियों पर अपना रोब झाड़ने लगे। सहसा एक कैदी बोला, ''दारोगा जी! 'रस्सी तो जल गयी मगर ऐंठ नहीं गयी''। (2013)

91. लकीर के फकीर (पुरानी प्रथा पर चलने वाले)—इक्कीसवीं शताब्दी में भी जो लोग किसी बीमारी का इलाज झाड़-फूँक या टोने-टोटके से करते हैं उनको आजकल के समझदार लोग 'लकीर का फकीर' ही कहते हैं। (2009, 13)

92. लोहा लोहे को काटता है (समस्या का समाधान उसी से होता है) चिकित्सक साँप के जहर का असर समाप्त करने के लिए किसी अन्य साँप के विष का प्रयोग करते हैं। चिकित्सकों का यह कार्य इस कहावत को चरितार्थ करता है—'लोहा लोहे को काटता है'। (2013)

93. साँप निकल गया लकीर पीटते रहे (खतरा टल जाने पर व्यर्थ उद्योग करना)—चोर चोरी के इरादे से राजेश के घर में कूदे, लेकिन तभी पड़ोसी जाग गये। हो-हल्ला मच जाने पर चोरों को भाग जाना पड़ा। राजेश ने कहा कि हमें रिपोर्ट करनी चाहिए, तब लोगों ने कहा कि भाई, फिलहाल तो साँप निकल गया है, अब क्यों लकीर पीट रहे हो। (2013)

94. सावन के अन्धे को हरा ही हरा सूझता है (स्वार्थी व्यक्ति को अपना ही स्वार्थ दीखता है)—एक कार्यालय में बड़े बाबू की मृत्यु हो जाने पर दूसरा बाबू कहने लगा कि अब इस पद पर मेरी पदोन्नति हो जाएगी। तभी कोई बोल पड़ा—'सावन के अन्धे को हरा ही हरा सूझता है'। (2010)

95. सावन हरे न भादों सूखे (सदैव एक-जैसा)—योगेश बड़ा ही हँसमुख है। उससे जब भी मिलो प्रसन्न ही मिलता है। उसके लिए तो 'सावन हरे न भादों सूखे' वाली उक्ति पूर्णतया चरितार्थ होती है। (2014, 18)

96. सौ चूहे खाकर बिल्ली हज को चली (जीवन-पर्यन्त पाप-कर्म करके अन्त में धर्मात्मा बनने का ढोंग करना)—जीवन-भर तो करीम लाला ने

डकैतियाँ डालीं और हत्याएँ कीं। बुढ़ापे में अपनी डकैती की कमाई दान कर यश कमाता घूम रहा है। ऐसे ही लोग 'सौ चूहे खाकर बिल्ली हज को चली' कहावत को चरितार्थ करते हैं।

97. सौ सुनार की एक लुहार की (सामान्य मनुष्य बहुत प्रयत्न से जो लाभ पाता है बुद्धिमान थोड़े ही प्रयत्न से वह लाभ पा लेता है)— करोड़ीमल जुम्मन से छोटे-छोटे सामान में रोजाना एक-दो रुपया कमा लेता था। जुम्मन ने 20 बोरी गेहूँ के सौदे में करोड़ीमल से एक ही दिन में ₹ 100 कमा लिये। इसी को कहते हैं—'सौ सुनार की एक लुहार की'। (2010, 11)

98. सीधी अंगुली से घी नहीं निकलता (अधिक सज्जन होने से काम नहीं चलता)— हरीश मेरे से उधार लिये रुपये वापस ही नहीं कर रहा था। जब एक दिन मैंने उस धमकाया तो उसने तुरन्त रुपये वापस कर दिये। किसी ने ठीक ही कहा है—'सीधी अंगुली से घी नहीं निकलता।'

99. होनहार बिरवान के होत चीकने पात (होनहार बचपन से ही दिखाई देने लगता है)— पण्डित जवाहरलाल नेहरू को देखकर एक आकृति-विज्ञानी ने भविष्यवाणी की थी कि यह बालक आगे चलकर देश का कर्णधार बनेगा, इसके लक्षण विलक्षण है क्योंकि 'होनदार बिरवान के होत चीकने पात'। (2010, 11, 14, 18)

100. हाथ कंगन को आरसी क्या (प्रत्यक्ष को किसी प्रमाण की आवश्यकता नहीं होती)— तुम तो सेंध बनाकर घर में घुसते हुए पकड़े गये हो। तुम्हारे चोर होने में कोई सन्देह नहीं रह गया; क्योंकि कहा गया है—'हाथ कंगन को आरसी क्या'। (2010, 13, 14, 18)

101. हल्दी लगे न फिटकरी रंग चोखा (बिना किसी व्यय के कार्य सिद्ध करना)— राम ने श्याम से कहा कि मैं तो ₹ 1,000 का माल थोक व्यापारी से उधार लेकर फुटकर ₹ 1,200 में नकद बेच देता हूँ और ₹ 200 प्रति दिन कमा लेता हूँ। इसी को कहते हैं—'हल्दी लगे न फिटकरी रंग चोखा'। (2013)

102. हंसा थे सो उड़ गये कागा भए दिवान (योग्य व्यक्तियों के न रहने पर अयोग्य ही ऊँचे पद पर बैठते हैं)—स्वतन्त्रता मिलने के छः दशक बीतने पर देशभक्त तो रहे नहीं, अब तो देश का शोषण करने वाले नेता ही रह गये हैं। इस परिस्थिति में तो यही कहावत याद आती है—'हंसा थे सो उड़ गये कागा भए दिवान'। (2013)

103. हाथी के दाँत खाने के और दिखाने के और (कपटपूर्ण व्यवहार)— राधेलाल छोटा कर्मचारी है और बड़ा आदमी बनना चाहता है। उसके व्यवहार में एकरूपता एवं मधुरता नहीं है। उसके जैसे लोगों के लिए ही कहा गया है 'हाथी के दाँत खाने के और दिखाने के और'। (2018)

❑

11 व्याकरण : सन्धि एवं विभक्ति परिचय

प्रश्न-परिचय— सामान्य हिन्दी के **खण्ड 'ख'** का **ग्यारहवाँ प्रश्न** व्याकरण से सम्बन्धित होगा। इस प्रश्न के अन्तर्गत कुल दो भाग—'क' और 'ख' होंगे। भाग 'क' में सन्धि-विच्छेद या सन्धि **(1+1+1=3 अंक)** तथा भाग 'ख' में संस्कृत शब्दों में विभक्ति और वचन का चयन **(1+1=2 अंक)** से सम्बन्धित प्रश्न होंगे। ये प्रश्न अतिलघु उत्तरीय भी हो सकते हैं और बहुविकल्पीय भी।

परीक्षार्थी ध्यान दें— इस प्रकरण से सम्बन्धित सामग्री के अधिक अभ्यास के लिए विद्यार्थियों को **विद्या सामान्य हिन्दी कम्पलीट कोर्स-12** का अध्ययन करना चाहिए।

(क) सन्धि-विच्छेद

प्रश्न— **निम्नलिखित में से किन्हीं तीन प्रश्नों के सही विकल्प चुनकर उत्तर-पुस्तिका में लिखिए—**

[**संकेत**— *काले तथा मोटे अक्षरों में छपे विकल्प सही हैं।*]

1. 'नयः' शब्द का सन्धि-विच्छेद है— (2011, 14, 17)
   (क) विद्या + लयः (ख) विद्य + आलयः
   (ग) विद्या + आलयः (घ) विद्या + यालय

2. 'महर्षिः' शब्द का सन्धि-विच्छेद है— (2013, 14, 16, 18)
   (क) मह + र्षिः (ख) म + हर्षिः
   (ग) महा + ऋषिः (घ) महा + रिषिः

3. '[illegible]ः' शब्द का सन्धि विच्छेद है— (2011, 13, 15, 18)
   (क) मधु + अरिः (ख) मधु + वरिः
   (ग) म + ध्वरिः (घ) मध्व + रिः

4. 'स्वागतम्' का सन्धि-विच्छेद है— (2012, 14, 17)
   (क) स्वा + गतम् (ख) स्वागत + म्
   (ग) सु + आगतम् (घ) स्वाग + तम्

5. 'प्रत्युत्तर' का सन्धि-विच्छेद है— (2013)
   (क) प्रत्यु + त्तर **(ख) प्रति + उत्तर**
   (ग) प्र + त्युत्तर (घ) प्रती + उत्तर

6. 'पवनः' का सन्धि-विच्छेद है— (2016)
   (क) पव + नम् (ख) पवन् + अम्
   (ग) पो + अनः (घ) पवन + म्

7. 'नयनम्' का सन्धि-विच्छेद है— (2013, 15, 18)
   (क) ने + अनम् (ख) नय + नम्
   (ग) नै + अनम् (घ) नयन + म्

8. 'पुस्तकालयः' का सन्धि-विच्छेद है— (2011, 13)
   (क) पुस्त + कालयः (ख) पुस्तका + लयः
   (ग) पुस्तक + आलयः (घ) पुस्तक + लयः

9. 'रमेशः' का सन्धि-विच्छेद है— (2011, 14, 16)
   (क) रम + एशः (ख) रम + इशः
   (ग) रमा + एशः **(घ) रमा + ईशः**

10. 'इत्यादि' का सन्धि-विच्छेद है— (2011, 16, 18)
    (क) इति + आदि (ख) इत्य + आदी
    (ग) इत + आदि (घ) इती + आदि

11. 'नदीशः' का सन्धि-विच्छेद है— (2015)
    (क) नदि + ईशः (ख) नदी + शः
    (ग) नदी + ईशः (घ) ना + दीशः

12. 'यद्यपि' का सन्धि-विच्छेद है— (2012, 14, 18)
(क) यद्य + अपि (ख) य + द्यपि
(ग) यद्या + अपि **(घ) यदि + अपि**

13. 'सूर्योदयः' का सन्धि-विच्छेद है— (2011, 15, 17)
(क) सूर्य + उदयः (ख) सूर्यो + दयः
(ग) सूर + ओदयः (घ) सूर + उदयः

14. 'उपेन्द्रः' का सन्धि-विच्छेद है— (2013, 18)
(क) उपे + इन्द्रः (ख) उप + ईन्द्रः
(ग) उप + इन्द्रः (घ) उप + एन्द्रः

15. 'विद्यार्थी' का सन्धि-विच्छेद है— (2011)
(क) विद्य + अर्थी **(ख) विद्या + अर्थी**
(ग) विद्य + आर्थी (घ) विदि + आर्थी

16. 'परमार्थः' का सन्धि-विच्छेद है— (2016, 18)
(क) परम + अर्थः (ख) पर + मर्थः
(ग) पर + मार्थः (घ) परमा + अर्थः

17. 'महोत्सवः' का सन्धि-विच्छेद है— (2012, 15, 17, 18)
(क) महो + उत्सवः **(ख) महा + उत्सवः**
(ग) मह + ओत्सवः (घ) महोत + सवः

18. 'भवनम्' का सन्धि-विच्छेद है— (2012, 15, 17, 18)
(क) भव + नम् (ख) भव् + अनम्
(ग) भो + अनम् (घ) भ + वनम्

19. 'साक्षरः' का सन्धि-विच्छेद है— (2015)
(क) सा + अक्षरः (ख) सा + क्षरः
(ग) स + अच्छरः **(घ) स + अक्षरः**

20. 'नायिका' का सन्धि-विच्छेद है— (2017)
(क) ना + इका (ख) नायि + का
(ग) नै + इका (घ) न + आइका

21. 'देवालयः' का सन्धि-विच्छेद है— (2012, 17)
(क) देव + आलयः (ख) देवा + लयः
(ग) दे + वालयः (घ) देवा + आलयः

22. 'हिमालयः' का सन्धि-विच्छेद है— (2010, 15, 18)
(क) हिमा + लयः (ख) हि + मालयः
(ग) हिम + आलयः (घ) हिमा + आलयः

23. 'महेशः' का सन्धि-विच्छेद है— (2015, 16)
(क) मह + एशः **(ख) महा + ईशः**
(ग) महे + एशः (घ) महे + अशः

24. 'नरेन्द्रः' का सन्धि-विच्छेद है— (2010, 11, 14, 15)
(क) नर + एन्द्रः **(ख) नर + इन्द्रः**
(ग) नरे + ऐन्द्रः (घ) न + रेन्द्रः

25. 'पावकः' का सन्धि-विच्छेद है— (2014, 18)
(क) पौ + अकः (ख) पाव + कः
(ग) प + आवकः (घ) पा + वकः

26. 'भावुकः' का सन्धि-विच्छेद है— (2013, 15, 18)
(क) भौ + उकः (ख) भाऊ + अकः
(ग) भौ + उकः (घ) भाव + उकः

27. 'मधुराक्षरम्' का सन्धि-विच्छेद है— (2014)
(क) मधुरा + क्षरम् (ख) मधुर + आक्षरम्
(ग) मधुर + अक्षरम् (घ) मधु + राक्षरम्

28. 'अन्वर्थः' का सन्धि-विच्छेद है— (2014)
(क) अ + न्वर्थः (ख) अन्व + वर्थः
(ग) अनु + अर्थः (घ) अनु + वर्थः

29. 'शायकः' का सन्धि-विच्छेद है— (2014, 16, 17)
(क) शै + अकः (ख) शय + अकः
(ग) सा + अक (घ) शौ + अकः

30. 'जयति' का सन्धि-विच्छेद है— (2014, 15, 18)
(क) जा + यति (ख) जो + अति
(ग) जे + अति (घ) जय + ति

31. 'कमलोदयः' का सन्धि-विच्छेद है— (2014)
(क) कमलो + दयः (ख) कमल + ओदयः
(ग) कमल + उदयः (घ) कम + लोदयः

32. 'शुक्लाम्बरम्' का सन्धि-विच्छेद है— (2015)
(क) शु + क्लाम्बरम् (ख) शुक्ला + अम्बरम्
(ग) शुक्ल + अम्बरम् (घ) शुक्ल + आम्बरम्

33. 'रवीन्द्रः' का सन्धि-विच्छेद है— (2016)
(क) रवी + इन्द्रः (ख) रवि + ईन्द्र
(ग) रवि + इन्द्रः (घ) रवी + ईन्द्रः

34. 'वसन्तोत्सवः' का सन्धि-विच्छेद है— (2016, 18)
(क) वसन्ते + तत्सवः (ख) वसन्तो + उत्सव
(ग) वसन्त + उत्सवः (घ) वसं + तोत्सवः

35. 'तथैव' का सन्धि-विच्छेद है— (2016)
(क) तथ + एव (ख) तथा + वेव
(ग) तथा + एव (घ) तथै + एव

36. 'अखिलेशः' का सन्धि-विच्छेद है— (2016)
(क) अखिल + एशः **(ख) अखिल + ईशः**
(ग) अखिला + ईशः (घ) अखल + ईशः

37. 'कदापि' का सन्धि-विच्छेद है— (2016)
(क) कद + अपि (ख) कत् + अपि
(ग) कट + अपि **(घ) कदा + अपि**

38. 'रामायण' का सन्धि-विच्छेद है— (2016)
(क) रामा + अयण (ख) राम + आयण
(ग) राम + अयण (घ) रा + मायण

39. 'लाकारः' का सन्धि-विच्छेद है— (2016)
(क) ला + कारः (ख) लृ + अकारः
(ग) ला + आकारः **(घ) लृ + आकारः**

40. 'पद्मेशः' का सन्धि-विच्छेद है— (2016)
(क) पद्मा + ईशः (ख) पद्म + एशः
(ग) पद्मा + इशः (घ) पद + मेशः

41. 'वागीशः' का सन्धि-विच्छेद है— (2017)
(क) वाग् + ईशः (ख) वाक् + ईशः
(ग) वागी + शः (घ) वा + गीशः

42. 'तल्लीन' का सन्धि-विच्छेद है— (2017)
(क) तद् + लीनः (ख) त + लीनः
(ग) तदली + नः (घ) तदी + लीनः

43. 'रामेशः' का सन्धि-विच्छेद है— (2017, 18)
(क) राम् + ईशः (ख) राम + एशः
(ग) राम + ईशः (घ) राम + इशः

44. 'प्रगल्भापकारः' का सन्धि-विच्छेद है— (2017)
(क) प्रगल्भ + उपकारः (ख) प्रगल्भा + पकारः
(ग) प्रगल्भ + अपकारः (घ) प्रगल्भ् + अपकारः

45. 'रामावतारः' का सन्धि-विच्छेद है— (2017)
(क) रामा + वतार (ख) रामाव + तारः
(ग) राम + अवतारः (घ) रम + वतारः

46. 'पद्माश्रय:' का सन्धि-विच्छेद है— (2017)
(क) पद्म + आश्रय: (ख) पद्मा + अश्रय:
(ग) पद्मा + श्रय: (घ) पद्मा + आश्रय:

47. 'शैलजेश:' का सन्धि-विच्छेद है— (2017)
(क) शैलज + एश: (ख) शैलजा + ईश:
(ग) शैल + जैश (घ) शैलजा + इश:

48. 'प्रभृत्येव' का सन्धि-विच्छेद है— (2017)
(क) प्रभृती + एव **(ख) प्रभृति + एव**
(ग) प्रभृ + त्येव (घ) प्रभृति + इव

49. 'ग्रामोदय' का सन्धि-विच्छेद है— (2018)
(क) ग्राम + ओदय: (ख) ग्रामो + दय:
(ग) **ग्राम + उदय** (घ) ग्रा + मोदय:

50. 'प्रत्यर्पण' का सन्धि-विच्छेद है— (2018)
(क) **प्रति + अर्पण** (ख) प्रती + पर्ण
(ग) प्र + अतिपर्ण (घ) प्रत्य + पर्ण

51. 'पद्मालय:' का सन्धि-विच्छेद है— (2018)
(क) पद्मा + आलय (ख) **पद्मा + आलय:**
(ग) पदम + अलय: (घ) पद्मा + लय:

52. 'रमेश्वर:' का सन्धि-विच्छेद है— (2018)
(क) राम + ईश्वर: (ख) रम + ईश्वर:
(ग) रमा + एश्वर: (घ) **रमा + ईश्वर:**

53. 'उत्तीर्यापि' का सन्धि-विच्छेद है— (2018)
(क) उत्ती + यापि (ख) उत्तीर्या + पि
(ग) **उत्तीर्य + अपि** (घ) उत्ती: + अपि

अथवा

प्रश्न— निम्नलिखित में से किन्हीं तीन में नियम-निर्देशपूर्वक सन्धि-विच्छेद कीजिए—

शब्द	सन्धि-विच्छेद	सन्धि एवं नियम
हर्षातिरेक	= हर्ष + अतिरेक	दीर्घ (अ + अ = आ)
शरणार्थी	= शरण + अर्थी	दीर्घ (अ + अ = आ)
नयनाभिराम	= नयन + अभिराम	दीर्घ (अ + अ = आ)
सुखार्थिन:	= सुख + अर्थिन:	दीर्घ (अ + अ = आ)
मुरारि	= मुर + अरि	दीर्घ (अ + अ = आ)
ज्ञानार्जन	= ज्ञान + अर्जन	दीर्घ (अ + अ = आ)
परमार्थ (2016)	= परम + अर्थ	दीर्घ (अ + अ = आ)
भग्नावशेष	= भग्न + अवशेष	दीर्घ (अ + अ = आ)
अद्यापि	= अद्य + अपि	दीर्घ (अ + अ = आ)
धनादेश	= धन + आदेश	दीर्घ (अ + आ = आ)
अश्वारोही	= अश्व + आरोही	दीर्घ (अ + आ = आ)
शिवालय:	= शिव + आलय:	दीर्घ (अ + आ = आ)
परीक्षार्थी	= परीक्षा + अर्थी	दीर्घ (आ + अ = आ)
तथापि	= तथा + अपि	दीर्घ (आ + अ = आ)
ममतालय:	= ममता + आलय:	दीर्घ (आ + आ = आ)
शिक्षालय: (2015)	= शिक्षा + आलय:	दीर्घ (अ + आ = आ)
मधुराक्षरम्	= मधुर + अक्षरम्	दीर्घ (अ + अ = आ)
वाचनालय:	= वाचन + आलय:	दीर्घ (अ + आ = आ)
रवीन्द्र	= रवि + इन्द्र	दीर्घ (इ + इ = ई)
कवीन्द्र:	= कवि + इन्द्र:	दीर्घ (इ + इ = ई)
कवीश्वर	= कवि + ईश्वर	दीर्घ (इ + ई = ई)

शब्द	सन्धि-विच्छेद	सन्धि एवं नियम
वारीश:	= वारि + ईश:	दीर्घ (इ + ई = ई)
उपर्युक्त (2015)	= उपरि + उक्त	दीर्घ (ई + उ = यु)
महीन्द्र	= मही + इन्द्र	दीर्घ (ई + इ = ई)
सुधीन्द्र	= सुधी + इन्द्र	दीर्घ (ई + इ = ई)
रजनीश	= रजनी + ईश	दीर्घ (ई + ई = ई)
सतीश:	= सती + ईश:	दीर्घ (ई + ई = ई)
नारीश्वर	= नारी + ईश्वर	दीर्घ (ई + ई = ई)
सूक्ति	= सु + उक्ति	दीर्घ (उ + उ = ऊ)
भानूदय	= भानु + उदय	दीर्घ (उ + उ = ऊ)
लघूर्मि	= लघु + ऊर्मि	दीर्घ (उ + ऊ = ऊ)
वधूत्सव (2016)	= वधू + उत्सव	दीर्घ (ऊ + उ = ऊ)
पितृण	= पितृ + ऋण	दीर्घ (ऋ + ऋ = ॠ)
देवेन्द्र: (2018)	= देव + इन्द्र:	गुण (अ + इ = ए)
देवेश: (2016)	= देव + ईश:	गुण (अ + ई = ए)
जितेन्द्रिय	= जित + इन्द्रिय	गुण (अ + इ = ए)
सुरेन्द्र: (2016)	= सुर + इन्द्र:	गुण (अ + इ = ए)
सुरेश: (2009, 15)	= सुर + ईश:	गुण (अ + ई = ए)
सर्वेश: (2012, 15)	= सर्व + ईश:	गुण (अ + ई = ए)
गणेश	= गण + ईश	गुण (अ + ई = ए)
महेश्वर:	= महा + ईश्वर:	गुण (आ + ई = ए)
परमेश्वर	= परम + ईश्वर	गुण (अ + ई = ए)
यथेष्ट	= यथा + इष्ट	गुण (आ + इ = ए)
महेन्द्र	= महा + इन्द्र	गुण (आ + इ = ए)
रमेश:	= रमा + ईश:	गुण (आ + ई = ए)
तथेति (2015)	= तथा + इति	गुण (आ + ई = ए)
महोत्सव	= महा + उत्सव	गुण (आ + उ = ओ)
सर्वोत्तम	= सर्व + उत्तम	गुण (अ + उ = ओ)
विकासोन्मुख	= विकास + उन्मुख	गुण (अ + उ = ओ)
सूर्योदय:	= सूर्य + उदय:	गुण (अ + उ = ओ)
चन्द्रोदय (2017)	= चन्द्र + उदय:	गुण (अ + उ = ओ)
कमलोदय	= कमल + उदय	गुण (अ + उ = ओ)
भाग्योदय	= भाग्य + उदय	गुण (अ + उ = ओ)
महोदय	= महा + उदय	गुण (आ + उ = ओ)
आत्मोत्सर्ग	= आत्म + उत्सर्ग	गुण (अ + उ = ओ)
देशोद्धार	= देश + उद्धार	गुण (अ + उ = ओ)
पतनोन्मुख	= पतन + उन्मुख	गुण (अ + उ = ओ)
सदाचारोपदेश: (2011, 15)	= सदाचार + उपदेश:	गुण (अ + उ = ओ)
जलोर्मि	= जल + ऊर्मि	गुण (अ + ऊ = ओ)
गंगोदकम्	= गंगा + उदकम्	गुण (आ + उ = ओ)
रक्षोपाय:	= रक्षा + उपाय:	गुण (आ + उ = ओ)
गंगोर्मि:	= गंगा + ऊर्मि:	गुण (आ + ऊ = ओ)
राजर्षि:	= राज + ऋषि:	गुण (अ + ऋ = अर्)
ब्रह्मर्षि:	= ब्रह्म + ऋषि:	गुण (अ + ऋ = अर्)
महर्षि: (2013, 14, 16)	= महा + ऋषि:	गुण (आ + ऋ = अर्)

शब्द	सन्धि-विच्छेद			सन्धि एवं नियम
तवल्कार	= तव	+	लृकार	गुण (अ + लृ = अल्)
सदैव	= सदा	+	एव	वृद्धि (आ + ए = ऐ)
तदैव	= तदा	+	एव	वृद्धि (आ + ए = ऐ)
(2015)				
रीत्यनुसार	= रीति	+	अनुसार	यण् (इ + अ = य)
प्रत्युपकार:	= प्रति	+	उपकार:	यण् (इ + उ = यु)
प्रत्यारोपण	= प्रति	+	आरोपण	यण् (इ + आ = या)
इत्यादि	= इति	+	आदि	यण् (इ + आ = या)
(2009, 11, 16)				
प्रत्येक	= प्रति	+	एक	यण् (इ + ए = ये)
अत्याचार:	= अति	+	आचार:	यण् (इ + आ = या)
इत्येव	= इति	+	एव	यण् (इ + ए = ये)
देव्यादेश	= देवी	+	आदेश	यण् (ई + आ = या)
मध्वरि:	= मधु	+	अरि:	यण् (उ + अ = व)
अन्वय:	= अनु	+	अय:	यण् (उ + अ = व)
अन्वेषणम्	= अनु	+	एषणम्	यण् (उ + ए = व)
अभ्युदय:	= अभि	+	उदय :	यण् (इ + उ = य)
स्वागतम्	= सु	+	आगतम्	यण् (उ + आ = वा)
गुर्वादेश	= गुरु	+	आदेश	यण् (उ + आ = वा)
वध्वागमन	= वधू	+	आगमन	यण् (ऊ + आ = वा)
पित्राज्ञा	= पितृ	+	आज्ञा	यण् (ऋ + आ = रा)
मात्राज्ञा	= मातृ	+	आज्ञा	यण् (ऋ + आ = रा)
(2010, 12, 16)				
लाकृति	= लृ	+	आकृति	यण् (लृ + आ = ला)
नयनम्	= ने	+	अनम्	अयादि (ए + अ = अय्)
जयति	= जे	+	अति	अयादि (ए + अ = अय्)
नायक:	= नै	+	अक:	अयादि (ऐ + अ = आय्)
(2009, 13, 14, 16)				
गायक:	= गै	+	अक:	अयादि (ऐ + अ = आय्)
(2009, 10, 13, 14, 16, 18)				
सायक:	= सै	+	अक:	अयादि (ऐ + अ = आय्)
पवित्रम्	= पो	+	इत्रम्	अयादि (ओ + इ = अवि)
पावक:	= पौ	+	अक:	अयादि (औ + अ = आव्)
(2015)				
भावक:	= भौ	+	अक:	अयादि (औ + अ = आव्)
भावुक:	= भौ	+	उक:	अयादि (औ + उ = आव्)
कलाविव(2018)	= कलौ	+	इव	अयादि (औ + इ = अवि)
विष्णवे	= विष्णो	+	ए	अयादि (ओ + ए = अवे)
पवनम्	= पो	+	अनम्	अयादि (ओ + अ = अव्)
नाविक:	= नौ	+	इक:	अयादि (औ + इ = आवि)

(ख) विभक्ति और वचन

प्रश्न— निम्नलिखित शब्दों की विभक्ति और वचन के सही विकल्प को चुनकर लिखिए—

1. रामाय
   (क) चतुर्थी, एकवचन (ख) सप्तमी, एकवचन
   (ग) तृतीया, द्विवचन (घ) द्वितीया, एकवचन
2. हस्तेन
   (क) प्रथमा, बहुवचन (ख) पञ्चमी, एकवचन
   (ग) तृतीया, एकवचन (घ) चतुर्थी, द्विवचन
3. रामाणाम्
   (क) चतुर्थी, एकवचन (ख) षष्ठी, एकवचन
   (ग) षष्ठी, बहुवचन (घ) द्वितीया, बहुवचन
4. शिश्वो:
   (क) तृतीया, द्विवचन (ख) द्वितीया, द्विवचन
   (ग) द्वितीया, बहुवचन (घ) सप्तमी, द्विवचन
5. नदीषु
   (क) सप्तमी, बहुवचन (ख) चतुर्थी, बहुवचन
   (ग) पञ्चमी, एकवचन (घ) सप्तमी, एकवचन
6. आत्मने (2011, 12, 15, 17)
   (क) द्वितीया, बहुवचन (ख) चतुर्थी, एकवचन
   (ग) षष्ठी, द्विवचन (घ) सप्तमी, द्विवचन
7. नामसु (2010, 17)
   (क) तृतीया, एकवचन (ख) द्वितीया, बहुवचन
   (ग) पञ्चमी, द्विवचन (घ) सप्तमी, बहुवचन
8. भानून्
   (क) षष्ठी, बहुवचन (ख) सप्तमी, एकवचन
   (ग) द्वितीया, बहुवचन (घ) चतुर्थी, एकवचन
9. राज्ञि (2013)
   (क) तृतीया, बहुवचन (ख) सप्तमी, एकवचन
   (ग) षष्ठी, द्विवचन (घ) पञ्चमी एकवचन
10. जगता (2015)
   (क) द्वितीया, बहुवचन (ख) चतुर्थी, द्विवचन
   (ग) तृतीया, एकवचन (घ) षष्ठी, एकवचन
11. आत्मनि (2011, 13, 15)
   (क) सप्तमी, एकवचन (ख) षष्ठी, द्विवचन
   (ग) पञ्चमी, बहुवचन (घ) प्रथमा, द्विवचन
12. आत्मनाम् (2015)
   (क) द्वितीया, एकवचन (ख) चतुर्थी, द्विवचन
   (ग) षष्ठी, बहुवचन (घ) सप्तमी, एकवचन
13. नामभि:
   (क) प्रथमा, बहुवचन (ख) तृतीया, बहुवचन
   (ग) चतुर्थी, बहुवचन (घ) सप्तमी, बहुवचन
14. रामात्
   (क) द्वितीया, एकवचन (ख) पञ्चमी, एकवचन
   (ग) तृतीया, द्विवचन (घ) सप्तमी, एकवचन
15. सरिते (2011, 17)
   (क) चतुर्थी, एकवचन (ख) तृतीया, द्विवचन
   (ग) प्रथमा, बहुवचन (घ) षष्ठी, बहुवचन
16. मतीनाम्
   (क) सप्तमी, बहुवचन (ख) चतुर्थी, द्विवचन
   (ग) तृतीया, एकवचन (घ) षष्ठी, बहुवचन
17. नय:
   (क) प्रथमा, बहुवचन (ख) षष्ठी, एकवचन
   (ग) तृतीया, एकवचन (घ) द्वितीया, बहुवचन
18. वानरा:
   (क) तृतीया, एकवचन (ख) सप्तमी, द्विवचन
   (ग) प्रथमा, बहुवचन (घ) द्वितीया, एकवचन
19. हरिभि:
   (क) तृतीया, एकवचन (ख) द्वितीया, द्विवचन
   (ग) तृतीया, बहुवचन (घ) प्रथमा, द्विवचन
20. जगत्सु (2010, 11, 12, 18)
   (क) पञ्चमी, एकवचन (ख) षष्ठी, एकवचन
   (ग) द्वितीया, बहुवचन (घ) सप्तमी, बहुवचन

21. आत्मानम् (2010)
(क) षष्ठी, बहुवचन (ख) द्वितीया, एकवचन
(ग) सप्तमी, द्विवचन (घ) चतुर्थी, एकवचन

22. राज्ञाम् (2010, 11, 12, 16)
(क) पञ्चमी, द्विवचन (ख) द्वितीया, एकवचन
(ग) षष्ठी, बहुवचन (घ) चतुर्थी, एकवचन

23. रमायाम्
(क) पञ्चमी, बहुवचन (ख) चतुर्थी, एकवचन
(ग) षष्ठी, द्विवचन (घ) सप्तमी, एकवचन

उत्तर— 1. (क), 2. (ग), 3. (ग), 4. (घ), 5. (क), 6. (ख), 7. (घ), 8. (ग), 9. (ख), 10. (ग), 11. (क), 12. (ग), 13. (ख), 14. (क), 15. (क), 16. (घ), 17. (क), 18. (ग), 19. (ग), 20. (घ), 21. (ख), 22. (ग), 23. (घ)।

अथवा

प्रश्न— निम्नांकित शब्दों में प्रयुक्त विभक्ति और वचन का उल्लेख कीजिए—

(1) आत्मनो:
(2) राजभ्य:
(3) सर्वेषु (2013, 14, 16)
(4) सरिद्भि:
(5) राजभि: (2011)
(6) सर्वयो:
(7) गुरवे
(8) नाम्नि (2014, 18)
(9) सरिताम् (2014, 15, 16, 18)
(10) रामै:
(11) आत्मभि: (2012, 16)
(12) सरिति (2013, 14, 16, 17, 18)
(13) यान्
(14) राज्ञाम् (2014, 17)
(15) राज्ञा (2011, 14, 15, 18)
(16) सर्वस्मै (2012, 15, 16, 18)
(17) नाम्नाम्
(18) राज्ञे (20 10 , 13, 14, 16, 18)
(19) सरिद्भि: (2011)
(20) आत्मन: (2015)
(21) नामनि
(22) जगते (2012, 13, 15, 16, 17, 18)
(23) गंगायै
(24) ग्रामात्
(25) पितृणाम्
(26) आत्मसु (2010, 11, 14)
(27) सरिता (2013, 16)
(28) सर्वस्मात् (2010, 16)
(29) बालकस्य (2010)
(30) शिशूनां (2010)
(31) हरय: (2010)
(32) राजानौ (2010)
(33) नाम्ना (2012, 16)
(34) सर्वान् (2012, 15)
(35) जगताम् (2012, 17, 18)
(36) जगति (2012, 14, 16)
(37) सर्वस्मिन् (2012, 17)
(38) राजानम् (2013, 16)
(39) आत्मनि (2013, 18)
(40) सरित्सु (2013, 14, 15)
(41) नाम्ने (2013, 18)
(42) सर्वेषाम् (2013, 16, 17, 18)
(43) गृहस्य (2013)
(44) सर्वाणि (2013)
(45) सरिते (2014, 18)
(46) राज्ञि (2013)
(47) अस्याम् (2013)
(48) यासु (2013)
(49) यस्मै (2014, 16, 17, 18)
(50) यस्मिन् (2014)
(51) जगता (2014)
(52) राजसु (2014, 16, 17)
(53) सर्वस्याम् (2014, 16)
(54) आत्मना (2014, 16)
(55) यस्मात् (2014)
(56) येषाम् (2015)
(57) सरितम् (2015)
(58) सर्वण (2015)
(59) अस्मिन् (2015, 13)
(60) राजान: (2014)
(61) याभि: (2015)
(62) अनया (2016)
(63) जगद्भि: (2016, 17)
(64) यस्याम् (2016)
(65) आत्मा (2017, 18)
(66) सर्वस्य (2017)
(67) जगति (2017)
(68) सर्वसाम् (2017)
(69) यया (2017)
(70) जगत्सु (2018)

उत्तर— (1) षष्ठी/सप्तमी विभक्ति, द्विवचन
(2) चतुर्थी-पञ्चमी विभक्ति, बहुवचन
(3) सप्तमी विभक्ति, बहुवचन
(4) तृतीया विभक्ति, बहुवचन
(5) तृतीया विभक्ति, बहुवचन
(6) षष्ठी/सप्तमी विभक्ति, द्विवचन
(7) चतुर्थी विभक्ति, एकवचन
(8) सप्तमी विभक्ति, एकवचन
(9) षष्ठी विभक्ति, बहुवचन
(10) तृतीया विभक्ति, बहुवचन
(11) तृतीया, बहुवचन
(12) सप्तमी, एकवचन
(13) यत् (पुं०) द्वितीया, बहुवचन
(14) षष्ठी बहुवचन
(15) तृतीया, एकवचन
(16) सर्व (पुं०) चतुर्थी, एकवचन
(17) षष्ठी, बहुवचन
(18) चतुर्थी, एकवचन
(19) तृतीया, बहुवचन
(20) पञ्चमी-षष्ठी, एकवचन
(21) सप्तमी, एकवचन
(22) चतुर्थी, एकवचन
(23) चतुर्थी, एकवचन
(24) पञ्चमी, एकवचन
(25) षष्ठी, बहुवचन
(26) सप्तमी, बहुवचन
(27) तृतीया, एकवचन
(28) पञ्चमी, एकवचन
(29) षष्ठी, एकवचन
(30) षष्ठी, बहुवचन
(31) प्रथमा, एकवचन
(32) प्रथमा/द्वितीया, द्विवचन
(33) तृतीया, एकवचन
(34) द्वितीय, बहुवचन (पुं०)
(35) षष्ठी, बहुवचन
(36) सप्तमी, एकवचन
(37) सप्तमी, एकवचन (पुं०)
(38) द्वितीया, एकवचन
(39) सप्तमी, एकवचन
(40) सप्तमी, बहुवचन
(41) चतुर्थी, एकवचन
(42) षष्ठी, बहुवचन
(43) षष्ठी, एकवचन
(44) प्रथमा, बहुवचन (नपुं०)
(45) चतुर्थी, एकवचन
(46) सप्तमी, एकवचन
(47) सप्तमी, एकवचन (स्त्री०)
(48) सप्तमी, बहुवचन (स्त्री०)
(49) यत् (पुं०), चतुर्थी, एकवचन
(50) यत् (पुं०), सप्तमी, एकवचन
(51) तृतीया, एकवचन
(52) सप्तमी, बहुवचन,
(53) सर्व (स्त्री०), सप्तमी, एकवचन
(54) तृतीया, एकवचन
(55) यत् (पुं०), पञ्चमी, एकवचन।
(56) षष्ठी, बहुवचन
(57) द्वितीय, एकवचन
(58) तृतीया, एकवचन
(59) सप्तमी, एकवचन,
(60) प्रथमा, बहुवचन
(61) तृतीया, बहुवचन।
(62) तृतीया, एकवचन
(63) तृतीया, बहुवचन (नपुं०)
(64) सप्तमी, एकवचन
(65) प्रथमा, एकवचन
(66) षष्ठी, एकवचन
(67) सप्तमी, एकवचन
(68) षष्ठी, बहुवचन
(69) तृतीया, एकवचन
(70) सप्तमी, बहुवचन

12

व्याकरण : शब्द एवं वाक्य-परिचय

प्रश्न-परिचय— सामान्य हिन्दी के **खण्ड 'ख'** का **बारहवाँ प्रश्न** भी व्याकरण से सम्बन्धित होगा। इस प्रश्न के अन्तर्गत शब्दों एवं वाक्यों का परिचय कराया जाएगा, जो चार भागों 'क', 'ख', 'ग' तथा 'घ' में विभक्त होगा। भाग 'क' में **शब्द-युग्म (1 + 1 = 2 अंक)**, भाग 'ख' में **शब्द-अर्थ (1 + 1 = 2 अंक)**, भाग 'ग' में **अनेक शब्दों (वाक्यांशों) के लिए एक शब्द (1 + 1 = 2 अंक)** तथा भाग 'घ' में **वाक्य-संशोधन (1 + 1 = 2 अंक)** निर्धारित हैं।

(क) शब्द-युग्म

प्रश्न **निम्नलिखित शब्द-युग्मों में से किसी एक शब्द-युग्म में बताइए कि उसका कौन-सा अर्थ सही है ?**

[**संकेत—** ***काले तथा मोटे अक्षरों में छपे विकल्प सही हैं।***]

1. अनल-अनिल— (2009, 11, 15, 17)
   (क) पृथ्वी और आकाश **(ख) अग्नि और वायु**
   (ग) जल और वायु (घ) पानी और आग
2. सकल-शकल— (2010, 17)
   (क) कला और कृति (ख) सन् और संवत्
   (ग) सम्पूर्ण और अंश (घ) सबल और निर्बल
3. पुरुष-परुष— (2015, 17)
   (क) नर और नारी (ख) आदमी और फरसा
   (ग) पुरुष और पैसा **(घ) आदमी और कठोर**
4. गृह-ग्रह— (2018)
   (क) घर और नक्षत्र (ख) घर और गृहस्थी
   (ग) गिरोह और घर (घ) गाँव और घर
5. कपट-कपाट— (2016)
   (क) कप और प्लेट (ख) किवाड़ और खिड़की
   (ग) धोखा और दरवाजा (घ) पर्दा और किवाड़
6. पतन-पत्तन—
   (क) गिरना और उठना (ख) पत्ता और फूल
   (ग) गिरना और बन्दरगाह (घ) पर्दा और किवाड़
7. सुत-सूत—
   (क) पुत्र और पिता **(ख) पुत्र और सारथी**
   (ग) पुत्र और माता (घ) पुत्र और पत्नी
8. अभिराम-अविराम— (2009, 10, 12, 15, 17)
   (क) सुन्दर और लगातार (ख) राम और लक्ष्मण
   (ग) अब और तब (घ) सुन्दर और मजबूत
9. पास-पाश— (2010)
   (क) उत्तीर्ण और निकट **(ख) निकट और जाल**
   (ग) निकट और ऊँचा (घ) समीप और दूर
10. पंथ-पथ—
    (क) पथिक और रास्ता **(ख) सम्प्रदाय और मार्ग**
    (ग) चलना और बैठना (घ) मार्ग और कार्य
11. अंबुज-अंबुद— (2013, 14, 16)
    (क) कमल और बादल (ख) जल और कमल
    (ग) बादल और समुद्र (घ) समुद्र और कमल
12. मेघ-मेध—
    (क) बादल और कील **(ख) बादल और यज्ञ**
    (ग) काला और बुद्धि (घ) बादल और चर्बी
13. अंस-अंश— (2011, 12, 13, 17, 18)
    (क) अंकुर और हिस्सा (ख) हिस्सा और अंकुर
    (ग) कंधा और हिस्सा (घ) हिस्सा और कंधा
14. जलज-जलद— (2009, 14, 16)
    (क) बादल और कमल **(ख) कमल और बादल**
    (ग) कमल और तालाब (घ) तालाब और कमल
15. उपकार-अपकार— (2013)
    (क) दूसरे का कार्य और बुरा (ख) पुकार और न बोलना
    (ग) भलाई और बुराई (घ) अच्छा और दुष्ट
16. आय-आयु
    (क) आना और उम्र **(ख) आमदनी और उम्र**
    (ग) आना और आज्ञा (घ) उम्र और आज्ञा
17. श्रवण-श्रमण—
    (क) पाप और पुण्य (ख) सज्जन और दुर्जन
    (ग) कान और भिक्षु (घ) सावन और परिश्रमी
18. वसन-व्यसन— (2016)
    (क) विवश और व्याकुल **(ख) वस्त्र और आदत**
    (ग) कवच और भोजन (घ) विस्तार और अवधि
19. अंश-अंशु— (2015, 17)
    (क) भाग और सूर्य (ख) सूर्य और भाग
    (ग) भाग और किरण (घ) भाग और वरुण
20. कटिबन्ध-कटिबद्ध—
    (क) फेंटा और तैयार (ख) करधनी और तैयार
    (ग) तैयार और बाजूबंद (घ) उद्यत और उद्धत
21. निहत-निहित—
    (क) डरा हुआ और छिपा हुआ (ख) छिपा हुआ और डरा हुआ
    (ग) मरा हुआ और छिपा हुआ (घ) हारा हुआ और मरा हुआ
22. स्वर्ण-सवर्ण— (2014, 15, 17)
    (क) सोना और अच्छा रंग (ख) सुनार और सोना
    (ग) सोना और चाँदी **(घ) सोना और उच्च जाति**
23. विहग-विहंग—
    (क) पक्षी और बालक (ख) पक्षी और तोता
    (ग) पक्षी और आकाश (घ) आकाश और पक्षी
24. भित्ति-भीत—
    (क) भक्ति और भाग्य (ख) द्वार और दीवार
    (ग) दीवार और डरा हुआ (घ) बाहर और भीतर
25. अमूल्य-अमूल—
    (क) मूल-रहित और दूध (ख) मूलरहित और जड़ रहित
    (ग) मूल्य सहित और मूलभूत
    (घ) अधिक मूल्यवाला और मूर्ख

26. भारती-भारतीय—
(क) सरस्वती और भारत का रहने वाला
(ख) भार ढोने वाली और भर्ती करने वाला
(ग) भार में लगी हुई और चुनाव
(घ) एक जाति और एक व्यक्ति

27. श्रान्त-श्रान्ति—
(क) थकान और खिन्नता (ख) शान्ति और खिन्नता
(ग) खिल और थकान (घ) शान्त और अशान्त

28. प्रारम्भ-प्रारब्ध—
(क) आरम्भ और योजना (ख) अथ और इति
(ग) आरम्भ और भाग्य
(घ) शुरू करने की स्थिति और समाप्ति

29. छात्र-क्षात्र— (2011, 14)
(क) छतरीधारी और विद्यार्थी (ख) विद्यार्थी और नेता
(ग) क्षत्रियधर्मी और विद्यार्थी **(घ) विद्यार्थी और क्षत्रियोचित**

30. नियत-नियति— (2013)
(क) निश्चित और भाग्य (ख) आदत और भाग्य
(ग) प्रकृति और गणना (घ) आदत और गणना

31. तरणि-तरणी— (2010, 13, 16, 17)
(क) सूर्य और नाव (ख) सूरज और चन्दा
(ग) नाव और स्त्री (घ) तरना और स्त्री

32. अब्ज-अब्द— (2018)
(क) कमल और वर्ष (ख) वर्ष और कमल
(ग) वृद्ध और जीर्ण (घ) चन्द्र और सूर्य

33. जघन-जघन्य— (2016)
(क) जाँघ और अपराध (ख) अपराध और जाँघ
(ग) जाँघ और गर्हित (घ) मध्य भाग और पाप

34. अधूत-अवधूत—
(क) अधूत और साधू **(ख) भयरहित और योगी**
(ग) भोगी और योगी (घ) योगी और भोगी

35. कपिश-कपीश— (2016)
(क) मटमैला और अंगद (ख) सुग्रीव और काला
(ग) बालि और सुग्रीव **(घ) मटमैला और सुग्रीव**

36. धरा-धारा— (2008)
(क) पृथ्वी और पानी का प्रवाह (ख) पृथ्वी और आकाश
(ग) आकाश और पाताल (घ) सूर्य और चन्द्रमा

37. अतिथि-आतिथेय— (2010)
(क) जिसके आने की कोई तिथि न हो—अतिथि की सेवा करने वाला
(ख) अधिक तिथि आने वाली तिथि
(ग) तिथिविहीन—तिथिसहित
(घ) जिसके आने की तिथि हो—जो निश्चित तिथि पर आये

38. अग-अघ— (2010, 16)
(क) आगे और पीछे **(ख) अचल और पाप**
(ग) नया और पुराना (घ) सम्पूर्ण और पुण्य

39. पाथोज-पाथोद—
(क) बादल और कमल **(ख) कमल और बादल**
(ग) चन्द्रमा और सूर्य (घ) समुद्र और आकाश

40. आभरण-आमरण— (2013, 15)
(क) पोशाक और मृत्यु **(ख) आभूषण और मृत्युपर्यन्त**
(ग) मृत्यु और जीवन (घ) जीवन और मृत्यु

41. दुर्लभ-अप्राप्य— (2013)
(क) कठिनाई से मिले-बिलकुल न मिले
(ख) हर समय मिले—कभी न मिले
(ग) कभी-कभी मिले—हर समय न मिले
(घ) मिलता हो—खो जाता हो

42. उच्छृंखल-उद्दण्ड— (2013)
(क) तत्पर—उद्धत
(ख) अवांछनीय—साहसी
(ग) नियमबद्ध न होना—जो दण्ड से न डरता हो
(घ) अन्याय से उत्पन्न भय—डर से उत्पन्न व्याकुलता

43. निद्रा-तन्द्रा— (2013)
(क) सो जाना—ऊँघना (ख) नींद—आलस्य
(ग) जागना—सोने जैसी स्थिति (घ) आलस्य—जाग्रत

44. सुगन्ध-सौगन्ध— (2013)
(क) सुवास और दुर्गन्ध (ख) तोता और तोते का बच्चा
(ग) महक और शपथ **(घ) अन्धा तोता और सैकड़ों खुशबू**

45. क्षति-क्षिति— (2014)
(क) हानि और लाभ (ख) हानि और आकाश
(ग) आकाश और पृथ्वी **(घ) हानि और पृथ्वी**

46. आपात-आपाद— (2014)
(क) विपदा और सम्पदा (ख) सुख और दुःख
(ग) संकट और निष्कण्टक **(घ) संकट और पैर तक**

47. अम्ब-अम्भ— (2015)
(क) माता और पानी (ख) माता और पिता
(ग) आकाश और स्वर्ग **(घ) देवी और देवता**

48. अलि-आली— (2015)
(क) भौंरा और सखी (ख) भौंरा और कली
(ग) कली और भौंरा (घ) सखी और भौंरा

49. जगत्-जगत— (2015)
(क) संसार और कुएँ का चबूतरा (ख) संसार और संसारी
(ग) कुआँ और संसार (घ) घड़ा और पानी

50. उपल-उत्पल— (2015)
(क) उत्पन्न और ऊपर (ख) ऊपर और नीचे
(ग) ओला और कमल (घ) समाप्त और प्रारम्भ

51. भव-भव्य— (2015)
(क) संसार और सुन्दर (ख) विश्व और व्यापक
(ग) सुख और दुःख (घ) भौतिक और आध्यात्मिक

52. कर्म-क्रम— (2015)
(क) धर्म और कर्म (ख) काम और आरम्भ
(ग) कार्य और क्रम **(घ) काम और सिलसिला**

53. अपत्य-अपश्य— (2016)
(क) पतिविहीन और कुमार्ग (ख) पुत्रहीन और भोजन
(ग) सन्तान और अहितकर (घ) पुत्र और बीमारी

54. आवरण-आभरण— (2016)
(क) प्रारम्भ और अन्त (ख) परदा और अन्त
(ग) परदा और गहना (घ) मृत्यु और ढकना

55. बात-वात— (2018)
(क) भात और दाल **(ख) बातचीत और वायु**
(ग) हवा और पानी (घ) बाट और तराजू

56. बहन-बहन— (2018)
(क) ढोना-भगिनी (ख) बहना-बहिनी
(ग) ढोना-बहना (घ) ढोना-ढहाना

57. अनुभव-अनुभूति— (2018)
(क) व्यवहार रहित ज्ञान और अव्यावहारिक ज्ञान
(ख) व्यवहार से प्राप्त आन्तरिक ज्ञान और चिन्तन से प्राप्त आन्तरिक ज्ञान
(ग) अल्पकालिक ज्ञान और दीर्घकालिक प्राप्त ज्ञान
(घ) व्यावहारिक ज्ञान ओर अव्यावहारिक ज्ञान

58. ईर्ष्या-स्पर्धा— (2018)
(क) दूसरों की उन्नति से प्रसन्न होना और दूसरों से प्रेरणा लेना
(ख) दूसरों से द्वेष करना और दूसरों से प्रेम करना
(ग) दूसरों की उन्नति से जलना और दूसरों की उन्नति और गुणों को प्राप्त करने की होड़
(घ) अवनति और उन्नति

59. हर-हरि— (2018)
(क) शिव और पार्वती (ख) हरण और हरा रंग
(ग) शंकर और विष्णु (घ) विष्णु और शिव

अथवा

प्रश्न- **निम्नलिखित शब्द-युग्मों में से किन्हीं दो शब्द-युग्मों के अर्थ में अन्तर स्पष्ट कीजिए—**

शब्द-युग्म	अर्थ
1. अम्ब	माता
अम्बु	जल
2. गृह (2017, 18)	घर
ग्रह	नक्षत्र
3. अशक्त (2011, 18)	शक्तिहीन
आसक्त	मोहित
4. अपकार (2013)	बुरा करना
उपकार	भला करना
5. अनुरोध	प्रार्थना
अवरोध	रुकावट, बाधा
6. क्षात्र	क्षत्रिय का
छात्र	विद्यार्थी
7. वात (2012)	वायु
बात	बातचीत
8. आचरण	व्यवहार
आवरण	परदा
9. अनुसरण (2009)	पीछे चलना
अनुकरण	नकल करना
10. उपयुक्त	उचित
उपर्युक्त	ऊपर कहा गया
11. उत्कर्ष	उत्थान
अपकर्ष	पतन
12. वदन	मुख
बदन	शरीर
13. तरणि	सूर्य
तरुणी	युवती, स्त्री
तरणी (2010, 13, 14, 16, 17)	नाव
14. चिर	दीर्घ, बहुत
चीर	एक वस्त्र
15. जलद (2009, 12)	बादल
जलज	कमल
जलधि	समुद्र
शब्द-युग्म	अर्थ
16. देव (2018)	देवता
दैव	भाग्य
17. नीर (2009, 14)	जल, पानी
नीड़	घोंसला
18. आगार	भण्डार
आकार	रूप
19. आरत (2012)	दुःखी
आराति	शत्रु
20. गर्व	घमण्ड, अहंकार
गर्भ	भीतर, गर्भाशय
21. अनिष्ट	बुरा
अनिष्ठ	निष्ठारहित
22. प्रसाद (2013, 16, 18)	कृपा
प्रासाद	महल, भोग
23. कल्पित	कल्पना किया हुआ
कल्पान्त	प्रलय, सृष्टि का अन्त
24. कुल (2009, 14, 18)	वंश
कूल	किनारा
25. कृपण (2010, 12)	कंजूस
कृपाण	कटार
26. पथ	मार्ग
पथ्य	रोगी का भोजन
27. परिणाम	नतीजा, फल
परिमाण	मात्रा
28. दिन	दिन
दीन	गरीब
29. लक्ष्य (2014)	निशाना, उद्देश्य
लक्ष	लाख
30. विधि	ब्रह्मा
विधु	चन्द्रमा
31. अवधि (2014)	काल-सीमा
अवधी	भाषा का नाम
32. मृत्यु	मौत
मर्त्य	मनुष्य
33. उद्धत (2014)	चंचल, उद्दण्ड
उद्यत	तैयार
34. नीरद (2010)	बादल
नीरज	कमल
35. द्रव्य (2009)	धन
द्रव	तरल पदार्थ
36. आयत	चौकोर
आयात	विदेशों से सामान मँगाना
37. वारिद	बादल
वारिधि	समुद्र
38. अवलम्ब (2009, 11)	सहारा
अविलम्ब	शीघ्र
39. अपेक्षा (2018)	आशा, इच्छा, तुलना में
उपेक्षा	निरादर, अनदेखी, अवहेलना

शब्द-युग्म	अर्थ
40. अन्त	समाप्त
अन्त्य	अन्त का, नीच
41. अनु	पीछे, उपसर्ग
अणु	छोटा
42. नग	पर्वत, वृक्ष, रत्न
नाग	हाथी, सर्प
43. नियत (2013)	निश्चित
नियति	भाग्य
44. इति	अन्त
इत	इधर
45. द्यूत	जूआ
दूत	सन्देशवाहक
46. अन्न	अनाज
अन्य	दूसरा
47. अभय	निर्भय, निडर
उभय	दोनों
48. पवन	हवा
पावन	पवित्र
49. पावक	आग
पावस	वर्षा ऋतु
50. प्रणय (2011, 12, 17)	प्रेम, प्रीतियुक्त, विश्वास
परिणय	विवाह
51. वसुदेव	कृष्ण के पिता
वासुदेव	कृष्ण
52. कोष	खजाना
कोश	शब्द-संग्रह
53. भवन (2009, 13, 14)	घर, श्रेष्ठ मकान
भुवन	संसार
54. पाणि	हाथ
पानी	जल
55. मूल	जड़
मूल्य	कीमत
56. देश	राज्य
द्वेष	ईर्ष्या, जलन
57. सूर	सूरदास, सूर्य
शूर	बहादुर
58. सर (2012, 17)	तालाब
शर	बाण
59. तुरंग (2009, 17)	घोड़ा
तरंग	लहर
60. नारी	स्त्री
नाड़ी	नब्ज, नस
61. निर्माण (2013)	बनाना, रचना
निर्वाण	मोक्ष
62. प्रवाह	बहाव
परवाह	चिन्ता
63. यन्त्रणा	कष्ट
मन्त्रणा	विचार-विमर्श

शब्द-युग्म	अर्थ
64. व्रत	उपवास
वृत्त	घेरा
वित्त	धन
65. वसन	वस्त्र
व्यसन	बुरी आदत
66. वरण	चुनना
वर्ण	रंग, जाति, अक्षर
67. सुत (2012)	पुत्र
सूत	सारथी
68. संस्तुति	सिफारिश करना
संस्तुत	सिफारिश किया हुआ
69. संस्कृति	सभ्यता
संस्कृत	सभ्य, एक भाषा
70. शशधर (2012)	चन्द्रमा
शशिधर	शिव
71. हाट	बाजार
हाड़	हड्डी
72. निधन	मृत्यु
निर्धन	गरीब
73. शुल्क	फीस
शुक्ल	सफेद
74. चरण	पैर
चारण	भाट
75. कटि	कमर
कीट	कीड़ा
76. प्रण	प्रतिज्ञा
पण	बाजी, पैसा
77. रज	धूल
रजक	धोबी
78. रस	आनन्द, अर्क
रास	लगाम, नृत्य क्रीड़ा
79. रुचिर	सुन्दर
रुधिर	रक्त
80. संकीर्ण	संकुचित
विकीर्ण	फैली हुई
81. कान्ति	आभा, चमक
क्रान्ति	उथल-पुथल, विद्रोह
82. गणना (2009)	गिनती
गड़ना	चुभना
83. वध	मारना
बद्ध	बँधा हुआ
84. द्विप (2009, 13)	हाथी
द्वीप	टापू
दीप	दीपक
85. कंगाल (2018)	दरिद्र
कंकाल	अस्थि-पंजर
86. आयस	लोहा
अयश	अपकीर्ति

	शब्द-युग्म	अर्थ
87.	अलि	भौंरा
	आली	सखी
88.	तप	तपस्या
	ताप	कष्ट
89.	आदि	प्रारम्भ
	आधि	मानसिक दु:ख
	आदी	अभ्यस्त
90.	शस्त्र	हथियार
	शास्त्र	ज्ञान से पूर्ण ग्रन्थ
91.	अथक(2009)	जिसमें थकान न लगे
	अकथ	जो कहने योग्य नहीं है
92.	अगम	जहाँ पहुँचा न जा सके
	अगोचर	इन्द्रियों से परे हो
93.	आयात	विदेशों से सामान मँगाना
	निर्यात	विदेशों को सामान भेजना
94.	यश	कीर्ति
	अपयश	अपकीर्ति (बदनामी)
95.	चर	सजीव
	अचर	निर्जीव
96.	बाल	बालक
	बाल	सिर के केश
97.	प्रमाण	साक्ष्य
	प्रयाण	प्रस्थान
98.	प्रपात	झरना
	प्रताप	तेज
99.	आवास	निवास
	आभास	प्रतीति
100.	चतुष्पद	पशु, चौपाया
	चतुष्पथ	चार मार्ग, चौराहा
101.	उपहार	भेंट
	उपचार	इलाज
102.	अचल	स्थिर
	अंचल	सीमा
103.	घाम	गर्मी
	धाम	घर, निवास-स्थान
104.	प्रलाप	निरर्थक बात, बकवास
	विलाप	रोना, शोक करना
105	अभिज्ञ	जानकार
	अनभिज्ञ	अनजान
106.	अपर	पहला, पूर्व का, पिछला
	अपार	असीम, जिसका पार न हो
107.	उत्साह	वीर रस का स्थायी भाव
	साहस	दृढ़तापूर्वक कार्य करने की क्रिया
108.	परीक्षक	परीक्षा लेने वाला
	निरीक्षक	देख-रेख करने वाला
109.	पयोद(2012)	बादल
	पयोधि	समुद्र
110.	प्रथा(2012, 16)	रीति-रिवाज
	पृथा	कुन्ती
111.	श्वपच(2012)	चाण्डाल
	स्वपच	स्वयंपाकी
112.	आतप(2012)	धूप
	आपात	संकट
	आपाद (2014)	पैर तक

(ख) शब्द-अर्थ

प्रश्न— निम्नलिखित शब्दों में से किसी एक शब्द के दो भिन्न-भिन्न अर्थ लिखिए—

	शब्द	अनेक अर्थ
अ—	अर्थ	धन, आकाश, प्रयोजन, व्याख्या, ऐश्वर्य। (2009, 10, 12)
	अरुण	प्रात: का सूर्य, सूर्य का सारथी, हल्का लाल रंग।
	अज	परमेश्वर, बकरा, शिव। (2016, 18)
	अर्क	काढ़ा, सूर्य, आक का पौधा। (2013, 15)
	अनन्त	आकाश, जिसका कहीं अन्त न हो। (2012)
	अनुपम	बेजोड़, सर्वोत्तम। (2015)
	अनुरूप	सदृश, योग्य, उपयुक्त। (2015)
	अम्बर	आकाश, वस्त्र। (2010, 12, 13, 14, 15, 16, 17, 18)
	अंक	संख्या, गोद, भाग्य, चिह्न, नाटक का एक भाग। (2015)
	अंश	भाग, खण्ड, अवयव, कन्धा, कला, भाज्य अंक, कोण का भाग। (2010)
	अक्ष	ज्ञान, रथ, सर्प, आँख, पहिया, पासों का खेल, एक पैमाना, सुहाना, कानून।
	अक्षर	कभी नष्ट न होने वाला, ध्वनि, वर्ण, ब्रह्मा, विष्णु, धर्म, परमात्मा, तप।
	अन्तर	अवधि, व्यवधान, भेद, मध्य।
	अभियोग	अवरोध, आक्रमण मनोयोग। (2015)
	अमृत	सुधा, मुक्ति, दूध, औषध। (2011, 17)
	अनल	अग्नि, तीन की संख्या। (2018)
	अलि	सखी, भ्रमर। (2009, 11, 13, 17)
	अग्नि	आग, पूर्व-दक्षिण के बीच का कोना, भोजन का पाचन करने वाली शक्ति। (2013)
	अनुकम्पा	दया, हमदर्दी, अनुरूप, कम्पन (2018)
आ	आम	एक फल का नाम, साधारण।
	आरम्भ	शुरू, श्रीगणेश, प्रयत्न। (2015)
	आँख	इन्द्रिय, नयन, चक्षु। (2015)
	आराम	शान्ति, सुख, उपवन, एक वृत्त, विश्राम, रोगमुक्त होना। (2009)
औ—	और	तथा, अन्य, अधिक, सम्बन्धबोधक शब्द।
उ—	उत्तर	बाद का, जवाब, उत्तर दिशा। (2011)
अं—	अंचल	किनारा, तट, साड़ी या चादर का सिरा।
क—	कल	आने वाला दिन, बीता हुआ दिन, मशीन। (2017)
	कर	ओला, लम्बाई की एक माप, हाथ, टैक्स, किरण, कार्य करने का आदेश, हाथी की सूँड़। (2010, 12, 15, 18)
	कवि	कविता का रचयिता, शुक्र, सूर्य, ऋषि। (2012, 16)
	कपि	बन्दर, हाथी, सूर्य। (2013, 16, 18)
	कनक	सोना, धतूरा, गेहूँ का आटा। (2011, 12, 13, 16)
	कमल	पंकज, पीलिया रोग, पानी, आँख की पुतली। (2013)
	कटाक्ष	तिरछी दृष्टि, आक्षेप, व्यंग्य।
	काम	कार्य, कामदेव, प्रयोजन, आशय, लाभ, लालसा।
	कुल	सब, समस्त, वंश। (2011, 18)
	कुशल	दक्ष, भली-भाँति।

शब्द	अनेक अर्थ
कृष्ण	श्रीकृष्ण, काला। (2018)
कर्ण	कान, नाव की पतवार, समकोण त्रिभुज में समकोण के सामने की भुजा, महाभारत के अनुसार कौरव पक्ष का एक महारथी। (2013)
काल	समय, अकाल, मृत्यु, यमराज। (2016)
कुमार	छोटा बालक, अविवाहित युवक, राजपुत्र, अग्नि का एक पुत्र, कार्त्तिकेय, खरा सोना, मंगल ग्रह। (2017)
कौशिक	इन्द्र, विश्वामित्र, कोषाध्यक्ष, कोशकार, रेशमी वस्त्र। (2017, 18)
क्षेत्र	वह स्थान जहाँ अन्न बोया जाता है, समतल भूमि, उत्पत्ति स्थान, घर।
कंचन	सोना, धन, धतूरा, एक प्रकार का कचनार।
ख—खर	घास, हानिकारक, कौआ, तेज, अशुभ, गधा।
खल	दुष्ट, खरल, धतूरा, खलिहान
ग—ग्रहण	सूर्यग्रहण, चन्द्रग्रहण, स्वीकार करना, लेना।
गति	चाल, दशा (हालत), मोक्ष। (2012, 14)
गरल	जहर/विष, घास का बँधा हुआ पूला।
गिरिधर	गिरि (पर्वत) अर्थात् गोवर्धन पर्वत को धारण करने वाले, श्रीकृष्ण।
गुण	विशेषता, स्वभाव, रस्सी, कौशल। (2015)
गुरु	ज्ञान देने वाला, शिक्षक, दो मात्राओं वाला अक्षर, भारी। (2009, 12, 14)
गो	बैल, भूमि, वाणी, दिशा। (2009, 12, 13)
घ—घट	शरीर, घड़ा, हृदय, कम होना।
घन	बादल, हथौड़ा, सघन, दृढ़। (2011)
घोष	अहीरों की बस्ती, अहीर, गोशाला, बंगालियों की एक जाति, जोर से की हुई पुकार, गर्जन, उच्चारण में होने वाला एक बाह्य प्रयत्न। (2018)
घर	निवास-स्थान, जन्म-स्थान, घराना, आड़ी-खड़ी रेखाओं से घिरा स्थान।
घनश्याम	श्रीकृष्ण, काला बादल। (2012, 17)
च—चक्र	पहिया, षड्यन्त्र, एक अस्त्र। (2009)
चपला	लक्ष्मी, बिजली, चंचल स्त्री। (2012, 16, 18)
ज—जलज	मछली, मोती, कमल, शंख। (2014)
जड़	मूर्ख, अचेतन मूल। (2015)
ठ—ठाकुर	देवमूर्ति, ईश्वर, मालिक, किसी भूखण्ड का स्वामी, नायक, गाँव का मुखिया, क्षत्रियों की एक उपाधि, नाइयों के लिए सम्बोधन।
त—तम	अँधेरा, तामसिक, गुण, राहु।
तनु	पतला, शरीर, स्वभाव, सुकुमार।
तनया	पुत्री (बेटी, लड़की), पिण्वन नाम की लता।
ताल	स्वर-ताल, तालाब, ताली बजाना।
तीर	नदी का किनारा, तट, बाण। (2009)
तात	पिता, भाई, मित्र, गुरु तथा पूज्य व्यक्ति हेतु सम्बोधन। (2011, 16)
द—दल	समूह, सेना, पत्ता, पक्ष। (2016)
दण्ड	सजा, डण्डा, एक व्यायाम। (2010)
दाम	मूल्य, रस्सी, माला, ढेर, लोक या भुवन, राजनीति की चार युक्तियों में दूसरी।
द्रव्य	धन, वस्तु, पदार्थ।
द्विज	ब्राह्मण, पक्षी, चन्द्रमा, दाँत। (2010, 12, 14, 15)
दृग	नयन, दृष्टि। (2018)
ध—धर्म	आचरण, धारण करने योग्य गुण।
धातृ	धाय माँ, धरती।

शब्द	अनेक अर्थ
धरा	पृथ्वी, शिरा, गूदा, तल। (2009)
धन	गणित में जोड़ का चिह्न, द्रव्य या सम्पत्ति, पूँजी, चौपायों का समूह, युवा स्त्री।
धवल	धव का वृक्ष, बड़ा बैल, सफेद दाग, निर्मल। (2012)
न—नव	नवीन (नया), नौ।
नग	नगीना, रत्न, वृक्ष, पर्वत, सूर्य। (2011, 12, 15)
नकुल	एक सर्पाहारी जन्तु नेवला, शिव, राजा पाण्डु का चौथा पुत्र, जिसका कुल न हो।
नगेश	पर्वतराज, नगेन्द्र, हिमालय।
नाग	सर्प, हाथी, नागेश्वर, मनुष्यों की एक जाति का नाम। (2011, 13, 17)
नाक	नासिका (चेहरे का एक अंग), स्वर्ण, सम्मान। (2014, 17)
निशाचर	उल्लू, राक्षस।
नदी	पर्वत, झील आदि से निकलने वाला जल का प्राकृतिक प्रवाह, चौदह अक्षरों का एक छन्द। (2013)
नागर	चतुर, चालाक, नामहीन। (2016)
प—पय	पानी, दूध। (2014)
पद	स्थान, पदवी, पैर, छन्द का एक चरण, भाग। (2010, 14, 15)
पत्र	पत्ता, चिट्ठी, किसी धातु का एक पतरा, पंख।
पवन	वायु, साँस, प्राण-वायु। (2013)
पतंग	सूर्य, पक्षी, कीट-पतंग, पारा, नौका, विष्णु। (2010, 13, 14, 15, 16, 17)
पंच	पाँच, ग्राम सरपंच, निर्णय करने वाला।
पयोधर	स्तन, बादल, नारियल, कसेरू, दोहा-छप्पय छन्द का एक भेद। (2009, 11, 15, 16, 17, 18)
पयोधि	समुद्र।
पंचानन	जिसके पाँच मुख हों, शिव, सिंह।
पत्नी	शास्त्रविधि से विवाहित स्त्री, भार्या, सहधर्मिणी।
पृष्ठ	पेज (सफा), पिछला भाग, पीठ।
पानी	जल, लाज, धार, आब, बल। (2016)
पुष्कर	आकाश, जल, कमल, तालाब। (2014)
पूत	पुत्र, पवित्र।
पूर्व	एक दिशा का नाम, पहले।
पोत	शावक (पक्षी का शिशु), पानी का जहाज।
प्रकृति	स्वभाव, संसार की निर्मात्री शक्ति, परमात्मा, एक छन्द। (2012)
प्रकाश	ज्योति, प्रसिद्धि विस्तार, शिव। (2012)
प्रभाव	असर, महिमा।
फ—फल	खाने वाला कोई भी फल, परिणाम, चाकू का फलक।
फूल	सुमन, दाहकर्म के पश्चात् शेष अस्थियाँ। (2009)
ब—बलि	धर्म के नाम पर किसी जीव की हत्या, न्योछावर करना, राजा, बलि, चढ़ावा।
बल	शक्ति, सेना, टेढ़ापन (तिरछापन)।
बहार	एक राग का नाम, मौसम।
बाल	बालक, केश, गेहूँ के बाल।
बाण	तीर, गाय का थन, आग, पाँच की संख्या। (2010, 18)
बिजली	विद्युत, आम की गुठली के अन्दर की गिरी, गले व कान में पहनने का एक गहना।
भ— भव	संसार, जन्म, शिव, हेतु।
भुवन	संसार, त्रिलोक।
भुजंग	साँप, स्त्री का उपपति, सीसा नामक धातु।

	शब्द	अनेक अर्थ
म—	मधु	शहद, मीठा, मद (शराब), पुष्प-रस। (2014, 16)
	मान	सम्मान, परिमाण (नाप-तौल की मात्रा) अभिमान।
	माधव	विष्णु, वसन्त ऋतु, काली उड़द, एक प्रकार का राग। (2014)
	मंगल	कल्याण, सात वारों में एक वार, विवाह, अग्नि का एक नाम, सौर-मण्डल का एक ग्रह।
	मित्र	सूर्य, सखा (दोस्त)। (2011, 14, 15, 17)
	मोद	सुगन्ध, प्रफुल्लता (प्रसन्नता), कस्तूरी।
	मेघ	बादल, काला। (2009, 13)
य	योग	जोड़, योगं-साधना, योग्य। (2014)
	युक्ति	योग, मिलन, तर्क, दलील, नीति, चातुर्य, उपाय, रीति। (2017)
र—	रक्त	खून, तल्लीन, अनुरागी, लाल रंग वाला।
	रस	किसी फल अथवा पेड़-पौधे का तरल पेय पदार्थ, पेय, सार, काव्य का आनन्द। (2014)
	राग	मोह, रंग, लाली, संगीत के स्वर, प्रेम। (2010, 17)
	राजा	किसी देश का सर्वाधिकार सम्पन्न प्रधान शासक, अधिपति, स्वामी मालिक।
ल—	लक्ष्य	निशाना लगाने का स्थान, उद्देश्य, ध्येय, अभीष्ट वस्तु। (2010, 17, 18)
व—	वर	दूल्हा, श्रेष्ठ, सुन्दर। (2017)
	वन	जंगल, जल, समूह, काष्ठ।
	वर्ण	अक्षर, रंग, हिन्दू धर्म में कार्य के आधार पर किया गया समाज का एक वर्गीकरण। (2014, 15)
	वार	द्वार, अवरोध, आवरण, अवसर, सप्ताह का कोई दिन, बाण, दाँव, आक्रमण, प्रहार। (2014)
	वास	कपड़ा, सुगन्ध, निवास-स्थान।
	वारिद	बादल, नागरमोथा, सामने आया हुआ (आगत)
	विषय	ज्ञान की एक शाखा, भोग-विलास, विचार करने योग्य बात।
	विषम	अत्यन्त कठिन, असम (जो सम न हो), तिरछा।
	विधि	भाग्य, विधाता (ब्रह्मा), तरीका, युक्ति, रीति, कानून। (2009, 12, 16)
	विग्रह	शरीर, लड़ाई, पृथक्, देवता की मूर्ति।
	विहंग	पक्षी, बाण, सूर्य, चन्द्रमा। (2016)
	विभूति	शक्ति, महत्ता, सृष्टि, प्राचुर्य। (2017)
श—	शिखा	चोटी, नोक, पेड़ की जड़, आग की लपटें, प्रकाश की किरण।
	श्रुति	सुनने की क्रिया या भाव, सुनने की इन्द्रिय, कही या सुनी बात, किंवदन्ती, कथन, चारों वेद, चार की संख्या का सूचक शब्द। (2018)
	शिखी	शिखा या शिखाओं (चोटियों) से युक्त, मोर, मुर्गा, एक प्रकार का सारस, बगुला, साँड, घोड़ा, चीता, दीपक, केतु, मेथी, वृक्ष, पर्वत।
	शिव	महादेव, महेश, मंगल, कल्याण, सुख, वेद। (2016)
स—	साल	एक वृक्ष का नाम, वर्ष, घाव, शूल, नष्ट होना।
	सारंग	कमल, हंस, घोड़ा, तालाब, भौंरा, साँप, मोर, बादल, किरण। (2011, 13)
	सार	सत, तत्त्व, फौलाद, संक्षिप्त।
	सोना	स्वर्ण, सोना (एक क्रिया)। (2011)
	समुद्र	सागर, व्यापक एवं गहरा।
	साधना	तपस्या, आराधना, उपासना, कार्य-सिद्ध करना। (2010, 17)
	सोम	स्वर्ग, आकाश, सोमवार, चन्द्रमा, अमृत, यम, वायु, कुबेर। (2010, 16)
	स्नेह	प्रेम, चिकना पदार्थ, कोमलता, एक राग का नाम। (2010)
	संज्ञा	चेतना, ज्ञान, बुद्धि, संकेत, नाम, सूर्य की पत्नी (2014)
	सूर्य	सौरमण्डल का बड़ा और ज्वलन्त पिण्ड, बारह की संख्या, सोना, ताँबा। (2013)
	सुरभि	सुगन्ध, कामधेनु, वसन्त। (2017)
ह—	हरि	सूर्य, कृष्ण, इन्द्र, सिंह, सर्प, विष्णु। (2012, 16)
	हंस	आत्मा, गुरु, एक पक्षी का नाम। (2009, 18)
	हार	एक आभूषण का नाम (गले में पहनने हेतु), पराजय। (2014)
	हर	शंकर, आग, हरण, हल। (2014)
	हाथ	हस्त (कर), सहयोग। (2009)
	हेम	हिम, स्वर्ण। (2016)
	हलधर	हल धारण करने वाला बैल, बलराम। (2018)

अथवा

प्रश्न— निम्नलिखित प्रश्नों के सही विकल्प चुनकर उत्तर लिखिए—

1. 'गो' शब्द का अर्थ नहीं है—
   (क) गाय (ख) किरण (ग) पृथ्वी (घ) हाथी
2. 'अंक' शब्द का अर्थ नहीं है—
   (क) गोद (ख) संख्या
   (ग) नाटक का एक अंश (घ) अन्य
3. 'हार' शब्द के सही अर्थों को चुनकर लिखिए—
   (क) गले का आभूषण (ख) पराजय
   (ग) घबराना (घ) दुःख
4. द्विज का अर्थ है—
   (क) ब्राह्मण (ख) पशु (ग) सिंह (घ) क्षत्रिय
5. 'अंबर' शब्द का कौन-सा अर्थ नहीं है ?
   (क) आकाश (ख) वस्त्र (ग) आम (घ) केसर
6. निम्नलिखित में से किन्हीं दो के दो-दो अर्थ लिखिए—
   (क) अक्षत (ख) हार (ग) द्विज (घ) काल
7. निम्नलिखित शब्दों में से कोई एक शब्द चुनिए और उसके एकाधिक अर्थ लिखिए—
   (क) अम्बर (ख) पत्र (ग) वर (घ) हार
8. 'अकाल' शब्द का अर्थ नहीं है—
   (क) दुर्भिक्ष (ख) मृत्यु (ग) कमी (घ) असमय
9. 'तारा' शब्द का अर्थ है—
   (क) नक्षत्र (ख) चन्द्र (ग) लेखनी (घ) रश्मि
10. 'मित्र' का सही अर्थ है—
    (क) धन (ख) सूर्य (ग) हाथ (घ) वानर
11. 'उदधि' शब्द का कौन-सा अर्थ सही नहीं है ?
    (क) उत्तम दधि (ख) समुद्र (ग) सागर (घ) जलधि
12. 'करि' शब्द के सही अर्थों को चुनकर लिखिए—
    (क) हाथी (ख) सूँड वाला
    (ग) करने वाला (घ) चोर
13. 'जलधि' शब्द का कौन-सा अर्थ सही नहीं है?
    (क) उदधि (ख) वारिधि (ग) सागर (घ) बादल
14. 'अनन्त' शब्द का कौन-सा अर्थ सही नहीं है?
    (क) विष्णु (ख) आकाश (ग) सर्पराज (घ) यमराज

उत्तर—1. (घ), 2. (घ), 3. (क), (ख), 4. (क), 5. (ग), 6. (क) अक्षत—अखण्डित, क्षतहीन, (ख) हार—गले का आभूषण, पराजय, (ग) द्विज—ब्राह्मण, दाँत, (घ) काल—समय, मृत्यु, 7. (क), अम्बर—आकाश, वस्त्र, केसर, (ख) पत्र—पत्ता, चिट्ठी, पंख; (ग) वर—दूल्हा, श्रेष्ठ, 8. (ग), 9. (क), 10. (ख), 11. (क), 12. (क), (ख), 13. (घ), 14. (घ)।

(ग) अनेक शब्दों (वाक्यांशों) के लिए एक शब्द

प्रश्न— निम्नलिखित में से किन्हीं दो शब्द-समूहों के लिए एक-एक शब्द लिखिए—

वाक्यांश (शब्द-समूह)	एक शब्द
नाटक का भाग	अंक
हाथी हाँकने का लोहे का दण्डाकार काँटा	अंकुश
न करने योग्य (2015)	अकरणीय
जहाँ जाया न जा सके (2012)	अगम
अण्डे से उत्पन्न होने वाला	अण्डज
जिसका कहीं भी अन्त न हो (2018)	अनन्त
किसी के पीछे आँख मूँदकर चलना	अन्धानुकरण
प्रतियोगिता, जिसमें पहले पढ़े हुए पद्य के अन्तिम अक्षर से आरम्भ होने वाला पद्य प्रतियोगी दल को पढ़ना होता है	अन्त्याक्षरी
धरती-आकाश के बीच का स्थान (2009, 17)	अन्तरिक्ष
जिसे तर्क/प्रमाण से काटा न जा सके	अकाट्य
जो इन्द्रियों द्वारा न समझा जा सके या जिसे नेत्रों द्वारा देखा व समझा न जा सके (2014)	अगोचर
जो कहा न जा सके (2011)	अकथनीय
जिसकी तुलना न हो सके (2009, 17)	अतुलनीय
जिसकी कल्पना न की जा सके (2012, 14, 18)	अकल्पनीय
जो खाने योग्य नहीं हो	अखाद्य
सबसे पहले गिना जाने वाला	अग्रगण्य
पहले उत्पन्न होने वाला	अग्रज
बाद में उत्पन्न होने वाला	अनुज
स्त्री जो अभिनय करती हो (2009, 15)	अभिनेत्री
जो सबसे आगे रहे	अग्रणी
जो कभी बूढ़ा न हो	अजर
जिसके शत्रु का जन्म ही न हुआ हो (2010, 12, 16)	अजातशत्रु
जिसे कोई जीत ही न सके (2011, 12)	अजेय
जिसे जाना न जा सके (2010, 13, 17)	अज्ञेय
जो अपने स्थान से डिगे नहीं	अडिग
वर्षा का बिल्कुल न होना	अनावृष्टि
किसी बात को बढ़ा-चढ़ाकर कहना	अतिशयोक्ति
जिसका इन्द्रियों से अनुभव न हो सके	अतीन्द्रिय
जिसका चिन्तन न किया जा सके (2011)	अचिन्त्य
जो व्यक्ति जन्म न ले (2010)	अजन्मा
जिस पद्य के अन्त में तुक न मिले	अतुकान्त
जिसके समान दूसरा न हो (2012, 17, 18)	अद्वितीय
जो देखने योग्य न हो	अदर्शनीय
जो आँखों से दिखाई न दे (2010, 12)	अदृश्य
शुभकार्य को विधि-विधान से करना	अनुष्ठान
जिसको माता-पिता का आश्रय न मिला हो *या* जिसका कोई पालन-पोषण करने वाला न हो (2013) *या* जिसका कोई दूसरा न हो (2018)	अनाथ
जो दूर की बात न सोच सके (2013)	अदूरदर्शी
जो एक-दूसरे पर आश्रित हो (2013)	अन्योन्याश्रित
जिसका अनुभव किया गया हो (2013)	अनुभूत
जिसका आदर न किया गया हो	अनादृत
जिसे रोका न गया हो	अनिरुद्ध
जिसका निर्देश न किया गया हो	अनिर्दिष्ट
जिसका मन किसी दूसरी ओर लगा हो (2017)	
जो वचन से परे हो/ जिसका वचन का वाणी द्वारा वर्णन न किया जा सके (2016)	अनिर्वचनीय
जो उत्तीर्ण न हुआ हो (2009)	अनुत्तीर्ण
विशेष कार्य हेतु दिया जाने वाला शासकीय आर्थिक अनुदान	सहायता
किसी का अनुसरण करने वाला/वाले	अनुयायी
किसी प्रस्ताव का समर्थन करने की क्रिया	अनुमोदन
आधा दिन (दोपहर) बीतने के बाद का समय (2016)	अपराह्न
जिसका अनुवाद किया गया हो	अनूदित
जिसकी आशा न की गयी हो (2010, 17)	अप्रत्याशित
जो सदा से चला आ रहा हो	अनित्य
जिस पर विश्वास न किया जा सके (2010)	अविश्वसनीय
जिसे भुलाया न जा सके/सदा स्मरण रखने योग्य (2014)	अविस्मरणीय
जिस पर अभियोग लगाया गया हो	अभियुक्त
अभिनय करने वाला व्यक्ति	अभिनेता
जो नायिका प्रियमिलन के लिए स्वयं जाये	अभिसारिका
किसी कार्य को बार-बार करना	अभ्यास
जो कभी न मरता हो	अमर
जिसकी कोई कीमत न हो	अमूल्य
कभी निष्फल न होने वाला	अमोघ
जिसका ज्ञान अत्यन्त कम हो/थोड़ा जानने वाला (2009, 11, 16, 17)	अल्पज्ञ
बहुत कम बोलने वाला (2015, 18)	अल्पभाषी
जिसका वर्णन न हो सके (2017, 18)	अवर्णनीय
जो बाँटा न जा सके (2015)	अविभाज्य
भला-बुरा समझने की शक्ति न होना	अविवेक
जिसका विवाह न हुआ हो/जो परिणय सूत्र में न बँधा हो (2012)	अविवाहित
बिना वेतन लिये काम करने वाला	अवैतनिक
संविधान/नियम के विरुद्ध	असंवैधानिक/अवैध
जिसका कोई स्वामी या रक्षक न हो	असहाय/अशरण
ऐसा, रोग जिसका इलाज सम्भव न हो	असाध्य
फेंककर चलाया जाने वाला हथियार (2015)	अस्त्र
किसी प्राणी को हानि न पहुँचाना	अहिंसा
ईश्वर या उसकी शक्ति का जन्म ग्रहण करना	अवतार
जिसके आगमन की तिथि निश्चित न हो (2009, 11, 14, 15)	अतिथि
जो पहले कभी न हुआ हो	अभूतपूर्व
जिसकी उपमा न दी जा सके (2015, 17)	अनुपम/अनुपमेय
जो कम खाता हो	अल्पाहारी
जिसकी सीमा न हो (2011, 12, 16)	असीम
जिसमें कुछ भी करने की क्षमता न हो	अक्षम
जो मापा न जा सके (2013)	अमापनीय
जिसमें आसक्ति न हो	अनासक्त
जिसके बिना काम न चल सके (2016)	अनिवार्य
व्यर्थ ही व्यय करने वाला व्यक्ति	अपव्ययी
जिसका नाश न हो	अनश्वर
पीछे-पीछे चलने वाला (2009, 13)	अनुगामी
जिसका उच्चारण न किया गया हो (2014)	अनुच्चरित
भोजन ग्रहण न करना	अनशन
अवसर के अनुसार कार्य/बात करने वाला व्यक्ति (2012)	अवसरवादी
नीचे उतरने की क्रिया	अवरोहण
जिसे सहन न किया जा सके (2011)	असहनीय
जो नहीं हो सकता	असम्भव
जो दबाया न जा सके	अदम्य
किसी वस्तु को प्राप्त करने की उत्कट अभिलाषा या इच्छा (2018)	अभीप्सा
जिसे मारना उचित न हो	अवध्य
जिस पर सन्देह न हो सके	असंदिग्ध
जिसका अपहरण कर लिया गया हो	अपहृत
जिसके पास कुछ न हो	अकिंचन

वाक्यांश (शब्द-समूह)	एक शब्द
जिसे आँखों से न देखा गया हो (2016)	अदृष्ट
जो शोक करने योग्य नहीं है (2016)	अशोच्य
जो कहा न जा सके (2011, 15)	अकथनीय
बिना पलक झपकाए हुए (2015)	अपलक
जिसको क्षमा न किया जा सके। (2015)	अक्षम्य
आकाश में उड़ने वाला जीव	आकाशचारी
अचानक हो जाने वाला	आकस्मिक
जिसकी बाँहें घुटनों तक हो (2016)	आजानुबाहु
पैर से सिर तक (2011, 17)	आपादमस्तक
लेखक द्वारा लिखित अपनी जीवनी या अपने जीवन का स्वलिखित इतिहास (2013)	आत्मकथा
अपनी हत्या आप करने वाला व्यक्ति	आत्मघाती
अपने आपको धोखा देने वाला (2014, 16)	आत्मवंचक
किसी वस्तु/व्यक्ति का गुण-दोष विवेचन	आलोचना
विदेशों से बड़ी मात्रा में माल मँगवाने वाला	आयातक
जो एकदम नयी चीज बनाये	आविष्कारक
ईश्वर (वेदों) में विश्वास रखने वाला व्यक्ति (2013, 16)	आस्तिक
आशा से अधिक (2015)	आशातीत
किसी बात पर बार-बार जोर देना (2015, 18)	आग्रह
जिस पर हमला किया गया हो	आक्रान्त
आदि (प्रारम्भ) से अन्त तक (2014)	आद्योपान्त/आद्यन्त
आराधना किये जाने योग्य	आराध्य
रोगहीन होने की स्थिति	आरोग्य
आवेदन करने वाला व्यक्ति/प्रार्थना-पत्र भेजने वाला	आवेदक
ऊपर चढ़ने की क्रिया	आरोहण
किसी पात्र आदि के अन्दर का स्थान, जिसमें कोई चीज आ सके (2016)	आयतन
बालक से बूढ़े तक सभी	आबालवृद्ध
किसी को ऐसी तसल्ली देना, कि वह चैन की साँस ले सके	आश्वासन
तत्काल कविता करने वाला	आशुकवि
प्राय: वर्षा ऋतु में आकाश में दिखाई देने वाले सात रंगों वाले धनुष। (2017)	इन्द्रधनुष
पूर्व और उत्तर के बीच की दिशा	ईशान
दूसरों की उन्नति से जलने वाला व्यक्ति	ईर्ष्यालु
जिस वस्तु की इच्छा हो (2014)	इच्छित
इतिहास का विशेषज्ञ	इतिहासज्ञ
जिसने अपना ऋण उतार लिया हो (2009)	उऋण
जिसका स्वभाव उदार हो	उदारचेता
पहाड़ के नीचे की समतल भूमि	उपत्यका
जल और भू पर समान रूप से चलने वाला (2014)	उभयचर
आकाश से किसी पिण्ड का जलते हुए गिरना	उल्कापात
खाने के बाद बचा जूठा भोजन (2010)	उच्छिष्ट
बहुत अधिक परिश्रमी व लगनशील व्यक्ति	उद्यमी
जिसका उल्लेख किया गया हो	उल्लिखित
ऊपर कहा हुआ (2013)	उपर्युक्त
जिस भूमि में कुछ उत्पन्न न होता हो	ऊसर
जिस भूमि में बहुत अन्न उत्पन्न होता हो	उर्वरा
सूर्य निकलने का स्थान	उदयाचल
जिस पर उपकार किया गया हो	उपकृत
जो इच्छा के अधीन हो (2014, 16)	ऐच्छिक
जिसका चित्त एक जगह स्थिर हो	एकाग्रचित्त
जिसका एकमात्र अधिकार हो या जिस पर किसी अन्य को कुछ अधिकार न हो (2014)	एकाधिकार
इतिहास से सम्बन्ध रखने वाले तथ्य (2018)	ऐतिहासिक

वाक्यांश (शब्द-समूह)	एक शब्द
जो बात लोगों से सुनी गयी है	किंवदन्ति
जो फूल न खिला हो (2016)	कली
जो स्त्री कविता लिखती हो (2009, 16)	कवयित्री
सारे शरीर की हड्डियों का ढाँचा। (2017)	कंकाल
उच्च कुल में उत्पन्न या सम्बन्धित (2008)	कुलीन
बहुत तेज बुद्धि वाला (2014, 17)	कुशाग्रबुद्धि
जिसे अपने कर्त्तव्य का बोध न हो	कर्त्तव्यविमूढ़
कर्त्तव्य और अकर्त्तव्य के निर्णय में असमर्थ (2012)	किंकर्त्तव्यविमूढ़
उपकार को मानने वाला (2009, 13, 14)	कृतज्ञ
उपकार को न मानने वाला (2012, 18) या जो अपने प्रति की गई भलाई को न माने (2018)	कृतघ्न
जिसकी कल्पना की जा सके	कल्पनीय
जो धन खर्च न करे	कृपण/कंजूस
जिसे क्षमा किया जा सके (2016)	क्षम्य
जो बहुत कृशकाय हो	क्षीणकाय
धरती और आकाश के बीच का स्थान (2012) या वह स्थान जहाँ पृथ्वी और आकाश मिलते से दिखाई देते हैं	क्षितिज
जो मोल ले लिया गया हो	क्रीत
जिसका कार्य पूरा हो गया हो	कृतार्थ
जिसने काल पर विजय पायी हो	कालजयी
महीने का वह भाग, जब रात्रि में अँधेरा रहता है	कृष्ण पक्ष
क्षण में नष्ट होने वाला/थोड़ी देर में नष्ट हो जाने वाला (2017)	क्षणिक
तोड़कर टुकड़े-टुकड़े किया हुआ (2009)	खण्डित
आकाश में विचरण करने वाला	खेचर
गंजे सिर वाला	खल्वाट
ऐसा प्रबन्धकाव्य, जिसमें जीवन का आंशिक वर्णन हो	खण्डकाव्य
आकाश को छूने वाला (2013)	गगनचुम्बी/गगनस्पर्शी
जिसका अनुभव इन्द्रियों से सम्भव हो	गोचर
संध्या और रात्रि के बीच का समय	गोधूलि
छिपाने के योग्य	गोपनीय
जहाँ तक जाना है	गन्तव्य
ग्रहण करने योग्य	ग्राह्य
गदा धारण करने वाला	गदाधर
गद्य-पद्यमय साहित्य रचना (2016)	चम्पूकाव्य
चन्द्रमा के समान मुख वाली	चन्द्रमुखी
जिसके चार मुख हों	चतुरानन/चतुर्मुख
जिसके चार पैर हों (2017)	चतुष्पद
जिसकी चार भुजाएँ हों	चतुर्भुज
जिसके हाथ में चक्र हो	चक्रपाणि
आँखों से सुनने वाला	चक्षुश्रवा
चित्र बनाने वाला व्यक्ति	चित्रकार
जिस पर चिह्न लगाया गया हो (2014)	चिह्नित
किसी को सावधान करने के लिए कही जाने वाली बात (2016)	चेतावनी
बरसात के चार महीने	चातुर्मास
करुण स्वर में चिल्लाने की ध्वनि	चीत्कार
छिप-छिपकर हमला करने वाला	छापामार
सेना के रहने का स्थान (2015)	छावनी
जहाँ छात्र निवास करते हों	छात्रावास
सर्वसाधारण से सम्बन्धित (2017)	सार्वजनिक
नकली वेश धारण करने वाला	छद्मवेशी
छोटे-से-छोटे दोष की खोज करने वाला (2013, 16)	छिद्रान्वेषी
दूसरों के दोषों को ढूँढ़ने वाला (2017)	छिद्रान्वेषी
जल से जन्म लेने वाला	जलज
पेट के अन्दर रहने वाली आग	जठराग्नि/जठरानल

वाक्यांश (शब्द-समूह)	एक शब्द
जनता द्वारा संचालित शासन (2013)	जनतन्त्र
जल में रहने वाले जीव-जन्तु	जलचर
किसी बात को जानने की इच्छा *या* किसी वस्तु को देखने अथवा सुनने की प्रबल इच्छा (2013,16)	जिज्ञासा
जानने की इच्छा रखने वाला (2014, 16)	जिज्ञासु
जिसने इन्द्रियों को जीत लिया हो (2010,11)	जितेन्द्रिय
जीवित रहने की उत्कट इच्छा (2012, 13, 14, 17)	जिजीविषा
ऐसा पहाड़, जिससे आग-धुआँ आदि निकले	ज्वालामुखी
जो सब-कुछ जानता हो (2016)	ज्ञानमय
छोटे कद का आदमी	ठिगना
जो किसी का पक्ष न ले (2016, 18)	तटस्थ/निष्पक्ष
चोरी का माल लाने-ले जाने वाला	तस्कर
पद या सेवा से मुक्ति पाने के लिए लिखा गया पत्र	त्यागपत्र
तीनों कालों की बात जानने वाला व्यक्ति	त्रिकालज्ञ
तीनों युगों में होने वाला	त्रियुगी
तीनों लोकों का समूह	त्रिलोक
तीन नदियों का संगम	त्रिवेणी
वह व्यक्ति जो अपने ऋणों को चुकता करने में असमर्थ हो गया है (2014)	दिवालिया
अनुचित बात के लिए आग्रह (2014, 18)	दुराग्रह
जिस पर आक्रमण न हो सके (2014)	दुराक्रम्य
गोद लिया हुआ पुत्र (2014, 18)	दत्तक
जहाँ पहुँचना कठिन हो (2013, 15)	दुर्गम
जिसे प्राप्त करना कठिन हो (2013, 16)	दुर्लभ
जो कठिनता से समझ में आये *या* जाना जाये (2013)	दुर्ज्ञेय
जिसका दमन करना कठिन हो (2012, 17)	दुर्दमनीय
जंगल की अग्नि	दावानल
जिसे दान करने की इच्छा हो (2013)	दानशील
दूसरे के बच्चे का पालन-पोषण करने वाली (2016)	धाय
युवती जिसका विवाह शीघ्र ही हो गया हो	नवोढ़ा
जो ईश्वर में विश्वास नहीं करता (2008, 11, 18)	नास्तिक
जिसने कोई अपराध न किया हो (2012, 18)	निरपराध
जहाँ कोई मनुष्य न रहता हो (2012)	निर्जन
जिसका कोई आकार न हो (2009, 11)	निराकार
जिसकी उपमा न दी जा सके	निरुपम
बिना पलक झपकाये हुए	निर्निमेष
निन्दा करने योग्य/जो निन्दा के योग्य हो (2016)	निन्दनीय
नीति को जानने व समझने वाला (2018)	नीतिज्ञ
जो नष्ट होने वाला हो (2014, 15)	नश्वर
जिसके हृदय में ममता न हो (2014, 15)	निर्मम
पिता की हत्या करने वाला	पितृहन्ता
पीने की इच्छा रखने वाला *या* पानी पीने का इच्छुक (2013)	पिपासु
जो व्यक्ति पत्र ले जाता हो (2010)	पत्रवाहक
जो दूसरों पर उपकार करता हो (2011)	परोपकारी
दूसरों पर आश्रित रहने वाला (2012, 16, 18)	पराश्रित
पैरों से जल पीने वाला (2015)	पादप
पृथ्वी से सम्बन्धित (2014)	पार्थिव
जिसके आर-पार देखा जा सके (2009, 13, 18)	पारदर्शी
पूर्णिमा की रात्रि	पूर्णमासी
जो अपने आचरण/अन्तःकरण से पवित्र हो (2015)	पूतात्मा
जो आँखों के सामने न हो	परोक्ष
जो क्रमबद्ध इतिहास लिखे जाने के युग से पूर्व का हो (2013)	प्रागैतिहासिक
रास्ता दिखाने वाला (2017)	पथ-प्रदर्शन

वाक्यांश (शब्द-समूह)	एक शब्द
जो केवल फल खाकर रहता हो (2012)	फलाहारी
जहाँ से अनेक मार्ग चारों ओर जाते हों (2013)	बहुमार्गी
जो भूखा हो *या* खाने की इच्छा (2018)	बुभुक्षु
संयम से और कम बोलने वाला (2013)	मितभाषी
कम खाने वाला व्यक्ति (2012)	मितभोजी
संयम से और कम खर्च करने वाला (2009, 11, 12, 18)	मितव्ययी
जिसका मूल्य बहुत अधिक हो	मूल्यवान
जो मोक्ष चाहता है (2012)	मुमुक्षु
किसी बात का गूढ़ रहस्य जानने वाला (2015)	मर्मज्ञ
जो मृत्यु के समीप हो (2014)	मरणासन्न
दोपहर का समय (2018)	मध्याह्न
जो एक जगह से दूसरी जगह घूमता रहे	यायावर
जो युद्ध में स्थिर हो (2012)	युधिष्ठिर
राज्य के प्रधान शासक द्वारा दिया या निकाला गया आदेश (2017)	राज्यादेश
रात्रि में विचरण करने वाला (2016)	रात्रिचर
किसी बात को लिख देना (2009)	लिखित
जनसाधारण के गीत (2015)	लोकगीत
जो वन्दना करने योग्य हो (2015, 18)	वन्दनीय
जिस महिला की कोई सन्तान न हो (2010)	वन्ध्या
जो व्यर्थ ही अधिक बोलता हो (2009, 11, 13, 14)	वाचाल
विश्वास करने योग्य (2009)	विश्वसनीय
पुरुष जिसका विवाह हुआ हो (2009)	विवाहित
जिसका वचन या वाणी के द्वारा वर्णन न किया जा सके (2013)	वर्णनातीत
वह स्त्री जिसका पति मर गया हो (2010, 13) *या* जिसका पति जीवित न हो	विधवा
वह पुरुष जिसकी पत्नी मर गयी हो (2011, 12,,18)	विधुर
विदेश में रहने वाला (2017, 18)	विदेशी
जिसके भीतर की हवा का तापमान समस्थिति में रखा गया हो (2016)	वातानुकूलित
विष्णु की उपासना करने वाला (2009)	वैष्णव
जो विधान द्वारा मान्य हो (2018)	वैधानिक
जो शक्ति का उपासक हो	शाक्त
जो शास्त्र जानता है (2015)	शास्त्रज्ञ
सदैव रहने वाला (2015)	शाश्वत
श्रद्धा करने योग्य	श्रद्धेय
सौ वर्ष का समय	शताब्दी
शरण में आया हुआ व्यक्ति (2007, 14)	शरणागत
सौ वर्ष की आयु पूरी करने वाला (2016)	शतायु
शिष्टाचारवश किया गया कार्य (2008, 15)	शिष्टाचार
जिसका शोषण किया गया हो (2012)	शोषित
ईश्वर को साकार मानने वाला भक्त	सगुणोपासक
अभी-अभी स्नान किया हुआ/की हुई (2009)	सद्यःस्नात/सद्यःस्नाता
जिसका पति जीवित हो (2009)	सधवा
जो आसानी से मिल सके (2009)	सुलभ
एक ही माता के उदर से उत्पन्न हुए हों	सहोदर
जो अपने आचरण से पवित्र हो	सदाचारी
जो संगीत जानता हो (2018)	संगीतज्ञ
किसी बात को पंजिका में चढ़ाना	सूचीबद्ध
जो सब कुछ जानता हो	सर्वज्ञ
स्वयं उत्पन्न होने वाला	स्वयम्भू
जो पढ़ना-लिखना जानता हो (2014)	साक्षर
गाय जिसके साथ बछड़ा हो (2010)	सवत्सा
सदा सत्य बोलने वाला (2009, 17)	सत्यवादी

वाक्यांश (शब्द-समूह)	एक शब्द
जो पत्र-पत्रिकाओं का सम्पादन करता हो (2009)	सम्पादक
जो कार्य प्रयासपूर्वक हो	सप्रयास
जो सबका प्यारा हो (2011)	सर्वप्रिय
जिसमें सबकी सम्मति हो (2012)	सर्वसम्मत
जिसमें सहने की शक्ति हो (2014)	सहनशील
समान आयु वाला (2014)	समवयस्क
जिसका अन्त सुखमय हो (2015)	सुखान्त
किसी दूसरे के स्थान पर काम करने वाला (2016, 18)	स्थानापन्न

अथवा

प्रश्न— निम्नलिखित वाक्यांशों के लिए एक 'शब्द' का चयन करके लिखिए—

[**संकेत**—*सही विकल्प मोटे काले अक्षरों में छापे गये हैं।*]

1. सबसे पहले गिना जाने वाला—
   (क) अग्रगण्य (ख) गण्य (ग) अनन्त (घ) अनगिनत
2. जिसका कोई शत्रु न हो—
   (क) अजन्मा **(ख) अजातशत्रु** (ग) शत्रुघ्न (घ) जातशत्रु
3. जिसके आगमन की तिथि निश्चित न हो—
   (क) अग्रणी (ख) कवि **(ग) अतिथि** (घ) कायर
4. बहुत तेज बुद्धि वाला—
   (क) कुलीन (ख) कृतज्ञ
   (ग) चतुर **(घ) कुशाग्रबुद्धि**
5. जिसके आर-पार देखा जा सके—
   (क) अगोचर **(ख) पारदर्शी** (ग) पार्थिव (घ) गोचर
6. जिसे अपने कर्त्तव्य का बोध न हो—
   (क) कुशाग्रबुद्धि **(ख) कर्त्तव्यविमूढ़**
   (ग) कृतज्ञ (घ) किंकर्त्तव्यविमूढ़

(घ) वाक्य संशोधन

प्रश्न— निम्नलिखित में से किन्हीं दो वाक्यों को शुद्ध करके लिखिए—

अशुद्ध	शुद्ध
1. महादेवी वर्मा हिन्दी की प्रहसिद्ध कवित्री हैं। (2013)	महादेवी वर्मा हिन्दी की प्रसिद्ध कवयित्री हैं।
2. रेल दुर्घटना में अनेकों यात्री घायल हो गये।	रेल दुर्घटना में बहुत-से यात्री घायल हो गये।
3. आठ उ० प्र० परिवहन विभाग के कर्मचारी निलम्बित किए गए।	उ० प्र० परिवहन विभाग के आठ कर्मचारी निलम्बित किये गये।
4. मैं तुमसे रविवार के दिन मिलूँगा। (2013)	मैं तुमसे रविवार को मिलूँगा।
5. लड़का मिठाई लेकर भागता हुआ घर आया।	मिठाई लेकर लड़का भागता हुआ घर आया।
6. अपनी-अपनी पुस्तकें लाओ।	अपनी-अपनी पुस्तक लाओ।
7. राम और सीता वन को गई।	राम और सीता वन गये।
8. अहिल्या शिला से स्त्री बन गयी।	अहल्या शिला से स्त्री हो गयी।
9. अपराधी और निरपराधी का अन्तर करना कठिन है।	अपराधी और निरपराधी में अन्तर करना कठिन है।
10. मैंने यह बात उनके द्वारा सुनी थी।	मैंने यह बात उनके मुँह से सुनी थी।
11. इस पुस्तक का मूल्य केवल दस रुपये मात्र है।	इस पुस्तक का मूल्य मात्र दस रुपये है।
12. हरि ने घर गया और सूचना दी।	हरि ने घर पहुँचकर सूचना दी।
13. उपरोक्त कथन से हम सहमत हूँ।	उपर्युक्त कथन से मैं सहमत हूँ।
14. बाघ और बकरी एक साथ नहीं रहता।	बाघ और बकरी एक साथ नहीं रहते।
15. कृपया मेरी प्रार्थना स्वीकार करने की कृपा करें।	कृपया मेरी प्रार्थना स्वीकार करें।
16. भारत की आज वर्तमान स्थिति ठीक नहीं है।	भारत की वर्तमान स्थिति ठीक नहीं है।
17. गोदान प्रेमचन्द की एक श्रेष्ठ उपन्यास है।	गोदान प्रेमचन्द का एक श्रेष्ठ उपन्यास है।
18. साहित्य और जीवन का घोर सम्बन्ध है। (2013)	साहित्य और जीवन का घनिष्ठ सम्बन्ध है।
19. कई रेलवे के कर्मचारी निलम्बित किए गए।	रेलवे के कई कर्मचारी निलम्बित किये गये।
20. महात्मा गांधी देश के पूज्यनीय नेता थे।	महात्मा गांधी देश के पूजनीय नेता थे।
21. मेरे पास मात्र केवल पाँच रुपये हैं।	मेरे पास मात्र पाँच रुपये हैं।
22. मैंने अनेकों महापुरुषों के दर्शन किये हैं।	मैंने अनेक महापुरुषों के दर्शन किये हैं।
23. कृपया यहाँ बैठने की कृपा कीजिए।	कृपया यहाँ बैठिए।
24. मैंने यह बात उनके द्वारा सुनी थी।	मैंने यह बात उससे सुनी थी।
25. प्रद्युम्न, गौरव और आशुतोष आएगा।	प्रद्युम्न, गौरव और आशुतोष आएँगे।
26. उसके कोई सन्तान न था।	उसके कोई सन्तान न थी।
27. कृपया करके मेरे घर पधारिए।	कृपया मेरे घर पधारिए।
28. विद्यालय की चाहारदीवाल टूटा है।	विद्यालय की चहारदीवारी टूटी है।
29. कल वह परीक्षा में नहीं बैठा।	वह कल की परीक्षा में नहीं बैठा था।
30. सज्जन पुरुष सबका भला चाहते हैं। (2013)	सज्जन सबका भला चाहते हैं।
31. सोहन, राम से मंगलवार के दिन मिलेगा।	सोहन राम से मंगलवार को मिलेगा।
32. एक ठण्डा गिलास पानी लाओ।	एक गिलास ठण्डा पानी लाओ।
33. यह कार्य मैं स्वयं अपने आप करूँगा।	यह कार्य मैं स्वयं करूँगा।
34. मानव जीवन में अध्यात्मिक चेतना महत्त्वपूर्ण होता है। (2012)	मानव-जीवन में आध्यात्मिक चेतना महत्त्वपूर्ण होती है।
35. जहाँ नारियों का पूजा होता है, वहाँ देवता निवास करते हैं। (2012)	जहाँ नारियों की पूजा होती है, वहाँ देवता निवास करते हैं।
36. गुलाब का फूल लाल रंग का होता है। (2012)	गुलाब लाल रंग का होता है।
37. मैं स्वयं अपने आप आपके पास आ रहा हूँ। (2012)	मैं स्वयं आपके पास आ रहा हूँ।
38. मोहन अगले सोमवार को वाराणसी गया। (2012)	मोहन अगले सोमवार को वाराणसी जाएगा।
39. आपका भविष्य उज्जवल हो। (2012)	आपका भविष्य उज्ज्वल हो!
40. उस बेचारे के शरीर पर केवल वस्त्र मात्र बचे थे। (2012)	उस बेचारे के शरीर पर वस्त्र मात्र बचे थे।
41. वह परिश्रम करता है लेकिन फिर भी पास नहीं होता। (2012)	वह परिश्रम करता है, फिर भी पास नहीं होता।

2014 की परीक्षा में पूछे गये वाक्य

42. गम्भीर व्यक्ति के मान की थाह का पता नहीं चलता।	गम्भीर व्यक्ति के मान का पता नहीं चलता।
43. यह मेरा मित्र है, यह मेरे साथ रहता है।	यह मेरा मित्र मेरे साथ रहता है।
44. आप को दवा लेना चाहिए।	आपको दवा लेनी चाहिए।
45. आपकी कृपा-पत्र मिला।	आपका कृपा-पत्र मिला।
46. मैं यह पुस्तक पढ़ा हूँ।	मैंने यह पुस्तक पढ़ी है।
47. सौ रुपया प्राप्त हुआ।	सौ रुपये प्राप्त हुए।
48. वह दंड देने योग्य है।	उसको दंड देना चाहिए।
49. तुम्हें क्षमा माँगना चाहिए।	तुम्हें क्षमा माँगनी चाहिएं।
50. मैं स्वामी जी का दर्शन करूँगा।	मैं स्वामी जी के दर्शन करूँगा।
51. मुझे भारी दु:ख हुआ।	मुझे अत्यधिक दु:ख हुआ।
52. वह विलाप करके रोने लगा।	वह विलाप करने लगा।
53. आज मैं प्रात:काल के समय वहाँ गया।	आज मैं प्रात:काल वहाँ गया।
54. प्रगल्भ को माता-पिता का आर्शीवाद मिला। (2017)	प्रगल्भ को माता-पिता का आशीर्वाद मिला।

अशुद्ध	शुद्ध
55. मेरे को पुस्तक चाहिए।	मुझको पुस्तक चाहिए।
56. वृक्षों पर कोयल बैठी है।	वृक्ष पर कोयल बैठी है।
57. हवा ठंडी बह रही है।	ठण्डी हवा बह रही है।
58. मुझे दो दिन का अवकाश देकर अनुग्रहित करें।	मुझे दो दिन का अवकाश देकर अनुग्रहीत करें।
59. कौन में दोष नहीं होता?	किसमें दोष नहीं होता?
60. एक विश्वविद्यालय का कर्मचारी गिरफ्तार हो गया।	विश्वविद्यालय का एक कर्मचारी गिरफ्तार हो गया।
61. माँ की आज्ञा के अनुकूल वह सो गया।	माँ की आज्ञा के अनुसार वह सो गया।
62. तुम्हारी सौजन्यता प्रशंसनीय है। (2017)	तुम्हारा सौजन्य प्रशंसनीय है।
63. उन्हें मृत्युदण्ड की सजा दी है।	उन्हें मृत्युदण्ड दिया गया है।
64. मुझसे यह काम सम्भव नहीं हो सकता।	मुझसे यह काम नहीं हो सकता।
65. रामायण का टीका मैंने पढ़ी।	मैंने रामायण की टीका पढ़ी।
66. उस पतिव्रता स्त्री को छूने का उत्साह कौन करेगा।	उस पतिव्रता स्त्री को छूने का दुस्साहस कौन करेगा।

2015 की परीक्षा में पूछे गये वाक्य

67. प्रत्यूष का भविष्य उज्जवल हो।	प्रत्यूष का भविष्य उज्ज्वल हो।
68. पद्मा बहुत बुद्धिमान शिक्षिका हैं।	पद्मा बहुत बुद्धिमान शिक्षिका है।
69. मेरे को अभी जाना है। (2017)	मुझे अभी जाना है।
70. तुलसीदास ने अनेकों ग्रंथ लिखे।	तुलसीदास ने अनेक ग्रंथ लिखे।
71. कामायनी एक उच्चकोटी का काव्य है।	कामायनी एक उच्चकोटि का काव्य है।
72. संतोस का फल मीठा होता है।	संतोष का फल मीठा होता है।
73. ईश्वर सबका भाग विधाता है।	ईश्वर सबका भाग्यविधाता है।
74. आपका स्वास्थ कैसा है?	आपका स्वास्थ्य कैसा है?
75. भारत समृद्धशाली देश है।	भारत समृद्ध देश है।
76. बाजार से आईना लाओ।	आईना बाजार से लाओ।
77. अनुशासनहीनता एक गहरी समस्या है।	अनुशासनहीनता एक गम्भीर समस्या है।
78. मेरे लिए गणित कठोर विषय है।	मेरे लिए गणित कठिन विषय है।
79. महादेवी वर्मा विद्वान कवयित्री थीं।	महादेवी वर्मा विदुषी कवयित्री थीं।
80. आज सभा में अनेकों नेताओं के भाषण हुए।	आज सभा में अनेक नेताओं के भाषण हुए।
81. मैं लड़के को पढ़ाया हूँ। (2017)	मैं लड़के को पढ़ाता हूँ।
82. इन बातों से तेरेको क्या लेना-देना। (2017)	इन बातों से आपको क्या लेना-देना।
83. वहाँ चेचक के खतरे का डर है।	वहाँ चेचक का डर है।
84. मैंने भगवद्गीता पढ़ा है।	मैंने भगवद्गीता पढ़ी है।
85. अनेकों बार देख चुका हूँ।	अनेक बार देख चुका हूँ।
86. हमारी शिक्षिका विद्वान हैं।	हमारी शिक्षिका विदुषी हैं।
87. मैं स्वामी जी का दर्शन करूँगा।	मैं स्वामी जी के दर्शन करूँगा।
88. वह लोग इधर क्यों आएँगे।	वे लोग इधर क्यों आएँगे।
89. वह गत सप्ताह ही जाएगा।	वह अगले सप्ताह ही जाएगा।
90. मानव ईश्वर की सबसे उत्कृष्टतम कृति है।	मानव ईश्वर की सबसे उत्कृष्ट कृति है।
91. वे सन्तान को लेकर दु:खी थे।	वे सन्तान से दु:खी थे।
92. विगत वर्षों में अनेकों यन्त्रों का आविष्कार हुआ	विगत वर्षों में अनेक यन्त्रों का आविष्कार हुआ।
93. वह जल से स्नान कर रहा है।	वह स्नान कर रहा है।

2016 की परीक्षा में पूछे गये वाक्य

94. कृष्णा और राधा नृत्य कर रहे हैं।	राधा और कृष्णा नृत्य कर रहे हैं।
95. चाँटा लगते ही उसका आँसू निकल पड़ा।	चाँटा लगते ही उसके आँसू निकल पड़े।
96. मैं कलम के साथ लिखता हूँ।	मैं कलम से लिखता हूँ।
97. तुम बच्चों को कहानी सुनाया कर।	तुम बच्चों को कहानी सुनाया करो।
98. प्रज्ञा गुणवान् स्त्री है।	प्रज्ञा गुणवती स्त्री है।
99. उन्होंने मेरे समक्ष हाथ जोड़ा।	उन्होंने मेरे समक्ष हाथ जोड़े।
100. मैं उसकी चातुर्यता से दंग रह गया।	मैं उसकी चतुराई से दंग रह गया।
101. ठण्डा घड़े का पानी पिलाइए।	घड़े का ठण्डा पानी पिलाइए।
102. डाल में चिड़िया बैठी है।	डाल पर चिड़िया बैठी है।
103. हिमालय पर्वत सबसे ऊँचा पर्वत है। (2014, 15)	हिमालय सबसे ऊँचा पर्वत है।

अशुद्ध	शुद्ध
104. तुम चोरी के कारण दण्ड के योग्य है।	चोरी के कारण तुम दण्ड के योग्य हो।
105. उसे मृत्युदण्ड की सजा मिली।	उसे मृत्युदण्ड मिला।
106. ईश्वर के अनेकों रूप है।	ईश्वर के अनेक रूप हैं।
107. वह कुर्सी में बैठा है।	वह कुर्सी पर बैठा है।
108. पहली अप्रैल से नया सत्र शुरू हुआ।	नया सत्र पहली अप्रैल से शुरू हुआ।
109. प्रद्युम्नराज लब्धप्रतिष्ठित अध्यापक हैं।	प्रद्युम्नराज प्रख्यात अध्यापक हैं।
110. किंजल्क अनेक विषय के ज्ञाता हैं।	किंजल्क अनेक विषयों के ज्ञाता हैं।
111. मैं केवल इतना ही चाहता हूँ।	केवल मैं इतना ही चाहता हूँ।
112. तुम्हें क्षमा माँगना चाहिए।	तुम्हें क्षमा माँगनी चाहिए।
113. मैं स्वामी जी का दर्शन करूँगा।	मैं स्वामी जी के दर्शन करूँगा।
114. मैं अभी गृहकार्य कर लूँगा।	मैं अभी गृहकार्य करूँगा।
115. हम सब छत में खेलेंगे।	हम सब छत पर खेलेंगे।
116. यह काम चार आदमी का है।	यह काम चार आदमियों का है।
117. साहित्य और जीवन का घोर सम्बन्ध है।	साहित्य और जीवन का घनिष्ठ सम्बन्ध है।
118. मुझे उपरोक्त नियम स्वीकार है।	मुझे उपर्युक्त नियम स्वीकार है।
119. छात्रों ने मन्त्री जी को एक फूलों की माला पहनाई।	छात्रों ने मन्त्री जी को फूलों की माला पहनाई।
120. मैंने झूठ बोला।	मैंने झूठ कहा।

2017 की परीक्षा में पूछे गये वाक्य

121. लक्ष्मीबाई वीर महिला थी।	लक्ष्मीबाई वीरांगना थी।
122. अध्यापक कक्षा में पढ़ा रहा है।	अध्यापक कक्षा में पढ़ा रहे हैं।
123. मैं भोजन कर लिया हूँ।	मैंने भोजन कर लिया है।
124. एक पुरुष और एक स्त्री जा रही है।	एक पुरुष और एक स्त्री जा रहे हैं।
125. मुझे भारी दु:ख हुआ।	मुझे अत्यधिक दु:ख हुआ।
126. गीता कितनी मधुर गाती है।	गीता कितना मधुर गाती है।
127. तितली के पास सुन्दर पंख होते हैं।	तितली के पंख सुन्दर होते हैं।
128. साबुन नहाने का दे दो।	नहाने का साबुन दे दो।
129. पुत्री पराया धन होता है।	पुत्री पराया धन होती है।
130. कृपया अवकाश देने की कृपा करें।	अवकाश देने की कृपा करें।
131. मैं आपके उज्जवल भविष्य की कामना करता हूँ।	मैं आपके उज्ज्वल भविष्य की कामना करता हूँ।
132. मीराबाई कृष्णभक्त कवि हैं।	मीराबाई कृष्णभक्त कवयित्री हैं।
133. प्रतिमा को क्षमा माँगना चाहिए।	प्रतिमा को क्षमा माँगनी चाहिए।
134. हमें सदैव हमेशा परिश्रम करना चाहिए।	हमें सदैव परिश्रम करना चाहिए।
135. जेल होने की खबर सुनकर उसका चेहरा गिर गया।	जेल होने की खबर सुनकर उसका चेहरा मुरझा गया।
136. माँ की आज्ञा के अनुकूल वह सो गया।	माँ के आज्ञा के अनुसार वह सो गया।
137. उपयोक्त तथ्य मेरे विचार में ठीक हैं।	उपर्युक्त तथ्य मेरे विचार में ठीक हैं।
138. अनेकों तीर्थयात्री अपने-अपने घरों से आज निकल रहे हैं।	अनेक तीर्थयात्री अपने-अपने घरों से आज निकल रहे हैं।

2018 की परीक्षा में पूछे गये वाक्य

139. महादेवी वर्मा एक प्रसिद्ध कवि हैं।	महादेवी वर्मा एक प्रसिद्ध कवयित्री हैं।
140. आपकी सौजन्यता सराहनीय है।	आपकी सौम्यता सराहनीय है।
141. कृपया अवकाश देने की कृपा करें।	अवकाश देने की कृपा करें।
142. सभी छात्रों में रमेश बहुत श्रेष्ठ है।	सभी छात्रों में रमेश श्रेष्ठ है।
143. मुझे एक ठण्डा गिलास पानी चाहिए।	मुझे एक गिलास ठण्डा पानी चाहिए।
144. वह भगवान् पर श्रद्धा करता है।	वह भगवान पर श्रद्धा रखता है।
145. शीघ्र ही युद्ध चलने की सम्भावना है।	शीघ्र ही युद्ध शुरू होने की सम्भावना है।
146. न्यायाधीश ने अपराधी को मृत्युदण्ड की सजा दी।	न्यायाधीश ने अपराधी को मृत्युदण्ड दिया।
147. कृपया आप ही यह बताने की कृपा करें।	आप ही यह बताने की कृपा करें।
148. तब शायद यह काम जरूर हो जायेगा।	अब यह काम जरूर हो जाएगा।
149. मुझे भारी दु:ख हुआ।	मुझे बहुत दु:ख हुआ।
150. मैंने रो दिया।	मैं रो पड़ा।
151. रोटी मोहन ने खाई।	मोहन ने रोटी खाई।
152. मेरा प्राण संकट में है।	मेरे प्राण संकट में हैं।
153. कई रेलवे के कर्मचारी गिरफ्तार हुए।	रेलवे के कई कर्मचारी गिरफ्तार हुए।
154. यहाँ शुद्ध गाय का दूध मिलता है।	यहाँ गाय का शुद्ध दूध मिलता है।

अशुद्ध	शुद्ध
155. हमारी शिक्षिका विद्वान् है।	हमारी शिक्षिका विदुषी हैं।
156. आज मेरा चाचा आया है।	आज मेरे चाचा आए हैं।
157. वह गत सप्ताह हो जायगा।	वह अगले सप्ताह हो जाएगा।
158. उन्होंने मेरे सामने हाथ जोड़ा।	उन्होंने मेरे सामने हाथ जोड़े।
159. माता-पिता सदैव पूज्यनीय हैं।	माता-पिता सदैव पूजनीय हैं।
160. प्रांजल धर्मार्थ के लिए दान दे रहा है।	प्रांजल धर्मार्थ दान दे रहा है।
161. आचार्य रामचन्द्र शुक्ल के निबन्ध उत्कृष्टतम हैं।	आचार्य रामचन्द्र शुक्ल के निबन्ध उत्कृष्ट हैं।
162. राम और श्याम बातचीत कर रहा है।	राम और श्याम बातचीत कर रहे हैं।
163. आज सभा में अनेकों नेताओं के भाषण हुए।	आज सभा में अनेक नेताओं के भाषण हुए।

अशुद्ध	शुद्ध
164. अध्यापक कक्षा में पढ़ा रहा है।	अध्यापक कक्षा में पढ़ा रहे हैं।
165. तुम मेरे से मत बोलो।	तुम मुझसे मत बोलो।
166. एक फूल की माला लाओ।	फूल की एक माला लाओ।
167. यद्यपि वह बीमार था, परन्तु वह स्कूल गया।	यद्यपि वह बीमार था, फिर भी वह स्कूल गया।
168. वह अधिक पढ़ रहा है, कि सफल हो जाये।	वह अधिक पढ़ रहा है ताकि सफल हो जाये।
169. रमेश पर सौ रुपये जुर्माने हुए।	रमेश पर सौ रुपये जुर्माना हुआ।
170. आपका भवदीय।	आपका अपना।
171. मेरी केवल एक मात्र इच्छा है कि तुम सुखी रहो।	मेरी एकमात्र इच्छा है कि तुम सुखी रहो।

❑

13 काव्य-सौन्दर्य के तत्त्व : रस, अलंकार, छन्द

प्रश्न-परिचय—सामान्य हिन्दी के **खण्ड 'ख'** का **तेरहवाँ प्रश्न** काव्य-सौन्दर्य के तत्त्व यानी रस, अलंकार तथा छन्द से सम्बन्धित होगा। इसके अन्तर्गत तीन भाग—(क) रस **(1+1=2 अंक)**, (ख) अलंकार **(1+1=2 अंक)** तथा (ग) छंद **(1+1=2 अंक)** होंगे। इनसे सम्बन्धित प्रश्नों में उनकी परिभाषा, उदाहरण तथा दी हुई पंक्तियों में पहचान करने को कहा जाएगा। इसके लिए कुल **2+2+2=6 अंक** निर्धारित हैं।

(क) रस

प्रश्न— निम्नलिखित में से किसी एक रस का लक्षण उदाहरण व स्पष्टीकरण सहित लिखिए—

शृंगार, वीर, करुण, हास्य, शान्त।

शृंगार रस

(2009, 10, 11, 12, 13, 14, 15, 16, 17, 18)

सहृदय नायक-नायिका के चित्त में रति नामक स्थायी भाव का जब विभाव, अनुभाव और संचारी भावों से संयोग होता है तो वह शृंगार रस का रूप धारण कर लेता है। इस रस के दो भेद होते हैं—संयोग और वियोग, जिन्हें क्रमशः सम्भोग और विप्रलम्भ भी कहते हैं।

संयोग शृंगार (2013, 15, 16, 18)—संयोग-काल में नायक और नायिका की पारस्परिक रति को संयोग शृंगार कहा जाता है। उदाहरण—

कौन हो तुम वसन्त के दूत
विरस पतझड़ में अति सुकुमार;
घन तिमिर में चपला की रेख
तपन में शीतल मन्द बयार! —प्रसाद : कामायनी

इस प्रकरण में रति स्थायी भाव है। आलम्बन विभाव है—श्रद्धा (विषय) और मनु (आश्रय)। उद्दीपन विभाव है—एकान्त प्रदेश, श्रद्धा की कमनीयता, कोकिल-कण्ठ और रम्य परिधान। संचारी भाव है—आश्रय मनु के हर्ष, चपलता, आशा, उत्सुकता आदि भाव। इस प्रकार विभावादि से पुष्टि रति स्थायी भाव संयोग शृंगार रस की दशा को प्राप्त हुआ है।

वियोग शृंगार (2010, 14, 15, 16, 17)—जिस रचना में नायक एवं नायिका के मिलन का अभाव रहता है और विरह का वर्णन होता है, वहाँ वियोग शृंगार होता है। उदाहरण—

मेरे प्यारे नव जलद से कंज से नेत्र वाले
जाके आये न मधुवन से औ न भेजा सँदेशा।
मैं रो-रो के प्रिय-विरह से बावली हो रही हूँ
जा के मेरी सब दुख-कथा श्याम को तू सुना दे॥ (2014)
—हरिऔध : प्रियप्रवास

इस छन्द में विरहिणी राधा की विरह-दशा का वर्णन किया गया है। रति स्थायी भाव है। राधा आश्रय और श्रीकृष्ण आलम्बन विभाव है। शीतल, मन्द पवन और एकान्त उद्दीपन विभाव है। स्मृति, रुदन, चपलता, आवेग, उन्माद आदि संचारियों से पुष्ट श्रीकृष्ण से मिलन के अभाव में यहाँ वियोग शृंगार रस का परिपाक हुआ है।

वीर रस

(2009, 10, 11, 12, 13, 14, 15, 16, 17, 18)

उत्साह की अभिव्यक्ति जीवन के कई क्षेत्रों में होती है। शास्त्रकारों ने मुख्य रूप से ऐसे चार क्षेत्रों का उल्लेख किया है—युद्ध, धर्म, दया और दान। अतः इन चारों को लक्ष्य कर जब उत्साह का भाव जाग्रत और पुष्ट होता है तब वीर रस उत्पन्न होता है। उत्साह नामक स्थायी भाव; विभाव, अनुभाव और संचारी भावों से वीर रस की दशा को प्राप्त होता है। उदाहरण—

साजि चतुरंग सैन अंग मैं उमंग धारि,
सरजा सिवाजी जंग जीनत चलत हैं।
भूषन भनत नाद बिहद नगारन के,
नदी नद मद गैबरन के रलत हैं॥

स्पष्टीकरण—प्रस्तुत पद में शिवाजी की चतुरंगिणी सेना के प्रयाण का चित्रण है। 'शिवाजी के हृदय का उत्साह' स्थायी भाव है। 'युद्ध को जीतने की इच्छा' आलम्बन है। 'नगाड़ों का बजना' उद्दीपन है। 'हाथियों के मद का बहना' अनुभाव है तथा 'उग्रता' संचारी भाव है।

करुण रस

(2009, 10, 11, 12, 13, 14, 15, 16, 17, 18)

बन्धु-विनाश, बन्धु-वियोग, द्रव्य-नाश और प्रेमी के सदैव के लिए बिछड़ जाने से करुण रस उत्पन्न होता है। शोक नामक स्थायी भाव, विभाव, अनुभाव और संचारी भाव के संयोग से करुण रस दशा को प्राप्त होता है। उदाहरण—

क्यों छलक रहा दुःख मेरा
ऊषा की मृदु पलकों में,
हाँ! उलझ रहा सुख मेरा
सन्ध्या की घन अलकों में। —'आँसू' से

स्पष्टीकरण— प्रस्तुत पद में कवि के अपनी प्रेयसी के विरह में रुदन का वर्णन किया गया है। इसमें 'कवि के हृदय का शोक' स्थायी भाव है। यहाँ प्रियतमा आलम्बन है तथा प्रेमी (कवि) आश्रय है। कवि के हृदय के उद्गार अनुभाव हैं। अन्धकाररूपी केशपाश तथा सन्ध्या उद्दीपन हैं। अश्रुरूपी प्रात:कालीन ओस की बूँदें संचारी भाव हैं। इस सबसे पुष्ट शोक नायक स्थायी भाव करुण रस की दशा को प्राप्त हुआ है।

वियोग शृंगार तथा करुण रस में अन्तर— वियोग शृंगार तथा करुण रस में मुख्य अन्तर प्रियजन के वियोग का है। वियोग शृंगार में बिछड़े हुए प्रियजन से पुन: मिलन की आशा बनी रहती है, परन्तु करुण रस में इस प्रकार के मिलन की कोई सम्भावना नहीं रहती।

हास्य रस

(2009, 10, 11, 12, 14, 15, 16, 17, 18)

अपने अथवा पराये के परिधान (वेशभूषा), वचन अथवा क्रियाकलाप आदि से उत्पन्न हुआ हास नामक स्थायी भाव; विभाव, अनुभाव और संचारी भावों के संयोग से हास्य रस का रूप ग्रहण करता है।उदाहरण—

नाना वाहन नाना वेषा। बिंहसे सिव समाज निज देखा॥
कोउ मुखहीन, बिपुल मुख काहु। बिन पद-कर कोउ बहु पदबाहु॥

—तुलसी : श्रीरामचरितमानस

शिव-विवाह के समय की ये पंक्तियाँ हास्यमय उक्ति हैं। इस उदाहरण में स्थायी भाव 'हास' का आलम्बन शिव-समाज है, आश्रय शिव स्वयं हैं, उद्दीपन विचित्र वेशभूषा है, अनुभाव शिवजी का हँसना है तथा रोमांच, हर्ष, चापल्य आदि संचारी भाव हैं। इनसे पुष्ट हुआ हास नामक स्थायी भाव हास्य रस की अवस्था को प्राप्त हुआ है।

शान्त रस

(2009, 10, 11, 13, 14, 15, 16, 17, 18)

संसार की निस्सारता तथा इसकी वस्तुओं की नश्वरता का अनुभव करने से ही चित्त में वैराग्य उत्पन्न होता है। वैराग्य होने पर शान्त रस की उत्पत्ति होती है। इस प्रकार निर्वेद नामक स्थायी भाव; विभाव, अनुभाव और संचारी भाव के संयोग से शान्त रस का रूप ग्रहण करता है।उदाहरण—

अब लौं नसानी अब न नसैहौं।
राम कृपा भव निसा सिरानी जागे फिर न डसैहौं॥
पायो नाम चारु चिंतामनि उरकर तें न खसैहौं।
श्याम रूप सुचि रुचिर कसौटी चित कंचनहिं कसैहौं॥
परबस जानि हँस्यों इन इन्द्रिन निज बस ह्वै न हँसैहौं।
मन मधुकर पन करि तुलसी रघुपति पद कमल बसैहौं॥

—तुलसी : विनय-पत्रिका

यहाँ निर्वेद स्थायी भाव है। सांसारिक असारता और इन्द्रियों द्वारा उपहास उद्दीपन है। स्वतन्त्र होने तथा राम के चरणों में रति का कथन अनुभाव है। धृति, वितर्क, मति आदि संचारी भाव हैं। इन सबसे पुष्ट निर्वेद शान्त रस को प्राप्त हुआ है।

(ख) अलंकार

प्रश्न— **निम्नलिखित अलंकारों में से किसी एक अलंकार का लक्षण लिखकर उदाहरण दीजिए—**

अनुप्रास, यमक, श्लेष, रूपक, उत्प्रेक्षा, उपमा, सन्देह, भ्रान्तिमान।

उत्तर— **(1) अनुप्रास अलंकार** (2009,10,11,12,13,14, 15, 16, 17, 18)— एक ही वर्ण की बार-बार आवृत्ति होने पर अनुप्रास अलंकार होता है। उदाहरण—

कानन कठिन भयंकर भारी। घोर घाम हिम वारि-बयारी॥

स्पष्टीकरण— इस उदाहरण में 'क', 'भ', 'र', 'घ', 'म' अक्षर एक से अधिक बार आये हैं। इसलिए अनुप्रास अलंकार है।

(2) यमक अलंकार (2009, 10, 11, 12, 13, 14, 16, 17, 18)— जब एक ही शब्द दो या दो से अधिक बार आता है और भिन्न-भिन्न अर्थों में प्रयुक्त होता है तो वहाँ यमक अलंकार होता है।उदाहरण—

काली घटा का घमण्ड घटा।
नभ मण्डल तारक वृन्द खिले॥

स्पष्टीकरण— इस उदाहरण में 'घटा' शब्द दो बार आया है और दोनों स्थानों पर उसका अर्थ भिन्न-भिन्न है—(1) **घटा** = बादल, (2) **घटा** = कम हो गया, घट गया।

(3) श्लेष अलंकार (2009, 10, 11, 12, 13, 14, 15, 16, 17, 18)— जब एक शब्द एक ही बार प्रयुक्त होता है, किन्तु उसके दो या दो से अधिक अर्थ होते हैं, तब वहाँ श्लेष अलंकार होता है।उदाहरण—

चिरजीवौ जोरी जुरै, क्यों न सनेह गँभीर।
को घटि ये वृषभानुजा, वे हलधर के वीर॥

स्पष्टीकरण— इस उदाहरण में '**वृषभानुजा**' और '**हलधर**' शब्द एक ही बार आये हैं, किन्तु उनके अर्थ अनेक हैं—.**(1) वृषभानुजा** = (i) राजा वृषभानु की पुत्री राधा तथा (ii) वृषभ (बैल) की बहन गाय। **(2) हलधर**—(i) बलराम तथा (ii) बैल। यहाँ 'वृषभानुजा' तथा 'हलधर' शब्द में श्लेष अलंकार है।

(4) रूपक अलंकार (2009, 10, 11, 12, 13, 14, 15, 16, 18)— जहाँ उपमेय (जिसके लिए उपमा दी जाती है) में उपमान (उपमेय की जिसके साथ तुलना की जाती है) का निषेधरहित आरोप हो, वहाँ रूपक अलंकार होता है।उदाहरण—

गिरा-अनिल मुख पंकज रोकी।
प्रकट न लाज-निशा अवलोकी॥

स्पष्टीकरण— यहाँ **गिरा** (वाणी) में **भौंरे** का, **मुख** में **कमल** का और **लाज** में **निशा** का निषेधरहित आरोप होने से रूपक अलंकार है।

(5) उत्प्रेक्षा अलंकार (2009, 10, 11, 12, 13, 14, 16, 17, 18)— जहाँ उपमेय (जिसके लिए उपमा दी जाती है) में उपमान (उपमेय की जिसके साथ तुलना की जाती है) की सम्भावना की जाये, वहाँ उत्प्रेक्षा अलंकार होता है।उदाहरण—

सोहत ओढ़ै पीतु-पटु, स्याम सलौंने गात।
मनौ नीलमनि सैल पर, आतपु पर्‌यौ प्रभात॥

स्पष्टीकरण— यहाँ श्रीकृष्ण के '**श्याम-गात**' में 'नील-मणि शैल' की तथा '**पीत-पट**' में 'प्रभात के आतप (धूप)' की सम्भावना करने से उत्प्रेक्षा अलंकार है।

(6) उपमा अलंकार (2010, 11, 12, 13, 15, 16, 17, 18)— उपमेय (जिसके लिए उपमा दी जाती है) और उपमान (उपमेय की जिसके साथ तुलना की जाती है) के समान धर्मकथन को उपमा अलंकार कहते हैं। उपमा के चार और अंग होते हैं—(i) उपमेय, (ii) उपमान, (iii) वाचक, (iv) साधारण धर्म। उदाहरण—

'हरि पद कोमल कमल-से'

स्पष्टीकरण

उपमेय	—	हरि-पद
उपमान	—	कमल
वाचक	—	से
साधारण धर्म	—	कोमलता

(7) सन्देह अलंकार (2009, 10, 11, 13, 14, 15, 16, 17, 18)— जब किसी वस्तु में उसी के समान दूसरी वस्तु का सन्देह हो, किन्तु निश्चयात्मक ज्ञान न हो, वहाँ सन्देह अलंकार होता है।उदाहरण—

स्वाति घटा घहराति मुक्ति पानिप सौं पूरी।
किधौं आवति मुक्ति, सुभ्र आभा रुचि रूरी॥

स्पष्टीकरण— यहाँ 'स्वाति घटा' को देखकर यह निश्चय नहीं हो पाता कि यह '**स्वाति-घटा**' ही है या '**शुभ्र आभा**' है। इसलिए सन्देह अलंकार है।

(8) भ्रान्तिमान अलंकार (2009, 10, 14, 15, 16, 18)— जहाँ समानता के कारण भ्रमवश उपमेय (जिसके लिए उपमा दी जाती है) में उपमान (उपमेय की जिसके साथ तुलना की जाती है) का निश्चयात्मक ज्ञान हो, वहाँ भ्रान्तिमान अलंकार होता है।उदाहरण—

पेशी समझ माणिक्य को,
वह विहग देखो ले चला।

स्पष्टीकरण— यहाँ अत्यन्त समानता के कारण किसी **लाल रंग की मणि** को **मांस पेशी** समझने की भूल के कारण पक्षी उठाकर ले गया है। भूल के अनुसार कार्य करने से यहाँ **भ्रान्तिमान अलंकार** है।

अथवा

(i) उत्प्रेक्षा और उपमा अलंकार में मूलभूत अन्तर बताइए और उत्प्रेक्षा अलंकार का एक उदाहरण अपनी पाठ्य-पुस्तक से लिखिए।

उत्तर—उपमा और उत्प्रेक्षा अलंकार में अन्तर—उपमा अलंकार में 'उपमेय' और 'उपमान' में समानता निश्चयपूर्वक प्रकट की जाती है; जैसे—"मुख चन्द्रमा के समान सुन्दर है"। यहाँ मुख (उपमेय) और चन्द्रमा (उपमान) में सुन्दरता (समान धर्म) के आधार पर समानता स्थापित की गयी है। उत्प्रेक्षा अलंकार में 'उपमेय' और 'उपमान' में समानता की सम्भावना मात्र प्रकट की जाती है, वह निश्चित रूप से स्थापित नहीं की जाती; जैसे—'मुख मानो चन्द्रमा है'। उदाहरण

जोग-जुगति सिखए सबै, मनौ महामुनि मैन।
चाहत पिय अद्वैतता, काननु सेवत नैन॥

(ii) सन्देह और भ्रान्तिमान अलंकारों में अन्तर स्पष्ट करते हुए उदाहरण दीजिए।

उत्तर—सन्देह और भ्रान्तिमान अलंकार में अन्तर—सन्देह अलंकार में उपमेय में उपमान का सन्देहमात्र होता है, निश्चयात्मक ज्ञान नहीं; जैसे—'यह रस्सी है या साँप'। इसमें रस्सी (उपमेय) में साँप (उपमान) का सन्देह होता है, निश्चय नहीं, किन्तु भ्रान्तिमान में उपमेय में उपमान का निश्चय हो जाता है; जैसे—रस्सी को साँप समझकर कहना कि 'यह साँप है'।

कैंधों ब्योम बीथिका भरे हैं भूरि धूमकेतु,
कैंधों चली मेरु तैं कृसानुसरि भारी हैं।

लंकादहन के उपर्युक्त वर्णन में हनुमान की पूँछ को देखकर यह निश्चय नहीं हो पा रहा है कि आकाश में अनेक पुच्छल तारे हैं या पर्वत से अग्नि की नदी-सी निकल रही है। अत: यहाँ सन्देह अलंकार है।

कपि करि हृदय विचार, दीन्ह मुद्रिका डारि तब।
जानि अशोक अँगार, सीय हरषि उठि कर गहेउ॥

यहाँ पर सीताजी श्रीराम की हीरकजटित अँगूठी को अशोक वृक्ष द्वारा प्रदत्त अंगारा समझकर उठा लेती हैं। अँगूठी (उपमेय) में उन्हें अंगारे (उपमान) का निश्चयात्मक ज्ञान होने से यहाँ भ्रान्तिमान् अलंकार है।

(iii) उत्प्रेक्षा और रूपक अलंकार में मूलभूत अन्तर स्पष्ट कीजिए और अपनी पाठ्य-पुस्तक से उत्प्रेक्षा अलंकार का एक उदाहरण लिखिए।

उत्तर—उत्प्रेक्षा और रूपक अलंकार में अन्तर—जहाँ पर उपमेय (जिनके लिए उपमा दी जाती है) में उपमान (उपमेय की जिसके साथ तुलना की जाती है) की सम्भावना प्रकट की जाती है वहाँ उत्प्रेक्षा अलंकार होता है; जैसे—'मुख मानो चन्द्रमा है'। जहाँ उपमेय और उपमान में ऐसा आरोप हो कि दोनों में किसी प्रकार का भेद ही न रह जाए, वहाँ रूपक अलंकार होता है; जैसे—'मुख चन्द्रमा है।'

उदाहरण—(i) में उल्लिखित दोहा।

(iv) उपमा और रूपक का अन्तर स्पष्ट करते हुए रूपक का एक उदाहरण लिखिए। (2010)

उत्तर—उपमा में उपमेय और उपमान में समानता स्थापित की जाती है किन्तु रूपक में दोनों में अभेद स्थापित किया जाता है; जैसे—'मुख चन्द्रमा के समान है' में उपमा है; किन्तु 'मुख चन्द्रमा है' में रूपक है।

रूपक का उदाहरण—रूपक में उल्लिखित उदाहरण देखें।

(ग) छन्द

प्रश्न— निम्नलिखित में से किसी एक छन्द का लक्षण उदाहरण सहित लिखिए—चौपाई, दोहा, सोरठा, कुण्डलिया।

चौपाई

(2009, 10, 11, 12, 13, 14, 15, 16, 18)

चौपाई सम मात्रिक छन्द है। इसमें चार चरण होते हैं और प्रत्येक चरण में 16 मात्राएँ होती हैं। अन्त में 'जगण' (। ऽ ।) अथवा 'तगण' (ऽ ऽ ।) का प्रयोग नहीं होना चाहिए। अर्थात् अन्तिम दो वर्ण गुरु-लघु नहीं होने चाहिए। उदाहरण

ऽ।। ।। ।। ।।। ।ऽऽ ।।। ।ऽ। ।।। ।।ऽऽ
बंदउ गुरु पद पदुम परागा। सुरुचि सुवास सरस अनुरागा॥
16 + 16 = 32 मात्राएँ

।।। ऽ।।। ऽ।। ऽ ऽ ।।। ।।। ।। ।। ।।ऽऽ
अमिय मूरिमय चूरन चारू। समन सकल भव रुज परिवारू॥
16 + 16 = 32 मात्राएँ

दोहा

(2009, 10, 11, 12, 13, 14, 15, 16, 17, 18)

दोहा अर्द्धसम मात्रिक छन्द है। इसमें चार चरण होते हैं। इसके पहले और तीसरे (विषम) चरणों में 13, 13 मात्राएँ और दूसरे तथा चौथे (सम) चरणों में 11, 11 मात्राएँ होती हैं। उदाहरण—

ऽऽ ।। ऽऽ ।ऽ ऽऽ ऽ।। ऽ।
मेरी भव बाधा हरौ, राधा नागरि सोइ। **13+11 = 24 मात्राएँ**
ऽ ।। ऽऽऽ।ऽ ऽ। ।।। ।। ऽ।
जा तन की झाईं परै, स्यामु हरित दुति होइ॥
13 + 11 = 24 मात्राएँ

सोरठा

(2009, 10, 11, 12, 13, 14, 15, 16, 17, 18)

सोरठा अर्द्धसम मात्रिक छन्द है। इसमें चार चरण होते हैं। इसके पहले और तीसरे चरण में 11-11 मात्राएँ तथा दूसरे और चौथे चरण में 13-13 मात्राएँ होती हैं, यह दोहे का उल्टा होता है। उदाहरण—

ऽ। ।ऽ। ।ऽ। ।।। ।ऽ।। ऽ। ।।
राम सरूप तुम्हार, बयन अगोचर बुद्धि पर।
11 + 13 = 24 मात्राएँ
।।।। ।।। ।ऽ। ऽ। ऽ। ।।।।। ।।
अबिगत अकथ अपार, नेति नेति नित निगम कह॥
11 + 13 = 24 मात्राएँ

कुण्डलिया

(2009, 11, 13, 14, 15, 16, 17, 18)

यह विषम मात्रिक छन्द है। इसमें छ: चरण होते हैं। दोहा के बाद एक रोला मिलाने पर कुण्डलिया बन जाता है। इसके प्रत्येक चरण में 24 मात्राएँ होती हैं। जिस शब्द से छन्द आरम्भ होता है, उसी शब्द से इसका अन्त भी होता है और रोला का प्रथम चरण दोहा का चतुर्थ होकर आता है। उदाहरण—

।।।। ।।। । ऽ।ऽ ऽ। ।ऽ ऽ ऽ।
कृतघन कतहुँ न मानहीं, कोटि करौ जो कोय।
13 + 11 = 24 मात्राएँ
सरबस आगे राखिये, तऊ न अपनो होय॥
तऊ न अपनो होय, भले की भली न मानै।
काम काढ़ि चुपि रहे, फेरि तिहि नहिं पहचानै॥
कह 'गिरधर कविराय', रहत नित ही निर्भय मन।
मित्र शत्रु ना एक, दाम के लालच कृतघन॥
11 + 13 = 24 मात्राएँ

अथवा

प्रश्न— निम्नलिखित में कौन-सा छन्द है ? मात्राओं की गणना करके अपने कथन की पुष्टि कीजिए—

(i) **जौ न होत जग जनम भरत को।**
सकल धरम धुर धरनि भरत को॥

उत्तर—दी गयी पंक्तियाँ चौपाई छन्द में हैं। इसके प्रत्येक चरण में 16-16 मात्राएँ होती हैं।

ऽ । ऽ। ।। ।।।।।।।। ऽ ।।। ।।।।।।।।।।।। ऽ
जौ न होत जग जनम भरत को। सकल धरम धुर धरनि भरत को॥

(ii) **मो सम दीन न दीन हित, तुम समान रघुबीर।**
अस बिचारि रघुबंस मनि, हरहु बिषम भव भीर॥

उत्तर—दी गयी पंक्तियाँ दोहा छन्द की हैं। इसके पहले व तीसरे चरण में 13-13 मात्राएँ और दूसरे व चौथे चरण में 11-11 मात्राएँ होती हैं।

S ।। S। । S। ।। ।। ।S। ।।S।
मो सम दीन न दीन हित, तुम समान रघुबीर।
।। । S। ।।S। ।। ।।। ।।। ।।S।
अस बिचारि रघुबंस मनि, हरहु बिषम भवभीर ॥

(iii) यह बर माँगउ कृपा निकेता ।
बसहु हृदय श्री अनुज समेता ।।

उत्तर—दी गयी पंक्तियाँ चौपाई छन्द में हैं। इसके प्रत्येक चरण में 16-16 मात्राएँ होती हैं।

।। । । S।। । S। S S ।।। ।।। S ।।। । S S
यह बर माँगउ कृपा निकेता । बसहु हृदय श्री अनुज समेता।।

(iv) मंत्री गुरु अरु बैद जो, प्रिय बोलहिं भय आस ।
राज धरम तन तीनि कर, होइ बेगिहीं नास ।।

उत्तर—दी गयी पंक्तियाँ दोहा छन्द की हैं। इसके पहले व तीसरे चरण में 13-13 मात्राएँ तथा दूसरे व चौथे चरण में 11-11 मात्राएँ होती हैं।

S S ।। ।। S। S । । S ।। ।। S।
मंत्री गुरु अरु बैद जो, प्रिय बोलहिं भय आस।
S। ।।। । । S। ।। S। S । S. S ।
राज धरम तन तीनि कर, होइ बेगिहीं नास ॥

14 पत्र-लेखन

प्रश्न-परिचय सामान्य हिन्दी के **खण्ड 'ख'** का **चौदहवाँ** प्रश्न पत्र-लेखन से सम्बन्धित होगा। इसके अन्तर्गत कोई **दो विषय** (विकल्प रूप में) दिये जाएँगे, जिनमें से किसी **एक** विषय पर सारगर्भित पत्र लिखना होगा। इसके लिए कुल **2 + 4 = 6 अंक** निर्धारित हैं।

प्रश्न 1. लिपिक पद हेतु हिन्दी में प्रपत्र शैली में एक आवेदन-पत्र लिखिए। (2009, 10, 11, 12, 13, 14)

या **अपनी शैक्षिक योग्यताओं का उल्लेख करते हुए किसी उद्योग प्रबन्धक को लिपिक के पद पर नियुक्ति हेतु एक आवेदन-पत्र लिखिए।** (2014, 18)

या **अपने जनपद के जिलाधिकारी को उनके कार्यालय में रिक्त लिपिक पद पर नियुक्ति पाने के लिए एक आवेदन-पत्र लिखिए।** (2009, 10)

या **समाचार-पत्र में प्रकाशित विज्ञापन के आधार पर ग्राम पंचायत अधिकारी पद पर नियुक्ति हेतु अपने जनपद के जिला पंचायत राज अधिकारी को एक आवेदन-पत्र लिखिए।** (2014)

विषय : उच्च श्रेणी लिपिक (हिन्दी) पद हेतु आवेदन-पत्र।

या **प्रधानाचार्य/प्रबन्धक महोदय को लिपिक पद पर नियुक्ति हेतु एक प्रार्थना-पत्र लिखिए।** (2012, 13, 14, 16, 17, 18)

या **स्थानीय उच्चतर माध्यमिक विद्यालय में लिपिक के रिक्त पद पर नियुक्ति हेतु विद्यालय के प्रबन्धक महोदय को एक प्रार्थना-पत्र लिखिए।** (2016, 18)

1. नाम : अंजू राजपूत
2. पिता का नाम और व्यवसाय : श्री रामपाल सिंह (नौकरी)
3. जन्म-तिथि (अंकों में) : 10-12-1990
   (शब्दों में) दस दिसम्बर उन्नीस सौ नब्बे
4. वर्तमान पता : 4/192, ब्रह्मपुरी, मेरठ—2
5. स्थायी पता : निरंजनपुर
   जिला—बिजनौर (उत्तर प्रदेश)
6. क्या आप अनुसूचित जाति/जनजाति/पिछड़ी जाति के हैं ? : नहीं
   यदि हाँ, तो जाति का नाम लिखिए : ×
7. क्या आप भारतीय नागरिक हैं ? : हाँ
   यदि नहीं तो अपनी नागरिकता लिखिए : ×
8. अर्हताएँ :

परीक्षा	श्रेणी	वर्ष	बोर्ड/वि० वि०	विषय
हाईस्कूल	प्रथम	2005	यू०पी० बोर्ड	हिन्दी, गणित, विज्ञान, सामा० विज्ञान, अंग्रेजी
इण्टरमीडिएट	द्वितीय	2007	यू०पी० बोर्ड	हिन्दी, अंग्रेजी, इतिहास, अर्थशास्त्र, नागरिकशास्त्र
टंकण डिप्लोमा		2009	आई०टी०आई०, नयी दिल्ली	हिन्दी टंकण, 40 शब्द प्रति मिनट

9. शुल्क विवरण—पोस्टल ऑर्डर संलग्न (संख्या 05921, दिनांक : .....)

मैं घोषणा करती हूँ कि आवेदित पद के लिए सभी निर्धारित अर्हताएँ मुझमें हैं। मैंने जो सूचनाएँ इस आवेदन-पत्र में दी हैं, वे सही हैं। यदि इनमें से कोई भी जानकारी गलत पायी जाए तो मेरी उम्मीदवारी निरस्त कर दी जाए।

10. संलग्नकों की संख्या : तीन

भवदीया
दिनांक : 14 मई, 2017 हस्ताक्षर

प्रश्न 2. सहायक अध्यापक पद के लिए पत्र शैली में शिक्षा निदेशक के नाम एक आवेदन-पत्र लिखिए। (2013, 14)

या **किसी विद्यालय के प्रबन्धक के नाम हिन्दी प्रवक्ता पद हेतु अपनी नियुक्ति के लिए आवेदन-पत्र लिखिए।** (2012, 13)

या **अपने जनपद के किसी विद्यालय में शिक्षक के रूप में कार्य करने के लिए अपना आवेदन-पत्र विद्यालय-प्रबन्धक को प्रस्तुत कीजिए।** (2015)

सेवा में,
शिक्षा निदेशक,
लखनऊ।

विषय—सहायक अध्यापक पद के लिए आवेदन-पत्र।

महोदय,
दिनांक 11 मार्च, 2018 के 'हिन्दुस्तान टाइम्स' में प्रकाशित आपके विज्ञापन के उत्तर में मैं हिन्दी में सहायक अध्यापक पद के लिए आवेदन कर रहा हूँ। मेरी शैक्षणिक योग्यताओं एवं अन्य जानकारियों का विवरण निम्नवत् है

नाम : राजेश सिंह
पिता का नाम : मुन्नालाल सिंह
जन्म-तिथि : 4-10-1987
स्थायी पता : 9/18, श्यामनगर, देहरादून।

शैक्षणिक योग्यताएँ :

परीक्षा	वर्ष	अंक	प्राप्तांक प्रतिशत	विषय	बोर्ड/वि० वि०
हाईस्कूल	2002	325/500	65%	हिन्दी, विज्ञान, सामाजिक विज्ञान, गणित, अंग्रेजी	यू०पी० बोर्ड
इण्टरमीडिएट	2004	350/500	70%	हिन्दी, संस्कृत, समाजशास्त्र, शिक्षाशास्त्र, कला	यू०पी० बोर्ड

बी० ए०	2007	496/800	62%	हिन्दी, संस्कृत, राजनीतिशास्त्र, अर्थशास्त्र	रुहेलखण्ड वि० वि०
बी० एड०	2008	500/700	71.4%	संस्कृत एवं नागरिक- शास्त्र शिक्षण विधि- सहित	रुहेलखण्ड वि० वि०

अन्य गतिविधियाँ—विद्यालय तथा महाविद्यालय स्तर पर हुई वाद-विवाद प्रतियोगिताओं में प्रथम पुरस्कार विजेता, कुछ एक सांस्कृतिक कार्यक्रमों के सफल संचालन का अनुभव।

मेरी अध्यापन में अत्यधिक रुचि है। यदि आपने इस पद का उत्तरदायित्व मुझे सौंपा तो मैं पूर्ण निष्ठा से उसका निर्वाह करूँगा तथा कभी शिकायत का अवसर नहीं दूँगा।

सेवा का अवसर प्रदान कर कृतार्थ करें।

धन्यवाद!

संलग्नक : प्रमाण-पत्र—(क) हाईस्कूल, (ख) इण्टरमीडिएट, (ग) बी०ए०, (घ) बी०एड०, (ङ) चरित्र प्रमाण-पत्र।

दिनांक : 15/08/2018

भवदीय
राजेश सिंह

प्रश्न 3. ऋण-प्राप्ति हेतु भारतीय स्टेट बैंक के शाखा प्रबन्धक को आवेदन-पत्र लिखिए। (2010, 13, 14)

या **किसी बैंक के शाखा प्रबन्धक को निजी कम्प्यूटर प्रशिक्षण केन्द्र की स्थापना हेतु ऋण-प्राप्ति के लिए एक आवेदन-पत्र लिखिए।**

या **अपना कुटीर उद्योग प्रारम्भ करने हेतु किसी बैंक के प्रबन्धक को ऋण प्रदान करने हेतु एक पत्र लिखिए।** (2008, 09, 10, 14, 17, 18)

या **अपने निकटस्थ बैंक के शाखा प्रबन्धक के नाम एक प्रार्थना-पत्र लिखिए, जिसमें निजी रोजगार के लिए ऋण लेने का निवेदन किया गया हो।** (2013, 14, 15)

या **इलाहाबाद बैंक के शाखा-प्रबन्धक को फसली ऋण योजनान्तर्गत ऋण-प्राप्ति हेतु एक आवेदन-पत्र लिखिए।** (2015)

या **अपना कुटीर उद्योग प्रारम्भ करने हेतु किसी बैंक के प्रबन्धक को ऋण प्रदान करने हेतु एक पत्र लिखिए।** (2016)
[बैंक के नाम में स्वयं परिवर्तन कर लें।]

सेवा में,
प्रबन्धक,
भारतीय स्टेट बैंक,
गोलाकुआँ, शोहराब गेट शाखा, मेरठ।

विषय—ऋण-प्राप्ति हेतु आवेदन-पत्र।

महोदय,

पिछले दिनों माननीय प्रधानमन्त्री महोदय ने 'प्रधानमन्त्री रोजगार योजना' का शुभारम्भ किया था, जिसमें शिक्षित बेरोजगारों को एक लाख रुपये का ऋण देने का प्रावधान है। मैं भी बी०ए० पास एक शिक्षित बेरोजगार युवक हूँ और इस योजना का लाभ उठाकर एक लाख रुपये का ऋण लेकर इससे बॉल पेन बनाने का लघु उद्योग आरम्भ करना चाहता हूँ। इस हेतु आपकी सेवा में अपने विवरणसहित अपनी भावी योजना का संक्षिप्त प्रारूप प्रस्तुत कर रहा हूँ, जो कि निम्नवत् है

आवेदक का नाम	:	किशनचन्द्र धानुक
पिता का नाम	:	श्री गोपीचन्द्र धानुक
शैक्षिक योग्यता	:	बी०ए०
जन्म-तिथि	:	22/08/1988
उपजाति	:	धानुक
परिवार की वार्षिक आय	:	₹ 36,000
स्थायी पता	:	192/4, जयदेवी नगर, गढ़ रोड, मेरठ।
उद्योग का नाम, जिसके लिए ऋण चाहते हैं	:	बॉल पेन बनाने का उद्योग

अनुमानित व्यय:

दुकान व्यय	:	₹ 25,000
मशीन व्यय	:	₹ 50,000
कच्चा माल	:	₹ 20,000
अन्य व्यय	:	₹ 5,000
कुल व्यय	:	₹ 1,00,000
उद्योग से होने वाली सम्भावित मासिक आय	:	₹ 7,500

श्रीमान जी से मेरा निवेदन है कि मेरे इस ऋण आवेदन-पत्र को स्वीकृत करके मुझे ऋण प्रदान कर कृतार्थ करें।

धन्यवाद सहित!

संलग्नक—(1) आयु प्रमाण-पत्र, (2) योग्यता प्रमाण-पत्र, (3) स्थायी निवास प्रमाण-पत्र, (4) आय प्रमाण-पत्र।

दिनांक : 18/05/2017

भवदीय
किशनचन्द्र धानुक

प्रश्न 4. केनरा बैंक के प्रबन्धक को अध्ययनार्थ ऋण-प्राप्ति हेतु एक पत्र लिखिए।

या **भारतीय स्टेट बैंक के शाखा प्रबन्धक को निजी उच्च शिक्षा-अध्ययन (चिकित्सा अथवा इंजीनियरिंग) हेतु शिक्षा ऋण प्राप्ति के लिए एक आवेदन-पत्र लिखिए।**

(2009, 10, 11, 12, 13, 17, 18)

सेवा में,
श्रीमान शाखा प्रबन्धक महोदय,
केनरा बैंक
शहर शाखा
मेरठ।

विषय—अध्ययन के लिए ऋण-प्राप्ति हेतु।

महोदय,

मैं, विकास कुमार जैन ने चौधरी चरणसिंह विश्वविद्यालय, मेरठ से बी० एस-सी० (भौतिकी, रसायन और गणित) परीक्षा प्रथम श्रेणी में 70% अंकों के साथ उत्तीर्ण की है। मैंने एम० बी० ए० (द्वि-वर्षीय पाठ्यक्रम) में प्रवेश लिया है और साथ-साथ प्रशासनिक सेवाओं की परीक्षा के लिए तैयारी भी करना चाहता हूँ। मेरा अध्ययन अबाध चलता रहे, इसके लिए मुझे ₹ 2,00,000.00 की आवश्यकता है। मुझे पता चला है कि आपके बैंक की अनेक ऋण योजनाओं में से एक योजना के अन्तर्गत अध्ययन के लिए भी ऋण प्रदान किया जाता है। मैं आपको विश्वास दिलाता हूँ कि आपके द्वारा प्रदत्त ऋण की भुगतान-प्रक्रिया अध्ययन पूर्ण होते ही यथाशीघ्र शुरू कर दी जाएगी।

उपर्युक्त उद्देश्य हेतु आपके सक्रिय सहयोग की अपेक्षा है।

धन्यवाद!

दिनांक : .....

भवदीय
विकास कुमार जैन
ठठेरवाड़ा,
मेरठ।

संलग्नक : सभी उत्तीर्ण परीक्षाओं की अंक-प्रतियाँ व प्रमाण-पत्र।

दिनांक : 18/06/2016

प्रश्न 5. अपने क्षेत्र में मच्छरों के प्रकोप अथवा मलेरिया फैलने की सम्भावना का वर्णन करते हुए उचित कार्यवाही के लिए स्वास्थ्य अधिकारी को पत्र लिखिए। (2013)

या **अपने मोहल्ले में वर्षा के कारण उत्पन्न हुई जल-भराव की समस्या की ओर ध्यान आकृष्ट कराने के लिए नगरपालिका अधिकारी को पत्र लिखिए।** (2012, 13, 14)

या **अपने जिले के जिलाधिकारी के नाम एक पत्र लिखिए, जिसमें उनसे अपने गाँव की सफाई-व्यवस्था ठीक कराने हेतु निवेदन किया गया हो।** (2012, 13)

या **ग्राम प्रधान की ओर से अपने जनपद के जिलाधिकारी को पत्र लिखिए, जिसमें गाँव की सफाई व्यवस्था हेतु अनुरोध किया गया हो।** (2013, 15, 18)

या **अपने नगर में बाढ़ एवं घनघोर वर्षा के बाद गन्दगी के कारण फैलने वाले संक्रामक रोगों की आशंका को दृष्टिगत करते हुए रोकथाम के उपायों हेतु जिलाधिकारी को एक पत्र लिखिए।** (2014, 16)

या **अपने क्षेत्र में प्रदूषण से उत्पन्न स्थिति का वर्णन करते हुए किसी दैनिक समाचार-पत्र के सम्पादक को एक पत्र लिखिए।** (2017)

या **अपने मुहल्ले में फैली गन्दगी की सफाई कराने हेतु नगरपालिका अध्यक्ष को एक शिकायती पत्र लिखिए।** (2012, 13, 14, 15, 17, 18)

या **बरसात में बढ़ रहे संक्रामक रोगों की रोकथाम के लिए अपने नगर के मुख्य चिकित्सा अधिकारी को पत्र लिखिए।** (2017, 18)

सेवा में,
स्वास्थ्य अधिकारी,
बरेली नगर निगम, बरेली।

विषय—मच्छरों का बढ़ता हुआ प्रकोप।

महोदय,
मैं आपका ध्यान बढ़ते हुए मच्छरों के प्रकोप की ओर आकर्षित करना चाहता हूँ। मैं सुभाष नगर क्षेत्र का निवासी हूँ। पूरे सुभाष नगर क्षेत्र में आजकल मच्छरों का भयंकर आतंक छाया हुआ है। दिन हो या रात, मच्छरों के झुण्ड सदा मँड़राते नज़र आ जाते हैं। रात को तो वे सोना दूभर कर देते हैं। जब सुबह उठते हैं तो बच्चों के मुँह लाल-लाल दानों से भरे होते हैं। मच्छरों के कारण घर-घर में मलेरिया फैला हुआ है। प्राय: सभी घरों में कोई-न-कोई मलेरिया का रोगी मिल जाएगा। इन मच्छरों के कारण स्वास्थ्य पर बहुत बुरा असर पड़ा है।

हमारे क्षेत्र में मच्छरों की अधिकता का बड़ा कारण है—पानी के जमे हुए तालाब और गली-मोहल्ले में फैली चौड़ी-चौड़ी खुली नालियाँ। उन कच्ची नालियों को व्यवस्थित करने की कोई व्यवस्था नहीं हुई है। मोहल्ले के जमादार सफाई की ओर ध्यान नहीं देते, इसलिए नालियों में सदा मल जमा पड़ा रहता है। लोग अपने घरों के गन्दे जल को बाहर यूँ ही बिखरा देते हैं, जिससे मार्गों के गड्ढे भर जाते हैं। हमने कई बार निवेदन किया है कि हमारे क्षेत्र के तालाब को भरवा दिया जाए, जिससे मच्छरों का मुख्य अड्डा समाप्त हो जाए, किन्तु इस ओर कभी ध्यान नहीं दिया गया।

आपको विदित ही होगा कि पिछले एक महीने से नगर के समस्त सफाईकर्मी हड़ताल पर चल रहे हैं, जिसके कारण गलियों, सड़कों व मोहल्ले के मार्गों पर चतुर्दिक कूड़े-करकट का अम्बार लगा हुआ है। आपकी ओर से अविलम्ब कोई ऐसी वैकल्पिक व्यवस्था की जानी चाहिए, जिससे क्षेत्रवासियों द्वारा झेली जा रही नारकीय यातना से कुछ राहत प्राप्त हो सके।

इस बार अत्यधिक वर्षा के कारण जगह-जगह जल का जमाव हो गया है। सभी जगह कीचड़, मल और बदबूदार जल भरा हुआ है। अत: मैं पुन: सुभाष नगर के निवासियों की ओर से आपसे अनुरोध करता हूँ कि मच्छरों को समाप्त करने के लिए सार्वजनिक रूप से क्षेत्र में मच्छरनाशक दवाई छिड़कवाने की व्यवस्था की जाए। मलेरिया से बचने के लिए कुनीन बाँटने तथा पूरे क्षेत्र की सफाई के व्यापक प्रबन्ध किये जाएँ।

आशा है आप शीघ्र कार्यवाही करेंगे।

धन्यवाद सहित।

दिनांक : 19 जुलाई, 2018

भवदीय
क ख ग
मन्त्री, मोहल्ला सुधार समिति, सुभाष नगर।

प्रश्न 6. **आपके नगर में प्रदूषित पानी पीने से दस्त व हैजे के रोगी बढ़ रहे हैं। नगरपालिका के स्वास्थ्य अधिकारी को पत्र लिखकर स्थिति से अवगत कराएँ।** (2009)

या **अपनी ग्राम-सभा में एक स्वास्थ्यकर्मी नियुक्त करने के लिए जिला स्वास्थ्य अधिकारी को एक पत्र लिखिए।** (2012, 13)

सेवा में,
स्वास्थ्य अधिकारी,
कटनी नगरपालिका, कटनी।

विषय—प्रदूषित पानी से महामारी की आशंका।

महोदय,
पिछले कुछ समय से हमारे क्षेत्र में पीने का शुद्ध पानी नहीं आ रहा है। पानी का स्वाद भी कुछ बदला हुआ-सा है। इस पानी को पीने से लोगों को कई तरह के रोगों का सामना करना पड़ रहा है तथा दस्त व हैजे की आम शिकायत बनी हुई है। पानी को ध्यान से देखने पर पता चलता है कि इसका रंग कुछ मटमैला-सा है। हमारे क्षेत्र से एक सीवरेज पाइप भी गुज़रती है। इस बात की सम्भावना है कि पानी की पाइप में सीवरेज का गन्दा पानी मिल रहा हो। लोगों को पीने के पानी के लिए इसी पाइप लाइन का सहारा लेना पड़ता है। अगर इसी तरह प्रदूषित जल की आपूर्ति होती रही तो किसी महामारी की समस्या खड़ी हो सकती है। बीमारों की निरन्तर बढ़ती संख्या चिन्ता का कारण है। आपसे अनुरोध है कि हमारे क्षेत्र की पानी के पाइप लाइन की जाँच करवाएँ तथा उसे अति शीघ्र ठीक करवाएँ।

पुन: आपको सूचित कर रहा हूँ कि हमारे समीपस्थ प्राथमिक चिकित्सा केन्द्र में कोई भी अनुभवी स्वास्थ्यकर्मी नियुक्त नहीं है। अत: एक अनुभवी स्वास्थ्यकर्मी की नियुक्ति सुनिश्चित करने की कृपा करें।

आशा है, आप हमारी समस्या को गम्भीरता से लेंगे।

धन्यवाद !

भवदीय
असलम, रहीम, रहमान,
कादिर, गुल अहमद, गयासुद्दीन बेग।

दिनांक : 10 जून, 2018

प्रश्न 7. **बिजली-समस्या के निराकरण हेतु अपने जिले के बिजली विभाग को एक शिकायती पत्र लिखिए।** (2015)

सेवा में,
बिजली विभाग,
मेरठ।

विषय—बिजली की अनियमित आपूर्ति

मान्यवर,
हम 'जैन नगर' कॉलोनी के निवासी आपका ध्यान बिजली-समस्या की ओर आकर्षित कराना चाहते हैं। पानी तथा अन्य कार्यों के लिए बिजली की सर्वाधिक आवश्यकता ग्रीष्मकाल में ही होती है और हम सब अप्रैल के प्रारम्भ से ही अनुभव कर रहे हैं कि भरपूर गर्मी प्रारम्भ होने से पूर्व ही बिजली की आपूर्ति कम हो गई है। बिजली जीवन की मूलभूत आवश्यकता है। कोई भी लोकप्रिय सरकार इसकी उपेक्षा नहीं करती।

हमारी कॉलोनी में बिजली-आपूर्ति प्रारम्भ और बन्द होने का कोई समय भी निर्धारित नहीं है। हमारी कॉलोनी से एक प्रतिनिधि मण्डल इस सम्बन्ध में बिजली-आपूर्ति अधिकारी से भी मिला था और उन्होंने एक सप्ताह में बिजली-आपूर्ति बढ़ाने का वचन दिया था। खेद है कि आज तीन सप्ताह व्यतीत हो जाने पर भी कोई कार्यवाही इस सम्बन्ध में नहीं हुई है।

इस स्थिति में आपसे हमारा निवेदन है कि कृपया हमारी समस्या की ओर ध्यान दें और इसका शीघ्र समाधान करायें। यदि बिजली-आपूर्ति तुरन्त बढ़ाना सम्भव नहीं हो तो कम-से-कम उसका समय तो निर्धारित किया जा सकता है।

शीघ्र कार्यवाही की आशा में।

हम हैं आपके 'जैन नगर' निवासी
(1) .....
(2) .....
(3) .....
(4) .....

दिनांक : .....

प्रश्न 8. **यू०पी० ग्रामीण बैंक, इलाहाबाद के शाखा प्रबन्धक को फसल बीमा के अन्तर्गत प्राप्त होने वाली कृषक धनराशि के सम्बन्ध में एक प्रार्थना-पत्र लिखिए।** (2016)

सेवा में,
श्रीमान शाखा प्रबन्धक,
इलाहाबाद बैंक, शहर शाखा, मेरठ।

विषय—फसल बीमा के अन्तर्गत कृषक धनराशि की प्राप्ति हेतु।

महोदय,
निवेदन यह है कि प्रार्थी ने आपकी शाखा से अपनी पाँच बीघे धान की फसल का बीमा करवाया था। इसकी पॉलिसी संख्या 126796 तथा बीमा धनराशि ₹9,000/- है। प्रार्थी की फसल पानी के अभाव (बारिश का अभाव, नहर का सूख जाना व बिजली की किल्लत) के कारण सूख गई, जिसके कारण उसे भारी नुकसान उठाना पड़ा है। फिलहाल प्रार्थी के सामने आर्थिक संकट उत्पन्न हो गया है। इस सम्बन्ध में सम्बन्धित अधिकारियों को समय रहते सूचना दी जा चुकी है।
अत: आपसे अनुरोध है कि जल्द-से-जल्द प्रार्थी को उसके फसली बीमे की धनराशि दिलाने की कृपा करें।
धन्यवाद सहित।
दिनांक : ..... प्रार्थी
रामदुलारे
गाँव : रोहटा

प्रश्न 9. छात्रवृत्ति प्राप्त करने हेतु अपने विद्यालय के प्रधानाचार्य को एक आवेदन-पत्र लिखिए। (2016)

सेवा में,
श्रीमान प्रधानाचार्य,
आदर्श माध्यमिक विद्यालय
सिद्धार्थ नगर, झाँसी।

विषय—छात्रवृत्ति प्राप्त करने के लिए प्रार्थना-पत्र।

मान्यवर,
सविनय निवेदन यह है कि मैं बारहवीं कक्षा का छात्र हूँ। मैं सदा विद्यालय में अच्छे अंकों के साथ उत्तीर्ण होता रहा हूँ। पिछले कई वर्षों से मैं लगातार प्रथम आ रहा हूँ। इसके अलावा मैं भाषण-प्रतियोगिताओं, वाद-विवाद प्रतियोगिताओं में कई बार विद्यालय के लिए जोनल एवं राष्ट्रीय स्तर पर इनाम जीतकर लाया हूँ। खेल-कूद में भी मेरी गहन रुचि है। मैं स्कूल की कबड्डी टीम का कप्तान भी हूँ। सभी अध्यापक मेरी प्रशंसा करते हैं।
अत्यन्त दु:ख के साथ आपको बताना पड़ रहा है कि पिताजी को एक असाध्य रोग ने आ घेरा है जिसके कारण घर की आर्थिक दशा डगमगा गई है। पिताजी स्कूल से मेरा नाम कटवाना चाहते हैं। वे मेरा मासिक-शुल्क देने में असमर्थ हैं। मैंने अपनी पाठ्य-पुस्तकें तो जैसे-तैसे खरीद ली हैं, लेकिन शेष व्यय के लिए आपसे नम्र निवेदन है कि मुझे तीन सौ रुपये मासिक की छात्रवृत्ति देने की कृपा करें, ताकि मैं अपनी पढ़ाई सुचारू रूप से चला सकूँ। यह छात्रवृत्ति आपकी मेरे प्रति विशेष कृपा होगी। मैं आपको विश्वास दिलाता हूँ कि मैं खूब मेहनत से पढ़ूँगा और इस स्कूल का नाम रोशन करूँगा।

आपका आज्ञाकारी शिष्य
हस्ताक्षर .....
दिनांक : ..... कक्षा-12
रोल नं०-20

प्रश्न 10. अपने विद्यालय में कम्प्यूटरों के अभाव की ओर विद्यालय के प्रधानाचार्य का ध्यान आकृष्ट कराते हुए कम्प्यूटर की पूर्ति हेतु उन्हें एक प्रार्थना-पत्र लिखिए। (2016)

या **अपने विद्यालय में सन्दर्भ पुस्तकों के अभाव की ओर विद्यालय के प्रधानाचार्य का ध्यान आकृष्ट कराते हुए पुस्तकालय में उक्त पुस्तकों की पूर्ति हेतु एक प्रार्थनापत्र लिखिए।** (2018)

सेवा में,
श्रीमान प्रधानाचार्य,
रा०उ०मा० बाल विद्यालय, बेगमपुल, मेरठ।

विषय—कम्प्यूटर पूर्ति की व्यवस्था हेतु प्रार्थना-पत्र।

महोदय,
सविनय निवेदन है कि हम बारहवीं कक्षा के छात्र यह अनुभव करते हैं कि आज के कम्प्यूटर युग में प्रत्येक व्यक्ति को कम्प्यूटर की जानकारी होनी चाहिए। क्योंकि दिनोंदिन कम्प्यूटर शिक्षा की माँग बढ़ती जा रही है। ऐसे में हमारे उज्ज्वल भविष्य के लिए भी कम्प्यूटर का ज्ञान होना अपरिहार्य है। हालाँकि, विद्यालय में कम्प्यूटर विषय पढ़ाया जाता है और प्रयोगशाला कम्प्यूटर भी उपलब्ध है। लेकिन कम्प्यूटरों की संख्या सीमित होने के कारण हम छात्र निरन्तर अभ्यास नहीं कर पाते हैं। कभी-कभी तो अभ्यास किए बिना दो-दो हफ्ते बीत जाते हैं जिस कारण कक्षा में पढ़ाया गया अध्याय हम भली-भाँति नहीं समझ पाते हैं।
अत: आपसे प्रार्थना है कि विद्यालय की प्रयोगशाला में कम्प्यूटरों की संख्या को पर्याप्त मात्रा में उपलब्ध करवाने की कृपा करें। हम आपके प्रति कृतज्ञ होंगे। आशा है, आप हमारे अनुरोध को स्वीकार करेंगे।
धन्यवाद!

प्रार्थी
क ख ग
दिनांक : ..... कक्षा—बारह 'सी'।

[**नोट**—कम्प्यूटर के स्थान पर पुस्तक का सन्दर्भ दें।]

प्रश्न 11. पेयजल अधिकारी को पत्र लिखिए, जिसमें अनिवार्य रूप से जल प्राप्त होने की शिकायत की गई हो। (2016)

या **पानी की समस्या का निराकरण के लिए नगरपालिका के अध्यक्ष को एक आवेदन-पत्र लिखिए।** (2016)

या **अपने नगर में शुद्ध पेयजल आपूर्ति कराने हेतु जल संस्थान के प्रबन्धक को पत्र लिखिए।** (2017)

सेवा में,
श्रीमान निदेशक,
मेरठ जल बोर्ड, मेरठ।

विषय—पेयजल अधिकारी को जलापूर्ति हेतु प्रार्थना-पत्र।

संजय नगर,
पांडव नगर, मेरठ।
10 मई, 2016

महोदय,
मैं आपका ध्यान संजय नगर, पांडव नगर, मेरठ में पेयजल की अनियमित जल-आपूर्ति की ओर आकर्षित कराना चाहता हूँ। इस क्षेत्र में प्रात: केवल 35 मिनट ही नलों में पानी आता है। पानी का दबाव बहुत कम होता है, मोटर का प्रयोग करने पर भी ऊपर की मन्जिलों में पानी चढ़ नहीं पाता। सायंकाल भी पेयजल की आपूर्ति अनियमित है। कई बार शाम को दो-दो दिन पानी की आपूर्ति नहीं होती। पानी की इस अनियमित आपूर्ति से क्षेत्र के नागरिकों में रोष है। इससे पूर्व भी अनेक बार स्थानीय अधिकारियों को मैं इस समस्या से अवगत करा चुका हूँ, परन्तु स्थिति में कोई सुधार नहीं हुआ है।
अत: आपसे प्रार्थना है कि इस क्षेत्र में पेयजल की समुचित व्यवस्था कराने हेतु उचित कदम उठाने की कृपा करें।
मैं और मेरा पूरा क्षेत्र सदैव आपके आभारी रहेंगे।
धन्यवाद!

भवदीय
हस्ताक्षर .....
संजय कुमार
संजय नगर, पांडव नगर

प्रश्न 12. अपने नगर की सार्वजनिक भूमि पर हुए अवैध कब्जे को हटाने के लिए नगरपालिका अध्यक्ष को एक शिकायती पत्र लिखिए। (2016)

सेवा में,
नगरपालिका अध्यक्ष,
मेरठ।

विषय—अवैध कब्जे को हटाना।

मान्यवर,

हम 'लोहिया नगर' कॉलोनी के निवासी आपका ध्यान कॉलोनी और उसके आसपास हो रहे अवैध कब्जों की तरफ आकर्षित कराना चाहते हैं। यहाँ सावर्जनिक भूमि पर कुछ शरारती तत्त्वों ने कब्जा कर लिया है और वो वहाँ पर गैर-कानूनी कार्यों को बढ़ावा दे रहे हैं। इन गैर-कानूनी कार्यों में जुआ, नशाखोरी, शराब का अवैध व्यापार और कुछ हद तक वैश्यावृत्ति भी शामिल हैं। इन शरारती तत्त्वों और इनके द्वारा किए जा रहे कार्यों के कारण कालोनी की शान्ति और सुरक्षा पर प्रश्नचिह्न लगने लगा है। आए दिन यहाँ पर लड़ाई-झगड़ा, मारपीट व कॉलोनीवासियों के साथ गाली-गलौज की स्थिति उत्पन्न होती रहती है। इस कारण बच्चों और महिलाओं का घर से निकलना मुश्किल होता जा रहा है। इन शरारती तत्त्वों को कुछ राजनीतिक संरक्षण मिला होने के कारण हममें से कोई भी इनके खिलाफ ज्यादा नहीं बोल पाते हैं। अत: आपसे हमारा निवेदन है कि हमारी समस्या पर ध्यान देते हुए इसका अतिशीघ्र समाधान कराएँ।

शीघ्र कार्यवाही की आशा में

दिनांक : ..... समस्त लोहिया नगर निवासी

(1) .....

(2) .....

(3) .....

(4) .....

(5) .....

प्रश्न 13. प्राथमिक स्वास्थ्य-केन्द्र पर संक्रामक बीमारियों की रोक-थाम के लिए समुचित दवाइयों की उपलब्धता हेतु जिले के मुख्य चिकित्साधिकारी को एक पत्र लिखिए। (2016)

या **बढ़ते हुए संक्रामक रोग की रोकथाम के लिए मुख्य चिकित्साधिकारी को एक प्रार्थना-पत्र लिखिए।** (2018)

सेवा में,

मुख्य चिकित्साधिकारी,

मेरठ।

विषय—प्राथमिक स्वास्थ्य-केन्द्र पर संक्रामक बीमारियों की दवाइयों का अभाव।

महोदय,

मैं आपका ध्यान क्षेत्र के प्राथमिक स्वास्थ्य-केन्द्र पर संक्रामक बीमारियों से बचाव के लिए इस्तेमाल की जाने वाली जरूरी दवाइयों की कमी की ओर आकर्षित कराना चाहता हूँ। पूरे क्षेत्र में हैजा, डेंगू ज्वर, मलेरिया, टी०बी० (क्षय रोग) तथा पीत ज्वर जैसे संक्रामक रोग अपने चरम-बिन्दु पर हैं। इस कारण प्राथमिक स्वास्थ्य-केन्द्र पर पीड़ितों की संख्या निरन्तर बढ़ रही है। लेकिन आवश्यक दवाइयों के अभाव में डॉक्टर उचित इलाज नहीं कर पा रहे हैं। वहीं, डॉक्टरों द्वारा पीड़ितों को इलाज हेतु बाहर से लिखी जा रही दवाइयाँ इतने ऊँचे मूल्य पर मिल रही हैं जो आम जन की पहुँच से बाहर है। इस कारण पीड़ितों की संख्या में कमी नहीं आ पा रही है।

अत: आपसे अनुरोध है कि इस मामले को संज्ञान में लेते हुए यथाशीघ्र समुचित दवाइयों को उपलब्ध कराने का कष्ट करें ताकि पीड़ितों को जरूरी इलाज समय पर मिल सके और समय रहते स्वास्थ्य लाभ ले सकें।

धन्यवाद सहित।

दिनांक : .....

भवदीय

मदनगोपाल

खैरनगर, मेरठ

प्रश्न 14. नेपाल-भूकम्प-पीड़ितों की सहायतार्थ अपने गाँव द्वारा संचित धनराशि को यथास्थान पहुँचाने हेतु अपने जिलाधिकारी को एक पत्र लिखिए। (2016)

या **उज्जैन में बाढ़-पीड़ितों की सहायतार्थ अपने ग्राम द्वारा संचित धनराशि को पहुँचाने हेतु जिलाधिकारी को एक पत्र लिखिए।** (2016, 17)

सेवा में,

श्रीमान जिलाधिकारी महोदय,

मेरठ।

विषय—भूकम्प-पीड़ितों की सहायता हेतु धनराशि का संचय।

मान्यवर,

मैं आपका ध्यान विगत माह हमारे पड़ोसी देश नेपाल में आए विनाशकारी भूकम्प की ओर आकर्षित कराना चाहता हूँ। इस विनाशकारी भूकम्प में नेपाल को अत्यधिक जान-माल का नुकसान उठाना पड़ा है। एक ओर जहाँ इसके कारण हजारों लोगों को अपनी जान गँवानी पड़ी, वहीं दूसरी ओर इसने लाखों लोगों को बेघर कर दिया। इस आपदा के कारण नेपाल की आर्थिक स्थिति डाँवाँडोल हो गई है। साथ-ही, कुछ ऐतिहासिक इमारतों सहित बहुत-से पर्यटन स्थल भी तहस-नहस हो गए हैं। पीड़ितों को दैनिक जरूरतों के सामान के साथ खाने-पीने की चीजों की कमी का भी सामना करना पड़ रहा है। इस भयावह आपदा ने मुझे और मेरे पूरे गाँववासियों (लावड़) को झकझोर दिया। इस हादसे के पीड़ित लोगों को मानवीय सहायता के तौर पर समस्त गाँववासियों ने जितना सम्भव हो सका उतनी दैनिक जरूरतों का सामान, कपड़े व दवाइयों के साथ ₹50,000/- का इंतजाम किया है।

अत: आपसे अनुरोध है कि इस सहायता राशि और सामान को स्वीकार कर नेपाल पहुँचाने का यथाशीघ्र प्रबन्ध करें। आपदा की घड़ी से निकलने व पुन:निर्माण के क्रम में हम सम्पूर्ण देश सहित समस्त गाँववासी नेपाल के साथ हैं।

धन्यवाद सहित।

दिनांक .....

भवदीय

समस्त ग्रामवासी

❑

15

निबन्ध-लेखन

प्रश्न-परिचय— सामान्य हिन्दी के **खण्ड 'ख'** का **पन्द्रहवाँ प्रश्न** निबन्ध-लेखन से सम्बन्धित होगा। इसके अन्तर्गत प्रश्न-पत्र में **चार-पाँच विषय** दिये जाएँगे, जिनमें से किसी **एक** विषय पर सारगर्भित निबन्ध लिखना होगा। निबन्ध-लेखन के लिए कुल **2+7=9 अंक** निर्धारित हैं।

परीक्षार्थी ध्यान दें— निबन्ध अपनी भाषा-शैली में लिखना चाहिए तथा निबन्ध के पूर्व विचार-बिन्दुओं का उल्लेख अवश्य करना चाहिए।

प्रश्न— निम्नलिखित विषयों में से किसी एक विषय पर अपनी भाषा-शैली में निबन्ध लिखिए–

1. साहित्य और समाज
2. कम्प्यूटर : आधुनिक यन्त्र-मानव
3. पर्यावरण-प्रदूषण : समस्या और समाधान
4. मेरे प्रिय साहित्यकार : जयशंकर प्रसाद
5. भ्रष्टाचार : कारण और निवारण
6. आतंकवाद : समस्या एवं समाधान
7. विज्ञान : वरदान या अभिशाप
8. इण्टरनेट
9. महिला सशक्तीकरण
10. मेरे प्रिय कवि : तुलसीदास
11. स्वच्छता अभियान की सामाजिक सार्थकता
12. भारत में बेरोजगारी की समस्या
13. मानव-जीवन में वनों की उपयोगिता
14. को न कुसंगति पाई नसाई
15. ग्राम्य विकास की समस्याएँ और उनका समाधान

1. साहित्य और समाज (2010, 11, 12,15, 16)
या **साहित्य समाज का दर्पण है** (2011, 14, 16, 17, 18)
या **साहित्य और मानव-जीवन**
या **सामाजिक विकास में साहित्य की उपयोगिता** (2017)
या **साहित्य और समाज का घनिष्ठ सम्बन्ध** (2017)

प्रमुख विचार-बिन्दु— (1) प्रस्तावना, (2) साहित्य की कतिपय परिभाषाएँ, (3) साहित्य और समाज का पारस्परिक सम्बन्ध : साहित्य समाज का दर्पण, (4) साहित्य की रचना-प्रक्रिया, (5) साहित्य का समाज पर प्रभाव, (6) उपसंहार।

प्रस्तावना— 'साहित्य' शब्द 'सहित' से बना है। 'सहित' का भाव ही साहित्य कहलाता है (**सहितस्य भावः साहित्यः**)। 'सहित' के दो अर्थ हैं—साथ एवं हितकारी (स + हित = हितसहित) या कल्याणकारी। यहाँ 'साथ' से आशय है—शब्द और अर्थ का साथ अर्थात् सार्थक शब्दों का प्रयोग। सार्थक शब्दों का प्रयोग तो ज्ञान-विज्ञान की सभी शाखाएँ करती हैं। तब फिर साहित्य की अपनी क्या विशेषता है ? वस्तुतः साहित्य का ज्ञान-विज्ञान की समस्त शाखाओं से स्पष्ट अन्तर है—(1) ज्ञान-विज्ञान की शाखाएँ बुद्धिप्रधान या तर्कप्रधान होती हैं जबकि साहित्य हृदयप्रधान। (2) ये शाखाएँ तथ्यात्मक हैं जबकि साहित्य कल्पनात्मक। (3) ज्ञान-विज्ञान की शाखाओं का मुख्य लक्ष्य मानव की भौतिक सुख-समृद्धि एवं सुविधाओं का विधान करना है, पर साहित्य का लक्ष्य तो मानव के अन्तःकरण का परिष्कार करते हुए, उसमें सद्वृत्तियों का संचार करना है। आनन्द प्रदान कराना यदि साहित्य की सफलता है, तो मानव-मन का उन्नयन उसकी सार्थकता। (4) ज्ञान-विज्ञान की शाखाओं में कथ्य (विचार-तत्त्व) ही प्रधान होता है, कथन-शैली गौण। वस्तुतः भाषा-शैली वहाँ विचाराभिव्यक्ति की साधनमात्र है। दूसरी ओर साहित्य में कथ्य से अधिक शैली का महत्त्व है। उदाहरणार्थ—

जल उठा स्नेह दीपक-सा
नवनीत हृदय था मेरा,
अब शेष धूमरेखा से
चित्रित कर रहा अँधेरा।

कवि का कहना केवल यह है कि प्रिय के संयोगकाल में जो हृदय हर्षोल्लास से भरा रहता था, वही अब उसके वियोग में गहरे विषाद में डूब गया है। यह एक साधारण व्यापार है, जिसका अनुभव प्रत्येक प्रेमी-हृदय करता है, किन्तु कवि ने दीपक के रूपक द्वारा इसी साधारण-सी बात को अत्यधिक चमत्कारपूर्ण ढंग से कहा है, जो पाठक के हृदय को कहीं गहरा छू लेता है।

स्पष्ट है कि साहित्य में भाव और भाषा, कथ्य और कथन-शैली (अभिव्यक्ति)—दोनों का समान महत्त्व है। यह अकेली विशेषता ही साहित्य को ज्ञान-विज्ञान की शेष शाखाओं से अलग करने के लिए पर्याप्त है।

साहित्य की कतिपय परिभाषाएँ— प्रेमचन्द जी साहित्य की परिभाषा इन शब्दों में देते हैं, "सत्य से आत्मा का सम्बन्ध तीन प्रकार का है—एक जिज्ञासा का, दूसरा प्रयोजन का और तीसरा आनन्द का। जिज्ञासा का सम्बन्ध दर्शन का विषय है, प्रयोजन का सम्बन्ध विज्ञान का विषय है और आनन्द का सम्बन्ध केवल साहित्य का विषय है। सत्य जहाँ आनन्द का स्रोत बन जाता है, वहीं वह साहित्य हो जाता है।" इस बात को विश्वकवि **रवीन्द्रनाथ ठाकुर** इन शब्दों में कहते हैं, "जिस अभिव्यक्ति का मुख्य लक्ष्य प्रयोजन के रूप को व्यक्त करना नहीं अपितु विशुद्ध आनन्द रूप को व्यक्त करना है, उसी को मैं साहित्य कहता हूँ।" प्रसिद्ध अंग्रेज समालोचक **द क्विन्सी** (De Quincey) के अनुसार, "साहित्य का दृष्टिकोण उपयोगितावादी न होकर मानवतावादी है। ज्ञान-विज्ञान की शाखाओं का लक्ष्य मानव का ज्ञानवर्द्धन करना है, उसे शिक्षा देना है। इसके विपरीत साहित्य मानव का अन्तःविकास करता है, उसे जीवन जीने की कला सिखाता है, चित्तप्रसादन द्वारा उसमें नूतन प्रेरणा एवं स्फूर्ति का संचार करता है।"

समाज क्या है ?— एक ऐसा मानव-समुदाय, जो किसी निश्चित भू-भाग पर रहता हो, समान परम्पराओं, इतिहास, धर्म एवं संस्कृति से आपस में जुड़ा हो तथा एक भाषा बोलता हो, समाज कहलाता है।

साहित्य और समाज का पारस्परिक सम्बन्ध : साहित्य समाज का दर्पण— समाज और साहित्य परस्पर घनिष्ठ रूप से आबद्ध हैं। साहित्य का जन्म वस्तुतः समाज से ही होता है। साहित्यकार किसी समाज विशेष का ही घटक होता है। वह अपने समाज की परम्पराओं, इतिहास, धर्म, संस्कृति आदि से ही अनुप्राणित होकर साहित्य-रचना करता है और अपनी कृति में इनका चित्रण करता है। इस प्रकार साहित्यकार अपनी रचना की सामग्री किसी समाज विशेष से ही चुनता है तथा अपने समाज की आशाओं-आकांक्षाओं, सुखों-दुःखों, संघर्षों, अभावों और उपलब्धियों को वाणी देता है तथा उसका प्रामाणिक लेखा-जोखा

प्रस्तुत करता है। उसकी समर्थ वाणी का सहारा पाकर समाज अपने स्वरूप को पहचानता है और अपने रोग का सही निदान पाकर उसके उपचार को तत्पर होता है। इसी कारण किसी साहित्य विशेष को पढ़कर उस काल के समाज का एक समग्र-चित्र मानसपटल पर अंकित हो सकता है। इसी अर्थ में साहित्य को समाज का दर्पण कहा गया है।

साहित्य की रचना-प्रक्रिया—समर्थ साहित्यकार अपनी अतलस्पर्शिनी प्रतिभा द्वारा सबसे पहले अपने समकालीन सामाजिक जीवन का बारीकी से पर्यवेक्षण करता है, उसकी सफलताओं-असफलताओं, उपलब्धियों-अभावों, क्षमताओं-दुर्बलताओं तथा संगतियों-विसंगतियों की गहराई तक थाह लेता है। इसके पश्चात् विकृतियों और समस्याओं के मूल कारणों का निदान कर अपनी रचना के लिए उपयुक्त सामग्री का चयन करता है और फिर इस समस्त बिखरी हुई, परस्पर असम्बद्ध एवं अति साधारण-सी दीख पड़ने वाली सामग्री को सुसंयोजित कर उसे अपनी 'नवनवोन्मेषशालिनी' कल्पना के साँचे में ढालकर ऐसा कलात्मक रूप एवं सौष्ठव प्रदान करता है कि सहृदय अध्येता रस-विभोर हो नूतन प्रेरणा से अनुप्राणित हो उठता है। कलाकार का वैशिष्ट्य इसी में है कि उसकी रचना की अनुभूति एकाकी होते हुए भी सार्वदेशिक-सार्वकालिक बन जाए तथा अपने युग की समस्याओं का समाधान प्रस्तुत करते हुए चिरन्तन मानव-मूल्यों से मण्डित भी हो। उसकी रचना न केवल अपने युग अपितु आने वाले युगों के लिए भी नवस्फूर्ति का अजस्र स्रोत बन जाए और अपने देश-काल की उपेक्षा न करते हुए देश-कालातीत होकर मानवमात्र की अक्षय निधि बन जाए। यही कारण है कि महान् साहित्यकार किसी विशेष देश, जाति, धर्म एवं भाषा-शैली के समुदाय में जन्म लेकर भी सारे विश्व का अपना बन जाता है; उदाहरणार्थ—वाल्मीकि, व्यास, कालिदास, तुलसीदास, होमर, शेक्सपियर आदि किसी देश विशेष के नहीं मानवमात्र के अपने हैं, जो युगों से मानव को नवचेतना प्रदान करते आ रहे हैं और करते रहेंगे।

साहित्य का समाज पर प्रभाव—साहित्यकार अपने समकालीन समाज से ही अपनी रचना के लिए आवश्यक सामग्री का चयन करता है; अत: समाज पर साहित्य का प्रभाव भी स्वाभाविक है।

जैसा कि ऊपर संकेतित किया गया है कि महान् साहित्यकार में एक ऐसी नैसर्गिक या ईश्वरदत्त प्रतिभा होती है, एक ऐसी अतलस्पर्शिनी अन्तर्दृष्टि होती है कि वह विभिन्न दृश्यों, घटनाओं, व्यापारों या समस्याओं के मूल तक तत्क्षण पहुँच जाता है, जब कि राजनीतिज्ञ, समाजशास्त्री या अर्थशास्त्री उसका कारण बाहर टटोलते रह जाते हैं। इतना ही नहीं, साहित्यकार रोग का जो निदान करता और उपचार सुझाता है, वही वास्तविक समाधान होता है। इसी कारण **प्रेमचन्द जी** ने कहा है—"साहित्य राजनीति के आगे मशाल दिखाती हुई चलने वाली सच्चाई है, राजनीति के पीछे चलने वाली सच्चाई नहीं।" अंग्रेज कवि **शेली** ने कवियों को 'विश्व के अघोषित विधायक' (un-acknowledged legislators of the world) कहा है।

प्राचीन ऋषियों ने कवि को विधाता और द्रष्टा कहा है—**'कविर्मनीषी धाता स्वयम्भू:।'** साहित्यकार कितना बड़ा द्रष्टा होता है, इसका एक ही उदाहरण पर्याप्त होगा। आज से लगभग 70-75 वर्ष पूर्व **श्री देवकीनन्दन खत्री** ने अपने तिलिस्मी उपन्यास **'रोहतासमठ'** में यन्त्रमानव (Robot) के कार्यों का विस्मयकारी चित्रण किया था। उस समय यह सर्वथा कपोल-कल्पित लगा; क्योंकि उस काल में यन्त्रमानव की बात किसी ने सोची तक न थी, किन्तु आज विज्ञान ने उस दिशा में बहुत प्रगति कर ली है, यह देख श्री खत्री की नवनवोन्मेषशालिनी प्रतिभा के सम्मुख नतमस्तक होना पड़ता है। इसी प्रकार आज से लगभग 2000 वर्ष पूर्व पुष्पक विमान के विषय में पढ़ना कल्पनामात्र लगता होगा, परन्तु आज उससे कहीं अधिक प्रगति वैमानिकी ने की है।

साहित्य द्वारा सामाजिक और राजनीतिक क्रान्तियों के उल्लेखों से तो विश्व का इतिहास भरा पड़ा है। सम्पूर्ण यूरोप को गम्भीर रूप से आलोड़ित कर डालने वाली फ्रांस की राज्य क्रान्ति (1789 ई०), रूसो की 'ला कोंत्रा सोशियल' (La Contract Social—सामाजिक-अनुबन्ध) नामक पुस्तक के प्रकाशन का ही परिणाम थी। आधुनिक काल में चार्ल्स डिकेन्स के उपन्यासों ने इंग्लैण्ड से कितनी ही घातक सामाजिक एवं शैक्षिक रूढ़ियों का उन्मूलन कराकर नूतन स्वस्थ सामाजिक व्यवस्था का सूत्रपात कराया।

आधुनिक युग में **प्रेमचन्द** के उपन्यासों में कृषकों पर जमींदारों के बर्बर अत्याचारों एवं महाजनों द्वारा उनके क्रूर शोषण के चित्रों ने समाज को जमींदारी-उन्मूलन एवं ग्रामीण क्षेत्रों में बैंकों की स्थापना को प्रेरित किया। उधर बंगाल में **शरत्चन्द्र** ने अपने उपन्यासों में कन्याओं के बाल-विवाह की अमानवीयता एवं विधवा-विवाह-निषेध की नृशंसता को ऐसी सशक्तता से उजागर किया कि अन्तत: बाल-विवाह को कानून द्वारा निषिद्ध घोषित किया गया एवं विधवा-विवाह का प्रचलन हुआ।

उपसंहार—निष्कर्ष यह है कि समाज और साहित्य का परस्पर अन्योन्याश्रित सम्बन्ध है। साहित्य समाज से ही उद्भूत होता है; क्योंकि साहित्यकार किसी समाज विशेष का ही अंग होता है। वह इसी से प्रेरणा ग्रहण कर साहित्य-रचना करता है एवं अपने युग की समस्याओं का समाधान प्रस्तुत करता हुआ समकालीन समाज का मार्गदर्शन करता है, किन्तु साहित्यकार की महत्ता इसमें है कि वह अपने युग की उपज होने पर भी उसी से बँधकर नहीं रह जाये, अपितु अपनी रचनाओं से चिरन्तन मानवीय आदर्शों एवं मूल्यों की स्थापना द्वारा देशकालातीत बनकर सम्पूर्ण मानवता को नयी ऊर्जा एवं प्रेरणा से स्पन्दित करे। इसी कारण साहित्य को विश्व-मानव की सर्वोत्तम उपलब्धि माना गया है, जिसकी समकक्षता संसार की मूल्यवान्-से-मूल्यवान् वस्तु भी नहीं कर सकती; क्योंकि संसार का सारा ज्ञान-विज्ञान मानवता के शरीर का ही पोषण करता है, जब कि एकमात्र साहित्य ही उसकी आत्मा का पोषक है। एक अंग्रेज विद्वान् ने कहा है कि "यदि कभी सम्पूर्ण अंग्रेज जाति नष्ट भी हो जाए, किन्तु केवल शेक्सपियर बचा रहे तो अंग्रेज जाति नष्ट नहीं हुई मानी जाएगी।" ऐसे युगस्रष्टा और युगदृष्टा कलाकारों के सम्मुख सम्पूर्ण मानवता कृतज्ञतापूर्वक नतमस्तक होकर उन्हें अपने हृदय-सिंहासन पर प्रतिष्ठित करती है एवं उनके यश को दिग्दिगन्तव्यापी बना देती है। अपने पार्थिव शरीर से तिरोहित हो जाने पर भी वे अपने यशरूपी शरीर से इस धराधाम पर सदा अजर-अमर बने रहते हैं

जयन्ति ते सुकृतिनो रससिद्धाः कवीश्वराः।
नास्ति येषां यशः काये जरामरणजं भयम्॥

2. कम्प्यूटर : आधुनिक यन्त्र-मानव (2013, 15, 16)
या **कम्प्यूटर के प्रयोग से लाभ तथा हानि** (2010)
या **भारत में कम्प्यूटर का महत्त्व** (2013, 15, 18)

प्रमुख विचार-बिन्दु (1) प्रस्तावना, (2) कम्प्यूटर के उपयोग, (3) कम्प्यूटर तकनीक से हानियाँ, (4) कम्प्यूटर और मानव-मस्तिष्क, (5) उपसंहार।

प्रस्तावना—कम्प्यूटर असीमित क्षमताओं वाला वर्तमान युग का एक क्रान्तिकारी साधन है। यह एक ऐसा यन्त्र-पुरुष है, जिसमें यान्त्रिक मस्तिष्कों का रूपात्मक और समन्वयात्मक योग तथा गुणात्मक घनत्व पाया जाता है। इसके परिणामस्वरूप यह कम-से-कम समय में तीव्रगति से त्रुटिहीन गणनाएँ कर लेता है। आरम्भ में, गणित की जटिल गणनाएँ करने के लिए ही कम्प्यूटर का आविष्कार किया गया था। आधुनिक कम्प्यूटर के प्रथम सिद्धान्तकार **चार्ल्स बैबेज** (सन् 1792-1871 ई०) ने गणित और खगोल-विज्ञान की सूक्ष्म सारणियाँ तैयार करने के लिए ही एक भव्य कम्प्यूटर की योजना तैयार की थी। उन्नीसवीं सदी के अन्तिम दशक में अमेरिकी इंजीनियर **हरमन होलेरिथ** ने जनगणना से सम्बन्धित आँकड़ों का विश्लेषण करने के लिए पंचकार्डों पर आधारित कम्प्यूटर का प्रयोग किया था। दूसरे महायुद्ध के दौरान पहली बार बिजली से चलने वाले कम्प्यूटर बने। इनका उपयोग भी गणनाओं के लिए ही हुआ। आज के कम्प्यूटर केवल गणनाएँ करने तक ही सीमित नहीं रह गये हैं वरन् अक्षरों, शब्दों, आकृतियों और कथनों को ग्रहण करने में अथवा इससे भी अधिक अनेकानेक कार्य करने में समर्थ हैं। आज कम्प्यूटरों का मानव-जीवन के अधिकाधिक क्षेत्रों में उपयोग करना सम्भव हुआ है। अब कम्प्यूटर संचार और नियन्त्रण के भी शक्तिशाली साधन बन गये हैं।

कम्प्यूटर के उपयोग—आज जीवन के विभिन्न क्षेत्रों में कम्प्यूटरों के व्यापक उपयोग हो रहे हैं—

1. प्रकाशन के क्षेत्र में—सन् 1971 ई० में **माइक्रोप्रोसेसर** का आविष्कार हुआ। इस आविष्कार ने कम्प्यूटरों को छोटा, सस्ता और कई गुना शक्तिशाली बना दिया। माइक्रोप्रोसेसर के आविष्कार के बाद कम्प्यूटर का अनेक कार्यों में उपयोग सम्भव हुआ। **शब्द-संसाधक** (वर्ड प्रोसेसर) कम्प्यूटरों के साथ स्क्रीन व प्रिण्टर जुड़ जाने से इनकी उपयोगिता का खूब विस्तार हुआ है। सर्वप्रथम एक लेख सम्पादित होकर कम्प्यूटर में संचित होता है। टंकित मैटर को कम्प्यूटर की स्क्रीन पर देखा जा सकता है और उसमें संशोधन भी किया जा सकता है। इसके बाद मशीनों से छपाई होती है। अब तो अतिविकसित देशों (ब्रिटेन आदि) में बड़े समाचार-पत्रों में सम्पादकीय विभाग में एक सिरे पर कम्प्यूटरों में मैटर भरा जाता है तथा दूसरे सिरे पर तेज रफ्तार से इलेक्ट्रॉनिक प्रिण्टर समाचार-पत्र छापकर निकाल देते हैं।

2. बैंकों में—कम्प्यूटर का उपयोग बैंकों में किया जाने लगा है। कई राष्ट्रीयकृत बैंकों ने चुम्बकीय संख्याओं वाली चेक-बुक भी जारी कर दी हैं। खातों के संचालन और लेन-देन का हिसाब रखने वाले कम्प्यूटर भी बैंकों में स्थापित हो रहे हैं। आज कम्प्यूटर के द्वारा ही बैंकों में 24 घण्टे पैसों के लेन-देन की ए०टी०एम० (Automated Teller Machine) जैसी सेवाएँ सम्भव हो सकी हैं। यूरोप और अमेरिका में ही नहीं अब भारत में भी ऐसी व्यवस्थाएँ अस्तित्व में आ गयी हैं कि घर के निजी कम्प्यूटरों के जरिये बैंकों से भी लेन-देन का व्यवहार सम्भव हुआ है।

3. सूचनाओं के आदान-प्रदान में—प्रारम्भ में कम्प्यूटर की गतिविधियाँ वातानुकूलित कक्षों तक ही सीमित थीं, किन्तु अब एक कम्प्यूटर हजारों किलोमीटर दूर के दूसरे कम्प्यूटरों के साथ 'बातचीत' कर सकता है तथा उसे सूचनाएँ भेज सकता है। दो कम्प्यूटरों के बीच यह सम्बन्ध तारों, माइक्रोवेव तथा उपग्रहों के जरिये स्थापित होता है। सूचनाओं के आदान-प्रदान के लिए देश के सभी प्रमुख छोटे-बड़े शहरों को कम्प्यूटर नेटवर्क के जरिये एक-दूसरे से जोड़ने की प्रक्रिया शीघ्र ही पूर्ण होने वाली है। इण्टरनेट जैसी सुविधा से आज देश का प्रत्येक नगर सम्पूर्ण विश्व से जुड़ गया है।

4. आरक्षण के क्षेत्र में—कम्प्यूटर नेटवर्क की अनेक व्यवस्थाएँ अब हमारे देश में स्थापित हो गयी हैं। सभी प्रमुख एयरलाइन्स की हवाई यात्राओं के आरक्षण के लिए अब ऐसी व्यवस्था है कि भारत के किसी शहर से आपकी समूची हवाई-यात्रा के आरक्षण के साथ-साथ विदेशों में आपकी इच्छानुसार होटल भी आरक्षित हो जाएगा। कम्प्यूटर नेटवर्क से अब देश के सभी प्रमुख शहरों में रेल-यात्रा के आरक्षण की व्यवस्था भी अस्तित्व में आ गयी है।

5. कम्प्यूटर ग्राफिक्स में—कम्प्यूटर केवल अंकों और अक्षरों को ही नहीं, वरन् रेखाओं और आकृतियों को भी सँभाल सकते हैं। कम्प्यूटर ग्राफिक्स की इस व्यवस्था के अनेक उपयोग हैं। भवनों, मोटरगाड़ियों, हवाई-जहाजों आदि के डिज़ाइन तैयार करने में कम्प्यूटर ग्राफिक्स का व्यापक उपयोग हो रहा है। वास्तुशिल्पी अब अपने डिज़ाइन कम्प्यूटर स्क्रीन पर तैयार करते हैं और संलग्न प्रिण्टर से इनके प्रिण्ट भी प्राप्त कर लेते हैं। यहाँ तक कि कम्प्यूटर चिप्स के सर्किटों के डिजाइन भी अब कम्प्यूटर ग्राफिक्स की मदद से तैयार होने लगे हैं। वैज्ञानिक अनुसन्धान भी कम्प्यूटर के स्क्रीन पर किये जा रहे हैं।

6. कला के क्षेत्र में—कम्प्यूटर अब चित्रकार की भूमिका भी निभाने लगे हैं। चित्र तैयार करने के लिए अब रंगों, तूलिकाओं, रंग-पट्टिका और कैनवास की कोई आवश्यकता नहीं रह गयी है। चित्रकार अब कम्प्यूटर के सामने बैठता है और अपने नियोजित प्रोग्राम की मदद से अपनी इच्छा के अनुसार स्क्रीन पर रंगीन रेखाएँ प्रस्तुत कर देता है। रेखांकनों से स्क्रीन पर निर्मित कोई भी चित्र 'प्रिण्ट' की कुञ्जी दबाते ही, अपने समूचे रंगों के साथ कम्प्यूटर से संलग्न प्रिण्टर द्वारा कागज पर छाप दिया जाता है।

7. संगीत के क्षेत्र में—कम्प्यूटर अब सुर सजाने का काम भी करने लगे हैं। पाश्चात्य संगीत के स्वरांकन को कम्प्यूटर स्क्रीन पर प्रस्तुत करने में कोई कठिनाई नहीं होती, परन्तु वीणा जैसे भारतीय वाद्य की स्वरलिपि तैयार करने में कठिनाइयाँ आ रही हैं, परन्तु वह दिन दूर नहीं है जब भारतीय संगीत की स्वर-लहरियों को कम्प्यूटर स्क्रीन पर उभारकर उनका विश्लेषण किया जाएगा और संगीत-शिक्षा की नयी तकनीक विकसित की जा सकेंगी।

8. खगोल-विज्ञान के क्षेत्र में—कम्प्यूटरों ने वैज्ञानिक अनुसन्धान के अनेक क्षेत्रों का समूचा ढाँचा ही बदल दिया है। पहले खगोलविद् दूरबीनों पर रात-रातभर आँखें गड़ाकर आकाश के पिण्डों का अवलोकन करते थे, किन्तु अब किरणों की मात्रा के अनुसार ठीक-ठीक चित्र उतारने वाले इलेक्ट्रॉनिक उपकरण उपलब्ध हो गये हैं। इन चित्रों में निहित जानकारी का व्यापक विश्लेषण अब कम्प्यूटरों से होता है।

9. चुनावों में—इलेक्ट्रॉनिक वोटिंग मशीन भी एक सरल कम्प्यूटर ही है। मतदान के लिए ऐसी वोटिंग मशीनों का उपयोग सीमित पैमाने पर ही सही अब हमारे देश में भी हो रहा है।

10. उद्योग-धन्धों में—कम्प्यूटर उद्योग-नियन्त्रण के भी शक्तिशाली साधन हैं। बड़े-बड़े कारखानों के संचालन का काम अब कम्प्यूटर सँभालने लगे हैं। कम्प्यूटरों से जुड़कर रोबोट अनेक किस्म के औद्योगिक उत्पादनों को सँभाल सकते हैं। कम्प्यूटर भयंकर गर्मी और ठिठुरती सर्दी में भी यथावत् कार्य करते हैं। इनका उस पर कोई असर नहीं पड़ता। हमारे देश में अब अधिकांश निजी व्यवसायों में कम्प्यूटर का प्रयोग होने लगा है।

11. सैनिक कार्यों में—आज प्रमुख रूप से महायुद्ध की तैयारी के लिए नये-नये शक्तिशाली सुपर कम्प्यूटरों का विकास किया जा रहा है। महाशक्तियों की 'स्टार वार्स' की योजना कम्प्यूटरों के नियन्त्रण पर आधारित है। पहले भारी कीमत देकर हमारे देश में सुपर कम्प्यूटर आयात किये जा रहे थे; परन्तु अब इन सुपर कम्प्यूटरों का निर्माण हमारे देश में भी किया जा रहा है।

12. अपराध-निवारण में—अपराधों के निवारण में भी कम्प्यूटर की अत्यधिक उपयोगिता है। पश्चिम के कई देशों में सभी अधिकृत वाहन मालिकों, चालकों, अपराधियों का रिकॉर्ड पुलिस के एक विशाल कम्प्यूटर में संरक्षित होता है। कम्प्यूटर द्वारा क्षण मात्र में अपेक्षित जानकारी उपलब्ध हो जाती है, जो कि अपराधियों के पकड़ने में सहायक सिद्ध होती है। यही नहीं, किसी भी अपराध से सन्दर्भित अनेकानेक तथ्यों में से विश्लेषण द्वारा कम्प्यूटर नये तथ्य ढूँढ़ लेता है तथा किसी अपराधी का कैसा भी चित्र उपलब्ध होने पर वह उसकी सहायता से अपराधी के किसी भी उम्र और स्वरूप की तस्वीर प्रस्तुत कर सकता है।

कम्प्यूटर तकनीक से हानियाँ—जीवन के विभिन्न क्षेत्रों में कम्प्यूटर तकनीकी के निरन्तर बढ़ते जा रहे व्यापक उपयोगों ने जहाँ एक ओर इसकी उपयोगिता दर्शायी है, वहीं दूसरी ओर इसके भयावह परिणामों को भी अनदेखा नहीं किया जा सकता। यह स्पष्ट प्रतीत हो रहा है कि कम्प्यूटर हर क्षेत्र में मानव-श्रम को नगण्य बना देगा, जिससे भारत सदृश जनसंख्या बहुल देशों में बेरोजगारी की समस्या विकराल रूप धारण कर लेगी। विभिन्न विभागों में इसकी स्थापना से कर्मचारी भविष्य के प्रति अनाश्वस्त हो गये हैं।

बैंकों आदि में इस व्यवस्था के कुछ दुष्परिणाम भी सामने आये हैं। दूसरों के खातों के कोड नम्बर जानकर प्रति वर्ष करोड़ों डॉलरों से बैंकों को ठगना अमेरिका में एक आम बात हो गयी है। हमारे देश के बैंकों में बिना कम्प्यूटरों के करोड़ों की ठगी के मामले आये दिन सामने आते रहते हैं। ज्योतिष के क्षेत्र में भी इसके परिणाम शत-प्रतिशत सही नहीं निकले हैं।

कम्प्यूटर और मानव-मस्तिष्क—कम्प्यूटर के सन्दर्भ में ढेर सारी भ्रान्तियाँ जनसामान्य के मस्तिष्क में छायी हुई हैं। कुछ लोग इसे सुपर पावर समझ बैठे हैं, जिसमें सब कुछ करने की क्षमता है। किन्तु उनकी धारणाएँ पूर्णरूपेण निराधार हैं। वास्तविकता तो यह है कि कम्प्यूटर एकत्रित आँकड़ों का इलेक्ट्रॉनिक विश्लेषण प्रस्तुत करने वाली एक मशीन मात्र है। यह केवल वही काम कर सकता है, जिसके लिए इसे निर्देशित किया गया हो। यह कोई निर्णय स्वयं नहीं ले सकता और न ही कोई नवीन बात सोच सकता है। यह मानवीय संवेदनाओं, अभिरुचियों, भावनाओं और चित्त से रहित मात्र एक यन्त्र-पुरुष है, जिसकी बुद्धि-लब्धि (Intelligence Quotient : I.Q.) मात्र एक मक्खी के बराबर होती है, यानि बुद्धिमत्ता में कम्प्यूटर मनुष्य से कई हजार गुना पीछे है।

उपसंहार—निष्कर्ष रूप में यह कहा जा सकता है कि कम्प्यूटर टेक्नोलॉजी के भी दो पक्ष हैं। इसको सोच-समझकर उपयोग किया जाए तो यह वरदान सिद्ध हो

सकता है, अन्यथा यह मानव-जाति की तबाही का साधन भी बन सकता है। इसीलिए कम्प्यूटर की क्षमताओं को ठीक से समझना जरूरी है। इलेक्ट्रॉनिकी शिक्षा एवं साधन; कम्प्यूटर टेक्नोलॉजी की उपेक्षा नहीं कर सकते। लेकिन इनके लिए यदि बुनियादी शिक्षा की समुचित व्यवस्था की जाती, देश में टेक्नोलॉजी के साधन जुटाये जाते और पाश्चात्य संस्कृति में विकसित हुई इस टेक्नोलॉजी को देश की परिस्थितियों को ध्यान में रखकर धीरे-धीरे अपनाया जाता तो अच्छा होता।

3. **पर्यावरण-प्रदूषण : समस्या और समाधान** (2009, 10, 11, 12, 13, 14, 17, 18)
या **पर्यावरण और प्रदूषण** (2011)
या **पर्यावरण संरक्षण का महत्त्व** (2013)
या **असन्तुलित पर्यावरण : प्राकृतिक आपदाओं का कारण** (2014)
या **विश्व परिदृश्य में पर्यावरण प्रदूषण**
या **पर्यावरण प्रदूषण : कारण और निवारण** (2013, 14, 15)
या **धरती की रक्षा : पर्यावरण सुरक्षा** (2013, 15, 16, 18)
या **पर्यावरण असन्तुलन** (2015)
या **पर्यावरण प्रदूषण रोकने के उपाय** (2018)

प्रमुख विचार-बिन्दु (1) प्रस्तावना, (2) प्रदूषण का अर्थ, (3) प्रदूषण के प्रकार, (4) प्रदूषण की समस्या और उससे हानियाँ, (5) समस्या का समाधान, (6) उपसंहार।

प्रस्तावना–जो हमें चारों ओर से परिवृत किये हुए है, वही हमारा पर्यावरण है। इस पर्यावरण के प्रति जागरूकता आज की प्रमुख आवश्यकता है; क्योंकि यह प्रदूषित हो रहा है। प्रदूषण की समस्या प्राचीन एवं मध्यकालीन भारत के लिए अज्ञात थी। यह वर्तमान युग में हुई औद्योगिक प्रगति एवं शस्त्रास्त्रों के निर्माण के फलस्वरूप उत्पन्न हुई है। आज इसने इतना विकराल रूप धारण कर लिया है कि इससे मानवता के विनाश का संकट उत्पन्न हो गया है। मानव-जीवन मुख्यत: स्वच्छ वायु और जल पर निर्भर है, किन्तु यदि ये दोनों ही चीजें दूषित हो जाएँ तो मानव के अस्तित्व को ही भय पैदा होना स्वाभाविक है; अत: इस भयंकर समस्या के कारणों एवं उनके निराकरण के उपायों पर विचार करना मानवमात्र के हित में है। ध्वनि-प्रदूषण पर अपने विचार व्यक्त करते हुए नोबेल पुरस्कार विजेता **रॉबर्ट कोच** ने कहा था, "एक दिन ऐसा आएगा जब मनुष्य को स्वास्थ्य के सबसे बड़े शत्रु के रूप में निर्दयी शोर से संघर्ष करना पड़ेगा।" लगता है कि वह दु:खद दिन अब आ गया है।

प्रदूषण का अर्थ—स्वच्छ वातावरण में ही जीवन का विकास सम्भव है। पर्यावरण का निर्माण प्रकृति के द्वारा किया गया है। प्रकृति द्वारा प्रदत्त पर्यावरण जीवधारियों के अनुकूल होता है। जब इस पर्यावरण में किन्हीं तत्त्वों का अनुपात इस रूप में बदलने लगता है, जिसका जीवधारियों के जीवन पर प्रतिकूल प्रभाव पड़ने की सम्भावना होती है तब कहा जाता है कि पर्यावरण प्रदूषित हो रहा है। यह प्रदूषित वातावरण जीवधारियों के लिए अनेक प्रकार से हानिकारक होता है। जनसंख्या की असाधारण वृद्धि एवं औद्योगिक प्रगति ने प्रदूषण की समस्या को जन्म दिया है और आज इसने इतना विकराल रूप धारण कर लिया है कि इससे मानवता के विनाश का संकट उत्पन्न हो गया है। औद्योगिक तथा रासायनिक कूड़े-कचरे के ढेर से पृथ्वी, हवा तथा पानी प्रदूषित हो रहे हैं।

प्रदूषण के प्रकार—आज के वातावरण में प्रदूषण निम्नलिखित रूपों में दिखाई पड़ता है—

1. **वायु-प्रदूषण**—वायु जीवन का अनिवार्य स्रोत है। प्रत्येक प्राणी को स्वस्थ रूप से जीने के लिए शुद्ध वायु की आवश्यकता होती है, जिस कारण वायुमण्डल में इसका विशेष अनुपात होना आवश्यक है। जीवधारी साँस द्वारा ऑक्सीजन ग्रहण करता है और कार्बन डाइ-ऑक्साइड छोड़ता है। पेड़-पौधे कार्बन डाइ-ऑक्साइड लेते हैं और हमें ऑक्सीजन प्रदान करते हैं। इससे वायुमण्डल में शुद्धता बनी रहती है, परन्तु मनुष्य की अज्ञानता और स्वार्थी प्रवृत्ति के कारण आज वृक्षों का अत्यधिक कटाव हो रहा है। घने जंगलों से ढके पहाड़ आज नंगे दीख पड़ते हैं। इससे ऑक्सीजन का सन्तुलन बिगड़ गया है और वायु अनेक हानिकारक गैसों से प्रदूषित हो गयी है। इसके अलावा कोयला, तेल, धातुकणों तथा कारखानों की चिमनियों के धुएँ से हवा में अनेक हानिकारक गैसें भर गयी हैं, जो प्राचीन इमारतों, वस्त्रों, धातुओं तथा मनुष्यों के फेफड़ों के लिए अत्यन्त घातक हैं। देश की राजधानी दिल्ली में गाड़ियों और औद्योगिक संयन्त्रों से निकलने वाले धुएँ से आँखें ही जलने लगती हैं, साथ ही फेफड़े भी कालिख की खतरनाक महीन परत से ढक जाते हैं।
2. **जल-प्रदूषण**—जीवन के अनिवार्य स्रोत के रूप में वायु के बाद प्रथम आवश्यकता जल की ही होती है। जल को जीवन कहा जाता है। जल का शुद्ध होना स्वस्थ जीवन के लिए बहुत आवश्यक है। देश के प्रमुख नगरों के जल का स्रोत हमारी सदानीरा नदियाँ हैं, फिर भी हम देखते हैं कि बड़े-बड़े नगरों के गन्दे नाले तथा सीवरों को नदियों से जोड़ दिया जाता है। विभिन्न औद्योगिक व घरेलू स्रोतों से नदियों व अन्य जल-स्रोतों में दिनों-दिन प्रदूषण पनपता जा रहा है। तालाबों, पोखरों व नदियों में जानवरों को नहलाना, मनुष्यों एवं जानवरों के मृत शरीर को जल में प्रवाहित करना आदि ने जल-प्रदूषण में बेतहाशा वृद्धि की है। कानपुर, आगरा, मुम्बई, अलीगढ़ और न जाने कितने नगरों के कल-कारखानों का कचरा गंगा-यमुना जैसी पवित्र नदियों को प्रदूषित करता हुआ सागर तक पहुँच रहा है। औद्योगिक नगरों के निकट के जल-स्रोतों को दूषित करने में रेडियोऐक्टिव व्यर्थ पदार्थ तथा धात्विक पदार्थ भी विशेष योगदान देते हैं। प्लास्टिक की थैलियाँ, तैलीय पदार्थ तथा कृषि कार्य में प्रयुक्त होने वाले कीटनाशक तथा रासायनिक उर्वरकों के जल में मिलने से भी जल-प्रदूषण बढ़ता है।
3. **ध्वनि-प्रदूषण**—ध्वनि-प्रदूषण आज की एक नयी समस्या है। इसे वैज्ञानिक प्रगति ने पैदा किया है। मोटरकार, ट्रैक्टर, जेट विमान, कारखानों के सायरन, मशीनें, लाउडस्पीकर आदि ध्वनि के सन्तुलन को बिगाड़कर ध्वनि-प्रदूषण उत्पन्न करते हैं। तेज ध्वनि से श्रवण-शक्ति का ह्रास तो होता ही है साथ ही कार्य करने की क्षमता पर भी बुरा प्रभाव पड़ता है। इससे अनेक प्रकार की बीमारियाँ पैदा हो जाती हैं। अत्यधिक ध्वनि-प्रदूषण से मानसिक विकृति तक हो सकती है।
4. **रेडियोधर्मी प्रदूषण**—आज के युग में वैज्ञानिक परीक्षणों का जोर है। परमाणु परीक्षण निरन्तर होते ही रहते हैं। इनके विस्फोट से रेडियोधर्मी पदार्थ वायुमण्डल में फैल जाते हैं और अनेक प्रकार से जीवन को क्षति पहुँचाते हैं। दूसरे विश्व-युद्ध के समय हिरोशिमा और नागासाकी में जो परमाणु बम गिराये गये थे, उनसे लाखों लोग अपंग हो गये थे और आने वाली पीढ़ी भी इसके हानिकारक प्रभाव से अभी भी अपने को बचा नहीं पायी है।
5. **रासायनिक प्रदूषण**—कारखानों से बहते हुए अवशिष्ट द्रव्यों के अतिरिक्त उपज में वृद्धि की दृष्टि से प्रयुक्त कीटनाशक दवाइयों और रासायनिक खादों से भी स्वास्थ्य पर प्रतिकूल प्रभाव पड़ता है। ये पदार्थ पानी के साथ बहकर नदियों, तालाबों और अन्तत: समुद्र में पहुँच जाते हैं और जीवन को अनेक प्रकार से हानि पहुँचाते हैं।

प्रदूषण की समस्या और उससे हानियाँ—निरन्तर बढ़ती हुई मानव जनसंख्या, रेगिस्तान का बढ़ते जाना, भूमि का कटाव, ओजोन की परत का सिकुड़ना, धरती के तापमान में वृद्धि, वनों के विनाश तथा औद्योगीकरण ने विश्व के सम्मुख प्रदूषण की समस्या पैदा कर दी है। कारखानों के धुएँ से, विषैले कचरे के बहाव से तथा जहरीली गैसों के रिसाव से आज मानव-जीवन समस्याग्रस्त हो गया है। आज तकनीकी ज्ञान के बल पर मानव विकास की दौड़ में एक-दूसरे से आगे निकल जाने की होड़ में लगा है। इस होड़ में वह तकनीकी ज्ञान का ऐसा गलत उपयोग कर रहा है, जो सम्पूर्ण मानव-जाति के लिए विनाश का कारण बन सकता है। युद्ध में आधुनिक तकनीकों पर आधारित मिसाइलों और

प्रक्षेपास्त्रों ने जन-धन की अपार क्षति तो की ही है साथ ही पर्यावरण पर भी घातक प्रभाव डाला है, जिसके परिणामस्वरूप स्वास्थ्य में गिरावट, उत्पादन में कमी और विकास प्रक्रिया में बाधा आयी है। वायु-प्रदूषण का गम्भीर प्रतिकूल प्रभाव मनुष्यों एवं अन्य प्राणियों के स्वास्थ्य पर पड़ता है। सिरदर्द, आँखें दुखना, खाँसी, दमा, हृदय रोग आदि किसी-न-किसी रूप में वायु-प्रदूषण से जुड़े हुए हैं। प्रदूषित जल के सेवन से मुख्य रूप से पाचन-तन्त्र सम्बन्धी रोग उत्पन्न होते हैं। विश्व स्वास्थ्य संगठन के अनुसार प्रति वर्ष लाखों बच्चे दूषित जल पीने के परिणामस्वरूप उत्पन्न रोगों से मर जाते हैं। ध्वनि-प्रदूषण के भी गम्भीर और घातक प्रभाव पड़ते हैं। ध्वनि-प्रदूषण (शोर) के कारण शारीरिक और मानसिक तनाव तो बढ़ता ही है, साथ ही श्वसन-गति और नाड़ी-गति में उतार-चढ़ाव, जठरान्त्र की गतिशीलता में कमी तथा रुधिर परिसंचरण एवं हृदय पेशी के गुणों में भी परिवर्तन हो जाता है तथा प्रदूषण जन्य अनेकानेक बीमारियों से पीड़ित मनुष्य समय से पूर्व ही मृत्यु का ग्रास बन जाता है।

समस्या का समाधान—महान शिक्षाविदों और नीति-निर्माताओं ने इस समस्या की ओर गम्भीरता से ध्यान दिया है। आज विश्व का प्रत्येक देश इस ओर सजग है। वातावरण को प्रदूषण से बचाने के लिए वृक्षारोपण सर्वश्रेष्ठ साधन है। मानव को चाहिए कि वह वृक्षों और वनों को कुल्हाड़ियों का निशाना बनाने के बजाय उन्हें फलते-फूलते देखे तथा सुन्दर पशु-पक्षियों को अपना भोजन बनाने के बजाय उनकी सुरक्षा करे। साथ ही भविष्य के प्रति आशंकित, आतंकित होने से बचने के लिए सबको देश की असीमित बढ़ती जनसंख्या को सीमित करना होगा, जिससे उनके आवास के लिए खेतों और वनों को कम न करना पड़े। कारखाने और मशीनें लगाने की अनुमति उन्हीं व्यक्तियों को दी जानी चाहिए, जो औद्योगिक कचरे और मशीनों के धुएँ को बाहर निकालने की समुचित व्यवस्था कर सकें। संयुक्त राष्ट्र संघ को चाहिए कि वह परमाणु-परीक्षणों को नियन्त्रित करने की दिशा में कदम उठाये। तकनीकी ज्ञान का उपयोग खोये हुए पर्यावरण को फिर से प्राप्त करने पर बल देने के लिए किया जाना चाहिए। वायु-प्रदूषण से बचने के लिए हर प्रकार की गन्दगी एवं कचरे को विधिवत् समाप्त करने के उपाय निरन्तर किये जाने चाहिए। जल-प्रदूषण को नियन्त्रित करने के लिए औद्योगिक संस्थानों में ऐसी व्यवस्था की जानी चाहिए कि व्यर्थ पदार्थों एवं जल को उपचारित करके ही बाहर निकाला जाए तथा इनको जल-स्रोतों से मिलने से रोका जाना चाहिए। इंग्लैण्ड में लन्दन का मैला पहले टेम्स नदी में गिरकर जल को दूषित करता था। अब वहाँ की सरकार ने टेम्स नदी के पास एक विशाल कारखाना बनाया है, जिसमें लन्दन की सारी गन्दगी और मैला मशीनों से साफ होकर उत्तम खाद बन जाता है और साफ पानी टेम्स नदी में छोड़ दिया जाता है। अब इस पानी में मछलियाँ पहले से कहीं अधिक संख्या में पैदा हो रही हैं। ध्वनि-प्रदूषण को नियन्त्रित करने के लिए भी प्रभावी उपाय किये जाने चाहिए। सार्वजनिक रूप से लाउडस्पीकरों आदि के प्रयोग को नियन्त्रित किया जाना चाहिए।

उपसंहार—पर्यावरण में होने वाले प्रदूषण को रोकने व उसके समुचित संरक्षण के लिए समस्त विश्व में एक नयी चेतना उत्पन्न हुई है। हम सभी का उत्तरदायित्व है कि चारों ओर बढ़ते इस प्रदूषित वातावरण के खतरों के प्रति सचेत हों तथा पूर्ण मनोयोग से सम्पूर्ण परिवेश को स्वच्छ व सुन्दर बनाने का यत्न करें। वृक्षारोपण का कार्यक्रम सरकारी स्तर पर जोर-शोर से चलाया जा रहा है तथा वनों की अनियन्त्रित कटाई को रोकने के लिए भी कठोर नियम बनाये गये हैं। इस बात के भी प्रयास किये जा रहे हैं कि नये वन-क्षेत्र बनाये जाएँ और जनसामान्य को वृक्षारोपण के लिए प्रोत्साहित किया जाए। इधर न्यायालय द्वारा प्रदूषण फैलाने वाले उद्योगों को महानगरों से बाहर ले जाने के आदेश दिये गये हैं तथा नये उद्योगों को लाइसेन्स दिये जाने से पूर्व उन्हें औद्योगिक कचरे के निस्तारण की समुचित व्यवस्था कर पर्यावरण विशेषज्ञों से स्वीकृति प्राप्त करने को अनिवार्य कर दिया गया है। यदि जनता भी अपने ढंग से इन कार्यक्रमों में सक्रिय सहयोग दे और यह संकल्प ले कि जीवन में आने वाले प्रत्येक शुभ अवसर पर कम-से-कम एक वृक्ष अवश्य लगाएगी तो निश्चित ही हम प्रदूषण के दुष्परिणामों से बच सकेंगे और आने वाली पीढ़ी को भी इसकी काली छाया से बचाने में समर्थ हो सकेंगे।

4. मेरे प्रिय साहित्यकार : जयशंकर प्रसाद (2013, 14, 15, 16, 17, 18)

या **हमारे आदर्श कवि** (2012, 13, 14)

या **मेरे प्रिय लेखक/कहानीकार** (2009, 13)

या **मेरा प्रिय कवि** (2017)

प्रमुख विचार-बिन्दु (1) प्रस्तावना, (2) साहित्यकार का परिचय, (3) साहित्यकार की साहित्य-सम्पदा, (4) छायावाद के श्रेष्ठ कवि, (5) श्रेष्ठ गधकार, (6) उपसंहार।

प्रस्तावना—संसार में सबकी अपनी-अपनी रुचि होती है। किसी व्यक्ति की रुचि चित्रकारी में है तो किसी की संगीत में। किसी की रुचि खेलकूद में है तो किसी की साहित्य में। मेरी अपनी रुचि भी साहित्य में रही है। साहित्य प्रत्येक देश और प्रत्येक काल में इतना अधिक रचा गया है कि उन सबका पारायण तो एक जन्म में सम्भव ही नहीं है। फिर साहित्य में भी अनेक विधाएँ हैं—कविता, उपन्यास, नाटक, कहानी, निबन्ध आदि। अत: मैंने सर्वप्रथम हिन्दी-साहित्य का यथाशक्ति अधिकाधिक अध्ययन करने का निश्चय किया और अब तक जितना अध्ययन हो पाया है, उसके आधार पर मेरे सर्वाधिक प्रिय साहित्यकार हैं—जयशंकर प्रसाद। प्रसाद जी केवल कवि ही नहीं, नाटककार, उपन्यासकार, कहानीकार और निबन्धकार भी हैं। प्रसाद जी ने हिन्दी-साहित्य में भाव और कला, अनुभूति और अभिव्यक्ति, वस्तु और शिल्प सभी क्षेत्रों में युगान्तरकारी परिवर्तन किये हैं। उन्होंने हिन्दी भाषा को एक नवीन अभिव्यंजना-शक्ति प्रदान की है। इन सबने मुझे उनका प्रशंसक बना दिया है और वे मेरे प्रिय साहित्यकार बन गये हैं।

साहित्यकार का परिचय—श्री जयशंकर प्रसाद जी का जन्म सन् 1889 ई० में काशी के प्रसिद्ध सुँघनी-साहु परिवार में हुआ था। आपके पिता का नाम श्री बाबू देवी प्रसाद था। लगभग 11 वर्ष की अवस्था में ही जयशंकर प्रसाद ने काव्य-रचना आरम्भ कर दी थी। सत्रह वर्ष की अवस्था तक इनके ऊपर विपत्तियों का पहाड़ टूट पड़ा। इनके पिता, माता व बड़े भाई का देहान्त हो गया और परिवार का समस्त उत्तरदायित्व इनके सुकुमार कन्धों पर आ गया। गुरुतर उत्तरदायित्वों का निर्वाह करते हुए एवं अनेकानेक महत्त्वपूर्ण ग्रन्थों की रचना करने के उपरान्त 15 नवम्बर, 1937 ई० को आपका देहावसान हुआ। 48 वर्ष के छोटे-से जीवन में इन्होंने जो बड़े-बड़े काम किये, उनकी कथा सचमुच अकथनीय है।

साहित्यकार की साहित्य-सम्पदा—प्रसाद जी की रचनाएँ सन् 1907-08 ई० में सामयिक पत्र-पत्रिकाओं में प्रकाशित होने लगी थीं। ये रचनाएँ ब्रजभाषा की पुरानी शैली में थीं, जिनका संग्रह 'चित्राधार' में हुआ। सन् 1913 ई० में ये खड़ी बोली में लिखने लगे। प्रसाद जी ने पद्य और गद्य दोनों में साधिकार रचनाएँ कीं। इनका वर्गीकरण इस प्रकार है—

1. **काव्य**—कानन-कुसुम, प्रेम पथिक, महाराणा का महत्त्व, झरना, आँसू, लहर और कामायनी (महाकाव्य)।
2. **नाटक**—इन्होंने कुल मिलाकर 13 नाटक लिखे। इनके प्रसिद्ध नाटक हैं—चन्द्रगुप्त, स्कन्दगुप्त, अजातशत्रु, जनमेजय का नागयज्ञ, कामना और ध्रुवस्वामिनी।
3. **उपन्यास**—कंकाल, तितली और इरावती।
4. **कहानी**—प्रसाद की विविध कहानियों के पाँच संग्रह हैं—छाया, प्रतिध्वनि, आकाशदीप, आँधी और इन्द्रजाल।
5. **निबन्ध**—प्रसाद जी ने साहित्य के विविध विषयों से सम्बन्धित निबन्ध लिखे, जिनका संग्रह है—काव्य और कला तथा अन्य निबन्ध।

छायावाद के श्रेष्ठ कवि—छायावाद हिन्दी कविता के क्षेत्र का एक आन्दोलन है जिसकी अवधि सन् 1920-1936 ई० तक मानी जाती है। 'प्रसाद' जी छायावाद के जन्मदाता माने जाते हैं। छायावाद एक आदर्शवादी काव्यधारा है, जिसमें वैयक्तिकता, रहस्यात्मकता, प्रेम, सौन्दर्य तथा स्वच्छन्दतावाद की सबल

अभिव्यक्ति हुई है। प्रसाद की 'आँसू' नाम की कृति के साथ हिन्दी में छायावाद का जन्म हुआ। आँसू का प्रतिपाद्य है—विप्रलम्भ शृंगार। प्रियतम के वियोग की पीड़ा वियोग के समय आँसू बनकर वर्षा की भाँति उमड़ पड़ती है—

जो घनीभूत पीड़ा थी, स्मृति सी नभ में छायी।
दुर्दिन में आँसू बनकर, वह आज बरसने आयी॥

प्रसाद के काव्य में छायावाद अपने पूर्ण उत्कर्ष पर दिखाई देता है; यथा—सौन्दर्य-निरूपण एवं शृंगार भावना, प्रकृति-प्रेम, मानवतावाद, प्रेम भावना, आत्माभिव्यक्ति, प्रकृति पर चेतना का आरोप, वेदना और निराशा का स्वर, देश-प्रेम की अभिव्यक्ति, नारी के सौन्दर्य का वर्णन, तत्त्व-चिन्तन, आधुनिक बौद्धिकता, कल्पना का प्राचुर्य तथा रहस्यवाद की मार्मिक अभिव्यक्ति। अन्यत्र इंगित छायावाद की कलागत विशेषताएँ अपने उत्कृष्ट रूप में इनके काव्य में उभरी हुई दिखाई देती हैं।

'आँसू' मानवीय विरह का एक प्रबन्ध काव्य है। इसमें स्मृतिजन्य मनोदशा एवं प्रियतम के अलौकिक रूप-सौन्दर्य का मार्मिक वर्णन किया गया है। 'लहर' आत्मपरक प्रगीत मुक्तक है, जिसमें कई प्रकार की कविताओं का संग्रह है। प्रकृति के रमणीय पक्ष को लेकर सुन्दर और मधुर रूपकमय यह गीत 'लहर' से संगृहीत है—

बीती विभावरी जाग री।
अम्बर-पनघट में डुबो रही ;
तारा-घट ऊषा नागरी।

'प्रसाद' की सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण रचना है—कामायनी महाकाव्य, जिसमें प्रतीकात्मक शैली पर मानव- चेतना के विकास का काव्यमय निरूपण किया गया है। **आचार्य शुक्ल** के शब्दों में, "यह काव्य बड़ी विशद कल्पनाओं और मार्मिक उक्तियों से पूर्ण है। इसके विचारात्मक आधार के अनुसार श्रद्धा या रागात्मिका वृत्ति ही मनुष्य को इस जीवन में शान्तिमय आनन्द का अनुभव कराती है। वही उसे आनन्द-धाम तक पहुँचाती है, जब कि इड़ा या बुद्धि आनन्द से दूर भगाती है।" अन्त में कवि ने इच्छा, कर्म और ज्ञान तीनों के सामंजस्य पर बल दिया है; यथा—

ज्ञान दूर कुछ क्रिया भिन्न है, इच्छा पूरी क्यों हो मन की ?
एक दूसरे से मिल न सके, यह विडम्बना जीवन की।

श्रेष्ठ गद्यकार—गद्यकार प्रसाद की सर्वाधिक ख्याति नाटककार के रूप में है। उन्होंने गुप्तकालीन भारत को आधुनिक परिवेश में प्रस्तुत करके गांधीवादी अहिंसामूलक देशभक्ति का सन्देश दिया है। साथ ही अपने समय के सामाजिक आन्दोलनों का सफल चित्रण किया है। नारी की स्वतन्त्रता एवं महिमा पर उन्होंने सर्वाधिक बल दिया है। उनके प्रत्येक नाटक का संचालन सूत्र किसी नारी पात्र के ही हाथ में रहता है। उपन्यास और कहानियों में भी सामाजिक भावना का प्राधान्य है। उनमें दाम्पत्य-प्रेम के आदर्श रूप का चित्रण किया गया है। उनके निबन्ध विचारात्मक एवं चिन्तनप्रधान हैं, जिनके माध्यम से प्रसाद ने काव्य और काव्य-रूपों के विषय में अपने विचार प्रस्तुत किये हैं।

उपसंहार—पद्य और गद्य की सभी रचनाओं में इनकी भाषा संस्कृतनिष्ठ एवं परिमार्जित हिन्दी है। इनकी शैली आलंकारिक एवं साहित्यिक है। कहने की आवश्यकता नहीं है कि इनकी गद्य-रचनाओं में भी इनका छायावादी कवि हृदय झाँकता हुआ दिखाई देता है। मानवीय भावों और आदर्शों में उदारवृत्ति का सृजन विश्व-कल्याण के प्रति इनकी विशाल-हृदयता का सूचक है। हिन्दी-साहित्य के लिए प्रसाद जी की यह बहुत बड़ी देन है। 'प्रसाद' की रचनाओं में छायावाद पूर्ण प्रौढ़ता, शालीनता, गुरुता और गम्भीरता को प्राप्त दिखाई देता है। अपनी विशिष्ट कल्पना शक्ति, मौलिक अनुभूति एवं नूतन अभिव्यक्ति पद्धति के फलस्वरूप प्रसाद हिन्दी-साहित्य में मूर्धन्य स्थान पर प्रतिष्ठित हैं। समग्रत: यह कहा जा सकता है कि प्रसाद जी का साहित्यिक व्यक्तित्व बहुत महान् है जिस कारण वे मेरे सर्वाधिक प्रिय साहित्यकार रहे हैं।

5. **भ्रष्टाचार : कारण और निवारण** (2011, 12, 13, 14, 15)
या **भ्रष्टाचार से निपटने के उपाय** (2009, 13)
या **भ्रष्टाचार उन्मूलन : एक बड़ी समस्या** (2012, 13)
या **भ्रष्टाचार : महान् अभिशाप** (2013)
या **भ्रष्टाचार-नियन्त्रण में युवा-वर्ग का योगदान** (2012, 13, 14, 18)
या **अनियन्त्रित भ्रष्टाचार : कारण और निवारण** (2014)
या **भ्रष्टाचार : उन्मूलन-समस्या : समाधान** (2016)

प्रमुख विचार-बिन्दु (1) प्रस्तावना, (2) भ्रष्टाचार के विविध रूप, (3) भ्रष्टाचार के कारण, (4) भ्रष्टाचार दूर करने के उपाय, (5) उपसंहार।

प्रस्तावना—भ्रष्टाचार देश की सम्पत्ति का आपराधिक दुरुपयोग है। 'भ्रष्टाचार' का अर्थ है—'भ्रष्ट आचरण' अर्थात् नैतिकता और कानून के विरुद्ध आचरण। जब व्यक्ति को न तो अन्दर की लज्जा या धर्माधर्म का ज्ञान रहता है (जो अनैतिकता है) और न बाहर का डर रहता है (जो कानून की अवहेलना है) तो वह संसार में जघन्य-से-जघन्य पाप कर सकता है, अपने देश, जाति व समाज को बड़ी-से-बड़ी हानि पहुँचा सकता है, यहाँ तक कि मानवता को भी कलंकित कर सकता है। दुर्भाग्य से आज भारत इस भ्रष्टाचाररूपी सहस्रों मुख वाले दानव के जबड़ों में फँसकर तेजी से विनाश की ओर बढ़ता जा रहा है। अत: इस दारुण समस्या के कारणों एवं समाधान पर विचार करना आवश्यक है।

भ्रष्टाचार के विविध रूप—पहले किसी घोटाले की बात सुनकर देशवासी चौंक जाते थे, आज नहीं चौंकते। पहले घोटालों के आरोपी लोक-लज्जा के कारण अपना पद छोड़ देते थे, पर आज पकड़े जाने पर भी कुछ राजनेता इस शान से जेल जाते हैं; जैसे—वे किसी राष्ट्र-सेवा के मिशन पर जा रहे हों। इसीलिए समूचे प्रशासन-तन्त्र में भ्रष्ट आचरण धीरे-धीरे सामान्य बनता जा रहा है। आज भारतीय जीवन का कोई भी क्षेत्र सरकारी या गैर-सरकारी, सार्वजनिक या निजी—ऐसा नहीं, जो भ्रष्टाचार से अछूता हो। इसीलिए भ्रष्टाचार इतने अगणित रूपों में मिलता है कि उसे वर्गीकृत करना सरल नहीं है। फिर भी उसे मुख्यत: चार वर्गों में बाँटा जा सकता है—1. राजनीतिक, 2. प्रशासनिक, 3. व्यावसायिक तथा 4. शैक्षणिक।

1. **राजनीतिक भ्रष्टाचार**—भ्रष्टाचार का सबसे प्रमुख रूप यही है जिसकी छत्रछाया में भ्रष्टाचार के शेष सारे रूप पनपते और संरक्षण पाते हैं। इसके अन्तर्गत मुख्यत: लोकसभा एवं विधानसभाओं के चुनाव जीतने के लिए अपनाया गया भ्रष्ट आचरण आता है। संसार में ऐसा कोई भी कुकृत्य, अनाचार या हथकण्डा नहीं है जो भारतवर्ष में चुनाव जीतने के लिए न अपनाया जाता हो। कारण यह है कि चुनावों में विजयी दल ही सरकार बनाता है, जिससे केन्द्र और प्रदेशों की सारी राजसत्ता उसी के हाथ में आ जाती है। इसलिए 'येन केन प्रकारेण' अपने दल को विजयी बनाना ही राजनीतिज्ञों का एकमात्र लक्ष्य बन गया है। इन राजनेताओं की शनि-दृष्टि ही देश में जातीय प्रवृत्तियों को उभारती एवं देशद्रोहियों को पनपाती है। देश की वर्तमान दुरावस्था के लिए ये भ्रष्ट राजनेता ही दोषी हैं। इनके कारण देश में अनेकानेक घोटाले हुए हैं।

2. **प्रशासनिक भ्रष्टाचार**—इसके अन्तर्गत सरकारी, अर्द्ध-सरकारी, गैर-सरकारी संस्थाओं, संस्थानों, प्रतिष्ठानों या सेवाओं (नौकरियों) में बैठे वे सारे अधिकारी आते हैं जो जातिवाद, भाई-भतीजावाद, किसी प्रकार के दबाव या कामिनी-कांचन के लोभ या अन्यान्य किसी कारण से अयोग्य व्यक्तियों की नियुक्तियाँ करते हैं, उन्हें पदोन्नत करते हैं, स्वयं अपने कर्त्तव्य की अवहेलना करते हैं और ऐसा करने वाले अधीनस्थ कर्मचारियों को प्रश्रय देते हैं या अपने किसी भी कार्य या आचरण से देश को किसी मोर्चे पर कमजोर बनाते हैं। चाहे वह गलत कोटा-परमिट देने वाला अफसर हो या सेना के रहस्य विदेशों के हाथ बेचने वाला सेनाधिकारी या ठेकेदारों से रिश्वत खाकर शीघ्र ढह जाने वाले पुल, सरकारी भवनों आदि का निर्माण करने वाला इंजीनियर या अन्यायपूर्ण फैसले करने वाला

न्यायाधीश या अपराधी को प्रश्रय देने वाला पुलिस अफसर, भी इसी प्रकार के भ्रष्टाचार के अन्तर्गत आते हैं।

3. **व्यावसायिक भ्रष्टाचार**—इसके अन्तर्गत विभिन्न पदार्थों में मिलावट करने वाले, घटिया माल तैयार करके बढ़िया के मोल बेचने वाले, निर्धारित दर से अधिक मूल्य वसूलने वाले, वस्तु-विशेष का कृत्रिम अभाव पैदा करके जनता को दोनों हाथों से लूटने वाले, कर चोरी करने वाले तथा अन्यान्य भ्रष्ट तौर-तरीके अपनाकर देश और समाज को कमजोर बनाने वाले व्यवसायी आते हैं।
4. **शैक्षणिक भ्रष्टाचार**—शिक्षा जैसा पवित्र क्षेत्र भी भ्रष्टाचार के संक्रमण से अछूता नहीं रहा। अत: आज डिग्री से अधिक सिफारिश, योग्यता से अधिक चापलूसी का बोलबाला है। परिश्रम से अधिक बल धन में होने के कारण शिक्षा का निरन्तर पतन हो रहा है।

भ्रष्टाचार के कारण—भ्रष्टाचार की गति नीचे से ऊपर को न होकर ऊपर से नीचे को होती है अर्थात् भ्रष्टाचार सबसे पहले उच्चतम स्तर पर पनपता है और तब क्रमश: नीचे की ओर फैलता जाता है। कहावत है—**'यथा राजा तथा प्रजा'**। इसका यह आशय कदापि नहीं कि भारत में प्रत्येक व्यक्ति भ्रष्टाचारी है। पर इसमें भी कोई सन्देह नहीं कि भ्रष्टाचार से मुक्त व्यक्ति इस देश में अपवादस्वरूप ही मिलते हैं।

कारण है वह भौतिकवादी जीवन-दर्शन, जो अंग्रेजी शिक्षा के माध्यम से पश्चिम से आया है। यह जीवन- पद्धति विशुद्ध भोगवादी है—'खाओ, पिओ और मौज करो' ही इसका मूलमन्त्र है। यह परम्परागत भारतीय जीवन-दर्शन के पूरी तरह विपरीत है। भारतीय मनीषियों ने चार पुरुषार्थों—धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष की सिद्धि को ही मानव-जीवन का लक्ष्य बताया है। मानव धर्मपूर्वक अर्थ और काम का सेवन करते हुए मोक्ष का अधिकारी बनता है। पश्चिम में धर्म और मोक्ष को कोई जानता तक नहीं। वहाँ तो बस अर्थ (धन-वैभव) और काम (सांसारिक सुख-भोग या विषय-वासनाओं की तृप्ति) ही जीवन का परम पुरुषार्थ माना जाता है। पश्चिम में जितनी भी वैज्ञानिक प्रगति हुई है, उस सबका लक्ष्य भी मनुष्य के लिए सांसारिक सुख-भोग के साधनों का अधिकाधिक विकास ही है।

भ्रष्टाचार दूर करने के उपाय—भ्रष्टाचार को दूर करने के लिए निम्नलिखित उपाय अपनाये जाने चाहिए—

1. **प्राचीन भारतीय संस्कृति को प्रोत्साहन**—जब तक अंग्रेजी शिक्षा के माध्यम से भोगवादी पाश्चात्य संस्कृति प्रचारित होती रहेगी, भ्रष्टाचार कम नहीं हो सकता। अत: सबसे पहले देशी भाषाओं, विशेषत: संस्कृत, की शिक्षा अनिवार्य करनी होगी। भारतीय भाषाएँ जीवन-मूल्यों की प्रचारक और पृष्ठपोषक हैं। उनसे भारतीयों में धर्म का भाव सुदृढ़ होगा और लोग धर्मभीरु बनेंगे।
2. **चुनाव-प्रक्रिया में परिवर्तन**—वर्तमान चुनाव-पद्धति के स्थान पर ऐसी पद्धति अपनानी पड़ेगी, जिसमें जनता स्वयं अपनी इच्छा से भारतीय जीवन-मूल्यों के प्रति समर्पित ईमानदार व्यक्तियों को खड़ा करके बिना धन व्यय के चुन सके। ऐसे लोग जब विधायक या संसद-सदस्य बनेंगे तो ईमानदारी और देशभक्ति का आदर्श जनता के सामने रखकर स्वच्छ शासन-प्रशासन दे सकेंगे। अपराधी प्रवृत्ति के लोगों को चुनाव लड़ने की अनुमति नहीं दी जानी चाहिए और जो विधायक या सांसद अवसरवादिता के कारण दल बदलें, उनकी सदस्यता समाप्त कर पुन: चुनाव में खड़े होने की व्यवस्था पर रोक लगानी होगी। जाति और धर्म के नाम का सहारा लेकर वोट माँगने वालों को चुनाव-प्रक्रिया से ही प्रतिबन्धित कर दिया जाना चाहिए। जब चपरासी और चौकीदारों के लिए भी योग्यता निर्धारित होती है, तब विधायकों और सांसदों के लिए क्यों नहीं ?
3. **अस्वाभाविक प्रतिबन्धों की समाप्ति**—सरकार ने कोटा-परमिट आदि के जो हजारों प्रतिबन्ध लगा रखे हैं, उनसे व्यापार बहुत कुप्रभावित हुआ है। फलत: व्यापारियों को विभिन्न विभागों में बैठे अफसरों को खुश करने के लिए भाँति-भाँति के भ्रष्ट हथकण्डे अपनाने पड़ते हैं। ऐसी स्थिति में भले और ईमानदार लोग व्यापार की ओर उन्मुख नहीं हो पाते। इन प्रतिबन्धों की समाप्ति से व्यापार में योग्य लोग आगे आएँगे, जिससे स्वस्थ प्रतियोगिता को बढ़ावा मिलेगा और जनता को अच्छा माल सस्ती दर पर मिल सकेगा।
4. **कर-प्रणाली का सरलीकरण**—सरकार ने हजारों प्रकार के कर लगा रखे हैं, जिनके बोझ से व्यापार पनप नहीं पाता। फलत: व्यापारी को अनैतिक हथकण्डे अपनाने को विवश होना पड़ता है; अत: सरकार को सैकड़ों करों को समाप्त करके कुछ गिने-चुने कर ही लगाने चाहिए। इन करों की वसूली प्रक्रिया भी इतनी सरल और निर्भ्रान्त हो कि अशिक्षित या अल्पशिक्षित व्यक्ति भी अपना कर सुविधापूर्वक जमा कर सके और भ्रष्ट तरीके अपनाने को बाध्य न हो। इसके लिए देशी भाषाओं का हर स्तर पर प्रयोग नितान्त वांछनीय है।
5. **शासन और प्रशासन व्यय में कटौती**—आज देश के शासन और प्रशासन (जिसमें विदेशों में स्थित भारतीय दूतावास भी सम्मिलित हैं), पर इतना अन्धाधुन्ध व्यय हो रहा है कि जनता की कमर टूटती जा रही है। इस व्यय में तत्काल बहुत अधिक कटौती करके सर्वत्र सादगी का आदर्श सामने रखा जाना चाहिए, जो प्राचीनकाल से ही भारतीय जीवन-पद्धति की विशेषता रही है। साथ ही केन्द्रीय और प्रादेशिक सचिवालयों तथा देश-भर के प्रशासनिक तन्त्र के बेहद भारी-भरकम ढाँचे को छाँटकर छोटा किया जाना चाहिए।
6. **देशभक्ति की प्रेरणा देना**—सबसे महत्त्वपूर्ण है कि वर्तमान शिक्षा-पद्धति में आमूल-चूल परिवर्तन कर उसे देशभक्ति को केन्द्र में रखकर पुनर्गठित किया जाए। विद्यार्थी को, चाहे वह किसी भी धर्म, मत या सम्प्रदाय का अनुयायी हो, आरम्भ से ही देशभक्ति का पाठ पढ़ाया जाए। इसके लिए प्राचीन भारतीय इतिहास, संस्कृति, भारतीय महापुरुषों के जीवनचरित आदि पाठ्यक्रम में रखकर विद्यार्थी को अपने देश की मिट्टी, इसकी परम्पराओं, मान्यताओं एवं संस्कृति पर गर्व करना सिखाया जाना चाहिए।
7. **कानून को अधिक कठोर बनाना**—भ्रष्टाचार के विरुद्ध कानून को भी अधिक कठोर बनाया जाए। इसके लिए वर्षों से चर्चा का विषय बना 'लोकपाल विधेयक' भी भारत जैसे देश; जहाँ प्रत्येक स्तर पर भ्रष्टाचार और भ्रष्टाचारी ही व्याप्त हैं; के लिए नाकाफी ही है।
8. **भ्रष्ट व्यक्तियों का सामाजिक बहिष्कार**—भ्रष्टाचार से किसी भी रूप में सम्बद्ध व्यक्तियों का सामाजिक बहिष्कार किया जाए, अर्थात् लोग उनसे किसी भी प्रकार का सम्बन्ध न रखें। यह उपाय भ्रष्टाचार रोकने में बहुत सहायक सिद्ध होगा।

उपसंहार—भ्रष्टाचार ऊपर से नीचे को आता है, इसलिए जब तक राजनेता देशभक्त और सदाचारी न होंगे, भ्रष्टाचार का उन्मूलन असम्भव है। उपयुक्त राजनेताओं के चुने जाने के बाद ही पूर्वोक्त सारे उपाय अपनाये जा सकते हैं, जो भ्रष्टाचार को जड़ से उखाड़ने में पूर्णत: प्रभावी सिद्ध होंगे। आज हर एक की जबान पर एक ही प्रश्न है कि क्या होगा इस महान्-सनातन राष्ट्र का ? कैसे मिटेगा यह भ्रष्टाचार, अत्याचार और दुराचार ? यह तभी सम्भव है, जब चरित्रवान् तथा सर्वस्व-त्याग और देश-सेवा की भावना से भरे लोग राजनीति में आएँगे और लोकचेतना के साथ जीवन को जोड़ेंगे।

---

6. **आतंकवाद : समस्या एवं समाधान** (2009, 13, 15, 17, 18)
   या **भारत में आतंकवाद की समस्या और समाधान** (2012, 16)
   या **आतंकवाद : एक भयावह समस्या** (2014)
   या **आतंकवाद : कारण और निवारण**
   या **भारत में आतंकवाद के बढ़ते कदम** (2013, 14)
   या **आतंकवाद : एक चुनौती** (2017)

प्रमुख विचार-बिन्दु (1) प्रस्तावना, (2) आतंकवाद का अर्थ, (3) आतंकवाद : एक विश्वव्यापी समस्या, (4) भारत में आतंकवाद, (5) जिम्मेदार कौन?, (6) आतंकवाद के विविध रूप, (7) आतंकवाद का समाधान, (8) उपसंहार।

प्रस्तावना—मनुष्य भय से निष्क्रिय और पलायनवादी बन जाता है। इसीलिए लोगों में भय उत्पन्न करके कुछ असामाजिक तत्त्व अपने नीच स्वार्थों की पूर्ति

करने का प्रयास करने लगते हैं। इस कार्य के लिए वे हिंसापूर्ण साधनों का प्रयोग करते हैं। ऐसी स्थितियाँ ही आतंकवाद का आधार हैं। आतंक फैलाने वाले आतंकवादी कहलाते हैं। ये कहीं से बनकर नहीं आते। ये भी समाज के एक ऐसे अंग हैं जिनका काम आतंकवाद के माध्यम से किसी धर्म, समाज अथवा राजनीति का समर्थन कराना होता है। ये शासन का विरोध करने में बिलकुल नहीं हिचकते तथा जनता को अपनी बात मनवाने के लिए विवश करते रहते हैं।

आतंकवाद का अर्थ— 'आतंक + वाद' से बने इस शब्द का सामान्य अर्थ है—आतंक का सिद्धान्त। यह अंग्रेजी के टेररिज़्म शब्द का हिन्दी रूपान्तर है। 'आतंक' का अर्थ होता है—पीड़ा, डर, आशंका। इस प्रकार आतंकवाद एक ऐसी विचारधारा है, जो अपने लक्ष्य की प्राप्ति के लिए बल-प्रयोग में विश्वास रखती है। ऐसा बल-प्रयोग प्राय: विरोधी वर्ग, समुदाय या सम्प्रदाय को भयभीत करने और उस पर अपनी प्रभुता स्थापित करने की दृष्टि से किया जाता है। आतंक, मौत, त्रास ही इनके लिए सब कुछ होता है। आतंकवादी यह नहीं जानते कि—

कौन कहता है कि मौत को अंजाम होना चाहिए।
जिन्दगी को जिन्दगी का पैगाम होना चाहिए॥

आतंकवाद : एक विश्वव्यापी समस्या— आज लगभग समस्त विश्व में आतंकवाद सक्रिय है। ये आतंकवादी समस्त विश्व में राजनीतिक स्वार्थों की पूर्ति के लिए सार्वजनिक हिंसा और हत्याओं का सहारा ले रहे हैं। भौतिक दृष्टि से विकसित देशों में तो आतंकवाद की इस प्रवृत्ति ने विकराल रूप ले लिया है। कुछ आतंकवादी गुटों ने तो अपने अन्तर्राष्ट्रीय संगठन बना लिये हैं। **जे०सी० स्मिथ** अपनी बहुचर्चित पुस्तक **'लीगल कण्ट्रोल ऑफ इण्टरनेशनल टेररिज़्म'** में लिखते हैं कि इस समय संसार में जैसा तनावपूर्व वातावरण बना हुआ है, उसको देखते हुए यह कहा जा सकता है कि भविष्य में अन्तर्राष्ट्रीय आतंकवाद में और तेजी आएगी। किसी देश द्वारा अन्य देश में आतंकवादी गुटों को समर्थन देने की घटनाएँ बढ़ेंगी; राजनयिकों की हत्याएँ, विमान-अपहरण की घटनाएँ बढ़ेंगी और रासायनिक हथियारों का प्रयोग अधिक तेज होगा। श्रीलंका में तमिलों, जापान में रेड आर्मी, भारत में सिख-होमलैण्ड और स्वतन्त्र कश्मीर चाहने वालों आदि के हिंसात्मक संघर्ष आतंकवाद की श्रेणी में आते हैं।

भारत में आतंकवाद— स्वाधीनता के पश्चात् भारत के विभिन्न भागों में अनेक आतंकवादी संगठनों द्वारा आतंकवादी हिंसा फैलायी गयी। इन्होंने बड़े-बड़े सरकारी अधिकारियों को मौत के घाट उतार दिया और इतना आतंक फैलाया कि अनेक अधिकारियों ने सेवा से त्यागपत्र दे दिये। भारत के पूर्वी राज्यों नागालैण्ड, मिजोरम, मणिपुर, त्रिपुरा, मेघालय, अरुणाचल और असोम में भी अनेक बार उग्र आतंकवादी हिंसा फैली, किन्तु अब यहाँ असोम के बोडो आतंकवाद को छोड़कर शेष सभी शान्त हैं। बंगाल के नक्सलवाड़ी से जो नक्सलवादी आतंकवाद पनपा था, वह बंगाल से बाहर भी खूब फैला। बिहार तथा आन्ध्र प्रदेश अभी भी उसकी भयंकर आग से झुलस रहे हैं।

कश्मीर घाटी में भी पाकिस्तानी तत्त्वों द्वारा प्रेरित आतंकवादी प्राय: राष्ट्रीय पर्वों (15 अगस्त, 26 जनवरी, 2 अक्टूबर आदि) पर भयंकर हत्याकाण्ड कर अपने अस्तित्व की घोषणा करते रहते हैं। इन्होंने कश्मीर की सुकोमल घाटी को अपनी आतंकवादी गतिविधियों का केन्द्र बनाया हुआ है। आये दिन निर्दोष लोगों की हत्याएँ की जा रही हैं और उन्हें आतंकित किया जा रहा है, जिससे वे अपने घर, दुकानें और कारखाने छोड़कर भाग खड़े हों। ऐसा कोई भी दिन नहीं बीतता जिस दिन समाचार-पत्रों में किसी आतंकवादी घटना में दस-पाँच लोगों के मारे जाने की खबर न छपी हो। स्वातन्त्र्योत्तर आतंकवादी गतिविधियों में सबसे भयंकर रहा पंजाब का आतंकवाद। बीसवीं शताब्दी की नवीं दशाब्दी में पंजाब में जो कुछ हुआ, उससे पूरा देश विक्षुब्ध और हतप्रभ रह गया।

पाकिस्तान द्वारा प्रायोजित सीमा पार से कश्मीर और अब देश के अन्य भागों में बरपायी जाने वाली और दिल दहला देने वाली घटनाएँ आतंकवाद का सबसे घिनौना रूप हैं। सीमा पार के आतंकवादी हमलों में अब तक एक लाख से भी अधिक लोगों की जानें जा चुकी हैं। हाल के वर्षों में संसद पर हमला हुआ, इण्डियन एयर लाइन्स के विमान 814 का अपहरण कर उसे कन्धार ले जाया गया, फिर चिट्टी सिंहपुरा में सिक्खों का कत्लेआम किया गया तथा अमरनाथ यात्रियों पर हमले किये गये।

जिम्मेदार कौन ?— आतंकवादी गतिविधियों को गुप्त और अप्रत्यक्ष रूप से प्रश्रय देने वाला अमेरिका भी अन्तत: अपने खोदे हुए गड्ढे में खुद ही गिर गया। राजनैतिक मुखौटों में छिपी उसकी काली करतूतें अविश्वसनीय रूप से उजागर हो गयीं जब उसके प्रसिद्ध शहर न्यूयॉर्क में 11 सितम्बर, 2001 को 'वर्ल्ड ट्रेड टावर' पर आतंकवादी हमला हुआ। अन्य देशों पर हमले करवाने में अग्रगण्य इस देश पर हुए इस वज्रपात पर सारा संसार अचम्भित रह गया। 'ओसामा बिन लादेन' नामक हमले के उत्तरदायी आतंकवादी को ढूँढ़ने में अमेरिकी सरकार ने जो सरगर्मियाँ दिखायीं उसने सिद्ध कर दिया कि जब तक कोई देश स्वयं पीड़ा नहीं झेलता तब तक उसे पराये की पीड़ा का अनुभव नहीं हो सकता। भारत वर्षों से चीख-चीख कर सारे विश्व के सामने यह अनुरोध करता आया था कि पाकिस्तान अमेरिका द्वारा दी गयी आर्थिक और अस्त्र-शस्त्र सम्बन्धी सहायता का उपयोग भारत के खिलाफ आतंकवादी गतिविधियों के लिए कर रहा है, अत: अमेरिका पाकिस्तान को आतंकवादी राष्ट्र घोषित करे और उसे किसी भी किस्म की सहायता देना बन्द करे; किन्तु भारतीयों के मारे जाने से अमेरिकी राष्ट्राध्यक्षों या देश का कोई नुकसान नहीं होता, लेकिन पाकिस्तान का पोषण करते रहने से उन्हें इस समस्त दक्षिण-एशियाई क्षेत्र पर दृष्टि रखने के लिए एक सैन्य क्षेत्र अवश्य मिला है।

आतंकवाद के विविध रूप— भारत के आतंकवादी गतिविधि निरोधक कानून 1985 में आतंकवाद पर विस्तार से विचार किया गया है और आतंकवाद को तीन भागों में बाँटा गया है—

1. समाज के एक वर्ग-विशेष को अन्य वर्गों से अलग-थलग करने और समाज के विभिन्न वर्गों के बीच व्याप्त आपसी सौहार्द को खत्म करने के लिए की गयी हिंसा।
2. ऐसा कोई कार्य, जिसमें ज्वलनशील, बम तथा आग्नेयास्त्रों का प्रयोग किया गया हो।
3. ऐसी हिंसात्मक कार्यवाही, जिसमें एक या उससे अधिक व्यक्ति मारे गये हों या घायल हुए हों, आवश्यक सेवाओं पर प्रतिकूल प्रभाव पड़ा हो तथा सम्पत्ति को हानि पहुँची हो। इसके अन्तर्गत प्रमुख व्यक्तियों का अपहरण या हत्या या उन्हें छोड़ने के लिए सरकार के सामने उचित-अनुचित माँगें रखना, वायुयानों का अपहरण, बैंक डकैतियाँ आदि सम्मिलित हैं।

आतंकवाद का समाधान— भारत में विषमतम स्थिति तक पहुँचे आतंकवाद के समाधान पर सम्पूर्ण देश के विचारकों और चिन्तकों ने अनेक सुझाव रखे, किन्तु यह समस्या अभी भी अनसुलझी ही है।

इस समस्या का वास्तविक हल ढूँढ़ने के लिए सर्वप्रथम यह आवश्यक है कि साम्प्रदायिकता का लाभ उठाने वाले सभी राजनीतिक दलों की गतिविधियों में परिवर्तन हो। साम्प्रदायिकता के इस दोष से आज भारत के सभी राजनीतिक दल न्यूनाधिक रूप में दूषित अवश्य हैं।

दूसरे, सीमा-पार से प्रशिक्षित आतंकवादियों के प्रवेश और वहाँ से भेजे जाने वाले हथियारों व विस्फोटक पदार्थों पर कड़ी चौकसी रखनी होगी तथा सुरक्षा बलों को आतंकवादियों की अपेक्षा अधिक अत्याधुनिक अस्त्र-शस्त्रों से लैस करना होगा।

तीसरे, आतंकवाद को महिमामण्डित करने वाली युवकों की मानसिकता बदलने के लिए आर्थिक सुधार करने होंगे।

चौथे, राष्ट्र की मुख्यधारा के अन्तर्गत संविधान का पूर्णत: पालन करते हुए पारस्परिक विचार-विमर्श से सिक्खों, कश्मीरियों और असमियों की माँगों का न्यायोचित समाधान करना होगा और तुष्टीकरण की नीति को त्यागकर समग्र राष्ट्र एवं राष्ट्रीयता की भावना को जाग्रत करना होगा।

पाँचवें कश्मीर के आतंकवाद को दलगत राजनीति से ऊपर उठकर सख्ती से कुचलना होगा। इसके लिए सभी राजनैतिक दलों को सार्थक पहल करनी होगी। यदि सम्बन्धित पक्ष इन बातों का ईमानदारी से पालन करें तो इस महारोग से मुक्ति सम्भव है।

उपसंहार—यह एक विडम्बना ही है कि महावीर, बुद्ध, गुरु नानक और महात्मा गांधी जैसे महापुरुषों की जन्मभूमि पिछले कुछ दशकों से सबसे अधिक अशान्त हो गयी है। देश की 121 करोड़ जनता ने हिंसा की सत्ता को स्वीकार करते हुए इसे अपने दैनिक जीवन का अंग मान लिया है। भारत के विभिन्न भागों में हो रही आतंकवादी गतिविधियों ने देश की एकता और अखण्डता के लिए संकट उत्पन्न कर दिया है। आतंकवाद का समूल नाश ही इस समस्या का समाधान है। टाडा के स्थान पर भारत सरकार द्वारा एक नया आतंकवाद निरोधक कानून पोटा लाया गया जिसे दूसरी सरकार ने यह कहते हुए कि ये सख्त और व्यापक कानून आतंकवाद को समाप्त करने की गारण्टी नहीं है; इन्हें समाप्त कर दिया। आतंकवाद पर सम्पूर्णता से अंकुश लगाने की इच्छुक सरकार को अपने उस प्रशासनिक तन्त्र को भी बदलने पर विचार करना चाहिए, जो इन कानूनों पर अमल नहीं करता है, तब ही इस समस्या का स्थायी समाधान निकल पाएगा।

---

7. **विज्ञान : वरदान या अभिशाप** (2009, 10)
या **विज्ञान और समाज** (2011)
या **विज्ञान के बढ़ते चरण**
या **विज्ञान के चमत्कार** (2014)
या **विज्ञान लाभ एवं हानि**
या **विज्ञान का रचनात्मक स्वरूप** (2013, 18)
या **विज्ञान और मानव-कल्याण** (2016)

प्रमुख विचार-बिन्दु—(1) प्रस्तावना, (2) विज्ञान : वरदान के रूप में—(क) यातायात के क्षेत्र में; (ख) संचार के क्षेत्र में; (ग) दैनन्दिन जीवन में; (घ) स्वास्थ्य एवं चिकित्सा के क्षेत्र में; (ङ) औद्योगिक क्षेत्र में; (च) कृषि के क्षेत्र में; (छ) शिक्षा के क्षेत्र में; (ज) मनोरंजन के क्षेत्र में, (3) विज्ञान : अभिशाप के रूप में, (4) उपसंहार।

प्रस्तावना—आज का युग वैज्ञानिक चमत्कारों का युग है। मानव-जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में आज विज्ञान ने आश्चर्यजनक क्रान्ति ला दी है। मानव-समाज की सारी गतिविधियाँ आज विज्ञान से परिचालित हैं। दुर्जेय प्रकृति पर विजय प्राप्त कर आज विज्ञान मानव का भाग्यविधाता बन बैठा है। अज्ञात रहस्यों की खोज में उसने आकाश की ऊँचाइयों से लेकर पाताल की गहराइयाँ तक नाप दी हैं। उसने हमारे जीवन को सब ओर से इतना प्रभावित कर दिया है कि विज्ञान-शून्य विश्व की आज कोई कल्पना तक नहीं कर सकता, किन्तु दूसरी ओर हम यह भी देखते हैं कि अनियन्त्रित वैज्ञानिक प्रगति ने मानव के अस्तित्व पर ही प्रश्नचिह्न लगा दिया है। इस स्थिति में हमें सोचना पड़ता है कि विज्ञान को वरदान समझा जाए या अभिशाप। अतः इन दोनों पक्षों पर समन्वित दृष्टि से विचार करके ही किसी निष्कर्ष पर पहुँचना उचित होगा।

विज्ञान : वरदान के रूप में—आधुनिक मानव का सम्पूर्ण पर्यावरण विज्ञान के वरदानों के आलोक से आलोकित है। प्रातः जागरण से लेकर रात के सोने तक के सभी क्रिया-कलाप विज्ञान द्वारा प्रदत्त साधनों के सहारे ही संचालित होते हैं। प्रकाश, पंखा, पानी, साबुन, गैस स्टोव, फ्रिज, कूलर, हीटर और यहाँ तक कि शीशा, कंघी से लेकर रिक्शा, साइकिल, स्कूटर, बस, कार, रेल, हवाई जहाज, टी०वी०, सिनेमा, रेडियो आदि जितने भी साधनों का हम अपने दैनिक जीवन में उपयोग करते हैं, वे सब विज्ञान के ही वरदान हैं। इसीलिए तो कहा जाता है कि आज का अभिनव मनुष्य विज्ञान के माध्यम से प्रकृति पर विजय पा चुका है—

आज की दुनिया विचित्र नवीन,
प्रकृति पर सर्वत्र है विजयी पुरुष आसीन।
हैं बँधे नर के करों में वारि-विद्युत भाप,
हुक्म पर चढ़ता उतरता है पवन का ताप।
है नहीं बाकी कहीं व्यवधान,
लाँघ सकता नर सरित-गिरि-सिन्धु एक समान॥

विज्ञान के इन विविध वरदानों की उपयोगिता कुछ प्रमुख क्षेत्रों में निम्नलिखित है—

(क) यातायात के क्षेत्र में—प्राचीन काल में मनुष्य को लम्बी यात्रा तय करने में वर्षों लग जाते थे, किन्तु आज रेल, मोटर, जलपोत, वायुयान आदि के आविष्कार से दूर-से-दूर स्थानों पर बहुत शीघ्र पहुँचा जा सकता है। यातायात और परिवहन की उन्नति से व्यापार की भी कायापलट हो गयी है। मानव केवल धरती ही नहीं, अपितु चन्द्रमा और मंगल जैसे दूरस्थ ग्रहों तक भी पहुँच गया है। अकाल, बाढ़, सूखा आदि प्राकृतिक विपत्तियों से पीड़ित व्यक्तियों की सहायता के लिए भी ये साधन बहुत उपयोगी सिद्ध हुए हैं। इन्हीं के चलते आज सारा विश्व एक बाजार बन गया है।

(ख) संचार के क्षेत्र में—बेतार के तार ने संचार के क्षेत्र में क्रान्ति ला दी है। आकाशवाणी, दूरदर्शन, तार, दूरभाष (टेलीफोन, मोबाइल फोन), दूरमुद्रक (टेलीप्रिण्टर, फैक्स) आदि की सहायता से कोई भी समाचार क्षण भर में विश्व के एक छोर से दूसरे छोर तक पहुँचाया जा सकता है। कृत्रिम उपग्रहों ने इस दिशा में और भी चमत्कार कर दिखाया है।

(ग) दैनन्दिन जीवन में—विद्युत् के आविष्कार ने मनुष्य की दैनन्दिन सुख-सुविधाओं को बहुत बढ़ा दिया है। वह हमारे कपड़े धोती है, उन पर प्रेस करती है, खाना पकाती है, सर्दियों में गर्म जल और गर्मियों में शीतल जल उपलब्ध कराती है, गर्मी-सर्दी दोनों से समान रूप से हमारी रक्षा करती है। आज की समस्त औद्योगिक प्रगति इसी पर निर्भर है।

(घ) स्वास्थ्य एवं चिकित्सा के क्षेत्र में—मानव को भयानक और संक्रामक रोगों से पर्याप्त सीमा तक बचाने का श्रेय विज्ञान को ही है। कैंसर, क्षय (टी०बी०), हृदय रोग एवं अनेक जटिल रोगों का इलाज विज्ञान द्वारा ही सम्भव हुआ है। एक्स-रे एवं अल्ट्रासाउण्ड टेस्ट, ऐन्जियोग्राफी, कैट या सीटी स्कैन आदि परीक्षणों के माध्यम से शरीर के अन्दर के रोगों का पता सरलतापूर्वक लगाया जा सकता है। भीषण रोगों के लिए आविष्कृत टीकों से इन रोगों की रोकथाम सम्भव हुई है। प्लास्टिक सर्जरी, ऑपरेशन, कृत्रिम अंगों का प्रत्यारोपण आदि उपायों से अनेक प्रकार के रोगों से मुक्ति दिलायी जा रही है। यही नहीं, इससे नेत्रहीनों को नेत्र, कर्णहीनों को कान और अंगहीनों को अंग देना सम्भव हो सका है।

(ङ) औद्योगिक क्षेत्र में—भारी मशीनों के निर्माण ने बड़े-बड़े कल-कारखानों को जन्म दिया है, जिससे श्रम, समय और धन की बचत के साथ-साथ प्रचुर मात्रा में उत्पादन सम्भव हुआ है। इससे विशाल जनसमूह को आवश्यक वस्तुएँ सस्ते मूल्य पर उपलब्ध करायी जा सकी हैं।

(च) कृषि के क्षेत्र में—लगभग 121 करोड़ से अधिक जनसंख्या वाला हमारा देश आज यदि कृषि के क्षेत्र में आत्मनिर्भरता की ओर अग्रसर हो सका है, तो यह भी विज्ञान की ही देन है। विज्ञान ने किसान को उत्तम बीज, प्रौढ़ एवं विकसित तकनीक, रासायनिक खादें, कीटनाशक, ट्रैक्टर, ट्यूबवेल और बिजली प्रदान की है। छोटे-बड़े बाँधों का निर्माण कर नहरें निकालना भी विज्ञान से ही सम्भव हुआ है।

(छ) शिक्षा के क्षेत्र में—मुद्रण-यन्त्रों के आविष्कार ने बड़ी संख्या में पुस्तकों का प्रकाशन सम्भव बनाया है, जिससे पुस्तकें सस्ते मूल्य पर मिल सकी हैं। इसके अतिरिक्त समाचार-पत्र, पत्र-पत्रिकाएँ आदि भी मुद्रण-क्षेत्र में हुई क्रान्ति के फलस्वरूप घर-घर पहुँचकर लोगों का ज्ञानवर्द्धन कर रही हैं। आकाशवाणी-दूरदर्शन आदि की सहायता से शिक्षा के प्रसार में बड़ी सहायता मिली है। कम्प्यूटर के विकास ने तो इस क्षेत्र में क्रान्ति ला दी है।

(ज) मनोरंजन के क्षेत्र में—चलचित्र, आकाशवाणी, दूरदर्शन आदि के आविष्कार ने मनोरंजन को सस्ता और सुलभ बना दिया है। टेपरिकॉर्डर, वी०सी०आर०, वी०सी०डी० आदि ने इस दिशा में क्रान्ति ला दी है और मनुष्य को उच्चकोटि का मनोरंजन सुलभ कराया है।

संक्षेप में कहा जा सकता है कि मानव-जीवन के लिए विज्ञान से बढ़कर दूसरा कोई वरदान नहीं है।

विज्ञान : अभिशाप के रूप में—विज्ञान का एक और पक्ष भी है। विज्ञान एक असीम शक्ति प्रदान करने वाला तटस्थ साधन है। मानव चाहे जैसे इसका इस्तेमाल कर सकता है। सभी जानते हैं कि मनुष्य में दैवी प्रवृत्ति भी है और आसुरी प्रवृत्ति भी। सामान्य रूप से जब मनुष्य की दैवी प्रवृत्ति प्रबल रहती है तो वह मानव-कल्याण से कार्य किया करता है, परन्तु किसी भी समय मनुष्य की राक्षसी प्रवृत्ति प्रबल होते ही कल्याणकारी विज्ञान एकाएक प्रबलतम विध्वंस एवं संहारक शक्ति का रूप ग्रहण कर सकता है। इसका उदाहरण गत विश्वयुद्ध का वह दुर्भाग्यपूर्ण पल है, जब कि हिरोशिमा और नागासाकी पर एटम-बम गिराया गया था। स्पष्ट है कि विज्ञान मानवमात्र के लिए सबसे बुरा अभिशाप भी सिद्ध हो सकता है। गत विश्वयुद्ध से लेकर अब तक मानव ने विज्ञान के क्षेत्र में अत्यधिक उन्नति की है; अत: कहा जा सकता है कि आज विज्ञान की विध्वंसक शक्ति पहले की अपेक्षा बहुत बढ़ गयी है।

विध्वंसक साधनों के अतिरिक्त अन्य अनेक प्रकार से भी विज्ञान ने मानव का अहित किया है। वैज्ञानिक दृष्टिकोण तथ्यात्मक होता है। इस दृष्टिकोण के विकसित हो जाने के परिणामस्वरूप मानव हृदय की कोमल भावनाओं एवं अटूट आस्थाओं को ठेस पहुँची है। विज्ञान ने भौतिकवादी प्रवृत्ति को प्रेरणा दी है, जिसके परिणामस्वरूप धर्म एवं अध्यात्म से सम्बन्धित विश्वास थोथे प्रतीत होने लगे हैं। मानव-जीवन के पारस्परिक सम्बन्ध भी कमजोर होने लगे हैं। अब मानव भौतिक लाभ के आधार पर ही सामाजिक सम्बन्धों को विकसित करता है।

जहाँ एक ओर विज्ञान ने मानव-जीवन को अनेक प्रकार की सुख-सुविधाएँ प्रदान की हैं वहीं दूसरी ओर विज्ञान के ही कारण मानव-जीवन अत्यधिक खतरों से परिपूर्ण तथा असुरक्षित भी हो गया है। कम्प्यूटर तथा दूसरी मशीनों ने यदि मानव को सुविधा के साधन उपलब्ध कराये हैं तो साथ-साथ रोजगार के अवसर भी छीन लिये हैं। विद्युत विज्ञान द्वारा प्रदत्त एक महान् देन है, परन्तु विद्युत का एक मामूली झटका ही व्यक्ति की इहलीला समाप्त कर सकता है। विज्ञान ने तरह-तरह के तीव्र गति वाले वाहन मानव को दिये हैं। इन्हीं वाहनों की आपसी टक्कर से प्रतिदिन हजारों व्यक्ति सड़क पर ही जान गँवा देते हैं। विज्ञान के दिन-प्रतिदिन होते जा रहे नवीन आविष्कारों के कारण मानव पर्यावरण असन्तुलन के दुश्चक्र में भी फँस चुका है।

अधिक सुख-सुविधाओं के कारण मनुष्य आलसी और आरामतलब बनता जा रहा है, जिससे उसकी शारीरिक शक्ति का ह्रास हो रहा है और अनेक नये-नये रोग भी उत्पन्न हो रहे हैं। मानव में सर्दी और गर्मी सहने की क्षमता घट गयी है।

वाहनों की बढ़ती संख्या से सड़कें पूरी तरह अस्त-व्यस्त हो रही हैं तो उनसे निकलने वाले ध्वनि प्रदूषक मनुष्य को स्नायु रोग वितरित कर रहे हैं। सड़क दुर्घटनाएँ तो मानो दिनचर्या का एक अंग हो चली हैं। विज्ञापनों ने प्राकृतिक सौन्दर्य को कुचल डाला है। चारों ओर का कृत्रिम आडम्बरयुक्त जीवन इस विज्ञान की ही देन है। औद्योगिक प्रगति ने पर्यावरण-प्रदूषण की विकट समस्या खड़ी कर दी है। साथ ही गैसों के रिसाव से अनेक व्यक्तियों के प्राण भी जा चुके हैं।

विज्ञान के इसी विनाशकारी रूप को दृष्टि में रखकर महाकवि दिनकर मानव को चेतावनी देते हुए कहते हैं—

सावधान, मनुष्य! यदि विज्ञान है तलवार।
तो इसे दे फेंक, तजकर मोह, स्मृति के पार॥
खेल सकता तू नहीं ले हाथ में तलवार।
काट लेगा अंग, तीखी है बड़ी यह धार॥

उपसंहार—विज्ञान सचमुच तलवार है, जिससे व्यक्ति आत्मरक्षा भी कर सकता है और अनाड़ीपन में अपने अंग भी काट सकता है। इसमें दोष तलवार का नहीं, उसके प्रयोक्ता का है। विज्ञान ने मानव के सम्मुख असीमित विकास का मार्ग खोल दिया है, जिससे मनुष्य संसार से बेरोजगारी, भुखमरी, महामारी आदि को समूल नष्ट कर विश्व को अभूतपूर्व सुख-समृद्धि की ओर ले जा सकता है। अणु-शक्ति का कल्याणकारी कार्यों में उपयोग असीमित सम्भावनाओं का द्वार उन्मुक्त कर सकता है। बड़े-बड़े रेगिस्तानों को लहराते खेतों में बदलना, दुर्लंघ्य पर्वतों पर मार्ग बनाकर दूरस्थ अंचलों में बसे लोगों को रोजगार के अवसर उपलब्ध कराना, विशाल बाँधों का निर्माण एवं विद्युत उत्पादन आदि अगणित कार्यों में इसका उपयोग हो सकता है, किन्तु यह तभी सम्भव है, जब मनुष्य में आध्यात्मिक दृष्टि का विकास हो, मानव-कल्याण की सात्त्विक भावना जगे। अत: स्वयं मानव को ही यह निर्णय करना है कि वह विज्ञान को वरदान रहने दे या अभिशाप बना दे।

8. **इण्टरनेट**
या **इण्टरनेट का विकास और उपलब्ध सेवाएँ**
या **भारत में इण्टरनेट का विकास**
या **सूचना प्रौद्योगिकी और मानव-कल्याण** (2013, 14)
या **इण्टरनेट की शैक्षिक उपयोगिता** (2016)
या **इण्टरनेट : लाभ और हानियाँ** (2017, 18)

प्रमुख विचार-बिन्दु—(1) भूमिका, (2) इतिहास और विकास, (3) इण्टरनेट सम्पर्क, (4) इण्टरनेट सेवाएँ, (5) भारत में इण्टरनेट, (6) भविष्य की दिशाएँ, (7) उपसंहार।

भूमिका—इण्टरनेट ने विश्व में जैसा क्रान्तिकारी परिवर्तन किया, वैसा किसी भी दूसरी टेक्नोलॉजी ने नहीं किया। नेट के नाम से लोकप्रिय इण्टरनेट अपने उपभोक्ताओं के लिए बहुआयामी साधन प्रणाली है। यह दूर बैठे उपभोक्ताओं के मध्य अन्तर-संवाद का माध्यम है; सूचना या जानकारी में भागीदारी और सामूहिक रूप से काम करने का तरीका है; सूचना को विश्व स्तर पर प्रकाशित करने का जरिया है और सूचनाओं का अपार सागर है। इसके माध्यम से इधर-उधर फैली तमाम सूचनाएँ प्रसंस्करण के बाद ज्ञान में परिवर्तित हो रही हैं। इसने विश्व-नागरिकों के बहुत ही सुघड़ और घनिष्ठ समुदाय का विकास किया है।

इण्टरनेट विभिन्न टेक्नोलॉजियों के संयुक्त रूप से कार्य का उपयुक्त उदाहरण है। कम्प्यूटरों के बड़े पैमाने पर उत्पादन, कम्प्यूटर सम्पर्क-जाल का विकास, दूर-संचार सेवाओं की बढ़ती उपलब्धता और घटता खर्च तथा आँकड़ों के भण्डारण और सम्प्रेषण में आयी नवीनता ने नेट के कल्पनातीत विकास और उपयोगिता को बहुमुखी प्रगति प्रदान की है। आज किसी समाज के लिए इण्टरनेट वैसी ही ढाँचागत आवश्यकता है जैसे कि सड़कें, टेलीफोन या विद्युत् ऊर्जा।

इतिहास और विकास—इण्टरनेट का इतिहास पेचीदा है। इसका पहला दृष्टान्त सन् 1962 ई० में मैसाचुसेट्स टेक्नोलॉजी संस्थान के जे० सी० आर० लिकप्लाइडर द्वारा लिखे गये कई ज्ञापनों के रूप में सामने आया था। उन्होंने कम्प्यूटर की ऐसी विश्वव्यापी अन्तर्सम्बन्धित शृंखला की कल्पना की थी जिसके जरिये वर्तमान इण्टरनेट की तरह ही आँकड़ों और कार्यक्रमों को तत्काल प्राप्त किया जा सकता था। इस प्रकार के नेटवर्क में सहायक बनी तकनीकी सफलता पहली बार इसी संस्थान के लियोनार्ड क्लिनरोक ने सुझायी थी। उनकी यह सूझ पैकेट स्विचिंग नाम की नयी टेक्नोलॉजी थी जो सामान्य टेलीफोन प्रणाली में प्रयुक्त सर्किट स्विचिंग टेक्नोलॉजी से मिलती-जुलती थी। पैकेट स्विचिंग उस पत्र पेटी की तरह थी, जिसका इस्तेमाल चाहे जितने लोग कर सकते थे। इसके जरिये दुनिया में कम्प्यूटर अन्य कम्प्यूटरों से जुड़े बिना भी एक-दूसरे से संवाद कायम कर सकते थे।

इण्टरनेट के इतिहास में 1973 का वर्ष ऐसा था जिसने अनेक मील के पत्थर जोड़े और इस प्रकार अधिक विश्वसनीय और स्वतन्त्र नेटवर्क की शुरुआत हुई। इसी वर्ष में इण्टरनेट ऐक्टिविटीज बोर्ड की स्थापना की गयी। इस वर्ष के नवम्बर महीने में डोमेन नेमिंग सर्विस (डीएनएस) का पहला विवरण जारी किया गया और वर्ष की आखिरी महत्त्वपूर्ण घटना इण्टरनेट का सेना और आम लोगों के

लिए उपयोग के वर्गीकरण द्वारा सार्वजनिक नेटवर्क के उदय के रूप में सामने आया तथा इसी के साथ आज प्रचलित इण्टरनेट ने जन्म लिया।

इण्टरनेट का बाद का इतिहास मुख्यत: बहुविध उपयोग का है जो नेटवर्क की आधारभूत संरचना से ही सम्भव हो सका। बहुविध उपयोग की दिशा में पहला कदम फाइल ट्रांसफर प्रणाली का विकास था। इससे दूर-दराज के कम्प्यूटरों के बीच फाइलों का आदान-प्रदान सम्भव हो सका। सन् 1984 ई० में इण्टरनेट से जुड़े कम्प्यूटरों की संख्या 1000 थी जो सन् 1989 ई० में एक लाख के ऊपर पहुँच चुकी थी। 90 के दशक के आरम्भ में इण्टरनेट पर सूचना प्रस्तुति के नये तरीके सामने आये। सन् 1991 ई० में मिनेसोटा विश्वविद्यालय द्वारा तैयार गोफर नामक सरलता से पहुँच योग्य डॉक्युमेण्ट प्रस्तुति प्रणाली अस्तित्व में आयी। इससे पहले सन् 1990 ई० में ही टिम बर्नर-ली ने वर्ल्ड वाइड वेब (www) का आविष्कार करके सूचना प्रस्तुति का एक नया तरीका सामने रखा जो सरलता से इस्तेमाल योग्य सिद्ध हुआ।

सन् 1993 ई० में ग्रैफिकल वेब ब्राउजर का आविष्कार इण्टरनेट के क्षेत्र में एक बड़ी घटना थी। इससे न केवल विवरण वरन् चित्रों का भी दिग्दर्शन सम्भव हो गया। इस वेब ब्राउजर को मोजाइक कहा गया। इस समय तक इण्टरनेट उपभोक्ताओं की संख्या 20 लाख से अधिक हो गयी थी और आज प्रचलित इण्टरनेट आकार ले चुका था।

इण्टरनेट सम्पर्क—इण्टरनेट का आधार राष्ट्रीय या क्षेत्रीय सूचना इन्फ्रास्ट्रक्चर होता है जो सामान्यत: हाइबैण्ड विड्थ ट्रंक लाइनों से बना होता है और जहाँ से विभिन्न सम्पर्क लाइनें कम्प्यूटरों को जोड़ती हैं जिन्हें आश्रयदाता (होस्ट) कम्प्यूटर कहते हैं। ये आश्रयदाता कम्प्यूटर प्राय: बड़े संस्थानों; जैसे—विश्वविद्यालयों, बड़े उद्यमों और इण्टरनेट कम्पनियों से जुड़े होते हैं और इन्हें इण्टरनेट सर्विस प्रोवाइडर (आईएसपी) कहा जाता है। आश्रयदाता कम्प्यूटर चौबीसों घण्टे काम करते हैं और अपने उपभोक्ताओं को सेवा प्रदान करते हैं। ये कम्प्यूटर विशेष संचार लाइनों के जरिये इण्टरनेट से जुड़े रहते हैं। इनके उपभोक्ताओं/व्यक्तियों के पीसी (पर्सनल कम्प्यूटर) साधारण टेलीफोन लाइन और मोडेम के जरिए इण्टरनेट से जुड़े रहते हैं।

एक सामान्य उपभोक्ता एक निश्चित राशि का भुगतान करके आईएसपी से अपना इण्टरनेट खाता प्राप्त कर लेता है। आईएसपी लॉगइन नेम, पासवर्ड (जिसे उपभोक्ता बदल भी सकता है) और नेट से जुड़ने के लिए कुछ एक जानकारियाँ उपलब्ध करा देता है। एक बार इण्टरनेट से जुड़ जाने पर उपभोक्ता इण्टरनेट की तमाम सेवाओं तक अपनी पहुँच बना सकता है। इसके लिए उसे सही कार्यक्रम का चयन करना होता है। ज्यादातर इण्टरनेट सेवाएँ उपभोक्ता-सर्वर रूपाकार पर काम करती हैं। इनमें सर्वर वे कम्प्यूटर हैं जो नेट से जुड़े हुए व्यक्तिगत कम्प्यूटर उपभोक्ताओं को एक या अधिक सेवाएँ उपलब्ध कराते हैं। इस सेवा के वास्तविक प्रयोग के लिए उपभोक्ता को उस विशेष सेवा के लिए आश्रित (क्लाइण्ट) सॉफ्टवेयर की जरूरत होती है।

इण्टरनेट सेवाएँ—इण्टरनेट की उपयोगिता उपभोक्ता को उपलब्ध सेवाओं से निर्धारित होती है। इसके उपभोक्ता को निम्नलिखित सेवाएँ उपलब्ध हैं—

1. **ई-मेल**—ई-मेल या इलेक्ट्रॉनिक मेल इण्टरनेट का सबसे लोकप्रिय उपयोग है। संवाद के अन्य माध्यमों की तुलना में सस्ता, तेज और अधिक सुविधाजनक होने के कारण इसने दुनिया भर के घरों और कार्यालयों में अपनी जगह बना ली है। इसके द्वारा पहले भाषायी पाठ ही प्रेषित किया जा सकता था, लेकिन अब सन्देश, चित्र, अनुकृति, ध्वनि, आँकड़े आदि भी प्रेषित किये जा सकते हैं।
2. **टेलनेट**—टेलनेट एक ऐसी व्यवस्था है, जिसके माध्यम से उपभोक्ता को किसी दूर स्थित कम्प्यूटर से स्वयं को जोड़ने की सुविधा प्राप्त हो जाती है।
3. **इण्टरनेट चर्चा (चैट)**—नयी पीढ़ी में इण्टरनेट रिले चैट या चर्चा व्यापक रूप से लोकप्रिय है। यह ऐसी गतिविधि है, जिसमें भौगोलिक रूप से दूर स्थित व्यक्ति एक ही चैट सर्वर पर लॉग करके की-बोर्ड के जरिये एक-दूसरे से चर्चा कर सकते हैं। इसके लिए एक वांछित व्यक्ति की आवश्यकता होती है, जो निश्चित समय पर उस लाइन पर सुविधापूर्वक उपलब्ध हो।
4. **वर्ल्ड वाइड वेब**—यह सुविधा इण्टरनेट के सर्वाधिक लोकप्रिय और प्रचलित उपयोगों में से एक है। यह इतनी आसान है कि इसके प्रयोग में बच्चों को भी कठिनाई नहीं होती। यह मनचाही संख्या वाले अन्तर्सम्बन्धित डॉक्युमेण्ट का समूह है, जिसमें से प्रत्येक डॉक्युमेण्ट की पहचान उसके विशेष पते से की जा सकती है। इस पर उपलब्ध सबसे महत्त्वपूर्ण सेवाओं में से एक सर्चिंग है। इण्टरनेट में शताधिक सर्च-इंजन कार्यरत हैं जिनमें गूगल सर्वाधिक लोकप्रिय है।
5. **ई-कॉमर्स**—इण्टरनेट की प्रगति की ही एक परिणति ई-कॉमर्स है। किसी भी प्रकार के व्यवसाय को संचालित करने के लिए इण्टरनेट पर की जाने वाली कार्यवाही को ई-कॉमर्स कहते हैं। इसके अन्तर्गत वस्तुओं का क्रय-विक्रय, विभिन्न व्यक्तियों या कम्पनियों के मध्य सेवा या सूचना आते हैं।

इन मुख्य सेवाओं के अतिरिक्त इण्टरनेट द्वारा और भी अनेक सेवाएँ प्रदान की जाती हैं, जिनके असीमित उपयोग हैं।

भारत में इण्टरनेट—भारत में इण्टरनेट का आरम्भ आठवें दशक के अन्तिम वर्षों में अर्नेट (शिक्षा और अनुसन्धान नेटवर्क) के रूप में हुआ था। इसके लिए भारत सरकार के इलेक्ट्रॉनिक विभाग और संयुक्त राष्ट्र विकास कार्यक्रम ने आर्थिक सहायता उपलब्ध करायी थी। इस परियोजना में पाँच प्रमुख संस्थान, पाँचों भारतीय प्रौद्योगिकी संस्थान और इलेक्ट्रॉनिक निदेशालय शामिल थे। अर्नेट का आज व्यापक प्रसार हो चुका है और वह शिक्षा और शोध समुदाय को देशव्यापी सेवा दे रहा है। एक अन्य प्रमुख नेटवर्क नेशनल इन्फॉर्मैटिक्स सेण्टर (एनआईसी) के रूप में सामने आया, जिसने प्राय: सभी जनपद मुख्यालयों को राष्ट्रीय नेटवर्क से जोड़ दिया। आज देश के विभिन्न भागों में यह 1400 से भी अधिक स्थलों को अपने नेटवर्क के जरिये जोड़े हुए है।

आम आदमी के लिए भारत में इण्टरनेट का आगमन सन् 15 अगस्त, 1995 ई० को हो गया था, जब विदेश संचार निगम लिमिटेड ने देश में अपनी सेवाओं का आरम्भ किया। प्रारम्भ के कुछ वर्षों तक इण्टरनेट की पहुँच काफी धीमी रही, लेकिन हाल के वर्षों में इसके उपभोक्ता की संख्या में जबरदस्त वृद्धि हुई है। सन् 1999 ई० में टेलीकॉम क्षेत्र निजी कम्पनियों के लिए खोल दिये जाने के परिणामस्वरूप अनेक नये सेवा प्रदाता बेहद प्रतिस्पर्धा विकल्पों के साथ सामने आये। भारत में इण्टरनेट के उपभोक्ताओं की संख्या वर्ष अप्रैल 2010 तक 7 करोड़ की संख्या को पार कर चुकी है। भारत में इण्टरनेट का उपयोग करने वाले विश्व की तुलना में 5% हैं और भारत पूरे विश्व में चौथे स्थान पर है। सरकारी एजेंसियाँ इस बात के लिए प्रयासरत हैं कि आईटी का लाभ सामान्य जन तक पहुँचाया जा सके। भारतीय रेल द्वारा कम्प्यूटरीकृत आरक्षण, आन्ध्र प्रदेश सरकार द्वारा शहरों के मध्य सूचना प्रणाली की स्थापना तथा केरल सरकार के सूचना प्रौद्योगिकी विभाग द्वारा फास्ट रिलायबिल इन्स्टेण्ट एफीशिएण्ट नेटवर्क फॉर डिस्बर्समेण्ट ऑफ सर्विसेज (फ्रेण्ड्स) जैसी पेशकशों ने इस दिशा में देश के आम नागरिकों की अपेक्षाओं को बहुत बढ़ा दिया है।

भविष्य की दिशाएँ—भविष्य के प्रति इण्टरनेट बहुत ही आश्वस्तकारी दिखाई दे रहा है और आज के आधार पर कहीं अधिक प्रगतिशाली सेवाएँ प्रदान करने वाला होगा। भविष्य के नेटवर्क जिन उपकरणों और साधनों को जोड़ेंगे, वे मात्र कम्प्यूटर नहीं होंगे, वरन् माइक्रोचिप से संचालित होने के कारण तकनीकी अर्थों में कम्प्यूटर जैसे होंगे। आने वाले समय में केवल कार्यालय ही नहीं निवास, स्कूल, अस्पताल और हवाई अड्डे एक-दूसरे से जुड़े हुए होंगे। व्यक्ति के पास व्यक्तिगत डिजीटल सहायक ऐसे पाम टॉप होंगे, जो वायरलेस और मोबाइल टेक्नोलॉजियों का उपयोग करके किसी भी उपलब्ध नेटवर्क से स्वत: जुड़ जाएँगे। लोग अपने मोबाइल फोन के जरिये ही विभिन्न देयों का भुगतान कर सकेंगे और कारें हाईवे पर भीड़-भाड़ पर नजर रखने और अपने चालकों को सुविधाजनक रास्ते के बारे में सुझाव देने में समर्थ होंगी। इण्टरनेट व्यक्तियों और

समुदायों को परस्पर घनिष्ठ रूप से काम के लिए सक्षम बना देगा और भौगोलिक दूरी के कारण आने वाली बाधाओं को समाप्त कर देगा। कम्प्यूटर रचित समुदायों का उदय हो जाएगा और तब दमनकारी शासकों के लिए विश्व में अपनी लोकप्रियता को सुरक्षित रख पाना सम्भव नहीं रह जाएगा। भविष्य में टेक्नोलॉजी का उपयोग संस्कृति, भाषा और विरासत की विविधता की रक्षा के लिए किया जाएगा तथा भविष्य की राजनीतिक व्यवस्था भी इससे अछूती नहीं रहेगी।

उपसंहार—टेक्नोलॉजियों के लोकप्रिय होते ही सामान्य शिक्षित नागरिकों के लिए भी यह पूरी तरह आसान हो जाएगा कि वह कानून-निर्माण की प्रक्रिया में सक्रिय भागीदारी कर सकें। इसके फलस्वरूप कहीं अधिक समर्थ लोकतन्त्र सम्भव हो सकेगा जिसमें निर्वाचित प्रतिनिधियों के उत्तरदायित्व कुछ अलग प्रकार के होंगे। भविष्य की सबसे बड़ी चुनौती इण्टरनेट टेक्नोलॉजी के दोहन की है जिससे समाज के हर वर्ग तक उसके फायदों की पहुँच सम्भव बनायी जा सके। किसी भी टेक्नोलॉजी का उपयोग हमेशा समूचे समाज के लिए होना चाहिए न कि उसको समाज के कुछ वर्गों को वंचित करने के लिए एक औजार के रूप में इस्तेमाल किया जाना चाहिए। एक बार यह उपलब्धि हासिल की जा सके तो वास्तव में सम्भावनाओं की कोई सीमा ही नहीं है। संक्षेप में, क्रान्ति तो अभी आरम्भ ही हुई है।

9. महिला सशक्तीकरण (2017, 18)

प्रमुख विचार-बिन्दु—(1) प्रस्तावना, (2) सशक्तीकरण का अर्थ, (3) महिला सशक्तीकरण अभियान, (4) महिला सशक्तीकरण अभियान के उद्देश्य—(क) महिलाओं के प्रति बढ़ती हिंसा को समाप्त करना, (ख) लिंगानुपात को सन्तुलित करना, (ग) लिंग-आधारित आर्थिक असमानता को समाप्त करना, (घ) बाल-विवाह पर रोक लगाना, (ङ) लड़कियों को शिक्षित करना, (च) सीमान्त तथा शोषित महिलाओं को समाज की मुख्यधारा में लाना, (छ) महिलाओं की खरीद-फरोख्त पर रोक लगाना, (5) महिलाओं की संवैधानिक स्थिति, (6) महिला सशक्तीकरण अधिनियम, (7) महिला सशक्तीकरण और समाज, (8) उपसंहार।

प्रस्तावना—भारतीय समाज में नारियों को शक्तिस्वरूपा मानते हुए उनकी पूजा होती रही है। प्राचीन भारत के इतिहास के पृष्ठ भारतीय नारियों की गौरव-गाथा से भरे हुए हैं। '**मनुस्मृति**' में कहा गया है—

''यत्र नार्यस्तु पूज्यन्ते तत्र देवताः''

अर्थात् जहाँ नारी की पूजा की जाती है, वहाँ देवता निवास करते हैं। भारतीय समाज में नारियों की दशा और दिशा में काल परिवर्तन के साथ परिवर्तन होता रहा है। किसी युग में नारी को पूजा गया तो किसी युग में उसके अपमान, उत्पीड़न और अत्याचार की सीमाएँ पार कर दी गईं। महिलाएँ समाज में अनेक कुरीतियों एवं कुप्रथाओं का भी शिकार होती रहती हैं। भारतीय समाज का ताना-बाना ऐसा है, जिसमें अधिकांश महिलाएँ पिता, पति या पुत्र पर ही आर्थिक रूप से निर्भर होती हैं। निर्णय लेने का अधिकार भी पुरुषों का ही होता है। उनके इन अधिकारों की रक्षा के लिए ही महिला सशक्तीकरण की अवधारणा का जन्म हुआ, जिससे महिलाएँ अपने जीवन से जुड़ा प्रत्येक निर्णय स्वयं ले सकें और परिवार तथा समाज में अच्छी प्रकार रह सकें। महिलाओं के वास्तविक अधिकारों के विषय में जानकारी देकर उन्हें सक्षम बनाना ही महिला सशक्तीकरण है। पं० जवाहरलाल नेहरू ने भी महिलाओं की स्थिति को सशक्त बनाने के उद्देश्य से कहा था—''लोगों को जगाने के लिए महिलाओं का जाग्रत होना जरूरी है। एक बार जब वो अपना कदम उठा लेती है, परिवार आगे बढ़ता है, गाँव आगे बढ़ता है और राष्ट्र विकास की ओर उन्मुख होता है।''

सशक्तीकरण का अर्थ—सशक्तीकरण अर्थ है—शक्तिशाली बनाना। वर्तमान में महिला सशक्तीकरण को सामाजिक, आर्थिक एवं राजनैतिक असमानताओं से पैदा हुई समस्याओं के सन्दर्भ में देखा जा रहा है। इसमें जागरूकता, अधिकारों को जानने, सहभागिता और निर्णय लेने के अधिकार जैसे घटक को सम्मिलित किया गया है। **लीला मीहेनडल** के अनुसार—''निडरता, सम्मान और जागरूकता तीनों शब्द महिला सशक्तीकरण में सहायक हैं।

महिला सशक्तीकरण अभियान—सरकार द्वारा महिलाओं को विकास की मुख्यधारा में लाने के लिए सन् 2001 ई० में महिला सशक्तीकरण की राष्ट्रीय नीति लागू की गई। इसके अन्तर्गत सरकारी नीति तथा कल्याणकारी योजनाओं में महिलाओं के विधिक अधिकारों को सशक्त करने तथा स्वास्थ्य सुविधाओं को दृढ़ बनाने के उद्देश्य को ध्यान में रखा गया है। महिलाओं के उत्थान हेतु किए जा रहे शासकीय प्रयासों में कुछ सामाजिक और संस्थानात्मक अवरोध सामने आए हैं। इन अवरोधों का उन्मूलनकर महिलाओं के सामाजिक, आर्थिक और शैक्षिक सशक्तीकरण के उद्देश्य से 8 मार्च, 2010 ई० को राष्ट्रीय महिला सशक्तीकरण अभियान नामक कार्यक्रम आरम्भ किया गया। भारत में सभी राज्यों एवं सभी केन्द्रशासित प्रदेशों में महिला सशक्तीकरण कार्यक्रम को लागू कर दिया गया है। इसका मुख्य उद्देश्य महिला-विकास से सम्बन्धित कार्यक्रमों को निचले स्तर तक पहुँचाना है।

महिला सशक्तीकरण अभियान के उद्देश्य—महिला सशक्तीकरण अभियान के प्रमुख उद्देश्य निम्नलिखित हैं—

(क) महिलाओं के प्रति बढ़ती हिंसा को समाप्त करना—महिलाओं को सुरक्षा और स्वायत्तता प्रदान करने की दिशा में अनेक महत्त्वपूर्ण कदम उठाए गए हैं। महिलाओं के प्रति हिंसा के अन्तर्गत अनेक प्रकार की प्रताड़नाएँ आती हैं; जैसे—मानसिक, शारीरिक और यौन-उत्पीड़न एवं दहेज-सम्बन्धी प्रताड़ना आदि। महिला सशक्तीकरण का दृष्टिकोण यह है कि महिलाएँ इन उत्पीड़नरूपी हिंसा व भेदभाव से मुक्त होकर सम्मान के साथ जीवन व्यतीत कर सकें।

(ख) लिंगानुपात को सन्तुलित करना—लैंगिक असमानता भारत का प्रमुख सामाजिक मुद्दा है, जिसमें महिलाएँ निरन्तर पिछड़ती जा रही हैं। वर्ष 2011 की जनगणना के अनुसार भारत में 1000 पुरुषों पर 943 महिलाएँ हैं। इस असमानता को समाप्त करने के लिए महिला सशक्तीकरण में तेजी लाने की आवश्यकता है।

(ग) लिंग-आधारित आर्थिक असमानता को समाप्त करना—महिलाएँ किसी प्रकार भी पुरुषों से कम नहीं हैं। यदि वे वही कार्य करती हैं जो पुरुष करते हैं तो उन्हें पुरुषों के समान ही पारिश्रमिक मिलना चाहिए, जबकि समाज में ऐसा नहीं है। संविधान के अनुच्छेद 14 से 18 में 'समान काम, समान वेतन' की व्यवस्था की गयी है। महिला सशक्तीकरण में इस आर्थिक असमानता को समाप्त करने के प्रयास किए जा रहे हैं।

(घ) बाल-विवाह पर रोक लगाना—राजा राममोहन राय, ईश्वरचन्द्र विद्यासागर, स्वामी दयानन्द सरस्वती आदि के अथक प्रयासों द्वारा बाल-विवाह निरोधक अधिनियम (1955) बना, परन्तु आज भी कई पिछड़े क्षेत्रों में माता-पिता की अशिक्षा, असुरक्षा और गरीबी के कारण बाल-विवाह का प्रचलन है। इस विवाह से अवयस्क माता और शिशु के व्यक्तित्व और स्वास्थ्य में गिरावट आती है। महिला सशक्तीकरण द्वारा इस पर रोक लगाई जा रही है।

(ङ) लड़कियों को शिक्षित करना—शिक्षा अज्ञानतारूपी अंधकार को दूर करके विकास और उन्नति के मार्ग खोलती है। भारतीय समाज में लड़की को पराया धन मानकर उसी शिक्षा एवं अन्य सुख-सुविधाओं की उपेक्षा की जाती है, परन्तु आज महिला सशक्तीकरण आन्दोलन के कारण इस दिशा में भी परिवर्तन हो रहा है। आज लड़कियों के स्कूल में पंजीकरण एवं उनकी उपस्थिति में तेजी से वृद्धि हुई है। प्रसिद्ध अर्थशास्त्री **अमर्त्य सेन** के अनुसार—''महिलाओं की शिक्षा व्यवस्था, स्वतन्त्र आय तथा सामाजिक परिस्थिति में सुधार ने परिवार में उनकी निर्णय क्षमता को बढ़ाया है और महिलाओं के समावेशन (सशक्तीकरण) के मार्ग को प्रशस्त किया है।''

(च) सीमान्त तथा शोषित महिलाओं को समाज की मुख्यधारा में लाना—महिला सशक्तीकरण अभियान के अन्तर्गत सीमान्त महिलाओं (वेश्याओं) को वेश्यालयों से रिहा कराना, यौन शोषित एवं एड्स से पीड़ित, विधवाओं, बेसहाराओं, आतंकवाद की शिकार तथा विक्षिप्त महिलाओं के लिए स्वास्थ्य, देखभाल, परामर्श, रोजगारपरक प्रशिक्षण, जागरूकता, पुनर्वास आदि की सुविधाएँ उपलब्ध कराई जाती हैं और उन्हें देश की मुख्य धारा में जोड़ने को साहसपूर्ण एवं सराहनीय कदम उठाया जाता है। इस प्रयास से अनेक महिलाओं का जीवन सुधारा जा सका है।

(छ) महिलाओं की खरीद-फरोख्त पर रोक लगाना—स्वार्थी तत्त्वों द्वारा महिलाओं की खरीद-फरोख्त के अवैध व्यपार को रोकने के लिए अनेक योजनाएँ बनाई जा रही हैं। उज्ज्वला योजना के अन्तर्गत महिलाओं के अवैध व्यापार को रोकने से लेकर उनकी रिहाई, पुनर्वास, पुनःएकीकरण और पुनर्स्थापन का प्रयास किया जा रहा है। इस दिशा में अनेक एन०जी०ओ० तथा हेल्पलाइनें महिला उन्नयन का कार्य कर रही हैं।

महिलाओं की संवैधानिक स्थिति—भारतीय संविधान के अनुच्छेद 14, 15, 16, 19, 21, 23, 24, 37, 39 (बी), 44 तथा अनुच्छेद 325 के अनुसार स्त्रियों को भी पुरुषों के समान अधिकार प्राप्त हैं। संविधान की दृष्टि में स्त्री-पुरुष में कोई भेद नहीं किया गया है। समाज में जो भेद दृष्टिगोचर होते हैं, वह सब अशिक्षा, संकीर्णता और स्वार्थलिप्सा आदि के कारण ही समाज में विद्यमान हैं।

महिला सशक्तीकरण अधिनियम—संवैधानिक अधिकारों के साथ-साथ महिलाओं को सशक्त बनाने के लिए संसद द्वारा कुछ अधिनियम पास किए गए हैं; जैसे—एक बराबर पारिश्रमिक ऐक्ट, दहेज रोक अधिनियम, अनैतिक व्यापार (रोकथाम) अधिनियम, मेडिकल टर्मनेशन ऑफ प्रेग्नेंसी ऐक्ट, बाल-विवाह रोकथाम ऐक्ट, लिंग परीक्षण तकनीक (लड़का-लड़की जाँच पर रोक) ऐक्ट, कार्यस्थल पर महिलाओं का यौन-शौषण रोकने तथा उन्हें सुरक्षा देने सम्बन्धी ऐक्ट आदि। इन अधिनियमों का सही उपयोग कर महिलाएँ अपना शोषण रोकने में समर्थ हो रही हैं।

महिला सुरक्षा के अन्तर्गत उत्तर प्रदेश सरकार द्वारा 1090 शक्ति-योजना का शुभारम्भ किया गया है। यह महिलाओं की सुरक्षा हेतु एक बहुआयामी योजना है। इसके अन्तर्गत मोबाइल द्वारा मात्र एक बटन दबाते ही पुलिस नियन्त्रण-कक्ष को सूचना मिल जाती है और संकटग्रस्त महिला की स्थिति (स्थान की पहचान) की सही जानकारी पुलिस को हो जाती है, जिससे पुलिस उस महिला की तुरन्त सहायता करती है।

महिला सशक्तीकरण और समाज—भूमण्डलीकरण के इस दौर में स्त्री-पुरुष समानता की दुहाई के साथ-साथ अनेक संगठन, स्वयंसेवी संस्थाएँ, हेल्पलाइनें महिलाओं के सशक्तीकरण और उत्थान में जुटे हुए हैं; फिर भी समाज में महिलाओं की स्थिति में पर्याप्त सुधार नहीं आया है। इसका मुख्य कारण यह है कि स्वयं महिलाओं में आज भी अन्धविश्वास एवं रूढ़िवादिता की प्रवृत्ति कूट-कूटकर भरी है। निरक्षर अथवा अल्पशिक्षित महिलाओं की तो बात ही छोड़िए, सैकड़ों पढ़ी-लिखी महिलाएँ भी पुत्र-रत्न की प्राप्ति के लिए तन्त्र-मन, झाड़-फूँक और ढोंगी बाबाओं के जाल में फँसी हैं। रोजगार के क्षेत्र में भी पर्याप्त सुधार नहीं हो पाया है। उच्च पदों पर महिलाओं की नियुक्ति अभी 2 या 3 प्रतिशत ही है। एक रिपोर्ट के अनुसार भारत में प्रत्येक वर्ष एक करोड़ पच्चीस लाख लड़कियाँ जन्म लेती हैं, लेकिन तीस प्रतिशत लड़कियाँ 15 वर्ष से पूर्व ही मृत्यु का शिकार हो जाती हैं। राजनीति में भी महिलाओं का प्रवेश हो गया है, संसद में उनकी संख्या भी बढ़ी है। प्रधानमंत्री, मुख्यमंत्री, राष्ट्रपति, न्यायाधीश जैसे उच्च पदों को महिलाओं ने सुशोभित किया है। खेलों, फिल्मों, लेखन, पत्रकारिता तथा सौन्दर्य प्रतियोगिताओं में भी महिलाओं ने नये कीर्तिमान स्थापित किए हैं, परन्तु अभी भी समाज में नारी को वह स्थान नहीं मिल पाया है, जिसकी वह अधिकारी है।

उपसंहार—अन्त में कहा जा सकता है कि महिलाओं को सशक्त करने के लिए कोई ईश्वर या मसीहा अवतरित नहीं होगा और न ही समाज द्वारा नारीवाद की परिभाषा गढ़ने से कोई बात बनेगी। यह तभी सम्भव होग जब महिलाएँ अपने अधिकारों के लिए स्वयं आगे आएँ, अपने अधिकारों के लिए संघर्ष करें। सरकारें भी केवल महिला अधिकारों और कानूनों की संख्या में वृद्धि न करें, बल्कि व्यावहारिकता को ध्यान में रखते हुए ऐसे अधिकार और कानून बनाएँ, जिससे वास्तविक सशक्तीकरण की अवधारणा को साकार किया जा सके।

10. मेरे प्रिय कवि : तुलसीदास (2018)

प्रमुख विचार-बिन्दु—(1) प्रस्तावना, (2) तत्कालीन परिस्थितियाँ, (3) तुलसीकृत रचनाएँ, (4) तुलसीदास : एक लोकनायक के रूप में, (5) तुलसी के राम, (6) तुलसी की निष्काम भक्ति-भावना, (7) तुलसी की समन्वय-साधना—(क) सगुण-निर्गुण का समन्वय, (ख) कर्म, ज्ञान एवं भक्ति का समन्वय, (ग) युगधर्म-समन्वय, (घ) साहित्यिक समन्वय, (8) तुलसी के दार्शनिक विचार, (9) उपसंहार।

प्रस्तावना—यद्यपि मैंने बहुत अधिक अध्ययन नहीं किया है, तथापि भक्तिकालीन कवियों में कबीर, सूर, तुलसी और मीरा तथा आधुनिक कवियों में प्रसाद, पन्त और महादेवी के काव्य का रसास्वादन अवश्य किया है। इन सभी कवियों के काव्य का अध्ययन करते समय तुलसी के काव्य की अलौकिकता के समक्ष मैं सदैव नत-मस्तक होता रहा हूँ। उनकी भक्ति-भावना, समन्वयात्मक दृष्टिकोण तथा काव्य-सौष्ठव ने मुझे स्वाभाविक रूप से आकृष्ट किया है।

तत्कालीन परिस्थितियाँ—तुलसीदास का जन्म ऐसी विषम परिस्थितियों में हुआ था, जब हिन्दू समाज अशक्त होकर विदेशी चंगुल में फँस चुका था। हिन्दू समाज की संस्कृति और सभ्यता प्रायः विनष्ट हो चुकी थी और कहीं कोई पथ-प्रदर्शक नहीं था। इस युग में जहाँ एक ओर मन्दिरों का विध्वंस किया गया, ग्रामों व नगरों का विनाश हुआ, वहीं संस्कारों की भ्रष्टता भी चरम सीमा पर पहुँच गयी। इसके अतिरिक्त तलवार के बल पर हिन्दुओं को मुसलमान बनाया जा रहा था। सर्वत्र धार्मिक विषमताओं का ताण्डव हो रहा था और विभिन्न सम्प्रदायों ने अपनी-अपनी डफली, अपना-अपना राग अलापना आरम्भ कर दिया था। ऐसी परिस्थिति में भोली-भाली जनता यह समझने में असमर्थ थी कि वह किस सम्प्रदाय का आश्रय ले। उस समय दिग्भ्रमित जनता को ऐसे नाविक की आवश्यकता थी, जो उसके नैतिक जीवन की नौका की पतवार सँभाल ले।

गोस्वामी तुलसीदास ने अन्धकार के गर्त में डूबी हुई जनता के समक्ष भगवान् राम का लोकमंगलकारी रूप प्रस्तुत किया और उसमें अपूर्व आशा एवं शक्ति का संचार किया। युगद्रष्टा तुलसी ने अपनी अमर कृति 'श्रीरामचरितमानस' द्वारा भारतीय समाज में व्याप्त विभिन्न मतों, सम्प्रदायों एवं धाराओं में समन्वय स्थापित किया। उन्होंने अपने युग को नवीन दिशा, नयी गति एवं नवीन प्रेरणा दी। उन्होंने सच्चे लोकनायक के समान समाज में व्याप्त वैमनस्य की चौड़ी खाई को पाटने का सफल प्रयत्न किया।

तुलसीकृत रचनाएँ—तुलसीदास जी द्वारा लिखित 12 ग्रन्थ प्रामाणिक माने जाते हैं। ये ग्रन्थ हैं— 'श्रीरामचरितमानस', 'विनयपत्रिका', 'गीतावली', 'कवितावली', 'दोहावली', 'रामलला नहछू', 'पार्वती-मंगल', 'जानकी-मंगल', 'बरवै रामायण', 'वैराग्य संदीपनी', 'श्रीकृष्णगीतावली' तथा 'रामाज्ञा प्रश्नावली'। तुलसी की ये रचनाएँ विश्व-साहित्य की अनुपम निधि हैं।

तुलसीदास : एक लोकनायक के रूप में—आचार्य हजारीप्रसाद द्विवेदी का कथन है— "लोकनायक वही हो सकता है, जो समन्वय कर सके; क्योंकि भारतीय समाज में नाना प्रकार की परस्पर विरोधी संस्कृतियाँ, साधनाएँ, जातियाँ

आचारनिष्ठा और विचार-पद्धतियाँ प्रचलित हैं। बुद्धदेव समन्वयकारी थे, 'गीता' ने समन्वय की चेष्टा की और तुलसीदास भी समन्वयकारी थे।''

तुलसी के राम—तुलसी उन राम के उपासक थे, जो सच्चिदानन्द परब्रह्म हैं; जिन्होंने भूमि का भार हरण करने के लिए पृथ्वी पर अवतार लिया था—

जब-जब होइ धरम कै हानी। बाढ़हिं असुर अधम अभिमानी ॥
तब-तब प्रभु धरि बिबिध सरीरा। हरहिं कृपानिधि सज्जन पीरा ॥

तुलसी ने अपने काव्य में सभी देवी-देवताओं की स्तुति की है, लेकिन अन्त में वे यही कहते हैं—

माँगत तुलसीदास कर जोरे। बसहिं रामसिय मानस मोरे ॥

राम के प्रति उनकी अनन्य भक्ति अपनी चरम-सीमा छूती है और वे कह उठते हैं कि—

करूँ कहाँ तक राम बड़ाई। राम न सकहिं, राम गुन गाही ॥

तुलसी के समक्ष ऐसे राम का जीवन था, जो मर्यादाशील थे और शक्ति एवं सौन्दर्य के अवतार थे।

तुलसीदास की निष्काम भक्ति-भावना—सच्ची भक्ति वही है, जिसमें लेन-देन का भाव नहीं होता। भक्त के लिए भक्ति का आनन्द ही उसका फल है। तुलसी के अनुसार—

मो सम दीन न दीन हित, तुम समान रघुबीर।
अस बिचारि रघुबंसमनि, हरहु विषम भव भीर ॥

तुलसी की समन्वय-साधना—तुलसी के काव्य की सर्वप्रमुख विशेषता उसमें निहित समन्वय की प्रवृत्ति है। इस प्रवृत्ति के कारण ही वे वास्तविक अर्थों में लोकनायक कहलाये। उनके काव्य में समन्वय के निम्नलिखित रूप दृष्टिगत होते हैं—

(क) सगुण-निर्गुण का समन्वय—जब ईश्वर के सगुण एवं निर्गुण दोनों रूपों से सम्बन्धित विवाद, दर्शन एवं भक्ति दोनों ही क्षेत्रों में प्रचलित था तो तुलसीदास ने कहा—

सगुनहिं अगुनहिं नहिं कछु भेदा। गावहिं मुनि पुरान बुध बेदा ॥

(ख) कर्म, ज्ञान एवं भक्ति का समन्वय—तुलसी की भक्ति मनुष्य को संसार से विमुख करके अकर्मण्य बनाने वाली नहीं है, उनकी भक्ति तो सत्कर्म की प्रबल प्रेरणा देने वाली है। उनका सिद्धान्त है कि राम के समान आचरण करो, रावण के सदृश दुष्कर्म नहीं—

भगतिहिं ग्यानहिं नहिं कछु भेदा। उभय हरहिं भव-संभव खेदा ॥

तुलसी ने ज्ञान और भक्ति के धागे में राम-नाम का मोती पिरो दिया है—

हिय निर्गुन नयनन्हि सगुन, रसना राम सुनाम।
मनहुँ पुरट संपुट लसत, तुलसी ललित ललाम ॥

(ग) युगधर्म-समन्वय—भक्ति की प्राप्ति के लिए अनेक प्रकार के बाह्य तथा आन्तरिक साधनों की आवश्यकता होती है। ये साधन प्रत्येक युग के अनुसार बदलते रहते हैं और उन्हीं को युगधर्म की संज्ञा दी जाती है। तुलसी ने इनका भी विलक्षण समन्वय प्रस्तुत किया है—

कृतजुग त्रेता द्वापर, पूजा मख अरु जोग।
जो गति होइ सो कलि हरि, नाम ते पावहिं लोग ॥

(घ) साहित्यिक समन्वय—साहित्यिक क्षेत्र में भाषा, छन्द, रस एवं अलंकार आदि की दृष्टि से भी तुलसी ने अनुपम समन्वय स्थापित किया। उस समय साहित्यिक क्षेत्र में विभिन्न भाषाएँ विद्यमान थीं, विभिन्न छन्दों में रचनाएँ की जाती थीं। तुलसी ने अपने काव्य में भी संस्कृत, अवधी तथा ब्रजभाषा का अद्भुत समन्वय किया।

तुलसी के दार्शनिक विचार—तुलसी ने किसी विशेष वाद को स्वीकार नहीं किया। उन्होंने वैष्णव धर्म को इतना व्यापक रूप प्रदान किया कि उसके अन्तर्गत शैव, शाक्त और पुष्टिमार्गी भी सरलता से समाविष्ट हो गये। वस्तुतः तुलसी भक्त हैं और इसी आधार पर वह अपना व्यवहार निश्चित करते हैं। उनकी भक्ति सेवक-सेव्य भाव की है। वे स्वयं को राम का सेवक मानते हैं और राम को अपना स्वामी।

उपसंहार—तुलसी ने अपने युग और भविष्य, स्वदेश और विश्व तथा व्यक्ति और समाज आदि सभी के लिए महत्त्वपूर्ण सामग्री दी है। तुलसी को आधुनिक दृष्टि ही नहीं, प्रत्येक युग की दृष्टि मूल्यवान् मानेगी; क्योंकि मणि की चमक अन्दर से आती है, बाहर से नहीं। तुलसी के सम्बन्ध में **हरिऔध जी** के हृदय से स्वतः फूट पड़ी प्रशस्ति अपनी समीचीनता में बेजोड़ है—

बन रामरसायन की रसिका, रसना रसिकों की हुई सुफला।
अवगाहन मानस में करके, मन-मानस का मल सारा टला ॥
बनी पावन भाव की भूमि भली, हुआ भावुक भावुकता का भला।
कविता करके तुलसी न लसे, कविता लसी पा तुलसी की कला ॥

सचमुच कविता से तुलसी नहीं, तुलसी से कविता गौरवान्वित हुई। उनकी समर्थ लेखनी का सम्बल पा वाणी धन्य हो उठी।

तुलसीदास जी के इन्हीं सब गुणों का ध्यान आते ही मन श्रद्धा से परिपूरित हो उन्हें अपना प्रिय कवि मानने को विवश हो जाता है।

11. स्वच्छता अभियान की सामाजिक सार्थकता (2018)

प्रमुख विचार-बिन्दु—(1) प्रस्तावना, (2) मोदी जी की स्वच्छता अभियान की संकल्पना, (3) स्वच्छता अभियान की शुरुआत, (4) स्वच्छता अभियान हेतु नवरत्नों की घोषणा, (5) स्वच्छता अभियान का प्रारूप—(i) शहरी क्षेत्रों के लिए, (ii) ग्रामीण क्षेत्रों के लिए, (iii) विद्यालयों के लिए, (6) उपसंहार।

प्रस्तावना—'स्वच्छता अभियान' एक राष्ट्र स्तरीय अभियान है। गाँधी जी की 145वीं जयन्ती के अवसर पर माननीय प्रधानमन्त्री श्री नरेन्द्र मोदी जी ने इस अभियान के आरम्भ की घोषणा की। यह अभियान प्रधानमन्त्री जी की महत्त्वाकांक्षी परियोजनाओं में से एक है। 2 अक्टूबर, 2014 को उन्होंने राजपथ पर जनसमूह को सम्बोधित करते हुए सभी राष्ट्रवासियों से स्वच्छता अभियान में भाग लेने और इसे सफल बनाने की अपील की। साफ-सफाई के सन्दर्भ में देखा जाए तो यह अभियान अब तक का सबसे बड़ा स्वच्छता अभियान है।

साफ-सफाई को लेकर दुनिया भर में भारत की छवि बदलने के लिए प्रधानमन्त्री जी बहुत गम्भीर हैं। उनकी इच्छा स्वच्छता अभियान को एक जन-आन्दोलन बनाकर देशवासियों को गम्भीरतापूर्वक इससे जोड़ने की है। हमारे नवनिर्वाचित प्रधानमन्त्री जी ने 2 अक्टूबर के दिन सर्वप्रथम गाँधी जी को राजघाट पर श्रद्धांजलि अर्पित की और फिर नई दिल्ली स्थित वाल्मीकि बस्ती में जाकर झाड़ू लगाई। कहा जाता है कि वाल्मीकि बस्ती दिल्ली में गाँधी जी का सबसे प्रिय स्थान था। वे अक्सर यहाँ आकर ठहरते थे।

इसके बाद मोदी जी ने जनपथ जाकर स्वच्छता अभियान की शुरुआत की। इस अवसर पर उन्होंने लगभग 40 मिनट का भाषण दिया और स्वच्छता के प्रति लोगों को जागरूक करने का प्रयास किया। अपने भाषण के दौरान उन्होंने महात्मा गाँधी और लालबहादुर शास्त्री का जिक्र करते हुए बड़ी ही खूबसूरती से इन दोनों महापुरुषों को इस अभियान से जोड़ दिया। उन्होंने कहा—''गाँधी जी ने आजादी से पहले नारा दिया था, 'क्विट इण्डिया क्लीन इण्डिया।' आजादी की लड़ाई में उनका साथ देकर देशवासियों ने 'क्विट इण्डिया' के सपने को तो साकार कर दिया, लेकिन अभी उनका 'क्लीन इण्डिया' का सपना अधूरा है।''

मोदी जी की स्वच्छता अभियान की संकल्पना—माननीय मोदी जी की स्वच्छता अभियान की संकल्पना यह है कि देश के प्रत्येक शहरी और ग्रामीण परिवार में एक स्वच्छ शौचालय हो, जिन घर-परिवारों में स्थानाभाव के कारण शौचालय बनाया जाना सम्भव न हो, वहाँ पर सुलभ सार्वजनिक शौचालयों का निर्माण किया जाए। देश के प्राथमिक से लेकर उच्च शिक्षा तक के प्रत्येक विद्यालय में छात्र-छात्राओं के लिए स्वच्छ और पृथक्-पृथक् शौचालय हों।

उनकी इस संकल्पना से जहाँ सिर पर मैला ढोने की अमानवीय प्रथा समाप्त होगी, वहीं देश की उन करोड़ों महिलाओं को सम्मानजनक जीवन जीने का अवसर प्राप्त होगा, जिनको खुले में शौच के लिए जाना पड़ता है। उन बालिकाओं के विद्यालय जाने का मार्ग प्रशस्त होगा, जो विद्यालयों में अलग शौचालयों की व्यवस्था न होने के कारण विद्यालय नहीं जा पातीं।

मोदी जी की स्वच्छता अभियान की संकल्पना केवल शौचालयों के निर्माण तक ही सीमित नहीं है। उनका प्रयास है कि देश का प्रत्येक कोना स्वच्छ हो। इसके लिए देश के प्रत्येक नागरिक की भागेदारी आवश्यक है। उन्होंने देश के सवा सौ करोड़ नागरिकों का आह्वान किया कि देश के प्रत्येक नागरिक को यह संकल्प लेना होगा कि वह न स्वयं गन्दगी फैलाएगा और न दूसरों को फैलाने देगा। यदि देश का प्रत्येक नागरिक अपनी इस जिम्मेदारी को समझे तो देश गन्दा ही न होगा और सारा देश स्वत: ही स्वच्छ हो जाएगा।

स्वच्छता अभियान की शुरुआत—स्वच्छता अभियान की शुरुआत माननीय मोदी जी ने महात्मा गाँधी जी की जयन्ती पर 2 अक्टूबर, 2014 ई० को राजपथ से लोगों को स्वच्छता की शपथ दिलाकर की। इस दिन उन्होंने स्वयं मन्दिर मार्ग, नई दिल्ली स्थित वाल्मीकि बस्ती जाकर झाड़ू लगाकर फुटपाथ की सफाई की और स्वच्छता अभियान के अन्तर्गत बने पहले जैविक शौचालय (बायो टॉयलेट) को जनता को समर्पित किया।

स्वच्छता अभियान हेतु नवरत्नों की घोषणा—स्वच्छता अभियान से देश के प्रत्येक नागरिक को जोड़ने के लिए माननीय प्रधानमन्त्री जी ने 2 अक्टूबर को ही देश के नौ प्रतिष्ठित लोगों को नवरत्नों के रूप में नामांकित किया, जिनसे प्रेरणा ग्रहण करके देश के लोग स्वच्छता अभियान में पूर्ण मनोयोग से लग जाएँ। उनके ये नवरत्न हैं—अनिल अम्बानी, सचिन तेन्दुलकर, सलमान खान, प्रियंका चौपड़ा, बाबा रामदेव, कमल हसन, मृदुला सिन्हा, शशि थरूर और शाजिया इल्मी। इसके अलावा उन्होंने टी०वी० सीरियल 'तारक मेहता का उल्टा चश्मा' की सम्पूर्ण टीम को भी नामित किया है।

इसी प्रकार, 7 नवम्बर, 2014 को उत्तर प्रदेश के वाराणसी के असी घाट पर मोदी जी ने स्वच्छता अभियान के लिए उत्तर प्रदेश के नवरत्नों के रूप में भी नौ प्रसिद्ध लोगों को नामांकित किया। इन नौ लोगों में प्रदेश के मुख्यमन्त्री अखिलेश यादव, क्रिकेटर मुहम्मद कैफ तथा सुरेश रैना, हास्य टी०वी० कलाकार राजू श्रीवास्तव, सूफी गायक कैलाश खेर, भोजपुरी फिल्म अभिनेता मनोज तिवारी, लेखक मनु शर्मा, संस्कृत विद्वान् पद्मश्री प्रोफेसर देवीप्रसाद द्विवेदी, आन्ध्र विश्वविद्यालय चित्रकूट के कुलपति जगद्गुरु रामभद्राचार्य सम्मिलित हैं।

मोदी जी ने इन लोगों के नामांकन के साथ इन सभी का आह्वान किया कि ये सभी लोग अपने स्तर पर नौ-नौ और लोगों को इस अभियान हेतु नामांकित करें, फिर वे लोग दूसरे नौ-नौ लोगों को नामांकित करें। इस प्रकार लोगों की एक शृंखला बनती चली जाएगी और देश के सभी लोग इस अभियान से जुड़कर भारत को स्वच्छ बनाने में सफल होंगे।

स्वच्छता अभियान का प्रारूप—स्वच्छता अभियान भारत सरकार द्वारा बड़े पैमाने पर चलाया गया जन-आन्दोलन है, जिसका प्रयास सन् 2019 तक सम्पूर्ण भारत को स्वच्छ बनाना है। सरकारी सहायता हेतु इस अभियान को तीन क्षेत्रों में विभक्त किया गया है—

(i) **शहरी क्षेत्रों के लिए**—अभियान का उद्देश्य 1.04 करोड़ परिवारों को लक्षित करते हुए 2.5 लाख सामुदायिक शौचालय, 2.6 लाख सार्वजनिक शौचालय और प्रत्येक शहर में एक ठोस अपशिष्ट प्रबन्धन की सुविधा प्रदान करना है। इस कार्यक्रम के तहत आवासीय क्षेत्रों में जहाँ व्यक्तिगत घरेलू शौचालयों का निर्माण करना मुश्किल है वहाँ सामुदायिक शौचालयों का निर्माण करना तथा पर्यटन स्थलों, बाजारों, बस अड्डों, रेलवे स्टेशनों जैसे प्रमुख स्थानों पर भी सार्वजनिक शौचालयों का निर्माण करना प्रस्तावित है। यह कार्यक्रम पाँच साल की अवधि में 4401 शहरों में लागू किया जाएगा। इस कार्यक्रम में खुले में शौच करने को रोकना, स्वच्छ शौचालयों को फ्लश शौचालयों में परिवर्तित करने, मैला ढोने की प्रथा का उन्मूलन करने, नगरपालिका के ठोस अपशिष्ट प्रबन्धन और स्वास्थ्य एवं स्वच्छता से जुड़ी प्रथाओं के सम्बन्ध में लोगों के व्यवहार में परिवर्तन लाने के कार्यक्रम शामिल हैं।

(ii) **ग्रामीण क्षेत्रों के लिए**—स्वच्छता अभियान भारत सरकार द्वारा चलाया जा रहा ग्रामीण क्षेत्र के लोगों के लिए माँग-आधारित एवं जन-केन्द्रित अभियान है, जिसमें लोगों की स्वच्छता सम्बन्धी आदतों को बेहतर बनाना, स्वसुविधाओं की माँग उत्पन्न करना और स्वच्छता सुविधाओं को उपलब्ध कराना शामिल है, जिससे ग्रामीणों के जीवन-स्तर को बेहतर बनाया जा सके।

अभियान का उद्देश्य पाँच वर्षों में भारत को खुला शौच से मुक्त देश बनाना है। अभियान के तहत देश में लगभग 11 करोड़ 11 लाख शौचालयों के निर्माण के लिए एक लाख चौंतीस हजार करोड़ रुपये खर्च किए जाएँगे। बड़े पैमाने पर प्रौद्योगिकी का उपयोग कर ग्रामीण भारत में कचरे का इस्तेमाल उसे पूँजी का रूप देते हुए जैव उर्वरक और ऊर्जा के विभिन्न रूपों में परिवर्तित करने के लिए किया जाएगा। अभियान को युद्ध-स्तर पर प्रारम्भ कर ग्रामीण आबादी और स्कूल शिक्षकों व छात्रों के बड़े वर्गों के अलावा प्रत्येक स्तर पर इस प्रयास में देश भर की ग्रामीण पंचायत, समिति और जिला परिषद् को भी इससे जोड़ा जाना है।

(iii) **विद्यालयों के लिए**—मानव संसाधन विकास मन्त्रालय के अधीन स्वच्छ विद्यालय अभियान 25 सितम्बर, 2014 से 31 अक्टूबर, 2014 ई० के बीच केन्द्रीय विद्यालयों और नवोदय विद्यालयों में आयोजित किया गया। इस दौरान की जाने वाली गतिविधियाँ इस प्रकार रहीं—

- शिक्षकगण स्कूल कक्षाओं के दौरान प्रतिदिन बच्चों के साथ सफाई और स्वच्छता के विभिन्न पहलुओं पर, विशेष रूप से महात्मा गाँधी जी की स्वच्छता और अच्छे स्वास्थ्य से जुड़ी शिक्षाओं के सम्बन्ध में बात करें।
- कक्षा, प्रयोगशाला और पुस्तकालयों आदि की सफाई करना।
- स्कूल में स्थापित किसी भी मूर्ति या स्कूल की स्थापना करने वाले व्यक्ति के योगदान के बारे में बात करना और इनकी मूर्तियों की सफाई करना।
- शौचालयों और पीने के पानी वाले क्षेत्रों की सफाई करना।
- रसोई और भण्डार-गृह की सफाई करना।
- स्कूल एवं बगीचों का रख-रखाव और सफाई करना।
- खेल के मैदान की सफाई करना।
- स्कूल-भवन का वार्षिक रख-रखाव, रँगाई एवं पुताई के साथ।
- निबन्ध, वाद-विवाद, चित्रकला, सफाई और स्वच्छता पर प्रतियोगिताओं का आयोजन करना।
- बाल मन्त्रिमण्डलों का निगरानी दल बनाना और सफाई अभियान की निगरानी करना।

इसके अलावा फिल्म-शो, स्वच्छता पर निबन्ध/पेन्टिंग और अन्य प्रतियोगिताओं, नाटकों आदि के आयोजन द्वारा स्वच्छता एवं अच्छे स्वास्थ्य का सन्देश प्रसारित करना। मन्त्रालय ने इसके अलावा स्कूलों के छात्रों, शिक्षकों, अभिभावकों और समुदाय के सदस्यों को शामिल करते हुए सप्ताह में दो बार आधे घण्टे सफाई अभियान शुरू करने का प्रस्ताव भी रखा।

उपसंहार—आशा की जा सकती है कि स्वच्छता अभियान की संकल्पना निश्चय ही साकार होगी; क्योंकि जिस अभियान के प्रणेता माननीय नरेन्द्र मोदी जैसे कर्मठ, श्रमशील, ईमानदार और राष्ट्रवादी व्यक्ति हों उसकी सफलता में किसी प्रकार का सन्देह नहीं किया जा सकता है। जिस दिन यह अभियान सफलतापूर्वक सम्पन्न हो जाएगा उस दिन न केवल कश्मीर, वरन् सम्पूर्ण भारत देश धरती का स्वर्ग कहलाएगा।

12. भारत में बेरोजगारी की समस्या (2018)

प्रमुख विचार-बिन्दु—(1) प्रस्तावना, (2) प्राचीन भारत की स्थिति, (3) वर्तमान स्थिति, (4) बेरोजगारी से अभिप्राय, (5) भारत में बेरोजगारी का स्वरूप, (6) बेरोजगारी के कारण, (7) समस्या का समाधान, (8) उपसंहार।

प्रस्तावना—मनुष्य की सारी गरिमा, जीवन का उत्साह, आत्म-विश्वास व आत्म-सम्मान उसकी आजीविका पर निर्भर करता है। बेकार या बेरोजगार व्यक्ति से बढ़कर दयनीय, दुर्बल तथा दुर्भाग्यशाली कौन होगा? परिवार के लिए वह बोझ होता है तथा समाज के लिए कलंक। उसके समस्त गुण, अवगुण कहलाते हैं और उसकी सामान्य भूलें अपराध घोषित की जाती हैं। इस प्रकार वर्तमान समय में भारत के सामने सबसे विकराल और विस्फोटक समस्या बेकारी की है; क्योंकि पेट की ज्वाला से पीड़ित व्यक्ति कोई भी पाप कर सकता है—'बुभुक्षित: किं न करोति पापम्।' हमारा देश ऐसे ही युवकों की पीड़ा से सन्तप्त है।

प्राचीन भारत की स्थिति—प्राचीन भारत अनेक राज्यों में विभक्त था। राजागण स्वेच्छाचारी न थे। वे मन्त्रिपरिषद् के परामर्श से कार्य करते हुए प्रजा की सुख-समृद्धि के लिए निरन्तर प्रयत्नशील रहते थे। राजदरबार से हजारों लोगों की आजीविका चलती थी, अनेक उद्योग-धन्धे फलते-फूलते थे। प्राचीन भारत में यद्यपि बड़े-बड़े नगर भी थे, पर प्रधानता ग्रामों की ही थी। ग्रामों में कृषि योग्य भूमि का अभाव न था। सिंचाई की समुचित व्यवस्था थी। फलत: भूमि सच्चे अर्थों में शस्यश्यामला (अनाज से भरपूर) थी। इन ग्रामों में कृषि से सम्बद्ध अनेक हस्तशिल्पी काम करते थे; जैसे—बढ़ई, खरादी, लुहार, सिकलीगर, कुम्हार, कलयीगर आदि। साथ ही प्रत्येक घर में कोई-न-कोई लघु उद्योग चलता था; जैसे—सूत कातना, कपड़ा बुनना, इत्र-तेल का उत्पादन करना, खिलौने बनाना, कागज बनाना, चित्रकारी करना, रँगाई का काम करना, गुड़-खाँड बनाना आदि। उस समय भारत का निर्यात व्यापार बहुत बढ़ा-चढ़ा था। यहाँ से अधिकतर रेशम, मलमल आदि भिन्न-भिन्न प्रकार के वस्त्र और मणि, मोती, हीरे, मसाले, मोरपंख, हाथीदाँत आदि बड़ी मात्रा में विदेशों में भेजे जाते थे। दक्षिण भारत गर्म मसालों के लिए विश्वभर में विख्यात था। यहाँ काँच का काम भी बहुत उत्तम होता था। हाथीदाँत और शंख की अत्युत्तम चूड़ियाँ बनती थीं, जिन पर बारीक कारीगरी होती थी।

उपर्युक्त विवरण से स्पष्ट है कि प्राचीन काल की असाधारण समृद्धि का मुख्य आधार कृषि ही नहीं, अपितु अगणित लघु उद्योग-धन्धे एवं निर्यात-व्यापार था। इन उद्योग-धन्धों का संचालन बड़े-बड़े पूँजीपतियों के हाथों में न होकर गण-संस्थाओं (व्यापार संघों) द्वारा होता था। यही कारण था कि प्राचीन भारत में बेकारी का नाम भी कोई न जानता था।

प्राचीन भारत के इस आर्थिक सर्वेक्षण से तीन निष्कर्ष निकलते हैं—(1) देश की अधिकांश जनता किसी-न-किसी उद्योग-धन्धे, हस्तशिल्प या वाणिज्य-व्यवसाय में लगी थी। (2) भारत में निम्नतम स्तर तक स्वायत्तशासी या लोकतान्त्रिक संस्थाओं का जाल बिछा था। (3) सारे देश में एक प्रकार का आर्थिक साम्यवाद विद्यमान था अर्थात् धन कुछ ही हाथों या स्थानों में केन्द्रित न होकर न्यूनाधिक मात्रा में सारे देश में फैला हुआ था।

वर्तमान स्थिति—जब सन् 1947 ई० में देश लम्बी पराधीनता के बाद स्वतन्त्र हुआ तो आशा हुई कि प्राचीन भारतीय अर्थतन्त्र की सुदृढ़ता की आधारभूत ग्राम-पंचायतों एवं लघु उद्योग-धन्धों को उज्जीवित कर देश को पुन: समृद्धि की ओर बढ़ाने हेतु योग्य दिशा मिलेगी, पर दुर्भाग्यवश देश का शासनतन्त्र अंग्रेजों के मानस-पुत्रों के हाथों में चला गया, जो अंग्रेजों से भी ज्यादा अंग्रेजियत में रँगे हुए थे। परिणाम यह हुआ कि देश में बेरोजगारी बढ़ती ही गयी। इस समय भारत की जनसंख्या 121 करोड़ से भी ऊपर है जिसमें 10% अर्थात् 12.1 करोड़ से भी अधिक लोग पूर्णतया बेरोजगार हैं।

बेरोजगारी से अभिप्राय—बेरोजगार, सामान्य अर्थ में, उस व्यक्ति को कहते हैं जो शारीरिक रूप से कार्य करने के लिए असमर्थ न हो तथा कार्य करने का इच्छुक होने पर भी उसे प्रचलित मजदूरी की दर पर कोई कार्य न मिलता हो। बेकारी को हम तीन वर्गों में बाँट सकते हैं—अनैच्छिक बेकारी, गुप्त व आंशिक बेकारी तथा संघर्षात्मक बेकारी। अनैच्छिक बेरोजगारी से अभिप्राय यह है कि व्यक्ति प्रचलित वास्तविक मजदूरी पर कार्य करने को तैयार है, परन्तु उसे रोजगार प्राप्त नहीं होता। गुप्त व आंशिक बेरोजगारी से आशय किसी भी व्यवसाय में आवश्यकता से अधिक व्यक्तियों के कार्य पर लगने से है। संघर्षात्मक बेरोजगारी से अभिप्राय यह है कि बेरोजगारी श्रम की माँग में सामयिक परिवर्तनों के कारण होती है और अधिक समय तक नहीं रहती। साधारणतया किसी भी अधिक जनसंख्या वाले राष्ट्र में तीनों प्रकार की बेरोजगारी पायी जाती है।

भारत में बेरोजगारी का स्वरूप—जनसंख्या के दृष्टिकोण से भारत का स्थान विश्व के सबसे अधिक जनसंख्या वाले देशों में चीन के पश्चात् है। यद्यपि वहाँ पर अनैच्छिक बेरोजगारी पायी जाती है, तथापि भारत में बेरोजगारी का स्वरूप अन्य देशों की अपेक्षा कुछ भिन्न है। यहाँ पर संघर्षात्मक बेरोजगारी भीषण रूप से फैली हुई है। प्राय: नगरों में अनैच्छिक बेरोजगारी और ग्रामों में गुप्त बेरोजगारी का स्वरूप देखने में आता है। शहरों में बेरोजगारी के दो रूप देखने में आते हैं—औद्योगिक श्रमिकों की बेकारी तथा दूसरे, शिक्षित वर्ग में बेकारी। भारत एक कृषि-प्रधान देश है और यहाँ की लगभग 75% जनता गाँव में निवास करती है जिसका मुख्य व्यवसाय कृषि है। कृषि में मौसमी अथवा सामयिक रोजगार प्राप्त होता है; अत: कृषि व्यवसाय में संलग्न जनसंख्या का अधिकांश भाग चार से छ: मास तक बेकार रहता है। इस प्रकार भारतीय ग्रामों में संघर्षात्मक बेरोजगारी अपने भीषण रूप में विद्यमान है।

बेरोजगारी के कारण—हमारे देश में बेरोजगारी के अनेक कारण हैं। इनमें से कुछ प्रमुख कारणों का उल्लेख निम्नलिखित है—

(1) **जनसंख्या**—बेरोजगारी का प्रमुख कारण है—जनसंख्या में तीव्रगति से वृद्धि। विगत कुछ दशकों में भारत में जनसंख्या का विस्फोट हुआ है। हमारे देश की जनसंख्या में प्रतिवर्ष लगभग 2.5% की वृद्धि हो जाती है; जबकि इस दर से बढ़ रहे व्यक्तियों के लिए हमारे देश में रोजगार की व्यवस्था नहीं है।

(2) **शिक्षा-प्रणाली**—भारतीय शिक्षा सैद्धान्तिक अधिक है। इसमें पुस्तकीय ज्ञान पर ही विशेष ध्यान दिया जाता है; फलत: यहाँ के स्कूल-कॉलेजों से निकलने वाले छात्र निजी उद्योग-धन्धे स्थापित करने योग्य नहीं बन पाते।

(3) **कुटीर उद्योगों की उपेक्षा**—ब्रिटिश सरकार की कुटीर उद्योग विरोधी नीति के कारण देश में कुटीर उद्योग-धन्धों का पतन हो गया; फलस्वरूप अनेक कारीगर बेकार हो गये। स्वतन्त्रता-प्राप्ति के पश्चात् भी कुटीर उद्योगों के विकास की ओर पर्याप्त ध्यान नहीं दिया गया; अत: बेरोजगारी में निरन्तर वृद्धि होती गयी।

(4) **औद्योगीकरण की मन्द प्रक्रिया**—पंचवर्षीय योजनाओं में देश के औद्योगिक विकास के लिए जो कदम उठाये गये उनसे समुचित रूप से देश का औद्योगीकरण नहीं किया जा सका है। फलत: बेकार व्यक्तियों के लिए रोजगार के साधन नहीं जुटाये जा सके हैं।

(5) **कृषि का पिछड़ापन**—भारत की लगभग दो-तिहाई जनता कृषि पर निर्भर है। कृषि की पिछड़ी हुई दशा में होने के कारण कृषि बेरोजगार की समस्या व्यापक हो गयी है।

(6) **कुशल एवं प्रशिक्षित व्यक्तियों की कमी**—हमारे देश में कुशल एवं प्रशिक्षित व्यक्तियों की कमी है। अत: उद्योगों के सफल संचालन के लिए विदेशों से प्रशिक्षित कर्मचारी बुलाने पड़ते हैं। इस कारण से देश के कुशल एवं प्रशिक्षित व्यक्तियों के बेकार हो जाने की भी समस्या हो जाती है।

इनके अतिरिक्त मानसून की अनियमितता, भारी संख्या में शरणार्थियों का आगमन, मशीनीकरण के फलस्वरूप होने वाली श्रमिकों की छँटनी, श्रम की माँग एवं पूर्ति में असन्तुलन, आर्थिक संसाधनों की कमी आदि से भी बेरोजगारी में वृद्धि हुई है। देश को बेरोजगारी से उबारने के लिए इनका समुचित समाधान नितान्त आवश्यक है।

समस्या का समाधान—(1) सबसे पहली आवश्यकता है हस्तोद्योगों को बढ़ावा देने की। इससे स्थानीय प्रतिभा को उभरने का सुअवसर मिलेगा। भारत जैसे विशाल जनसंख्या वाले देश के लिए लघु उद्योग-धन्धे ही ठीक हैं, जिनमें अधिक-से-अधिक लोगों को काम मिल सके। मशीनीकरण उन्हीं देशों के लिए उपयुक्त होता है, जहाँ कम जनसंख्या के कारण कम हाथों से अधिक काम लेना हो।

(2) दूसरी आवश्यकता है मातृभाषाओं के माध्यम से शिक्षा देने की, जिससे विद्यार्थी शीघ्र ही शिक्षित होकर अपनी प्रतिभा का उपयोग कर सकें। साथ ही आज स्कूल-कॉलेजों में दी जाने वाली अव्यावहारिक शिक्षा के स्थान पर शिल्प-कला, उद्योग-धन्धों आदि से सम्बद्ध शिक्षा दी जानी चाहिए, जिससे कि पढ़ाई समाप्त कर विद्यार्थी तत्काल रोजी-रोटी कमाने योग्य हो जाए।

(3) बड़ी-बड़ी मिलें और फैक्ट्रियाँ, सैनिक शस्त्रास्त्र तथा ऐसी ही दूसरी बड़ी चीजें बनाने तक सीमित कर दी जाएँ। अधिकांश जीवनोपयोगी वस्तुओं का उत्पादन घरेलू उद्योगों से ही हो।

(4) पश्चिमी शिक्षा ने शिक्षितों में हाथ के काम को नीचा समझने की जो मनोवृत्ति पैदा कर दी है, उसे 'श्रम के गौरव' (Dignity of Labour) की भावना पैदा करके दूर किया जाना चाहिए।

(5) लघु उद्योग-धन्धों के विकास से शिक्षितों में नौकरियों के पीछे भागने की प्रवृत्ति घटेगी; क्योंकि नौकरियों में देश की जनता का एक बहुत सीमित भाग ही खप सकता है। लोगों को प्रोत्साहन देकर हस्त-उद्योगों एवं वाणिज्य-व्यवसाय की ओर उन्मुख किया जाना चाहिए। ऐसे लघु-उद्योगों में रेशम के कीड़े पालना, मधुमक्खी-पालन, सूत कातना, कपड़ा बुनना, बागवानी, साबुन बनाना, खिलौने, चटाइयाँ, कागज, तेल-इत्र आदि न जाने कितनी वस्तुओं का निर्माण सम्भव है। इसके लिए प्रत्येक जिले में जो सरकारी लघु-उद्योग कार्यालय हैं; वे अधिक प्रभावी ढंग से काम करें। वे इच्छुक लोगों को सही उद्योग चुनने की सलाह दें, उन्हें ऋण उपलब्ध कराएँ तथा आवश्यकतानुसार कुछ तकनीकी शिक्षा दिलवाने की भी व्यवस्था करें। इसके साथ ही इनके उत्पादों की बिक्री की भी व्यवस्था कराएँ। यह सर्वाधिक आवश्यक है; क्योंकि इसके बिना शेष सारी व्यवस्था बेकार साबित होगी। सरकार के लिए ऐसी व्यवस्था करना कठिन नहीं है; क्योंकि वह स्थान-स्थान पर बड़ी-बड़ी प्रदर्शनियाँ आयोजित करके तैयार माल बिकवा सकती है, जब कि व्यक्ति के लिए, विशेषत: नये व्यक्ति के लिए, यह सम्भव नहीं।

(6) इसके साथ ही देश की तीव्र गति से बढ़ती हुई जनसंख्या पर भी रोक लगाना अत्यावश्यक हो गया है।

उपसंहार—सारांश यह है कि देश के स्वायत्तशासी ढाँचे और लघु उद्योग-धन्धों के प्रोत्साहन से ही बेरोजगारी की समस्या का स्थायी समाधान सम्भव है। हमारी सरकार भी बेरोजगारी की समस्या के उन्मूलन के लिए जागरूक है और उसके द्वारा इस दिशा में महत्त्वपूर्ण कदम भी उठाये गये हैं। परिवार नियोजन (कल्याण), बैंकों का राष्ट्रीयकरण, एक स्थान से दूसरे स्थान पर कच्चा माल ले जाने की सुविधा, कृषि-भूमि की चकबन्दी, नये-नये उद्योगों की स्थापना, प्रशिक्षण केन्द्रों की स्थापना आदि अनेकानेक ऐसे कार्य हैं, जो बेरोजगारी को दूर करने में एक सीमा तक सहायक सिद्ध हो रहे हैं। इन कार्यक्रमों को और अधिक विस्तृत, प्रभावकारी और ईमानदारी से कार्यान्वित किये जाने की आवश्यकता है।

13. मानव-जीवन में वनों की उपयोगिता (2009, 18)

प्रमुख विचार-बिन्दु—(1) प्रस्तावना, (2) वनों का प्रत्यक्ष योगदान, (3) वनों का अप्रत्यक्ष योगदान, (4) भारतीय वन-सम्पदा के लिए उत्पन्न समस्याएँ, (5) वनों के विकास के लिए सरकार द्वारा किये जा रहे प्रयास, (6) उपसंहार।

प्रस्तावना—वन मानव-जीवन के लिए बहुत उपयोगी हैं, किन्तु सामान्य व्यक्ति इसके महत्त्व को नहीं समझ पा रहा है। जो व्यक्ति वनों में रहते हैं या जिनकी जीविका वनों पर आश्रित है, वे तो वनों के महत्त्व को समझते हैं, लेकिन जो लोग वनों में नहीं रह रहे हैं वे तो इन्हें प्राकृतिक शोभा का साधन ही मानते हैं। पर वनों का मनुष्यों के जीवन से कितना गहरा सम्बन्ध है, इसके लिए विभिन्न क्षेत्रों में उसका योगदान क्रमिक रूप से द्रष्टव्य है।

वनों का प्रत्यक्ष योगदान—(क) मनोरंजन का साधन—वन, मानव को सैर-सपाटे के लिए रमणीक क्षेत्र प्रस्तुत करते हैं। वृक्षों के अभाव में पर्यावरण शुष्क हो जाता है और सौन्दर्य नष्ट हो जाता है। वृक्ष स्वयं सौन्दर्य की सृष्टि करते हैं। ग्रीष्मकाल में बहुत बड़ी संख्या में लोग पर्वतीय-क्षेत्रों की यात्रा करके इस प्राकृतिक सौन्दर्य का आनन्द लेते हैं।

(ख) लकड़ी की प्राप्ति—वनों से हम अनेक प्रकार की बहुमूल्य लकड़ियाँ प्राप्त करते हैं। ये लकड़ियाँ हमारे अनेक प्रयोगों में आती हैं। इन्हें ईंधन के रूप में प्रयुक्त किया जाता है। ये लकड़ियाँ व्यापारिक दृष्टिकोण से भी बहुत उपयोगी होती हैं, जिनमें साल, सागौन, देवदार, चीड़, शीशम, चन्दन, आबनूस आदि की लकड़ियाँ मुख्य हैं। इनका प्रयोग फर्नीचर, इमारती सामान, माचिस, रेल के डिब्बे, स्लीपर, जहाज आदि बनाने के लिए किया जाता है।

(ग) विभिन्न उद्योगों के लिए कच्चे माल की पूर्ति—वनों से लकड़ी के अतिरिक्त अनेक उपयोगी सहायक वस्तुओं की प्राप्ति होती है, जिनका अनेक उद्योगों में कच्चे माल के रूप में उपयोग किया जाता है। इनमें गोंद, शहद, जड़ी-बूटियाँ, कत्था, लाख, चमड़ा, बाँस, बेंत, जानवरों के सींग आदि मुख्य हैं। इनका कागज उद्योग, चमड़ा उद्योग, फर्नीचर उद्योग, दियासलाई उद्योग, टिम्बर उद्योग, औषध उद्योग आदि में कच्चे माल के रूप में उपयोग किया जाता है।

(घ) प्रचुर फलों की प्राप्ति—वन प्रचुर मात्रा में फलों को प्रस्तुत करके मानव का पोषण करते हैं। ये फल अनेक बहुमूल्य खनिज लवणों व विटामिनों का स्रोत हैं।

(ङ) जीवनोपयोगी जड़ी-बूटियाँ—वन अनेक जीवनोपयोगी जड़ी-बूटियों के भण्डार हैं। वनों में ऐसी अनेक वनस्पतियाँ पायी जाती हैं, जिनसे अनेक असाध्य रोगों का निदान सम्भव हो सका है। विजयसार की लकड़ी मधुमेह की अचूक औषध है। लगभग सभी आयुर्वेदिक ओषधियाँ वृक्षों से ही विविध तत्त्वों को एकत्र कर बनायी जाती हैं।

(च) वन्य पशु-पक्षियों को संरक्षण—वन्य पशु-पक्षियों की सौन्दर्य की दृष्टि से अपनी उपयोगिता है। वन अनेक वन्य पशु-पक्षियों को संरक्षण प्रदान करते हैं। वे हिरन, नीलगाय, गीदड़, रीछ, शेर, चीता, हाथी आदि वन्य पशुओं की क्रीड़ास्थली हैं। ये पशु वनों में स्वतन्त्र विचरण करते हैं, भोजन प्राप्त करते हैं और संरक्षण पाते हैं। गाय, भैंस, बकरी, भेड़ आदि पालतू पशुओं के लिए भी वन विशाल चरागाह प्रदान करते हैं।

(छ) बहुमूल्य वस्तुओं की प्राप्ति—वनों से हमें अनेक बहुमूल्य वस्तुएँ प्राप्त होती हैं। हाथी दाँत, मृग- कस्तूरी, मृग-छाल, शेर की खाल, गैंडे के सींग आदि बहुमूल्य वस्तुएँ वनों की ही देन हैं। वनों से प्राप्त कुछ वनस्पतियों से तो सोना और चाँदी भी निकाले जाते हैं। 'तेलियाकन्द' नामक वनस्पति से प्रचुर मात्रा में स्वर्ण प्राप्त होता है।

(ज) आध्यात्मिक लाभ—भौतिक जीवन के अतिरिक्त मानसिक एवं आध्यात्मिक पक्ष में भी वनों का महत्त्व कुछ कम नहीं है। सांसारिक

जीवन से क्लान्त मनुष्य यदि वनों में कुछ समय निवास करते हैं तो उन्हें सन्तोष तथा मानसिक शान्ति प्राप्त होती है। इसीलिए हमारी प्राचीन संस्कृति में ऋषि-मुनि वनों में ही निवास करते थे।

इस प्रकार हमें वनों का प्रत्यक्ष योगदान देखने को मिलता है, जिनसे सरकार को राजस्व और वनों के ठेकों के रूप में करोड़ों रुपये की आय होती है। साथ ही सरकार चन्दन के तेल, उसकी लकड़ी से बनी कलात्मक वस्तुओं, हाथी दाँत की बनी वस्तुओं, फर्नीचर, लाख, तारपीन के तेल आदि के निर्यात से प्रति वर्ष करोड़ों रुपये की बहुमूल्य विदेशी मुद्रा अर्जित करती है।

वनों का अप्रत्यक्ष योगदान—(क) वर्षा—भारत एक कृषिप्रधान देश है। सिंचाई के अपर्याप्त साधनों के कारण यह अधिकांशतः मानसून पर निर्भर रहता है। कृषि की मानसून पर निर्भरता की दृष्टि से वनों का बहुत महत्त्व है। वन वर्षा में सहायता करते हैं। इन्हें वर्षा का संचालक कहा जाता है। इस प्रकार वनों से वर्षा होती है और वर्षा से वन बढ़ते हैं।

(ख) पर्यावरण सन्तुलन (शुद्धीकरण)—वन-वृक्ष वातावरण से दूषित-वायु (कार्बन डाइ- ऑक्साइड) ग्रहण करके अपना भोजन बनाते हैं और ऑक्सीजन छोड़कर पर्यावरण को शुद्ध बनाये रखने में सहायक होते हैं। इस प्रकार वन पर्यावरण में सन्तुलन बनाये रखने में सहायक होते हैं।

(ग) जलवायु पर नियन्त्रण—वनों से वातावरण का तापक्रम, नमी और वायु-प्रवाह नियन्त्रित होता है, जिससे जलवायु में सन्तुलन बना रहता है। वन जलवायु की भीषण उष्णता को सामान्य बनाये रखते हैं। ये आँधी-तूफानों से हमारी रक्षा करते हैं। ये सारे देश की जलवायु को प्रभावित करते हैं तथा गर्म व तेज हवाओं को रोककर देश की जलवायु को समशीतोष्ण बनाये रखते हैं।

(घ) जल के स्तर में वृद्धि—वन वृक्षों की जड़ों के द्वारा वर्षा के जल को सोखकर भूमि के नीचे के जल-स्तर को बढ़ाते रहते हैं। इससे दूर-दूर तक के क्षेत्र हरे-भरे रहते हैं; साथ ही कुओं आदि में जल का स्तर घटने नहीं पाता है। पहाड़ों पर बहते चश्मे वनों की पर्याप्तता के ही परिणाम हैं। वनों से नदियों के सतत प्रवाहित होते रहने में भी सहायता मिलती है।

(ङ) भूमि-कटाव पर रोक—वनों के कारण वर्षा का जल मन्द गति से प्रवाहित होता है; अतः भूमि का कटाव कम होता है। वर्षा के अतिरिक्त जल को वन सोख लेते हैं और नदियों के प्रवाह को नियन्त्रित करके भूमि के कटाव को रोकते हैं, जिसके फलस्वरूप भूमि ऊबड़-खाबड़ नहीं हो पाती तथा मिट्टी की उर्वरा-शक्ति भी बनी रहती है।

(च) रेगिस्तान के प्रसार पर रोक—वन तेज आँधियों को रोकते हैं तथा वर्षा को आकर्षित भी करते हैं, जिससे मिट्टी के कण उनकी जड़ों में बँध जाते हैं। इससे रेगिस्तान का प्रसार नहीं होने पाता।

(छ) बाढ़-नियन्त्रण में सहायक—वृक्ष की जड़ें वर्षा के अतिरिक्त जल को सोख लेती हैं, जिनके कारण नदियों का जल-प्रवाह नियन्त्रित रहता है। इससे बाढ़ की स्थिति में बचाव हो जाता है।

वनों को हरा सोना इसीलिए कहा जाता है क्योंकि इन जैसा मूल्यवान, हितैषी व शोभाकारक मनुष्य के लिए कोई और नहीं। आज भी सन्तप्त मनुष्य वृक्ष के नीचे पहुँचकर राहत का अनुभव करता है। सात्विक भावनाओं के ये सन्देशवाहक प्रकृति का सर्वाधिक प्रेमपूर्ण उपहार हैं। स्वार्थी मनुष्य ने इनसे निरन्तर दुर्व्यवहार किया है, जिसका प्रतिफल है—भयंकर उष्णता, श्वास सम्बन्धी रोग, हिंसात्मक वृत्तियों का विस्फोट आदि।

भारतीय वन-सम्पदा के लिए उत्पन्न समस्याएँ—वनों के योगदान से स्पष्ट है कि वन हमारे जीवन में प्रत्यक्ष और अप्रत्यक्ष दोनों रूप से बहुत उपयोगी हैं। वनों में अपार सम्पदा पायी जाती है, किन्तु जैसे-जैसे जनसंख्या बढ़ती गयी, वनों को मनुष्य के प्रयोग के लिए काटा जाने लगा। अनेक अद्भुत और घने वन आज समाप्त हो गये हैं और हमारी वन-सम्पदा का एक बहुत बड़ा भाग नष्ट हो गया है। वन-सम्पदा के इस संकट ने व्यक्ति और सरकार को वन-संरक्षण की ओर सोचने पर विवश कर दिया है। यह निश्चित है कि वनों के संरक्षण के बिना मानव-जीवन दूभर हो जाएगा। आज हमारे देश में वनों का क्षेत्रफल केवल 22.7 प्रतिशत ही रह गया है, जो कम-से-कम एक-तिहाई तो होना ही चाहिए था। वनों के असमान वितरण, वनों के पर्याप्त दोहन, नगरीकरण से वनों की समाप्ति, ईंधन व इमारती सामान के लिए वनों की अन्धाधुन्ध कटाई ने भारतीय वन-सम्पदा के लिए अनेक समस्याएँ उत्पन्न कर दी हैं।

वनों के विकास के लिए सरकार द्वारा किये जा रहे प्रयास—सरकार ने वनों के महत्त्व को दृष्टिगत रखते हुए समय-समय पर वनों के संरक्षण और विकास के लिए अनेक कदम उठाये हैं, जिनका संक्षिप्त विवरण निम्नलिखित है—

(1) सन् 1956 ई० में वन महोत्सव का आयोजन किया गया; जिसका मुख्य नारा था—'अधिक वृक्ष लगाओ।' तभी से यह उत्सव प्रति वर्ष 1 से 7 जुलाई तक मनाया जाता है।

(2) सन् 1965 ई० में सरकार ने केन्द्रीय वन आयोग की स्थापना की, जो वनों से सम्बन्धित आँकड़े और सूचनाएँ एकत्रित करके वनों के विकास में लगी हुई संस्थाओं के कार्य में ताल-मेल बैठाता है।

(3) वनों के विकास के लिए देहरादून में 'वन अनुसन्धान संस्थान' (Forest Research Institute) की स्थापना की गयी, जिसमें वनों के सम्बन्ध में अनुसन्धान किये जाते हैं और वन अधिकारियों को प्रशिक्षित किया जाता है।

(4) विभिन्न राज्यों में वन निगमों की रचना की गयी है, जिससे वनों की अनियन्त्रित कटाई को रोका जा सके।

व्यक्तिगत स्तर पर भी अनेक आन्दोलनों का संचालन करके समाज-सेवियों द्वारा समय-समय पर सरकार को वनों के संरक्षण और विकास के लिए सचेत किया जाता रहा है। इनमें चिपको आन्दोलन प्रमुख रहा है, जिसका श्री सुन्दरलाल बहुगुणा ने सफल नेतृत्व किया।

उपसंहार—निःसन्देह वन हमारे जीवन के लिए बहुत उपयोगी हैं। इसलिए वनों का संरक्षण और संवर्द्धन बहुत आवश्यक है। इसके लिए जनता और सरकार का सहयोग अपेक्षित है। बड़े खेद का विषय है कि एक ओर तो सरकार वनों के संवर्द्धन के लिए विभिन्न आयोगों और निगमों की स्थापना कर रही है तो दूसरी ओर वह कुछ स्वार्थी तत्त्वों के हाथों में खेलकर केवल धन के लाभ की आशा से अमूल्य वनों को नष्ट भी कराती जा रही है। आज मध्य प्रदेश में केवल 18% वन रह गये हैं, जो कि पहले एक-तिहाई से अधिक हुआ करते थे। इसलिए आवश्यकता है कि सरकार वन-संरक्षण नियमों का कड़ाई से पालन कराकर भावी प्राकृतिक विपदाओं से रक्षा करे। इसके लिए सरकार के साथ-साथ सामान्य जनता का सहयोग भी अपेक्षित है। इसके लिए यदि हर व्यक्ति वर्ष में एक बार एक वृक्ष लगाने और उसका भली प्रकार संरक्षण करने का संकल्प लेकर उसे क्रियान्वित भी करे तो यह राष्ट्र के लिए आगे आने वाले कुछ एक वर्षों में अमूल्य योगदान हो सकता है।

14. को न कुसंगति पाई नसाई (2016, 18)

प्रमुख विचार-बिन्दु—(1) प्रस्तावना, (2) कुसंगति का मानव-जीवन पर प्रभाव, (3) कुसंगति की छूत, (4) कुसंगी व्यक्ति की समाज में स्थिति, (5) कुसंगति से हानि, (6) उपसंहार।

प्रस्तावना—''को न कुसंगति पाई नसाई'' का अर्थ है—कुसंगति में पड़कर कौन नष्ट नहीं हो जाता। इसका तात्पर्य बुरे लोगों की संगति में आकर बुरे व्यवहार व आचरण का अनुसरण करने से है। इस प्रकार व्यक्ति जो कुसंगति में आकर बुरा व्यवहार करने लगता है, उसका मानसिक विकास रुक जाता है तथा कुसंगति के कारण ऐसे मनुष्य का यश, धन, वैभव आदि सभी कुछ नष्ट हो जाता है। समाज में ऐसे कई जीवंत उदाहरण देखे जा सकते हैं। कई कुसंगी मनुष्यों को समय रहते काफी कुछ खोना पड़ता है। कुसंगी व्यक्ति अपने बुरे चरित्र के कारण ही दूसरों को हानि पहुँचाने वाले होते हैं तथा ऐसे व्यक्ति के साथ जो पुरुष मित्रता

करता है, वह भी शीघ्र ही बुराइयों से प्रभावित हो जाता है। **आचार्य चाणक्य** का कहना है—"मनुष्य को कुसंगति से बचना चाहिए।" उनके अनुसार मनुष्य की भलाई इसी में है कि वह जितनी जल्दी हो सके कुसंगी व्यक्तियों का साथ छोड़ दे। कुसंगी व्यक्तियों के सन्दर्भ में निम्न सूक्ति दी गई है—

हानि कुसंग सुसंगति लाहू, लोकहुँ वेद विदित सब काहू।
बिनसहू उपजइ ज्ञान जिमि, पाई कुसंग सुसंग।।

कुसंगति का मानव-जीवन पर प्रभाव—कुसंगति का मुख्य रूप एक ही है—दूषित विचारों का संग। मनुष्य के शरीर का संचालन मन-मस्तिष्क के ही सांकेतिक निर्देशों से होता है। जैसा विचार और जैसी भावनाएँ होंगी वैसी ही कर्म प्रेरणा होगी और तीनों के सम्मिलित प्रभाव से व्यक्तित्व विनिर्मित होगा। विचारों का संग दो प्रकार से होता है—**पहला** साहित्य के अध्ययन से तथा **दूसरा** व्यक्तियों के सम्पर्क से। संगति दोनों की ही प्रभावकारी होती है। सस्ता साहित्य, सनसनीखेज खबरें और बातें, अश्लील साहित्य तथा गपोड़बाजी, नशेबाजी, जुआरी, सटोरिया, कलही, दुव्यसनी व्यक्ति अपना दुष्प्रभाव अन्य व्यक्तियों पर भी डालते हैं। भली-बुरी दोनों ही प्रकार की प्रवृत्तियाँ प्रोत्साहन से पनपती हैं। प्रोत्साहन और अवसर न मिलने पर मुरझाकर धीरे-धीरे मृतप्राय अवस्था में जा पहुँचती हैं। कुसंगति दुष्प्रवृत्तियों को बढ़ाती है और सत्प्रवृत्तियाँ उसकी प्रचण्ड आँच से झुलसती जाती हैं। इन प्रवृत्तियों से मानव प्रभावित होता है, क्योंकि दुष्प्रवृत्तियों का प्रभाव प्रत्येक व्यक्ति पर पड़े बिना नहीं रहता। समाज में सदाचारी और दुराचारी दोनों प्रकार के लोग रहते हैं। दोनों ही समाज को प्रभावित करते हैं। समाज में रहने वाले अन्य व्यक्ति किसी सदाचारी व्यक्ति से इतनी जल्दी प्रभावित नहीं होते जितना कि दुराचारी व्यक्ति से प्रभावित होते हैं। भविष्य में जिसका विपरीत प्रभाव उनके क्रियाकलापों को देखने से स्पष्ट होता है।

कुसंगति की छूत—कुसंगति (बुरी संगति) को कीचड़ के समान बताया गया है कि इस कीचड़ से बचकर रहना चाहिए, अन्यथा यह हमारे आचरण को दूषित कर देगा। यदि कोई मनुष्य एक बार बुरी संगत में फँस गया है और कलंकित हो गया तो वह फिर बार-बार कलंकित होने से नहीं डरता और धीरे-धीरे बुरी आदतों का अभ्यस्त हो जाता है। जब बुराई आदत बन जाती है तब वह उससे घृणा भी नहीं करता और न बुरा कहने से चिढ़ता ही है।

कुसंगति में पड़े हुए व्यक्ति का विवेक नष्ट हो जाता है और उसे भले-बुरे की पहचान भी नहीं रह जाती। उसे बुराई ही भलाई दीखने लगती है और वह इतना गिर जाता है कि बुराई की पूजा भक्त की तरह करने लगता है। इसलिए यदि अपने हृदय और आचरण को निष्कलंक और उज्ज्वल बनाये रखना है तो कुसंगति की छूत से बचना चाहिए।

कुसंगी व्यक्ति की समाज में स्थिति—कुसंगी व्यक्ति की समाज में स्थिति घृणापूर्ण होती है। क्योंकि उसके कुमार्ग पर पैर रखते ही उसके शरीर में तेज, बल, बुद्धि लेशमात्र भी नहीं रह जाती है। आत्मबल में कमी आ जाती है; जैसे—सीता जी का अपहरण करने से पहले रावण इधर-उधर देखता रहा और भयग्रस्त होकर कुत्ते की तरह उसने आश्रम में प्रवेश किया। कुसंगी व्यक्ति की बुराइयाँ भयानक बीमारी की तरह होती हैं, जो बहुत कम समय में ज्यादा-से-ज्यादा लोगों को अपनी चपेट में ले लेती हैं, जिससे कुसंगी व्यक्ति की संगत में आने वाला हर व्यक्ति उसके ही सामान रोगी हो जाता है जो समाज को बहुत बुरी तरह से आहत करते हैं। इससे समाज का भविष्य भी बुराइयों के अँधेरे में डूब जाता है। इसी कारण कुसंगी व्यक्तियों को समाज से बाहर ही रखा जाता है या समाज के लोगों को सूचित कर दिया जाता है कि ऐसे लोगों से दूर रहकर अपना व अपने बच्चों का भविष्य खराब होने से बचाएँ, जिससे आपकी आने वाली पीढ़ियों को भी उसके दुष्परिणामों से सुरक्षित रखा जा सके। इन सब कारणों के कारण कुसंगी व्यक्ति को समाज से मिलने वाली बहुत-सी प्रताड़नाओं को झेलना पड़ता है।

कुसंगति से हानि—कुसंगति बहुत ही हानिकारक होती है। यदि किसी व्यक्ति पर कुसंगति का कोई प्रभाव न पड़ रहा हो, फिर भी कुसंगी व्यक्तियों के साथ रहने के कारण उसे बुरा ही समझा जाता है। कोई चोरी न भी करे लेकिन यदि वह चोरों के साथ मिलता-जुलता भी है, तो लोग उसे भी चोर ही कहेंगे। विद्यार्थियों के लिए तो कुसंगति विनाश को जन्म देती है। इसमें पड़कर विद्यार्थी बहुत-सी बुराइयों को ग्रहण कर लेते हैं।

कुसंगति में रहने से कोई भी सुख प्राप्त नहीं होता, बल्कि थोड़ा-बहुत सुख-चैन होता भी है, वह भी नष्ट हो जाता है। अत: कुसंगति समाज में रहने वाले प्रत्येक व्यक्ति के व्यक्तित्व को नष्ट करती है, जो भविष्य में उसके लिए हानिप्रद होती है।

उपसंहार—कुसंगति मानव-जीवन के लिए एक अभिशाप है क्योंकि कुसंगति का मानव-जीवन पर बहुत बुरा प्रभाव पड़ता है और इससे सदैव हानि ही होती है। मनुष्य कितना ही सतर्क और सावधान रहे कुसंगति काजल की कोठरी के समान होती है जिसकी चपेट में व्यक्ति कभी-न-कभी आ ही जाता है, जिससे उसके जीवन का कोई अस्तित्व नहीं रह जाता है, क्योंकि ऐसे व्यक्ति को उसके खुद के परिवार के साथ-साथ समाज के अन्य व्यक्ति भी स्वीकार नहीं करते हैं और हर तरफ से सिर्फ प्रताड़नाएँ मिलती हैं। इससे कुसंगी व्यक्ति के मन में सभी के प्रति गलत भावनाएँ घर कर लेती हैं जो दूसरों की हानि देखकर उसे प्रसन्नता प्रदान करती हैं। ऐसे व्यक्ति अपना शरीर त्याग करके भी दूसरों का अहित करने का पाठ पढ़ाते हैं; अत: कुसंगति से दूर ही रहना चाहिए। छात्रों के लिए तो कुसंगति विनाश लेकर आती है। इसमें पड़कर छात्र अनेक व्यसन सीख जाते हैं। कुसंगति के कारण महान-से-महान व्यक्ति भी पतन के गर्त में गिरता चला जाता है। कुसंगति व्यक्ति की बुद्धि को जड़ करती है, उसे पग-पग पर मान-हानि उठानी पड़ती है तथा व्यक्ति स्वार्थी हो जाता है; इसलिए सदैव कुसंगति से बचकर रहना चाहिए।

15. ग्राम्य विकास की समस्याएँ और उनका समाधान (2018)

प्रमुख विचार-बिन्दु—(1) प्रस्तावना, (2) भारतीय कृषि का स्वरूप, (3) भारतीय कृषि की समस्याएँ, (4) प्राकृतिक प्रकोप, (5) समस्या का समाधान, (6) ग्रामोत्थान हेतु सरकारी योजनाएँ, (7) आदर्श ग्राम की कल्पना, (8) उपसंहार।

प्रस्तावना—प्राचीन काल से ही भारत एक कृषि-प्रधान देश रहा है। भारत की लगभग 70 प्रतिशत जनता गाँवों में निवास करती है। इस जनसंख्या का अधिकांश भाग कृषि पर ही निर्भर है। कृषि ने ही भारत को अन्तर्राष्ट्रीय क्षेत्र में विशेष ख्याति प्रदान की है। भारत की सकल राष्ट्रीय आय का लगभग 30 प्रतिशत कृषि से ही आता है। भारतीय समाज का संगठन और संयुक्त परिवार-प्रणाली आज के युग में कृषि व्यवसाय के कारण ही अपना महत्त्व बनाये हुए है। आश्चर्य की बात यह है कि हमारे देश में कृषि बहुसंख्यक जनता का मुख्य और महत्त्वपूर्ण व्यवसाय होते हुए भी बहुत ही पिछड़ा हुआ और अवैज्ञानिक है। जब तक भारतीय कृषि में सुधार नहीं होता, तब तक भारतीय किसानों की स्थिति में सुधार की कोई सम्भावना नहीं और भारतीय किसानों की स्थिति में सुधार के पूर्व भारतीय गाँवों के विकास की कल्पना ही नहीं की जा सकती। दूसरे शब्दों में कहा जा सकता है कि भारतीय कृषि, कृषक और गाँव तीनों ही एक-दूसरे पर अवलम्बित हैं। इनके उत्थान और पतन, समस्याएँ और समाधान भी एक-दूसरे से जुड़े हुए हैं।

भारतीय कृषि का स्वरूप—भारतीय कृषि और अन्य देशों की कृषि में बहुत अन्तर है। कारण अन्य देशों की कृषि वैज्ञानिक ढंग से आधुनिक साधनों द्वारा की जाती है, जब कि भारतीय कृषि अवैज्ञानिक और अविकसित है। भारतीय कृषक आधुनिक तरीकों से खेती करना नहीं चाहते और परम्परागत कृषि पर ही आधारित हैं। इसके साथ-ही भारतीय कृषि का स्वरूप इसलिए भी अव्यवस्थित है कि यहाँ पर कृषि प्रकृति की उदारता पर निर्भर है। यदि वर्षा ठीक समय पर उचित मात्रा में हो गयी तो फसल अच्छी हो जाएगी अन्यथा बाढ़ और सूखे की स्थिति में सारी की सारी उपज नष्ट हो जाती है। इस प्रकार प्रकृति की अनिश्चितता पर निर्भर होने के कारण भारतीय कृषि सामान्य कृषकों के लिए आर्थिक दृष्टि से लाभदायक नहीं है।

भारतीय कृषि की समस्याएँ—आज के विज्ञान के युग में भी कृषि के क्षेत्र में भारत में अनेक समस्याएँ विद्यमान हैं, जो कि भारतीय कृषि के पिछड़ेपन के लिए उत्तरदायी हैं। भारतीय कृषि की प्रमुख समस्याओं में सामाजिक, आर्थिक और प्राकृतिक कारण हैं। सामाजिक दृष्टि से भारतीय कृषक की दशा अच्छी नहीं है। अपने शरीर की चिन्ता न करते हुए सर्दी, गर्मी सभी ऋतुओं में वह अत्यन्त कठिन परिश्रम करता है तब भी उसे पर्याप्त लाभ नहीं हो पाता। भारतीय किसान अशिक्षित होता है। इसका कारण आज भी ग्रामीण क्षेत्रों में शिक्षा के प्रसार का न होना है। शिक्षा के अभाव के कारण वह कृषि में नये वैज्ञानिक तरीकों का प्रयोग नहीं कर पाता तथा अच्छे खाद और बीज के बारे में भी नहीं जानता। कृषि करने के आधुनिक वैज्ञानिक यन्त्रों के विषय में भी उसका ज्ञान शून्य होता है तथा आज भी वह प्राय: पुराने ढंग के ही खाद और बीजों का प्रयोग करता है। भारतीय किसानों की आर्थिक स्थिति भी अत्यन्त शोचनीय है। वह आज भी महाजनों की मुट्ठी में जकड़ा हुआ है। प्रेमचन्द ने कहा था, "भारतीय किसान ऋण में ही जन्म लेता है, जीवन भर ऋण ही चुकाता रहता है और अन्तत: ऋणग्रस्त अवस्था में ही मृत्यु को प्राप्त हो जाता है।" धन के अभाव में ही वह उन्नत बीज, खाद और कृषि-यन्त्रों का प्रयोग नहीं कर पाता। सिंचाई के साधनों के अभाव के कारण वह प्रकृति पर अर्थात् वर्षा पर निर्भर करता है।

प्राकृतिक प्रकोपों—बाढ़, सूखा, ओला आदि से भारतीय किसानों की स्थिति बद से बदतर होती जा रही है। अशिक्षित होने के कारण वह वैज्ञानिक विधियों का खेती में प्रयोग करना नहीं जानता और न ही उन पर विश्वास करना चाहता है। अन्धविश्वास, धर्मान्धता, रूढ़िवादिता आदि उसे बचपन से ही घेर लेते हैं। इस सबके अतिरिक्त एक अन्य समस्या है—भ्रष्टाचार की, जिसके चलते न तो भारतीय कृषि का स्तर सुधर पाता है और न ही भारतीय कृषक का। हमारे पास दुनिया की सबसे अधिक उपजाऊ भूमि है। गंगा-यमुना के मैदान में इतना अनाज पैदा किया जा सकता है कि पूरे देश का पेट भरा जा सकता है। इन्हीं विशेषताओं के कारण दूसरे देश आज भी हमारी ओर ललचाई नजरों से देखते हैं। लेकिन हमारी गिनती दुनिया के भ्रष्ट देशों में होती है। हमारी तमाम योजनाएँ भ्रष्टाचार की भेंट चढ़ जाती हैं। केन्द्र सरकार अथवा विश्व बैंक की कोई भी योजना हो, उसके इरादे कितने ही महान् क्यों न हों पर हमारे देश के नेता और नौकरशाह योजना के उद्देश्यों को धूल चटा देने की कला में माहिर हो चुके हैं। ऊसर भूमि सुधार, बाल पुष्टाहार, आँगनबाड़ी, निर्बल वर्ग आवास-योजना से लेकर कृषि के विकास और विविधीकरण की तमाम शानदार योजनाएँ कागजों और पैम्फलेटों पर ही चल रही हैं। आज स्थिति यह है कि गाँवों के कई घरों में दो वक्त चूल्हा भी नहीं जलता है तथा ग्रामीण नागरिकों को पानी, बिजली, स्वास्थ्य, यातायात और शिक्षा की बुनियादी सुविधाएँ भी ठीक से उपलब्ध नहीं हैं। इन सभी समस्याओं के परिणामस्वरूप भारतीय कृषि का प्रति एकड़ उत्पादन अन्य देशों की अपेक्षा गिरे हुए स्तर का रहा है।

समस्या का समाधान—भारतीय कृषि की दशा को सुधारने से पूर्व हमें कृषक और उसके वातावरण की ओर दृष्टिपात करना चाहिए। भारतीय कृषक जिन ग्रामों में रहता है, उनकी दशा अत्यन्त शोचनीय है। अंग्रेजों के शासन-काल में किसानों पर ऋण का बोझ बहुत अधिक था। शनै:-शनै: किसानों की आर्थिक दशा और गिरती चली गयी एवं गाँवों का सामाजिक-आर्थिक वातावरण अत्यन्त दयनीय हो गया। अत: किसानों की स्थिति में सुधार तभी लाया जा सकता है, जब विभिन्न योजनाओं के माध्यम से इन्हें लाभान्वित किया जा सके। इनको अधिकाधिक संख्या में साक्षर बनाने हेतु एक मुहिम छेड़ी जाए। ऐसे ज्ञानवर्द्धक कार्यक्रम तैयार किये जाएँ, जिनसे हमारा किसान कृषि के आधुनिक वैज्ञानिक तरीकों से अवगत हो सके।

ग्रामोत्थान हेतु सरकारी योजनाएँ—ग्रामों की दुर्दशा से भारत की सरकार भी अपरिचित नहीं है। भारत ग्रामों का ही देश है; अत: उनके सुधारार्थ पर्याप्त ध्यान दिया जाता है। पंचवर्षीय योजनाओं द्वारा गाँवों में सुधार किये जा रहे हैं। शिक्षालय, वाचनालय, सहकारी बैंक, पंचायत, विकास विभाग, जलकल, विद्युत आदि की व्यवस्था के प्रति पर्याप्त ध्यान दिया जा रहा है। इस प्रकार सर्वांगीण उन्नति के लिए भी प्रयत्न हो रहे हैं, किन्तु इनकी सफलता ग्रामों में बसने वाले निवासियों पर भी निर्भर है। यदि वे अपना कर्त्तव्य समझकर विकास में सक्रिय सहयोग दें, तो ये सभी सुधार उत्कृष्ट साबित हो सकते हैं। इन प्रयासों के बावजूद ग्रामीण जीवन में अभी भी अनेक सुधार अपेक्षित हैं।

आदर्श ग्राम की कल्पना—गाँधी जी की इच्छा थी कि भारत के ग्रामों का स्वरूप आदर्श हो तथा उनमें सभी प्रकार की सुविधाओं, खुशहाली और समृद्धि का साम्राज्य हो। गाँधी जी का आदर्श गाँव से अभिप्राय एक ऐसे गाँव से था, जहाँ पर शिक्षा का सुव्यवस्थित प्रचार हो; सफाई, स्वास्थ्य तथा मनोरंजन की सुविधाएँ हो; सभी व्यक्ति प्रेम, सहयोग और सद्भावना के साथ रहते हों; रेडियो, पुस्तकालय, पोस्ट ऑफिस आदि की सुविधाएँ हों; भेदभाव, छुआछूत आदि की भावना न हो; तथा लोग सुखी और सम्पन्न हों। परन्तु आज भी हम देखते हैं कि उनका स्वप्न मात्र स्वप्न ही रह गया है। आज भी भारतीय गाँवों की दशा अच्छी नहीं है। चारों ओर बेरोजगारी और निर्धनता का साम्राज्य है। गाँधी जी का आदर्श ग्राम तभी सम्भव है जब कृषि जो कि ग्रामवासियों का मुख्य व्यवसाय है, की स्थिति में सुधार के प्रयत्न किये जाएँ और कृषि से सम्बन्धित सभी समस्याओं का यथासम्भव शीघ्रातिशीघ्र निराकरण किया जाए।

उपसंहार—ग्रामों की उन्नति भारत के आर्थिक विकास में अपना अत्यन्त महत्त्वपूर्ण स्थान रखती है। भारत सरकार ने स्वतन्त्रता-प्राप्ति के पश्चात् गाँधी जी के आदर्श ग्राम की कल्पना को साकार करने का यथासम्भव प्रयास किया है। गाँवों में शिक्षा, स्वास्थ्य, सफाई आदि की व्यवस्था के प्रयत्न किये हैं। कृषि के लिए अनेक सुविधाएँ; जैसे—अच्छे बीज, अच्छे खाद, अच्छे उपकरण और साख एवं सुविधाजनक ऋण-व्यवस्था आदि देने का प्रबन्ध किया गया है। इस दशा में अभी और सुधार किये जाने की आवश्यकता है। वह दिन दूर नहीं है जब हम अपनी संस्कृति के मूल्य को पहचानेंगे और एक बार फिर उसके सर्वश्रेष्ठ होने का दावा करेंगे। उस समय हमारे स्वर्ग से सुन्दर देश के वैसे ही गाँव अँगूठी में जड़े नग की तरह सुशोभित होंगे और हम कह सकेंगे—

हमारे सपनों का संसार, जहाँ पर हँसता हो साकार,
जहाँ शोभा-सुख-श्री के साज, किया करते हैं नित श्रृंगार।
यहाँ यौवन मदमस्त ललाम, ये हैं वही हमारे ग्राम॥ ❑

मॉडल पेपर-1

सामान्य हिन्दी

(केवल प्रश्न-पत्र)

■ समय : 3 घण्टे 15 मिनट ■ कक्षा-12 ■ पूर्णांक : 100 ■

निर्देश— प्रारम्भ के 15 मिनट परीक्षार्थियों को प्रश्न-पत्र पढ़ने के लिए निर्धारित हैं।

खण्ड 'क'

1. (क) निम्नलिखित में 'अष्टयाम' की भाषा है— 1
(i) राजस्थानी (ii) ब्रजभाषा
(iii) अवधी (iv) खड़ी बोली

(ख) 'बालाबोधिनी' पत्रिका के सम्पादक थे— 1
(i) शिवप्रसाद 'सितारेहिन्द' (ii) भारतेन्दु हरिश्चन्द्र
(iii) ठाकुर जगमोहन सिंह (iv) काशीनाथ खत्री

(ग) वासुदेवशरण अग्रवाल द्वारा लिखित निबन्ध 'राष्ट्र का स्वरूप' किस निबन्ध-संग्रह से लिया गया है ? 1
(i) धरतीपुत्र (ii) 'पृथिवीपुत्र'
(iii) राष्ट्रचेतना (iv) सांस्कृतिक गौरव

(घ) 'अशोक के फूल' निबन्ध है— 1
(i) मनोवैज्ञानिक (ii) ललित
(iii) बुद्धिप्रधान (iv) ऐतिहासिक

(ङ) प्रेमचन्द का उपन्यास है— 1
(i) तितली (ii) कंकाल (iii) गोदान (iv) त्यागपत्र

2. (क) 'काव्य-वचन-सुधा' नामक पत्रिका के सम्पादक हैं— 1
(i) भारतेन्दु हरिश्चन्द्र (ii) मैथिलीशरण गुप्त
(iii) महादेवी वर्मा (iv) सुमित्रानन्दन पन्त

(ख) 'तारसप्तक' का प्रकाशन वर्ष है— 1
(i) 1950 ई० (ii) 1951 ई० (iii) 1956 ई० (iv) 1943 ई०

(ग) दिनकर को ज्ञानपीठ पुरस्कार मिला— 1
(i) वर्ष 1970 में (ii) वर्ष 1971 में
(iii) वर्ष 1972 में (iv) वर्ष 1974 में

(घ) 'कला और बूढ़ा चाँद' पर सुमित्रानन्दन पन्त को पुरस्कार प्राप्त हुआ— 1
(i) साहित्य अकादमी (ii) ज्ञानपीठ
(iii) मंगलाप्रसाद (iv) सोवियत लैण्ड नेहरू

(ङ) 'महाभारत' के 'शान्तिपर्व' के कथानक पर आधारित 'दिनकर' की काव्यकृति है— 1
(i) 'रेणुका' (ii) 'कुरुक्षेत्र'
(iii) 'सामधेनी' (iv) 'हारे को हरिनाम'

3. दिए गए गद्यांश पर आधारित निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दीजिए— 5×2=10

यह अनुभव कितना चमत्कारी है कि यहाँ जो जितनी अधिक बूढ़ी है वह उतनी ही अधिक उत्फुल्ल, मुसकानमयी है। यह किस दीपक की जोत है? जागरूक जीवन की! लक्ष्यदर्शी जीवन की! सेवा-निरत जीवन की! अपने विश्वासों के साथ एकाग्र जीवन की। भाषा के भेद रहे हैं, रहेंगे भी, पर यह जोत विश्व की सर्वोत्तम जोत है।

(i) प्रस्तुत गद्यांश में लेखक ने किसके मुसकानमय जीवन का चित्रांकन किया है?
(ii) कौन-सी ज्योति विश्व की सर्वोत्तम ज्योति है?
(iii) भिन्न-भिन्न प्रान्तों में भाषा में क्या अन्तर देखने को मिलता है?
(iv) रेखांकित अंश की व्याख्या कीजिए।
(v) पाठ का शीर्षक और लेखक का नाम बताइए।

अथवा

साहित्य, कला, नृत्य, गीत, आमोद-प्रमोद, अनेक रूपों में राष्ट्रीय जन अपने-अपने मानसिक भावों को प्रकट करते हैं। आत्मा का जो विश्वव्यापी आनंद-भाव है, वह इन विविध रूपों में साकार होता है। यद्यपि बाह्य रूप की दृष्टि से संस्कृति के ये बाहरी लक्षण अनेक दिखायी पड़ते हैं, किन्तु आन्तरिक आनंद की दृष्टि से उनमें एकसूत्रता है। जो व्यक्ति सहृदय है, वह प्रत्येक संस्कृति के आनंद-पक्ष को स्वीकार करता है और उससे आनंदित होता है। इस प्रकार की उदार भावना ही विविध जनों से बने हुए राष्ट्र के लिए स्वास्थ्यकर है।

(i) प्रस्तुत पंक्तियों में लेखक ने राष्ट्र के किस स्वरूप पर प्रकाश डाला है?
(ii) सहृदय व्यक्ति किसको स्वीकार करते हुए आनंदित होता है?
(iii) किन रूपों में राष्ट्रीय जन अपने-अपने मानसिक भावों को प्रकट करते हैं?
(iv) रेखांकित अंश की व्याख्या कीजिए।
(v) पाठ का शीर्षक और लेखक का नाम बताइए।

4. दिए गए पद्यांश पर आधारित निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दीजिए— 5 × 2 = 10

बैठी खिन्ना यक दिवस वे गेह में थीं अकेली ।
आके आँसू दृग-युगल में थे धरा को भिगोते ।।
आई धीरे इस सदन में पुष्प-सद्गंध को ले ।
प्रात: वाली सुपवन इसी काल वातायनों से ।।
संतापों को विपुल बढ़ता देख के दु:खिता हो ।
धीरे बोली स-दु:ख उससे श्रीमति राधिका यों ।।
प्यारी प्रात: पवन इतना क्यों मुझे है सताती ।
क्या तू भी है कलुषित हुई काल की क्रूरता से ।।

(i) राधा ने प्रात:कालीन वायु से दु:खित होकर क्या कहा?
(ii) फूलों की सुगंध से युक्त होकर राधा के घर में किसने प्रवेश किया?
(iii) घर में दु:खी होकर एक दिन अकेले कौन बैठा था?
(iv) रेखांकित अंश का भावार्थ लिखिए।
(v) कविता/पाठ का शीर्षक और कवि का नाम लिखिए।

अथवा

कहते आते थे यही अभी नरदेही,
'माता न कुमाता, पुत्र कुपुत्र भले ही।'
अब कहें सभी यह हाय ! विरुद्ध विधाता—
'है पुत्र पुत्र ही, रहे कुमाता माता।'
बस मैंने इसका बाह्य-मात्र ही देखा,
दृढ़ हृदय न देखा, मृदुल गात्र ही देखा ।

परमार्थ न देखा, पूर्ण स्वार्थ ही साधा,
इस कारण ही तो हाय आज यह बाधा !
युग-युग तक चलती रहे कठोर कहानी—
'रघुकुल में भी थी एक अभागिन रानी।'

(i) पद्यांश के अनुसार, आज तक लोग क्या कहते आए हैं?
(ii) किसने प्रायश्चित्त किया है कि मैंने पुत्र का कोमल शरीर ही देखा, उसका दृढ़ हृदय नहीं देखा?
(iii) इन पंक्तियों में कैकेयी को किस बात पर पश्चात्ताप हुआ है?
(iv) रेखांकित अंश का भावार्थ लिखिए।
(v) कविता/पाठ का शीर्षक और कवि का नाम लिखिए।

5. (क) निम्नलिखित में से किसी एक लेखक का साहित्यिक परिचय देते हुए उनकी प्रमुख रचनाओं का उल्लेख कीजिए— 2+2=4
(शब्द सीमा अधिकतम–80)
(i) वासुदेवशरण अग्रवाल
(ii) हरिशंकर परसाई
(iii) डॉ० ए०पी०जे० अब्दुल कलाम

(ख) निम्नलिखित में से किसी एक कवि का साहित्यिक परिचय देते हुए उनकी प्रमुख कृतियों पर प्रकाश डालिए— 2+2=4
(शब्द सीमा अधिकतम–80)
(i) मैथिलीशरण गुप्त
(ii) महादेवी वर्मा
(iii) रामधारीसिंह 'दिनकर'

6. 'पंचलाइट' *अथवा* 'ध्रुवयात्रा' कहानी के उद्देश्य पर प्रकाश डालिए। 4
अथवा (शब्द सीमा अधिकतम–80)
'लाटी' *अथवा* 'बहादुर' कहानी में से एक का सारांश अपने शब्दों में लिखिए।

7. स्वपठित नाटक के आधार पर दिए गए प्रश्नों में से किसी एक का उत्तर दीजिए— 4
(शब्द सीमा अधिकतम–80)

(i) 'आन का मान' नाटक के प्रमुख पात्र की चारित्रिक विशेषताएँ लिखिए।
अथवा 'आन का मान' नाटक की कथावस्तु संक्षेप में लिखिए।
(ii) 'कुहासा और किरण' नाटक में 'अमूल्य' के चारित्रिक वैशिष्ट्य पर प्रकाश डालिए।
अथवा 'कुहासा और किरण' नाटक की कथावस्तु संक्षेप में लिखिए।
(iii) 'राजमुकुट' नाटक की कथावस्तु संक्षेप में लिखिए।
अथवा 'राजमुकुट' नाटक के नायक की चरित्रगत विशेषताओं को संक्षेप में लिखिए।
(iv) 'गरुड़ध्वज' नाटक के नायक का चरित्र-चित्रण कीजिए।
अथवा 'गरुड़ध्वज' नाटक के आधार पर वासन्ती का चरित्र-चित्रण कीजिए।
(v) 'सूत-पुत्र' नाटक के अन्तिम अंक का कथानक अपने शब्दों में लिखिए।
अथवा 'सूत्र-पुत्र' नाटक के नायक का चरित्र-चित्रण कीजिए।

8. स्वपठित खण्डकाव्य के आधार पर किसी एक खण्ड के एक प्रश्न का उत्तर दीजिए— 4
(शब्द सीमा अधिकतम–80)

(i) 'श्रवणकुमार' खण्डकाव्य के 'निर्वाण' (अष्टम् सर्ग) का सारांश लिखिए।
अथवा 'श्रवणकुमार' के आखेट सर्ग की कथा संक्षेप में अपने शब्दों में लिखिए।
(ii) 'त्यागपथी' खण्डकाव्य के नायक (प्रमुख पात्र) का चरित्र-चित्रण कीजिए।
अथवा 'त्यागपथी' खण्डकाव्य के द्वितीय सर्ग का सारांश लिखिए।
(iii) 'रश्मिरथी' के पंचम सर्ग के आधार पर कुन्ती-कर्ण के संवाद का सारांश अपने शब्दों में लिखिए।
अथवा 'रश्मिरथी' के आधार पर कर्ण के चरित्र की प्रमुख विशेषताओं का उल्लेख कीजिए।
(iv) 'आलोकवृत्त' खण्डकाव्य के सप्तम सर्ग के सारांश लिखिए।
अथवा 'आलोकवृत्त' खण्डकाव्य के नायक का चरित्रांकन कीजिए।
(v) 'मुक्तियज्ञ' खण्डकाव्य की प्रमुख घटनाओं का वर्णन कीजिए।
अथवा 'मुक्तियज्ञ' खण्डकाव्य के नायक महात्मा गांधी की चारित्रिक विशेषताओं पर प्रकाश डालिए।
(vi) 'सत्य की जीत' खण्डकाव्य की प्रमुख घटनाओं का सारांश लिखिए।
अथवा 'सत्य की जीत' खण्डकाव्य के आधार पर द्रौपदी का चरित्र-चित्रण कीजिए।

खण्ड 'ख'

9. (क) दिए गए संस्कृत गद्यांशों में से किसी एक का ससंदर्भ हिन्दी में अनुवाद कीजिए— 2+5=7

हिन्दी-संस्कृताङ्ग्लभाषासु अस्य समानः अधिकारः आसीत्। हिन्दीहिन्दुहिन्दुस्थानानामुत्थानाय अयं निरन्तरं प्रयत्नमकरोत्। शिक्षयैव देशे समाजे च नवीनः प्रकाशः उदेति अतः श्रीमालवीयः वाराणस्यां काशीहिन्दूविश्वविद्यालयस्य संस्थापनमकरोत्। अस्य निर्माणाय अयं जनान् धनम् अयाचत जनाश्च महत्यस्मिन् ज्ञानयज्ञे प्रभूतं धनमस्मै प्रायच्छन्, तेन निर्मितोऽयं विशालः विश्वविद्यालयः भारतीयानां दानशीलतायाः श्रीमालवीयस्य यशसः च प्रतिमूर्तिरिव विभाति। साधारणस्थितिकोऽपि जनः महतोत्साहेन मनस्वितया पौरुषेण च असाधारणमपि कार्यं कर्तुं क्षमः इत्यदर्शयत् मनीषिमूर्धन्यः मालवीयः। एतदर्थमेव जनास्तं महामना इत्युपाधिना अभिधातुमारब्धवन्तः।

अथवा

अतीते प्रथमकल्पे चतुष्पदाः सिंहं राजानमकुर्वन्। मत्स्या आनन्दमत्स्यं, शकुनयः सुवर्णहंसम्। तस्य पुनः सुवर्णराजहंसस्य दुहिता हंसपोतिका अतीव रूपवती आसीत्। स तस्यै वरमदात् यत् सा आत्मनश्चित्तरुचितं स्वामिनं वृणुयात् इति। हंसराजः तस्यै वरं दत्त्वा हिमवति शकुनिसङ्घे संन्यपतत्। नानाप्रकाराः हंसमयूरादयः शकुनिगणाः समागत्य एकस्मिन् महति पाषाणतले संन्यपतन्। हंसराजः आत्मनः चित्तरुचितं स्वामिकम् आगत्य वृणुयात् इति दुहितरमादिदेश। सा शकुनिसङ्घे अवलोकयन्ति मणिवर्णग्रीवं चित्रप्रेक्षणं मयूरं दृष्ट्वा 'अयं मे स्वामिको भवतु' इत्यभाषत। मयूरः 'अद्यापि तावन्मे बलं न पश्यसि' इति अतिगर्वेण लज्जाञ्च त्यक्त्वा तावन्महतः शकुनिसङ्घस्य मध्ये पक्षौ प्रसार्य नर्तितुमारब्धवान्। नृत्यन् चाप्रतिच्छन्नोऽभूत्। सुवर्णराजहंसः लज्जितः—'अस्य नैव ह्रीः अस्ति न बर्हाणां समुत्थाने लज्जा। नास्मै गतत्रपाय स्वदुहितरं दास्यामि' इत्यकथयत्।

(ख) दिए गए पद्यांशों/श्लोकों में से किसी एक का ससंदर्भ हिन्दी में अनुवाद कीजिए— 2+5=7

भाषासु मुख्या मधुरा दिव्या गीर्वाण भारती।
तस्या हि मधुरं काव्यं तस्मादपि सुभाषितम्।।

अथवा

प्रीणाति यः सुचरितैः पितरं स पुत्रो
यद् भर्तुरेव हितमिच्छति तत् कलत्रम्।
तन्मित्रमापदि सुखे च समक्रियं यद्
एतत्त्रयं जगति पुण्यकृतो लभन्ते ।।

10. निम्नलिखित मुहावरों और लोकोक्तियों में से किसी एक का अर्थ लिखकर वाक्यों में प्रयोग कीजिए— 1+1=2

(i) आँखों पर परदा पड़ना (ii) कलेजे पर साँप लोटना।
(iii) दूर के ढोल सुहावने। (iv) लकीर के फकीर।

11. (क) निम्नलिखित शब्दों के सन्धि-विच्छेद के सही विकल्प का चयन कीजिए—

(i) 'मध्वरि:' का सन्धि-विच्छेद है— 1
(अ) मध् + वरि: (ब) मधु + अरि:
(स) म + ध्वरि: (द) मध्व + रि:

(ii) 'पवन:' का सन्धि-विच्छेद है— 1
(अ) पव + नम् (ब) पवन् + अम्
(स) पो + अन: (द) पवन + म्

(iii) 'महर्षि:' का सन्धि-विच्छेद है— 1
(अ) मह + र्षि: (ब) म + हर्षि:
(स) महा + ऋषि: (द) महा + रिषि:

(ख) निम्नलिखित शब्द की 'विभक्ति' और 'वचन' के सही विकल्प को चुनकर लिखिए—

(i) 'सरिते' में वचन और विभक्ति है— 1
(अ) चतुर्थी, एकवचन (ब) तृतीया, द्विवचन
(स) प्रथमा, एकवचन (द) षष्टी, बहुवचन

(ii) 'आत्मने' में वचन और विभक्ति है— 1
(अ) द्वितीया, बहुवचन (ब) चतुर्थी, एकवचन
(स) षष्टी, द्विवचन (द) सप्तमी, द्विवचन

12. (क) निम्नलिखित शब्द-युग्मों का सही अर्थ चुनकर लिखिए—

(i) अंबुज-अंबुद 1
(अ) कमल और बादल (ब) जल और कमल
(स) बादल और समुद्र (द) समुद्र और कमल

(ii) क्षति-क्षिति 1
(अ) हानि और लाभ (ब) हानि और आकाश
(स) आकाश और पृथ्वी (द) हानि और पृथ्वी

(ख) निम्नलिखित में से किसी एक शब्द के दो भिन्न-भिन्न अर्थ लिखिए— 1+1=2

(i) अर्क (ii) अंक (iii) काल

(ग) निम्नलिखित वाक्यांशों के लिए एक 'शब्द' का चयन करके लिखिए— 1

(i) सबसे पहले गिना जाने वाला
(अ) अग्रगण्य (ब) गण्य (स) अनन्त (द) अनगिनत

(ii) जिसे अपने कर्त्तव्य का बोध न हो 1
(अ) कुशाग्र बुद्धि (ब) कर्त्तव्यविमूढ़
(स) कृतज्ञ (द) किंर्त्तव्यविमूढ़

(घ) निम्नलिखित में से किन्हीं दो वाक्यों को शुद्ध करके लिखिए— 1+1=2

(i) वह दंड देने योग्य है। (ii) मैंने रो दिया।
(iii) वह कुर्सी में बैठा है। (iv) एक फूल की माला लाओ।

13. (क) 'हास्य' *अथवा* 'शान्त' रस की परिभाषा स्थायीभाव के साथ सोदाहरण लिखिए। 1+1=2

(ख) 'श्लेष' *अथवा* 'भ्रान्तिमान' अलंकार का लक्षण *अथवा* उदाहरण लिखिए। 2

(ग) 'सोरठा' *अथवा* 'कुण्डलिया' छन्द का मात्रा सहित लक्षण *अथवा* उदाहरण लिखिए। 1+1=2

14. अपने जिले के जिलाधिकारी के नाम एक पत्र लिखिए, जिसमें उनसे अपने गाँव की सफाई-व्यवस्था ठीक कराने हेतु निवेदन किया गया हो। 2+4=6

अथवा

प्रधानाचार्य प्रबन्धक महोदय के लिखक पद पर नियुक्ति हेतु एक प्रार्थना पत्र लिखिए।

15. निम्नलिखित विषयों में से किसी एक विषय पर अपनी भाषा-शैली में निबन्ध लिखिए— 2+7=9

(i) साहित्य और समाज (ii) भ्रष्टाचार : कारण और निवारण
(iii) इण्टरनेट (iv) महिला सशक्तीकरण

मॉडल पेपर-2

सामान्य हिन्दी

(केवल प्रश्न-पत्र)

समय : 3 घण्टे 15 मिनट | कक्षा-12 | पूर्णांक : 100

निर्देश— प्रारम्भ के 15 मिनट परीक्षार्थियों को प्रश्न-पत्र पढ़ने के लिए निर्धारित हैं।

खण्ड 'क'

1. (क) सरस्वती पत्रिका है— 1
(i) शुक्ल युग की (ii) द्विवेदी युग की
(iii) भारतेन्दु युग की (iv) छायावादी युग की

(ख) 'निन्दा रस' निबन्ध के रचनाकार हैं— 1
(i) शिवप्रसाद 'सितारेहिन्द' (ii) प्रेमचन्द्र
(iii) हरिशंकर परसाई (iv) जैनेन्द्र कुमार

(ग) 'चिन्तामणि' की गद्य-विधा है— 1
(i) नाटक (ii) उपन्यास
(iii) निबन्ध (iv) कहानी

(घ) 'परीक्षा-गुरु' के लेखक हैं— 1
(i) हजारीप्रसाद द्विवेदी (ii) सदल मिश्र
(iii) लक्ष्मण सिंह (iv) लाला श्रीनिवास दास

(ङ) 'वारिस' कहानी-संग्रह है— 1
(i) कन्हैयालाल मिश्र 'प्रभाकर' का
(ii) प्रो० जी० सुन्दर रेड्डी का
(iii) मोहन राकेश (iv) 'अज्ञेय' का

2. (क) 'भारतीय ज्ञानपीठ' पुरस्कार नहीं मिला है— 1
(i) सुमित्रानन्दन पन्त को (ii) मैथिलीशरण गुप्त को
(iii) रामधारी सिंह 'दिनकर' को (iv) महादेवी वर्मा को

(ख) 'भारती-भारती' की रचना-विधा है— 1
(i) कहानी (ii) उपन्यास (iii) नाटक (iv) काव्य

(ग) बिहारी 'सतसई' में दोनों की संख्या है— 1
(i) 719 (ii) 713 (iii) 700 (iv) 724

(घ) निम्नलिखित में से कौन-सी रचना महाकाव्य नहीं हैं? 1
(i) पद्मावत (ii) कामायनी (iii) रश्मिरथी (iv) साकेत

(ङ) 'रसिकप्रिय' रचना है— 1
(i) मतिराम की (ii) केशवदास की
(iii) नरपति नाल्ह की (iv) सुमित्रानन्दन पन्त की

3. दिए गए गद्यांश पर आधारित निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दीजिए— 5×2=10

यह अनुभव कितना चमत्कारी है कि यहाँ जो जितनी अधिक बूढ़ी है वह उतनी ही अधिक उत्फुल्ल, मुसकानमयी है। यह किस दीपक की जोत है? जागरूक जीवन की! लक्ष्यदर्शी जीवन की! सेवा-निरत जीवन की! अपने विश्वासों के साथ एकाग्र जीवन की। भाषा के भेद रहे हैं, रहेंगे भी, पर यह जोत विश्व की सर्वोत्तम जोत है।

(i) प्रस्तुत गद्यांश में लेखक ने किसके मुसकानमय जीवन का चित्रांकन किया है?
(ii) कौन-सी ज्योति विश्व की सर्वोत्तम ज्योति है?
(iii) भिन्न-भिन्न प्रान्तों में भाषा में क्या अन्तर देखने को मिलता है?
(iv) रेखांकित अंश की व्याख्या कीजिए।
(v) पाठ और का शीर्षक लेखक का नाम बताइए।

अथवा

धरती माता की कोख में जो अमूल्य निधियाँ भरी हैं जिनके कारण वह वसुंधरा कहलाती है उससे कौन परिचित न होना चाहेगा? लाखों-करोड़ों वर्षों से अनेक प्रकार की धातुओं को पृथिवी के गर्भ में पोषण मिला है। दिन-रात बहने वाली नदियों ने पहाड़ों को पीस-पीसकर अगणित प्रकार की मिट्टियों से पृथिवी की देह को सजाया है। हमारे भावी आर्थिक अभ्युदय के लिए इन सबकी जाँच-पड़ताल अत्यन्त आवश्यक है। पृथिवी की गोद में जन्म लेने वाले जड़-पत्थर कुशल शिल्पियों से सँवारे जाने पर अत्यन्त सौन्दर्य के प्रतीक बन जाते हैं। नाना भाँति के अनगढ़ नग विन्ध्य की नदियों के प्रवाह में सूर्य की धूप से चिलकते रहते हैं, उनको जब चतुर कारीगर पहलदार कटाव पर लाते हैं तब उनके प्रत्येक घाट से नयी शोभा और सुन्दरता फूट पड़ती है। वे अनमोल हो जाते हैं। देश के नर-नारियों के रूप-मंडन और सौन्दर्य-प्रसाधन में इन छोटे पत्थरों का भी सदा से कितना भाग रहा है; अतएव हमें उनका ज्ञान होना भी आवश्यक है।

(i) उपर्युक्त गद्यांश के पाठ और लेखक का नाम लिखिए।
(ii) रेखांकित अंश की व्याख्या कीजिए।
(iii) दिन-रात बहने वाली नदियों ने किस प्रकार से पृथिवी की देह को सजाया है?
(iv) पृथिवी की गोद में जन्म लेने वाले जड़-पत्थर कैसे सौन्दर्य के प्रतीक बन जाते हैं?
(v) लेखक ने हमें किनके योगदान के बारे में बताते हुए उनसे परिचित होने की प्रेरणा दी है?

4. दिए गए पद्यांश पर आधारित निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दीजिए— 5×2=10

कोई प्यारा कुसुम कुम्हला गेह में जो पड़ा हो।
तो प्यारे के चरण पर ला डाल देना उसी को ॥
यों देना ऐ पवन बतला फूल-सी एक बाला।
म्लाना हो हो कमल-पग को चूमना चाहती है ॥

(i) उपर्युक्त पद्यांश के शीर्षक और कवि का नाम लिखिए।
(ii) रेखांकित अंश की व्याख्या कीजिए।
(iii) राधा पवन-दूतिका से मुरझाए हुए पुष्प को कहाँ डाल देने के लिए कह रही हैं?
(iv) मुरझाए हुए पुष्प की उपमा किससे की गई है?
(v) श्रीकृष्ण के कमल के समान कोमल चरणों को कौन चूमना चाहता है?

अथवा

मुझे फूल मत मारो,
मैं अबला बाला वियोगिनी, कुछ तो दया विचारो।
होकर मधु के मीत मदन, पटु, तुम कटु, गरल न गारो,
मुझे विकलता, तुम्हें विफलता, ठहरो, श्रम परिहारो।
नहीं भोगिनी यह मैं कोई, जो तुम जाल पसारो,
बल हो तो सिन्दूर-बिन्दु यह—यह हरनेत्र निहारो !
रूप-दर्प कन्दर्प, तुम्हें तो मेरे पति पर वारो,
लो, यह मेरी चरण-धूलि उस रति के सिर पर धारो ॥

(i) उपर्युक्त पद्यांश के शीर्षक और कवि का नाम लिखिए।
(ii) रेखांकित अंश की व्याख्या कीजिए।
(iii) वसंत का मित्र कौन है?
(iv) उर्मिला ने शिव का तीसरा नेत्र किसे बताया है?
(v) उर्मिला ने अपने पति को किससे अधिक सुन्दर बताया है?

5. (क) निम्नलिखित में से किसी एक लेखक का साहित्यिक परिचय देते हुए उनकी प्रमुख रचनाओं का उल्लेख कीजिए— 2+2=4
(शब्द सीमा अधिकतम—80)

(i) आचार्य हजारीप्रसाद द्विवेदी (ii) हरिशंकर परसाई
(iii) डॉ० ए०पी०जे० अब्दुल कलाम

(ख) निम्नलिखित में से किसी एक कवि का साहित्यिक परिचय देते हुए उनकी प्रमुख कृतियों पर प्रकाश डालिए— 2+2=4
(शब्द सीमा अधिकतम—80)

(i) जयशंकर प्रसाद (ii) महादेवी वर्मा
(iii) रामधारीसिंह 'दिनकर'

6. (क) 'पंचलाइट' अथवा 'ध्रुवयात्रा' कहानी के उद्देश्य पर प्रकाश डालिए। 4
(शब्द सीमा अधिकतम 80)

अथवा

'लाटी' अथवा 'बहादुर' कहानी में से एक का सारांश अपने शब्दों में लिखिए।

7. स्वपठित नाटक के आधार पर दिए गए प्रश्नों में से किसी एक का उत्तर दीजिए— 4
(शब्द सीमा अधिकतम 80)

(i) 'आन का मान' नाटक के आधार पर अजीतसिंह का चरित्रांकन कीजिए।
अथवा 'आन का मान' नाटक की नायिका की चारित्रिक विशेषताएँ लिखिए।
(ii) 'कुहासा और किरण' का कथासार अपने शब्दों में लिखिए।
अथवा 'कुहासा और किरण' के आधार पर कृष्ण चैतन्य का चरित्र-चित्रण कीजिए।
(iii) 'राजमुकुट' नाटक के प्रथम अंक की कथा संक्षेप में लिखिए।
अथवा 'राजमुकुट' नाटक के आधार पर प्रतापसिंह का चरित्रांकन कीजिए।
(iv) 'गरुड़ध्वज' नाटक के द्वितीय अंक की कथा संक्षेप में लिखिए।
अथवा 'गरुड़ध्वज' नाटक के आधार पर कालिदास का चरित्र-चित्रण कीजिए।
(v) 'सूत-पुत्र' नाटक के चतुर्थ अंक का सार लिखिए।
अथवा 'सूत्र-पुत्र' नाटक के प्रमुख पुरुष पात्र का चरित्र-चित्रण कीजिए।

8. स्वपठित खण्डकाव्य के आधार पर किसी एक खण्ड के एक प्रश्न का उत्तर दीजिए— 4
(शब्द सीमा अधिकतम 80)

(i) 'श्रवणकुमार' खण्डकाव्य के आधार पर प्रथम सर्ग की कथावस्तु लिखिए।
अथवा 'श्रवणकुमार' के आखेट सर्ग की कथा संक्षेप में अपने शब्दों में लिखिए।

(ii) 'त्यागपथी' में वर्णित भारत की राजनीतिक उथल-पुथल का वर्णन कीजिए।

अथवा 'त्यागपथी' खण्डकाव्य के आधार पर राज्यश्री का चरित्र-चित्रण कीजिए।

(iii) 'रश्मिरथी' खण्डकाव्य की प्रमुख कथा का निरूपण कीजिए।

अथवा 'रश्मिरथी' खण्डकाव्य के तृतीय सर्ग 'कृष्ण-सन्देश' की कथा संक्षेप में लिखिए।

(iv) 'आलोकवृत्त' खण्डकाव्य के तृतीय सर्ग का सारांश लिखिए।

अथवा 'आलोकवृत्त' खण्डकाव्य में जीवन के श्रेष्ठ मूल्य वर्णित हैं। संक्षेप में लिखिए।

(v) 'मुक्तियज्ञ' खण्डकाव्य की प्रमुख घटनाओं का वर्णन कीजिए।

अथवा 'मुक्तियज्ञ' खण्डकाव्य के नायक कौन हैं? उनका चारित्रिक विश्लेषण कीजिए।

(vi) 'सत्य की जीत' खण्डकाव्य के आधार पर 'द्रौपदी चीर-हरण' घटना अपने शब्दों में लिखिए।

अथवा 'सत्य की जीत' खण्डकाव्य के आधार पर नायिका का चरित्र-चित्रण कीजिए।

खण्ड 'ख'

9. (क) दिए गए संस्कृत गद्यांशों में से किसी एक का ससंदर्भ हिन्दी में अनुवाद कीजिए— 2+5=7

सा शकुनिसङ्घे अवलोकयन्ती मणिवर्णग्रीवं चित्रप्रेक्षणं मयूरं दृष्ट्वा 'अयं मे स्वामिको भवतु' इत्यभाषत। मयूरः 'अद्यापि तावन्मे बलं न पश्यसि' इति अतिगर्वेण लज्जाञ्च त्यक्त्वा तावन्महतः शकुनिसङ्घस्य मध्ये पक्षौ प्रसार्य नर्तितुमारब्धवान्। नृत्यन् चाप्रतिच्छन्नोऽभूत्। सुवर्णराजहंसः लज्जितः—'अस्य नैव ह्रीः अस्ति न बर्हाणां समुत्थाने लज्जा। नास्मै गतत्रपाय स्वदुहितरं दास्यामि' इत्यकथयत्।

हंसराजः तदैव परिषन्मध्ये आत्मनः भागिनेयाय हंसपोतकाय दुहितरमददात्। मयूरो हंसपोतिकामप्राप्य लज्जितः तस्मात् स्थानात् पलायितः। हंसराजोऽपि हृष्टमानसः स्वगृहम् अगच्छत्।

अथवा पञ्चशीलमिति शिष्टाचारविषयकाः सिद्धान्ताः। महात्मा गौतमबुद्धः एतान् पञ्चापि सिद्धान्तान् पञ्चशीलमिति नाम्ना स्वशिष्यान् शास्ति स्म। एत एवायं शब्दः अधुनापि तथैव स्वीकृतः। इमे सिद्धान्ताः क्रमेण एवं सन्ति— (1) अहिंसा, (2) सत्यम्, (3) अस्तेयम्, (4) अप्रमादः, (5) ब्रह्मचर्यम् इति। बौद्धयुगे इमे सिद्धान्ताः वैयक्तिकजीवनस्य अभ्युत्थानाय प्रयुक्ता आसन्। परमद्य इमे सिद्धान्ताः राष्ट्राणां परस्परमैत्रीसहयोगकारणानि, विश्व-बन्धुत्वस्य विश्वशान्तेश्च साधनानि सन्ति। राष्ट्रनायकस्य श्रीजवाहरलालनेहरूमहोदयस्य प्रधानमन्त्रित्वकाले चीनदेशेन सह भारतस्य मैत्री पञ्चशीलसिद्धान्तानधिकृत्य एवाभवत्। यतो हि उभावपि देशौ बौद्धधर्मे निष्ठावन्तौ। आधुनिके जगति पञ्चशीलसिद्धान्ताः नवीनं राजनैतिकं स्वरूपं गृहीतवन्तः।

(ख) दिए गए पद्यांशों/श्लोकों में से किसी एक का ससंदर्भ हिन्दी में अनुवाद कीजिए। 2+5=7

न चौरहार्यं न च राजहार्यं न भ्रातृभाज्यं न च भारकारि।
व्यये कृते वर्द्धत एव नित्यं विद्याधनं सर्वधनप्रधानम्॥

अथवा निन्दन्तु नीतिनिपुणा यदि वा स्तुवन्तु
लक्ष्मीः समाविशतु गच्छतु वा यथेष्टम्।
अद्यैव वा मरणमस्तु युगान्तरे वा
न्याय्यात् पथः प्रविचलन्ति पदं न धीराः॥

10. निम्नलिखित मुहावरों और लोकोक्तियों में से किसी एक का अर्थ लिखकर वाक्य में प्रयोग कीजिए— 1+1=2

(i) आसमान पर थूकना
(ii) छाती पर मूँग दलना
(iii) रस्सी जल गयी, ऐंठ नहीं गयी
(iv) सावन के अन्धे को हरा ही हरा सूझता है

11. (क) निम्नलिखित शब्दों के सन्धि-विच्छेद के सही विकल्प का चयन कीजिए—

(i) 'स्वागतम्' का सन्धि-विच्छेद है— 1
(अ) स्वा + गतम् (ब) स्वागत + म्
(स) सु + आगतम् (द) स्वाग + तम्

(ii) 'तल्लीन' का सन्धि-विच्छेद है— 1
(अ) तद् + लीनः (ब) त + लीनः
(स) तदलो + न (द) तदी + लीनः

(iii) 'प्रत्यर्पण' का सन्धि-विच्छेद है— 1
(अ) प्रति + अपर्ण (ब) प्रती + पर्ण
(स) प्र + अतिपर्ण (द) प्रत्य + पर्ण

(ख) निम्नलिखित शब्दों की विभक्ति और वचन के सही विकल्प को चुनकर लिखिए—

(i) 'जगत' में वचन और विभक्ति है— 1
(अ) द्वितीय,बहुवचन (ब) चतुर्थी, द्विवचन
(स) तृतीया, एकवचन (द) षष्टी एकवचन

(ii) 'राज्ञम' शब्द में विभक्ति और वचन है— 1
(क) पञ्चमी, द्विवचन (ब) द्वितीया, एकवचन
(स) षष्ठी, बहुवचन (द) चतुर्थी, एकवचन

12. (क) निम्नलिखित शब्द-युग्मों का सही अर्थ चुनकर लिखिए—

(i) भारती-भारतीय 1
(अ) सरस्वती और भारत का रहने वाला
(ब) भार ढोने वाली और भर्ती करने वाला
(स) भार में लगी हुई और चुनाव
(द) एक जाति और एक व्यक्ति

(ii) तरणि-तरणी 1
(अ) सूर्य और नाव (ब) सूरज और चन्दा
(स) नाव और स्त्री (द) तरना और स्त्री

(ख) निम्नलिखित में से किसी एक शब्द के दो भिन्न-भिन्न अर्थ लिखिए— 1+1=2
(i) पै (ii) गो (iii) बाल

(ग) निम्नलिखित वाक्यांशों के लिए एक 'शब्द' का चयन कर लिखिए—

(i) जिसके आगमन की तिथि निश्चित न हो 1
(अ) अग्रणी (ब) कवि (स) अतिथि (द) कायर

(ii) जो युद्ध में स्थिर हो 1
(अ) युधिष्ठिर (ब) नकुल (स) शांत (द) स्तब्ध

(घ) निम्नलिखित में से किन्हीं दो वाक्यों को शुद्ध करके लिखिए— 1+1=2

(i) महात्मा गांधी देश के पूज्यनीय नेता थे।
(ii) रामायण का टीका मैंने पढ़ी।
(iii) तुम मेरे से मत बोलो।
(iv) कृप्या अवकाश देने की कृपा करें।

13. (क) 'करुण' *अथवा* 'शान्त' रस की परिभाषा स्थायीभाव के साथ सोदाहरण लिखिए। 1+1=2

(ख) 'दोहा' *अथवा* 'सोरठा' छन्द का मात्रा सहित लक्षण *अथवा* उदाहरण लिखिए। 2

(ग) 'यमक' *अथवा* 'उपमा' अलंकार का लक्षण *अथवा* उदाहरण लिखिए। 1+1=2

14. सहायक अध्यापक पद के लिए पत्र शैली में शिक्षा निदेशक के नाम एक आवेदन-पत्र लिखिए। 2+4=6

अथवा

अपने नगर में शुद्ध पेयजल आपूर्ति कराने हेतु जल संस्थान के प्रबन्धक को पत्र लिखिए।

15. निम्नलिखित विषयों में से किसी एक विषय पर अपनी भाषा-शैली में निबन्ध लिखिए— 2+7=9

(i) साहित्य समाज और दर्पण है
(ii) भारत में कम्प्यूटर का महत्त्व
(iii) धरती की रक्षा : पर्यावरण सुरक्षा
(iv) भ्रष्टाचार : कारण और निवारण

करना

मॉडल पेपर-3

सामान्य हिन्दी

करना

(केवल प्रश्न-पत्र)

कक्षा-12

समय : 3 घण्टे 15 मिनट | पूर्णांक : 100

निर्देश— प्रारम्भ के 15 मिनट परीक्षार्थियों को प्रश्न-पत्र पढ़ने के लिए निर्धारित हैं।

खण्ड 'क'

1. (क) ब्राह्मण पत्रिका के सम्पादक थे— 1
(i) बालकृष्ण भट्ट (ii) प्रतापनारायण मिश्र
(iii) बदरीनारायण चौधरी 'प्रेमधन'
(iv) प्रेमचन्द

(ख) 'संयोगिता स्वयंवर' नाटक के लेखक हैं— 1
(i) जयशंकर प्रसाद (ii) भारतेन्दु हरिश्चन्द्र
(iii) श्रीनिवास दास (iv) राजकुमार वर्मा

(ग) 'चारु चन्द्रलेख' की विधा है— 1
(i) कहानी (ii) उपन्यास (iii) निबन्ध (iv) नाटक

(घ) 'भूले-बिसरे चेहरे' रेखाचित्र के रचयिता हैं— 1
(i) कन्हैयालाल मिश्र 'प्रभाकर' (ii) अमृत राय
(iii) महावीर प्रसाद द्विवेदी (iv) राजेन्द्र यादव

(ङ) 'पाणिनिकालीन भारत' शोध प्रबन्ध है— 1
(i) वासुदेवशरण अग्रवाल का (ii) मोहन राकेश का
(iii) प्रो० जी० सुन्दर रेड्डी का (iv) हरिशंकर परसाई का

(क) तारसप्तक का प्रकाशन हुआ— 1
(i) सन् 1947 में (ii) सन् 1943 में
(iii) सन् 1950 में (iv) सन् 1931 में

(ख) 'नौका-विहार' कविता अवतरित है— 1
(i) 'गुंजन' से (ii) 'वीणा' से
(iii) 'पल्लव' से (iv) 'युगान्त' से

(ग) मैथिलीशरण गुप्त की रचना है— 1
(i) प्रियप्रवास (ii) साकेत (iii) कामायनी (iv) लोकायतन

(घ) 'वैदेही वनवास' काव्यकृति है— 1
(i) खण्डकाव्य (ii) मुक्तककाव्य
(iii) महाकाव्य (iv) चम्पूकाव्य

(ङ) 'लहर' के रचनाकार हैं— 1
(i) जयशंकर प्रसाद (ii) गिरजा कुमार माथुर
(iii) हरिवंशराय 'बच्चन' (iv) सुमित्रानन्दन पन्त

3. दिए गए गद्यांश पर आधारित निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दीजिए— 2×5=10

भारतीय साहित्य में, और इसलिए जीवन में भी, इस पुष्प का प्रवेश और निर्गम दोनों ही विचित्र नाटकीय व्यापार हैं। ऐसा तो कोई नहीं कह सकता कि कालिदास के पूर्व भारतवर्ष में इस पुष्प का कोई नाम ही नहीं जानता था; परन्तु कालिदास के काव्यों में यह जिस शोभा और सौकुमार्य का भार लेकर प्रवेश करता है, वह पहले कहाँ था। उस प्रवेश में नववधू के गृह-प्रवेश की भाँति शोभा है, गरिमा है, पवित्रता है और सुकुमारता है। फिर एकाएक मुसलमानी सल्तनत की प्रतिष्ठा के साथ-ही-साथ यह मनोहर पुष्प साहित्य के सिंहासन से चुपचाप उतार दिया गया। नाम तो लोग बाद में भी लेते थे, पर उसी प्रकार जिस प्रकार बुद्ध, विक्रमादित्य का। अशोक को जो सम्मान कालिदास से मिला, वह अपूर्व था।

(i) उपर्युक्त गद्यांश के पाठ और लेखक का नाम लिखिए।
(ii) रेखांकित अंश की व्याख्या कीजिए।
(iii) अशोक का पुष्प कालिदास के महाकाव्य में किस भाँति शोभा पाता है?
(iv) अशोक के पुष्प को कब साहित्य के सिंहासन से उतार फेंका गया?
(v) लेखक ने किसे विचित्र नाटकीय व्यापार बताया है?

अथवा

निन्दा का उद्गम ही हीनता और कमजोरी से होता है। मनुष्य अपनी हीनता से दबता है। वह दूसरों की निन्दा करके ऐसा अनुभव करता है कि वे सब निकृष्ट हैं और वह उनसे अच्छा है। उसके अहं की इससे तुष्टि होती है। बड़ी लकीर को कुछ मिटाकर छोटी लकीर बड़ी बनती है। ज्यों-ज्यों कर्म क्षीण होता जाता है, त्यों-त्यों निन्दा की प्रवृत्ति बढ़ती जाती है। कठिन कर्म ही ईर्ष्या-द्वेष और इनसे उत्पन्न निन्दा को मारता है। इन्द्र बड़ा ईर्ष्यालु माना जाता है क्योंकि वह निठल्ला है। स्वर्ग में देवताओं को बिना उगाया अन्न, बे बनाया महल और बिन बोये फल मिलते हैं। अकर्मण्यता में उन्हें अप्रतिष्ठित होने का भय बना रहता है, इसलिए कर्मी मनुष्यों से उन्हें ईर्ष्या होती है।

(i) उपर्युक्त गद्यांश के पाठ और लेखक का नाम लिखिए।
(ii) रेखांकित अंश की व्याख्या कीजिए।
(iii) निन्दा का उद्गम कहाँ से होता है?
(iv) निन्दक व्यक्ति दूसरों की निन्दा करके कैसा अनुभव करता है?
(v) इन्द्र को ईर्ष्यालु क्यों माना जाता है?

4. दिए गए पद्यांश पर आधारित निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दीजिए— 2×5=10

तू देखेगी जलद-तन को जा वहीं तद्गता हो।
होंगे लोने नयन उनके ज्योति-उत्कीर्णकारी ॥
मुद्रा होगी वर बदन की मूर्ति-सी सौम्यता की।
सीधे साधे वचन उनके सिक्त होंगे सुधा से ॥
नीले फूले कमल दल-सी गात की श्यामता है।
पीला प्यारा वसन कटि में पैन्हते हैं फबीला ॥
छूटी काली अलक मुख की कान्ति को है बढ़ाती।
सद्वस्त्रों में नवल तन की फूटती-सी प्रभा है ॥

(i) उपर्युक्त पद्यांश के शीर्षक और कवि का नाम लिखिए।
(ii) रेखांकित अंश की व्याख्या कीजिए।
(iii) प्रस्तुत पंक्तियों में राधा पवन-दूतिका को किसकी पहचान बताती हैं?
(iv) श्रीकृष्ण के नेत्रों की शोभा कैसी है?
(v) श्रीकृष्ण कटि में कैसा वस्त्र धारण करते हैं?

अथवा

ज्यों-ज्यों लगती है नाव पार
उर में आलोकित शत विचार।
इस धारा-सा ही जग का क्रम, शाश्वत इस जीवन का उद्गम,
शाश्वत है गति, शाश्वत संगम !
शाश्वत नभ का नीला विकास, शाश्वत शशि का यह रजत हास,
शाश्वत लघु लहरों का विलास !
हे जग-जीवन के कर्णधार ! चिर जन्म-मरण के आर-पार,
शाश्वत जीवन-नौका-विहार?
मैं भूल गया अस्तित्व ज्ञान, जीवन का यह शाश्वत प्रमाण,
करता मुझको अमरत्व दान !

(i) उपर्युक्त पद्यांश के शीर्षक और कवि का नाम लिखिए।
(ii) रेखांकित अंश की व्याख्या कीजिए।
(iii) इस संसार की गति कवि को किसके समान लगती है?
(iv) गंगा के दोनों किनारे कवि को किसके समान लगते हैं?
(v) कवि क्या भूल गया था?

5. (क) निम्नलिखित में से किसी एक लेखक का साहित्यिक परिचय देते हुए उनकी प्रमुख रचनाओं का उल्लेख कीजिए— 2+2=4
(शब्द सीमा अधिकतम–80)

(i) वासुदेवशरण अग्रवाल (ii) आचार्य हजारीप्रसाद द्विवेदी
(iii) हरिशंकर परसाई

(ख) निम्नलिखित में से किसी एक कवि का साहित्यिक परिचय देते हुए उनकी प्रमुख कृतियों पर प्रकाश डालिए— 2+2=4
(शब्द सीमा अधिकतम–80)

(i) रामधारी सिंह 'दिनकर' (ii) महादेवी वर्मा
(iii) मैथिलीशरण गुप्त

6. 'बहादुर' अथवा 'लाटी' कहानी के उद्देश्य पर प्रकाश डालिए। 4
अथवा (शब्द सीमा अधिकतम–80)
'पंचलाइट' अथवा 'बहादुर' कहानी में से एक का सारांश अपने शब्दों में लिखिए।

7. स्वपठित नाटक के आधार पर दिए गए प्रश्नों में से किसी एक का उत्तर दीजिए— 4
(शब्द सीमा अधिकतम–80)

(i) 'आन का मान' नाटक के आधार पर प्रथम अंक का सारांश लिखिए।
अथवा 'आन का मान' नाटक के किसी एक पात्र का चरित्र-चित्रण कीजिए।
(ii) 'कुहासा और किरण' नाटक के अन्तिम अंक की कथावस्तु लिखिए।
अथवा 'कुहासा और किरण' नाटक के आधार पर कृष्ण चैतन्य की चारित्रिक विशेषताओं पर प्रकाश डालिए।
(iii) 'राजमुकुट' नाटक की कथावस्तु संक्षेप में लिखिए।
अथवा 'राजमुकुट' नाटक के आधार पर शक्तिसिंह की चारित्रिक विशेषताओं पर प्रकाश डालिए।
(iv) 'गरुड़ध्वज' नाटक की कथा का सार अपनी भाषा में प्रस्तुत कीजिए।
अथवा 'गरुड़ध्वज' नाटक के प्रमुख पात्र विक्रम का चरित्र-चित्रण कीजिए।
(v) 'सूत-पुत्र' नाटक के द्वितीय अंक की कथा का सार संक्षेप में लिखिए।
अथवा 'सूत-पुत्र' नाटक के किसी एक पात्र का चरित्र-चित्रण कीजिए।

8. स्वपठित खण्डकाव्य के आधार पर किसी एक खण्ड के एक प्रश्न का उत्तर दीजिए— 4
(शब्द सीमा अधिकतम–80)

(i) 'श्रवणकुमार' खण्डकाव्य के पाँचवें सर्ग की कथा लिखिए।
अथवा 'श्रवणकुमार' के आधार पर दशरथ का चरित्र-चित्रण कीजिए।
(ii) 'त्यागपथी' खण्डकाव्य के द्वितीय सर्ग का सारांश लिखिए।
अथवा 'त्यागपथी' खण्डकाव्य के चतुर्थ सर्ग की कथा संक्षेप में लिखिए।
(iii) 'रश्मिरथी' खण्डकाव्य की कथावस्तु का संक्षेप में परिचय दीजिए।
अथवा 'रश्मिरथी' खण्डकाव्य के 'आश्रमवास' सर्ग की कथा अपने शब्दों में लिखिए।
(iv) 'आलोकवृत्त' खण्डकाव्य की प्रमुख घटना का वर्णन कीजिए।
अथवा 'आलोकवृत्त' खण्डकाव्य के नायक का चरित्रांकन कीजिए।
(v) 'मुक्तियज्ञ' का कथासार संक्षेप में लिखिए।
अथवा 'मुक्तियज्ञ' खण्डकाव्य के नायक का चरित्रांकन कीजिए।
(vi) 'सत्य की जीत' के आधार पर दुशासन का चरित्रांकन कीजिए।
अथवा 'सत्य की जाति' खण्डकाव्य के आधार पर दुर्योधन का चरित्र-चित्रण कीजिए।

खण्ड 'ख'

9. (क) दिए गए संस्कृत गद्यांशों में से किसी एक का ससंदर्भ हिन्दी में अनुवाद कीजिए— 2+5=7

महापुरुषाः लौकिक-प्रलोभनेषु बद्धाः नियतलक्ष्यान्न कदापि भ्रश्यन्ति। देशसेवानुरक्तोऽयं युवा उच्चन्यायालयस्य परिधौ स्थातुं नाशक्नोत्। पण्डितमोतीलालनेहरू-लालालाजपतरायप्रभृतिभिः अन्यैः राष्ट्रनायकैः सह सोऽपि देशस्य स्वतन्त्रतासङ्ग्रामेऽवतीर्णः। देहल्यां त्रयोविंशतितमे कांग्रेसस्याधिवेशनेऽयम् अध्यक्षपदमलङ्कृतवान्। 'रोलट एक्ट' इत्याख्यस्य विरोधेऽस्य ओजस्विभाषणं श्रुत्वा आङ्ग्लशासकाः भीताः जाताः। बहुवारं कारागारे निक्षिप्तोऽपि अयं वीरं देशसेवाव्रतं नात्यजत्।

अथवा राजा तस्यै लक्षं दत्त्वा कालिदासं प्राह—'सखे, त्वमपि प्रभातं वर्णय' इति। ततः कालिदासः प्राह—

अभूत् प्राची पिङ्गा रसपतिरिव प्राप्य कनकं गतच्छायश्चन्द्रो बुधजन इव ग्राम्यसदसि। क्षणं क्षीणास्तारा नृपतय इवानुद्यमपराः न दीपा राजन्ते द्रविणरहितानामिव गुणाः ॥

राजातितुष्टः तस्मै प्रत्यक्षरं लक्षं ददौ।

(ख) दिए गए पद्यांशों/श्लोकों में से किसी एक का ससंदर्भ हिन्दी में अनुवाद कीजिए— 2+5=7

विद्या विवादाय धनं मदाय शक्तिः परेषां परिपीडनाय।
खलस्य साधोः विपरीतमेतज्ज्ञानाय दानाय च रक्षणाय ॥

अथवा कामान् दुग्धे विप्रकर्षत्यलक्ष्मीं।
कीर्तिं सूते दुष्कृतं या हिनस्ति।
शुद्धां शान्तां मातरं मङ्गलानां
धेनुं धीराः सूनृतां वाचमाहुः॥

10. निम्नलिखित मुहावरों और लोकोक्तियों में से किसी एक का अर्थ लिखकर अपने वाक्यों में प्रयोग कीजिए— 1+1=2

(i) ईद का चाँद होना (ii) टोपी उछालना
(iii) ऊँची दुकान, फीका पकवान (iv) मन चंगा तो कठौती में गंगा

11. (क) निम्नलिखित शब्दों के सन्धि-विच्छेद के सही विकल्प का चयन कर लिखिए—

(i) 'रमेशः' का सन्धि-विच्छेद है— 1
(अ) रमु + एशः (ब) रम + इशः
(स) रमा + एशः (द) रमा + ईशः

(ii) 'पावकः' का सन्धि-विच्छेद है— 1
(अ) पौ + अकः (ब) पाव + कः
(स) प + आवकः (द) पा + वकः

(iii) 'भवनम्' का सन्धि-विच्छेद है— 1
(अ) भव + नम् (ब) भव् + अनम्
(स) भो + अनम् (द) भ + वनम्

(ख) निम्नलिखित शब्दों की विभक्ति और वचन के सही विकल्प को चुनकर लिखिए—

(i) 'सरिते' में वचन और विभक्ति है— 1
(अ) चतुर्थी, एकवचन (ब) तृतीया, द्विवचन
(स) प्रथमा, बहुवचन (द) षष्ठी, बहुवचन

(ii) 'रामाणाम्' में वचन और विभक्ति है— 1
(क) चतुर्थी, एकवचन (ब) षष्ठी, एकवचन
(स) षष्ठी, बहुवचन (द) द्वितीया, बहुवचन

12. (क) निम्नलिखित शब्द-युग्मों का सही अर्थ चुनकर लिखिए—

(i) सुत-सूत 1
(अ) पुत्र और पिता (ब) पुत्र और सारथी
(स) पुत्र और माता (द) पुत्र और पत्नी

(ii) उपकार-अपकार 1
(अ) दूसरों का कार्य और बुराई (ब) पुकार और न बोलना
(स) भलाई और बुराई (द) अच्छा और दुष्ट

(ख) निम्नलिखित शब्दों में से किसी एक शब्द के दो भिन्न-भिन्न अर्थ लिखिए— 1+1=2
(i) वर,
(ii) मान,
(iii) विषय

(ग) निम्नलिखित वाक्यांशों के लिए एक 'शब्द' का चयन करके लिखिए—

(i) बहुत तेज बुद्धि वाला— 1
(अ) कुलीन (ब) कृतज्ञ
(स) चतुर (द) कुशाग्रबुद्धि

(ii) जिसके आर-पार देखा जा सके— 1
(अ) अगोचर (ब) पारदर्शी (स) पार्थिव (द) गोचर

(घ) निम्नलिखित में से किन्हीं दो वाक्यों को शुद्ध करके लिखिए— 1+1=2
(i) हरि ने घर गया और सूचना दी।
(ii) मेरे को पुस्तक चाहिए।
(iii) डाल में चिड़िया बैठी है।
(iv) मीरा कृष्णभक्त कवि हैं।

13. (क) 'शृंगार' *अथवा* 'वीर' रस का स्थायीभाव के साथ उसकी परिभाषा *अथवा* उदाहरण लिखिए। 1+1=2

(ख) 'चौपाई' *अथवा* 'सोरठा' छन्द का मात्रा सहित लक्षण *अथवा* उदाहरण लिखिए। 1+1=2

(ग) 'अनुप्रास' *अथवा* 'श्लेष' अलंकार का लक्षण *अथवा* उदाहरण लिखिए। 2

14. इलाहाबाद बैंक के शाखा-प्रबन्धक को फसली ऋण योजनान्तर्गत ऋण-प्राप्ति हेतु एक आवेदन-पत्र लिखिए। 2+4=6

अथवा

बढ़ते हुए संक्रामक रोग की रोकथाम के लिए मुख्य चिकित्साधिकारी को एक प्रार्थना-पत्र लिखिए।

15. निम्नलिखित विषयों में से किसी एक विषय पर अपनी भाषा-शैली में निबन्ध लिखिए— 2+7=9
(i) पर्यावरण प्रदूषण : समस्या और समाधान
(ii) विज्ञान : वरदान या अभिशाप
(iii) भारत में बेरोजगारी की समस्या
(iv) मानव जीवन में वनों की उपयोगिता

उत्तर प्रदेश के चमकते सितारे

93.2 %
आकाश मौर्या
श्री साईं इण्टर कॉलेज, बाराबंकी

93.2 %
रजनीश शुक्ला
सर्वोदय इण्टर कॉलेज, फतेहपुर

92.2%
अर्जीत पटेल
श्री साईं इण्टर कॉलेज, बाराबंकी

92 %
शुभम दीक्षित
ओंकारेश्वर स०वि०नि० इण्टर कॉलेज, आजमगढ़

टॉपर्स की सफलता का रहस्य...

माध्यमिक शिक्षा परिषद्, इलाहाबाद, उत्तर प्रदेश द्वारा आयोजित सत्र 2017-18 की परीक्षाओं में उच्चतम अंक प्राप्त करने वाले टॉपर्स ने अपनी सफलता का रहस्य बताते हुए एक ही स्वर में Vidya Question Bank की सरल, बोधगम्य और संक्षिप्त पाठ्य–सामग्री को अपनी सफलता का सच्चा साथी बताया तथा मेधावी विद्यार्थियों ने कहा कि Vidya Question Bank ने एक सच्चे गुरु की भाँति हमारा साथ निभाया है। परीक्षाओं की कठिन डगर में इसकी बोधगम्य पाठ्य–सामग्री ने हमारी प्रत्येक शैक्षिक समस्या का सरलतम् समाधान प्रस्तुत किया है। इसके अतिरिक्त मेधावी बालकों ने अपनी सफलता का श्रेय अपने गुरुजनों व माता–पिता के शुभाशीष को दिया है। इस प्रकार उच्चतम् अंक प्राप्त करने वाले सभी विद्यार्थियों द्वारा Vidya Question Bank की मुक्त कण्ठ से की गई सराहना ने इसकी गरिमा और प्रतिष्ठा में चार चाँद लगा दिए हैं।

पाँच कूपन भरकर भेजिए और प्राप्त कीजिए लकी ड्रॉ द्वारा Smart Watch

प्रिय विद्यार्थियो,
भगवान् महावीर की 2619वीं जयन्ती के पावन अवसर पर विद्या प्रकाशन मन्दिर प्रा० लि०, मेरठ ने विशेष रूप से आपके लिए बसंत बम्पर उपहार योजना प्रस्तुत की है। इस उपहार योजना के भाग्यशाली विजेता आप भी हो सकते हैं और जीत सकते हैं एक Smart Watch, तो फिर देर क्यों ? आज ही पाँच अलग–अलग विषयों के Vidya Question Bank खरीद डालिए। उनमें से कूपन काटकर तथा सभी प्रविष्टियाँ पूर्ण करके एक साथ संलग्न कर 15 अप्रैल, 2019 तक नीचे लिखे पते पर हमें प्रेषित करें या 8392901758 पर WhatsApp करें। साथ ही, लिफाफे के बाएँ कोने में बसंतोपहार-2019 लिखना न भूलें। उपहार योजना के परिणाम 1 जून, 2019 को विशिष्ट एवं सम्मानित व्यक्तियों की उपस्थिति में [illegible] निकाले जाएँगे।

Name of Student ..... Coupon No. .....
Father's Name ..... Address .....
..... Pin code ..... Mobile No. .....
Name & Address of School .....
Subject Name ..... Class ..... Section .....
Subject Teacher's Name ..... Subject Teacher's Mobile No. .....
Book Seller's Name & Address (with Stamp) .....

VIDYA Prakashan Mandir [P] Ltd.
Like us on www.facebook.com/vidyaprakashanmandir
Book Code H 055
ISBN 935166-740-7
M.R.P. ₹ 96.80
Head Office: Vidya Industrial Estate, Baghpat Road, Meerut-250002 (Delhi NCR), Tele : 0121-7130556, 7130600
Regd. Office : G-8, Narain Manzil, 23-Barakhamba Road, Connaught Place, New Delhi-110001, Visit at: www.vidyaprakashan.com
Email: info@vidyaprakashan.com For Educational Use, No Tax on Books © Publishers, Edition-2019